ज़ाहिरो बातिन की इस्लाह़ करने वाली मश्हूरो मारूफ़ किताब
"एह़याउल उ़लूम" का निचोड़

लुबाबुल एह़या

तर्जमा ब नाम

एह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा

-: मुसन्निफ़ :-

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ اللهِ الْوَالِى

(अल मुतवफ़्फ़ा 505 हि.)

पेशकश :- मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शोबए तराजिमे कुतुब)

EHYAUL ULOOM KA KHULASA (HINDI)

MAKTABA TUL MADINA

(دعوتِ اسلامی)

DAWAT-E-ISLAMI

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पेहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रेह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़्यादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (यानी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ **Sms**, **E-mail**, **Whats App** या **Telegram** के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइए।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़ करने वाली मश्हूरो मारूफ़ किताब
"एह़्याउल उ़लूम" का निचोड़

लुबाबुल एह़्या

तर्जमा ब नाम

एह़्याउल उ़लूम का ख़ुलासा

-: मुसन्निफ़ :-
ह़ुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى
(अल मुतवफ़्फ़ा 505 हि.)

पेशकश :- मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शोबए तराजिमे कुतुब)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी (हिन्द)

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

नाम किताब : लुबाबुल एह्या

तर्जमा ब नाम : एह्याउल उ़लूम का ख़ुलासा

मोअल्लिफ़ : इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی

मुतर्जिम : मदनी उ़लमा शोबए तराजिमे कुतुब (अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

सिने त़बाअ़त : जुमादल ऊला, सि. 1441 हि. / जनवरी सि. 2020 ई.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी (हिन्द)

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

- अजमेर : **मक्तबतुल मदीना**, 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385
- बरेली : **मक्तबतुल मदीना**, दरगाह आला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यू.पी. फ़ोन : 09313895994
- बनारस : **मक्तबतुल मदीना**, सी. के. 68/26 मुस्लिम मुसाफ़िर ख़ाने के सामने, कच्छी सराय, दालमन्डी, वाराणसी (बनारस) यू.पी. फ़ोन : 09369023101
- कलकत्ता : **मक्तबतुल मदीना**, 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212
- नागपुर : **मक्तबतुल मदीना**, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099
- इन्दौर : **मक्तबतुल मदीना**, शॉप नम्बर 13, बोम्बे बाज़ार, उदापुरा, इन्दौर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692

तसदीक़ नामा

तारीख़ : 17 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1429 हि. (20-02-2008) **ह़वाला :** 152

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

तसदीक़ की जाती है कि किताब "**लुबाबुल एह्या**" (उर्दू) के तर्जमे "**एह्याउल उ़लूम का ख़ुलासा**" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर **मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल** की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिबो मफ़ाहीम के एतिबार से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दावते इस्लामी)

E-mail : maktabadelhi@gmail.com / **Website :** www.dawateislamihind.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब (तख़रीज शुदा) छापने की इजाज़त नहीं है

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिए, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिए। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।)

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"शरीअ़त से त़रीक़त जुदा नहीं" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 19 निय्यतें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ** यानी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر طبرانی ج ٦ ص ١٨٥ حدیث ٥٩٤٢ بیروت)

दो मदनी फूल : ❀ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

❀ जितनी अच्छी निय्यतें ज़्यादा, उतना सवाब भी ज़्यादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तसमिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़्हे पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (5) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिए इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा (8) क़ुरआनी आयात और (9) अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा (10) जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (11) जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा और (12) जहां जहां किसी सह़ाबी का नाम मुबारक आएगा वहां رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पढ़ूंगा। (13) इस किताब का मुत़ालआ़ शुरूअ़ करने से पेहले इस के मोअल्लिफ़ को ईसाले सवाब करूंगा (14) अपनी इस्लाह़ के लिए इस किताब के ज़रीए़ इ़ल्म ह़ासिल करूंगा (15) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याददाश्त" वाले सफ़्हे पर ज़रूरी निकात लिखूंगा (16) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा (17,18) इस ह़दीसे पाक "**تَهَادَوْا تَحَابُّوْا**" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। "﴿مؤطا امام مالک ج٢ ص٤٠٧ حدیث ١٧٣١﴾ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा (19) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तेह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे एह्ले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तेह़रीक **"दावते इस्लामी"** नेकी की दावत, एह्याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिए मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दावते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शोबे** हैं :

《1》 शोबए कुतुबे आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه 《2》 शोबए दर्सी कुतुब 《3》 शोबए इस्लाही़ कुतुब
《4》 शोबए तख़रीज 《5》 शोबए तफ़्तीशे कुतुब 《6》 शोबए तराजिमे कुतुब

"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आला ह़ज़रत, इमामे एह्ले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिए सुन्नत, माह़िए बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दावते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

पेहले इसे पढ़ लीजिए !

प्यारे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सानों की तख़्लीक़ फ़रमाई और उन की हिदायत व राहनुमाई के लिए वक़्तन फ़ वक़्तन अम्बियाओ रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मबऊ़स फ़रमाए जिन्हों ने इन्सानिय्यत को **अल्लाह** وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ की बारगाह में सर निगूं किया और उन के ज़ाहिरो बातिन को हर त़रह़ की आलूदगियों से पाक फ़रमाया। सब से आख़िर में **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपने मेह़बूबे पाक, हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम इन्सानिय्यत के लिए रेह़मत बना कर मबऊ़स फ़रमाया। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ (پ۱۷،الانبیآء:۱۰۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रेह़मत सारे जहान के लिए।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को इ़ल्म से मुज़य्यन किया और इन्हें ज़ाहिरो बातिन की पाकीज़गी अ़त़ा फ़रमाई। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने ह़कीम में इरशाद फ़रमाया :

كَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝ (پ۲، البقرة،۱۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जैसा हम ने तुम में भेजा एक रसूल तुम में से कि तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता और किताब और पुख़्ता इ़ल्म सिखाता है और तुम्हें वोह तालीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इ़ल्म न था।

इस से येह भी मालूम हुवा कि ज़ाहिरो बातिन की पाकीज़गी के लिए इ़ल्म का होना बेह़द ज़रूरी है। और ज़ाहिरो बातिन की पाकीज़गी ही को इस्लाह़े नफ़्स का नाम दिया जाता है। फिर येह कि इ़ल्म के हुसूल का हुक्म तो ह़दीस शरीफ़ में बड़े वाज़ेह़ तौर पर दिया गया है। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ وَمُسْلِمَةٍ **तर्जमा :** हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है। (المقاصد الحسنة، حرف الطاء المهملة، الحديث: ٦٦٠، ص٢٨٢)

(ابن ماجة، كتاب السنة، باب فضل العلماء والحث على طلب العلم، الحديث ٢٢٣، ص ٢٤٩١)

सय्यिदी आला ह़ज़रत, इमामे एह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये शिर्को बिदअ़त इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "हर उस शख़्स पर उस की ह़ालते मौजूदा के मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है और इन्हीं में से हैं मसाइले ह़लालो ह़राम कि हर फ़र्दे बशर (यानी इन्सान) इन का मोह़ताज है और मसाइले इ़ल्मे क़ल्ब यानी फ़राइज़े क़ल्बिय्या मसलन तवाज़ोअ़ व इख़्लास व तवक्कुल वग़ैरहा और इन के तुरुक़े तह़सील

(यानी ह़ासिल करने के त़रीक़े) और मोह़रिमाते बात़िनिय्या (मसलन) तकब्बुर व रिया व उ़ज्ब व ह़सद वग़ैरहा और इन के मुआ़लजात कि इन का इ़ल्म भी हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है जिस त़रह़ बे नमाज़ फ़ासिक़ो फ़ाजिर व मुर्तकिबे कबाइर (यानी कबीरा गुनाह करने वाला) है यूंही बिऐ़निही रिया से नमाज़ पढ़ने वाला इन्हीं मुसीबतों में गिरिफ़्तार है। نَسْئَلُ اللهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ (यानी हम **अल्लाह** तआ़ला से अ़फ़्वो आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं) (फ़तावा रज़विय्या, जि : 23, स : 624)

बहर ह़ाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाद सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और फिर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ख़ल्क़े ख़ुदा की रेहनुमाई, इन्हें उ़लूम से मुज़य्यन करने और इन की इस्लाह़े नफ़्स के काम को सर अन्जाम देते रहे। जूं जूं ज़माना तरक़्क़ी करता गया, इस्लाह़े नफ़्स के त़रीक़ों में भी तब्दीलियां आती गईं और तक़रीर के साथ साथ तेह़रीर के ज़रीए़ भी लोगों की इस्लाह़ की कोशिशें की गईं और बुज़ुर्गाने दीन علیهم رحمة الله المتین ने तेह़रीरो तक़रीर हर ज़रीए़ से लोगों की इस्लाह़ की सइ़ये बलीग़ फ़रमाई और बारहा सियासी त़ौर पर इस्लाम को नाक़ाबिले तलाफ़ी नुक़्सान पहुंचा मगर मज़हबी एतिबार से इस्लाम मग़लूब न हो सका। इस की वज्ह येही थी कि सूफ़ियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की इस्लाह़े नफ़्स वाली तेह़रीक के असरात लोगों में मौजूद थे। इन्ही बुज़ुर्गाने दीन علیهم رحمة الله المتین की काविशों का नतीजा है कि आज भी गुलशने इस्लाम हरा भरा और लहलहाता नज़र आ रहा है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की शोहरए आफ़ाक़ तसनीफ़ **"एह़याउल उ़लूम"** ज़ाहिरी व बात़िनी उ़लूम पर मुश्तमिल और इस्लाह़े नफ़्स करने वाली एक मायानाज़ किताब है जिस की तारीफ़ में बड़े बड़े अइम्मा रत़्बुल्लिसान हैं जैसा कि,

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुबकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इरशाद फ़रमाते हैं : "एह़याउल उ़लूम उन कुतुब में से है जिन की ह़िफ़ाज़त और इशाअ़त मुसलमानों पर लाज़िम है ताकि ज़्यादा से ज़्यादा मख़्लूक़ हिदायत याफ़्ता हो जो भी इस किताब में ग़ौर करता है ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो जाता है।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मज़ीद फ़रमाया : "अगर लोगों के पास एह़याउल उ़लूम के इ़लावा एह़ले इ़ल्म की कोई किताब न रहे तो येही उन के लिए काफ़ी है। मैं फ़ुक़हा की तसनीफ़ात में नज़रो फ़िक्र और नक़्लो असर के एतिबार से इस किताब की मिस्ल कोई किताब नहीं पाता।"

(اتحاف السادة المتّقين، باب الاحوال المتعلقة بمصنف هذا الكتاب، الفصل التاسع عشر، ج ١، ص ٣٧)

ज़ेरे नज़र किताब **"लुबाबुल एह़या"** (यानी एह़या का ख़ुलासा) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की उसी मश्हूरे ज़माना तसनीफ़ **"एह़याउल उ़लूम"** का ख़ुलासा है जो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़ुद ही तेह़रीर फ़रमाया। इस किताब में इन्सान के तमाम मामूलाते ज़िन्दगी का जामेअ़ बयान है। इस में एक **मुक़द्दमा**, एक **ख़ातिमा** और चालीस **अब्वाब** हैं जिन में से हर दस अब्वाब बित्तरतीब **इ़बादात, आ़दात, मोहलिकात और मुन्जियात** पर मुश्तमिल हैं। **इ़बादात** में बुन्यादी अ़क़ाइद, अरकाने इस्लाम, वज़ाइफ़ और दुआ़एं बयान की गई हैं। **आ़दात** में सुन्नत के

www.dawateislami.net

मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का जामेअ़ बयान है। **मोहलिकात** में इन्सान को हलाकत में डालने वाली चीज़ें (मसलन नफ़्सानी ख़्वाहिशात, ज़बान, गुस्सा और ह़सद की आफ़ात, बुख़्ल, तकब्बुर, उ़ज्ब यानी खुद पसन्दी और हुब्बे माल और हुब्बे जाह की मज़म्मत वग़ैरा) बयान की गई हैं और **मुन्जियात** में इन्सान को नजात दिलाने वाली अश्या (मसलन तौबा, सब्रो शुक्र, ख़ौफ़ो रजा, फ़क़्रो ज़ोह्द, तौह़ीद व तवक्कुल और मुराक़बा व मुह़ासबा वग़ैरा) का बयान है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शोबए तराजिमे कुतुब के मदनी उ़लमा كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की अनथक काविशों से इस का उर्दू तर्जमा **"एह्याउल उ़लूम का ख़ुलासा"** के नाम से शाएअ़ हो कर आप के हाथों में है। इस में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे ह़बीब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى, की इ़नायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे एह्ले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पूर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़ेह्मी का दख़्ल है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى चूंकि शाफ़ेई थे इस लिए फ़िक़्ही एतिबार से इख़्तिलाफ़ी मसाइल में ह़त्तल इमकान **अह़नाफ़ का मौक़िफ़ ह़ाशिये** में बयान कर दिया गया है। और तकब्बुर, ह़सद, रियाकारी वग़ैरा की तारीफ़ात के लिए भी ह़वाशी का इल्तिज़ाम किया गया है। तर्जमे के लिए **"दारुल बैरूती दमिश्क़"** का नुस्ख़ा इस्तिमाल किया गया है।

तर्जमा करते हुवे दर्जे ज़ैल उमूर का ख़ुसूसी त़ौर पर ख़याल रखा गया है :

★....सलीस और बा मुह़ावरा तर्जमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी अच्छी त़रह़ समझ सकें।

★....आयाते मुबारका का तर्जमा आला ह़ज़रत, इमामे एह्ले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमए क़ुरआन **कन्ज़ुल ईमान** से लिया गया है।

★....बयान कर्दा अह़ादीसे मुबारका की तख़रीज का ह़त्तल मक़्दूर एहतिमाम किया गया है।

★....जगह ब जगह मुफ़ीद ह़वाशी का एहतिमाम किया गया है, बिल ख़ुसूस फ़िक़्ही मसाइल में अह़नाफ़ के मौक़िफ़ की वज़ाह़त की गई है।

★....कई मक़ामात पर मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी ब्रेकेट में लिख दिए गए हैं। नीज़ कई अल्फ़ाज़ पर एराब भी लगाए गए हैं।

★....अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े औक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** करने के लिए **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दावते इस्लामी की तमाम मजालिस बशुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शोबए तराजिमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

तआ़रुफ़े मुसन्निफ़

नाम व नसब

आप की कुन्यत अबू ह़ामिद, लक़ब हुज्जतुल इस्लाम और नामे नामी, इस्मे गिरामी मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अह़मद तूसी ग़ज़ाली رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی है।

विलादते बा सआ़दत

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه 450 हि. ख़ुरासान के शह्र तूस में पैदा हुवे। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के वालिदे गिरामी इसी शह्र में ऊन कात कर बेचा करते थे।

इ़ल्मी ज़िन्दगी

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने इब्तिदाई तालीम अपने शह्र में ह़ासिल की और फ़िक़्ह की किताबें ह़ज़रते अह़मद बिन मुह़म्मद राज़कानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पढ़ीं। फिर 20 साल से कम उ़म्र में जुर्जान में इमाम अबू नस्र इस्माईली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे। फिर तूस वापस तशरीफ़ लाए और तीन साल वहीं ठहरे रहे। इस के बाद 473 हि. नैशापुर में इमामुल ह़रमैन इमाम जुवैनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में ज़ानूए तलम्मुज़ तै किया और उन से उसूले दीन, इख़्तिलाफ़ी मसाइल, मुनाज़रा, मन्तिक़, ह़िक्मत और फ़ल्सफ़ा वग़ैरा में महारते ताम्मा ह़ासिल की और उन में से हर फ़न में बेहतरीन और मुदल्लल कुतुब तसनीफ़ फ़रमाईं। (एक मौक़अ़ पर इमामुल ह़रमैन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह इरशाद फ़रमाया कि **"ग़ज़ाली इ़ल्म के दरियाए ज़ख़्ख़ार हैं!"**)

असातिज़ए किराम

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के चन्द मश्हूर असातिज़ा के नाम येह हैं : फ़िक़्ह में अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद राज़कानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, इमाम अबू नस्र इस्माईली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, इमामुल ह़रमैन अबुल मआ़ली इमाम जुवैनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और ह़ाफ़िज़ उ़मर बिन अबिल ह़सन रवासी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तसव्वुफ़ में अबू अ़ली फ़ज़्ल बिन मुह़म्मद बिन अ़ली फ़ारमदी तूसी। इसी त़रह़ आप के मशाइख़ में यूसुफ़ सज्जाज, अबू सहल मुह़म्मद बिन अह़मद उ़बैदुल्लाह ह़फ़्सी मरवज़ी, ह़ाकिम अबुल फ़त्ह़ नस्र बिन अ़ली बिन अह़मद ह़ाकिमी तूसी, अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन अह़मद ख़वारी, मुह़म्मद बिन यह़या, इब्ने मुह़म्मद सज्जाई ज़ौज़नी, ह़ाफ़िज़ अबुल फ़तयान उ़मर बिन अबिल ह़सन रवासी दहसतानी, नस्र बिन इब्राहीम मक़्दसी वग़ैरा शामिल हैं। और इ़ल्मे कलाम व जदल में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मशाइख़ के बारे में इ़ल्म न हो सका और फ़ल्सफ़ा में आप का कोई उस्ताज़ न था जैसा कि अपनी किताब अल मुन्क़ज़ मिनद़्लाल में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़ुद सराह़त फ़रमाई है।

तलामिज़ा

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बेशुमार शागिर्द थे जिन में से अक्सर अपने वक़्त के मुतबह़्ह़िर आ़लिम, फ़क़ीह, मुह़द्दिस, मुफ़स्सिर और मुसन्निफ़ की ह़ैसिय्यत से मारूफ़ थे । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के शागिर्दाने गिरामी में अ़ल्लामा अबू बक्र अ़रबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, क़ाज़ी अबू नस्र अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, इमाम अबू सईद यह़या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, अबू त़ाहिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, इमाम इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, अबू त़ालिब अ़ब्दुल करीम राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه, जमालुल इस्लाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुस्लिम (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

मद्रसए निज़ामिया में तदरीस

478 हि. में जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का विसाल हो गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुल्क शाहे सल्जूक़ी के वज़ीरे निज़ामुल मुल्क के पास तशरीफ़ ले गए । उस की मजलिस उन दिनों एह्ले इ़ल्म की मजलिस होती थी । वहां आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुख़्तलिफ़ उ़लमा से मुनाज़रे किए, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उन पर ग़ालिब आए और सारे आ़लम में मश्हूर हो गए । वज़ीरे निज़ामुल मुल्क ने बग़दाद में **मद्रसए निज़ामिया** की बुन्याद रखी और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه 484 हि. में वहां उस्ताज़ मुक़र्रर हुवे, लोगों में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बहुत मक़्बूलिय्यत और एह़तिराम ह़ासिल हुवा । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه चार साल बग़दाद में तदरीस व तसनीफ़ में मश्ग़ूल रहे । फिर आप ने तदरीस के लिए अपने भाई को अपना क़ाइम मक़ाम बनाया और ख़ुद ह़ज के इरादे से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा रवाना हो गए ।

दुन्या से बे रग़बती

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی का दिल दुन्या से उचाट हो गया और मुकम्मल त़ौर पर फ़िक्रे आख़िरत में मुन्हमिक हो गए और 489 हि. में दिमश्क़ पहुंचे और कुछ दिन वहां क़ियाम फ़रमाया । फिर एक अ़र्सा बैतुल मुक़द्दस में गुज़ारा । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه दोबारा दिमश्क़ वापस तशरीफ़ लाए और जामेए़ दिमश्क़ (यानी जामेए़ उमवी) के मग़रिबी मनारे पर ज़िक्रो फ़िक्र और मुराक़बे में मश्ग़ूल रहे । (येह शाम की एक बड़ी यूनीवर्सिटी है) इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه शाम में तक़रीबन दस साल रहे । फिर ह़िजाज़, बग़दाद और नैशापुर के दरमियान सफ़र जारी रहा । बिल आख़िर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه त़ूस वापस तशरीफ़ लाए और अपने घर को लाज़िम पकड़ लिया और ता दमे आख़िर वाज़ो नसीह़त, इ़बादत और तदरीस में मश्ग़ूल रहे ।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तसानीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی ने कई उ़लूमो फ़ुनून में सेंकड़ों कुतुब तसनीफ़ कीं जिन में से चन्द के नाम येह हैं :

फ़िक़्हे शाफ़ेई :

(١)تعليقه فی فروع المذهب(٢) بيان القولين(٣) الوجيز فی الفروع(٤) الوسيط المحيط بأقطار البسيط(٥) البسيط فی فروع المذهب
(٦) خلاصه الوسائل إلى علم المسائل فی فروع المذهب (٧)اختصار المختصر(٨) غاية الغور(٩) مجموعه فتاوٰی وغيرها۔

उसूले फ़िक़्ह :

(١٠)تحسين المأخذ(١١) مفصّل الخلاف فی اصول القياس(١٢) مأخذ فی الخلافيات
(١٣)شفاء العليل (١٤)منتخل فی علم الجدل(١٥) المنخول(١٦) المستصفی۔

मन्तिक़ : (١٧)معيار العلم(١٨) محك النظر (١٩)ميزان العمل۔

फ़ल्सफ़ा : (٢٠)مقاصد الفلاسفة۔

इल्मे कलाम :

(٢١)تهافة الفلاسفة(٢٢) المنقذ من الضلال والمفصح عن الاحوال(٢٣) إلجام العوام عن علم الكلام(٢٤) الإقتصاد فی الاعتقاد
(٢٥) المستظهری فی الرد علی الباطنية (٢٦) فضائح الاباحية وحقيقة الروح (٢٧) الرسالة القدسية(٢٨) تفرقة بين الاسلام والزندقة
(٢٩) مواهم الباطنية(٣٠) القول الجميل فی رد علی من غير الانجيل (٣١) القسطاس المستقيم۔

तसव्वुफ़ व अख़्लाक़ :

(٣٢)منهاج العابدين الی جنّةِ ربّ العالمين (٣٣) كيميائے سعادت(٣٤) احياء علوم الدين (٣٥) القصد الاقصٰی
(٣٦) اخلاق الابرار(٣٧) جواهرالقرآن (٣٨) جواهر القدس فی حقيقة النفس (٣٩) مشكوٰة الانوارفی لطائف الاخيار
(٤٠) مزاج السالكين (٤١)نصيحة الملوك(٤٢) بداية الهداية (٤٣) ايُّها الولد۔

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बाज़ मश्हूर कुतुब के नाम येह हैं :

(٤٤)المقصد الاسنٰی فی شرح اسماء الحسنٰی (٤٥)اربعين (٤٦)المرشد الامين(٤٧) تلبيس ابليس

(अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी इसी नाम से एक किताब लिखी है)

(٤٨)قانون الرسول(٤٩) عجائب صنع الله (٥٠)القربة الی الله،(٥١) المجلس الغزالية(٥٢) تنبيه الغافلين
(٥٣) الفرق بين الصالح وغير الصالح(٥٤) مكاشفة القلوب(٥٥) اسرار الحروف والكلمات۔

हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی का मक़ामो मर्तबा

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इस्माईल हक़्क़ी علیہ رحمۃ اللہ الحق सूरए त़ाहा, आयत नम्बर 18 के तह़्त (तफ़्सीरे रूहुल बयान, जि. 5, स. 374-375 पर) नक़्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम राग़िब अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی ने मुहाज़रात में ज़िक्र फ़रमाया कि साहिबे हिज़्बुल बह़र आ़रिफ़ बिल्लाह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : ''मैं मस्जिदे अक़्सा में मह़वे आराम था कि ख़्वाब में देखा मस्जिदे अक़्सा के बाहर सेह़्न के दरमियान में एक तख़्त बिछा हुवा है और लोगों का एक जम्ए़ अ़ज़ीम गिरोह दर गिरोह दाख़िल हो रहा है, मैं ने पूछा : ''येह जम्ए़ ग़फ़ीर किन लोगों का है? मुझे बताया गया : ''येह अम्बियाओ रुसुले किराम علی نبینا وعلیهم الصلوٰة والسلام हैं जो हज़रते सय्यिदुना हुसैन ह़ल्लाज رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से ज़ाहिर होने वाली एक ग़लत़ बात पर उन की सिफ़ारिश के लिए हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हैं।" फिर मैं ने तख़्त की त़रफ़ देखा तो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस पर जल्वा फ़रमा हैं और दीगर अम्बियाए किराम जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा और ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ علٰی نبینا وعلیهم الصلوٰة والسلام ज़मीन पर बैठे हैं। मैं उन की ज़ियारत करने लगा और उन का कलाम सुनने लगा।

इसी दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू करते हुवे अ़र्ज़ की : "आप का फ़रमान है : عُلَمَاءُ اُمَّتِیْ كَاَنْبِيَاءِ بَنِیْ اِسْرَائِيْلَ **यानी मेरी उम्मत के उ़लमा बनी इसराईल के अम्बिया की त़रह़ हैं।** लिहाज़ा मुझे इन में से कोई दिखाएं।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی की त़रफ़ इशारा फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से एक सुवाल किया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दस जवाब दिए। तो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया कि जवाब सुवाल के मुत़ाबिक़ होना चाहिए, सुवाल एक किया गया और तुम ने दस जवाब दिए तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی ने अ़र्ज़ की : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप से पूछा था : "وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तेरे हाथ में क्या है ?" तो इतना अ़र्ज़ कर देना काफ़ी था कि "**येह मेरी छड़ी है।**" मगर आप ने उस की कई ख़ूबियां बयान फ़रमाईं।" (येह वाक़िआ़ फ़तावा रज़विय्या जि. 28, स. 410 और النبراس شرح شرح العقائد स. 247 पर भी मौजूद है)

उ़लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं कि गोया इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बारगाह में अ़र्ज़ कर रहे हैं कि "जब आप का हम कलाम, बारी तआ़ला था तो आप ने वुफ़ूरे मह़ब्बत और ग़लबए शौक़ में अपने कलाम को त़ूल दिया ताकि ज़्यादा से ज़्यादा हम कलामी का शरफ़ ह़ासिल हो सके और इस वक़्त मुझे आप से हम कलाम होने का मौक़अ़ मिला है और कलीमे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से गुफ़्तगू का शरफ़ ह़ासिल हुवा है इस लिए मैं ने इस शौक़ व मह़ब्बत से कलाम को त़वालत दी है।" (کوثر الخیرات، ص۴۰)

विसाले पुर मलाल

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی तक़रीबन निस्फ़ सदी आस्माने इ़ल्मो ह़िक्मत के उफ़ुक़ पर आफ़्ताब बन कर चमकते रहे। बिल आख़िर 505 हि. तूस में विसाल फ़रमा गए। ब वक़्ते विसाल आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की उ़म्र मुबारक 55 साल थी।

خُدَا رَحْمَتْ كُنَنْدُ اِيں بَنْدَگَانِ پَاكْ طِيْنَتْ رَا यानी **अल्लाह** तआ़ला अपने इन नेक ख़स्लत बन्दों पर रेह़मत नाज़िल फ़रमाए। (आमीन)

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रेह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। (آمین بجاہ النبی الامین ﷺ)

(ماخوذ از اتحاف السادة المتّقين، تفسير روح البيان، فتاوى رضويه، النبراس شرح شرح العقائد، كوثر الخيرات وغيرها)

www.dawateislami.net

ज़िम्नी फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़हा
मुक़द्दमा	21
हिस्सा अव्वल इबादात	**22**
बाब 1 : इल्म सीखने और सिखाने का बयान	23
बाब 2 : अ़क़ाइद का बयान	40
बाब 3 : त़हारत के असरार	47
बाब 4 : नमाज़ के असरार व मसाइल	58
बाब 5 : ज़कात के असरार का बयान	77
बाब 6 : रोज़े के असरार का बयान	84
बाब 7 : ह़ज के असरार का बयान	89
बाब 8 : तिलावते कुरआने पाक का बयान	116
बाब 9 : अज़कार और दुआओं का बयान	119
बाब 10 : औरादो वज़ाइफ़ का बयान	124
हिस्सा दुवुम आ़दात	**127**
बाब 11 : खाने पीने के आदाब का बयान	128
बाब 12 : आदाबे निकाह़ का बयान	136
बाब 13 : कस्बे मआ़श के आदाब	141
बाब 14 : ह़लालो ह़राम का बयान	145
बाब 15 : आदाबे मह़ब्बत	153
बाब 16 : गोशा नशीनी का बयान	163
बाब 17 : सफ़र के आदाब	166
बाब 18 : समाअ़ और वज्द का बयान	168
बाब 19 : नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना	173
बाब 20 : आदाबे मईशत और अख़्लाक़े नबुव्वत का बयान	180

मज़ामीन	सफ़हा
हिस्सा सिवुम मोह़लिकात (यानी हलाकत में डालने वाले आमाल)	**195**
बाब 21 : अ़जाइबाते क़ल्ब का बयान	195
बाब 22 : रियाज़ते नफ़्स का बयान	212
बाब 23 : पेट और शर्मगाह की शहवत का बयान	223
बाब 24 : ज़बान की आफ़ात	233
बाब 25 : ग़ुस्सा, कीना और ह़सद की आफ़ात	248
बाब 26 : दुन्या की मज़म्मत का बयान	256
बाब 27 : बुख़्ल और ह़ुब्बे माल की मज़म्मत	262
बाब 28 : ह़ुब्बे जाह और रिया की मज़म्मत	273
बाब 29 : तकब्बुर व उ़ज्ब (ख़ुद पसन्दी) की मज़म्मत	286
बाब 30 : ग़ुरूर (यानी ख़ुश फ़ेह़्मी) की मज़म्मत का बयान	290
हिस्सा चहारुम मुन्जियात (नजात दिलाने वाले आमाल)	**300**
बाब 31 : तौबा का बयान	300
बाब 32 : सब्रो शुक्र	307
बाब 33 : रजा और ख़ौफ़ का बयान	312
बाब 34 : ज़ोह्दो फ़क़्र का बयान	324
बाब 35 : तौह़ीद और तवक्कुल का बयान	334
बाब 36 : मह़ब्बत, शौक़ और रिज़ा का बयान	349
बाब 37 : निय्यत, इख़्लास और सिद्क़ का बयान	365
बाब 38 : मुराक़बा व मुह़ासबा का बयान	372
बाब 39 : तफ़क्कुर का बयान	377
बाब 40 : मौत और इस के बाद का बयान	380

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा
मुक़द्दमा	21	उस्ताज़ के आदाब	35
हिस्सा अव्वल इबादात	22	इ़ल्म की आफ़ात का बयान	37
बाब 1 : इ़ल्म सीखने और सिखाने का बयान	23	उ़लमाए आख़िरत और उ़लमाए दुन्या की अ़लामात	37
इ़ल्म के फ़ज़ाइल पर आयाते मुबारका	23	अ़क़्ल और इस के शरफ़ का बयान	39
इ़ल्म के फ़ज़ाइल पर अह़ादीसे मुबारका	23	**बाब 2 : अ़क़ाइद का बयान**	40
इ़ल्मे दीन सीखने की फ़ज़ीलत	25	एह्ले सुन्नत व जमाअ़त के अ़क़ाइद का बयान	40
इ़ल्मे दीन सिखाने की फ़ज़ीलत	25	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर ऐ़ब से पाक है	40
फ़र्ज़े ऐ़न, फ़र्ज़े किफ़ाया, मह़मूद और मज़मूम उ़लूम का बयान	27	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़याते व कुदरत	41
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى	28	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इ़ल्म	41
इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की ग़िज़ा	29	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इरादा	41
इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى का ज़ोह्द	29	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की समाअ़त व बसारत	42
इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ	30	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम	42
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	31	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अफ़्आ़ल	43
ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	31	कलिमए शहादत के दूसरे ह़िस्से रिसालत का बयान	44
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़्यान सौरी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا)	31	बअ़्से बादल मौत पर ईमान लाना	44
		ह़ौज़े कौसर पर ईमान लाना	45
मज़मूम उ़लूम का बयान	31	ह़िसाबो किताब पर ईमान लाना	45
उस्ताज़ व शागिर्द के आदाब का बयान	32	शफ़ाअ़ते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाना	45
शागिर्द के आदाब	32	सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर ईमान लाना	45
शर्ह़े ह़दीस	32	तदरीजन रेहनुमाई करने की वज्ह	46
बेहतरीन इ़ल्म	35	इस्लाम का माना	46

मज़ामीन	सफ़हा	मज़ामीन	सफ़हा
बाब 3 : तह़ारत के असरार	47	पेश्वाई और इमामत का बयान	68
तह़ारत के चार मरातिब हैं	47	जुम्अ़तुल मुबारक की फ़ज़ीलत, आदाब, फ़राइज़ और सुन्नतें	70
अह़दास से तह़ारत का बयान	48	जुम्आ़ की सुन्नतें	71
क़ज़ाए ह़ाजत के आदाब	48	साआ़त की तफ़्सील व नवाफ़िल का बयान	72
वुज़ू का त़रीक़ा	50	ईदैन की नमाज़ का बयान	73
ग़ुस्ल का त़रीक़ा	54	सूरज व चांद ग्रहन की नमाज़	74
फ़राइज़े वुज़ू	54	नमाज़े इस्तिस्क़ा का बयान	75
ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के अस्बाब	55	**बाब 5 : ज़कात के असरार का बयान**	77
तयम्मुम का त़रीक़ा	55	वुजूबे ज़कात के अस्बाब	77
सफ़ाई निस्फ़ ईमान है	56	जानवरों की ज़कात	77
बाब 4 : नमाज़ के असरार व मसाइल	58	ऊंटों की ज़कात	78
नमाज़, सजदा, जमाअ़त और अज़ान वग़ैरा के फ़ज़ाइल	58	गाए की ज़कात	79
फ़ज़ीलते अज़ान	58	बकरियों की ज़कात	79
फ़र्ज़ नमाज़ की फ़ज़ीलत	59	ज़मीन की फ़स्ल की ज़कात	79
अरकान को मुकम्मल अदा करने की फ़ज़ीलत	59	सोने चांदी की ज़कात	80
बा जमाअ़त नमाज़ की फ़ज़ीलत	60	सदक़ए फ़ित्र	80
सजदे की फ़ज़ीलत	61	ज़कात की अदाएगी और इस की शराइत़	80
ख़ुशूअ़ की फ़ज़ीलत	61	ज़कात वुसूल करने वालों का बयान	82
मस्जिद बनाने की फ़ज़ीलत	62	मसारिफ़े ज़कात की अक़्साम	82
नमाज़ के ज़ाहिरी आमाल की कैफ़िय्यत	63	नफ़्ली सदक़े का बयान	82
नमाज़ के फ़राइज़	66	**बाब 6 : रोज़े के असरार का बयान**	84
बात़िनी शराइत़	67	रोज़े के दरजात का बयान	86
आमाले क़ल्बिया का बयान	67	नफ़्ली रोज़ों का बयान	87

मज़ामीन	सफ़हा	मज़ामीन	सफ़हा
बाब 7 : हज के असरार का बयान	89	कुरआने पाक पढ़ने के आदाब	117
ह़ज और मसाजिद की फ़ज़ीलत	89	**बाब 9 : अज़्कार और दुआओं का बयान**	119
मक्कए मुकर्रमा में क़ियाम की फ़ज़ीलत व कराहिय्यत	91	दुआ़ के आदाब	121
मदीनए मुनव्वरा की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत	92	दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल	121
ह़ज की शराइत़, सेह़्ह़त, अरकान, वाजिबात और मम्नूआ़त का बयान	93	इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत	122
ह़ज के सह़ीह़ होने की शराइत़	93	दुआ़ के बेहतर अल्फ़ाज़	123
आज़ादी और इस्तित़ाअ़त	94	**बाब 10 : औरादो वज़ाइफ़ का बयान**	124
अरकाने ह़ज	94	औराद की फ़ज़ीलत, तरतीब और इस के अह़काम	124
ह़ज की अक़्साम	95	फ़ज़ीलत वाले दिन और रातें	125
ह़ज और उ़मरह की अदाएगी के तीन त़रीक़े हैं	95	**ह़िस्सा दुवुम आ़दात**	127
मुतमत्तेअ़ के लिए शराइत़	96	**बाब 11 : खाने पीने के आदाब का बयान**	128
मम्नूआ़ते ह़ज व उ़मरह	97	आदाबे त़आ़म (यानी खाने के आदाब) का बयान	129
ह़ज व उ़मरह में मम्नूअ़ उमूर	97	इजतिमाई़ दावत के आदाब	131
सफ़रे ह़ज के आदाब	98	ज़ियाफ़त (यानी मेहमान नवाज़ी) के आदाब	134
वुक़ूफ़े अ़रफ़ात और मा क़ब्ल उमूर का बयान	104	**बाब 12 : आदाबे निकाह़ का बयान**	136
ह़ज के दीगर आमाल का बयान	106	निकाह़ के फ़वाइद का बयान	137
एह़राम से निकलने के तीन अस्बाब हैं	108	निकाह़ की आफ़ात	137
ख़ुत़बाते ह़ज	108	अ़क़्दे निकाह़ की शराइत़	138
उ़मरह और त़वाफ़े वदाअ़ तक के बक़िय्या उमूर	109	आदाबे निकाह़	138
त़वाफ़े वदाअ़ का बयान	109	मन्कूह़ा के मुतअ़ल्लिक़ शराइत़	138
मदीनए मुनव्वरा की ज़ियारत और आदाब	109	ख़ुश गवार ज़िन्दगी के लिए आठ ख़साइल	139
बाब 8 : तिलावते कुरआने पाक का बयान	116	ख़ावन्द और बीवी की ज़िम्मेदारियां	139
ग़ाफ़िल लोगों की तिलावत की मज़म्मत	116	**बाब 13 : कस्बे मआ़श के आदाब**	141

मज़ामीन	सफ़हा	मज़ामीन	सफ़हा
मुआमलात की सेह्ह़त की शराइत़	142	समाअ़ के आसार	169
मुआमलात में अ़द्ल करने और ज़ुल्म से बचने का बयान	143	**बाब 19 : नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना**	173
		मोह़तसिब के आदाब का बयान	175
बाब 14 : ह़लालो ह़राम का बयान	145	इ़बादात में मुरव्वजा मुन्किरात	175
फ़ज़ीलते ह़लाल	145	बादशाहों को नेकी की दावत देना और बुराई से मन्अ़ करना	176
ह़लाल के दरजात	147		
ह़लालो ह़राम के दरजात	147	**बाब 20 : आदाबे मईशत और अख़्लाक़े नबुव्वत का बयान**	180
शुबहात के मरातिब का बयान	148		
शुबे का दूसरा मक़ाम	149	हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आदाब का बयान	180
तजस्सुस और सुवाल का बयान	150	हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े आ़लिया का बयान	183
माली मज़ालिम से तौबा का बयान	151	आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कुछ दीगर आदाब	186
बादशाहों के वज़ाइफ़ और इन्आ़मात	152	रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू और तबस्सुम	188
बाब 15 : आदाबे मह़ब्बत	153	आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के खाने के आदाब और अख़्लाक़	190
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए उख़ुव्वत का माना	154	आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिबास के मुतअ़ल्लिक़ आदाब और अख़्लाक़	192
उख़ुव्वत और मह़ब्बत के हुक़ूक़	157		
मुसलमान, रिश्तेदार और पड़ोसी के हुक़ूक़	159	आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शुजाअ़त	193
ग़ुलामों के हुक़ूक़	162	आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोजिज़ात	193
बाब 16 : गोशा नशीनी का बयान	163	**ह़िस्सा सिवुम मोह़लिकात**	195
गोशा नशीनी के फ़वाइद व नुक़्सानात और इस की फ़ज़ीलत का वाज़ेह़ बयान	163	**बाब 21 : अ़जाइबाते क़ल्ब का बयान**	195
		क़ल्ब के मआ़नी	195
बाब 17 : सफ़र के आदाब	166	रूह़ के मआ़नी	196
सफ़र करने में क्या निय्यत हो ?	166	नफ़्स के मआ़नी	196
बाब 18 : समाअ़ और वज्द का बयान	168	अ़क़्ल के मआ़नी	197

मज़ामीन	सफ़हा	मज़ामीन	सफ़हा
दिल के लश्कर	198	पांचवीं आफ़त : लड़ाई झगड़ा करना	236
उ़लूम के एतिबार से दिल की ह़ालत नीज़ उ़लमाए ज़ाहिर और सूफ़िया के त़रीक़े में फ़र्क़ का बयान	207	छटी आफ़त : तकल्लुफ़ और बनावट से गुफ़्तगू करना	237
		सातवीं आफ़त : गाली गलोच और फ़ोह़्श कलामी	237
त़रीक़ए सूफ़िया के सह़ीह़ होने का बयान	210	आठवीं आफ़त : लानत करना	237
बाब 22 : रियाज़ते नफ़्स का बयान	212	नवीं आफ़त : गाने गाना व शेर केहना	238
अच्छे और बुरे अख़्लाक़ का बयान	212	दसवीं आफ़त : हंसी मिज़ाह़ करना	238
अख़्लाक़ संवारने का तफ़्सीली त़रीक़ा	214	ग्यारहवीं आफ़त : मज़ाक़ उड़ाना और तमस्ख़ुर करना	239
नफ़्स के उ़यूब पहचानने का बयान	215	बारहवीं आफ़त : राज़ को ज़ाहिर करना	240
अच्छे अख़्लाक़ की अ़लामात का बयान	217	तेरहवीं आफ़त : झूटा वादा करना	240
इब्तिदाई उ़म्र में बच्चों की तरबियत का त़रीक़ा	218	चौदहवीं आफ़त : झूट बोलना और झूटी क़सम खाना	240
मुरीद बनने की शराइत़	219	पन्दरहवीं आफ़त : ग़ीबत	241
बाब 23 : पेट और शर्मगाह की शहवत का बयान	223	ग़ीबत की तारीफ़ और कब ग़ीबत की रुख़्सत है ?	242
भूक की फ़ज़ीलत और शिकम सेरी की मज़म्मत का बयान	223	ग़ीबत के कफ़्फ़ारे का बयान	243
निवाला चबाने में भी वक़्त सर्फ़ होता है	224	सोलहवीं आफ़त : चुग़ली खाना और चुग़ली की तारीफ़	244
पेट की शहवत को तोड़ने वाली रियाज़ात	224	सतरहवीं आफ़त : मुनाफ़क़त	245
शर्मगाह की शहवत तोड़ने का त़रीक़ा	228	अठ्ठारहवीं आफ़त : बेजा तारीफ़ करना	245
मुरीद पर निकाह़ करना वाजिब है या तर्क करना	230	तारीफ़ करने वाले के लिए आफ़ात	245
शहवत की मुख़ालफ़त करने पर फ़ज़ीलत	231	ममदूह़ के लिए आफ़ात	246
बाब 24 : ज़बान की आफ़ात	233	उन्नीसवीं आफ़त : गुफ़्तगू में छोटी ग़लत़ियों से लापरवाही करना	246
पेहली आफ़त : बे मक़्सद कलाम करना	234		
दूसरी आफ़त : फ़ुज़ूल गोई करना	234	बीसवीं आफ़त : सिफ़ाते बारी तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करना	247
तीसरी आफ़त : गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ कलाम करना	235		
चौथी आफ़त : बह़्सो मुबाह़सा करना और झगड़ना	236	**बाब 25 : ग़ुस्सा, कीना और ह़सद की आफ़ात**	248

मज़ामीन	सफ़हा	मज़ामीन	सफ़हा
गुस्से की मज़्मत का बयान	248	हुब्बे जाह	273
गुस्से की ह़क़ीक़त	248	गुमनामी की फ़ज़ीलत	274
गुस्से का इ़लाज	250	हुब्बे जाह की मज़्मत	275
गुस्से के इ़लाज की चन्द सूरतें	250	हुब्बे जाह का इ़लाज	276
फ़ज़ीलते ह़िल्म का बयान	251	हुब्बे जाह का इ़ल्मी इ़लाज	276
अ़फ़्वो दरगुज़र की फ़ज़ीलत का बयान	252	मद्ह़ को पसन्द और मज़्मत को ना पसन्द करने से ख़लासी कैसे मुमकिन है ?	277
नर्मी की फ़ज़ीलत का बयान	253		
ह़सद की मज़्मत का बयान	254	रियाकारी	277
बाब 26 : दुन्या की मज़्मत का बयान	256	रिया की ह़क़ीक़त का बयान	281
दुन्या की मज़्मत	256	रियाए ख़फ़ी का बयान	283
दुन्या की ह़क़ीक़त व माहिय्यत का बयान	260	रियाए ख़फ़ी का इ़लाज	284
बाब 27 : बुख़्ल और हुब्बे माल की मज़्मत	262	गुनाह छुपाने की रुख़्सत	284
माल की तारीफ़ व मज़्मत का बयान	263	रिया के ख़ौफ़ से इ़बादात को छोड़ना जाइज़ नहीं	284
क़नाअ़त और लोगों के माल से बे नियाज़ होने की तारीफ़ और ह़िर्स की मज़्मत	264	**बाब 29 : तकब्बुर व उ़ज्ब (यानी ख़ुद पसन्दी) की मज़्मत**	286
		तकब्बुर का बयान	286
क़नाअ़त पसन्दी का ह़ुसूल	265	तकब्बुर का माना	287
सख़ावत की फ़ज़ीलत	265	तकब्बुर की अक़्साम	287
बुख़्ल की मज़्मत	266	उ़ज्ब (यानी ख़ुद पसन्दी) का बयान	288
ईसार की फ़ज़ीलत	267	उ़ज्ब की ह़क़ीक़त	289
बुख़्ल का इ़लाज	267	उ़ज्ब का इ़लाज	289
फ़क़्र की फ़ज़ीलत और ग़ना की मज़्मत	269	**बाब 30 : ग़ुरूर (यानी ख़ुश फ़ेह़्मी) की मज़्मत का बयान**	290
उ़लमाए सू की मज़्मत	269	ग़ुरूर की मज़्मत पर आयाते करीमा और अह़ादीसे मुबारका	290
बाब 28 : हुब्बे जाह और रिया की मज़्मत	273		

मज़ामीन	सफ़हा	मज़ामीन	सफ़हा
शैतानी धोके के शिकार लोगों की अक़्साम	293	साइलीन के अह्वाल का बयान	327
हिस्सा चहारुम मुन्जियात (नजात दिलाने वाले आमाल)	300	ख़ैर ख़्वाही का अनोखा अन्दाज़	328
बाब 31 : तौबा का बयान	300	ज़ोह्द का बयान	329
तौबा का वुजूब	300	ज़ोह्द क्या है ?	329
तौबा की फ़ज़ीलत	300	ज़ोह्द के दरजात	332
मक़्बूल तौबा का बयान	305	**बाब 35 : तौह़ीद और तवक्कुल का बयान**	334
किन चीज़ों से तौबा करना ज़रूरी है	305	ह़क़ीक़ते तौह़ीद और इस के दरजात का बयान	335
बाब 32 : सब्रो शुक्र	307	तौह़ीद तवक्कुल की अस्ल है	335
कुरआनो ह़दीस में सब्र के फ़ज़ाइल	307	मरातिबे तौह़ीद	335
ह़क़ीक़ते सब्र का बयान	307	इन मरातिब की तफ़्सील	336
सब्रे जमील की तारीफ़ और शुक्र	308	तवक्कुल के मुतअ़ल्लिक़ अस्लाफ़ के अक़्वाल	345
ह़क़ीक़ते शुक्र का बयान और शुक्र के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े	309	तवक्कुल के दरजात	345
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बारे में शुक्र का मफ़्हूम	310	मुतवक्किलीन के आमाल का बयान	346
बाब 33 : रजा और ख़ौफ़ का बयान	312	आमाले मुतवक्किलीन की अक़्साम	346
उम्मीद की फ़ज़ीलत और तरग़ीब	313	अ़यालदार का तवक्कुल	347
ख़ौफ़ का बयान	316	**बाब 36 : मह़ब्बत, शौक़ और रिज़ा का बयान**	349
अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ	317	मह़ब्बत का माना	350
ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ	318	ह़दीसे पाक की शर्ह़	350
सह़ाबए किराम और ताबेईन का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ	321	मुदरिकात की अक़्साम	352
बाब 34 : ज़ोह्द व फ़क़्र का बयान	324	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत का क़ुर्ब बख़्शने वाले अस्बाब	352
माल का फ़क़ीर	324		
फ़क़्र की फ़ज़ीलत	325	मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ का बयान	353
सुवाल करने की मुमानअ़त और इजाज़त	327	बन्दे के लिए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत का बयान	359

मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा
फ़ज़ीलते रिज़ा का बयान	361	फ़िक्र की ह़क़ीक़त और इस का नतीजा	379
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करने वाला मुरीद	362	फ़िक्र की गुज़रगाहें	379
अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान	364	बाब 40 : मौत और इस के बाद का बयान	380
		मौत के ज़िक्र की फ़ज़ीलत	380
बाब 37 : निय्यत, इख़्लास और सिद्क़ का बयान	365	उम्मीदों को कम करना और लम्बी उम्मीदों की मज़म्मत	381
निय्यत की ह़क़ीक़त का बयान	366	सकराते मौत का बयान	383
निय्यत इख़्तियारी चीज़ नहीं	367	सकराते मौत के वक़्त क्या किया जाए ?	383
इख़्लास का बयान	368	दूसरी मुसीबत	385
इख़्लास की ह़क़ीक़त का बयान	370	मलकुल मौत और ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِمَا السَّلَام	385
इख़्लास के बारे में मशाइख़े किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم के अक़्वाल	370	मलकुल मौत और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِمَا السَّلَام	386
सिद्क़ की ह़क़ीक़त का बयान	371	तीसरी मुसीबत	387
सिद्दीक़ का माना	371	मुर्दा अपना ठिकाना देख लेता है	387
बाब 38 : मुराक़बा व मुह़ासबा का बयान	372	क़रीबुल मर्ग (यानी मरने के क़रीब शख़्स) को क्या करना चाहिए ?	387
नफ़्स की निगहदाश्त	373	मौत के वक़्त मोहलत नहीं दी जाएगी	388
पेहला मक़ाम : नफ़्स से शराइत़ तै करना	373	रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का विसाले मुबारक	389
दूसरा मक़ाम : मुराक़बा करना	373		
तीसरा मक़ाम : अ़मल के बाद नफ़्स का मुह़ासबा करना	373	आक़ाए दो जहां عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आख़िरी घड़ियां	390
चौथा मक़ाम : कोताही पर सज़ा देना	374	अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल	395
पांचवां मक़ाम : मुजाहदा करना	374		
छटा मक़ाम : झिड़कना	374	अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल	396
ह़िकायत	375		
बाब 39 : तफ़क्कुर का बयान	377	अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल	398
तफ़क्कुर की फ़ज़ीलत	377		

मज़ामीन	सफ़हा	मज़ामीन	सफ़हा
अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का विसाल	398	मोमिन का सफ़रे आख़िरत	403
		मुर्दा जूतों की आवाज़ सुनता है ?	403
क़रीबुल मर्ग (मरने के क़रीब) लोगों के अक़्वाल	399	काफ़िर का सफ़रे आख़िरत	404
ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का वक़्ते विसाल	399	सूर के फूंके जाने और मा बाद के ह़ालात	406
ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का वक़्ते विसाल	399	शफ़ाअ़त का बयान	407
ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی का वक़्ते विसाल	400	ह़ौज़े कौसर का बयान	407
क़ब्र की ह़ालत और क़ब्रों के पास बुज़ुर्गों के अक़्वाल	400	जहन्नम और इस की सख़्तियां और अ़ज़ाब	407
औलाद की मौत के वक़्त के आदाब	400	जन्नत और इस की नेमतें	408
ज़ियारते क़ुबूर	401	दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ	409
मौत की ह़क़ीक़त	401	**इख़्तितामिया**	410
क्या मुर्दे ज़िन्दों का कलाम सुनते हैं ?	401	नेक फ़ाली के तौ़र पर वुस्अ़ते रेह़मते इलाही पर दलालत करने वाली अह़ादीस का बयान	410
मलाएकए रेह़मत का मय्यित को तसल्ली देना	402		
क़ब्र का मय्यित से कलाम करना	402	मआख़िज़ो मराजेअ़	413
अ़ज़ाबे क़ब्र और मुन्कर नकीर के सुवालात	402	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब	416

दावते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **ग़ौरो फ़िक्र** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पेहली तारीख़ को अपने यहां के (दावते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिए कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

मुक़द्दमा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तमाम नेमतों पर और उस ने जो अपनी ह़म्द करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई उस पर उस का शुक्र है, और दुरूदो सलाम हो तमाम रसूलों के सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी, रसूल और बन्दए ख़ास हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल, असह़ाब, आप के ख़ुलफ़ा और आप के वुज़रा पर रेह़मतें हों।

अम्मा बाद !

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं :

मुझ पर अपने कुछ सफ़रों के दौरान येह बात ज़ाहिर हुई कि मैं अपनी किताब "**एह़्याउल उ़लूमिद्दीन**" का ख़ुलासा मुरत्तब कर दूं क्यूंकि इस के बहुत ज़्यादा ज़ख़ीम होने की वज्ह से इस से नफ़्अ़ ह़ासिल करने में मुश्किल पेश आ रही थी पस मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौफ़ीक़ व भलाई चाहते हुवे और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में दुरूदो सलाम का नज़राना पेश करते हुवे इस काम का आग़ाज़ किया। (जो पायए तकमील तक पहुंचा)

इस ख़ुलासे के चालीस अबवाब हैं जो चार ह़िस्सों पर मुश्तमिल हैं :

(1).....इ़बादात (2).....आ़दात (3).....मोहलिकात (4).....मुन्जियात

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही सीधी राह की तौफ़ीक़ बख़्शने वाला है।

हि़स्सा अव्वल
इ़बादात

बाब 1 : इ़ल्म सीखने और सिखाने का बयान

बाब 2 : अ़क़ाइद का बयान

बाब 3 : त़हारत के असरार

बाब 4 : नमाज़ के असरार व मसाइल

बाब 5 : ज़कात के असरार का बयान

बाब 6 : रोज़े के असरार का बयान

बाब 7 : ह़ज के असरार का बयान

बाब 8 : तिलावते कुरआने पाक का बयान

बाब 9 : अज़्कार और दुआ़ओं का बयान

बाब 10 : औरादो वज़ाइफ़ का बयान

हिस्सा अव्वल

इबादात

बाब : 1 इल्म सीखने और सिखाने का बयान

इल्म के फ़ज़ाइल पर आयाते मुबारका

इल्म की फ़ज़ीलत के बारे में कुरआने मजीद में बे शुमार दलाइल हैं। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿۱﴾ يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ (پ ۲۸، المجادلہ: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इ़ल्म दिया गया दरजे बुलन्द फ़रमाएगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "उ़लमाए किराम, आ़म मोमिनीन से सात सौ दरजे बुलन्द होंगे और हर दो दरजों के दरमियान पांच सौ साल की मसाफ़त होगी।"

﴿۲﴾ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ (پ۲۳، الزمر: ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान।

﴿۳﴾ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ (پ۲۲، فاطر: ۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।

﴿۴﴾ وَ تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَاۤ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ۝ (پ۲۰، العنکبوت: ۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह मिसालें हम लोगों के लिए बयान फ़रमाते हैं और इन्हें नहीं समझते मगर इ़ल्म वाले।

इल्म के फ़ज़ाइल पर अहादीसे मुबारका

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उ़लमा, अम्बिया (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के वारिस हैं।"

(سنن ابی داؤد، کتاب العلم، باب فی فضل العلم، الحدیث ۳۶۴۱، ص۱۴۹۳)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "लोगों में से अफ़्ज़ल वोह मोमिन आ़लिम है कि जब उस की ज़रूरत पड़े तो नफ़्अ़ दे और जब उस से बे नियाज़ी बरती जाए तो वोह भी बे नियाज़ हो जाए।"

(شعب الایمان للبیہقی، باب فی طلب العلم، فصل فضل العلم وشرفہ، الحدیث ۱۷۲۰، ج۲، ص۲۶۹، مفہوماً)

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "ईमान बे लिबास है इस का लिबास तक़्वा, इस की ज़ीनत ह़या और इस का फल इ़ल्म है।"

(فردوس الاخبار للديلمی ،باب الالف ،الحديث ٣٨٠،ج١،ص٧٢)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "लोगों में दरजए नबुव्वत के ज़्यादा क़रीब उ़लमा और मुजाहिदीन हैं।" उ़लमा, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की लाई हुई तालीमात की त़रफ़ लोगों की रेहनुमाई करते हैं जबकि मुजाहिदीन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की लाई हुई शरीअ़त (की ह़िफ़ाज़त) के लिए अपनी तल्वारों से जिहाद करते हैं।"

(سير أعلام النبلاء ،الطبقة الخامسة و العشرون ،الرقم٤٣٣٧،الحسينی محمد بن محمد بن زيد ،ج١٤، ص٥٢،مختصرًا)

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आ़लिम ज़मीन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अमीन होता है।" (فردوس الاخبار للديلمی ،باب العين ،الحديث٤٠٣٦،ج٢،ص٨٣)

हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "बरोज़े क़ियामत तीन त़रह़ के लोग सिफ़ारिश करेंगे (1) अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (2) उ़लमा और (3) शुहदा।" (سنن ابن ماجة،ابواب الزهد ،باب ذكر الشفاعة ،الحديث٤٣١٣،ص٢٧٣٩)

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ मूसली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने ह़ाज़िरीन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "जब मरीज़ को खाने पीने और दवा से रोक दिया जाए तो क्या वोह मर नहीं जाता ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" तो आप ने फ़रमाया : "येही मुआ़मला दिल का है जब उसे तीन दिन तक इ़ल्मो ह़िक्मत से रोक दिया जाए तो वोह भी मर जाता है।"

मुसन्निफ़ (यानी इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی) फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ मूसली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने सच फ़रमाया क्यूंकि दिल की ग़िज़ा इ़ल्मो ह़िक्मत है और इन दोनों से दिल ज़िन्दा रेहता है जैसे जिस्म की ग़िज़ा खाना पीना है पस जिस ने इ़ल्म को न पाया उस का दिल बीमार है और इस की मौत यक़ीनी है लेकिन उसे इस बात का शुऊ़र नहीं होता क्यूंकि दुन्या में मश्ग़ूलिय्यत उस के एह़सास को ख़त्म कर देती है और जब मौत इन मशाग़िल को ख़त्म कर देती है तो वोह बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ मह़सूस करता है और उसे बे इन्तिहा अफ़्सोस होता है और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान : اَلنَّاسُ نِيَامٌ فَاِذَا مَاتُوْا اِنْتَبَهُوْا "**तर्जमा :** लोग सोए हुवे हैं जब मर जाएंगे तो बेदार हो जाएंगे।" से येही मुराद है।" (حلية الاولياء ،سفيان ثوری ،الحديث٩٥٧٦،ج٧،ص٥٤)

इल्मे दीन सीखने की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुसूले इ़ल्म की फ़ज़ीलत बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ الْمَلَائِكَةَ لَتَضَعُ اَجْنِحَتَهَا لِطَالِبِ الْعِلْمِ رِضًا بِمَا يَصْنَعُ.

तर्जमा : बेशक फ़रिश्ते त़ालिबे इ़ल्मे दीन के काम से राज़ी हो कर उस के लिए अपने पर बिछा देते हैं।

(سنن ابن ماجة ،كتاب السنة ،باب فضل العلماء والحث على طلب العلم ،الحديث٢٢٣/٢٢٦،ص٢٤٩١)

रेह़मते कौनैन, दुखी दिलों के चैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है :

لِاَنْ تَغْدُوَ فَتَتَعَلَّمَ بَاباً مِنَ الْعِلْمِ خَيْرٌ مِنْ اَنْ تُصَلِّيَ مِائَةَ رَكْعَةٍ.

तर्जमा : तुम्हारा सुब्ह़ के वक़्त इ़ल्म का एक बाब सीखने के लिए जाना सौ रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ से बेहतर है।

(سنن ابن ماجة ،كتاب السنة ،باب فضل من تعلم القرآن وعلمه ،الحديث٢١٩،ص٢٤٩٠)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "जो शख़्स इ़ल्मे (दीन) सीखने के लिए जाने को जिहाद नहीं समझता उस की राए और अ़क़्ल नाक़िस है।"

इल्मे दीन सिखाने की फ़ज़ीलत

इ़ल्मे दीन सिखाने की फ़ज़ीलत के बारे में इरशादे बारी तआ़ला है :

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ز (پ٤،ال عمران :١٨٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब **अल्लाह** ने अ़ह्द लिया उन से जिन्हें किताब अ़त़ा हुई कि तुम ज़रूर इसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना।

जब नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत की तो इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिस आ़लिम को इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया उस से वोही अ़ह्द लिया जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से लिया था कि वोह उसे लोगों से बयान करेगा और इसे नहीं छुपाएगा।" (فردوس الاخبار للديلمى ،باب الميم ،الحديث٦٦١٩،ج٢،ص٣٣٢، بدون ما اخذ.....الى.....يبينه)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को यमन की त़रफ़ भेजा तो इरशाद फ़रमाया : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए़ किसी एक शख़्स को हिदायत दे दे तो येह तुम्हारे लिए दुन्याओ मा फ़ीहा (यानी और जो कुछ इस में है) से बेहतर है।" (الزهد لابن المبارك ،الحديث١٣٧٥،ص٤٨٤)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स कोई ह़दीस बयान करे और इस पर अ़मल किया जाए तो उस के लिए अ़मल करने वाले के बराबर सवाब है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इ़ल्म सीखने और सिखाने की फ़ज़ीलत के बारे में मरफ़ूअ़ ह़दीस बयान करते हैं : "इ़ल्म ह़ासिल करो क्यूंकि इ़ल्म का सीखना ख़शिय्यते इलाही का बाइ़स है, इस की तलाश इ़बादत, इस का दर्स तस्बीह़, इस की जुस्तजू करना जिहाद, इस की तालीम देना सदक़ा और इ़ल्म को इस के एह़ल तक पहुंचाना क़ुर्बत (यानी नेकी) है।" इ़ल्म तन्हाई और ख़ल्वत का दोस्त, ख़ुशी व तंगी में रेहनुमा, दोस्तों में नाइब, अक़रिबा में से क़रीब और जन्नत के रास्ते का मीनार है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस के ज़रीए़ बहुत सी क़ौमों को बुलन्दी अ़त़ा फ़रमा कर भलाई के कामों में क़ाइद और हादी बना देता है जिन की इक़्तिदा की जाती है वोह अच्छे कामों में रेहनुमा होते हैं उन के नक़्शे क़दम की पैरवी की जाती है और उन के अफ़्आ़ल की क़द्र की जाती है फ़रिश्ते उन की सोह़बत में रग़बत रखते हैं और उन्हें अपने परों से ढांपते हैं हर ख़ुश्क व तर चीज़ इन के लिए इस्तिग़फ़ार करती है ह़त्ताकि समुन्दर की मछलियां और कीड़े मकोड़े, ख़ुश्की के दरिन्दे व जानवर, आस्मान और इस के सितारे उन के लिए बख़्शिश की दुआ़ करते हैं क्यूंकि इ़ल्म दिल को अन्धेपन से बचा कर क़ुव्वत बख़्शता है बन्दा इस के ज़रीए़ नेक लोगों की मनाज़िल और बुलन्द दरजात को पा लेता है इस में ग़ौरो फ़िक्र रोज़ा रखने के बराबर और इस का दर्स रात के क़ियाम के मसावी है, इ़ल्म के ज़रीए़ ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत व फ़रमां बरदारी होती है इसी से उस की तौह़ीद व बुज़ुर्गी का इक़रार होता है इसी के ज़रीए़ सिलए रेह़मी की जाती है इ़ल्म इमाम और अ़मल उस का ताबेअ़ है इ़ल्म नेक बख़्त लोगों के दिलों में डाला जाता है और बदबख़्तों को इस से मह़रूम रखा जाता है।

अ़क़्ली एतिबार से भी इ़ल्म की फ़ज़ीलत पोशीदा नहीं क्यूंकि इस के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब और इस के जवारे रेह़मत तक रसाई होती है और येह ऐसी अबदी सआ़दत और सरमदी लज़्ज़त है जिस की इन्तिहा नहीं इस में दुन्या की इ़ज़्ज़त और आख़िरत की सआ़दत है क्यूंकि दुन्या आख़िरत की खेती है इस लिए बन्दा अपने इ़ल्म के ज़रीए़ अपने अख़्लाक़ को संवार कर अबदी सआ़दत ह़ासिल कर सकता है और दूसरों को इ़ल्म सिखाना अबदी सआ़दत का सबब है क्यूंकि आ़लिम लोगों के अख़्लाक़ को संवारता और अपने इ़ल्म के ज़रीए़ ऐसी चीज़ों की त़रफ़ दावत देता है जो उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब अ़त़ा करती हैं, जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّکَ بِالْحِکْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ط (پ۱۴، النحل:۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से और उन के उस त़रीक़े पर बह़्स करो जो सब से बेहतर हो।

www.dawateislami.net

पस आ़लिम ख़वास को हिक्मत, अ़वाम को नसीह़त और मुन्किरीन को बह़सो मुबाह़िस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाता है इस त़रह़ वोह अपनी और दूसरों की नजात का सामान करता है और येही इन्सान का कमाल है।

फ़र्ज़े ऐन, फ़र्ज़े किफ़ाया, महमूद और मज़मूम उ़लूम का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ "**तर्जमा :** हर मुसलमान पर इ़ल्म का ह़ासिल करना फ़र्ज़ है।"

(سنن ابن ماجة ،كتاب السنة ،باب فضل العلماء والحث على طلب العلم ،الحديث ٢٢٤،ص ٢٤٩١)

हर बालिग़ मुसलमान पर सिर्फ़ कलिमए तौह़ीदो रिसालत की शहादत और इस का माना व मफ़्हूम समझना ज़रूरी है, उस के अह़काम को दलाइल के साथ जानना लाज़िमी नहीं पस बिग़ैर शको शुबा के उस का एतिक़ाद रखना ही काफ़ी है अगर्चे येह बात तक़्लीद से ह़ासिल हो।

अ़रब के अनपढ़ जब इस्लाम क़बूल करते तो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के साथ ऐसा ही मुआ़मला फ़रमाते, फिर वोह मुस्तक़िल त़ौर पर पेश आने वाले अह़कामे इलाही को सीखने में मश्ग़ूल हो जाते जैसे नमाज़, रोज़ा। पस नमाज़ फ़र्ज़ होने की उ़म्र में वोह नमाज़ सीखते और फ़र्ज़ होने से पेहले इस के लिए तय्यार हो जाते और इसी त़रह़ रोज़ा है।

मुसलमान होने के बाद साल गुज़रने तक अगर वोह इतने माल का मालिक रेहता है जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है तो उस पर ज़कात का इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है और इसे ब क़दरे ज़रूरत सीखना फ़र्ज़ है और इसी त़रह़ ह़ज के फ़र्ज़ होने से आगाह होना भी ज़रूरी है लेकिन जिस त़रह़ फ़ौरन ह़ज अदा करना ज़रूरी नहीं इसी त़रह़ ह़ज का इ़ल्म सीखना भी फ़ौरन ज़रूरी नहीं और फिर ब क़दरे ह़ाजत उन चीज़ों का इ़ल्म ह़ासिल करना भी वाजिब है जो गुनाहों के तर्क से मुतअ़ल्लिक़ हों।

फिर अगर उसे अपने एतिक़ादात में शक हो तो इतना इ़ल्म ह़ासिल करना और ग़ौरो फ़िक्र करना ज़रूरी है जिस से उस का शक दूर हो जाए। इसी त़रह़ उस इ़ल्म का ह़ासिल करना भी फ़र्ज़ है जिस से हलाकत में डालने वाली चीज़ों से नजात ह़ासिल हो और दरजात में बुलन्दी हो। इस के इ़लावा दीगर उ़लूम का सीखना फ़र्ज़े किफ़ाया है फ़र्ज़े ऐ़न नहीं।

मालूम हुवा कि उ़लूम के दरजात का तअ़य्युन इ़ल्मे आख़िरत से क़ुर्ब और दूरी की बिना पर है जिस त़रह़ उ़लूमे शरइ़य्या दीगर उ़लूम से अफ़्ज़ल हैं इसी त़रह़ ह़क़ाइक़े शरीअ़त से तअ़ल्लुक़ रखने वाला ज़ाहिरी इ़ल्म अह़काम से तअ़ल्लुक़ रखने वाले इ़ल्म से अफ़्ज़ल है पस फ़क़ीह ज़ाहिरी त़ौर पर अह़काम के सह़ीह़ और ग़लत़ होने के मुतअ़ल्लिक़ बताता है जबकि एक इ़ल्म उस के इ़लावा है जो इ़बादत के क़बूल होने या रद किए जाने की वज़ाह़त करता है और वोह सूफ़ियाए किराम का इ़ल्म है जिस की वज़ाह़त आगे आएगी।

वोह मश्हूर उ़लमा जिन के मज़ाहिब की त़रफ़ लोग मुतवज्जेह होते हैं और उन की इक़्तिदा करते हैं वोह इ़ल्मे फ़िक़्ह, इ़ल्मे ह़क़ाइक़ और उन पर अ़मल के जामेअ़ थे और येह बात उन के ज़ाहिरी अह़वाल और नक़्ल कर्दा अक़्वाल से इ़यां है और वोह पांच उ़लमा हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई, सय्यिदुना इमाम मालिक, सय्यिदुना इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा, सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और सय्यिदुना इमाम सुफ़्यान सौरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِم) इन में से हर एक जिस त़रह़ लोगों के मसालेह़ से मुतअ़ल्लिक़ ज़ाहिरी उ़लूम का माहिर था, इसी त़रह़ हर एक उ़लूमे आख़िरत का माहिर और आ़बिदो ज़ाहिद था और वोह इन तमाम उ़लूम के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के त़ालिब थे और मौजूदा दौर के फ़ुक़हा ने सिर्फ़ एक ख़स्लत में इन की पैरवी की और वोह फ़िक़्ही मसाइल का इस्तिम्बात़ और इस की इशाअ़त है क्यूंकि बक़िय्या चार ख़साइल का तअ़ल्लुक़ आख़िरत से है और येह ख़स्लत दुन्याओ आख़िरत दोनों से मुतअ़ल्लिक़ है।

अब हम अइम्मए किराम के उन अह़वाल का तज़किरा करते हैं जो इन चारों ख़साइल पर दलालत करते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَافِی

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इद्रीस शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَافِی के आ़बिद होने पर दलील येह है कि आप ने रात को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम फ़रमा रखा था एक तिहाई इ़ल्म के लिए, दूसरा तिहाई इ़बादत के लिए और तीसरा तिहाई नींद के लिए।

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَافِی रमज़ानुल मुबारक में नमाज़ में साठ मरतबा कुरआने मजीद ख़त्म किया करते थे।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के एक दोस्त ह़ज़रते सय्यिदुना बुवैत़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَافِی रोज़ाना एक बार कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाते थे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन कराबीसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَافِی के साथ कई रातें गुज़ारीं आप तक़रीबन रात का एक ह़िस्सा नमाज़ पढ़ते और मैं ने देखा कि आप पचास आयात से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे अगर कभी ज़्यादा पढ़ते तो सौ आयात हो जातीं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जब किसी आयते रेह़मत पर पहुंचते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने लिए और तमाम मोमिनीन के लिए रेह़मत का सुवाल करते और जब अ़ज़ाब वाली आयत पढ़ते तो अ़ज़ाब से पनाह मांगते। अपने लिए और तमाम मोमिनीन के लिए नजात का सुवाल करते।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का पचास आयात पर इक्तिफ़ा करना इस बात पर दलालत करता है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को कुरआने मजीद के असरारो रुमूज़ में तबह़्ह़ुर व कमाल ह़ासिल था।

इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की ग़िज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "मैं ने सोलह साल से कभी सेर हो कर खाना नहीं खाया क्यूंकि पेट का भर जाना बदन को भारी, दिल को सख़्त, दानाई को ज़ाइल करता, नींद को बढ़ाता और इबादत में सुस्ती लाता है।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम की न कभी सच्ची क़सम खाई न झूटी।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से एक मस्अला पूछा गया मगर आप ख़ामोश रहे अ़र्ज़ की गई : "आप जवाब क्यूं नहीं देते ?" इरशाद फ़रमाया : "इस लिए कि जब तक मुझे मालूम न हो जाए कि मेरे ख़ामोश रेहने में बेहतरी है या जवाब देने में।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन यह़या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى क़िन्दीलों के बाज़ार से निकले तो हम आप के पीछे पीछे चल पड़े देखा कि एक शख़्स किसी आ़लिम को बेहूदा बातें केह रहा था ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और इरशाद फ़रमाया : "फ़ोह़्श कलामी सुनने से अपने कानों को पाक रखो जैसे तुम अपनी ज़बानों को बुरे कलाम से पाक रखते हो क्यूंकि (क़स्दन) सुनने वाला केहने वाले के साथ शरीक होता है और बेवुक़ूफ़ आदमी ही अपने बरतन (यानी दिमाग़) में से सब से बुरी बात तुम्हारे बरतनों (यानी दिमाग़ों) में डालने की ह़िर्स करता है। अगर बेवुक़ूफ़ की बात उसी की त़रफ़ लौटा दी जाए तो लौटाने वाला नेक बख़्त होता है जिस त़रह़ कि इस का क़ाइल बदबख़्त होता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "एक दाना ने दूसरे अ़क़्लमन्द की त़रफ़ लिखा कि तुम्हें इ़ल्म दिया गया है लिहाज़ा तुम अपने इ़ल्म को गुनाहों की सियाही से आलूदा न करो, वरना तुम उस दिन अंधेरे में रहोगे जब एह्ले इ़ल्म अपने इ़ल्म की रौशनी में चलेंगे।

इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى का ज़ोह्द

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ज़ोह्द का अन्दाज़ा इस से हो सकता है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाया करते थे : "जिस ने दावा किया कि उस ने दुन्या की मह़ब्बत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत को दिल में जम्अ़ कर लिया, उस ने झूट बोला। एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का अ़सा मुबारक हाथ से गिर गया एक आदमी ने उठा कर दिया तो आप ने उसे बदले में पचास दीनार अ़त़ा फ़रमाए। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की सख़ावत اَشْهَرُ مِنَ الشَّمْسِ यानी सूरज से भी वाज़ेह़ है।

---

1 ...आ़रिफ़ बिल्लाह, ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى सच्ची क़सम तर्क करने पर वारिद होने वाले एक एतिराज़ का जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "चाहिए येह कि सच्ची क़सम छोड़ने को उ़म्दा ख़ूबियों में उस वक़्त शुमार किया जाए जब क़सम मुआ़मलात में झगड़े के वक़्त हो लिहाज़ा झगड़े में जो मुत़ालबा है पूरा कर दे और एक अच्छी बात पर अ़मल करते हुवे क़सम न खाए।" (الحديقة الندية،النوع الرابع والاربعون من الانواع الستين كثرة الحلف....الخ،ج٢،ص٣٢٦)

इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

आप के ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और फ़िक्रे आख़िरत के बारे में आता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिक़्क़ते क़ल्बी के बारे में एक ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के सामने ज़िक्र की तो आप पर ग़शी त़ारी हो गई ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बताया गया : येह तो इन्तिक़ाल कर गए हैं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "अगर इन का इन्तिक़ाल हो गया है तो ज़माने का अफ़्ज़ल तरीन शख़्स फ़ौत हो गया है।"

एक मरतबा किसी ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ۝

(پ ۲۹، المرسلات: ۳۵، ۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह दिन है कि वोह न बोल सकेंगे और न उन्हें इजाज़त मिले कि उ़ज़्र करें।

तो इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى को देखा गया कि येह (आयते मुबारका सुन कर) आप के चेहरे का रंग बदल गया। रोंगटे खड़े हो गए बहुत ज़्यादा तड़पे और बेहोश हो गए जब होश आया तो केहने लगे : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं झूटों के मक़ाम से और ग़ाफ़िलों के अन्जाम से तेरी पनाह चाहता हूं। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! आ़रिफ़ीन के दिल तेरे लिए झुक गए और मुश्ताक़ीन की गर्दनें तेरी हैबत के सामने ख़म हो गईं। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने जूदो करम से ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमा और मुझे अपने पर्दए करम व रेह़मत में छुपा ले और अपने लुत़्फ़ो करम से मेरी कोताहियों को मुआ़फ़ फ़रमा।"

दिलों के असरार से आप के वाक़िफ़ होने पर येह रिवायत दलालत करती है कि आप से किसी ने रिया के बारे में पूछा तो आप ने फ़िल बदीही इरशाद फ़रमाया : "रियाकारी एक फ़ितना है जिसे ख़्वाहिशाते नफ़्स ने उ़लमा की क़ल्बी आंखों के सामने ला खड़ा किया है उन्हों ने उस की त़रफ़ नफ़्स की बुरी चाहत के साथ देखा तो उन के आमाल बरबाद हो गए।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम्हें अपने आप पर ख़ुद पसन्दी का डर हो तो देखो तुम किस की रिज़ा चाहते हो ? किस सवाब में रग़बत रखते हो ? किस अ़ज़ाब से भागते हो ? किस आ़फ़िय्यत का शुक्र अदा करते हो ? और किस मुसीबत को याद करते हो ?

आप ने फ़िक़्ह और मुनाज़रे से भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा त़लब की जैसा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं चाहता हूं कि लोग इस इ़ल्म से नफ़्अ़ उठाएं और इस में कुछ भी मेरी त़रफ़ मन्सूब न हो।" येह बात इस पर क़त़ई दलील है कि आप ने इ़ल्म से लोगों में शोहरत और दुन्या की ख़्वाहिश नहीं की।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "मैं ने किसी से भी मुनाज़रा करते हुवे येह नहीं चाहा कि वोह ग़लत़ी करे और मैं ने जिस से भी कलाम किया इस लिए किया कि उसे तौफ़ीक़ ह़ासिल हो, ताकि वोह सीधे रास्ते पर रहे और इस की मदद की जाए और **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उसे ह़िमायत व ह़िफ़ाज़त ह़ासिल रहे और मैं ने जब भी किसी से कलाम किया तो चाहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ज़बान से ह़क़ को वाज़ेह़ फ़रमाए या उस की ज़बान से।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं चालीस साल से हर नमाज़ के बाद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के लिए दुआ़ मांगता हूं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه भी इन पांच ख़साइल से आरास्ता थे। चुनान्चे,

जब पूछा गया कि त़लबे इ़ल्म के बारे में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه क्या फ़रमाते हैं तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इरशाद फ़रमाया : "बहुत अच्छा है लेकिन देखो जो सुब्ह़ से शाम तक तुम्हारा साथ न छोड़े तुम भी उस के साथ रहो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से चालीस मसाइल पूछे गए तो आप ने बत्तीस मसाइल के बारे में फ़रमाया : "मुझे मालूम नहीं।

अल ग़रज़ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का ज़ोहदो तक़्वा मोह़ताजे बयां नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه निस्फ़ रात इ़बादत में गुज़ारते थे, एक बार आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه रास्ते से गुज़र रहे थे किसी शख़्स ने आप की त़रफ़ इशारा करते हुवे कहा : "येह वोह शख़्स है जो तमाम रात इ़बादत में गुज़ारता है।" इस के बाद से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सारी रात इ़बादत में गुज़ारना शुरूअ़ कर दी और फ़रमाते कि "मुझे इस बात से ह़या आती है कि मेरी उस बात पर तारीफ़ की जाए जो मुझ में नहीं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़्यान सौरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا)

इन दोनों अइम्मए किराम का ज़ोह्दो तक़्वा भी मोह़ताजे बयां नहीं और अ़न क़रीब इस किताब में ऐसी ह़िकायात आएंगी जो इन के ज़ोह्दो तक़्वा पर दलालत करती हैं।

अब इन सब ह़ज़रात की पैरवी का दावा करने वालों को देखो ! क्या वोह अपने दावे में सच्चे हैं या नहीं !

मज़मूम उ़लूम का बयान

मज़मूम उ़लूम (यानी जिन की मज़म्मत की गई है) से मेरी मुराद इ़ल्मे सेह़र, इ़ल्मे त़िलिस्म, सितारों और फ़ल्सफ़ा वग़ैरा का इ़ल्म है, त़िलिस्म और जादू का इ़ल्म शदीद नुक़्सान का बाइ़स है। रहा इ़ल्मे नुजूम तो इस की मुमानअ़त ह़दीसे पाक से साबित है। चुनान्चे,

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीहत बुन्याद है : اِذَا ذُكِرَتِ النُّجُومُ فَاَمْسِكُوْا "**तर्जमा :** जब सितारों के बारे में गुफ़्तगू हो तो ख़ामोश रहो।" (المعجم الكبير، الحديث١٠٤٤٨، ج١٠، ص١٩٨)

इस ह़दीसे पाक में हमें इ़ल्मे नुजूम के ज़िक्र पर ख़ामोश रेहने का हुक्म दिया गया है क्यूंकि इन्सान अस्बाब पर इन्ह़िसार करने में दिलचस्पी लेता है ख़्वाह वोह अस्बाब ज़ाहिरी हों या ख़याली और शायद इसी वज्ह से वोह ह़क़ीक़ी मुसब्बिबुल अस्बाब यानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल हो जाता है।

और इ़ल्मे फ़ल्सफ़ा ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर की त़रफ़ ले जाता है इस लिए ना पसन्दीदा है और इ़ल्मे ह़िसाब की मुख़ालफ़त और इस का इन्कार मुमकिन नहीं लेकिन सिर्फ़ इसी में मश्ग़ूल होना अपने अस्ल मक़्सद से हट जाना है इस लिए इसे ब क़दरे ह़ाजत ही सीखा जाए और इ़ल्मे त़बीइय्यात को भी ब क़दरे ज़रूरत सीखा जाए और इ़ल्मे नुजूम को सम्तों के तअ़य्युन और सम्ते क़िब्ला जानने के लिए सीखा जाए। (واللہ تعالٰی اعلم)

उस्ताज़ और शागिर्द के आदाब का बयान

शागिर्द के आदाब

त़ालिबे इ़ल्म के लिए आदाब व फ़राइज़ तो बहुत हैं लेकिन इन्हें सात अक़्साम में तक़्सीम किया जाता है।

पेहला अदब : सब से पेहले अपने नफ़्स को बुरे अख़्लाक़ से पाक करे। चुनान्चे,

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : بُنِيَ الدِّيْنُ عَلَى النَّظَافَةِ "**तर्जमा :** दीन की बुन्याद त़हारत पर है।"

(المجروحين لابى حاتم محمد بن حبان البستى، باب النون، الرقم١١١٩، نعيم بن مورع، ج٢، ص٤٠١، روايت بالمعنى)

शर्हे ह़दीस

(इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि) "यहां त़हारत से मुराद सिर्फ़ कपड़ों का साफ़ होना ही नहीं बल्कि दिल की सफ़ाई भी मुराद है इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान दलील है :

اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ (پ١٠، التوبة: ٢٨) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुश्रिक निरे नापाक हैं।

इस आयते मुक़द्दसा से ज़ाहिर हुवा कि नजासत सिर्फ़ कपड़ों के साथ ख़ास नहीं क्यूंकि जब तक बात़िन ख़बाइस से पाक न हो उस वक़्त तक इ़ल्मे नाफ़ेअ़ ह़ासिल नहीं होता और न ही इ़ल्म के नूर से इन्सान रौशनी पा सकता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "इ़ल्म कसरते रिवायात का नाम नहीं बल्कि येह ऐसा नूर है जो दिलों में डाला जाता है।

बाज़ मुह़क़्क़िक़ीन ने फ़रमाया : "हम ने ग़ैरे ख़ुदा के लिए इ़ल्म सीखा लेकिन इ़ल्म ने ग़ैरे ख़ुदा के लिए ह़ासिल होने से इन्कार कर दिया, यानी इ़ल्म ने हम से कनारा कशी की और हमारे लिए ह़क़ीक़त वाज़ेह़ न हुई, और हम ने इस के अल्फ़ाज़ और बातें ह़ासिल कीं।

दूसरा अदब : दुन्यावी मुआ़मलात में अपनी मश्ग़ूलिय्यत कम करे और अपने वत़न से दूर रहे ताकि तह़सीले इ़ल्म के लिए इस का दिल फ़ारिग़ हो सके क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी बन्दे के सीने में दो दिल नहीं बनाए इसी लिए कहा गया है : "इ़ल्म तुझे अपना बाज़ ह़िस्सा भी नहीं देगा जब तक कि तू उसे अपना सब कुछ न दे दे।"

तीसरा अदब : त़ालिबे इ़ल्म अपने इ़ल्म पर तकब्बुर न करे और न अपने उस्ताद पर हुक्म चलाए बल्कि अपनी लगाम उस के हाथ में दे दे जैसे क़रीबुल मर्ग मरीज़ दवा के मुआ़मले में अपना इख़्तियार त़बीब को दे देता है उसे चाहिए कि वोह हमेशा उस्ताद की ख़िदमत के लिए कमरबस्ता रहे जैसा कि मरवी है कि,

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक आदमी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई फिर आप के सुवार होने के लिए आप का ख़च्चर क़रीब लाया गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आगे बढ़े और उस की रिकाब पकड़ ली। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद भाई ! इसे छोड़ दें।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : "हमें उ़लमा व अकाबिरीन के साथ इसी त़रह़ पेश आने का हुक्म दिया गया है।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन के हाथों का बोसा लिया और कहा : "हमें अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एह्ले बैत से इसी त़रह़ पेश आने का हुक्म दिया गया है।"

मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है : لَیْسَ مِنْ اَخْلَاقِ الْمُؤْمِنِ التَّمَلُّقُ اِلَّا فِیْ طَلَبِ الْعِلْمِ "**तर्जमा :** मोमिन के अख़्लाक़ में से ख़ुशामद करना नहीं मगर इ़ल्म ह़ासिल करने के लिए ख़ुशामद कर सकता है।"

(شعب الایمان للبیھقی،باب فی حفظ اللسان ،الحدیث٤٨٦٣،ج٤،ص٢٢٤)

एक शाइ़र ने कहा है : اَلْعِلْمُ حَرْبٌ لِلْفَتٰی الْمُتَعَالِیْ کَالسَّیْلِ حَرْبٌ لِلْمَکَانِ الْعَالِیْ

तर्जमा : इ़ल्म को उस नौजवान से अ़दावत है जो तकब्बुर करता है जिस त़रह़ सैलाब को बुलन्द मकान से दुश्मनी होती है।

चौथा अदब : त़ालिबे इ़ल्म लोगों के इख़्तिलाफ़ में ग़ौरो ख़ौज़ करने से एह़तिराज़ करे क्यूंकि येह बात उस की अ़क़्ल व ज़ेह्न को ह़ैरानो शशदर कर देगी इस लिए कि इब्तिदा में दिल इस

www.dawateislami.net

बात की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाता है जो उस को बताई जाए ख़ुसूसन बेकार कामों पर जो सुस्ती व काहिली का सबब बनते हैं इस लिए इब्तिदाई त़ालिबे इ़ल्म को मुन्तही (ज़्यादा इ़ल्म वाले) के अफ़्आ़ल की इक़्तिदा करना दुरुस्त नहीं ह़त्ताकि बाज़ ह़ज़रात ने कहा है कि "जिस ने हमें इब्तिदा में देखा वोह दोस्त बन गया और जिस ने हमें इन्तिहा में देखा वोह ज़िन्दीक़ हो गया।" क्यूंकि आख़िर में इस त़रह़ के लोगों के आज़ा फ़राइज़ के इ़लावा दीगर ह़रकात (यानी आमाल) से ख़ामोश हो जाते हैं और वोह नवाफ़िल की बजाए सैरे क़ुलूब करते हैं और हमेशा आ़लमे शुहूद में होते हैं और ग़ाफ़िल येह समझता है कि येह उन की सुस्ती व काहिली है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّ هِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ط (پ ٢٠، النمل:٨٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तू देखेगा पहाड़ों को ख़याल करेगा कि वोह जमे हुवे हैं और वोह चलते होंगे बादल की चाल।

पांचवां अदब : त़ालिबे इ़ल्म पसन्दीदा इ़ल्म के फ़ुनून में से कोई फ़न न छोड़े बल्कि इस में इस क़दर ग़ौर करे कि वोह मक़्सूद से आगाह हो जाए फिर अगर ज़िन्दगी वफ़ा करे तो इस में महारत ह़ासिल करे वरना इस से ज़्यादा अहम में मश्ग़ूल हो जाए और अहम इ़ल्म को इख़्तियार करना तमाम उ़लूम पर मुत्त़लअ़ होने के बाद ही मुमकिन है।

छटा अदब : त़ालिबे इ़ल्म को चाहिए कि वोह अहम इ़ल्म की त़रफ़ मश्ग़ूल हो और वोह इ़ल्मे आख़िरत है यानी इ़ल्मे मुआ़मला और इ़ल्मे मुकाशफ़ा। इ़ल्मे मुआ़मला की इन्तिहा इ़ल्मे मुकाशफ़ा है जबकि इ़ल्मे मुकाशफ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मारिफ़त है और येह वोह नूर है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे के दिल में डालता है जिस ने इ़बादत व मुजाहदा के ज़रीए़ अपने बात़िन को आलाइशों से पाक कर लिया हो और इस नूर की इन्तिहा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रुत्बए ईमान पर होती है और उन के ईमान के बारे में ख़ुद हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَوْوُزِنَ اِيْمَانُ اَهْلِ الْاَرْضِ بِاِيْمَانِ اَبِيْ بَكْرٍ لَرَجَحَ "**तर्जमा :** अगर तमाम एह्ले ज़मीन का ईमान अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के ईमान के साथ तोला जाए तो उन का ईमान भारी हो।"

(شعب الایمان للبیهقی،باب القول فی زیادة الایمان .....الخ ،الحدیث٣٦،ج١،ص٦٩)

और येह फ़ौक़ियत उस बात़िनी राज़ के बाइ़स थी जो आप के सीने में पुख़्ता हो गया था न कि दलाइल व बराहीन की तरतीब की वज्ह से और तअ़ज्जुब है उन लोगों पर जो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस क़िस्म के इरशादात सुनते हैं फिर उन्हें सूफ़िया के कलाम की त़रह़ मामूली समझते हैं और ख़याल करते हैं कि येह सूफ़िया की बेहूदा बातें हैं पस इन्सान को चाहिए कि यहां ग़ौरो फ़िक्र करे क्यूंकि इसी मक़ाम पर अस्ल सरमाया ज़ाएअ़ हो जाता है तो तुझे उस राज़ के जानने का ह़रीस होना चाहिए जो फ़ुक़हा व मुतकल्लिमीन की त़ाक़त से बाहर है तुझे उस वक़्त तक उस की राह नहीं मिल सकती जब तक तू उस की त़लब में ह़रीस न हो।

बेहतरीन इ़ल्म

जानना चाहिए कि बेहतरीन इ़ल्म वोह है जिस का मक़्सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मारिफ़त ह़ासिल करना हो और येह एक ऐसा समुन्दर है जिस की गेहराई मालूम नहीं और इस में सब से आला दरजा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का है फिर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی और इस के बाद वोह लोग हैं जो उन के साथ मिले हुवे हैं।

मन्क़ूल है कि पेहले के दो दाना शख़्सों के पास दो ऐसी तेह़रीरें पाई गईं जिन में से एक येह थी : "अगर तुम मुकम्मल त़ौर पर नेकी कर लो तो येह गुमान न करो कि तुम ने कुछ नेकी की है जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मारिफ़त ह़ासिल न हो और तुम्हें मालूम न हो जाए कि वोही मुसब्बिबुल अस्बाब और तमाम अश्या का पैदा करने वाला है।" और दूसरी में येह लिखा हुवा था : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मारिफ़त ह़ासिल होने से पेहले मैं पानी पीता था मगर फिर भी प्यासा रेहता था लेकिन जब मुझे उस की मारिफ़त ह़ासिल हो गई तो मैं कोई चीज़ पिए बिग़ैर भी सेराब रेहता हूं।"

सातवां अदब : त़ालिबे इ़ल्म का मक़्सद येह होना चाहिए कि वोह अपने बात़िन को उन चीज़ों से आरास्ता करे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मुक़र्रबीन में से मलाए आला (यानी आ़लमे अरवाह़) के क़रीब ले जाती हों और अपने इ़ल्मो फ़ज़्ल से हुकूमत, माल और मर्तबे की ख़्वाहिश न करे।

उस्ताज़ के आदाब

उस्ताज़ की ख़ूबियों के बारे में कहा गया है कि जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और इस पर अ़मल किया वोह ऐसा शख़्स है जिसे मलकूते समावी में अ़ज़ीम कहा जाता है उसे चाहिए कि वोह उस सूई की त़रह़ न हो जो दूसरों के लिबास तो सीती है मगर ख़ुद नंगी रेहती है या उस चराग़ की बत्ती की त़रह़ न हो जो दूसरों को तो रौशन करती है मगर ख़ुद जल जाती है। जैसे कहा गया है :

صِرْتُ كَأَنِّیْ ذُبَالَةٌ نُصِبَتْ تَضِیْءُ لِلنَّاسِ وَهِیَ تَحْتَرِقُ

तर्जमा : मैं चराग़ में लगाई हुई बत्ती की त़रह़ हो गया जो लोगों को तो रौशन करती है मगर ख़ुद जल जाती है।

तालीम देने में मश्ग़ूल होने वाला बहुत भारी ज़िम्मेदारी उठाता है लिहाज़ा उसे चाहिए कि वोह इस के आदाब व शराइत़ को याद रखे।

पेहला अदब : त़लबा पर शफ़्क़त करे और उन्हें अपनी औलाद की त़रह़ समझे। चुनान्चे, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हारे लिए इस त़रह़ हूं जैसे वालिद अपनी औलाद के लिए होता है।"

(سنن ابن ماجة ،ابواب الطهارة ، باب الاستنجاء بالحجارة .....الخ ،الحديث٣١٣،ص٢٤٩٦)

www.dawateislami.net

हक़ीक़त में उस्ताज़ ही बाप होता है क्यूंकि बाप फ़ानी ज़िन्दगी का और उस्ताज़ अबदी ज़िन्दगी का सबब बनता है चुनान्चे, इस का हक़ मां बाप के हक़ पर मुक़द्दम है।

जब तक रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पेशे नज़र न हो तो दुन्यावी मक़ासिद के लिए इल्म सिखाना हलाक होना और हलाक करना है पस एक उस्ताद के त़लबा को चाहिए कि वोह एक दूसरे से मह़ब्बत करें क्यूंकि उ़लमा और आख़िरत के त़ालिब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह के मुसाफ़िर हैं और दुन्या से गुज़र कर उसी की त़रफ़ जाने वाले हैं ज़िन्दगी के माह व साल रास्ते की मन्ज़िलें हैं और जो मुसाफ़िर एक शह्र से दूसरे शह्र की त़रफ़ सफ़र करते हैं उन के दरमियान बाहमी रफ़ाक़त एक दूसरे से मह़ब्बत और दोस्ती का सबब बनती है तो जो सफ़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरदौसे आला (यानी जन्नत) की त़रफ़ हो और इस में तंगी भी न हो तो मह़ब्बत कैसे न होगी पस उन्हें चाहिए कि वोह मुक़ाबला बाज़ी और जंगो जदल से दूर रहें। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ (پ۲۶، الحجرٰت:۱۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुसलमान मुसलमान भाई हैं।

दूसरा अदब : उस्ताज़ को चाहिए कि वोह हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा करे और इल्म सिखाने पर उजरत त़लब न करे।

चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا۝ (پ۲۹، الدھر:۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते।

उस्ताज़ का शागिर्दों को इल्म सिखाना अगर्चे उस का उन पर एह़सान है मगर शागिर्दों का भी उस्ताज़ पर एह़सान है क्यूंकि वोह त़ालिबे इल्मों के दिलों में इल्म व ईमान को पुख़्ता करने के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करता है।

तीसरा अदब : उस्ताज़ को चाहिए कि नसीह़त करने का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने दे जैसे त़ालिबे इल्म का अपने हक़ से पेहले रुत्बे को ह़ासिल करने की ख़्वाहिश करना और ज़ाहिरी उ़लूम ह़ासिल करने से पेहले पोशीदा उ़लूम में ग़ौरो ख़ौज़ करना, तो उस्ताज़ ऐसी बातों से मन्अ़ करे।

चौथा अदब : उस्ताज़ को चाहिए कि वोह त़ालिबे इल्म को ह़त्तल इमकान इशारों किनायों से नसीह़त करे और इसे बुरे अख़्लाक़ से रोके वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में न कहे क्यूंकि वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ से रोकना हैबत को ख़त्म कर देता है नीज़ उस्ताज़ को पेहले ख़ुद साह़िबे इस्तिक़ामत होना चाहिए। फिर त़ालिबे इल्म से इस्तिक़ामत का मुत़ालबा करे वरना नसीह़त का कोई फ़ाएदा नहीं क्यूंकि अफ़्आ़ल की पैरवी अक़्वाल की पैरवी से ज़्यादा मज़बूत़ व मुस्तह़कम होती है।

इ़ल्म की आफ़ात का बयान

उ़लमाए आख़िरत और उ़लमाए दुन्या की अ़लामात

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اَشَدُّ النَّاسِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَالِمٌ لَا يَنْفَعُهُ اللّٰهُ بِعِلْمِهٖ

तर्जमा : क़ियामत के दिन सब से ज़्यादा अ़ज़ाब उस आ़लिम को होगा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के इ़ल्म से नफ़्अ़ नहीं दिया।

(شعب الایمان ،باب فی بر الوالدین ،فصل فی عقوق الوالدین ،الحدیث۷۸۸۸،ج٦،ص١٩٧ ،بتغیر)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

مَنِ ازْدَادَ عِلْمًا وَلَمْ يَزْدَدْ هُدًى لَمْ يَزْدَدْ مِنَ اللّٰهِ اِلَّا بُعْدًا.

तर्जमा : जिस शख़्स के पास इ़ल्म ज़्यादा हो और हिदायत ज़्यादा न हो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर हो जाता है।

(فردوس الاخبار للدیلمی ،باب المیم ،الحدیث٦٢٩٨،ج٢،ص٣٠٣) ولم یزدد هدیً:بدله:فلم یزدد فی الدنیا زهداً)

जान लो ! आ़लिम का इ़ल्म में मश्ग़ूल होना उस की सलामती को ख़त़रे में डाल देता है फिर या तो वोह हलाक हो जाता है या अबदी सआ़दत ह़ासिल कर लेता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लील बिन अह़मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "लोग चार क़िस्म के हैं (1) वोह शख़्स जो इ़ल्म रखता है और इसे मालूम भी है कि उस के पास इ़ल्म है तो येह आ़लिम है इस की पैरवी करो। (2) वोह शख़्स जो इ़ल्म रखता है लेकिन उसे मालूम नहीं कि उस के पास इ़ल्म है येह शख़्स सोया हुवा है इसे जगा दो। (3) वोह शख़्स जो इ़ल्म नहीं रखता और उस का ख़याल भी येही है कि वोह इ़ल्म नहीं रखता येह हिदायत का त़ालिब है इस की रेहनुमाई करो। और (4) वोह शख़्स जो इ़ल्म नहीं रखता और उसे येह भी मालूम नहीं कि उस के पास इ़ल्म नहीं है ऐसा शख़्स जाहिल है उसे छोड़ दो।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इ़ल्म अ़मल को पुकारता है अगर वोह इस का जवाब दे तो ठीक वरना इ़ल्म चला जाता है।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِیْۤ اٰتَیْنٰهُ اٰیٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا

(پ٩ ،الاعراف:١٧٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मेह़बूब ! उन्हें उस का अह़वाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वोह उन से साफ़ निकल गया।

उ़लमाए आख़िरत वोह हैं जो अपने दीन के बदले में दुन्या नहीं कमाते और न ही दुन्या के बदले में आख़िरत का सौदा करते हैं क्यूंकि वोह आख़िरत की इ़ज़्ज़त और दुन्या की ज़िल्लत से आश्ना होते हैं और जो दुन्या को आख़िरत की ज़िद और इस के नुक़्सानात को नहीं जानता वोह ह़क़ीक़ी आ़लिम नहीं और जो इस बात का इन्कार करता है तो उस ने क़ुरआनो ह़दीस और तमाम आस्मानी किताबों और तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रमान का इन्कार किया और जो इस का इ़ल्म होने के बावुजूद इस पर अ़मल नहीं करता वोह शैत़ान का क़ैदी है तो ह़क़ीक़त येह है कि उसे ख़्वाहिशे नफ़्स ने हलाक कर दिया और उस की बदबख़्ती इस पर ग़ालिब आ गई इस लिए जो ऐसे शख़्स की पैरवी करेगा वोह हलाक हो जाएगा तो इस दरजे का शख़्स उ़लमा के गिरोह में कैसे शुमार होगा?

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुनाजात में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "जो आ़लिम अपनी ख़्वाहिश को मेरी मह़ब्बत पर तरजीह़ देता है मैं उसे कम अज़ कम येह सज़ा देता हूं कि उसे अपनी मुनाजात की लज़्ज़त से मह़रूम कर देता हूं, ऐ दावूद عَلَيْهِ السَّلَام मुझ से ऐसे आ़लिम के बारे में सुवाल न करना जिसे दुन्या ने नशे में डाल दिया पस वोह तुझे मेरी मह़ब्बत के रास्ते से रोक देगा और येह लोग मेरे बन्दों पर डाके डालते हैं, ऐ दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ! जो आदमी किसी भागे हुवे को मेरी त़रफ़ ले आता है मैं उसे दाना लिख देता हूं और जिसे मैं दाना लिख दूं उसे कभी भी अ़ज़ाब नहीं दूंगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "उ़लमा की सज़ा दिल की मौत है और दिल की मौत उख़रवी अ़मल के ज़रीए़ दुन्या को त़लब करना है।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जब तुम किसी आ़लिम को दुन्या से मह़ब्बत करता देखो तो समझ लो कि तुम्हारे दीन में वोह तोहमत ज़दा है क्यूंकि हर मह़ब्बत करने वाला उसी मह़ब्बत में मश्ग़ूल रेहता है जिस से वोह मह़ब्बत करता है।"

ह़ज़रते यह़या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उ़लमाए दुन्या से फ़रमाते : "ऐ उ़लमा ! तुम्हारे मह़ल्लात क़ैसर के मह़ल्लात की त़रह़ और तुम्हारे घर किस्रा के घर जैसे हैं सिर्फ़ तुम्हारे कपड़े (ज़ाहिरन) पाक हैं और तुम्हारे मोज़े जालूत के मोज़ों की त़रह़ हैं, तुम्हारी सुवारियां क़ारूनी, बरतन फ़िरऔ़नी और मह़ाफ़िले सोग दौरे जाहिलिय्यत जैसी हैं और तुम्हारे त़ौर त़रीक़े शैत़ानी हैं, शरीअ़ते मुह़म्मदी عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कहां हैं?" शाइ़र केहता है :

وَرَاعِی الشَّاةِ یَحْمِی الذِّئْبَ عَنْهَا فَكَيْفَ اِذَا الرُّعَاةُ لَهَا ذِئَابُ

तर्जमा : बकरियां चराने वाला उन को भेड़िये से बचाता है मगर उस वक़्त क्या करें जब चरवाहे ही भेड़िये बन जाएं।

एक और शाइर केहता है :

يَـامَـعْشَـرَ الْـقُـرَّاءِ يَـامِـلْـحَ الْبَـلَـدِ مَـايَـصْـلِـحُ الْـمِـلْـحُ اِذَاالْـمِـلْـحُ فَسَـدَ

तर्जमा : ऐ उ़लमा के गिरोह ! ऐ शहर के नमक ! जब ख़ुद नमक ही ख़राब हो जाए तो वोह किसी को कैसे दुरुस्त कर सकता है।

जान लो ! दीनदार आ़लिम के ज़्यादा लाइक़ येह बात है कि वोह अपने खाने, लिबास रिहाइश और अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी से मुतअ़ल्लिक़ तमाम चीज़ों में मियानारवी इख़्तियार करे। आसूदगी और ऐशो इशरत की त़रफ़ तवज्जोह न दे और न इस में मुबालग़ा करे अगर्चे दुन्या से ज़ोह्द इख़्तियार करने में मुबालग़ा न करे और उ़लमा को चाहिए कि जहां तक मुमकिन हो हुक्मरानों और दुन्यादारों के पास जाने से बचें ताकि इन के फ़ितनों से मह़फ़ूज़ रेह सकें।

अ़क़्ल और इस के शरफ़ का बयान

अ़क़्ल इ़ल्म का मम्बअ़ है इस की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ الْعَقْلَ **तर्जमा :** "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब से पेहले अ़क़्ल को पैदा किया।" फिर उस से फ़रमाया : "आगे बढ़।" वोह आगे बढ़ी फिर फ़रमाया : "पीछे हट।" वोह पीछे हटी फिर फ़रमाया मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ने कोई ऐसी मख़्लूक़ पैदा नहीं की जो मेरे नज़दीक तुझ से बढ़ कर मुअ़ज़्ज़ज़ हो मैं तेरे सबब पकड़ करूंगा, तेरी वज्ह से अ़त़ा करूंगा, तेरे सबब सवाब दूंगा और तेरी वज्ह से अ़ज़ाब दूंगा।"

(حیلة الاولیاء، سفیان بن عیینة، الحدیث ۱۰۸۹٤، ج۷، ص۳۷۲، بتغیرٍ قلیلٍ)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मैं ने जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) से दरयाफ़्त किया : "सरदारी किस चीज़ में है ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "अ़क़्ल में।" (فردوس الاخبار للدیلمی، باب السین، الحدیث ۳۲۳٤، ج۱، ص٤۳۳)

अ़क़्ल की ह़क़ीक़त येह है कि येह ऐसी त़बीअ़त है जिस के सबब मालूमाते नज़रिय्या का इदराक होता है गोया येह ऐसा नूर है जो दिल पर डाला जाता है और जिस के ज़रीए़ से चीज़ों को जानने की इस्तिदाद पैदा होती है और त़बीअ़तों के मुख़्तलिफ़ होने की वज्ह से अ़क़्ल में भी तफ़ावुत पाया जाता है। (واللہ تعالٰی اعلم)

www.dawateislami.net

बाब : 02 अ़क़ाइद का बयान

इस में कई फ़ुसूल हैं

एह्ले सुन्नत व जमाअ़त के अ़क़ाइद का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ाते मुक़द्दसा एक है उस का कोई शरीक नहीं वोह यक्ता है उस का कोई मिस्ल नहीं, बे नियाज़ है उस का कोई मुक़ाबिल नहीं, तन्हा है उस की कोई नज़ीर नहीं, क़दीम है उस से पेहले कोई नहीं, वोह हमेशा से है उस की इब्तिदा नहीं, उस का वुजूद हमेशा रहेगा जिस की इन्तिहा नहीं, अबदी है उस की निहायत नहीं, क़ाइम है उस के लिए इख़्तिताम नहीं, हमेशा के लिए है उस के लिए टूटना नहीं, वोह हमेशा सिफ़ाते जलालिया से मुत्तसिफ़ है और रहेगा, मुद्दतों और ज़मानों के गुज़र जाने से उस के लिए ख़त्म होना और जुदा होना नहीं बल्कि वोही अव्वलो आख़िर है, वोही ज़ाहिरो बातिन है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर ऐब से पाक है

वोह न जिस्मे सूरी है न जौहर है जो किसी ह़द और मिक़्दार में आ सके वोह जिस्मों की मिस्ल नहीं न अन्दाज़ा करने में और न तक़्सीम क़बूल करने में, न वोह जौहर है न उस में कोई जौहर आ सकता है, न वोह अ़र्ज़ है और न उस में एराज़ दाख़िल हो सकते हैं बल्कि वोह किसी मौजूद की मिस्ल नहीं और न कोई मौजूद उस की मिस्ल है न कोई चीज़ उस की मिस्ल है और न वोह किसी चीज़ की मिस्ल है न ही वोह मिक़्दार में आता है न कनारे उस का इह़ाता़ कर सकते हैं और न ही वोह जिहात के इह़ाते़ में आता है, ज़मीनो आस्मां उस को घेर नहीं सकते और इस ने अपनी शान के लाइक़ अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा कि उस ने फ़रमाया है और इस त़रीक़े पर जो उस की मुराद है वोह ऐसा इस्तवा है जो छूने, क़रार पकड़ने, ठहरने, दाख़िल होने और मुन्तक़िल होने से पाक है। अ़र्श उसे नहीं उठाता बल्कि अ़र्श और इस को उठाने वाले उस की क़ुदरत से क़ाइम हैं और इस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में हैं, वोह अ़र्श व आस्मान और तह़्तुस्सरा की ह़दों से बालातर है, और येह बालातर होना ऐसा नहीं जिस की वज्ह से वोह अ़र्श व आस्मान के क़रीब और ज़मीन व तह़्तुस्सरा से दूर हो बल्कि वोह अ़र्श के दरजात से बाला है जैसे वोह तह़्तुस्सरा के दरजात से बाला है, इस के बावुजूद वोह हर चीज़ के क़रीब है, वोह बन्दे से उस की शह रग से भी ज़्यादा क़रीब है। हर चीज़ उस के सामने है क्यूंकि उस का क़ुर्ब अज्साम के क़ुर्ब की त़रह़ नहीं जैसे उस की ज़ात अजसाम की ज़ात की मिस्ल नहीं और वोह किसी चीज़ में ह़ुलूल नहीं करता, न कोई चीज़ उस में ह़ुलूल करती है, वोह इस बात से बुलन्द है कि कोई मकान उस का इह़ाता़ करे जिस त़रह़ वोह ज़माने के दाइरे में मह़दूद होने से पाक है बल्कि वोह तो ज़मान व मकान की तख़्लीक़ से पेहले भी मौजूद था और अब भी पेहले की त़रह़ मौजूद है

और रहेगा। वोह अपनी सिफ़ात के साथ मख़्लूक़ से मुम्ताज़ है। उस की ज़ात में कोई दूसरा नहीं और वोह किसी दूसरी ज़ात में नहीं। वोह तब्दीली और इन्तिक़ाल से पाक है। ह़वादिस और अ़वारिज़ उस पर वारिद नहीं होते बल्कि वोह हमेशा बुज़ुर्गी के साथ मुत्तसिफ़ और ज़वाल से मुनज़्ज़ा रेहता है। वोह अपनी सिफ़ाते कमालिया में मज़ीद कमाल ह़ासिल करने से बे नियाज़ है। उस की ज़ात अ़क़्ल के एतिबार से मालूम व मौजूद है जन्नत में नेक लोग उस के फ़ज़्लो करम और मेहरबानी से आंखों के साथ उस की ज़ियारत करेंगे और इस के जमाले अक़्दस को आंखों के साथ देखने से उस की नेमतों की तक्मील होगी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़यात व क़ुदरत

बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दा व क़ादिर है, जब्बार व ग़ालिब है, उसे कोई आ़जिज़ी व कोताही लाह़िक़ नहीं होती। न उसे ऊंघ व नींद आती है न उस पर फ़ना व मौत त़ारी होती है। वोह बादशाही व मलकूत का मालिक और इ़ज़्ज़त व जबरूत वाला है, उसी के लिए ह़ुकूमत व ग़लबा है, पैदा करना और ह़ुक्म देना उसी के इख़्तियार में है। तमाम आस्मान उसी के क़ाबू में हैं वोह पैदा करने और ईजाद करने में यक्ता है। किसी चीज़ को इब्तिदाअन वुजूद देने और किसी नमूने के बिग़ैर पैदा करने में वोह यक्ता है। उस ने मख़्लूक़ और उन के आमाल को पैदा किया और उन के रिज़्क़ और मौत का तअ़य्युन किया। न उस की मक़्दूरात का शुमार है न ही मालूमात की इन्तिहा है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इ़ल्म

वोह तमाम मालूमात का आ़लिम है, ज़मीन की तह से ले कर आस्मानों की बुलन्दी तक जो कुछ जारी है सब को घेरने वाला है। उस के इ़ल्म से ज़मीनो आस्मान का कोई ज़र्रा बाहर नहीं बल्कि सख़्त अंधेरी रात में सियाह चट्टान पर चलने वाली च्यूंटी के चलने की आवाज़ को भी जानता है और वोह फ़ज़ा में एक ज़र्रे की ह़रकत को भी जानता है। पोशीदा उमूर, दिलों के वस्वसों, ख़त़रात और पोशीदा बातों का इ़ल्म रखता है उस का इ़ल्म क़दीम और अज़ली है और वोह हमेशा हमेशा उस इ़ल्म के साथ मुत्तसिफ़ है। उस का इ़ल्म नया नहीं और न ही वोह उस की ज़ात में आने की वज्ह से ह़ासिल हुवा है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इरादा

बेशक वोह काएनात का इरादा फ़रमाने वाला और नए पैदा होने वाले उमूर की तदबीर फ़रमाने वाला है उस की बादशाही व मलकूत में थोड़ी या ज़्यादा, छोटी या बड़ी, भलाई या बुराई, नफ़्अ़ या नुक़्सान, ईमान या कुफ़्र, इरफ़ान या इन्कार, कामयाबी या नाकामी, इत़ाअ़त या ना फ़रमानी हर चीज़ उसी के फ़ैसले और क़ुदरत और इसी की ह़िक्मत व मशिय्यत से वाक़ेअ़ होती है। पलक का झपकना और दिल का ख़याल उस की मशिय्यत से बाहर नहीं निकल सकता वोह जिस चीज़ को

चाहता है हो जाती है और जिसे नहीं चाहता वोह नहीं होती। वोही इब्तिदाअन पैदा करने वाला और दोबारा (यानी क़ुर्बे क़ियामत में) लौटाने वाला है। जो चाहता है करता है उस के हुक्म को कोई टाल नहीं सकता। उस के फ़ैसले को कोई पीछे नहीं कर सकता। बन्दे के लिए उस की तौफ़ीक़ व रेह़मत के बिग़ैर उस की ना फ़रमानी से बचना मुमकिन नहीं। उस की इत़ाअ़त की क़ुव्वत भी उसी की मह़ब्बत व इरादे से ह़ासिल होती है अगर तमाम इन्सान, जिन्न, फ़रिश्ते और शैत़ान दुन्या में किसी ज़र्रे को ह़रकत देने पर इत्तिफ़ाक़ कर लें या उसे ठहरा दें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इरादे व मशिय्यत के बिग़ैर वोह उस से आ़जिज़ रेह जाएंगे उस का इरादा दीगर सिफ़ात के साथ उस की ज़ात में क़ाइम है। वोह हमेशा से उस से मौसूफ़ है। उस ने अज़ल में अश्या के वुजूद का उन के अवक़ात पर ज़ुहूर का इरादा फ़रमाया चुनान्चे, हर चीज़ उस के अज़ली इरादे के मुत़ाबिक़ बिग़ैर किसी तक़्दीम व ताख़ीर के अपने वक़्त पर ज़ाहिर हुई। उस ने उमूर की तदबीर सोच बिचार और वक़्त की ताख़ीर के बिग़ैर फ़रमाई इस लिए उसे कोई एक काम दूसरे काम से ग़ाफ़िल नहीं करता।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की समाअ़त व बसारत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ समीओ़ बसीर है। वोह सुनता और देखता है। उस की समाअ़त से कोई सुनी जाने वाली चीज़ अगर्चे वोह पोशीदा हो बाहर नहीं और बारीक से बारीक चीज़ भी उस की बसारत से ग़ाइब नहीं। उस की समाअ़त में दूरी और अंधेरा रुकावट नहीं, वोह आंखों की पुतलियों और पलकों के बिग़ैर देखता है और कानों और उन के सूराख़ के बिग़ैर सुनता है जैसे वोह दिल के बिग़ैर जानता, किसी उ़ज़्व के बिग़ैर पकड़ता और किसी आले के बिग़ैर पैदा करता है क्यूंकि उस की सिफ़ात मख़्लूक़ की सिफ़ात जैसी नहीं जैसे उस की ज़ात मख़्लूक़ की ज़ात की त़रह़ नहीं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने अज़ली व क़दीम कलाम के साथ कलाम फ़रमाने वाला, हुक्म देने वाला, मन्अ़ करने वाला, वादा करने वाला, और वई़द बताने वाला है और उस का कलाम उस की ज़ात के साथ क़ाइम है और मख़्लूक़ के कलाम के मुशाबेह नहीं वोह ऐसी आवाज़ नहीं जो हवा के खींचने या अज्साम की रगड़ से पैदा होती है और न ऐसे हुरूफ़ के साथ जो होंटों के बन्द होने या ज़बान के ह़रकत करने से पैदा होते हैं।

बेशक क़ुरआने मजीद, तौरात, इन्जील और ज़बूर उस की किताबें हैं जो उस ने अपने रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल फ़रमाईं क़ुरआने मजीद ज़बानों से तिलावत किया जाता, मसाह़िफ़ में लिखा जाता और दिलों में मह़फ़ूज़ होता है इस के बावुजूद येह कलाम क़दीम है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के साथ क़ाइम है, दिलों और औराक़ की त़रफ़ मुन्तक़िल होने के बावुजूद उस की ज़ात से जुदा नहीं हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम आवाज़ और ह़र्फ़ के

बिग़ैर सुना जिस त़रह़ नेक लोग (बरोज़े क़ियामत) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ियारत यूं करेंगे कि न तो वोह जौहर होगा (यानी जो ख़ुद क़ाइम हो) न अ़र्ज़ (यानी जो दूसरी चीज़ के साथ क़ाइम हो)।

जब वोह इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ है तो वोह ह़यात, इ़ल्म, क़ुदरत, इरादा, समाअ़त, बसारत और कलाम के साथ ज़िन्दा, आ़लिम, क़ादिर, इरादा करने वाला, सुनने वाला, देखने वाला और कलाम करने वाला है मह़ज़ ज़ात की वज्ह से नहीं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अफ़्आ़ल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा जो कुछ मौजूद है वोह उस के फ़ेल से पैदा हुवा और उस के अ़द्ल का फ़ैज़ान है कि वोह निहायत अच्छे त़रीक़े पर ह़द दरजा कामिल व तमाम और निहायत दुरुस्त पैदा हुवा, वोह अपने अफ़्आ़ल में ह़कीम और अपने फ़ैसलों में इन्साफ़ करने वाला है लेकिन उस के अ़द्ल को बन्दों के अ़द्ल पर क़ियास नहीं किया जा सकता क्यूंकि बन्दे के दूसरे की मिल्क में तसर्रुफ़ करने से ज़ुल्म का तसव्वुर भी हो सकता है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में ज़ुल्म का तसव्वुर नहीं हो सकता क्यूंकि उस के इ़लावा कोई मालिक नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का तसर्रुफ़ ज़ुल्म बन जाए उस के सिवा जो कुछ है ख़्वाह वोह इन्सान हो या जिन्न, फ़रिश्ता हो या शैत़ान, ज़मीन हो या आस्मान, ह़ैवानात हों या नबातात व जमादात, जौहर हो या अ़र्ज़, उस चीज़ का इदराक होता हो या वोह मह़सूसात में से हो और हर ह़ादिस चीज़ को वोह अपनी क़ुदरत से अ़दम से वुजूद में लाया है उस के बाद कि वोह कुछ न था उसे पैदा किया अज़ल से सिर्फ़ और सिर्फ़ वोही ज़ात थी उस के साथ दूसरा न था पस उस ने अपनी क़ुदरत और इरादए अज़ली के इज़्हार के लिए मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया और इस की वज्ह येह भी थी कि अज़ल से येह तै़ हो चुका था न इस लिए कि वोह मख़्लूक़ का मोह़ताज व ज़रूरत मन्द था। उस ने मख़्लूक़ को पैदा कर के और मुकल्लफ़ बना कर एह़सान फ़रमाया येह अ़मल उस पर लाज़िम न था उस ने इन्आ़मात व इस्लाह़ से नवाज़ा लेकिन येह बात उस पर लाज़िम न थी अगर वोह अपने बन्दों को त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाब में मुब्तला करता तो उस की त़रफ़ से अ़द्ल होता है और बन्दों को इत़ाअ़त पर जो सवाब अ़त़ा फ़रमाता है वोह मह़ज़ उस के करम से है न कि वोह उस पर लाज़िम है उस ने अपना ह़क़ इ़बादात की सूरत में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुबारक ज़बानों से लाज़िम किया मह़ज़ अ़क़्ल की वज्ह से नहीं। उस ने रसूलों को भेजा और वाज़ेह़ मोजिज़ात के ज़रीए़ उन की सच्चाई को ज़ाहिर किया। उन्हों ने उस के हर अम्र व नही और वादाओ वई़द को लोगों तक पहुंचाया पस जो कुछ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام लाए लोगों पर उस की तस्दीक़ वाजिब है।

कलिमए शहादत के दूसरे हिस्से "रिसालत" का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने उम्मी, हादी, कुरैशी रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी रिसालत अ़त़ा फ़रमा कर तमाम अ़रबो अ़जम और जिन्नो इन्स की त़रफ़ भेजा पस आप की शरीअ़त के ज़रीए़ साबिक़ा शरीअ़तों को मन्सूख़ कर दिया सिवाए उन बातों के जिन्हें बाक़ी रखा गया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर फ़ज़ीलत बख़्शी और आप को तमाम इन्सानों का सरदार बनाया और तौह़ीद यानी لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की गवाही को उस वक़्त तक क़बूल न फ़रमाया जब तक उस के साथ शहादते रिसालत यानी مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه मिला हुवा न हो और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्यवी व उख़रवी उमूर के बारे में जो कुछ बताया उन सब की तस्दीक़ मख़्लूक़ पर लाज़िम फ़रमाई।

किसी शख़्स का ईमान उस वक़्त तक क़बूल न होगा जब तक वोह उन बातों पर ईमान न लाए जो नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मौत के बाद के ह़ालात के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाई : उन में से पेहली बात मुन्कर नकीर के सुवालात हैं, वोह दोनों फ़रिश्ते इन्तिहाई मुहीब व ख़ौफ़नाक हैं, वोह बन्दे को क़ब्र में सीधा कर के बिठा देते हैं और बन्दा उस वक़्त रूह़ व जिस्म के साथ होता है। वोह उस से तौह़ीदो रिसालत के बारे में सुवाल करते हैं और पूछते हैं तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? तेरा नबी कौन है ? वोह दोनों क़ब्र की आज़माइश हैं और उन के सुवालात मौत के बाद पेश आने वाली पेहली आज़माइश है।

बन्दे को अ़ज़ाबे क़ब्र पर ईमान लाना ज़रूरी है क्यूंकि वोह ह़क़ है और रूह़ व जिस्म पर उस की मन्शा के मुत़ाबिक़ ह़िक्मत व अ़द्ल है।

बअ़्से बाद्ल मौत पर ईमान लाना

वोह मर कर ज़िन्दा उठाए जाने पर ईमान लाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन हड्डियों को जो बोसीदा हो चुकी होंगी ज़िन्दा फ़रमाएगा जैसा कि पेहली मरतबा उन्हें पैदा किया था और रूह़ को जिस्म की त़रफ़ लौटाएगा जिस त़रह़ वोह मौत से पेहले दुन्या में था और उसे सह़ीह़ व सालिम इन्सान की शक्ल देगा और मीज़ान पर ईमान लाए जो दो हथेलियों और एक ज़बान वाला होगा और वोह ज़मीनो आस्मां के त़बक़ात जितना बड़ा होगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत से उस में आमाल तोले जाएंगे और बाट (वज़्न करने का आला) उस दिन ज़र्रे और राई के दाने के बराबर होंगे ताकि पूरा पूरा इन्साफ़ हो नेकियों के दरजात होंगे फ़ज़्ले इलाही عَزَّوَجَلَّ से उसी क़दर पलड़ा भारी होगा जबकि बुराइयों के आमाल नामे ज़ुल्मत के पलड़े में रखे जाएंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़द्ल से पलड़ा हल्का हो जाएगा।

इस बात पर ईमान लाना ज़रूरी है कि क़ियामत ह़क़ है और पुल सिरात़ ह़क़ है, वोह ऐसा पुल है जो जहन्नम की पुश्त पर रखा गया है तल्वार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा बारीक है, उस पर कुफ़्फ़ार के पाउं फिसल जाएंगे और उन्हें जहन्नम की त़रफ़ हांका जाएगा जबकि मोमिनीन साबित क़दम रहेंगे और उन्हें जन्नत की त़रफ़ ले जाया जाएगा।

हौज़े कौसर पर ईमान लाना

उस हौज़े कौसर पर भी ईमान ले आए जिस पर लोग हाज़िर होंगे और वोह हमारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हौज़ है, मोमिनीन जन्नत में दाख़िल होने से पेहले और पुल सिरात़ पर से गुज़रने के बाद उस से पियेंगे जिस ने उस से एक घूंट भी पी लिया वोह इस के बाद कभी भी प्यासा नहीं रहेगा, उस की चौड़ाई एक महीने की मसाफ़त है, उस का पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है। उस के गिर्द प्याले रखे होंगे जिन की तादाद आस्मान के सितारों जितनी है उस में दो परनाले हैं जो कौसर से उस में गिरते हैं।

(صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب اثبات حوض.....الخ، الحدیث ۵۹۷۱/۵۹۸۹/ ۵۹۹۰، ص۱۰۸۴ ـ ۱۰۸۵ بتغیرٍ قلیلٍ)

हिसाबो किताब पर ईमान लाना

बन्दे का ह़िसाबो किताब पर ईमान लाना ज़रूरी है और येह एतिक़ाद रखना कि ह़िसाबो किताब, पूछगछ और दरगुज़र के एतिबार से लोगों के मुख़्तलिफ़ दरजे होंगे और इस बात पर ईमान लाए कि कुछ लोग बिग़ैर ह़िसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे और वोह मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ होंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस नबी से चाहेगा तब्लीग़े रिसालत के बारे में पूछेगा और जिस काफ़िर से चाहेगा रसूलों को झुटलाने पर उस का मुआख़ज़ा फ़रमाएगा, बिदअ़ती लोगों से सुन्नत के बारे में और मुसलमानों से आमाल के बारे में पूछेगा।

इस बात का एतिक़ाद रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौह़ीद पर ईमान लाने वाले गुनहगार मुसलमानों को सज़ा के बाद जहन्नम से निकालेगा ह़त्ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से कोई भी मुवह़्ह़िद जहन्नम में हमेशा नहीं रहेगा।

शफ़ाअ़ते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाना

इस बात पर ईमान लाए कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे फिर उ़लमाए किराम फिर शुहदाए इ़ज़्ज़ाम फिर सब मोमिनीन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां अपने मर्तबे व मक़ाम के एतिबार से शफ़ाअ़त करेंगे और जो मोमिन किसी सिफ़ारिश करने वाले के बिग़ैर रेह जाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से उसे जहन्नम से निकालेगा पस जहन्नम में कोई मोमिन बाक़ी नहीं रहेगा बल्कि जिस के दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान होगा वोह भी जहन्नम से निकाल लिया जाएगा।

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर ईमान लाना

वोह सह़ाबए किराम की फ़ज़ीलत और उन की तरतीब पर भी ईमान लाए वोह येह कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद सब से अफ़्ज़ल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और इस के बाद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم हैं तमाम सह़ाबए किराम के बारे में अच्छा अ़क़ीदा रखे और तमाम सह़ाबए किराम की उसी त़रह़ तारीफ़ करे जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और

उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की तारीफ़ की है और येह तमाम बातें अहादीस में आई हैं और आसार इस पर गवाह हैं जो शख़्स यक़ीन के साथ इन बातों पर एतिक़ाद रखे वोह एह्ले ह़क़ और एह्ले सुन्नत में से है वोह गुमराह व बिदअ़ती फ़िर्क़े से अलग है। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने लिए और तमाम मुसलमानों के लिए कमाले यक़ीन और दीन में साबित क़दमी का सुवाल करते हैं, बेशक वोह सब से बढ़ कर रेह़्म फ़रमाने वाला है।

तदरीजन रेहनुमाई करने की वज्ह

जान लो ! बच्चा फ़ित़री त़ौर पर अपनी इब्तिदाई तरबियत के दौरान बिग़ैर किसी दलील के ह़क़ को क़बूल करने की इस्तिदाद रखता है इस लिए चाहिए कि इस को अपने अ़क़ाइद से वाक़िफ़िय्यत करानी चाहिए ताकि वोह इसे याद कर ले, इस के बाद आहिस्ता आहिस्ता वोह इसे समझने और सीने में उतारने लगेगा फिर उसे इन अ़क़ाइद को दलाइल से साबित करने की ज़रूरत पेश आएगी। फिर अ़क़्ल मन्द को चाहिए कि वोह ब क़दरे ज़रूरत ही दलाइल त़लब करे और ज़रूरत येह है कि उसे कोई शुबा लाह़िक़ हो तो उस चीज़ की तलाश में मश्ग़ूल हो जिस से उस का शुबा जाता रहे। जहां तक इब्तिदाअन इ़ल्मे कलाम में ग़ौरो फ़िक्र का तअ़ल्लुक़ है तो येह ऐसे ही है जैसे कोई नातजरिबा कार शख़्स समुन्दर में तैरने के लिए कूद पड़े क्यूंकि अक्सर येह होता है कि शुबे की त़रफ़ मुतवज्जेह होने की वज्ह से एतिक़ाद सलामत नहीं रेहता। हां ! लोगों में से कोई ऐसा माहिर शख़्स होना ज़रूरी है जो ज़रूरत पड़ने पर बिदअ़तियों का रद और शुबहात का इज़ाला कर सके।

इस्लाम का माना

इस्लाम का माना है **"इत़ाअ़त व तस्लीम करना"** और ईमान का माना है **"दिल से क़बूल करना"** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दोनों का ज़िक्र इकठ्ठा फ़रमाया और दोनों से एक ही चीज़ मुराद है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इरशादे पाक है :

فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ (پ ٢٧، الذّٰریٰت:٣٥،٣٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो हम ने उस शहर में जो ईमान वाले थे निकाल लिए तो हम ने वहां एक ही घर मुसलमान पाया।

यानी वहां पर मुसलमानों का सिर्फ़ एक ही घर था।

एक दूसरे मक़ाम पर इन दोनों का ज़िक्र फ़रमाया और दोनों से अलग अलग माना मुराद लिए हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا (پ٢٦، الحُجُرٰت:١٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : गंवार बोले हम ईमान लाए तुम फ़रमाओ तुम ईमान तो न लाए हां यूं कहो कि हम मुत़ीअ़ हुवे।

यानी तुम ने इत़ाअ़त का दम भरा है मगर अभी तक तुम्हारे सीने नहीं खुले।

बाब : 03 तह़ारत के असरार

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَلطُّهُوْرُ شَطْرُ الْاِيْمَانِ "तर्जमा : तह़ारत निस्फ़ ईमान है।"

(صحيح مسلم، كتاب الطهارة، باب فضل الوضوء، الحديث ٥٣٤، ص٧١٨)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नज़ाफ़त निशान है : بُنِيَ الدِّيْنُ عَلَى النَّظَافَةِ "तर्जमा : दीन की बुन्याद तह़ारत पर है।"

(المجروحين لابى حاتم محمد بن حبان البستى، باب النون، الرقم١١١٩ـ نعيم بن مورع، ج٢، ص٤٠١، رواية بالمعنى)

और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مِفْتَاحُ الصَّلٰوةِ اَلطُّهُوْرُ "तर्जमा : नमाज़ की कुन्जी तह़ारत है।" (سنن ابى داؤد، كتاب الطهارة، باب فرض الوضوء، الحديث٦١، ص١٢٢٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ (پ١١، التوبه: ١٠٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : इस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं।

तह़ारत के चार मरातिब हैं

(1) अपने ज़ाहिर को अह़दास (यानी नापाकियों और नजासतों) से पाक करना। (2) आज़ा को जराइम और गुनाह से पाक करना। (3) अपने दिल को बुरे अख़्लाक़ से पाक करना। (4) अपने बात़िन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ैर से पाक रखना येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सिद्दीक़ीन की त़हारत है।

हर मर्तबे में त़हारत उस अ़मल का निस्फ़ है जिस में वोह पाई जाती है और हर मर्तबे में तख़्लिया (यानी ख़ाली करना) और तह़लिया (यानी मुज़य्यन करना) भी पाया जाता है तख़्लिया अ़मल का निस्फ़ है क्यूंकि अज्र का मिलना इसी पर मौक़ूफ़ है इसी की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान भी इशारा फ़रमा रहा है। इरशाद फ़रमाया :

قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ (پ٧، الانعام: ٩١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह कहो, फिर उन्हें छोड़ दो।

पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान "قُلِ اللّٰه" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से दिल को मुज़य्यन करना है जबकि (ثُمَّ ذَرْهُم) से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ से दिल को ख़ाली करना है और इसी त़रह़ दिल को बुरे अख़्लाक़ से पाक कर के इसे अच्छे अख़्लाक़ से मुज़य्यन करना ज़रूरी है और आज़ा के लिए भी ज़रूरी है कि इन्हें गुनाहों से ख़ाली और इत़ाअ़त से मुज़य्यन किया जाए।

इन मरातिब में से हर एक मर्तबा अपने बाद वाले मर्तबे में दाख़िल होने के लिए शर्त़ है इस लिए सब से पेहले ज़ाहिर को, फिर आज़ा को, उस के बाद दिल को और फिर बात़िन को पाक किया जाए और येह गुमान न किया जाए कि त़हारत से मुराद सिर्फ़ ज़ाहिरी त़ौर पर पाक होना ही है क्यूंकि इस से मक़्सूद फ़ौत हो जाएगा और येह भी गुमान न किया जाए कि येह मरातिब सिर्फ़ ख़्वाहिश करने से आरज़ू करने और आसानी से ह़ासिल हो जाएंगे बेशक अगर तू सारी ज़िन्दगी भी इस के ह़ुसूल में कमरबस्ता रहे तो सिर्फ़ बाज़ मक़ासिद में ही कामयाबी पाएगा।

अह़दास से त़हारत का बयान

येह वुज़ू, ग़ुस्ल और तयम्मुम है और इन सब से पेहले इस्तिन्जा है अब हम इन सब का त़रीक़ा, आदाब व सुन्नतों के साथ बयान करेंगे लेकिन इब्तिदा क़ज़ाए ह़ाजत से करेंगे क्यूंकि वोह वुज़ू का सबब है।

क़ज़ाए ह़ाजत के आदाब

इन्सान को चाहिए कि क़ज़ाए ह़ाजत के लिए सह़रा या खुली जगह में लोगों की नज़रों से दूर जाए और अगर कोई चीज़ मयस्सर हो तो उस के साथ पर्दा करे और बैठने की जगह के क़रीब होने से क़ब्ल अपना सत्र ज़ाहिर न करे नीज़ क़िब्ले की त़रफ़ चेहरा करे न पीठ और न ही सूरज और चांद की त़रफ़ रुख़ करे लेकिन अगर घर में हो तो कर सकता है और घर में होते हुवे भी क़िब्ला रुख़ होने या पीठ करने से बचना मुस्तह़ब है।[1] ठहरे हुवे पानी में, फलदार दरख़्तों के नीचे और बिलों (यानी सूराख़ों) में पेशाब न करे। इसी त़रह़ सख़्त जगह और हवा के रुख़ पर भी पेशाब न करे ताकि इस के छींटों से बच सके।

बैतुल ख़ला में दाख़िल होते वक़्त बायां पाउं पेहले अन्दर रखे और निकलते वक़्त पेहले दायां पाउं निकाले और खड़ा हो कर पेशाब न करे और न ही ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब करे क्यूंकि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : عَامَّةُ الْوَسْوَاسِ مِنْهُ "**तर्जमा :** आ़म त़ौर पर वस्वसे इसी से पैदा होते हैं।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب الطهارة ،باب فی البول فی المستحم ،الحدیث ٢٧،ص ١٢٢٤)

---

1 .....**हम अह़नाफ़ के नज़दीक :** क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ या पीठ करना मुत़्लक़न मन्अ़ है, चाहे मैदान में हो या बन्द कमरे में। जैसा कि **अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "पाख़ाना या पेशाब फिरते वक़्त या त़हारत करने में न क़िब्ले की त़रफ़ मुंह हो न पीठ और येह हुक्म आ़म है चाहे मकान के अन्दर हो या मैदान में और अगर भूल कर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पुश्त कर के बैठ गया तो याद आते ही फ़ौरन रुख़ बदल दे, इस में उम्मीद है कि फ़ौरन उस के लिए मग़फ़िरत फ़रमा दी जाए।" (الدرالمختار ورد المحتار، کتاب الطهارة،فصل الاستنجاء،مطلب فی الفرق بین الاستبراء.....الخ،ج١،ص٦٠٨)

अपने साथ कोई ऐसी चीज़ न ले जाए जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ या उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे नामी हो और न ही नंगे सर उस में दाख़िल हो। **बैतुल ख़ला** में दाख़िल होने से पेहले येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ،اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ اَوْ مِنَ الْخَبِيْثِ الْمُخْبِثِ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ करता हूं और ख़बीस जिन्नों और जिन्नियों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं या ख़बीस मरदूद शैत़ान से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं।

(صحیح البخاری ،کتاب الوضوء ،باب ما یقول عند الخلاء ،الحدیث۱٤۲،ص ۱۵)

और निकलने के बाद येह दुआ़ पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّیْ مَا يُؤْذِيْنِیْ،وَاَبْقٰی فِیَّ مَا يَنْفَعُنِیْ

तर्जमा : तमाम तारीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए हैं जिस ने ईज़ा देने वाली चीज़ मुझ से दूर की और नफ़्अ़ देने वाली चीज़ को मुझ में बाक़ी रखा।

(مصنف ابن ابی شیبة ،کتاب الطهارات ،باب ما یقول اذا خرج من المخرج ،الحدیث٦،ج۱،ص۱۲بتغیر)

बैतुल ख़ला में दाख़िल होते वक़्त और निकलते वक़्त उस से बाहर रेह कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे और बैठने से पेहले ढेलों को गिन ले और क़ज़ाए ह़ाजत की जगह पानी से इस्तिन्जा न करे (येह उस वक़्त है जब किसी ज़मीन या खेती वग़ैरा में क़ज़ाए ह़ाजत करे क्यूंकि पानी से नजासत फैलने का ख़दशा है) खांस कर, तीन मरतबा झाड़ कर और उ़ज़्वे मख़्सूस के निचले ह़िस्से पर हाथ फेर कर पेशाब निकलने का इत़मीनान करे इस पर वस्वसा ग़ालिब आ जाए तो चाहिए कि अपनी शलवार वग़ैरा की मियानी पर पानी के कुछ छींटे मार ले।[1] और ह़दीसे मुबारका में है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा ही किया (यानी पानी के छींटे मारे)।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب الطهارة ،باب فی الانتضاح ،الحدیث۱٦۷،ص۱۲۳٤)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लीद और हड्डी से इस्तिन्जा करने से मन्अ़ फ़रमाया।

(صحیح مسلم ،کتاب الطهارة،باب الاستطابة ،الحدیث٦۰۷،ص۷۲۳)

और इस्तिन्जा तीन पथ्थरों से करे और मुस्तह़ब येह है कि पथ्थर और पानी को जम्अ़ करे (यानी बाद में पानी का इस्तिमाल करे) पथ्थर का इस्तिमाल यूं करे कि इसे पिछले मक़ाम पर रख कर

1....**अमीरे एह्ले सुन्नत बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی अपनी किताब **"नमाज़ के अह़काम"** में वुज़ू के मुस्तह़ब्बात बयान करते हुवे नक़्ल फ़रमाते हैं : "बादे वुज़ू मियानी (यानी पाजामा का वोह ह़िस्सा जो पेशाब गाह के क़रीब होता है) पर पानी छिड़कना (पानी छिड़कते वक़्त मियानी को कुर्ते के दामन में छुपाए रखना मुनासिब है नीज़ वुज़ू करते वक़्त भी बल्कि हर वक़्त मियानी को कुर्ते के दामन या चादर वग़ैरा के ज़रीए़ छुपाए रखना ह़या के क़रीब है)।" (नमाज़ के अह़काम, वुज़ू का त़रीक़ा, स. 19)

खींचता हुवा आगे की त़रफ़ ले आए अगर पेशाब गाह के गिर्द फेरने पर क़ादिर हो तो येह बेहतर है। ढेलों से सफ़ाई ज़रूरी है जबकि इन की तादाद का त़ाक़ होना मुस्तह़ब है।[1]

वुज़ू का त़रीक़ा

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हमेशा इसी त़रह़ देखा गया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब भी क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ होते तो वुज़ू फ़रमाते (लेकिन तालीमे उम्मत के लिए कभी इस वक़्त वुज़ू न भी फ़रमाया)।

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

لَا يُحَافِظُ عَلَى الْوُضُوْءِ اِلَّا مُسْلِمٌ "**तर्जमा :** मुसलमान के इलावा कोई वुज़ू की पाबन्दी नहीं करता।"

(سنن ابن ماجة ،ابواب الطهارة ،باب المحافظة على الوضوء ،الحديث ٢٧٧،ص٢٤٩٤)

वुज़ू की इब्तिदा मिस्वाक से करनी चाहिए। सरकारे वाला तबार, बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है :

صَلَاةٌ عَلٰى اَثَرِ سِوَاكٍ اَفْضَلُ مِنْ خَمْسٍ وَّ سَبْعِيْنَ صَلَاةً بِغَيْرِ سِوَاكٍ

तर्जमा : मिस्वाक कर के पढ़ी जाने वाली नमाज़ बिग़ैर मिस्वाक किए पढ़ी जाने वाली नमाज़ से पछत्तर (75) दरजे अफ़्ज़ल है।

(الكامل فى ضعفاء الرجال لابن عدى ،الرقم١٧٩٩ـمَسْلَمَةُ بْنُ عَلِيٍّ اَبُو سَعِيدٍ الْخُشَنِيُّ الشَّامِيُّ،ج٨،ص١٧،بتغير)

फिर वुज़ू के लिए बैठे और بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़े।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

لَا وُضُوْءَ لِمَنْ لَّمْ يُسَمِّ اللّٰهَ تَعَالٰى "**तर्जमा :** जो शख़्स بِسْمِ اللّٰه न पढ़े उस का वुज़ू कामिल नहीं।"

(جامع الترمذى ،ابواب الطهارة ،باب ماجاء فى التسمية عند الوضوء ،الحديث٢٥،ص١٦٣٢،لم يسم اللّٰه:بدله:لم يذكر اسم اللّٰه)

फिर येह दुआ़ पढ़े :

---

1 .....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** पाख़ाना के बाद मर्द के लिए ढेलों का इस्तिमाल करना मुस्तह़ब है। जैसा कि **फ़तावा अल हिन्दिया** में है : "पाख़ाना के बाद मर्द के लिए ढेलों के इस्तिमाल का मुस्तह़ब त़रीक़ा येह है कि गर्मी के मौसिम में पेहला ढेला आगे से पीछे को ले जाए और दूसरा पीछे से आगे की त़रफ़ और तीसरा आगे से पीछे को और जाड़ों में पेहला पीछे से आगे को और दूसरा आगे से पीछे को और तीसरा पीछे से आगे को ले जाए। ढेलों की कोई तादादे मुअ़य्यन सुन्नत नहीं बल्कि जितने से सफ़ाई हो जाए, तो अगर एक से सफ़ाई हो गई सुन्नत अदा हो गई और अगर तीन ढेले लिए और सफ़ाई न हुई सुन्नत अदा न हुई, अलबत्ता मुस्तह़ब येह है कि त़ाक़ हों और कम से कम तीन हों और अगर एक या दो से सफ़ाई हो गई तो तीन की गिनती पूरी करे और अगर चार से सफ़ाई हो तो एक और ले कि त़ाक़ हो जाएं।"

(الفتاوى الهنديه،كتاب الطهارة،الباب السابع فى النجاسة واحكامها، الفصل الثالث،ج١،ص٤٨)

اَعُوْذُ بِکَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ، وَاَعُوْذُبِکَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنَ.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं शैत़ान के वस्वसों से तेरी पनाह चाहता हूं, और ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मैं उस के आने से तेरी पनाह मांगता हूं।

फिर ह़दस को दूर करने या नमाज़ के मुबाह़ होने की निय्यत करे और निय्यत को मुंह धोने तक बाक़ी रखे।[1]

फिर अपने दाएं हाथ में एक चुल्लू पानी ले कर उस से तीन मरतबा कुल्ली करे।[2]

अगर रोज़ादार न हो तो कुल्ली करने और नाक साफ़ करने में मुबालग़ा करे वरना रोज़े में आराम से करे। और येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی قِرَاءَةِ كِتَابِکَ وَ كَثْرَةِ الذِّكْرِ لَکَ.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी किताब की तिलावत और अपने ज़िक्र की कसरत पर मेरी मदद फ़रमा।

फिर नाक साफ़ करने के लिए चुल्लू में पानी ले और एक ही चुल्लू से तीन मरतबा नाक साफ़ करे।[3] और जो कुछ उस में हो उसे झाड़ दे। फिर येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ رَوَائِحِ النَّارِ وَمِنْ سُوْءِ الدَّارِ.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं जहन्नम के बदबू और बुरे घर से तेरी पनाह मांगता हूं।

फिर चेहरे के लिए चुल्लू में पानी ले और पेशानी की सत़्ह़ से ठोड़ी के नीचे तक लम्बाई में और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक चौड़ाई में धोए और पेशानी के दोनों कनारों पर बाल झड़ने की जगह तक का धोना वाजिब नहीं क्यूंकि वोह सर का ह़िस्सा हैं और इस जगह तक पानी पहुंचाना वाजिब है जहां से औ़रतों के बाल हटाने की आ़दत होती है। चार क़िस्म के बालों के उगने की जगह पर भी पानी पहुंचाना वाजिब है और वोह मूंछें, अब्रू, पलकें और कान के मुक़ाबिल रुख़्सार पर उगने वाले बाल हैं। अगर दाढ़ी घनी न हो तो दाढ़ी की जिल्द पर पानी पहुंचाना वाजिब है। निचले होंट के नीचे की जगह के बाल के पतले और घने होने में दाढ़ी के हुक्म में है और वोह लटकी हुई दाढ़ी के ज़ाहिर पर पानी बहाए, आंख के ख़ाने में और सुरमा जम्अ़ होने की जगह में उंगलियां दाख़िल करे और उन को साफ़ करे। फिर येह दुआ़ पढ़े :

1....**शवाफ़ेअ़ के नज़दीक** वुज़ू में निय्यत फ़र्ज़ है जबकि **अह़नाफ़ के नज़दीक** सुन्नत है। जैसा कि **अ़ल्लामा ह़सन बिन अ़म्मार शुरुम्बुलाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی वुज़ू की सुन्नतें बयान करते हुवे तह़रीर फ़रमाते हैं : "वुज़ू में निय्यत करना सुन्नत है।" (نورالایضاح، کتاب الطهارة، فصل فی سنن الوضوء، ج۱، ص۳۰)

2....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** तीन कुल्लियों के लिए तीन बार नया पानी लेना सुन्नत है। जैसा कि **अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "तीन चुल्लू पानी से तीन कुल्लियां करे कि हर बार मुंह के हर पुर्ज़े पर पानी बह जाए और रोज़ादार न हो तो ग़रग़रा करे।" (الدر المختار وردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب السواك، ج۱، ص۲٤۸)

3....**अह़नाफ़ के नज़दीक** इस का हुक्म येह है कि "तीन चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाए कि जहां तक नर्म गोश्त होता है हर बार उस पर पानी बह जाए और रोज़ादार न हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुंचाए और येह दोनों काम दाह़ने हाथ से करे फिर बाएं हाथ से नाक साफ़ करे।" (المرجع السابق)

اَللّٰهُمَّ بَيِّضْ وَجْهِيْ بِنُوْرِكَ يَوْمَ تَبْيَضُّ فِيْهِ وُجُوْهُ اَوْلِيَائِكَ وَلَا تُسَوِّدْ وَجْهِيْ بِظُلُمَاتِكَ يَوْمَ تَسْوَدُّ وُجُوْهُ اَعْدَائِكَ.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने नूर से मेरे चेहरे को रौशन कर देना जिस दिन तेरे दोस्तों के चेहरे रौशन होंगे और अपने अंधेरों से मेरे चेहरे को सियाह न करना जिस दिन तेरे दुश्मनों के चेहरे सियाह होंगे।

और दाढ़ी का ख़िलाल करना मुस्तह़ब है।(1) फिर बाज़ूओं को कोहनियों समेत तीन मरतबा धोए और अंगूठी को ह़रकत दे और आज़ा की चमक को ज़्यादा करे क्यूंकि रिवायत है कि "बेशक (क़ियामत का) ज़ेवर वुज़ू की जगहों तक पहुंचेगा।" दाएं हाथ से शुरूअ़ करे और येह कहे :

اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِيْ كِتَابِيْ بِيَمِيْنِيْ وَحَاسِبْنِيْ حِسَابًا يَّسِيْرًا.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा नामए आमाल मेरे दाएं हाथ में देना और मेरा ह़िसाब आसानी से लेना।

बायां बाज़ू धोते वक़्त येह पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ تُعْطِنِيْ كِتَابِيْ بِشِمَالِيْ اَوْمِنْ وَرَآءِ ظَهْرِيْ.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तू मुझे मेरा आमाल नामा बाएं हाथ में या पीठ के पीछे से दे।

फिर पूरे सर को मस्ह़ से घेरे कि हाथों को तर कर के दाएं हाथ की उंगलियों के सिरे बाएं हाथ की उंगलियों के सिरों से मिलाए और उन्हें सर के अगले ह़िस्से पर रखे और खींचता हुवा गुद्दी तक ले जाए फिर अगले ह़िस्से की त़रफ़ लाए इस त़रह़ तीन मरतबा करे।(2) और येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ غَشِّنِيْ بِرَحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَيَّ مِنْ بَرَكَتِكَ وَاَظِلَّنِيْ تَحْتَ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّكَ.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी रेह़मत से ढांप दे और मुझ पर अपनी बरकत नाज़िल फ़रमा और मुझे अपने अ़र्श के साए के नीचे रखना जिस दिन सिर्फ़ तेरा साया होगा।

फिर नए पानी से कानों के ज़ाहिरो बात़िन का मस्ह़ करे। शहादत की उंगलियों को कानों के सूराख़ों में डाल कर अंगूठों को कानों के बाहर वाले ह़िस्से पर फेरे फिर एह़तियात़न हथेलियों को कानों पर रखे और तीन बार इस त़रह़ करे और येह पढ़े।

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "दाढ़ी का ख़िलाल करना सुन्नत है। जैसा कि **अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : "मुंह धोते वक़्त दाढ़ी का ख़िलाल करे बशर्ते कि एह़राम न बांधे हो, इस का त़रीक़ा येह है कि उंगलियों को गर्दन की त़रफ़ से दाख़िल करे और सामने से निकाले।" (درمختار، کتاب الطهارة، مطلب السواك، ج١، ص٢٥٥)

2....**अह़नाफ़ के नज़दीक** पूरे सर का एक बार मस्ह़ करना और इसी पानी से कानों का मस्ह़ करना सुन्नत है। जैसा कि अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर नसफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : "और एक बार पूरे सर का मस्ह़ करना और इसी पानी से अपने कानों का मस्ह़ करना सुन्नत है।" (کنز الدقائق، کتاب الطهارة، ص٥)

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ الَّذِیْنَ یَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَہٗ،اَللّٰھُمَّ اَسْمِعْنِیْ مُنَادِیَ الْجَنَّۃِ مَعَ الْاَبْرَارِ.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे उन लोगों में से कर दे जो बात को ग़ौर से सुनते हैं फिर अच्छी बात की इत्तिबाअ़ करते हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे नेक लोगों के हमराह जन्नत के मुनादी की आवाज़ सुना दे।

फिर अपनी गर्दन का मस्ह़ करे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : مَسْحُ الرَّقَبَۃِ اَمَانٌ مِّنَ الْغُلِّ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ "**तर्जमा :** गर्दन का मस्ह़ बरोज़े क़ियामत तौक़ से अम्न का ज़ामिन होगा।" (کشف الخفاء ،حرف المیم ،الحدیث۲۲۹۸،ج۲،ص۱۸۶)

गर्दन का मस्ह़ करते हुवे येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ اَعْتِقْ رَقَبَتِیْ مِنَ النَّارِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ السَّلَاسِلِ وَالْاَغْلَالِ.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी गर्दन आग से आज़ाद फ़रमा और मैं तौक़ और ज़न्जीरों से तेरी पनाह चाहता हूं।

फिर दाएं पाउं को तीन मरतबा धोए और बाएं हाथ की छुंगली से दाएं पाउं की उंगलियों का नीचे से ऊपर की त़रफ़ ख़िलाल करे दाएं पाउं की छुंगली (यानी छोटी उंगली) से इब्तिदा कर के बाएं पाउं की छोटी उंगली पर ख़त्म करे। और येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ ثَبِّتْ قَدَمِیْ عَلَی الصِّرَاطِ یَوْمَ تَزِلُّ الْاَقْدَامُ فِی النَّارِ.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे क़दम को पुल सिरात़ पर क़ाइम रखना जिस दिन क़दम फिसल कर जहन्नम में जाएंगे।

(पाउं धोते वक़्त) पानी निस्फ़ पिंडली तक पहुंचाए, और बायां पाउं धोते वक़्त येह दुआ़ पढ़े : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ اَنْ تَزِلَّ قَدَمِیْ عَنِ الصِّرَاطِ یَوْمَ تَزِلُّ اَقْدَامُ الْمُنَافِقِیْنَ "**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं पुल सिरात़ पर से क़दम फिसलने से तेरी पनाह चाहता हूं। उस दिन मुझे साबित क़दम रख जिस दिन मुनाफ़िक़ीन के क़दम फिसल रहे होंगे।"

जब वुज़ू से फ़ारिग़ हों तो यूं कहे :

اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَ رَسُوْلُہٗ "**तर्जमा :** मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई माबूद नहीं वोह एक है उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दए ख़ास और रसूल हैं।"

फिर येह दुआ़ करे :

سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ عَمِلْتُ سُوْءً وَظَلَمْتُ نَفْسِیْ اَسْتَغْفِرُکَ وَ اَتُوْبُ اِلَیْکَ فَاغْفِرْلِیْ وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمِ، اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَھِّرِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنْ عِبَادِکَ الصّٰلِحِیْنَ،وَاجْعَلْنِیْ صَبُوْرًا شَکُوْرًا،وَاجْعَلْنِیْ اَذْکُرُکَ ذِکْرًا کَثِیْرًا، وَاُسَبِّحُکَ بُکْرَۃً وَّ اَصِیْلًا

www.dawateislami.net

"**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी ज़ात पाक है मैं तेरी ह़म्द बयान करता हूं तेरे सिवा कोई माबूद नहीं मैं ने बुरे आमाल किए और अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया अब मैं तुझ से बख़्शिश का सुवाल करता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं तू मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा बेशक तू बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे कसरत से तौबा करने वालों में से कर दे और ख़ूब पाक होने वालों में से बना दे मुझे अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा मुझे सब्र व शुक्र करने वाला बना दे मुझे अपना बहुत ज़्यादा ज़िक्र करने वाला बना दे कि सुब्हो शाम तेरी पाकी बयान करूं।"

(جامع الترمذی ،ابواب الطهارة ،باب فی مایقال بعد الوضوء ،الحدیث ٥٥،ص١٦٣٦ ،ملخصًا)

जो शख़्स इस त़रह़ करता है उस के वुज़ू पर मोहर लगा कर उसे अ़र्श के साए तक बुलन्द किया जाता है और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ व तक़्दीस बयान करता रेहता है और वुज़ू करने वाले के लिए क़ियामत तक सवाब लिखा जाता है। आज़ा को तीन मरतबा से ज़्यादा धोना मकरूह है और पानी में इसराफ़ करना भी मकरूह है और इस त़रह़ हाथ झाड़ना कि पानी टपक जाए और वुज़ू के दौरान गुफ़्तगू करना भी मकरूह है।

ग़ुस्ल का त़रीक़ा

वोह इस्तिन्जा व वुज़ू करे जिस का त़रीक़ा बयान हो चुका है अलबत्ता पाउं का धोना मुअख़्ख़र करे फिर तीन बार दाएं कन्धे पर पानी बहाए फिर तीन बार बाएं कन्धे पर। फिर जिस्म को आगे पीछे से मले बालों का ख़िलाल करे और बालों की जड़ों तक पानी पहुंचाए ख़्वाह घने हो या पतले। क्यूंकि हर बाल के नीचे जनाबत होती है औ़रत पर चोटियां खोलना ज़रूरी नहीं अलबत्ता जब इ़ल्म हो कि बालों के दरमियान पानी नहीं पहुंचेगा (तो खोलना लाज़िम है) ग़ुस्ल के दौरान उ़ज़्वे मख़्सूस को हाथ लगाने से परहेज़ करे क्यूंकि ऐसा करने से वुज़ू टूट[1] जाता है। बदन की सिल्वटों का ख़याल रखे और ग़ुस्ल की इब्तिदा में निय्यत ज़रूर करे।[2]

फ़राइज़े वुज़ू[3]

(1) निय्यत करना (2) चेहरे का धोना (3) दोनों हाथ कोहनियों समेत धोना (4) मस्ह़ करना (5) पाउं का टख़्नों समेत धोना और पै दर पै वुज़ू करना (यानी एक उ़ज़्व सूखने न पाए कि दूसरा उ़ज़्व धो लेना) वाजिब नहीं।

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** ज़कर और औ़रत को छूने से वुज़ू नहीं टूटता। जैसा कि ह़ज़रते **अ़ल्लामा ह़सन बिन अ़म्मार शुरुम्बुलाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "ज़कर और औ़रत को छूने से वुज़ू नहीं टूटता।"

(نورالایضاح،فصل عشرة اشیاء لاتنقض الوضوء،ص٢٨)

2....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** ग़ुस्ल में निय्यत करना फ़र्ज़ नहीं बल्कि सुन्नत है। बहारे शरीअ़त में है : "ग़ुस्ल में निय्यत करना सुन्नत है।" (बहारे शरीअ़त ग़ुस्ल की सुन्नतें, ह़िस्सा 2 स. 41)

3....**अह़नाफ़ के नज़दीक** वुज़ू के चार फ़राइज़ हैं : "(1) चेहरा धोना (2) कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना (3) चौथाई सर का मस्ह़ करना (4) टख़्नों समेत दोनों पाउं धोना। और निय्यत करना फ़र्ज़ नहीं बल्कि सुन्नत है।"

(فتاوٰی عالمگیری----------،ج١،ص٣)

www.dawateislami.net

ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के अस्बाब[1]

ग़ुस्ल चार चीज़ों की वज्ह से फ़र्ज़ होता है : (1) शहवत के साथ मनी का निकलना (2) मर्द व औ़रत की शर्मगाहों का किसी रुकावट के बिग़ैर मिलना (3) हैज़ और (4) निफ़ास के ख़त्म होने के बाद। इस के इलावा बाक़ी ग़ुस्ल सुन्नत है जैसे जुम्आ़, ईदैन, एह़राम, वुक़ूफ़े अ़रफ़ा व मुज़्दलिफ़ा और मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होते वक़्त का ग़ुस्ल एक क़ौल के मुताबिक़ अय्यामे तश्रीक़ में और त़वाफ़े वदाअ़ के लिए ग़ुस्ल करना, काफ़िर जब मुसलमान हो और जुनुबी न हो, पागल कि जब उसे इफ़ाक़ा हो और जो आदमी मय्यित को ग़ुस्ल दे। इन सब के लिए ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है। इस बात को समझो तुम्हारे लिए मुफ़ीद है।

तयम्मुम का त़रीक़ा

जो पानी के इस्तिमाल पर क़ादिर न हो मसलन पानी तलाश के बावुजूद न मिलता हो या उस तक पहुंचने में तक्लीफ़ या कोई और रुकावट मौजूद हो या पानी तो मौजूद है लेकिन अपनी या अपने साथी की प्यास की वज्ह से पानी की ज़रूरत है या वोह किसी दूसरे की मिल्किय्यत में हो और वोह आ़म क़ीमत से ज़्यादा पर बेचता है या उसे कोई ज़ख़्म या बीमारी है कि पानी इस्तिमाल करने से उ़ज़्व के ख़राब होने या बहुत ज़्यादा कमज़ोरी का डर हो तो वोह सब्र करे ह़त्ताकि फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त दाख़िल हो जाए फिर वोह पाक ज़मीन का क़स्द करे जिस पर पाक ख़ालिस और नर्म मिट्टी हो और अपनी उंगलियों को मिला कर उस पर दोनों हाथ मारे और नमाज़ के जाइज़ होने की निय्यत करे और एक मरतबा पूरे चेहरे का मस्ह़ करे बालों की जड़ों तक मिट्टी पहुंचाने की तक्लीफ़ न उठाए और ग़ुबार से अच्छी त़रह़ चेहरे के ज़ाहिरी ह़िस्से का मस्ह़ करे और येह बात एक मरतबा हाथ मारने से ह़ासिल हो जाएगी क्यूंकि चेहरे की चौड़ाई हथेलियों की चौड़ाई से ज़्यादा नहीं फिर अपनी अंगूठी उतार दे और अब दूसरी मरतबा उंगलियों को कुशादा कर के मिट्टी पर हाथ मारे फिर दाएं हाथ की उंगलियों के ज़ाहिर को बाएं हाथ की उंगलियों के बात़िन (अन्दर वाले ह़िस्से) से यूं मिलाए कि एक त़रफ़ से पोरों के कनारे दूसरे हाथ की शहादत की उंगली से बाहर न हो फिर जिस त़रह़ बाएं हाथ को दाएं बाज़ू के ज़ाहिर पर रखा था इसी त़रह़ कोहनी तक फेरे फिर बाईं हथेली को उलट कर दाएं बाज़ू के बात़िन पर फेरे और कलाई तक ले आए बाएं हाथ के अंगूठे के अन्दर वाले ह़िस्से को दाएं हाथ के अंगूठे के

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक** ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के पांच अस्बाब हैं : "अमीरे एह्ले सुन्नत बानिए दावते इस्लामी **ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی नमाज़ के अह़काम में नक़्ल फ़रमाते हैं : (1) मनी का अपनी जगह से शहवत के साथ जुदा हो कर उ़ज़्व से निकलना (2) एह़तिलाम यानी सोते में मनी का निकल जाना (3) शर्मगाह में ह़श्फ़ा (सूपारी) दाख़िल हो जाना ख़्वाह शहवत हो या न हो, इन्ज़ाल हो या न हो, दोनों पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ है (4) हैज़ से फ़ारिग़ होना (5) निफ़ास (यानी बच्चा जनने पर जो ख़ून आता है उस) से फ़ारिग़ होना।"

(नमाज़ के अह़काम, ग़ुस्ल का त़रीक़ा, स. 107)

ज़ाहिर पर फेरे फिर बाएं बाज़ू के साथ भी इसी त़रह़ करे फिर हथेलियों का मस्ह़ कर के उंगलियों के दरमियान ख़िलाल करे इस तक्लीफ़ का मक़्सद येह है कि एक ही ज़र्ब के साथ कोहनियों तक घेरना पाया जाए लेकिन अगर एक ज़र्ब से ऐसा करना मुश्किल हो तो दो या ज़्यादा ज़र्बों से घेरने में ह़रज नहीं। और एक तयम्मुम के साथ एक फ़र्ज़ नमाज़ और जितने चाहे नवाफ़िल पढ़ सकता है।[1]

सफ़ाई निस्फ़ ईमान है

सर, कान और नाक के मैल को साफ़ करना मुस्तह़ब है नीज़ उंगलियों के कनारों और नाख़ुनों के नीचे जम्अ़ होने वाली मैल कुचैल की सफ़ाई करना भी मुस्तह़ब है।

नाख़ुन काटने, बग़ल के बाल उखेड़ने और मूए ज़ेरे नाफ़ साफ़ करने में चालीस दिन से ज़्यादा ताख़ीर करना मकरूह है और ह़म्माम में इस शर्त़ पर दाख़िल हो सकता है कि वोह अपना सत्र छुपाए और दूसरों का सत्र देखने से बचे और दाख़िल होते वक़्त नमाज़ के लिए त़हारत की निय्यत करे और ह़म्माम में दाख़िल होते वक़्त वोही दुआ़ पढ़े जो बैतुल ख़ला में दाख़िल होते वक़्त पढ़ी जाती है और इसी त़रह़ बाहर निकलते वक़्त की दुआ़ पढ़े। जब नाख़ुन काटने का इरादा करे तो दाएं हाथ की छोटी उंगली से शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म करे और सुरमा त़ाक़ अ़दद में लगाना चाहिए। मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दाईं आंख में तीन और बाईं आंख में दो सलाइयां फेरते ताकि इन का मजमूआ़ त़ाक़ हो।" (العجم الكبير، الحديث ١٣٣٥٣، ج١٢، ص٢٧٩، مختصرًا)

चाहिए कि तुम्हारा कोई भी काम तरतीब से ख़ाली मह़ज़ इत्तिफ़ाक़ से न हो पस येही इन्सान और चौपाए में फ़र्क़ है क्यूंकि चौपाए की ह़रकत इत्तिफ़ाक़ी होती है जबकि इन्सान हुक्म के मुत़ाबिक़ ह़रकत करता है। और बच्चे का ख़त्ना यहूदियों की मुख़ालफ़त करते हुवे पैदाइश के सातवें दिन करना चाहिए। चुनान्चे, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अकबर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ज़्ज़त निशान है : اَلْخِتَانُ سُنَّةُ الرِّجَالِ، وَمَكْرُمَةُ النِّسَاءِ "तर्जमा : ख़त्ना करना मर्दों के लिए सुन्नत और औ़रतों के लिए बाइ़से इ़ज़्ज़त है।"[2]

(المسند للامام احمد بن حنبل، حديث اسامة الهذلى، الحديث ٢٠٧٤٤، ج٧، ص٣٨١)

1....**ह़ज़रते अ़ल्लामा ह़सन बिन अ़म्मार शुरुम्बुलाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "एक तयम्मुम से जितनी चाहें फ़र्ज़ और नफ़्ल नमाज़ें पढ़ सकते हैं।" (نورالايضاح، باب التيمم، ص٣٦)

2....**मुह़द्दिसे बरेल्वी**, इमामे एह्ले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लड़कियों के ख़त्ने के बारे में फ़रमाते हैं : "लड़कियों के ख़त्ना करने का ताकीदी हुक्म नहीं और यहां पाक व हिन्द में रवाज न होने के सबब अ़वाम इस पर हंसेंगे" और येह इन के गुनाहे अ़ज़ीम में पड़ने का सबब होगा और ह़िफ़्ज़े दीने मुसलमानां वाजिब है। लिहाज़ा यहां (पाक व हिन्द में) इस का हुक्म नहीं।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 680)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़्ई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मुझे अ़क़्ल मन्द आदमी पर तअ़ज्जुब है जिस की दाढ़ी लम्बी है वोह इसे क्यूं नहीं काटता ताकि वोह दो दाढ़ियों के दरमियान हो जाए (यानी न बहुत छोटी हो और न बहुत लम्बी) क्यूंकि हर चीज़ में मियानारवी अच्छी है।"

दाढ़ी को सियाह ख़िज़ाब लगाना, गन्धक से सफ़ेद करना, सफ़ेद बाल उखेड़ना, छोटी करना, बहुत बड़ी कर देना, रियाकारी की ख़ातिर कंघी करना और रियाकारी के लिए बालों को बिखरा हुवा रखना मकरूह है।

ह़ज़रते सय्यिदुना काबुल अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "आख़िरी ज़माने में कुछ लोग होंगे वोह अपनी दाढ़ियां काटेंगे जैसे कबूतर की दुम (यानी गोल करेंगे) और अपने जूतों से दरांतियों की सी आवाज़ निकालेंगे उन लोगों का (दीन में) कुछ ह़िस्सा नहीं।"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सात अश्ख़ास को अपने अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा जिस दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए के इ़लावा कोई साया न होगा (1) आ़दिल हुक्मरान (2) वोह नौजवान जिस की जवानी इ़बादते इलाही में गुज़री (3) वोह शख़्स जिस का दिल मस्जिद से निकलते वक़्त मस्जिद में लगा रहे ह़त्ताकि वापस लौट आए (4) वोह दो शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए मह़ब्बत करते हुवे जम्अ़ हुवे और मह़ब्बत करते हुवे जुदा हो गए (5) वोह शख़्स जो ख़ल्वत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता हो और इस की आंखों से आंसू बह निकलें (6) वोह शख़्स जिसे कोई माल व जमाल वाली औ़रत गुनाह के लिए बुलाए और वोह कहे कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं" (7) वोह शख़्स जो इस त़रह़ छुपा कर सदक़ा दे कि उस के बाएं हाथ को ख़बर न हो कि दाएं ने क्या सदक़ा किया।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ،باب فضل اخفاء الصدقۃ،الحدیث ۲۳۸۰، ص ۸٤۰بتقدیمٍ وتاخیرٍ)

बाब : 04 नमाज़ के असरार व मसाइल

इस में चन्द फ़ुसूल हैं

नमाज़, सजदा, जमाअ़त और अज़ान वग़ैरा के फ़ज़ाइल

फ़ज़ीलते अज़ान

नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तीन आदमी क़ियामत के दिन मुश्के अज़्फ़र के टीले पर होंगे उन्हें ह़िसाब ग़मज़दा नहीं करेगा न उन्हें घबराहट होगी यहां तक कि लोग अपने ह़िसाबो किताब से फ़ारिग़ हो जाएं : (1) वोह शख़्स जिस ने रिज़ाए इलाही के लिए कुरआने मजीद पढ़ा (2) वोह शख़्स जो किसी का ग़ुलाम हो इस वज्ह से वोह आख़िरत के अ़मल से ग़ाफ़िल न हो (3) वोह शख़्स जिस ने नमाज़ के लिए अज़ान दी हो।"

(شعب الایمان،باب فی الصلوات ،فضل الاذان و الاقامة للصلاة المکتوبة ،الحدیث ۳۰۶۰،ج۳،ص۱۲۰،بتغیرٍ قلیلٍ)

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है :

يَدُ الرَّحْمٰنِ عَلٰى رَاْسِ الْمُؤَذِّنِ حَتّٰى يَفْرُغَ مِنْ اَذَانِهٖ

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दस्ते रेह़मत मुअज़्ज़िन के सर पर होता है यहां तक कि वोह अज़ान से फ़ारिग़ हो जाए।

(الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی ،الرقم ۱۲۲۰ـعمر بن حفص ،ج۶،ص۹۹ـ۱۰۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान : وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ (پ۲۴،حٰمٓ السجدة:۳۳) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और इस से ज़्यादा किस की बात अच्छी जो अल्लाह की त़रफ़ बुलाए।" की तफ़्सीर में एक क़ौल येह है कि इस से मुराद मुअज़्ज़िन है, पस जब तुम अज़ान सुनो तो वोही अल्फ़ाज़ कहो जो मुअज़्ज़िन केहता है सिवाए حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ और حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ के। इन दो कलिमात के जवाब में لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ कहो और قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ के जवाब में اَقَامَهَا اللّٰهُ وَاَدَامَهَا مَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ और اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ के जवाब में صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ कहो और अज़ान से फ़ारिग़ होने के बाद येह दुआ़ मांगो :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَآئِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَ نِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ ،وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ نِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ

"**तर्जमा :** ऐ उस दावते कामिल और खड़ी होने वाली नमाज़ के रब ! ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला, फ़ज़ीलत और बुलन्द दरजा अ़त़ा फ़रमा और आप को उस मक़ामे मह़मूद पर पहुंचा जिस का तू ने उन से वादा फ़रमाया है।"

www.dawateislami.net

फ़र्ज़ नमाज़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है :

اَلصَّلَوَاتُ كَفَّارَاتٌ لِّمَا بَيْنَهُنَّ مَا اجْتُنِبَتِ الْكَبَائِرُ.

तर्जमा : नमाज़ें एक दूसरी के दरमियान किए गए गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब तक कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए।

(مصنف عبد الرزاق ،كتاب الطهارة ،باب ما يكفر الوضوء والصلاة ،الحديث١٤٧،ج١،ص٣٧)

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है :

بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْمُنَافِقِيْنَ شَهُوْدُ الْعَتَمَةِ وَ الصُّبْحِ، لَا يَسْتَطِيْعُوْنَهُمَا.

तर्जमा : हमारे और मुनाफ़िक़ीन के दरमियान इशा और फ़ज्र की नमाज़ में हाज़िर होने का फ़र्क़ है, वोह इन दो नमाज़ों में हाज़िर होने की ताक़त नहीं रखते।

(الموطأ للامام مالك ،كتاب صلاة الجماعة ،باب ماجاء فى العتمة والصبح ،الحديث٢٩٨،ج ١،ص١٣٣،بتغير)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اَلصَّلَاةُ عِمَادُ الدِّيْنِ فَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ هَدَمَ الدِّيْنَ "**तर्जमा :** नमाज़ दीन का सुतून है पस जिस ने इसे छोड़ दिया उस ने दीन को गिरा दिया।"

(شعب الايمان ،باب فى الصلوات ،الحديث٢٨٠٧،ج٣،ص٣٩،تقدم وتأخر،فقدهدم الدين"بدله"فلا دين له")

रिवायत है कि "बरोज़े क़ियामत बन्दे के आमाल में से सब से पेहले नमाज़ देखी जाएगी अगर उसे नाक़िस पाया गया तो नमाज़ और बाक़ी तमाम आमाल रद कर दिए जाएंगे।"

(الموطأ للامام مالك ،كتاب قصر الصلاة فى السفر ،باب جامع الصلاة ،الحديث٤٢٨،ج١،ص١٦٩،مفهوماً)

अरकान को मुकम्मल अदा करने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

مَثَلُ الصَّلٰوةِ الْمَكْتُوْبَةِ كَمَثَلِ الْمِيْزَانِ مَنْ اَوْفٰى اِسْتَوْفٰى.

तर्जमा : फ़र्ज़ नमाज़ की मिसाल तराज़ू की सी है जिस ने इसे पूरा किया उसे पूरा पूरा अज्र मिलेगा।

(الزهد لابن المبارك ،الحديث١١٩٠،ص٤١٩)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

اِنَّ الرَّجُلَيْنِ مِنْ اُمَّتِیْ لَيَقُوْمَانِ اِلَى الصَّلٰوةِ وَرُكُوْعُهُمَا وَ سُجُوْدُهُمَا وَاحِدٌ ،وَاَنَّ مَا بَيْنَ صَلَاتَيْهِمَامَابَيْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ.

तर्जमा : बेशक मेरी उम्मत के दो आदमी नमाज़ के लिए खड़े होते हैं और (बज़ाहिर) उन के रुकूअ़ व सुजूद तो एक जैसे हैं लेकिन उन की नमाज़ों के दरमियान ज़मीनो आस्मान के दरमियानी ख़ला जितना फ़र्क़ होता है।

(كشف الخفاء ،خاتمة يختم بها الكتاب ،ج٢،ص٣٧٦)

मुन्दरिजए बाला ह़दीसे मुबारका में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुशूअ़ की त़रफ़ इशारा फ़रमाया है।

नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : اَسْوَاُ النَّاسِ سَرِقَةً مَنْ سَرَقَ مِنْ صَلَاتِهٖ "**तर्जमा :** लोगों में सब से बुरा चोर वोह है जो अपनी नमाज़ से चोरी करता है।"[1] (المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث ابى قتادة الانصارى ،حديث٢٢٧٠٥،ج٨،ص٣٨٦)

बा जमाअ़त नमाज़ की फ़ज़ीलत

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : صَلَاةُ الْجَمَاعَةِ تَفْضُلُ صَلَاةَ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَ عِشْرِيْنَ دَرَجَةً "**तर्जमा :** बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना अकेले पढ़ने से सत्ताईस गुना अफ़्ज़ल है।" (صحيح البخارى ،كتاب الاذان ،باب فضل صلاة الجماعة ،الحديث٦٤٥،ص٥٢)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : "जो शख़्स मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुन कर उस का जवाब न दे उस ने भलाई का इरादा नहीं किया और न ही उस के साथ भलाई का इरादा किया गया।" शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स चालीस दिन बा जमाअ़त नमाज़ पढ़े और इस की तक्बीरे ऊला (यानी पेहली तक्बीर) फ़ौत न हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिए दो बराअतें लिख देता है : (1) मुनाफ़क़त से बराअत (2) दोज़ख़ की आग से बराअत।"

(جامع الترمذى ،ابواب الصلاة ،باب ماجاء فى فضيلة التكبيرةالاولى ،الحديث٢٤١،ص١٦٦١،بتغيرٍ)

1....शैख़े त़रीक़त, अमीरे एह्ले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ किताब "**नमाज़ के अह़काम**" में स. 179 पर नक़्ल फ़रमाते हैं कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : "मालूम हुवा कि माल के चोर से **नमाज़ का चोर** बदतर है क्यूंकि माल का चोर अगर सज़ा भी पाता है तो कुछ न कुछ नफ़्अ़ भी उठा लेता है मगर **नमाज़ का चोर** सज़ा पूरी पाएगा उस के लिए नफ़्अ़ की कोई सूरत नहीं। माल का चोर बन्दे का ह़क़ मारता है जबकि **नमाज़ का चोर अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़। येह ह़ालत उन की है जो नमाज़ को नाक़िस पढ़ते हैं। इस से वोह लोग दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं।"

(ब ह़वाला मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 2, स. 78)

सजदे की फ़ज़ीलत

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है :

مَاتَقَرَّبَ الْعَبْدُ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى بِشَیْءٍ اَفْضَلَ مِنْ سُجُوْدٍ خَفِيٍّ

तर्जमा : बन्दा एक पोशीदा सजदे से बढ़ कर किसी चीज़ के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब ह़ासिल नहीं करता ।

(الزهد لابن المبارك ،باب العمل والذكر الخفى ،الحديث١٥٤،ص٥٠)

रिवायत में है कि एक शख़्स ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया : आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिए कि वोह मुझे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त का मुस्तह़िक़ बना दे और जन्नत में मुझे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त अ़त़ा फ़रमाए । नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सजदों की कसरत के साथ मेरी मदद करो"

(الزهد لابن المبارك ،الحديث١٢٨٧،ص٤٥٥،مختصراً)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "बन्दा सजदे की ह़ालत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़्यादा क़रीब होता है लिहाज़ा उस वक़्त कसरत से दुआ़ मांगा करो ।"

(صحيح مسلم ،كتاب الصلاة ،باب ما يقال.....الخ؟،الحديث١٠٨٣،ص٧٥٤،مفهوماً)

ख़ुश्शूअ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ ۝ (پ١٦،طٰهٰ:١٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ाइम रख ।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "बेशक नमाज़ सुकून, आ़जिज़ी से गिड़गिड़ाने, ख़ौफ़ और शरमिन्दगी का नाम है और येह कि तू अपने दोनों हाथ उठा कर पुकारे या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, और जो इस त़रह़ न करे उस की नमाज़ नाक़िस है ।" (السنن الكبرى للنسائى،كتاب السهو،ذكر اختلاف شعبة والليث.....الخ ،الحديث٦١٥،ج١،ص٢١٢ بتغير)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : اِذَا صَلَّيْتَ صَلَاةً ،فَصَلِّ صَلَاةَ مُوَدِّعٍ "**तर्जमा :** जब तुम नमाज़ पढ़ो तो रुख़्सत होने वाले की त़रह़ पढ़ो ।" (سنن ابن ماجة ،ابواب الزهد ،باب الحكمة ،الحديث٤١٧١،ص٢٧٣٠،بتغير)

इस ह़दीस का माना येह है कि उस शख़्स की त़रह़ नमाज़ पढ़ो जो अपने नफ़्स को रुख़्सत करता हुवा और अपनी ख़्वाहिशात को अलवदाअ़ केहता हुवा अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ जा रहा होता है।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अकबर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَنْ لَّمْ تَنْهَهٗ صَلَاتُهٗ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَ الْمُنْكَرِ لَمْ يَزْدُدْ مِنَ اللّٰهِ اِلَّا بُعْدًا.

तर्जमा : जिस शख़्स को उस की नमाज़ बे ह़याई और बुरी बातों से न रोके उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूरी के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं होता।

(المعجم الكبير ،الحديث ١١٠٢٥،ج١١، ص٤٦)

जान लो ! नमाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुनाजात करने का नाम है पस वोह ग़फ़्लत की ह़ालत में कैसे हो सकती है ?

शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है :

لَا يَنْظُرُ اللّٰهُ تَعَالٰى اِلٰى صَلَاةٍ لَمْ يُحْضِرِ الرَّجُلُ فِيْهَا قَلْبَهٗ مَعَ بَدَنِهٖ.

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस नमाज़ को क़बूल नहीं फ़रमाता जिस में बन्दा अपने जिस्म के साथ अपने दिल को ह़ाज़िर न करे।

(تعظيم قدرالصلاة لمحمدبن نصر المروزى،باب ضرر السهو من الصلاة،الحديث١٥٧،ج١،ص١٩٨،لم نجده بهذا اللفظ)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब नमाज़ में होते तो आप के दिल की धड़कन दो मील के फ़ासिले से सुनी जाती।

मस्जिद बनाने की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है :

مَنْ بَنٰى مَسْجِدًا لِلّٰهِ وَ لَوْ كَمَفْحَصِ قَطَاةٍ بَنَى اللّٰهُ لَهٗ قَصْرًا فِى الْجَنَّةِ.

तर्जमा : जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिए तीतर के घोंसले जितनी मस्जिद बनाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिए जन्नत में मह़ल बनाएगा।

(سنن ابى ماجة ،ابواب المساجد ،باب من بنى لله مسجد ا ،الحديث٧٣٨،ص٢٥٢١، قصرًا: بدله: بيتًا)

ह़दीसे क़ुदसी में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक मेरी ज़मीन में मेरे घर मस्जिदें हैं और उन में मेरी ज़ियारत करने वाले वोह लोग हैं जो उन्हें आबाद करते हैं। उस शख़्स के लिए ख़ुश ख़बरी है जो अपने घर से पाक हो कर आया फिर मेरे घर में मेरी ज़ियारत की तो जिस की ज़ियारत की जाए उस पर ह़क़ है कि वोह ज़ियारत करने वाले को इ़ज़्ज़त अ़त़ा करे।"

(شعب الايمان ،باب فى الصلوات ،فصل المشى الى المساجد ،الحديث٢٩٤٣،ج٣،ص٨٢،بتغيرٍ قليلٍ)

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِذَا رَاَیْتُمُ الرَّجُلَ یَعْتَادُ الْمَسْجِدَ فَاشْهَدُوْا لَهٗ بِالْاِیْمَانِ.

तर्जमा : जब तुम किसी शख़्स को मस्जिद में आता जाता देखो तो उस के ईमान की गवाही दो।

(جامع الترمذی ،ابواب تفسیر القرآن ،باب ومن سورة التوبة ،الحدیث۳۰۹۳،ص۱۹٦٤)

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जिस शख़्स ने मस्जिद में चराग़ रौशन किया तो जब तक मस्जिद में रौशनी रेहती है फ़रिश्ते और अ़र्श उठाने वाले (फ़रिश्ते) उस के लिए बख़्शिश की दुआ़ मांगते रेहते हैं।"

नमाज़ के ज़ाहिरी आमाल की कैफ़िय्यत

नमाज़ी को चाहिए कि जब वोह वुज़ू, नापाकी दूर करने, दिल और जगह को पाक करने नीज़ नाफ़ से ले कर घुटनों तक जिस्म को ढांपने से फ़ारिग़ हो जाए तो क़िब्ला रुख़ हो कर सीधा खड़ा हो जाए और तरावुह करे।[1] और पांउ को मिला कर खड़ा न हो क्यूंकि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ में सफ़न और सफ़द से मन्अ़ फ़रमाया है।"

सफ़्द के माना हैं क़दमों को मिलाना। इस के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

مُقَرَّنِیْنَ فِی الْاَصْفَادِ ۝ (پ۱۳، ابراهیم:٤۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेड़ियों में एक दूसरे से जुड़े होंगे।

और सफ़न दोनों पाउं में से एक का उठाना है, इस के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है :

اِذْ عُرِضَ عَلَیْهِ بِالْعَشِیِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِیَادُ ۝

(پ۲۳،صٓ:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जबकि उस पर पेश किए गए तीसरे पहर को कि रोकिए तो तीन पाउं पर खड़े हों चौथे सुम का कनारा ज़मीन पर लगाए हुवे और चलाइये तो हवा हो जाएं।

और नमाज़ी को चाहिए कि वोह अपने सर को झुकाए, निगाह को जाए नमाज़ (यानी जाए सजदा) पर रखे, निय्यत को ह़ाज़िर करे और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ पढ़े कि शैत़ान से ह़िफ़ाज़त के लिए पढ़ने में ह़रज नहीं। मसलन ज़ोहर की नमाज़ की निय्यत करे और दिल में कहे : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए ज़ोहर के फ़र्ज़ अदा करता हूं।" ताकि नमाज़ लफ़्ज़ "अदा" के ज़रीए़ क़ज़ा से, ज़ोहर के ज़रीए़ अ़स्र से, और फ़र्ज़ के ज़रीए़ नफ़्ल से मुमताज़ हो जाए और तक्बीर के आख़िर तक इस निय्यत को बर क़रार रखने की कोशिश करे और अपनी दोनों हथेलियों को कांधों के बराबर कर दे और अंगूठों को कानों की लौवों और उंगलियों के पोरों को कानों के कनारों के बराबर ले जाए ताकि इस सिलसिले में वारिद तमाम अह़ादीस पर अ़मल हो जाए और उंगलियों को खोलने या बन्द करने में

1....नमाज़ में तरावुह सुन्नत है। चुनान्चे, सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 3 स. 202** पर नक़्ल फ़रमाते हैं : "तरावुह यानी कभी एक पाउं पर ज़ोर दिया कभी दूसरे पर, येह सुन्नत है।" (بحواله حلیه ،کتاب الصلاة فصل فیما یکره فی الصلاة ومالا یکره، ج۱، ص۳۲۸)

www.dawateislami.net

तक्लीफ़ न करे और निय्यत के ह़ाज़िर होने के साथ तक्बीर कहे जैसा कि पेहले गुज़रा है तक्बीर के साथ ही दोनों हाथ छोड़ दे और दाएं हाथ को बाएं हाथ के ऊपर नाफ़ से ऊपर और सीने से नीचे रखे और दाएं हाथ को (बाएं हाथ के ऊपर यूं रखे) कि वोह उठा हुवा हो।[1]

और दाएं हाथ की शहादत की उंगली और दरमियानी उंगली खुली रखते हुवे बाएं बाज़ू की लम्बाई पर फैला दे और छोटी उंगली नीज़ उस के साथ वाली उंगली से बाएं हाथ की कलाई को पकड़े और सना के साथ इब्तिदा करे और बेहतर है कि اَللّٰہُ اَکْبَر के साथ येह भी मिला ले, "کَبِیْرًا وَّالْحَمْدُ لِلّٰہِ کَثِیْرًا وَّسُبْحٰنَ اللّٰہِ بُکْرَۃً وَّاَصِیْلًا" फिर येह पढ़े :

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّ مَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۝ (پ۷،الانعام: ۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर और मैं मुश्रिकों में नहीं।

फिर इन अल्फ़ाज़ में सना पढ़े : سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَ بِحَمْدِکَ وَ تَبَارَکَ اسْمُکَ وَ تَعَالٰی جَدُّکَ وَلَآ اِلٰہَ غَیْرُکَ "**तर्जमा :** पाक है तू ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मैं तेरी ह़म्द करता हूं, तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी अ़ज़मत बुलन्द है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।"

इस के बाद : "اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ" पढ़े यानी "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह में आता हूं शैत़ान मर्दूद से।"

फिर सूरए फ़ातिह़ा की तमाम शद्दों और हुरूफ़ का लिह़ाज़ रखते हुवे तिलावत करे और "ض" और "ظ" के दरमियान फ़र्क़ करने की कोशिश करे।[2]

फिर आमीन कहे और इसे पूरी मद्द के साथ पढ़े और इसे "وَلَا الضَّآلِّیْن" के साथ न मिलाए।

नमाज़े फ़ज्र में त़वाले मुफ़स्सल (यानी सूरए हुजुरात से सूरए नबा तक को त़वाले मुफ़स्सल कहा जाता है) मग़रिब में क़सारे मुफ़स्सल (यानी सूरए दुह़ा से सूरए नास तक को क़सारे मुफ़स्सल

1....**नमाज़ में हाथ बांधने का ह़नफ़ी त़रीक़ा :** अ़ल्लामा मुह़म्मद इब्राहीम ह़ल्बी علیہ رحمۃ اللہ الحلبی तेह़रीर फ़रमाते हैं : "बादे तक्बीर फ़ौरन हाथ बांध लें। इस का त़रीक़ा येह है : मर्द नाफ़ के नीचे दाएं हाथ की हथेली बाएं हाथ की कलाई के जोड़ पर रखे, छुंगलियां और अंगूठा कलाई के अग़ल बग़ल (दाएं बाएं) रखे और बाक़ी उंगलियों को बाईं कलाई की पुश्त पर बिछाए। औ़रत और ख़ुन्सा बाईं हथेली सीने पर छाती के नीचे रख कर इस की पुश्त पर दह्नी हथेली को रखे।" (غنیۃ المتملی،صفۃ الصلاۃ،ص۳۰۰)

सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बाज़ लोग तक्बीर के बाद हाथ सीधे लटका लेते हैं फिर बांधते हैं येह न चाहिए बल्कि नाफ़ के नीचे ला कर बांध ले।" (बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 3, स. 90)

2...."ض" को "وَاد" या "ظاد" पढ़ना ह़राम है और इस त़रह़ पढ़ने वाले की नमाज़ फ़ासिद व बात़िल है। जैसा कि आला ह़ज़रत इमामे एह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "अ़मदन ظاد या وَاد दोनों ह़राम (यानी दोनों त़रह़ पढ़ना ह़राम है), जो क़स्द (यानी इरादा) करे कि बजाए "ض" "ظ" या "د" पढ़ूंगा उस की नमाज़ कभी ताम्म (यानी मुकम्मल) फ़ातिह़ा तक भी न पहुंचेगी, "مغضوب ومظلوب" केहते ही बिलाशुबा फ़ासिद व बात़िल हो जाएगी।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 6, स. 322)

www.dawateislami.net

कहा जाता है) और बाक़ी नमाज़ों में सूरए त़ारिक़ व सूरए बुरूज जैसी सूरतें पढ़े और सफ़र में सूरए काफ़िरून और सूरए इख़्लास पढ़े और इसी त़रह़ फ़ज्र की सुन्नतों, त़वाफ़ की नमाज़ तह़िय्यतुल वुज़ू और तह़िय्यतुल मस्जिद में भी येही सूरतें पढ़े।

रुकूअ़ : फिर रुकूअ़ करे और इस में चन्द उमूर का ख़याल रखे : (1) रुकूअ़ के लिए तक्बीर कहे (2) रुकूअ़ की तक्बीर के साथ रफ़्अ़ यदैन करे।[1] और तक्बीर को रुकूअ़ में पहुंच कर ख़त्म करे। अपनी हथेलियों को घुटनों पर यूं रखे कि उंगलियां पिन्डली की लम्बाई पर फैली हुई हों और अपने घुटनों को सीधा रखे और पीठ को भी सीधा करते हुवे खींच कर रखे कि गर्दन, पीठ और सर एक सीध में आ जाएं औ़रतों के बर ख़िलाफ़ अपनी कोहनियों को पेहलूओं से जुदा रखे और तीन मरतबा तस्बीह़ "سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْم" कहे और अगर तन्हा है तो ज़्यादा बार पढ़ना बेहतर है फिर क़ियाम की त़रफ़ आए और "سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ" केहता हुवा इत़मीनान से सीधा खड़ा हो जाए और कहे :

رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ مَلَأَ السَّمَاوَاتُ وَمَلَأَ الْاَرْضُ وَمَلَأَمَا شِئْتَ مِنْ شَیْءٍ بَعْدُ.

तर्जमा : ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरे लिए तारीफ़ है आस्मान व ज़मीन भरी हुई और इस के बाद जो कुछ तू चाहे भरा हुवा।

और नमाज़े फ़ज्र में क़ुनूत पढ़ने के लिए त़वील क़ियाम करे।[2]

सजदा : फिर तक्बीर केहता हुवा सजदे में जाए और तक्बीर (यानी اَللّٰہُ اَکْبَر) को सजदे में पहुंच कर ख़त्म करे पस अपने घुटने और पेशानी (ज़मीन पर) रखे और हथेलियों को ज़मीन पर खुला हुवा रखे और औ़रतों के बर अ़क्स अपनी कोहनियों को पेहलूओं से जुदा रखे और दोनों पाउं के दरमियान कुछ फ़ासिला रखे जबकि औ़रत इस त़रह़ न करे नीज़ पेट रानों से अलग हो जबकि औ़रत ऐसा न करे वोह अपने हाथों को ज़मीन पर कन्धों के बराबर रखे और उंगलियों को खुला हुवा न रखे और बाज़ूओं को ज़मीन पर कुत्ते की त़रह़ न बिछाए क्यूंकि इस से मन्अ़ किया गया है तीन मरतबा سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی पढ़े जब तन्हा हो तो ज़्यादा बार पढ़ने में कोई ह़रज नहीं फिर तक्बीर केहते हुवे अपना सर सजदे से उठाए फिर इत़मीनान से बाएं पाउं पर बैठ जाए और दायां पाउं खड़ा रखे हाथों को रानों पर रखे और उंगलियों को मिलाने का तकल्लुफ़ न करे (यानी अपनी ह़ालत पर छोड़ दे) और कहे : رَبِّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَارْزُقْنِیْ وَاھْدِنِیْ وَعَافِنِیْ وَاعْفُ عَنِّیْ "**तर्जमा :** ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे बख़्श दे, मुझ पर रेह़्म फ़रमा, मुझे रिज़्क़ दे, हिदायत अ़त़ा फ़रमा, आ़फ़िय्यत दे और मुआ़फ़ कर दे।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب الصلاۃ ،باب الدعاء بین السجدتین ،الحدیث ۸۵۰،ص۱۲۸۶،بدون وَاعْفُ عَنِّیْ)

1....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** तक्बीरे तह़रीमा के इ़लावा में रफ़्अ़ यदैन मन्सूख़ है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 6, स. 153) मज़ीद तफ़्सील के लिए फ़तावा रज़विय्या की त़रफ़ रुजूअ़ करें।

2....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** नमाज़े फ़ज्र में क़ुनूत नहीं पढ़ी जाएगी। जैसा कि **अ़ल्लामा शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "नमाज़े फ़ज्र में क़ुनूत नहीं पढ़ी जाएगी क्यूंकि येह मन्सूख़ है।"

(تنویر الابصار،کتاب الصلاۃ،باب الوتروالنوفل ج۲، ص۵۳۸)

www.dawateislami.net

और इसी त़रह़ दूसरा सजदा करे फिर सीधा हो कर थोड़ी देर इस्तिराह़त के लिए बैठे ।[1] फिर ज़मीन पर हाथ रख कर खड़ा हो जाए ।[2] और किसी पाउं को आगे न बढ़ाए और क़ियाम में पहुंच कर तक्बीर को ख़त्म करे ।

तशह्हुद : फिर दूसरी रक्अ़त के बाद तशह्हुद पढ़े । पेहले तशह्हुद में बाएं पाउं पर बैठे और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़े ।[3] और दाएं हाथ की उंगलियां सिवाए अंगुश्ते शहादत के बन्द हों फिर जब اِلَّا اللّٰهُ कहे तो उस वक़्त अंगुश्ते शहादत से इशारा करे (यानी لَا اِلٰهَ पर उंगली को खड़ा करे और اِلَّا اللّٰهُ पर छोड़ दे) और आख़िरी तशह्हुद में वोह दुआ़ पढ़े जो रिवायात से साबित हैं और बाईं सुरीन पर बैठे जब फ़ारिग़ हो तो "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ" कहे और येह केहते वक़्त दाईं त़रफ़ इस त़रह़ चेहरा फेरे कि रुख़्सार नज़र आएं इसी त़रह़ बाईं त़रफ़ करे और सलाम के साथ नमाज़ से निकलने का इरादा करे और सलाम करते वक़्त अपने दाएं बाएं के फ़रिश्तों और मुसलमानों की निय्यत करे और सलाम को खींच कर न कहे ।

नमाज़ के फ़राइज़[4]

नमाज़ में बारह चीज़ें फ़र्ज़ हैं : (1) निय्यत (2) तक्बीरे तह़रीमा (3) क़ियाम (4) फ़ातिह़ा (5) रुकूअ़ में इतना झुकना कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक इत़मीनान से पहुंच जाएं (6) रुकूअ़ से मोतदिल अन्दाज़ से खड़ा होना (7) इत़मीनान से सजदा करना (8) सजदे से उठने के बाद मोतदिल अन्दाज़ में बैठना (9) क़ादए अख़ीरा में बैठना (10) क़ादए अख़ीरा में तशह्हुद पढ़ना (11) नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना (12) पेहला सलाम फेरना ।

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक** दो सजदों के बाद इस्तिराह़त नहीं । जैसा कि **अ़ल्लामा अबुल ह़सन अ़ली बिन अबी बक्र मुरग़ीनानी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : "दो सजदों के बाद इस्तिराह़त न करे (यानी न बैठे) और न ही ज़मीन पर हाथ रख कर उठे बल्कि सीधा खड़ा हो जाए ।" (الهداية، كتاب الصلاة، ج١، ص٥٢)

2....**अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "जब दोनों सजदे कर लें तो दूसरी रक्अ़त के लिए पन्जों के बल घुटनों पर हाथ रख कर खड़ा होना **सुन्नत** है । हां कमज़ोरी या पाउं में तक्लीफ़ वग़ैरा मजबूरी की वज्ह से ज़मीन पर हाथ रख कर खड़े होने में ह़रज नहीं । (ردالمحتار، كتاب الصلاة ج٢، ص٢٦٢)

3....**अह़नाफ़ के नज़दीक पेहले :** "नवाफ़िल और सुन्नते ग़ैरे मुअक्कदा के इलावा क़ादए ऊला में दुरूद शरीफ़ नहीं ।" (ردالمحتار، كتاب الصلاة، ج٢، ص٢٨٢)

4....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "नमाज़ में येह सात चीज़ें फ़र्ज़ हैं : (1) तक्बीरे तह़रीमा (2) क़ियाम (3) क़िराअत (4) रुकूअ़ (5) सजदा (6) क़ादए अख़ीरा (7) ख़ुरूजे बिसुन्इही ।" (درمختار، كتاب الصلوٰة باب صفة الصلوٰة، ج٢، ص١٥٨-١٧٠) और नमाज़ में : "(तादीले अरकान (यानी रुकूअ़ व सुजूद, क़ौमा और जल्सा में कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ اللّٰه केहने की मिक़्दार ठहरना), **सूरए फ़ातिह़ा पढ़ना**, दोनों क़ादों में पूरा तशह्हुद पढ़ना और लफ़्ज़े السلام दो बार केहना वाजिब है ।" (माख़ूज़ अज़ फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 1, स. 71 व बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 3, स. 85-86) और "बाद तशह्हुद दूसरे क़ादे में दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है, दुरूदे इब्राहीमी पढ़ना अफ़्ज़ल है" । (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 3, स. 99)

बातिनी शराइत़

आमाले क़ल्बिया का बयान

इन में से एक ख़ुशूअ़ है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ ۝ (پ۱۶، طٰہٰ:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ाइम रख।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बहुत से (नमाज़ में) खड़े होने वाले ऐसे हैं कि उन्हें नमाज़ से थकावट और मशक़्क़त के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं होता।" (السنن الکبری للنسائی، کتاب الصیام، باب ماینھی عنه الصائم.....الخ، الحدیث ۳۲۴۹، ج۲، ص۲۳۹، مفھوماً)

जान लो ! नमाज़ ज़िक्र व क़िराअत, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात व कलाम करने का नाम है और येह हुज़ूरे क़ल्ब (यानी दिल की ह़ाज़िरी) के बिग़ैर ह़ासिल नहीं होता और येह सब कुछ ताज़ीम, हैबत, उम्मीद, ह़या और समझ से ह़ासिल होता है और बिल जुम्ला जितना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात का इ़ल्म बढ़ता है इतना ही ख़शिय्यत (यानी ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ) में इज़ाफ़ा होता है और हुज़ूरे क़ल्ब नसीब होता है पस जब तुम अज़ान को सुनो तो दिल में उस पुकार की दहशत को ह़ाज़िर करो जो बरोज़े क़ियामत होगी और अपने ज़ाहिरो बातिन को जवाब देने और नमाज़ की त़रफ़ जल्दी करने पर तय्यार करो क्यूंकि जो लोग उस पुकार की त़रफ़ जल्दी करते हैं वोह बरोज़े क़ियामत लुत़्फ़ो करम के साथ पुकारे जाएंगे अगर तुम अपने दिल को पाओ कि वोह ख़ुशी व ख़ुश ख़बरी से भरपूर है और इस की त़रफ़ जल्दी करने की रग़बत पैदा हो रही है तो जान लो कि क़ियामत के दिन की निदा में उसी त़रह़ की (ख़ुश ख़बरी और कामयाबी) ह़ासिल होगी। इसी लिए नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ! हमें राह़त पहुंचाओ।" (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی صلاۃ العتمۃ، الحدیث ۴۹۸۶، ص۱۵۸۸)

येह इस लिए फ़रमाया कि नमाज़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक है।

अपने बातिन को ग़ैरुल्लाह से पाक करने का नाम त़हारत है और इसी के ज़रीए़ नमाज़ मुकम्मल होती है अगर तुम ने कपड़े से अपने सत्र को ढांपा है तो तुम्हारे बातिनी सत्र को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कौन सी चीज़ छुपाएगी ? पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर बा अदब हो जाओ।

जान लो ! वोह तुम से और तुम्हारे बातिन से आगाह है इस लिए अपने ज़ाहिरो बातिन के साथ आ़जिज़ी इख़्तियार करो और देखो कि अगर तुम किसी बादशाह के सामने खड़े हो तो तुम्हारी क्या ह़ालत होगी ? जबकि अल्लाह तबारक व तआ़ला और दुन्यावी बादशाहों के दरमियान क्या निस्बत ? क्यूंकि वोह सारे के सारे उसी के बन्दे हैं। जब तुम ऐसा करोगे तो तुम अपने क़ौल : "وَجَّهْتُ وَجْهِیَ" यानी

www.dawateislami.net

मैं ने अपने आप को मुतवज्जेह किया, حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ यानी हर बातिल से अलग मुसलमान और मैं मुशरिकीन में से नहीं हूं। और صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ यानी मेरी नमाज़, मेरी कुरबानी, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए है।" में झूटे न होंगे और इस में झूटा होना भी नहीं चाहिए वरना येह तुम्हारी हलाकत का सबब हो सकता है और तुम्हें अपने रुकूअ़ व सुजूद में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की किब्रियाई और अ़ज़मत को पेशे नज़र रखना चाहिए और अपने छोटों को भी इस की तालीम दो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी रेह़मत से तुम्हें इस क़ाबिल बनाया कि तुम उस की बारगाह में गिड़गिड़ा सको तो उस की बारगाह में बा अदब रेहने और दिल को ह़ाज़िर रखने में कोई कोताही नहीं करनी चाहिए।

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (की रेह़मत) नमाज़ी की त़रफ़ मुतवज्जेह होती है जब तक वोह अपनी तवज्जोह न हटाए। पस अपने ज़ाहिरो बात़िन को इधर उधर मुतवज्जेह होने से बचाओ।" (السنن الکبری للنسائی ،کتاب السهو ،باب النهی عن الالتفات فی الاصلاة ،الحدیث٥٢٧،ج١،ص١٩١)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "बेशक आदमी नमाज़ पढ़ता है लेकिन उस के लिए उस का निस्फ़, तिहाई, चौथाई, पांचवां, छटा ह़त्ताकि दसवां ह़िस्सा भी (सवाब) नहीं लिखा जाता बल्कि बन्दे के लिए उस की नमाज़ में से वोही कुछ लिखा जाता है जिसे वोह समझ कर अदा करता है।

(المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث عمار بن یاسر ،الحدیث١٨٩١٦،ج٦،ص٤٨٣۔حلیة الاولیاء ،سفیان الثوری ،الحدیث ٩٦٣٠، ج٧، ص٦٣)

बाज़ ने कहा है कि "बन्दा सजदा करता है, उस का ख़याल होता है कि उस ने इस के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब ह़ासिल कर लिया ह़ालांकि उस ने सजदे में जो गुनाह किए हैं अगर उन्हें एह्ले मदीना पर तक़्सीम किया जाए तो वोह सब हलाक हो जाएं।" पूछा गया : "वोह कैसे ?" फ़रमाया : "वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदा कर रहा होता है लेकिन उस का दिल ख़्वाहिशात की त़रफ़ झुका होता है, वोह बात़िल का मुशाहदा कर रहा होता है जो उस वक़्त उस पर ग़ालिब होता है।"

पेश्वाई और इमामत का बयान

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "इमाम ज़ामिन होते हैं।" (مصنف عبد الرزاق ،کتاب الصلاة ،باب المؤذن أمین والامام ضامن ،الحدیث١٨٤٣،ج١،ص٣٥٦)

लिहाज़ा ऐसे शख़्स को इमाम नहीं बनना चाहिए जिसे लोग नापसन्द करते हों और बन्दा जब तक अज़ान देने पर क़ादिर न हो उस वक़्त तक इमामत न करे, येही उस के लिए बेहतर है और सह़ीह़ येह है कि इमामत उस के लिए अफ़्ज़ल है जो इस के तक़ाज़ों को पूरा कर सकता हो, इसी वज्ह से प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमेशा इमामत फ़रमाई।

और नमाज़ के अवक़ात का ख़याल रखना चाहिए और इसे अव्वल वक़्त में पढ़ना चाहिए।[1] क्यूंकि अव्वल वक़्त में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और आख़िरी वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बख़्शिश है पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा उस की त़रफ़ से मुआ़फ़ी से बेहतर है।

इमाम को तीन सक्ते करने चाहिएं क्यूंकि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इसी त़रह़ मन्क़ूल है।" (سنن ابی داؤد ،کتاب الصلاۃ ،باب السکتۃ عند الافتتاح ،الحدیث۷۷۷،ص۱۲۸۰،مفہوماً)

पेहला उस वक़्त जब वोह सना पढ़े और येह सब से त़वील है। दूसरा सूरए फ़ातिह़ा पढ़ने के बाद और सूरत शुरूअ़ करने से पेहले, येह पेहले का निस्फ़ है और तीसरा सूरत पढ़ने के बाद और रुकूअ़ करने से पेहले और इस सक्ते की मिक़्दार सब से कम है।[2] मुक़्तदी को इमाम से सबक़त नहीं करनी चाहिए बल्कि उस वक़्त तक रुकूअ़ में न जाए जब तक इमाम पूरे त़ौर पर रुकूअ़ में न चला जाए और ऐसी इक़्तिदा तमाम अरकान में बजा लाए।

कहा गया है कि नमाज़ से फ़ारिग़ होने वाले लोग तीन क़िस्म के हैं : (1) एक गिरोह वोह है जो पच्चीस नमाज़ों का सवाब पाने वाला होता है। येह वोह लोग हैं जो इमाम के रुकूअ़ के बाद तक्बीर केहते और रुकूअ़ करते हैं (2) दूसरा गिरोह वोह है जो एक नमाज़ का सवाब ह़ासिल करने वाला होता है। येह वोह हैं जो इमाम के साथ बराबरी करते हैं (3) तीसरा गिरोह वोह है जो नमाज़ के बिग़ैर होता है। येह वोह हैं जो इमाम से सबक़त करते हैं।

इस में इख़्तिलाफ़ है कि क्या इमाम को रुकूअ़ में लोगों के शामिल होने का इन्तिज़ार करना चाहिए ताकि उन्हें जमाअ़त की फ़ज़ीलत ह़ासिल हो ? शायद बेहतर येह है कि इख़्लास होते हुवे ऐसा करने में ह़रज नहीं जबकि (नमाज़ियों की तादाद में) कोई फ़र्क़ न पड़े।

और नमाज़े फ़ज्र में इमाम दुआ़ए क़ुनूत (اَللّٰهُمَّ اهْدِنَا.....الخ) पढ़े और मुक़्तदी आमीन केहना शुरूअ़ करें और जब इमाम क़ुनूत के इन अल्फ़ाज़ पर पहुंचे : اِنَّكَ تَقْضِىْ وَلَا يُقْضٰى عَلَيْكَ "**तर्जमा :** बेशक तू ही फ़ैसला करता है और तेरे ख़िलाफ़ फ़ैसला नहीं किया जा सकता।" (السنن الکبری للبیہقی ،کتاب الصلاۃ ،باب دعاء القنوت ،الحدیث۳۱۴۱،ج۲،ص۲۹۷۔۲۹۸،بدون فلك الحمد.....الخ) तो आमीन केहना ख़त्म करें और बक़िय्या क़ुनूत में इमाम सिर्री (यानी आहिस्ता आवाज़ में) क़िराअत करेगा और मुक़्तदी

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** बाज़ नमाज़ों में ताख़ीर करना और बाज़ में ताजील करना (यानी जल्दी पढ़ना) अफ़्ज़ल है और मोसिमे गर्मा व सर्मा के एतिबार से भी हुक्म मुख़्तलिफ़ है, इस की तफ़्सील जानने के लिए **बहारे शरीअ़त हिस्सा सिवुम, स. 19 ता 21** का मुत़ालआ़ करें।" (बहारे शरीअ़त, नमाज़ के वक़्तों का बयान, हिस्सा 3, स. 19 ता 21)

2....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "अगर तीन बार سُبْحٰنَ الله केहने की मिक़्दार ठहरा रहा तो सजदए सह्व वाजिब है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, सजदए सह्व का बयान, हिस्सा 3, स. 64)

www.dawateislami.net

भी इस की मुवाफ़क़त में सिर्री क़िराअत करेंगे या इस के बदले में اَشْهَدُ (यानी मैं गवाही देता हूं) कहेंगे।[1]

जुम्अ़तुल मुबारक की फ़ज़ीलत, आदाब, फ़राइज़ और सुन्नतें

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो शख़्स तीन जुम्अों की नमाज़ें बिला उ़ज़्र छोड़ता है उस के दिल पर मोहर लगा दी जाती है।"

(صحيح ابن خزيمة، كتاب الجمعة،باب ذكر الدليل على أن الوعيد لتارك الجمعة .....الخ ،الحديث١٨٥٧،ج٣، ص١٧٦ بدون من غير عذرٍ)

एक दूसरी रिवायत में है : "ऐसे शख़्स ने इस्लाम को पसे पुश्त डाल दिया।"

(شعب الايمان ،باب فى الصلوات ،فضل الجمعة ،الحديث٣٠٠٦،ج٣،ص١٠٣)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे पास जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आए और उन के हाथ में एक चमकता हुवा शीशा था उन्हों ने अ़र्ज़ की : येह जुम्आ़ है जिसे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर फ़र्ज़ किया है ताकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के लिए येह अ़ह्द हो जाए।" मैं ने पूछा : "इस में हमारे लिए क्या है?" उन्हों ने जवाब दिया : "इस में एक बेहतरीन घड़ी है जो शख़्स इस में उस भलाई की दुआ़ करे जो उस की क़िस्मत में है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़ता फ़रमाएगा अगर उस की क़िस्मत में नहीं तो उस से बड़ी चीज़ उस के लिए जम्अ़ की जाएगी हमारे नज़दीक येह तमाम दिनों का सरदार है और आख़िरत में हम इसे यौमे मज़ीद के नाम से पुकारेंगे।" मैं ने पूछा : "ऐसा क्यूं?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत में एक वादी बनाई है जो सफ़ेद कस्तूरी से ज़्यादा ख़ुश्बूदार है जब जुम्आ़ का दिन होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इल्लिय्यीन के लिए (अपनी शान के मुताबिक़) कुर्सी पर नुज़ूल फ़रमाएगा और उन लोगों पर अपनी तजल्ली ज़ाहिर फ़रमाएगा ह़त्ताकि वोह उस की ज़ाते अक़्दस का दीदार करेंगे।" (المعجم الاوسط ،الحديث٦٧١٧،ج٥،ص٩٩-١٠٠،مفهوماً)

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** नमाज़े फ़ज्र में क़ुनूत नहीं पढ़ी जाएगी। जैसा कि **अ़ल्लामा शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "नमाज़े फ़ज्र में क़ुनूत नहीं पढ़ी जाएगी क्यूंकि येह मन्सूख़ है।" (تنوير الابصار، كتاب الصلاة،باب الوتروالنوفل ج٢، ص٥٣٨) और मुक़्तदी इमाम के पीछे क़िराअत नहीं करेगा। जैसा कि **अ़ल्लामा ह़सन बिन अ़म्मार शुरुम्बुलाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "और मुक़्तदी को किसी नमाज़ में क़िराअत जाइज़ नहीं, न फ़ातिह़ा, न आयत, न आहिस्ता की नमाज़ में, न जह्र की नमाज़ में। इमाम की क़िराअत मुक़्तदी के लिए भी काफ़ी है। (مراقى الفلاح شرح نورالايضاح، كتاب الصلاة،باب شروط الصلاة واركانها ص٥١)

www.dawateislami.net

जान लो ! ऐसे चालीस आदमियों के बिग़ैर जुम्आ़ मुन्अ़क़िद नहीं होता।[1] जो मुकल्लफ़, आज़ाद और मुक़ीम हों और गर्मी सर्दी में एक से दूसरी जगह मुन्तक़िल न होते हों।

एक के बाद दूसरा जुम्आ़ नहीं होना चाहिए मगर येह कि शह्र बड़ा हो और येह गुमान हो कि एक जामेअ़ मस्जिद में लोग इकठ्ठे नहीं हो सकते तो इस सूरत में दो, तीन या ब क़दरे ह़ाजत ज़्यादा जगहों पर पढ़ सकते हैं। जुम्आ़ में दो ख़ुत़बे फ़र्ज़ हैं और इन दोनों में क़ियाम भी फ़र्ज़ है और दोनों में बैठना फ़र्ज़ है पेहले ख़ुत़बे के चार फ़र्ज़ हैं : (1) तह़मीद और इस की कम से कम मिक़्दार اَلْحَمْدُلِلّٰہ केहना है (2) नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ना (3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करना (4) क़ुरआने मजीद से एक आयत का तिलावत करना इसी त़रह़ दूसरे ख़ुत़बे के भी चार फ़राइज़ हैं अलबत्ता इस में क़िराअत की जगह दुआ़ है और चालीस आदमियों पर दोनों ख़ुत़बों का सुनना वाजिब है।[2]

जुम्आ़ की सुन्नतें

जब सूरज ढल जाए मुअज़्ज़िन अज़ान दे और इमाम मिम्बर पर बैठ जाए तो तह़िय्यतुल मस्जिद के इ़लावा नमाज़ नहीं पढ़ सकते और ख़ुत़बा शुरूअ़ होने तक गुफ़्तगू मन्अ़ नहीं। और जुम्आ़ के दिन सफ़ेद कपड़े पेहनना, ख़ुश्बू लगाना, ग़ुस्ल करना और अव्वल वक़्त में आना मुस्तह़ब है।

नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने जुम्आ़ के दिन ग़ुस्ल किया फिर नमाज़े (जुम्आ़) के लिए पेहली घड़ी गया गोया उस ने ऊंट की क़ुरबानी की, जो दूसरी घड़ी में गया गोया उस ने गाए की क़ुरबानी दी, जो तीसरी साअ़त में गया गोया उस ने सींगों वाला मेंढा क़ुरबान किया, जो चौथी साअ़त में गया गोया उस ने मुर्ग़ी सदक़ा की जो पांचवीं साअ़त में गया गोया उस ने अन्डा सदक़ा किया और जब इमाम (मिम्बर की त़रफ़) निकलता है तो आमाल नामे लपेट दिए जाते हैं और क़लम रोक दिए जाते हैं और फ़रिश्ते मिम्बर के पास जम्अ़ हो कर ख़ुत़बा सुनने में मश्ग़ूल हो जाते हैं पस इस के बाद जो शख़्स आता है वोह सिर्फ़ नमाज़ का ह़क़

1....**अह़नाफ़ के नज़्दीक** नमाज़े जुम्आ़ के सह़ीह़ होने के लिए ख़त़ीब के सिवा तीन आदमी काफ़ी हैं। जैसा कि फ़तावा आ़लमगीरी में है : "अगर तीन ग़ुलाम या मुसाफ़िर या बीमार या गूंगे या अनपढ़ मुक़्तदी हों तो जुम्आ़ हो जाएगा और सिर्फ़ औ़रतें या बच्चे हों तो नहीं"।

(الفتاوی الھندیہ، کتاب الصلاۃ،الباب السادس عشر فی صلاۃ الجمعۃ،ج۱،ص۱۴۸ والدرالمختار، کتاب الصلاۃ،باب الجمعۃ،ج۳،ص ۲۷)

2....**अह़नाफ़ के नज़्दीक** ख़ुत़बए जुम्आ़ में मज़्कूरा चीज़ें सुन्नत हैं। जबकि इस की शराइत़ येह हैं : "(1) वक़्त में हो (2) नमाज़ से पेहले और (3) ऐसी जमाअ़त के सामने हो जो जुम्आ़ के लिए शर्त़ है यानी कम से कम ख़त़ीब के सिवा तीन मर्द और (4) इतनी आवाज़ से हो कि पास वाले सुन सकें अगर कोई और अम्र मानेअ़ न हो।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, स. 115,116)

अदा करने के लिए आता है उस के लिए मज़ीद कोई फ़ज़ीलत नहीं।"

(صحیح البخاری، کتاب الجمعة، باب فضل الجمعة، الحدیث ٨٨١، ص٦٩)

(السنن الکبری للبیهقی، کتاب الجمعة، باب فضل التکبیر الی الجمعة، الحدیث ٥٨٦٤، ج ٣، ص ٣٢٠-٣٢١)

(سنن ابن ماجة، ابواب اقامة الصلوات، باب ما جاء فی التهجیر الی الجمعة، الحدیث ١٠٩٢، ص ٢٥٤١، بدون "لیس له من الفضل شئ")

साआ़त की तफ़्सील

पेहली साअ़त से मुराद तुलूए़ आफ़्ताब तक का वक़्त है दूसरी साअ़त इस के बुलन्द होने तक है और तीसरी साअ़त वोह वक़्त है जब सूरज की रौशनी फैल जाए चौथी और पांचवीं साअ़त चाश्त से ज़वाल तक है।

नमाज़ी को चाहिए कि लोगों की गर्दनें न फलांगे और न उन के सामने से गुज़रे और ऐसी जगह बैठे कि कोई उस के सामने से न गुज़रे और पेहली सफ़ की कोशिश करे। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए तो ब कसरत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे और इस (ख़ास) घड़ी का अच्छी त़रह़ ख़याल रखे जो रोज़े जुम्आ़ में है।

और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद भेजे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे ऊपर चमकती रात और रौशन दिन (यानी शबे जुम्आ़ और जुम्आ़ के दिन) में ब कसरत दुरूद भेजो।" (المعجم الاوسط، الحدیث ٢٤١، ج ١، ص ٨٤)

जुम्आ़ के दिन सदक़ा करना ख़ास तौ़र पर मुस्तह़ब है और जब मस्जिद में दाख़िल हो तो बैठने से पेहले चार रक्अ़त पढ़ना मुस्तह़ब है और इन में दो सौ मरतबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़े और अगर हो सके तो जुम्आ़ का दिन आख़िरत की तय्यारी के लिए मुक़र्रर कर ले इस त़रह़ कि इस दिन दुन्यवी मसरूफ़िय्यात में मश्ग़ूल न हो पस जिस ने ऐसा किया तो उस का येह अ़मल दोनों जुम्अ़ों के दरमियान (गुनाहों का) कफ़्फ़ारा हो जाएगा।

मरवी है कि "जो शख़्स जुम्आ़ की रात सफ़र करे उस के साथ वाले फ़रिश्ते उसे बद दुआ़ देते हैं।" (इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के नज़्दीक बरोज़े जुम्आ़) तुलूए़ फ़ज्र के बाद सफ़र करना ह़राम है। अलबत्ता ! रुफ़क़ाए सफ़र के चले जाने का अन्देशा हो तो जाइज़ है।[1]

नवाफ़िल का बयान

नवाफ़िल को नहीं छोड़ना चाहिए क्यूंकि येह फ़राइज़ की कमी पूरी करने वाले हैं। फ़राइज़ ब मन्ज़िलए अस्ल सरमाया के हैं और नवाफ़िल नफ़्अ़ की त़रह़ हैं और सुनने मुअक्कदा को भी न छोड़े जैसा कि उ़र्फ़ है। न ही चाश्त की नमाज़ छोड़े येह दो या चार या इस से ज़्यादा हैं। इसी त़रह़ नमाज़े तहज्जुद और मग़रिब व इ़शा के दरमियानी वक़्त को इ़बादत के साथ ज़िन्दा करना नीज़ सुब्ह़

1....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** जुम्आ़ के दिन भी तुलूए़ फ़ज्र के बाद सफ़र करने में कोई ह़रज नहीं। जैसा कि **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى तेह़रीर फ़रमाते हैं : "जुम्आ़ के दिन अज़ाने जुम्आ़ से पेहले सफ़र जाइज़ है।"

(مراة المناجیح شرح مشکوٰة المصابیح، باب آداب السفر، الفصل الثالث، ج ٥، ص ٤٩٩)

की दो रक्अ़तों (यानी सुन्नतों) को भी न छोड़े क्यूंकि येह दो रक्अ़तें दुन्याओ मा फ़ीहा (यानी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर हैं। इन का वक़्त सुब्हे सादिक़ के तुलूअ़ होने के साथ शुरूअ़ होता है और सुब्हे सादिक़ की रौशनी कनारों में फैलती है न कि लम्बाई में।

ईदैन की नमाज़ का बयान

ईदैन की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा है और दीन की निशानियों में से एक निशानी है।(1) इस में चन्द उमूर का लिहाज़ रखा जाए।

अव्वल : तीन बार इस त़रह़ तक्बीर केहना :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا، وَسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ.

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, वोह बहुत बड़ा है, उसी के लिए ब कसरत ह़म्द है, सुब्हो शाम में उसी के लिए पाकी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई माबूद नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, ख़ालिस उसी की इ़बादत करते हुवे अगर्चे काफ़िरों को नापसन्द हो।

ईदुल फ़ित्र की रात से ले कर नमाज़े ईद शुरूअ़ करने तक तक्बीर करे जबकि ईदुल अज़्ह़ा में नवीं ज़िल ह़िज्जा की फ़ज्र से तेरहवीं ज़िल ह़िज्जा की अ़स्र तक पढ़े। येह कामिल तरीन अक़्वाल में से है और तक्बीर फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद कहे। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ नवाफ़िल के बाद भी कहे।(2) नमाज़ के लिए निकलते वक़्त ग़ुस्ल करना और ज़ीनत करना मुस्तह़ब है और बच्चों और बूढ़ी औ़रतों का निकलना मुस्तह़ब है और एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से लौटना भी मुस्तह़ब है मक्कए मुकर्रमा और बैतुल मुक़द्दस के इ़लावा (ईद की नमाज़ के लिए) सह़रा (यानी मैदान) में जाना मुस्तह़ब है लेकिन अगर बारिश हो (तो मस्जिद में नमाज़ पढ़ने में ह़रज नहीं)

नमाज़ का वक़्त तुलूए़ आफ़्ताब से ज़वाल तक है और जानवरों की क़ुरबानी का वक़्त सूरज निकलने के बाद दो रक्अ़तों और दो ख़ुत़बों जितनी देर के बाद उस वक़्त से ले कर तेरह तारीख़ के आख़िर(3) (यानी ग़ुरूबे आफ़्ताब से पेहले) तक है क़ुरबानी की वज्ह से ईदुल अज़्ह़ा में जल्दी करना मुस्तह़ब है और ईदुल फ़ित्र में ताख़ीर मुस्तह़ब है ताकि पेहले सदक़ए फ़ित्र तक़्सीम हो जाए।

1....**सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : "ईदैन की नमाज़ वाजिब है मगर सब पर नहीं बल्कि उन्हीं पर जिन पर जुम्आ़ वाजिब है।" (बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 3, स. 128)

2....**ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "नफ़्ल व सुन्नत व वित्र के बाद तक्बीरे (तश्रीक़) वाजिब नहीं और जुम्आ़ के बाद वाजिब है और नमाज़े ईद के बाद भी केह ले।"

(الدرالمختار ورد المحتار، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب المختاران الذبيح اسماعيل، ج٣، ص٧٣)

3....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** "चौथे दिन (13 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम) क़ुरबानी करना नाजाइज़ है। जैसा कि साह़िबे हिदाया ने सय्यिदुना उ़मर व अ़ली व इब्ने अ़ब्बास (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم) का क़ौल नक़्ल फ़रमाया कि अय्यामे नह़रतैन (10,11,12 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम) हैं और पेहला दिन अफ़्ज़ल है। (هدايه اخيرين، كتاب الاضحيه، ص٤٣٠)

www.dawateislami.net

लोग तक्बीर केहते हुवे नमाज़े ईद के लिए जाएं और जब इमाम ईदगाह पहुंचे तो न बैठे न नफ़्ल पढ़े जबकि दीगर लोग ऐसा कर सकते हैं फिर लोग नमाज़े नफ़्ल पढ़ना छोड़ दें।[1] एक मुनादी नमाज़ खड़ी होने का एलान करे, इमाम दो रक्अ़तें पढ़ाए पेहली रक्अ़त में तक्बीरे तह़रीमा के इलावा सात तक्बीरें कहे।[2] हर दो तक्बीरों के दरमियान سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ पढ़े। तक्बीरे तह़रीमा के बाद وَجَّهْتُ وَجْهِیَ पढ़े और आठवीं तक्बीर तक اَعُوْذُ بِاللّٰہِ न पढ़े नीज़ पेहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए क़ाफ़ और दूसरी में सूरए क़मर पढ़े। दूसरी रक्अ़त में ज़ाइद तक्बीरें पांच हैं। नमाज़ के बाद दो ख़ुत़बे दे और इन के दरमियान बैठे और जिस की नमाज़े ईद रेह जाए वोह क़ज़ा करे। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो क़ुरबानी में मश्ग़ूल हो जाए।"

क्यूंकि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मेंढे की क़ुरबानी की और येह पढ़ा بِسْمِ اللّٰہِ، وَاللّٰہُ اَکْبَرُ، ھٰذَا عَنِّیْ وَعَمَّنْ لَّمْ یُضَحِّ مِنْ اُمَّتِیْ "यानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है येह क़ुरबानी मेरी त़रफ़ से और मेरी उम्मत के उन लोगों की त़रफ़ से जो क़ुरबानी नहीं कर सकते।" (سنن ابی داؤد، کتاب الضحایا، باب فی الشاہ یضحی بھا عن جماعۃ، الحدیث ۲۸۱۰، ص۱۴۳۳)

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "जो शख़्स ज़ुल ह़िज्जा का चांद देखे और वोह क़ुरबानी करने का इरादा रखता हो तो अपने बालों और नाख़ुनों में से कुछ न ले।" (جامع الترمذی، ابواب الاضاحی، باب ترک أخذ الشعر.....الخ، الحدیث۱۵۲۳، ص۱۸۰۷)

सूरज व चांद ग्रहन की नमाज़[3]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "बेशक सूरज और चांद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से दो

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "नमाज़े ईद से क़ब्ल नफ़्ल नमाज़ मुत़्लक़न मकरूह है। जैसा कि **अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "नमाज़े ईद से क़ब्ल नफ़्ल नमाज़ मुत़्लक़न मकरूह है, ईदगाह में हो या घर में, उस पर ईद की नमाज़ वाजिब हो या न हो। यहां तक कि औ़रत अगर चाश्त की नमाज़ घर में पढ़ना चाहे तो (ईद की) नमाज़ हो जाने के बाद पढ़े और नमाज़े ईद के बाद ईदगाह में नफ़्ल पढ़ना मकरूह है, घर में पढ़ सकता है बल्कि मुस्तह़ब है कि चार रक्अ़तें पढ़े। येह अह़काम ख़वास के हैं, अ़वाम अगर नफ़्ल पढ़े अगर्चे नमाज़े ईद से पेहले, अगर्चे ईदगाह में उन्हें मन्अ़ न किया जाए।" (الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ج۳، ص۵۷ تا ۶۰)

2....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "ईदैन में छे ज़ाइद तक्बीरें हैं तीन पेहली रक्अ़त में और तीन दूसरी रक्अ़त में। अगर इमाम इस से ज़ाइद तक्बीरें कहे तो मुक़्तदी तेरह तक्बीरों तक इमाम की इक़्तिदा कर सकते हैं। और **अह़नाफ़ के नज़दीक** नमाज़े ईद की क़ज़ा भी नहीं।" (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, स. 131-132)

3....**अह़नाफ़ के नज़दीक नमाज़े कुसूफ़ पढ़ने का त़रीक़ा : फ़तावा शामी** में इस का त़रीक़ा यूं बयान किया गया है : "येह नमाज़ और नवाफ़िल की त़रह़ दो रक्अ़त पढ़े यानी हर दो रक्अ़त में एक रुकूअ़ और दो सजदे करें। न इस में अज़ान है, न इक़ामत न बुलन्द आवाज़ से क़िराअत। और नमाज़ के बाद दुआ़ करें यहां तक कि आफ़्ताब खुल जाए और दो रक्अ़त से ज़्यादा भी पढ़ सकते हैं ख़्वाह दो दो रक्अ़त पर सलाम फेरें या चार पर।"

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الکسوف، ج۳، ص۷۸)

निशानियां हैं, इन्हें किसी की मौत या ज़िन्दगी के बाइस ग्रहन नहीं होता पस जब तुम इस चीज़ (यानी ग्रहन) को देखो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और नमाज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाओ।"

(صحیح مسلم، کتاب الکسوف، باب صلاۃ الکسوف، الحدیث ۲۰۹۱، ص۸۱۹)

जब सूरज या चांद ग्रहन हो तो येह आवाज़ दी जाए : "नमाज़ खड़ी होने वाली है।"

इमाम लोगों को मस्जिद में दो रक्अ़तें पढ़ाए, हर रक्अ़त में दो रुकूअ़ करे, पेहली रक्अ़त को दूसरी रक्अ़त से त़वील करे, और बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करे। और सूरज या चांद के रौशन होने तक नमाज़ को त़वील करना मुस्तह़ब है।

नमाज़े इस्तिस्क़ा का बयान[1]

इमाम को चाहिए कि वोह लोगों को तीन दिन रोज़ा रखने, त़ाक़त के मुत़ाबिक़ सदक़ा करने, तौबाओ इस्तिग़फ़ार करने और ज़ुल्मो ज़्यादती से बाज़ रेहने का हुक्म दे फिर चौथे दिन

1....**सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي नमाज़े इस्तिस्क़ा का त़रीक़ा बहारे शरीअ़त में इस त़रह़ नक़्ल फ़रमाते हैं : "इस्तिस्क़ा दुआओ इस्तिग़फ़ार का नाम है। इस्तिस्क़ा की नमाज़ जमाअ़त से जाइज़ है मगर जमाअ़त इस के लिए सुन्नत नहीं। चाहें जमाअ़त से पढ़ें या तन्हा तन्हा दोनों (त़रह़) इख़्तियार है। इस्तिस्क़ा के लिए पुराने या पैवन्द लगे कपड़े पेहन कर तज़ल्लुल व ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ व तवाज़ोअ़ के साथ सर बर्हना पैदल जाएं और पा (यानी पाउं) बर्हना हों तो बेहतर और जाने से पेशतर ख़ैरात करें। कुफ़्फ़ार को अपने साथ न ले जाएं कि जाते हैं रेह़मत के लिए और काफ़िर पर लानत उतरती है तीन दिन पेशतर से रोज़े रखें और तौबाओ इस्तिग़फ़ार करें। फिर मैदान में जाएं और वहां तौबा करें और ज़बानी तौबा काफ़ी नहीं बल्कि दिल से करें और जिन के हुक़ूक़ इस के ज़िम्मे हैं सब अदा करे या मुआ़फ़ कराए। कमज़ोरों, बूढ़ों, बूढ़ियों, बच्चों के तवस्सुल से दुआ़ करे और सब आमीन कहें कि

सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में है : हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हें रोज़ी और मदद कमज़ोरों के ज़रीए़ से मिलती है।" और एक रिवायत में है, अगर जवान ख़ुशूअ़ करने वाले और चौपाए चरने वाले और बूढ़े रुकूअ़ करने वाले और बच्चे दूध पीने वाले न होते तो तुम पर शिद्दत से अ़ज़ाब की बारिश होती।"

इस वक़्त बच्चे अपनी माओं से जुदा रखे जाएं और मवेशी भी साथ ले जाएं। ग़रज़ येह कि तवज्जोहे रेह़मत के तमाम अस्बाब मुहय्या करें और तीन दिन मुतवातिर जंगल को जाएं और दुआ़ करें और येह भी हो सकता है कि इमाम दो रक्अ़त के साथ नमाज़ पढ़ाए और बेहतर येह है कि पेहली में سَبِّحِ اسْمَ और दूसरी में هَلْ اَتٰكَ पढ़े और नमाज़ के बाद ज़मीन पर खड़ा हो कर ख़ुत़बा पढ़े और दोनों ख़ुत़बों के दरमियान जल्सा करे और येह भी हो सकता है कि एक ही ख़ुत़बा पढ़े और ख़ुत़बे में दुआ़ व तस्बीह़ व इस्तिग़फ़ार करे और अस्नाए ख़ुत़बा में चादर लौट दे यानी ऊपर का कनारा नीचे और नीचे का ऊपर कर दे कि ह़ाल बदलने की फ़ाल हो।

ख़ुत़बे से फ़ारिग़ हो कर लोगों की त़रफ़ पीठ और क़िब्ले को मुंह कर के दुआ़ करे। बेहतर वोह दुआ़एं हैं जो अह़ादीस में वारिद हैं और दुआ़ में हाथों को ख़ूब बुलन्द करे और पुश्ते दस्त (यानी हाथों की पुश्त) जानिबे आस्मान रखे (यानी और दुआ़ओं में तो क़ाइदा येह है कि हथेली आस्मान की त़रफ़ हो, और इस में हाथ लौट दें कि ह़ाल बदलने की फ़ाल हो।)" (बहारे शरीअ़त, नमाज़े इस्तिस्क़ा का बयान, हिस्सा : 4, स. 142)

तमाम मर्दों, बूढ़ी औ़रतों और बच्चों को ले जाए, लोगों के कपड़े पाक साफ़ लेकिन फटे पुराने हों जिस से उन की आ़जिज़ी और मिस्कीनी ज़ाहिर हो अलबत्ता येह बात ईद में नहीं और उन्हें नमाज़े ईद की त़रह़ दो रक्अ़तें पढ़ाए और दो ख़ुत़बे दे, उन के दरमियान थोड़ा सा बैठे। दोनों ख़ुत़बों में ज़्यादा तर इस्तिग़फ़ार होना चाहिए। दूसरे ख़ुत़बे में इमाम को चाहिए कि वोह लोगों की त़रफ़ पीठ और क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करे।"

और इस ह़ालत में चादर को उल्टाए इस त़रह़ उल्टाना नेकियों से ख़ाली होने के त़ौर पर है। " नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इसी त़रह़ किया, चादर के ऊपर वाले ह़िस्से को नीचे और दाएं वाले को बाएं कर दे। लोग भी इसी त़रह़ करें और इस ह़ालत में उस घड़ी दिल में दुआ़ मांगे फिर इमाम उन की त़रफ़ मुंह कर के ख़ुत़बा ख़त्म कर दे और चादरें इसी त़रह़ उल्टी हुई हों ह़त्ताकि चादरें भी उस वक़्त उतारें जब पेहने हुवे कपड़े तब्दील करें और दुआ़ करें : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस त़रह़ तू ने हमें दुआ़ का हुक्म दिया और क़बूलिय्यत का वादा फ़रमाया हम ने तेरे हुक्म के मुत़ाबिक़ दुआ़ मांगी तू अपने वादए करम के मुत़ाबिक़ क़बूल फ़रमा ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम पर एह़सान फ़रमा और हमारे गुनाह बख़्श दे, हमें बारिश अ़त़ा फ़रमा और ऐ रेह़्म करने वालों में सब से ज़्यादा रेह़्म फ़रमाने वाले ! अपनी रेह़मत से हमारे लिए रिज़्क़ को कुशादा कर दे।"

दावते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **ग़ौरो फ़िक्र** के ज़रीए़ **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पेहली तारीख़ को अपने यहां के (दावते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिए कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

बाब : 05 ज़कात के असरार का बयान :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَ الْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝

(پ۱۰،التوبہ:۳٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और इसे **अल्लाह** की राह में ख़र्च नहीं करते, उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की।

इस आयत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च न करने से मुराद ज़कात अदा न करना है। ज़कात इस्लाम की बुन्याद और इस के पांच अरकान में से एक रुक्न है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ह़ाज़िर हुवा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काबतुल्लाह शरीफ़ के साए में तशरीफ़ फ़रमा थे, जब मुझे देखा तो फ़रमाया : "**रब्बे काबा की क़सम** ! वोह ज़्यादा नुक़्सान उठाने वाले हैं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "कौन से लोग ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "वोह लोग जो ज़्यादा माल वाले हैं अलबत्ता ! वोह लोग (इस से ख़ारिज हैं) जो अपने आगे, पीछे, दाएं, बाएं इस त़रह़, इस त़रह़ ख़र्च करें और ऐसे लोग बहुत कम हैं। जो शख़्स ऊंट, गाए या बकरियों का मालिक हो और उन की ज़कात न दे तो क़ियामत के दिन वोह जानवर पेहले से ज़्यादा मोटे ताज़े आएंगे वोह उसे अपने सींगों से मारेंगे और पाउं से रोंदेंगे जब आख़िरी गुज़र जाएगा तो पेहला दोबारा आएगा ह़त्ताकि लोगों के दरमियान फ़ैसला हो जाए।"

(صحیح مسلم ،کتاب الزکاۃ ،باب تغلیظ عقوبۃ من لایؤدی الزکاۃ ،الحدیث ۲۳۰۰،ص۸۳٤)

वुजूबे ज़कात के अस्बाब

अपने मुतअ़ल्लिक़ात के एतिबार से इस की छे क़िस्में हैं :

(1) जानवरों की ज़कात (2) सोने और चांदी की ज़कात (3) माले तिजारत की ज़कात (4) ख़ज़ाने व मादनियात की ज़कात (5) ज़मीन की फ़स्ल की ज़कात और (6) सदक़ए फ़ित्र।

जानवरों की ज़कात

येह ज़कात और इस के इलावा दूसरी क़िस्म की ज़कात आज़ाद मुसलमान पर वाजिब है। बालिग़ होना शर्त़ नहीं बल्कि बच्चे और पागल के माल में भी ज़कात वाजिब है।

माल में ज़कात वाजिब होने की शराइत[1]

जहां तक माल का तअ़ल्लुक़ है तो इस की पांच शराइत़ हैं : (1) जानवर हो (2) चरने वाला हो (3) साल तक बाक़ी रेहने वाला हो (4) निसाबे कामिल हो और (5) मुकम्मल तौ़र पर उस की मिल्किय्यत में हो।

पेहली शर्त़ : उस का जानवर होना है और ऊंट, गाए और बकरी के इ़लावा जानवरों में ज़कात फ़र्ज़ नहीं, बकरी और हिरन, घोड़े और ख़च्चर के मिलाप से पैदा होने वाले जानवरों में भी ज़कात नहीं।

दूसरी शर्त़ : चरने वाला हो पस पालतू जानवर (यानी जो घर में पाला जाए) उस पर ज़कात नहीं और निसाब कामिल होना चाहिए।

ऊंटों की ज़कात

जब तक पांच ऊंट न हो उन पर ज़कात नहीं। पांच ऊंटों में एक सालह भेड़ होगी या बकरी जो तीसरे साल में दाख़िल हो।[2] दस ऊंटों में दो बकरियां, पन्दरह में तीन और बीस में चार बकरियां होंगी पच्चीस[25] ऊंटों में बिन्ते मुख़ाज़ (यानी ऊंट का वोह मादा बच्चा जो दूसरे साल में दाख़िल हो चुका हो) लाज़िम होगा। अगर ऐसा बच्चा न हो तो इब्ने लबून (यानी वोह नर जो तीसरे साल में दाख़िल हो चुका हो) होगा अगर्चे बिन्ते मुख़ाज़ को दूसरे से ख़रीद सकता हो। छत्तीस[36] ऊंटों में एक बिन्ते लबून (दो सालह मादा जो तीसरे साल में दाख़िल हो चुकी हो) होगी और जब छियालीस[46] हो जाएं तो उस में एक ह़िक़्क़ा है (यानी जो ऊंट चौथे साल में दाख़िल हो) जब इक्सठ[61] हो जाएं तो उन में एक जिज़्आ़ (यानी जो पांचवें साल में दाख़िल हो) होगा। जब छिहत्तर[76] हों तो उन में दो बिन्ते लबून होंगे। जब इक्यानवे[91] हो जाएं तो उन में दो ह़िक़्क़े होंगे। जब एक सौ इक्कीस[121] हो जाएं तो उन में तीन बिन्ते लबून होंगे। जब एक सौ तीस[130] हो जाएं तो उन में तीन बिन्ते लबून होंगे जब

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** ज़कात वाजिब होने के लिए येह शराइत़ हैं : (1) मुसलमान होना (2) बुलूग़ (3) अ़क़्ल (4) आज़ाद होना (5) माल ब क़दरे निसाब उस की मिल्क में होना (6) पूरे तौ़र पर उस का मालिक हो यानी उस पर क़ाबिज़ भी हो (7) निसाब का दैन से फ़ारिग़ होना (8) निसाब ह़ाजते अस्लिया से फ़ारिग़ हो (9) माले नामी होना और (10) साल गुज़रना।" (बहारे शरीअ़त, ज़कात का बयान, ह़िस्सा 5, स. 10 ता 19) ज़कात की शराइत़ व मसाइल तफ़्सीली तौ़र पर जानने के लिए बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 5 का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

2....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "ज़कात में जो बकरी दी जाए वोह साल भर से कम की न हो। बकरी दें या बकरा, इस का इख़्तियार है।" (ردالمحتار، کتاب الزکاۃ،باب نصاب الابل،ج۳، ص۲۳۸)

एक सौ तीस हो जाएं तो ह़िसाब ठहर जाएगा तो अब हर चालीस पर एक बिन्ते लबून और हर पचास पर एक ह़िक़्क़ा होगा।[1]

गाए की ज़कात[2]

तीस से कम गाएं हों तो उन पर ज़कात नहीं जब तीस हो जाएं तो एक तबीअ़ होगा यानी वोह बच्चा जो दूसरे साल में दाख़िल हो चुका हो, फिर चालीस गाए में एक मुसन्ना है यानी जो तीसरे साल में दाख़िल हो चुकी हो, फिर साठ में दो तबीअ़ होंगे और ह़िसाब ठहर जाएगा फिर चालीस पर एक मुसन्ना और हर तीस पर एक तबीअ़ होगा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

बकरियों की ज़कात

बकरियां जब तक चालीस न हो उन पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं, जब चालीस हो जाएं तो एक बकरी या बकरी का दो सालह बच्चा होगा, फिर एक सौ बीस तक येही हुक्म है। एक सौ इक्कीस में दो बकरियां लाज़िम होंगी, फिर दो सौ एक में तीन बकरियां होंगी और चार सौ में चार बकरियां होंगी, फिर ह़िसाब रुक जाएगा और अब हर सौ में एक बकरी होगी।

दो आदमी शरीक हों तो उन पर भी इस त़रह़ ज़कात होगी जिस त़रह़ एक मालिके निसाब के माल में ज़कात होती है और शिर्कत में शर्त़ येह है कि वोह तमाम अह़वाल में इकठ्ठे होंगे, पड़ोस की शिर्कत ह़िस्सों की शिर्कत की त़रह़ है।

ज़मीन की फ़स्ल की ज़कात

हर वोह उगने वाली चीज़ जिसे बत़ौरे ग़िज़ा इस्तिमाल करते हैं जब बीस मन हो तो उस में उ़श्र वाजिब है।[3]

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "पांच ऊंट से कम में ज़कात वाजिब नहीं और जब पांच या पांच से ज़्यादा हों, मगर पच्चीस से कम हों तो हर पांच में एक बकरी वाजिब है यानी पांच हों तो एक बकरी, दस हों तो दो। وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس, और अगर पच्चीस ऊंट हों तो एक बिन्ते मुख़ाज़ यानी ऊंट का बच्चा मादा जो एक साल का हो चुका, दूसरे बरस में हो। पैंतीस तक येही हुक्म है यानी वोही बिन्ते मुख़ाज़ देंगे। छत्तीस से पैंतालीस तक में एक बिन्ते लबून यानी ऊंट का मादा बच्चा जो दो साल का हो चुका और तीसरे बरस में है। छियालीस से साठ तक में ह़िक़्क़ा यानी ऊंटनी जो तीन बरस की हो चुकी चौथे में हो। इक्सठ से पछत्तर तक जिज़्आ़ यानी चार साल की ऊंटनी जो पांचवीं में हो। छिहत्तर से नव्वे तक में दो बिन्ते लबून। इक्यानवे से एक सौ बीस तक में दो ह़िक़्क़े। इस के बाद एक सौ पैंतालीस तक दो ह़िक़्क़े और हर पांच में एक बकरी। मसलन एक सौ पच्चीस में दो ह़िक़्क़े एक बकरी और एक सौ तीस में दो ह़िक़्क़े दो बकरियां। وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 5, स. 29)

2....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "गाए, भेंस की ज़कात में इख़्तियार है कि नर लिया जाए या मादा मगर अफ़्ज़ल येह है कि गाएं ज़्यादा हों तो बछिया और नर ज़्यादा हों तो बछड़ा।"

(الفتاوٰی الهندیة، کتاب الزکاة، الباب الثانی فی صدقة السوائم، الفصل الثالث، ج۱، ص۱۷۸)

3....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "इस में निसाब भी शर्त़ नहीं। एक साअ़ भी पैदावार हो तो उ़श्र (यानी दसवां ह़िस्सा) वाजिब है।" (الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الزکاة، باب العشر، ج۳، ص۳۱۳)

सोने चांदी की ज़कात

जब मक्कए मुकर्रमा के वज़्न के मुताबिक़ दो सौ दिरहमों पर साल गुज़र जाए और ख़ालिस चांदी हो तो उस में पांच दिरहम होंगे, जबकि मक्कए मुकर्रमा के वज़्न के मुताबिक़ बीस दीनार का ख़ालिस सोना हो तो उस पर चालीसवां हिस्सा है और जो ज़्यादा हो उस में उसी हिसाब से ज़कात होगी अगर्चे एक दानक़ हो (यानी दिरहम के छटे हिस्से का सिक्का) सोने की डली और मम्नूआ़ ज़ेवर (जैसे सोने चांदी के बरतन वग़ैरा) में ज़कात वाजिब है। सोने चांदी के इलावा मादनियात में ज़कात वाजिब नहीं। सोने चांदी को निकालने, हासिल करने, भट्टी से गुज़ारने और ख़ालिस कर लेने के बाद चालीसवां हिस्सा लिया जाएगा। दो अक़्वाल में से ज़्यादा सहीह़ क़ौल येही है साल गुज़रने के बारे में दो क़ौल हैं। एक क़ौल के मुताबिक़ पांचवां हिस्सा लाज़िम होगा। इस सूरत में साल गुज़रने का एतिबार न होगा। और क्या निसाब का एतिबार किया जाएगा ? इस के मुतअ़ल्लिक़ दो क़ौल हैं (यानी बाज़ के नज़दीक साल गुज़रने का एतिबार किया जाएगा जबकि बाज़ के नज़दीक इस का कोई एतिबार नहीं)।

सदक़ए फ़ित्र[1]

सदक़ए फ़ित्र सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से हर उस मुसलमान पर वाजिब है जिस के पास अपने और अपने ज़ेरे कफ़ालत लोगों के लिए ईदुल फ़ित्र और इस के रात के खाने से एक साअ़ ज़ाइद उन चीज़ों में से हो जिन को बतौरे ग़िज़ा इस्तिमाल किया जाता है, और इस का अन्दाज़ा रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साअ़ से होगा येह दो सेर और एक सेर का तिहाई हिस्सा है वोह उसे अपने खाने की जिन्स से या उस से अफ़्ज़ल से निकालेगा और इसे इस त़रह़ तक़्सीम करेगा जिस त़रह़ ज़कात का माल तक़्सीम किया जाता है। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उन लोगों की त़रफ़ से सदक़ए फ़ित्र अदा करो जो तुम्हारी कफ़ालत में हैं।"

(السنن الکبری للبیهقی، کتاب الزکاة، باب اخراج زکاة الفطر .....الخ، الحدیث ٧٦٨٥، ج٤، ص٢٧٢، مفهوماً)

ज़कात की अदाएगी और इस की शराइत

ज़कात में पेहली शर्त़ निय्यत है यानी दिल से फ़र्ज़ ज़कात की निय्यत करे। मजनून और बच्चे की त़रफ़ से वली की निय्यत क़ाइम मक़ाम हो जाती है जो शख़्स माले ज़कात नहीं देता तो बादशाह की निय्यत उस के क़ाइम मक़ाम हो जाती है।

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "सदक़ए फ़ित्र हर मुसलमान आज़ाद मालिके निसाब पर जिस की निसाब ह़ाजते अस्लिया से फ़ारिग़ हो वाजिब है इस में आ़क़िल बालिग़ और माले नामी होने की शर्त़ नहीं।"

(الدرالمختار، کتاب الزکاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٢-٣٦٥)

सदक़ए फ़ित्र को ईद के दिन से मुअख़्ख़र नहीं करना चाहिए और इस के वुजूब का वक़्त रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी दिन ग़ुरूबे आफ़्ताब से शुरूअ़ हो जाता है।[1] और जल्दी देने का वक़्त रमज़ानुल मुबारक का पूरा महीना है। जो शख़्स क़ुदरत होने के बा वुजूद ज़कात की अदाएगी में ताख़ीर करे तो वोह गुनाहगार होगा अगर्चे माल हलाक हो जाए लेकिन ज़कात उस से साक़ित़ न होगी।[2] और क़ुदरत का मत़लब येह है कि उसे मुस्तह़िक़े ज़कात मिल जाए और अगर मुस्तह़िक़ न मिलने की वज्ह से ताख़ीर करे और माल हलाक हो जाए तो ज़कात साक़ित़ हो जाएगी।

ज़कात अदा करने वाले को उस शह्र में मसारिफ़े ज़कात की तादाद के मुत़ाबिक़ माल तक़्सीम करना चाहिए और मसारिफ़ की तमाम अक़्साम का इह़ात़ा करना चाहिए। इन आठ मुस्तह़िक़ीन में से दो अक़्साम अक्सर शह्रों में नहीं पाई जातीं वोह मोअल्लिफ़तुल क़ुलूब[3] और ज़कात के लिए काम करने वाले हैं। चार अक़्साम तमाम शह्रों में पाई जाती हैं : फ़ुक़रा, मसाकीन, मक़रूज़ और मुसाफ़िर। और दो अक़्साम बाज़ शह्रों में पाई जाती हैं, बाज़ में नहीं वोह जिहाद करने वाले और मुकातब हैं।[4]

जितनी अक़्साम के लोग अपने शह्र में मिल जाएं उन की तादाद के मुत़ाबिक़ उन में माल तक़्सीम कर दे फिर हर क़िस्म को तीन क़िस्मों में तक़्सीम करे या ज़्यादा हिस्से कर दे एक क़िस्म के तह़्त सब को बराबर बराबर देना वाजिब नहीं और जब नेक आदमी को ज़कात देने पर क़ादिर हो तो बेहतर है कि उसे दे और वोह मुत्तक़ी, आ़लिम और मस्तूरुल ह़ाल (यानी जिस के ह़ालात लोगों से पोशीदा हों) और (जिसे ज़कात दे) वोह उस के रिश्तेदारों में से हो और जब उस में येह बातें पाई जाएं तो अब ज़कात की क़बूलिय्यत के ज़्यादा क़रीब है। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

1....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** ईद के दिन सुब्ह़े सादिक़ तुलूअ़ होते ही सदक़ए फ़ित्र वाजिब होता है। लिहाज़ा जो शख़्स सुब्ह़ होने से पेहले मर गया या ग़नी था फ़क़ीर हो गया या सुब्ह़ तुलूअ़ होने के बाद काफ़िर मुसलमान हुवा या बच्चा पैदा हुवा या फ़क़ीर था ग़नी हो गया तो वाजिब न हुवा। और अगर सुब्ह़ तुलूअ़ होने के बाद मरा या सुब्ह़ तुलूअ़ होने से पेहले काफ़िर मुसलमान हुवा या बच्चा पैदा हुवा या फ़क़ीर था ग़नी हो गया तो वाजिब है।"

(الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٢)

2....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** अगर कुल माल हलाक हो गया तो कुल की ज़कात साक़ित़ हो गई और कुछ हलाक हुवा तो जितना हलाक हुवा उस की साक़ित़ और जो बाक़ी है उस की वाजिब अगर्चे वोह ब क़दरे निसाब न हो। हलाक के येह माना हैं कि बिग़ैर उस के फ़ेल के ज़ाएअ़ हो गया मसलन चोरी हो गई या किसी को क़र्ज़ या आ़रियत दी उस ने इन्कार कर दिया और गवाह नहीं या वोह मर गया और कुछ तर्के में न छोड़ा और अगर अपने फ़ेल से हलाक किया मसलन सर्फ़ कर डाला या फेंक दिया या ग़नी को हिबा कर दिया तो ज़कात ब दस्तूर वाजिबुल अदा है एक पैसा भी साक़ित़ न होगा अगर्चे बिल्कुल नादार हो।" (الفتاوى الهندية، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١)

3....मोअल्लिफ़तुल क़ुलूब से मुराद वोह लोग हैं जिन्हें इस्लाम की त़रफ़ माइल करने के लिए ज़कात दी जाए।

(لغة الفقهاء، ص٤٩٧)

4....''मुकातब वोह ग़ुलाम है जिस को मालिक ने कहा हो इतनी रक़म दे दे तो तू आज़ाद है।'' (لغة الفقهاء، ص٤٥٥)

ज़कात वुसूल करने वालों का बयान

ज़कात का मुस्तहिक़ वोह है जो आज़ाद हो, मुसलमान हो और वोह हाशिमी व मुत्तलिबी न हो और बच्चे और पागल को ज़कात देना जाइज़ है ब शर्ते कि उन का वली क़ब्ज़ा करे।

मसारिफ़े ज़कात की अक़्साम[1]

इस की आठ अक़्साम हैं : (1) **फ़क़ीर :** वोह शख़्स है जिस के पास न माल हो न वोह कमाने पर क़ादिर हो। (2) **मिस्कीन :** वोह शख़्स है जिस की आमदनी से ख़र्च पूरा न होता हो। (3) **आ़मिल :** येह वोह लोग हैं जो ज़कात का माल जम्अ़ करते हैं। (4) **मोअल्लिफ़तुल कुलूब :** येह वोह मुअ़ज़्ज़ज़ लोग हैं जो इस्लाम क़बूल करते हैं और क़ौम इन की इत़ाअ़त करती है और इन्हें देने का मक़्सद येह होता है कि इन की क़ौम को इस्लाम क़बूल करने में रग़बत हो।

(5) **मुकातब :** उस का हिस्सा उसे और उस के आक़ा को देना जाइज़ है और आक़ा अपने मुकातब ग़ुलाम को ज़कात नहीं दे सकता। (मुकातब उस ग़ुलाम को केहते हैं जिस ने अपने आक़ा से माले मुअ़य्यन के बदले में आज़ादी तै की हो)

(6) **ग़ारिम :** उस शख़्स को केहते हैं जो किसी जाइज़ काम के लिए क़र्ज़ लेता है और येह फ़क़ीर है जो इतने माल का मालिक नहीं होता कि क़र्ज़ अदा कर सके पस अगर उस ने किसी गुनाह के काम के लिए क़र्ज़ लिया तो जब तक तौबा न करे उसे ज़कात न दी जाए और अगर क़र्ज़ किसी अमीर ने लिया लेकिन किसी मस्लह़त के लिए या किसी फ़ित्ने को ख़त्म करने के लिए लिया तो उसे भी ज़कात देना जाइज़ है।

(7) **मुजाहिद :** वोह है जिस का नाम वज़ीफ़ा ह़ासिल करने वालों के रजिस्टर में न हो अगर्चे वोह मालदार हो लेकिन उसे उस का हिस्सा दिया जाएगा।

(8) **मुसाफ़िर :** जिस के पास सफ़र में अपने घर तक पहुंचने के लिए ज़ादे राह न हो और इसे इस सूरत में ज़कात देना जाइज़ है जब सफ़र किसी जाइज़ मक़्सद के लिए हो।

फ़क़ीर, मिस्कीन, मुसाफ़िर और नमाज़ी के केहने पर कि वोह ऐसा है एतिमाद किया जाएगा, ग़ाज़ी और मुजाहिद अगर अपना वादा पूरा न करें तो उन से माल वापस ले लिया जाए और दीगर अक़्साम में गवाहों का होना ज़रूरी है। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

नफ़्ली सदक़े का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेहबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जहन्नम से बचो अगर्चे खजूर के एक टुकड़े के ज़रीए़ हो, अगर येह न पाओ तो अच्छे कलिमे के ज़रीए़ बचो।" (صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب الحث على الصدقة .....الخ، الحديث ٢٣٥٠، ص٨٣٨)

1....**अह़नाफ़ के नज़्दीक** ज़कात के मसारिफ़ सात हैं : "(1) फ़क़ीर (2) मिस्कीन (3) आ़मिल (4) रिक़ाब (5) ग़ारिम (6) फ़ी सबीलिल्लाह (7) इब्ने सबील।" (الدر المختار، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٣-٣٤٠) इन की तफ़्सील जानने के लिए **बहारे शरीअ़त, हिस्सा 5, स. 59** का मुत़ालआ़ करें।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो बन्दा अच्छा सदक़ा देता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की औलाद के साथ अच्छा बरताव फ़रमाता है।" (الزهد لابن مبارك ،باب الصدقة ،الحديث٦٤٦،ص٢٢٧، ذريته: بدله: تركته)

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे पाक है : "सदक़ा बुराई के सत्तर[70] दरवाज़ों को बन्द कर देता है।"

(المعجم الكبير ،الحديث٤٤٠٢،ج٤،ص٢٧٤)

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया गया : "कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम इस ह़ाल में सदक़ा करो कि तनदुरुस्त हो, माल की ह़िर्स रखने वाले न हो, ग़ना की उम्मीद रखने वाले और फ़ाक़े से डरने वाले हो और ताख़ीर न करो यहां तक कि मौत आ जाए तुम कहो फ़ुलां के लिए इतना है और फ़ुलां के लिए इतना है।" (صحيح البخارى ،كتاب الزكاة ،باب فضل صدقة الشحيح الصحيح ،الحديث١٤١٩،ص١١١)

सदक़े को छुपा कर या अ़लानिय्या देने में कोई ह़रज नहीं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास और ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के ख़याल में सदक़े का माल लेना ज़कात का माल लेने से अफ़्ज़ल है क्यूंकि ज़कात लेने में फ़ुक़रा की मुज़ाह़मत है और क्यूंकि ज़कात के लिए बहुत सी शराइत़ हैं और अक्सर ज़कात लेने वाले में वोह शराइत़ मुकम्मल तौ़र पर नहीं पाई जातीं। बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है कि ज़कात में से लेना बेहतर है क्यूंकि येह वाजिब की अदाएगी पर मदद करना है और इस में नफ़्स की सरकशी को तोड़ना और इसे रुस्वा करना पाया जाता है इस सूरत में भी मुआ़मला क़रीब क़रीब ही है, इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे ह़ाजात को पूरा करते हैं

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

(1) ..... "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बाज़ बन्दों को अपनी रिज़ा के लिए लोगों की ह़ाजात पूरा करने के लिए ख़ास कर लिया है और उस ने अ़ह्द फ़रमाया है कि उन्हें अ़ज़ाब न देगा, फिर जब क़ियामत का दिन होगा तो उन्हें नूर के मिम्बरों पर बिठाया जाएगा, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कलाम करते होंगे और लोग ह़िसाब में होंगे।" (فيض القدير،حرف الهمزه تحت الحديث٢٣٥٠،ج٢،ص٦-٦٠٥)

(2) ..... "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे हैं कि लोग घबराए हुवे अपनी ह़ाजात उन के पास लाते हैं, येह बन्दे क़ियामत के दिन अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ से अम्न में होंगे।" (كنز العمال ،كتاب الزكاة ، الحديث ١٦٤٦١،ج٦، ص ١٩٠)

बाब : 06 रोज़े के असरार का बयान

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "हर नेकी का अज्र दस से सात सौ गुना तक है सिवाए रोज़े के, बेशक वोह मेरे लिए है और मैं ही उस की जज़ा दूंगा।"

(موطأ للامام مالك ،كتاب الصيام ،باب جامع الصيام ،الحديث ٧٠٤،ج١،ص٢٨٥)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! रोज़ेदार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक कस्तूरी से ज़्यादा ख़ुश्बूदार है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि : "येह शख़्स अपनी ख़्वाहिश और खाने पीने को मेरे लिए छोड़ता है, पस रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उस की जज़ा दूंगा।"

(موطأ للامام مالك ،كتاب الصيام ،باب جامع الصيام ،الحديث ٧٠٤،ج١،ص٢٨٥)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक शैत़ान इन्सान में ख़ून की त़रह़ दौड़ता है, पस भूक के ज़रीए इस के रास्तों को तंग करो।"

(سنن ابی داؤد ،كتاب السنة ،باب فی ذراری المشركين ،الحديث٤٧١٩،ص١٥٧٠، بدون: فضيقوا مجاريه بالجوع)

इसी लिए नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से इरशाद फ़रमाया : "जन्नत का दरवाज़ा हमेशा खटखटाती रहो।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "किस चीज़ के साथ ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "भूक के साथ।"

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "अगर इन्सानों के दिलों पर शैत़ानों की आमदो रफ़्त न होती तो वोह आस्मानों की बादशाही देख लेते।" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة ،الحديث٨٦٤٨،ج٣،ص٢٦٩تا٢٧٠، بتغيرٍ قليلٍ)

रोज़ा ख़्वाहिशात के ख़त्म करने में मदद देता है। (येह ख़्वाहिशात को तोड़ने के बाब में आएगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

जान लो ! रमज़ानुल मुबारक के चांद का सुबूत एक आ़दिल शख़्स की गवाही से साबित हो जाता है और शव्वालुल मुकर्रम का चांद दो आ़दिल आदमियों की गवाही से साबित होता है, अगर्चे क़ाज़ी इस का फ़ैसला करे या न करे, हर शख़्स अपने ग़लबए ज़न के मुत़ाबिक़ अ़मल करेगा और इस पर रात को निय्यत करना लाज़िम है।[1] और इस पर वाजिब है कि वोह रमज़ानुल मुबारक के रोज़े के

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "अदाए रोज़ए रमज़ान और नज़्रे मुअ़य्यन और नफ़्ल के रोज़ों के लिए निय्यत का वक़्त गुरूबे आफ़्ताब से ज़ह़वए कुब्रा तक है। इस वक़्त में जब निय्यत कर ले येह रोज़े हो जाएंगे। लिहाज़ा आफ़्ताब डूबने से पेहले निय्यत की, कि कल रोज़ा रखूंगा। फिर बेहोश हो गया और ज़ह़वए कुब्रा के बाद होश आया तो येह रोज़ा न हुवा और आफ़्ताब डूबने के बाद निय्यत की थी तो हो गया।" (الدرالمختاروردالمحتار،كتاب الصوم ،ج٣،ص٣٩٣)

www.dawateislami.net

फ़र्ज़ होने की निय्यत करे और अगर शक की रात निय्यत की, कि अगर सुब्ह़ रमज़ानुल मुबारक का दिन हुवा तो रोज़ा रखूंगा तो निय्यत सह़ीह़ न होगी।[1]

रोज़े से मुराद येह है कि वोह किसी भी चीज़ को पेट में दाख़िल होने से रोके, पस खाने, पीने, नाक में किसी चीज़ के चढ़ाने और हुक़्ना लेने से रोज़ा टूट जाता है और रग कटवाने, पछना लगवाने, सुरमा डालने और कान या उ़ज़्वे तनासुल के सूराख़ में सलाई डालने से रोज़ा नहीं टूटता। अलबत्ता ! अगर उ़ज़्वे तनासुल के सूराख़ में ऐसी चीज़ डाली जो मसाने तक पहुंच गई तो रोज़ा टूट जाएगा।[2]

और जो चीज़ें इरादे के बिग़ैर दाख़िल हो जाएं, जैसे रास्ते का गर्दो ग़ुबार या मख्खी पेट में चली जाए, कुल्ली करते या नाक में पानी डालते हुवे पानी पेट तक पहुंच जाए, जब तक मुबालग़ा न करे रोज़ा नहीं टूटेगा।[3] अगर ग़ुरूबे आफ़्ताब से क़ब्ल येह गुमान करते हुवे कुछ खाए कि रात है फिर पता चले कि दिन है तो उस का रोज़ा टूट जाएगा अगर भूल कर खाए पिए तो नहीं टूटेगा अगर अपने ह़ल्क़ या सीने से बल्ग़म खींच कर निगल ले तो रोज़ा नहीं टूटेगा, क्यूंकि इब्तिलाए आ़म (यानी इस में अ़वामो ख़वास के मुब्तला होने) की वज्ह से रुख़्सत है।

कफ़्फ़ारा सिर्फ़ जिमाअ़ (यानी हम बिस्तरी) से वाजिब होता है। मनी निकालने और खाने पीने से कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं होता।[4] **रोज़े का कफ़्फ़ारा** एक ग़ुलाम आज़ाद करना है। अगर

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "यौमुश्शक के रोज़े में येह पक्का इरादा कर ले कि येह रोज़ा नफ़्ल है तरद्दुद न रहे, यूं न हो कि अगर रमज़ान है तो येह रोज़ा रमज़ान का है, वरना नफ़्ल का या यूं कि अगर आज रमज़ान का दिन है तो येह रोज़ा रमज़ान का है, वरना किसी और वाजिब का कि येह दोनों सूरतें मकरूह हैं। फिर अगर उस दिन का रमज़ान होना साबित हो जाए तो फ़र्ज़ रमज़ान अदा होगा। वरना दोनों सूरतों में नफ़्ल है और गुनहगार बहर ह़ाल हुवा और यूं भी निय्यत न करे कि येह दिन रमज़ान का है तो रोज़ा है, वरना रोज़ा नहीं कि इस सूरत में तो न निय्यत ही हुई, न रोज़ा हुवा, और अगर नफ़्ल का पूरा इरादा है मगर कभी कभी दिल में येह ख़याल गुज़र जाता है कि शायद आज रमज़ान का दिन हो तो इस में ह़रज नहीं।" (الفتاوى الهندية، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص٢٠٠ و الدرالمختار وردالمحتار، كتاب الصوم، مبحث في صوم يوم الشك، ج٣، ص٤٠٣)

2....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "मर्द ने पेशाब के सूराख़ में पानी या तेल डाला तो रोज़ा न गया अगर्चे मसाने तक पहुंच गया और औ़रत ने शर्मगाह में टपकाया तो जाता रहा।" (الفتاوى الهندية، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٤)

3....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "कुल्ली कर रहा था बिला क़स्द पानी ह़ल्क़ से उतर गया या नाक में पानी चढ़ाया और दिमाग़ को चढ़ गया रोज़ा जाता रहा, मगर जबकि रोज़ा होना भूल गया हो तो न टूटेगा अगर्चे क़स्दन हो। यूंही किसी ने रोज़ेदार की त़रफ़ कोई चीज़ फेंकी वोह उस के ह़ल्क़ में चली गई रोज़ा जाता रहा।"

(الفتاوى الهندية، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٢)

4....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "क़स्दन खाने, पीने और जिमाअ़ से रोज़ा टूट जाता है और कफ़्फ़ारा लाज़िम होता है। (मुलख़्ख़सन अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 5, स. 126)

ग़ुलाम न हो तो मुसलसल दो महीने के रोज़े रखना है। अगर इस से भी आ़जिज़ हो तो साठ मिस्कीनों को एक एक मुद (यानी एक किलो) खाना खिलाना है।[1]

रोज़े के दरजात का बयान

जान लो ! रोज़े के तीन दरजे हैं : (1) अ़वाम (यानी आ़म लोगों) का रोज़ा (2) ख़वास (यानी ख़ास लोगों) का रोज़ा (3) ख़ासुल ख़ास का रोज़ा।

आ़म लोगों का रोज़ा पेट और शर्मगाह को ख़्वाहिश की तक्मील से रोकना है।

ख़ास लोगों का रोज़ा कान, आंख, ज़बान, हाथ, पाउं और तमाम आज़ा को गुनाहों से रोकना है।

ख़ासुल ख़ास का रोज़ा दिल को तमाम बुरे ख़यालात और दुन्यावी अफ़्कार बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ से बिल्कुल ख़ाली कर देना है। और रोज़ा हर उस चीज़ से टूट जाता है जो रोज़े के मुनाफ़ी हो।

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है : "पांच चीज़ें रोज़ेदार के रोज़े को तोड़ देती हैं : "झूट, ग़ीबत, चुग़ली, झूटी क़सम और शहवत के साथ किसी को देखना।" (فردوس الاخبار للديلمی ،باب الخاء ،الحديث ٢٨٠١،ج١،ص٣٧٧)

पस ह़ालते रोज़ा में आज़ा को गुनाहों से बचाना ख़ास लोगों के लिए ज़्यादा ज़रूरी है। चाहिए कि ह़लाल खाना भी पेट भर कर न खाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेट से बुरा कोई बरतन नहीं जो भरा हुवा हो, और इस का दिल ख़ौफ़ और उम्मीद के दरमियान मुज़्तरिब रेहना चाहिए, कि क्या उस का रोज़ा क़बूल भी हुवा या उस की क़िस्मत में भूक, प्यास और थकावट ही थी ?

मरवी है कि "बहुत से रोज़ेदार ऐसे हैं जिन को अपने रोज़े से भूक व प्यास के सिवा कुछ नहीं मिलता।" (سنن ابن ماجة، ابواب الصيام ،باب ماجاء فی الغيبة والرفث للصائم ،الحديث ١٦٩٠،ص٢٥٧٨،مفهوماً)

क्यूंकि रोज़े का मक़्सद ख़्वाहिश से रुकना है और येह चीज़ खाने पीने से रुकने पर ही मह़दूद नहीं हो सकती, कि वोह किसी को शहवत की नज़र से देख ले, ग़ीबत करे, चुग़ली खाए या झूट बोले येह तमाम चीज़ें रोज़े को तोड़ देती हैं।

---

1 ....**रोज़ा तोड़ने का कफ़्फ़ारा** येह है कि मुमकिन हो तो एक रक़्बा यानी बांदी या ग़ुलाम आज़ाद करे और येह न कर सके मसलन इस के पास न लोन्डी ग़ुलाम है न इतना माल कि ख़रीदे या माल तो है मगर रक़्बा (यानी ग़ुलाम) मयस्सर नहीं जैसे आज कल यहां हिन्दूस्तान में। तो पै दर पै साठ रोज़े रखे, येह भी न कर सके तो साठ (60) मसाकीन को भर भर पेट दोनों वक़्त खाना खिलाए और रोज़े की सूरत में अगर दरमियान में एक दिन का भी छूट गया तो अब से साठ (60) रोज़े रखे, पेहले के रोज़े मह़सूब (यानी शुमार) न होंगे अगर्चे उन्सठ (59) रख चुका था। अगर्चे बीमारी वग़ैरा किसी उ़ज़्र के सबब छूटा हो। मगर औ़रत को ह़ैज़ आ जाए तो ह़ैज़ की वज्ह से जितने नागे़ हुवे येह नागे़ नहीं शुमार किए जाएंगे यानी पेहले के रोज़े और ह़ैज़ के बाद वाले दोनों मिल कर साठ (60) हो जाने से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा।" (ردالمحتار، كتاب الصوم،باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في الكفارة، ج٣،ص٤٤٧ـالفتاوى الرضوية (مخرَّجه)،ج١٠، ص٥٩٥ وغيرهما)

नफ़्ली रोज़ों का बयान

जान लो ! फ़ज़ीलत वाले दिनों में रोज़ों का मुस्तह़ब होना मुअक्कद है। और फ़ज़ीलत वाले दिनों में से बाज़ साल में एक बार, बाज़ हर महीने और बाज़ हर हफ़्ते में पाए जाते हैं।

साल में रमज़ानुल मुबारक के बाद अ़रफ़ा (यानी नौ ज़ुलहिज्जा) का दिन।[1] दसवीं मुह़र्रम का दिन, ज़ुलहिज्जा के पेहले दस दिन, मुह़र्रमुल ह़राम के पेहले दस दिन और इ़ज़्ज़त वाले महीने (ज़ुलक़ादा, ज़ुलहिज्जा, मुह़र्रम और रजब) रोज़ों के लिए उ़म्दा दिन हैं और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शाबानुल मुअ़ज़्ज़म में ब कसरत रोज़े रखते, ह़त्ताकि गुमान होने लगता कि येह रमज़ान है।" (صحیح البخاری ،کتاب الصوم ،باب صوم شعبان ،الحدیث۱۹۶۹،ص۱۵۴،بتغیرٍ)

ह़दीसे मुबारका में है : "रमज़ानुल मुबारक के बाद अफ़्ज़ल रोज़े मुह़र्रम के हैं।"

(صحیح مسلم ،کتاب الصیام ،باب فضل صوم المحرم ،الحدیث۲۷۵۶،ص۸۶۶)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़्मतुल्लिल आ़लमीन, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "माहे मुह़र्रम का एक रोज़ा दूसरे महीनों के तीस रोज़ों से अफ़्ज़ल है और रमज़ानुल मुबारक का एक रोज़ा मुह़र्रमुल ह़राम के तीस रोज़ों से अफ़्ज़ल है।" (المعجم الصغیر للطبرانی،الحدیث ۹۶۰،ج۲،ص۷۱،بتغیرٍ قلیلٍ)

और जो शख़्स इ़ज़्ज़त वाले महीनों में जुमेरात, जुम्आ़ और हफ़्ते का रोज़ा रखे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिए सात सौ साल की इ़बादत का सवाब लिखता है। "फ़ज़ीलत वाले महीने ज़ुल हिज्जतुल ह़राम, मुह़र्रमुल ह़राम, रजबुल मुरज्जब और शाबानुल मुअ़ज़्ज़म हैं और इ़ज़्ज़त वाले ज़ुलक़ादा, ज़ुलहिज्जा, मुह़र्रम और रजब हैं इन में एक (रजब का) महीना अलग है और तीन मुसलसल हैं।"

रोज़ों के वोह दिन जो महीने में तकरार से आते हैं (यानी हर महीने आते हैं) वोह महीने का पेहला, दरमियानी यानी अय्यामे बीज़ और आख़िरी दिन हैं और अय्यामे बीज़ तेरह, चौदह और पन्दरह तारीख़ है। और हर हफ़्ते में आने वाले रोज़ों के दिन पीर, जुमेरात और जुम्आ़ के हैं।

सौमुद्दह्र (यानी उ़म्र भर रोज़े रखना) तमाम दिनों को शामिल है और हमेशा रोज़ा रखने के मकरूह होने में इख़्तिलाफ़ है।

1....**अमीरे एह्ले सुन्नत अमीरे दावते इस्लामी ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "**फ़ैज़ाने सुन्नत, सफ़ह़ा 1405**" पर नक़्ल फ़रमाते हैं : "ह़ज करने वाले पर जो अ़रफ़ात में है, उसे अ़रफ़ा (यानी 9 ज़ुल हिज्जतुल ह़राम) के दिन रोज़ा रखना मकरूह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ख़ुज़ैमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रावी (यानी रिवायत फ़रमाते हैं) कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़रफ़े के दिन (यानी 9 ज़ुल हिज्जतुल ह़राम के रोज़ ह़ाजी को) अ़रफ़ात में रोज़ा रखने से मन्अ़ फ़रमाया।"

(صحیح ابن خزیمہ،ج۳، ص۲۹۲، الحدیث:۲۱۰۱)

www.dawateislami.net

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेहतरीन रोज़े मेरे भाई ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के रोज़े हैं।"

(جامع الترمذی ،ابواب الصوم ،باب ماجاء فی سرد الصوم ،الحدیث ۷۷۰،ص۱۷۲۳)

और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान में इस त़रफ़ इशारा है कि "मुझ पर दुन्या और ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियां पेश की गईं लेकिन मैं ने उन्हें लेने से इन्कार कर दिया और मैं ने कहा मैं एक दिन भूका रहूंगा और एक दिन खाऊंगा, जब मैं खाऊंगा तो तेरी ह़म्द बयान करूंगा और जब भूका होऊंगा तो तेरी बारगाह में इल्तिजा करूंगा।"

(جامع ترمذی ،ابواب الزھد ،باب ماجاء فی الکفاف والصبر علیه ،الحدیث۲۳۴۷،ص۱۸۸۷تا۱۸۸۸، مفهوماً)

ह़दीसे पाक में है कि "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी रमज़ानुल मुबारक के इ़लावा किसी महीने के मुकम्मल रोज़े न रखे।"

(صحیح مسلم ،کتاب الصیام ،باب صیام النبی ﷺ فی غیر رمضان .....الخ ،الحدیث۲۷۲۴،ص۸۶۳)

आस्मानों में शोहरत रखने वाले बन्दे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "दुन्या में भूके रेहने वाले लोगों की अरवाह़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्ज़ फ़रमाता है और उन का ह़ाल येह होता है कि अगर ग़ाइब हो जाएं तो उन्हें तलाश नहीं किया जाता, अगर मौजूद हों तो पहचाने नहीं जाते, दुन्या में पोशीदा होते हैं मगर आस्मानों में उन की शोहरत होती है, जब जाहिल व बे इ़ल्म शख़्स उन्हें देखता है तो उन को बीमार गुमान करता है जबकि वोह बीमार नहीं होते बल्कि उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दामनगीर होता है, क़ियामत के दिन येह लोग अ़र्श के साए में होंगे जिस दिन उस के इ़लावा कोई साया न होगा।" (مسند فردوس الاخبار،الحدیث:۱۶۵۹،ج۱،ص۲۳۵)

बाब : 07 हज के असरार का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज के बारे में इरशाद फ़रमाया :

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ (پ٦، المآئدہ:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया ।

सरकारे वाला तबार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स (ता़क़त होने के बा वुजूद) ह़ज न करे और मर जाए तो चाहे वोह यहूदी हो कर मरे या इसाई हो कर ।" (جامع الترمذی ، کتاب الحج ،باب ماجاء من التغلیظ فی ترك الحج ،الحدیث ٨١٢،ص١٧٢٨)

ह़ज और मसाजिद की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا (پ١٧، الحج:٢٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और लोगों में ह़ज की आ़म निदा कर दे वोह तेरे पास ह़ाज़िर होंगे प्यादा ।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "शैत़ान यौमे अ़रफ़ा में जिस क़दर ज़लील, रांदा हुवा और ग़ज़बनाक होता है इतना कभी नहीं देखा गया ।" (الموطأللامام مالك ،کتاب الحج ،باب جامع الحج ،الحدیث ٩٨٢،ج١،ص٣٨٦)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जो शख़्स अपने घर से ह़ज या उ़मरह करने के लिए निकले और फ़ौत हो जाए, तो उसे क़ियामत तक ह़ज व उ़मरह करने वाले का अज्र दिया जाता रहेगा ।"

(شعب الایمان للبیهقی ،باب فی المناسك ،فضل الحج والعمرة ،الحدیث ٤١٠٠،ج٣،ص٤٧٤)

एक बुज़ुर्ग का क़ौल है कि जब अ़रफ़ा का दिन यौमे जुम्आ़ को आए तो तमाम एह्ले अ़रफ़ात की बख़्शिश हो जाती है और येह दुन्यावी दिनों में से अफ़्ज़ल है इसी दिन नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़िज्जतुल विदाअ़ अदा फ़रमाया और आप ह़ालते वुक़ूफ़ में थे, जब येह आयत नाज़िल हुई :

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (پ٦، المآئدة:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया ।

एह्ले किताब ने कहा अगर येह आयत हम पर नाज़िल होती तो हम इस दिन को ईद का दिन बना लेते तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "मैं गवाही देता हूं कि येह आयत नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दो ईदों (यानी अ़रफ़े और

जुम्अ़तुल मुबारक) के दिन नाज़िल हुई, जबकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ की हालत में थे।" (صحيح البخارى ،كتاب الايمان ،باب زيادة الايمان ونقصانه ،الحديث ٤٥،ص٥)

और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْحَاجِّ وَ لِمَنِ اسْتَغْفَرَ لَهُ الْحَاجُّ "**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज करने वालों को बख़्श दे और जिस के लिए ह़ाजी बख़्शिश मांगे उसे भी बख़्श दे।" (المستدرك ،كتاب المناسك ،باب وفد الله ثلاثة الغازى والحاج والمعتمر،الحديث ١٦٥٤،ج٢،ص٨٤)

रिवायत है कि ह़ज़रते अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से कई ह़ज किए, वोह फ़रमाते हैं कि "मैं ने सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ इब्ने मुवफ़्फ़क़ ! क्या तुम ने मेरी त़रफ़ से ह़ज किए ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" फ़रमाया : "तुम ने मेरी त़रफ़ से तल्बिया कहा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं क़ियामत के दिन तुम्हें इन का बदला दूंगा। और मैं मौक़िफ़ (यानी मह़शर) में तेरा हाथ पकड़ कर तुझे जन्नत में दाख़िल करूंगा जबकि लोग अभी तक ह़िसाब की सख़्ती में होंगे।"

"**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस घर से वादा फ़रमाया है कि हर साल छे लाख आदमी उस का ह़ज करेंगे अगर कम हो जाएं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रिश्तों के ज़रीए़ उन्हें पूरा करेगा और बरोज़े क़ियामत काबा को दुल्हन की त़रह़ मौक़िफ़ की त़रफ़ ले जाया जाएगा और जिन जिन लोगों ने उस का ह़ज किया होगा वोह उस के पर्दों से लटके होंगे और इस के गिर्द चक्कर लगा रहे होंगे, ह़त्ताकि काबा जन्नत में दाख़िल हो जाएगा, तो वोह लोग भी उस के साथ जन्नत में चले जाएंगे।"

एक ह़दीसे मुबारक में है : "बेशक "ह़जरे अस्वद" जन्नत के याक़ूतों में से एक याक़ूत है और वोह क़ियामत के दिन इस त़रह़ उठाया जाएगा, कि उस की दो आंखें और ज़बान होगी, जिस के ज़रीए़ वोह उस शख़्स की गवाही देगा, जिस ने उसे ह़क़ व सदाक़त के साथ बोसा दिया होगा।"

(جامع الترمذى ،ابواب الحج ،باب ماجاء فى الحجر الاسود ،الحديث ٩٦١،ص١٧٤٣)

(صحيح ابن خزيمة ،كتاب المناسك ،با ب ذكر الدليل على ان الحجر.....الخ ، الحديث: ٢٧٣٤،ج٤،ص٢٢٠)

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़जरे अस्वद को बहुत ज़्यादा बोसे दिया करते थे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इसे बोसा देते हुवे फ़रमाया : "बेशक मैं जानता हूं कि तू एक पथ्थर है नुक़्सान दे सकता है न नफ़्अ़।" अगर मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तुझे बोसा देते हुवे न देखा होता तो तुझे कभी बोसा न देता।" फिर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रो पड़े, जब पीछे मुतवज्जेह हुवे, तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को देखा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ऐसा न कहें।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ अबुल ह़सन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ! यहां

www.dawateislami.net

आंसू बहाए जाते हैं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! येह नफ़्अ़ भी देता है और नुक़्सान भी।" उन्हों ने पूछा : "वोह किस त़रह़ ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने औलादे आदम से वादा लिया, तो उन के मुतअ़ल्लिक़ एक तेह़रीर लिख कर इस पथ्थर को खिला दी, पस येह मोमिन के ह़क़ में वफ़ाए अ़ह़्द की और काफ़िर के ख़िलाफ़ उस के इन्कार की गवाही देगा।"

(المستدرك، كتاب المناسك، باب الحجر الأسود يمين الله التى يصافح بها خلقه، الحديث ١٧٢٥، ج٢، ص١٠٩-١١٠، مفهوماً)

कहा गया है कि : "लोग इस को बोसा देते वक़्त जो कलिमात पढ़ते हैं उन का येही मत़लब है : اَللّٰھُمَّ اِیْمَانًا بِکَ وَتَصْدِیْقًا بِکِتَابِکَ وَ وَفَاءً بِعَھْدِکَ "तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ पर ईमान लाते हुवे, तेरी किताब की तस्दीक़ करते हुवे और तेरे वादे को पूरा करता हूं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि मक्कए मुकर्रमा में एक दिन का रोज़ा एक लाख रोज़ों के बराबर और एक दिरहम सदक़ा करना एक लाख दिरहम सदक़ा करने के बराबर है और इस त़रह़ हर नेकी एक लाख नेकियों के बराबर है।"

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अकबर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : "सब से पेहले मेरी क़ब्र शक़ होगी, फिर मैं जन्नतुल बक़ीअ़ वालों के पास जाऊंगा, तो वोह मेरे साथ इकठ्ठे होंगे, फिर एह्ले मक्का के पास जाऊंगा और ह़रमैने शरीफ़ैन के दरमियान उन से आ मिलूंगा।" (جامع الترمذى، ابواب المناقب، باب أنا أول من تنشق .....الخ، الحديث ٣٦٩٢، ص٢٠٣٢)

मन्क़ूल है कि : "जब तक कोई अब्दाल इस घर का त़वाफ़ न कर ले उस दिन का सूरज ग़ुरूब नहीं होता और रात से फ़ज्र तुलूअ़ नहीं होती जब तक कोई औताद इस का त़वाफ़ न कर ले और जब येह सिलसिला ख़त्म हो जाएगा तो येही इस के ज़मीन से उठ जाने का सबब होगा। लोग सुब्ह़ करेंगे तो काबा शरीफ़ उठा लिया गया होगा, इस का कोई निशान दिखाई न देगा और येह बात उस वक़्त होगी जब सात साल तक काबतुल्लाह का ह़ज न होगा, फिर क़ुरआन को मसाह़िफ़ से उठा लिया जाएगा। लोग सुब्ह़ उठेंगे तो काग़ज़ सफ़ेद चमकते होंगे, उन पर ह़ुरूफ़ न होंगे, फिर क़ुरआन को दिलों से निकाल दिया जाएगा, तो इस का एक लफ़्ज़ भी याद नहीं रहेगा, फिर लोग अश्आ़र, गानों और दौरे जाहिलिय्यत की ख़बरों की त़रफ़ रुजूअ़ करेंगे, फिर दज्जाल निकलेगा और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उतरेंगे और इसे क़त्ल कर देंगे, क़ियामत उस वक़्त इतनी क़रीब होगी, जैसे औ़रत के हां बच्चा पैदा होने की तवक़्क़ोअ़ का वक़्त होता है।"

मक्कए मुकर्रमा में क़ियाम की फ़ज़ीलत व कराहिय्यत

बाज़ उ़लमा ने मक्कए मुकर्रमा से उक्ता जाने के ख़ौफ़ से वहां सुकूनत इख़्तियार करना ना पसन्द समझा है, इस लिए अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस ख़ौफ़

से हुज्जाजे किराम को ह़ज करने के बाद वापस भेज देते, कि लोगों को इस से उक्ताहट पैदा न हो जाए और फ़रमाते : ऐ एह्ले यमन ! यमन को जाओ, ऐ शाम वालो ! शाम की त़रफ़ जाओ, ऐ एह्ले इराक़ ! इराक़ की त़रफ़ जाओ। इसी त़रह़ कहा गया है कि वहां से जुदा होने की वज्ह से दोबारा आने का शौक़ पैदा होता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ
(پ۱، البقرہ: ۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और (याद करो) जब हम ने इस घर को लोगों के लिए मर्जअ़ और अमान बनाया।

एक क़ौल येह है कि इस ख़ौफ़ से (वहां ठहरना ना पसन्दीदा है) कि कहीं गुनाह और ख़त़ाओं का इरतिकाब न हो जाए और येह मम्नूअ़ है। जो मक्के के हुक़ूक़ पूरे कर सके उस के लिए वहां ठहरने की फ़ज़ीलत के लिए येही बात काफ़ी है कि जब नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दोबारा मक्का तशरीफ़ लाए तो काबतुल्लाह की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "बिलाशुबा तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बेहतरीन ज़मीन है और मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तमाम शह्रों से ज़्यादा मेह़बूब है और अगर मुझे यहां से जाने पर मजबूर न किया जाता तो मैं यहां से न जाता।"

(سنن ابن ماجة ،ابواب المناسك ،باب فضل مكة ،الحديث۳۱۰۸،ص۲٦٦٥)

मदीनए मुनव्वरा की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत

मक्कए मुकर्रमा के बाद मदीनए मुनव्वरा से अफ़्ज़ल कोई ज़मीन नहीं। शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : "मेरा इस मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ना मस्जिदे ह़राम के इलावा दीगर मसाजिद की एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है।" (صحيح البخارى ،كتاب فضل الصلاة فى مسجد مكة والمدينة،باب فضل الصلاة فى مسجد.....الخ، الحديث: ۱۱۹۰،ص۹۲)

मदीनए मुनव्वरा के बाद बैतुल मुक़द्दस की फ़ज़ीलत है। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "इस में एक नमाज़ पांच सौ नमाज़ों के बराबर है।"

(شعب الايمان للبيهقى ،باب فى المناسك ،فضل الحج والعمرة ،الحديث ٤١٤٠،ج۳،ص٤٨٥، بتغيرٍ)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मस्जिदे मदीना (यानी मस्जिदे नबवी) में एक नमाज़ दस हज़ार नमाज़ों के बराबर है, मस्जिदे अक़्सा में एक नमाज़ एक हज़ार नमाज़ों और मस्जिदे ह़राम में एक नमाज़ एक लाख नमाज़ों के बराबर है।"

www.dawateislami.net

ह़ज की शराइत़, सेह़्ह़त, अरकान, वाजिबात और मम्नूआ़त का बयान

ह़ज के सह़ीह़ होने की शराइत़

ह़ज के सह़ीह़ होने की शराइत़ **वक़्त का पाया जाना और मुसलमान होना है**, और बच्चे का ह़ज सह़ीह़ है अगर वोह ख़ुद समझदार है तो एह़राम बांधे और समझदार नहीं है तो उस का वली उस की त़रफ़ से एह़राम बांध ले और इस से तमाम अफ़्आ़ले ह़ज करवाए जो वोह ख़ुद कर सकता है।

ह़ज के एह़राम का वक़्त शव्वाल, ज़ुलक़ादा और ज़ुलहिज्जा के नौ दिन और क़ुरबानी के दिन तुलूए़ फ़ज्र तक है जो इन अवक़ात के इ़लावा ह़ज का एह़राम बांधेगा तो वोह उ़मरह होगा और उ़मरे का वक़्त पूरा साल है।

ह़ज फ़र्ज़ होने की शराइत़[1]

फ़र्ज़ ह़ज के वुक़ूअ़ (यानी लाज़िम होने) के लिए पांच शराइत़ हैं : (1) आज़ाद होना (2) मुसलमान होना (3) बालिग़ होना (4) आ़क़िल होना और (5) वक़्त का पाया जाना।

अगर बच्चे या ग़ुलाम ने एह़राम बांधा लेकिन अ़रफ़ात या मुज़्दलिफ़ा में ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया गया या बच्चा बालिग़ हो गया और वोह क़ुरबानी के दिन की तुलूए़ फ़ज्र से पेहले अ़रफ़ात लौट गया तो उन दोनों की त़रफ़ से ह़ज अदा हो जाएगा, क्यूंकि ह़ज वुक़ूफ़े अ़रफ़ात का नाम है और उन दोनों पर कोताही का दम लाज़िम न होगा और उ़मरह के लिए भी येही शराइत़ हैं अलबत्ता इस में वक़्त शर्त़ नहीं।

आज़ाद बालिग़ आदमी की त़रफ़ से नफ़्ली ह़ज करने के लिए शर्त़ येह है कि वोह फ़र्ज़ ह़ज अदा कर चुका हो, क्यूंकि फ़र्ज़ ह़ज मुक़द्दम है फिर उस ह़ज की क़ज़ा है जिसे ह़ालते वुक़ूफ़ में फ़ासिद किया हो, फिर नज़्र का ह़ज, फिर दूसरे की नियाबत में ह़ज करना और इस के बाद नफ़्ली है। येह तरतीब ज़रूरी है और ह़ज इसी तरतीब से वाक़ेअ़ होगा अगर्चे इस के ख़िलाफ़ निय्यत करे।

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "ह़ज फ़र्ज़ होने की आठ शराइत़ हैं जब तक वोह सब न पाई जाएं ह़ज फ़र्ज़ नहीं। **सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِي ह़ज की शराइत़ बयान फ़रमाते हैं : "(1) इस्लाम (2) दारुल ह़र्ब में हो तो येह भी ज़रूरी है कि जानता हो कि इस्लाम के फ़राइज़ में ह़ज है (3) बुलूग़ (4) आ़क़िल होना (5) आज़ाद होना (6) तनदुरुस्त हो कि ह़ज को जा सके, आज़ा सलामत हों। अंख्यारा हो (7) सफ़रे ख़र्च का मालिक हो और सुवारी पर क़ादिर हो ख़्वाह सुवारी उस की मिल्क हो या उस के पास इतना माल हो कि किराये पर ले सके (8) वक़्त यानी ह़ज के महीनों में तमाम शराइत़ पाए जाएं।" (बहारे शरीअ़त, ह़ज का बयान ह़िस्सा 6, स. 8)

ह़ज के तफ़्सीली मसाइल जानने के लिए **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा शशुम** का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।"

आज़ादी और इस्तिता़अ़त

ह़ज फ़र्ज़ होने के लिए आज़ादी और इस्तिता़अ़त भी शर्त़ है। जिस शख़्स पर फ़र्ज़ ह़ज लाज़िम हो उस पर फ़र्ज़ उ़मरह भी लाज़िम है।[1] जो शख़्स मक्कए मुकर्रमा में ज़ियारत या तिजारत की निय्यत से दाख़िल हो और लकड़ियां बेचने वाला न हो तो एक क़ौल के मुत़ाबिक़ उस पर एह़राम लाज़िम है फिर वोह उ़मरह या ह़ज के अ़मल के ज़रीए़ उस से बाहर आए।

इस्तिता़अ़त

इस्तिता़अ़त दो एतिबार से होती है।

(1) ख़ुद आमाले ह़ज का बजा लाना और इस के लिए सेह़्ह़त का होना, रास्ते का पुर अम्न, सब्ज़े वाला होना (यानी खाने पीने की चीज़ें मौजूद हों) और समुन्दरी ख़त़रा न हो, जाने और वत़न वापस लौटने तक के अख़राजात का मालिक हो और क़र्ज़ की अदाएगी के बाद इस मुद्दत के दौरान उन लोगों के अख़राजात भी उस के पास हों जिन का नफ़क़ा उस के ज़िम्मे है और सफ़री अख़राजात पर भी क़ादिर हो।

(2) अपाहज आदमी के लिए इस्तिता़अ़त येह है कि वोह किसी आदमी को ह़ज पर भेजे जो अपने फ़र्ज़ ह़ज से फ़ारिग़ हो चुका हो, अगर अपाहज आदमी का बेटा अपने बाप की ख़िदमत के लिए तय्यार हो जाए तो वोह इस्तिता़अ़त वाला हो जाएगा।

इस्तिता़अ़त के बाद ताख़ीर हो जाना अगर्चे जाइज़ है। लेकिन चूंकि अपनी मौत का वक़्त किसी को मालूम नहीं लिहाज़ा जल्द ह़ज कर लेना बेहतर है। क्यूंकि अगर बिग़ैर ह़ज किए मर गया तो वोह तर्के ह़ज की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गुनाहगार ह़ाज़िर होगा।

अरकाने ह़ज[2]

ह़ज के पांच अरकान हैं : (1) एह़राम (2) त़वाफ़ (3) त़वाफ़ के बाद सई (4) वुक़ूफ़े अ़रफ़ात (5) सर मुन्डवाना।

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक** उ़मरह फ़र्ज़ नहीं बल्कि सुन्नत है। जैसा कि **शैख़ुल इस्लाम अ़ल्लामा बुरहानुद्दीन मुरग़ीनानी** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उ़मरह सुन्नत है।" (الهداية، كتاب الحج، باب الفوات، ج١، ص١٧٨)

2....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** ह़ज में येह चीज़ें फ़र्ज़ हैं : (1) एह़राम (कि येह शर्त़ है) (2) वुक़ूफ़े अ़रफ़ा (यानी नवीं ज़ुल ह़िज्जा के आफ़्ताब ढलने से दसवीं की सुब्ह़े सादिक़ से पेशतर तक किसी वक़्त अ़रफ़ात में ठहरना) (3) त़वाफ़े ज़ियारत का अक्सर ह़िस्सा (यानी चार फेरे)। पिछली दोनों चीज़ें यानी वुक़ूफ़ व त़वाफ़ **रुक्न** हैं (4) निय्यत (5) तरतीब (यानी पेहले एह़राम बांधना, फिर वुक़ूफ़, फिर त़वाफ़ करना) (6) हर फ़र्ज़ का अपने वक़्त पर होना (यानी वुक़ूफ़ उस वक़्त होना जो मज़्कूर हुवा), इस के बाद त़वाफ़ (इस का वक़्त वुक़ूफ़ के बाद से आख़िर उ़म्र तक है) (7) मकान (यानी वुक़ूफ़ ज़मीने अ़रफ़ात में होना सिवा बत़्ने अ़रफ़ा के और त़वाफ़ का मकान मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ है।

(बहारे शरीअ़त, ह़ज का बयान ह़िस्सा 6, स. 12)

एक क़ौल के मुत़ाबिक़ उ़मरह के अरकान भी येही हैं, सिवाए वुक़ूफ़े अ़रफ़ात के।

दम लाज़िम करने वाले वाजिबात[1]

छे वाजिबात के रेह जाने से दम लाज़िम आता है।

(1) मीक़ात से एह़राम बांधना, जो शख़्स येह छोड़ दे उस पर दम में बकरी लाज़िम हो जाती है (2) रमिये जमरात और इस के छोड़ने पर एक क़ौल के मुत़ाबिक़ दम लाज़िम है (3) सूरज ग़ुरूब होने तक अ़रफ़ात में ठहरना (4) मुज़्दलिफ़ा में रात गुज़ारना (5) मिना में रात गुज़ारना (6) त़वाफ़े वदाअ़ करना। अगर येह आख़िरी चार रेह जाएं तो एक क़ौल के मुत़ाबिक़ दम लाज़िम है, जबकि दूसरे क़ौल के मुत़ाबिक़ दम लाज़िम नहीं बल्कि मुस्तह़ब है।

ह़ज की अक़्साम

ह़ज और उ़मरह की अदाएगी के तीन त़रीक़े

(1) .....**ह़ज्जे इफ़राद :** और येह अफ़्ज़ल है।[2] इस का त़रीक़ा येह है कि पेहले सिर्फ़ ह़ज करे, जब ह़ज से फ़ारिग़ हो जाए तो ह़रम से ह़िल (ह़रम से बाहर) की त़रफ़ चला जाए और एह़राम बांध कर उ़मरह करे और उ़मरह के एह़राम के लिए अफ़्ज़ल ह़िल जिइर्राना है।[3] फिर तनईम और फिर हुदैबिया है ह़ज्जे इफ़राद करने वाले पर दम (कुरबानी) लाज़िम नहीं बल्कि नफ़्ल है।

(2).....**ह़ज्जे क़िरान :** इस का त़रीक़ा येह है कि ह़ज और उ़मरह को जम्अ़ करे और कहे मैं ह़ज और उ़मरह के साथ ह़ाज़िर हूं और मोह़रिम हो जाए (यानी एह़राम बांध ले) इस के लिए ह़ज

1....दम यानी एक बकरा (इस में नर, मादा, दुम्बा, भेड़, नीज़ गाए या ऊंट का सातवां ह़िस्सा सब शामिल हैं)। (रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 228)

नोट : दम मज़ीद किन सूरतों में लाज़िम आता है इस के बारे में जानने के लिए **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 6** का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

2....**हमारे नज़दीक :** "सब से अफ़्ज़ल **ह़ज्जे क़िरान** फिर **तमत्तोअ़** फिर **इफ़राद** है।"

(ردالمحتار، کتاب الحج، باب القران، ج۳، ص۶۳۱)

3....अमीरे एह्ले सुन्नत अमीरे दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं : "**जिइर्राना** मक्कए मुकर्रमा से तक़रीबन छब्बीस[26] किलो मीटर दूर त़ाइफ़ के रास्ते पर वाक़ेअ़ है। यहां से भी दौराने क़ियामे मक्का शरीफ़ उ़मरह का एह़राम बांधा जाता है। इस मक़ाम को अ़वाम में "**बड़ा उ़मरह**" कहा जाता है। ग़ज़वए हुनैन से वापसी पर हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां से उ़मरह का एह़राम ज़ेबे तन फ़रमाया था। हो सके तो हर ह़ाजी को चाहिए कि इस सुन्नत को अदा करे और येह निहायत ही पुरसोज़ मक़ाम है। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى "**अख़्बारुल अख़्यार**" में नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने ज़ाइरीने ह़रम को ताकीद फ़रमाई है कि वोह जिइर्राना से उ़मरह का एह़राम बांधें कि येह ऐसा मुतबर्रक मक़ाम है कि मैं ने यहां एक रात के अन्दर सौ[100] बार मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़्वाब में दीदार किया है।" (اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ) (रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 41)

के आमाल काफ़ी हैं, और उ़मरह ह़ज के तह़्त आ जाएगा जिस त़रह़ वुज़ू गुस्ल के तह़्त अदा हो जाता है। अलबत्ता जब वोह त़वाफ़ करे और वुक़ूफ़े अ़रफ़ात से पेहले सई करे तो उस की सई दोनों इ़बादतों की त़रफ़ से शुमार होगी लेकिन त़वाफ़ शुमार नहीं होगा क्यूंकि ह़ज के फ़र्ज़ त़वाफ़ के लिए शर्त़ येह है कि वोह वुक़ूफ़े अ़रफ़ात के बाद हो और ह़ज्जे क़िरान करने वाले पर बकरी की क़ुरबानी लाज़िम है। अलबत्ता अगर वोह मक्कए मुकर्रमा का रेहने वाला हो तो कुछ भी लाज़िम नहीं क्यूंकि इस ने अपने मीक़ात को नहीं छोड़ा इस लिए कि उस का मीक़ात मक्कए मुकर्रमा है।

(3).....**ह़ज्जे तमत्तोअ़ :** इस का त़रीक़ा येह है कि वोह मीक़ात से उ़मरह के एह़राम के साथ दाख़िल हो और (उ़मरह करने के बाद) मक्के में एह़राम उतार दे और ह़ज के वक़्त तक मम्नूआ़ते एह़राम से नफ़्अ़ उठाए फिर ह़ज का एह़राम बांधे।

मुतमत्तेअ़ के लिए शराइत़[1]

(1) वोह मस्जिदे ह़राम के पास रेहने वाला न हो इस से मुराद वोह शख़्स है जो इतनी मसाफ़त पर हो जिस में नमाज़ की क़स्र होती है।

(2) उ़मरह को ह़ज से मुक़द्दम करे।

(3) उ़मरह ह़ज के महीनों में हो।

(4) (इस दौरान) ह़ज का एह़राम बांधने के लिए मीक़ाते ह़ज या इस के बराबर मसाफ़त की त़रफ़ न आए।

(5) उस का ह़ज और उ़मरह एक ही शख़्स की त़रफ़ से हों।

जब येह औसाफ़ पाए जाएं तो इन्सान मुतमत्तेअ़ हो जाता है और इस पर क़ुरबानी लाज़िम हो जाती है।[2] अगर जानवर न पाए तो क़ुरबानी के दिन से पेहले ह़ज के दिनों में तीन रोज़े अलग अलग या मुसलसल रखे और सात रोज़े अपने घरवालों की त़रफ़ लौट कर रखे। येह दस रोज़े हैं चाहे मुसलसल रखे या मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर रखे।

1....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** ह़ज्जे तमत्तोअ़ की दस शराइत़ हैं। इन की तफ़्सील जानने के लिए **बहारे शरीअ़त हिस्सा 6** का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

2....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** "क़िरान और तमत्तोअ़ वाले को क़ुरबानी करना वाजिब है।"

(बहारे शरीअ़त, ह़ज के वाजिबात, हिस्सा 6, स. 12)

मम्नूआ़ते ह़ज व उ़मरह

ह़ज व उ़मरह में मम्नूअ़ उमूर[1]

(1) क़मीस, शल्वार, मोज़े और इमामा बांधना बल्कि इसे एक इज़ार और एक रिदा (दो चादरें) और चप्पल पेहनना चाहिए, अगर चप्पल न हों तो जूतों को टख़्नों के नीचे से काट दे अगर चादर न हो तो शल्वार पेहन ले (इस सूरत में इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के नज़दीक दम लाज़िम होगा) और कमर बन्द बांधने या कजावे के साए में बैठने में कोई ह़रज नहीं लेकिन वोह अपना सर नहीं ढांपेगा क्यूंकि उस के एह़राम का तअ़ल्लुक़ सर के साथ है औ़रत सिला हुवा लिबास पेहन सकती है अलबत्ता वोह ऐसी चीज़ के साथ चेहरे को न ढांपे जो उस के चेहरे को छूती हो क्यूंकि उस का एह़राम उस के चेहरे में है।

(2) ख़ुश्बू लगाना। और हर उस चीज़ से बचना जिसे अ़क़्लमन्द लोग ख़ुश्बू केहते हैं अगर उस ने ख़ुश्बू लगाई या सिला हुवा कपड़ा पेहना तो उस पर दम में **बकरी** लाज़िम होगी।

(3) बाल कटवाना और नाख़ुन तराशना इन दोनों सूरतों में फ़िदया है और वोह बकरी की क़ुरबानी करना है अलबत्ता सुरमा लगाने, ह़म्माम में दाख़िल होने, रग कटवाने, पछने लगवाने और बालों में कन्घी करने में कोई ह़रज नहीं।

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक एह़राम में येह काम ह़राम हैं :** "एह़राम बांधते ही येह काम नाजाइज़ हो गए। औ़रत से सोह़बत, बोसा, मसास (यानी छूना), गले लगाना, उस के अन्दामे निहानी पर निगाह जबकि येह चारों बातें ब शहवत हों, औ़रतों के सामने उस काम का नाम लेना, फ़ह़श, गुनाह हमेशा ह़राम थे अब और सख़्त ह़राम हो गए, किसी से दुन्यवी लड़ाई झगड़ा, जंगल का शिकार, उस की त़रफ़ शिकार करने को इशारा करना या किसी त़रह़ बताना, बन्दूक़ या बारूद या उस के ज़ब्ह़ करने को छुरी देना, उस के अन्डे तोड़ना, पर उखेड़ना, पाउं या बाज़ू तोड़ना, उस का दूध दोहना, उस का गोश्त या अन्डे पकाना, भूनना, बेचना, ख़रीदना, खाना और अपना या दूसरे का नाख़ुन कतरना या दूसरे से अपना कतरवाना, सर से पाउं तक कहीं से कोई बाल किसी त़रह़ जुदा करना, मुंह या सर किसी कपड़े वग़ैरा से छुपाना। बस्ता या कपड़े की बक़्ची या गठरी सर पर रखना, इमामा बांधना, बुर्क़अ़, दस्ताने पेहनना या मोज़े या जुर्राबें वग़ैरा जो वस्त़े क़दम को छुपाए (जहां अ़रबी जूते का तस्मा होता है) पेहनना अगर जूतियां न हों तो मोज़े काट कर पेहनें कि वोह तस्मे की जगह न छुपे। सिला कपड़ा पेहनना, ख़ुश्बू बालों या बदन या कपड़ों में लगाना, मलागैरी या कुसुम, कैसर ग़रज़ किसी ख़ुश्बू के रंगे कपड़े पेहनना जबकि अभी ख़ुश्बू दे रहे हों। ख़ालिस ख़ुश्बू मुश्क, अ़म्बर, ज़ाफ़रान, जावतरी, लोंग, इलाइची, दारचीनी, ज़न्जबील वग़ैरा खाना, ऐसी ख़ुश्बू का आंचल में बांधना जिस में फ़िल ह़ाल महक हो जैसे मुश्क, अ़म्बर, ज़ाफ़रान। सर या दाढ़ी को ख़त़मी या किसी ख़ुश्बूदार ऐसी चीज़ से धोना जिस से जूएं मर जाएं। वस्मा या मेहन्दी का ख़िज़ाब लगाना, गूंद वग़ैरा से बाल जमाना, ज़ैतून या तिल का तेल अगर्चे बे ख़ुश्बू हो बालों या बदन में लगाना, किसी का सर मून्डना अगर्चे उस का एह़राम न हो, जूं मारना, फेंकना, किसी को उस के मारने का इशारा करना, कपड़ा उस के मारने को धोना या धूप में डालना, बालों में पारा वग़ैरा उस के मारने को लगाना ग़रज़ जूं के हलाक पर किसी त़रह़ बाइस होना।" (बहारे शरीअ़त, एह़राम का बयान, ह़िस्सा 6, स. 27 ब ह़वाला फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, स. 732)

(4) जिमाअ़ करना, अगर जानवर ज़ब्ह़ करने और सर मुन्डाने से पेहले जिमाअ़ करे तो येह ह़ज को तोड़ देता है और इस में ऊंट, गाए या सात बकरियां लाज़िम हैं। लेकिन अगर उस के बाद हो तो उस पर ऊंट लाज़िम होता है, लेकिन ह़ज फ़ासिद नहीं होता।

(5) जिमाअ़ की त़रफ़ ले जाने वाले उमूर जैसे बोसा लेना और छूना, कि औ़रतों के साथ ऐसा करने (से मज़ी वग़ैरा निकलने) की वज्ह से वुज़ू टूट जाता है येह अ़मल ह़राम है। उस पर एक बकरी लाज़िम है इसी त़रह़ मुश्तज़नी करना, निकाह़ करना या निकाह़ करवाना ह़राम है लेकिन इस में कुरबानी नहीं क्यूंकि (ह़ज व उ़मरह में) निकाह़ मुन्अ़क़िद नहीं होता।[1]

(6) ख़ुश्की के परिन्दे का शिकार करना यानी जो जानवर खाया जाता है या जो ह़लाल और ह़राम के मिलाप से पैदा हो, अगर वोह (मुह़रिम) किसी जानवर को क़त्ल करे तो उस की मिस्ल जानवर जो उस के गोश्त के क़रीब हो लाज़िम होगा इस मुआ़मले में ख़िल्क़त में क़रीब होने की रिआ़यत रखी जाएगी। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

सफ़रे ह़ज के आदाब

सफ़रे ह़ज के दस आदाब हैं

पेहला अदब

येह निकलने के आग़ाज़ से एह़राम तक के सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ है और इस में आठ चीज़ें हैं।

(1) तौबा करना, जिन लोगों के हुक़ूक़ ज़बरदस्ती ग़ज़ब किए उन्हें वापस करना, क़र्ज़ लौटाना, जिन लोगों का नफ़क़ा लाज़िम है वापसी तक उन के नफ़क़े का इन्तिज़ाम करना, अमानतों का वापस करना और ह़लाल माल ले कर जाना।

(2) नेक दोस्त तलाश करना जो दीन में उसे फ़ाएदा दे।

(3) घर से निकलने से पेहले दो रक्अ़तें पढ़ना और उन में सूरह "قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ" और सूरह "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ" पढ़े जब फ़ारिग़ हो जाए तो हाथ उठा कर येह दुआ़ करे, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ही सफ़र में मददगार है और एह्लो अ़याल, माल और दोस्तों की ह़िफ़ाज़त करने वाला है। हमें और उन को हर आफ़त, मुसीबत और बला से मह़फ़ूज़ रख।

(4) जब घर के दरवाज़े पर पहुंचे तो कहे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, नेकी करने और बुराई से रोकने की त़ाक़त देने वाला वोह ही है।

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "एह़राम की ह़ालत में निकाह़ हो सकता है किसी एह़राम वाली औ़रत से निकाह़ किया तो अगर नफ़्ल का एह़राम है खुलवा सकता है और फ़र्ज़ का है तो दो सूरतें हैं। अगर औ़रत का मह़रम साथ में है तो नहीं खुलवा सकता, और मह़रम साथ में न हो तो फ़र्ज़ का एह़राम भी खुलवा सकता है। और अगर उस का मुह़रिमा होना मालूम न हो और जिमाअ़ कर लिया तो ह़ज फ़ासिद हो गया।"

(الفتاوى الهندية، كتاب المناسك، الباب السابع عشر في النذر بالحج، ج١، ص٢٦٤)

ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से पनाह चाहता हूं कि मैं गुमराह हो जाऊं या गुमराह किया जाऊं, फिसल जाऊं या फिसलाया जाऊं या किसी पर ज़्यादती करूं या मुझ पर ज़्यादती हो या मैं जहालत का इरतिकाब करूं या मेरे ख़िलाफ़ जहालत बरती जाए।

(5) जब सुवारी पर सुवार हो तो पढ़े : بِسْمِ اللّٰهِ وَ بِاللّٰهِ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ ،تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ ،حَسْبِيَ اللّٰهُ "**तर्जमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद से, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, मेरे लिए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है।" फिर येह पढ़े :

سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ ۝ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ۝ (پ۲۵ ،الزخرف:۱۳-۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (क़ाबू) की न थी और बेशक हमें अपने रब की त़रफ़ पलटना है।

(6) पड़ाव डालना। सुन्नत येह है कि जब तक दिन गर्म न हो जाए किसी जगह न उतरे और सफ़र रात की इब्तिदा में किया जाए।

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम पर रात में सफ़र करना लाज़िम है क्यूंकि रात को ज़मीन लपेट दी जाती है जो दिन को नहीं लपेटी जाती।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب الجهاد ،باب فی الدرجة ،الحدیث ۲۵۷۱،ص۱۴۱۳ـموطأ للامام مالك،
کتاب الاستئذان ،باب ما یؤمر به من العمل فی السفر ،الحدیث۱۸۸۵،ج۲،ص۴۵۸)

(7) अकेला चलने से बचे कि ग़फ़्लत में हलाक न कर दिया जाए।

(8) जब किसी बुलन्द मक़ाम की त़रफ़ जाए तो तीन मरतबा तक्बीर केहने के बाद येह पढ़े : اَللّٰهُمَّ لَكَ الشَّرَفُ عَلٰى كُلِّ شَرَفٍ ،وَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى كُلِّ حَالٍ "**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे लिए हर शरफ़ से बढ़ कर शरफ़ है और हर ह़ाल में तेरे लिए ही ह़म्द है।"

दूसरा अदब

मीक़ात से एह़राम बांधने से ले कर दुख़ूले मक्कए मुकर्रमा तक के आदाब पांच हैं :

(1) **ग़ुस्ल करना :** ग़ुस्ल करते वक़्त एह़राम की निय्यत करे। नाख़ुन तराशने और मूंछें पस्त करने के साथ अपने ग़ुस्ल को मुकम्मल करे।

(2) सिले हुवे कपड़ों से दूर रहे जैसा कि गुज़र चुका है और ख़ुश्बू लगाए और ऐसी ख़ुश्बू लगाने में ह़रज नहीं जिस का निशान और ख़ुश्बू बाक़ी रहे जैसा कि मन्क़ूल है।[1]

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "बदन और कपड़ों पर ख़ुश्बू लगाएं कि सुन्नत है, अगर ख़ुश्बू ऐसी है कि उस का जिर्म बाक़ी रहेगा जैसे मुश्क वग़ैरा तो कपड़ों में न लगाएं।" (बहारे शरीअ़त, एह़राम का बयान, ह़िस्सा : 6, स. 24)

(3) अपनी ह़रकत या अपनी सुवारी के उठने की ह़रकत के वक़्त एह़राम की निय्यत करे, एह़राम के सह़ीह़ होने के लिए सिर्फ़ निय्यत ही काफ़ी है लेकिन सुन्नत येह है कि वोह निय्यत के साथ तल्बिया के अल्फ़ाज़ भी मिलाए :

لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَۃَ لَکَ وَالْمُلْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ

"**तर्जमा :** मैं ह़ाज़िर हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ह़ाज़िर हूं, मैं ह़ाज़िर हूं, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं ह़ाज़िर हूं, बेशक ह़म्द व नेमत और बादशाही तेरे लिए है तेरा कोई शरीक नहीं ।"

अगर वोह इस में इज़ाफ़ा करे और कहे

لَبَّیْکَ وَسَعْدَیْکَ وَالْخَیْرُ کُلُّہٗ بِیَدَیْکَ وَالرَّغْبَۃُ اِلَیْکَ لَبَّیْکَ
بِحِجَّۃٍ حَقًّا تَعَبُّدًا وَّرِقًّا، اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّسَلِّمْ

"**तर्जमा :** मैं ह़ाज़िर हूं और बार बार ह़ाज़िर हूं और तमाम भलाई तेरे क़ब्ज़े में है और तेरी त़रफ़ रग़बत है, मैं तेरी बन्दगी व ग़ुलामी करते हुवे ह़ज के लिए ह़क़ के साथ ह़ाज़िर हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की आल पर रेह़मत नाज़िल फ़रमा ।"

(4) जब उस का एह़राम मुन्अ़क़िद हो जाए तो मुस्तह़ब है कि येह पढ़े :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ الْحَجَّ فَیَسِّرْہُ لِیْ وَاَعِنِّیْ عَلٰی فَرْضِہٖ وَ تَقَبَّلْہُ مِنِّیْ

"**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ह़ज का इरादा करता हूं इसे मेरे लिए आसान कर दे और इस के फ़र्ज़ की अदाएगी पर मेरी मदद फ़रमा और इसे मुझ से क़बूल फ़रमा ।"

(5) एह़राम के दौरान बार बार तल्बिया केहना मुस्तह़ब है ।

तीसरा अदब

येह दुख़ूले मक्कए मुकर्रमा से त़वाफ़ तक के आदाब के बारे में है और येह छे हैं ।

(1) मक्कए मुकर्रमा में दाख़िले के लिए मक़ामे ज़ी तुवा से ग़ुस्ल करे और ह़ज में नौ ग़ुस्ल मस्नून हैं पेहला एह़राम के लिए फिर मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने के लिए, फिर त़वाफ़े क़ुदूम के लिए फिर वुक़ूफ़े अ़रफ़ात के लिए फिर मुज़्दलिफ़ा के लिए फिर तीन जम्रों को कंकरियां मारने के लिए तीन और जम्रए अ़क़्बा को कंकरियां मारने के लिए ग़ुस्ल नहीं फिर त़वाफ़े वदाअ़ के लिए और इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के क़ौल के मुत़ाबिक़ त़वाफ़े ज़ियारत और त़वाफ़े वदाअ़ के लिए ग़ुस्ल नहीं, इस त़रह़ येह सात रेह जाते हैं ।[1]

1....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** "अ़रफ़े के दिन और एह़राम बांधते वक़्त ग़ुस्ल करना सुन्नत है और वुक़ूफ़े अ़रफ़ात और वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा व ह़ाज़िरिये ह़रम व ह़ाज़िरिये सरकारे आज़म व त़वाफ़ व दुख़ूले मिना और जमरों पर कंकरियां मारने के लिए और अ़रफ़े की रात ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है ।" (تنویر الأبصار والدر المختار، کتاب الطھارۃ، ج۱، ص۳۳۹-۳۴۲)

(2) ह़रम शरीफ़ के शुरूअ़ में दाख़िल होते वक़्त मक्कए मुकर्रमा से बाहर ही येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ ھٰذَا حَرَمُکَ وَاَمْنُکَ، فَحَرِّمْ لَحْمِیْ وَ دَمِیْ وَ بِشْرِیْ عَلَی النَّارِ ،وَ اٰمِنِّیْ
مِنْ عَذَابِکَ یَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَکَ، وَاجْعَلْنِیْ مِنْ اَوْلِیَائِکَ وَ اَھْلِ طَاعَتِکَ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरा ह़रम अम्न की जगह है पस मेरा गोश्त मेरा ख़ून और मेरी खाल को जहन्नम पर ह़राम कर दे जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा उस दिन मुझे अपने अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रखना और मुझे अपने औलिया और इत़ाअ़त गुज़ार बन्दों में से कर दे।

(3) मक्कए मुकर्रमा में वादिए अब्त़ह़ की त़रफ़ से दाख़िल हो और येह **सनिय्या कदा** (काफ़ पर ज़बर के साथ) है रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आ़म रास्ते से हट कर येह रास्ता इख़्तियार फ़रमाया था और **सनिय्या कुदा** (काफ़ पर पेश के साथ) से बाहर निकले पेहली वादी बुलन्द है और दूसरी पस्त।"

(4) जब वोह मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हो और दीवार तक पहुंचे (जो पेहले दौर में थी) तो जूं ही उस की नज़र बैतुल्लाह पर पड़े तो येह पढ़े :

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ ،اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ،وَ مِنْکَ السَّلَامُ،وَ دَارُکَ دَارُ السَّلَامِ،تَبَارَکْتَ یَا ذَاالْجَلَالِ
وَ الْاِکْرَامِ،اَللّٰھُمَّ اِنَّ ھٰذَا بَیْتُکَ ،عَظَّمْتَہٗ وَ کَرَّمْتَہٗ وَ شَرَّفْتَہٗ ،اَللّٰھُمَّ فَزِدْہُ تَعْظِیْمًا،وَزِدْہُ تَشْرِیْفًاوَّ تَکْرِیْمًا

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई माबूद नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ही सलामती वाला है और सलामती तेरी त़रफ़ से है" तेरा घर सलामती का घर है, ऐ बुज़ुर्गी व इ़ज़्ज़त वाले रब, तू बरकत वाला है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक येह तेरा घर है, तू ने इसे अ़ज़ीम बनाया, इ़ज़्ज़त बख़्शी और शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की ताज़ीम, शराफ़त और तकरीम में इज़ाफ़ा फ़रमा।

(5) जब मस्जिदे ह़राम में दाख़िल हो तो बाबे बनी शैबा से दाख़िल हो और येह पढ़े : بِسْمِ اللّٰہِ،وَبِاللّٰہِ،وَمِنَ اللّٰہِ ،وَ اِلَی اللّٰہِ وَفِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ وَ عَلٰی مِلَّۃِ رَسُوْلِ اللّٰہِ "**तर्जमा :** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से और इसी के रास्ते में और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मिल्लत पर दाख़िल होता हूं।" जब बैतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब हो तो येह पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَ سَلَامٌ عَلٰی عِبَادِہِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی،اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ
وَ نَبِیِّکَ، وَعَلٰی اِبْرَاھِیْمَ خَلِیْلِکَ ،وَ عَلٰی جَمِیْعِ اَنْبِیَائِکَ وَ رُسُلِکَ

"**तर्जमा :** तमाम तारीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए हैं और इस के मुन्तख़ब बन्दों पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर रेह़मत नाज़िल फ़रमा जो तेरे बन्दे और नबी हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पर जो तेरे ख़लील हैं और अपने तमाम अम्बियाओ रुसुल عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर रेह़मत नाज़िल फ़रमा।" और हाथ उठा कर येह दुआ़ करे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस मक़ाम पर और ह़ज के पेहले अ़मल पर तुझ से सुवाल करता हूं कि मेरी

www.dawateislami.net

तौबा क़बूल फ़रमा, मेरी ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमा, मेरा बोझ मुझ से उतार दे, तमाम तारीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए हैं जिस ने मुझे अपने इ़ज़्ज़त वाले घर तक पहुंचाया जिसे उस ने लोगों के लौटने और अम्न की जगह बनाया, इसे मुबारक और तमाम जहानों के लिए हिदायत बना दिया ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरा बन्दा हूं, येह शह्र तेरा शह्र, येह ह़रम तेरा ह़रम, और येह घर तेरा घर है, मैं तेरी बारगाह में तेरी रेह़मत त़लब करने आया हूं, मैं तुझ से इस त़रह़ सुवाल करता हूं जिस त़रह़ कोई मजबूर शख़्स तेरे अ़ज़ाब से ख़ौफ़ज़दा, तेरी रेह़मत का उम्मीदवार और तेरी रिज़ा का मुतलाशी सुवाल करता है।"

(6) इस के बाद ह़जरे अस्वद का इरादा करे और इसे अपने दाएं हाथ के साथ छूए और इसे बोसा दे और पढ़े : اَللّٰهُمَّ اَمَانَتِیْ اَدَّیْتُهَا،وَمِیْثَاقِیْ تَعَاهَدْتُهٗ، اِشْهَدْ لِیْ بِالْمُوَافَاةِ "तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने अपनी अमानत अदा कर दी, अपना वादा पूरा किया तू इस वफ़ा पर गवाह रेहना।" अगर बोसा न दे सके तो उस के सामने खड़ा हो कर मज़्कूरा बाला अल्फ़ाज़ कहे फिर त़वाफ़े कुदूम के इ़लावा कोई और अ़मल न करे अलबत्ता अगर लोगों को फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ता हुवा पाए तो उन के साथ नमाज़ पढ़े फिर त़वाफ़ करे।

चौथा अदब

त़वाफ़ के मुतअ़ल्लिक़ है। जब त़वाफ़ का इरादा करे ख़्वाह कोई भी त़वाफ़ हो तो उस पर छे उमूर लाज़िम हैं।

(1) त़वाफ़ में नमाज़ की शराइत़ का लिह़ाज़ रखे क्यूंकि त़वाफ़ भी एक क़िस्म की नमाज़ है अलबत्ता इस में गुफ़्तगू को जाइज़ क़रार दिया गया। त़वाफ़ की इब्तिदा में ही इज़्तिबाअ़ करे। इस का त़रीक़ा येह है कि चादर के दरमियान वाले ह़िस्से को दाएं बग़ल के नीचे से ले जा कर उस के दोनों कनारे बाएं कन्धे पर जम्अ़ कर दे और त़वाफ़ की इब्तिदा करते वक़्त तल्बिया केहना छोड़ दे।[1]

इस के बाद त़वाफ़ करने वाला आइन्दा आने वाली दुआओं में मश्ग़ूल हो जाए।

(2) जब चादर को कन्धे पर डाल ले तो बैतुल्लाह शरीफ़ की दाईं जानिब ह़जरे अस्वद के क़रीब खड़ा हो जाए लेकिन उस से कुछ दूर रहे ताकि ह़जरे अस्वद उस के सामने रहे। अपने और बैतुल्लाह शरीफ़ के दरमियान तीन क़दमों का फ़ासिला रखे ताकि बैतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब हो क्यूंकि येह अफ़्ज़ल है ताकि वोह शाज़रवान (यानी दीवार के पाए के साथ अ़र्ज़ (चौड़ाई) में छोड़े हुवे ह़िस्से) के अन्दर त़वाफ़ करने वाला न हो क्यूंकि वोह बैतुल्लाह का ह़िस्सा है और ह़जरे अस्वद के पास शाज़रवान ज़मीन से मिली हुई है और इस में त़वाफ़ करने वाले का त़वाफ़ सह़ीह़ नहीं होता क्यूंकि वोह शख़्स बैतुल्लाह शरीफ़ के अन्दर त़वाफ़ करने वाला शुमार होता है फिर उसी जगह से त़वाफ़ का आग़ाज़ करे।

(3) ह़जरे अस्वद से गुज़रने से पेहले बल्कि त़वाफ़ के शुरूअ़ में पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ،اَللّٰهُمَّ اِیْمَانًابِکَ، وَتَصْدِیْقًابِکِتَابِکَ،وَوَفَاءً بِعَهْدِکَ،وَاتِّبَاعًالِسُنَّةِ نَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ तर्जमा : अल्लाह

1....अह़नाफ़ के नज़दीक : "उन (यानी क़ारिन और मुफ़रिद) की लब्बैक दसवीं तारीख़ रमिये जमरा के वक़्त ख़त्म होगी।" (बहारे शरीअ़त, त़वाफ़ के मसाइल, ह़िस्सा 6, स. 45)

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ पर ईमान लाते हुवे, तेरी किताब की तस्दीक़ करते हुवे, तेरे वादे को पूरा करते हुवे, और तेरे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत की पैरवी करते हुवे (त़वाफ़ करता हूं) । अब त़वाफ़ करे, ह़जरे अस्वद से गुज़रने के बाद सब से पेहले बैतुल्लाह शरीफ़ का दरवाज़ा आता है तो यहां पढ़े : اَللّٰهُمَّ هٰذَا الْبَيْتُ بَيْتُكَ.....الخ जैसा कि पेहले बयान हो चुका है ।

(4) पेहले तीन चक्करों में रमल करे ।[1] और आख़िरी चार चक्करों में सुकून से चले और हर चक्कर में ह़जरे अस्वद और रुक्ने यमानी का **इस्तिलाम** मुस्तह़ब है ।[2]

(5) जब त़वाफ़ के सात चक्कर पूरे हो जाएं तो मुल्तज़म के पास आए और येह ह़जरे अस्वद और दरवाज़े के दरमियान है येह वोह जगह है जहां दुआ़ क़बूल होती है, बैतुल्लाह शरीफ़ से चिमट जाए, अपने पेट को बैतुल्लाह शरीफ़ से मिला दे और बैतुल्लाह शरीफ़ के पर्दों से चिमट जाए उस पर अपना दायां रुख़्सार रखे और बाज़ूओं और हथेलियों को उस पर खोल दे और कहे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ इस क़दीम घर के रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरी गर्दन को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा और मुझे मर्दूद शैत़ान से पनाह अ़त़ा फ़रमा और हर बुराई से पनाह दे और जो चीज़ तू ने मुझे अ़त़ा फ़रमाई उस पर क़नाअ़त अ़त़ा फ़रमा और जो कुछ मुझे अ़त़ा फ़रमाया उस में बरकत पैदा फ़रमा । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह घर तेरा घर है, येह बन्दा तेरा बन्दा है और येह जहन्नम से तेरी पनाह त़लब करने वालों का मक़ाम है । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी बारगाह में आने वालों में से बेहतर लोगों में कर दे ।"

और ब कसरत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बयान करे और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर दुरूद भेजे ।

(6) जब इस से फ़ारिग़ हो तो मक़ामे इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) के पीछे दो रक्अ़तें पढ़े पेहली रक्अ़त में **सूरतुल काफ़िरून** और दूसरी में **सूरए इख़्लास** की तिलावत करे । येह त़वाफ़ की दो रक्अ़तें हैं । इमाम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "येह सुन्नत है कि बन्दा हर सात चक्करों के बाद दो रक्अ़त नमाज़ अदा करे ।"

पांचवां अदब

सई के मुतअ़ल्लिक़, जब त़वाफ़ से फ़ारिग़ हो जाए तो बाबे सफ़ा से निकल जाए (आज कल ऐसी सूरत नहीं क्यूंकि सफ़ा व मर्वह के अत़राफ़ में दीवारें बन चुकी हैं इस लिए सफ़ा पर जाने

1....अमीरे एह्ले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तेह़रीर फ़रमाते हैं : रमल से मुराद येह है कि "जल्द जल्द छोटे क़दम रखते, शाने हिलाते चलें । बाज़ लोग कूदते और दौड़ते हुवे जाते हैं येह **सुन्नत** नहीं है ।" (रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 70)

2...."ह़जरे अस्वद को बोसा देने या हाथ से छू कर चूमने या हाथों का इशारा कर के उन्हें चूम लेने को इस्तिलाम केहते हैं ।" (रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 70)

के लिए अन्दर की त़रफ़ जाना पड़ता है) जब सफ़ा तक पहुंच जाए जो एक पहाड़ है तो पहाड़ के नीचे से इन्सानी क़द के बराबर कुछ ज़ीने ऊपर चला जाए। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के ऊपर चढ़े ह़त्ताकि आप को काबा शरीफ़ नज़र आया और पहाड़ के दामन से सई शुरूअ़ करना भी काफ़ी है लेकिन बाज़ दरजे नए बनाए गए हैं तो उन्हें अपनी पीठ के पीछे नहीं छोड़ना चाहिए क्यूंकि इस त़रह़ सई मुकम्मल न होगी। जब यहां से शुरूअ़ करे तो सफ़ा की त़रफ़ चेहरा कर ले और एक चक्कर लगाए जब मर्वह तक पहुंचे तो उस पर चढ़े और सफ़ा की त़रफ़ चेहरा कर ले तो एक चक्कर हो जाएगा जब सफ़ा वापस लौटेगा तो दो चक्कर हो जाएंगे इस त़रह़ सात चक्कर लगाए जब इस त़रह़ कर लेगा तो त़वाफ़े कुदूम और सई से फ़ारिग़ हो जाएगा और येह दोनों सुन्नत हैं। और सई के लिए बा वुज़ू होना मुस्तह़ब है अलबत्ता त़वाफ़ में बा वुज़ू होना वाजिब है सई कर ली तो अब वुक़ूफ़े अ़रफ़ात के बाद दोबारा सई करना लाज़िम नहीं और बत़ौरे रुक्न येह सई काफ़ी होगी क्यूंकि सई के लिए येह शर्त़ नहीं कि वोह वुक़ूफ़ के बाद हो। हां ! येह फ़र्ज़ त़वाफ़ के लिए शर्त़ है। अलबत्ता ! सई के लिए शर्त़ है कि वोह त़वाफ़ के बाद ही हो ख़्वाह कोई भी त़वाफ़ हो।

छठा अदब : वुक़ूफ़े अ़रफ़ात और मा क़ब्ल उमूर का बयान

अगर ह़ाजी नौ ज़ुल ह़िज्जा के दिन अ़रफ़ात पहुंचे तो वुक़ूफ़े अ़रफ़ात से पेहले त़वाफ़े कुदूम और मक्कए मुकर्रमा की ह़ाज़िरी के लिए न जाए अगर उस से कुछ दिन पेहले पहुंचे और त़वाफ़े कुदूम कर ले तो ज़ुल ह़िज्जा की सात तारीख़ तक ह़ालते एह़राम में ही रहे (जबकि उस ने ह़ज्जे क़िरान की निय्यत की हो) पस (उसी दिन) ज़ोहर के बाद इमाम, काबतुल्लाह शरीफ़ के पास मक्के में ख़ुत़बा देता है और लोगों को आठ ज़ुल ह़िज्जा को मिना जाने की तय्यारी के बारे में बताता है कि वोह रात रहें और दूसरे दिन सुब्ह़ अ़रफ़ात जाएं ताकि ज़वाले शम्स के बाद वुक़ूफ़ कर के फ़र्ज़ की अदाएगी कर लें क्यूंकि वुक़ूफ़ का वक़्त नौ ज़ुल ह़िज्जा के ज़वाल से ले कर क़ुरबानी के दिन की सुब्ह़े सादिक़ तुलूअ़ होने तक है। ह़ाजी को चाहिए कि वोह तल्बिया केहते हुवे मिना की त़रफ़ जाए और इस के लिए मुस्तह़ब है कि मक्कए मुकर्रमा से मनासिके ह़ज की अदाएगी के आख़िर तक अगर पैदल चलने पर क़ुदरत हो तो पैदल चले और मस्जिदे इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से जाए, वुक़ूफ़ तक पैदल चलना अफ़्ज़ल है और इस की ताकीद है। जब मिना पहुंचे तो यूं कहे : "या **अल्लाह** ! येह मिना है तू मुझ पर उस चीज़ के साथ एह़सान फ़रमा जिस के साथ तू ने अपने औलियाए किराम और फ़रमां बरदार बन्दों पर एह़सान फ़रमाया।"

येह रात मिना में गुज़ारे, यहां सिर्फ़ रात गुज़ारना है जिस से अ़मले ह़ज मुतअ़ल्लिक़ नहीं। जब नौ ज़ुल ह़िज्जा की सुब्ह़ हो तो सुब्ह़ की नमाज़ पढ़े जब सबीर (नामी पहाड़) पर सूरज त़ुलूअ़ हो जाए तो अ़रफ़ात की त़रफ़ जाए और येह दुआ़ करे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी इस सुब्ह़ को बेहतर सुब्ह़ बना दे जो मैं ने की है और इसे अपनी रिज़ा के क़रीब कर दे और अपनी नाराज़गी से दूर रख।

www.dawateislami.net

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने तेरी त़रफ़ सुब्ह़ की, तुझी पर भरोसा किया, तेरी ज़ात का इरादा किया पस मुझे उन लोगों में से बना दे जिन पर आज तू उन (यानी फ़रिश्तों) के सामने फ़ख़्र फ़रमाता है जो मुझ से बेहतर और अफ़्ज़ल हैं।" जब अ़रफ़ात में आ जाए तो मक़ामे निमरह में मस्जिद के क़रीब ख़ैमा लगा दे क्यूंकि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसी मक़ाम पर ख़ैमा लगाया था। **निमरह** वादिए अ़रिना का निचला ह़िस्सा है जो मौक़िफ़ और अ़रफ़ात के दूसरी त़रफ़ है और वुक़ूफ़े अ़रफ़ात के लिए ग़ुस्ल करना चाहिए। जब सूरज ढल जाए तो इमाम मुख़्तसर ख़ुत़बा दे कर बैठ जाए और मोअज़्ज़िन अज़ान दे और इमाम दूसरा ख़ुत़बा दे और इक़ामत को अज़ान से इस त़रह़ मिलाया जाए कि मोअज़्ज़िन के इक़ामत केहने के साथ इमाम ख़ुत़बा से फ़ारिग़ हो जाए फिर एक अज़ान और दो इक़ामतों के साथ ज़ोहर और अ़स्र को मिलाए और नमाज़ में क़स्र करे और फिर मौक़िफ़ की त़रफ़ जाए और अ़रफ़ात में ठहर जाए और वादिए अ़रिना में न ठहरे। मस्जिदे इब्राहीम का अगला ह़िस्सा वादिए अ़रिना में है और पिछला ह़िस्सा अ़रफ़ात में पस जो शख़्स मस्जिदे इब्राहीम के अगले ह़िस्से में वुक़ूफ़ करे उसे वुक़ूफ़े अ़रफ़ा न ह़ासिल होगा और मस्जिद में अ़रफ़ात की जगह को बड़े पथ्थरों के ज़रीए मुमताज़ किया गया है बेहतर येह है कि वोह उन पथ्थरों के पास इमाम के क़रीब क़िब्ला रुख़ हो कर ठहरे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना, तस्बीह़ व तहलील, दुआ़ और तौबा कसरत से करे। इस दिन रोज़ा न रखे ताकि दुआ़ पर क़ुव्वत ह़ासिल हो और अ़रफ़ात से ग़ुरूबे आफ़्ताब से पेहले नहीं निकलना चाहिए ताकि अ़रफ़ात में दिन और रात जम्अ़ हो जाए और चांद में शुबे की वज्ह से आठवीं तारीख़ की एक साअ़त वहां ठहरना मुमकिन हो तो येह एह़तियात़ के मुत़ाबिक़ है और जो शख़्स दस ज़ुल ह़िज्जा की तुलूए़ फ़ज्र तक वुक़ूफ़ न कर सके उस का ह़ज फ़ौत हो जाएगा। उस पर लाज़िम है कि वोह उ़मरह के अफ़्आ़ल अदा कर के एह़राम खोल दे फिर ह़ज के फ़ौत होने की वज्ह से जानवर ज़ब्ह़ करे और इस की (आइन्दा साल) क़ज़ा करे। इस दिन ह़ाजी की अहम मश्ग़ूलिय्यत दुआ़ करते रेहना है क्यूंकि इस क़िस्म के इजतिमाअ़, इस क़िस्म के दिन और इस क़िस्म की जगह में दुआ़ओं के क़बूल होने की ज़्यादा उम्मीद होती है। वोह दुआ़एं जो वुक़ूफ़े अ़रफ़ात के दिन पढ़ने के बारे में मन्क़ूल हैं उन का पढ़ना बेहतर है, वोह दुआ़एं येह हैं :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُيُحْيِىْ وَ يُمِيْتُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ،

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِىْ قَلْبِىْ نُوْرًا وَ فِىْ سَمْعِىْ نُوْرًا وَ فِىْ بَصَرِىْ نُوْرًا،اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ لِىْ صَدْرِىْ وَ يَسِّرْلِىْ اَمْرِىْ

"**तर्जमा :** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई माबूद नहीं, वोह एक है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाही है, और इसी की तारीफ़ है, वोह ज़िन्दा करता और मारता है, वोह हर चाहत पर क़ुदरत रखने वाला है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे दिल, मेरी समाअ़त और मेरी बसारत को मुनव्वर फ़रमा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरा सीना खोल दे और मेरे लिए मेरे काम को आसान फ़रमा दे।"

www.dawateislami.net

सातवां अदब : ह़ज के दीगर आमाल का बयान

फिर मुज़्दलिफ़ा में इशा के वक़्त एक अज़ान और दो इक़ामतों के साथ मग़रिब और इशा की नमाज़ इकठ्ठी पढ़े।[1] और क़स्र करे। दोनों नमाज़ों के दरमियान नफ़्ल न पढ़े लेकिन दोनों फ़र्ज़ नमाज़ें अदा करने के बाद मग़रिब और इशा के नवाफ़िल और वित्र नमाज़ को जम्अ़ करे, पेहले मग़रिब के नवाफ़िल पढ़े (फिर इशा के पढ़े) जो शख़्स उस रात के पेहले निस्फ़ में वहां से निकल जाए और वहां रात न गुज़ारे तो उस पर दम लाज़िम हो जाता है।[2] जो शख़्स क़ुदरत रखता हो उसे उस रात को इबादत करते हुवे गुज़ारना निहायत उ़म्दा इबादात में से है फिर जब निस्फ़ रात गुज़र जाए तो जाने की तय्यारी करे, वहां से कंकरियां ले ले क्यूंकि वहां नर्म पथ्थर नहीं। वहां से सत्तर कंकरियां उठा ले क्यूंकि इतनी कंकरियों की ज़रूरत है और ज़्यादा लेने में ह़रज नहीं और चाहिए कि कंकरियां छोटी हों फिर अन्धेरे में सुब्ह़ की नमाज़ पढ़े और चल पड़े यहां तक कि जब मश्अ़रे ह़राम तक पहुंचे और वोह मुज़्दलिफ़ा का आख़िरी ह़िस्सा है तो वहां सुब्ह़ के रौशन होने तक दुआ़ मांगे और कहे : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मश्अ़रे ह़राम, बैतुल्लाह, इ़ज़्ज़त वाले महीनों, रुक्न और मक़ामे इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) के सदक़े ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ मुबारक को हमारी त़रफ़ से सलाम पहुंचा और हमें सलामती के घर में दाख़िल फ़रमा ऐ बुज़ुर्गी और इ़ज़्ज़त वाले।"

फिर वहां से सूरज तुलूअ़ होने से पेहले चल पड़े ह़त्ताकि उस जगह तक पहुंच जाए जिसे वादिए मुह़स्सिर कहा जाता है।[3] तो वहां से सुवारी को तेज़ करना मुस्तह़ब है यहां तक कि उस वादी से निकल जाए, अगर पैदल हो तो तेज़ तेज़ चले। फिर दस ज़ुल ह़िज्जा की सुब्ह़ को तल्बिया तक्बीर के साथ मिला दे और मिना पहुंच जाए और जमरात (यानी कंकरियां मारने) की तीन जगहें हैं। पेहले कुछ बुलन्दी पर कंकरियां मारने की जगह है पस एक नेज़ा सूरज बुलन्द होने के बाद ज़ब्ह़ से पेहले जमरए अ़क़्बा को कंकरियां मारे, क़िब्ला रुख़ खड़ा हो। अगर जमरे की त़रफ़ रुख़ करे तो भी ह़रज

1....**अमीरे एह्ले सुन्नत**, अमीरे दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी तसनीफ़े रफ़ीक़, रफ़ीकुल ह़रमैन में इस के अदा करने का त़रीक़ा नक़्ल फ़रमाते हैं : "यहां आप को एक ही अज़ान और एक ही इक़ामत से दोनों नमाज़ें अदा करनी हैं लिहाज़ा अज़ान और इक़ामत के बाद पेहले मग़रिब के तीन फ़र्ज़ अदा कर लीजिए, सलाम फेरते ही फ़ौरन इशा के फ़र्ज़ पढ़िए। फिर मग़रिब की सुन्नतें, इस के बाद इशा की सुन्नतें और वित्र अदा कीजिए।" (रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 149)

2....**अमीरे एह्ले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रफ़ीकुल ह़रमैन में नक़्ल फ़रमाते हैं : "मुज़्दलिफ़ा में रात गुज़ारना सुन्नते मुअक्कदा है मगर इस का वुक़ूफ़ वाजिब है। वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा का वक़्त सुब्ह़े सादिक़ से ले कर तुलूए़ आफ़्ताब तक है। इस के दरमियान अगर एक लम्ह़ा भी यहां गुज़ार लिया तो वुक़ूफ़ हो गया। ज़ाहिर है कि जिस ने फ़ज्र के वक़्त में यहां नमाज़े फ़ज्र अदा की उस का वुक़ूफ़ सह़ीह़ हो गया, और जो सुब्ह़े सादिक़ से पेहले ही मुज़्दलिफ़ा से चला गया उस का वाजिब तर्क हो गया, उस पर दम वाजिब है सिवाए माज़ूर के।" (रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 152)

3....वादिए मुह़स्सिर मिना और मुज़्दलिफ़ा के बीच में वाक़ेअ़ है और येह उन दोनों की ह़ुदूद से ख़ारिज है, यहां अस्ह़ाबे फ़ील पर अ़ज़ाब नाज़िल हुवा था, यहां ठहरना जाइज़ नहीं। (ऐज़न 150)

नहीं। हाथ बुलन्द कर के सात कंकरियां मारे और तक्बीर कहे हर कंकरी मारते वक़्त पढ़े ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी किताब की तस्दीक़ करता और तेरे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत की पैरवी करता हूं।[1] जब कंकरियां मारे तो तल्बिया व तक्बीर केहना छोड़ दे अलबत्ता फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद तक्बीर कहे और येह यौमुन्नह्र की फ़ज्र से अय्यामे तश्रीक़ में से आख़िरी दिन (यानी दस से तेरह ज़ुल हिज्जा) की अ़स्र तक है।"[2]

फिर अगर क़ुरबानी का जानवर साथ हो तो उसे ज़ब्ह करे। बेहतर येही है कि अपने हाथ से ज़ब्ह करे और कहे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह क़ुरबानी तुझ से, तेरे साथ और तेरे लिए है, मुझ से क़बूल फ़रमा जैसा कि तू ने अपने ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से क़बूल फ़रमाई।" ऊंट की क़ुरबानी अफ़्ज़ल है फिर गाय की फिर बकरी की और सात आदमियों के बड़े जानवर में शरीक होने की निस्बत बकरी की क़ुरबानी अफ़्ज़ल है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **خَيْرُ الْاَ ضْحِيَةِ الْكَبْشُ الْاَقْرَنُ** "**तर्जमा :** बेहतरीन क़ुरबानी सींगों वाले मेंढे की है।" (سنن ابی داؤد، کتاب الجنائز، باب کراھیۃ المغالاۃ فی الکفن، الحدیث۳۱۵۶، ص۱۴۶۰)

सफ़ेद रंग का जानवर पीले और सियाह रंग से अफ़्ज़ल है। अगर क़ुरबानी नफ़्ली हो तो उस से खा सकता है। ऐसे जानवर की क़ुरबानी न करे जो लंगड़ा हो, कान चिरा हुवा या सींग टूटा हुवा हो, ख़ारिश ज़दा हो,[3] या कान कटे हुवे हों या ऐसा कमज़ोर हो कि उठने से आ़जिज़ हो। फिर इस के बाद सर मुंडवाए और सुन्नत येह है कि रुख़ क़िब्ला की त़रफ़ हो और सर के अगले ह़िस्से से इब्तिदा करे दाईं त़रफ़ से गुद्दी पर उठी हुई दो हड्डियों तक मुंडवा दे फिर बाक़ी ह़िस्से को मुंडवाए और अ़र्ज़

1....**अमीरे एह्ले सुन्नत**, अमीरे दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه कंकरियां मारने का त़रीक़ा इस त़रह़ तेह़रीर फ़रमाते हैं : "सात कंकरियां अपने उल्टे हाथ में रख लें बल्कि दो तीन कंकरियां ज़ाइद ले लें। अब सीधे हाथ की शहादत की उंगली और अंगूठे की चुटकी में ले कर और सीधा हाथ अच्छी त़रह़ उठा कर कि बग़ल की रंगत ज़ाहिर हो بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر केहते हुवे एक एक कर के सात कंकरियां इस त़रह़ मारें कि तमाम कंकरियां जमरे तक पहुंचें वरना कम अज़ कम तीन हाथ के फ़ासिले तक गिरें। पेहली कंकरी मारते ही **लब्बैक** केहना मौक़ूफ़ कर दें कि अब **लब्बैक** केहना सुन्नत न रहा। जब सात पूरी हो जाएं तो वहां न रुकिए, न सीधे जाएं, न दाएं बाएं। बल्कि फ़ौरन ज़िक्रो दुआ़ करते हुवे पलट आइए।" (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 154)

2....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "नवीं[9] ज़ुल हिज्जतुल ह़राम की फ़ज्र से तेरहवीं की अ़स्र तक पांचों वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ें जो मस्जिद की जमाअ़ते ऊला के साथ अदा की गईं उन में एक बार बुलन्द आवाज़ से तक्बीर (यानी اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ط وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، وَلِلّٰهِ الْحَمْد) केहना वाजिब है और तीन बार अफ़्ज़ल है। (تنویر الابصار مع الدرالمختار، باب العیدین، ج۱، ص۱۱۶) मज़ीद मालूमात के लिए मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से शाएअ़कर्दा अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "**नमाज़े ईद का त़रीक़ा**" मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

3....ख़ारिशी जानवर की क़ुरबानी जाइज़ है जबकि फ़रबा हो, और इतना लाग़र हो कि हड्डी में मग़्ज़ न रहा तो क़ुरबानी जाइज़ नहीं।" (الفتاوی الھندیہ، کتاب الاضحیہ، ج۵، ص۲۹۸)

www.dawateislami.net

करे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हर बाल के बदले मेरे लिए नेकी लिख दे और गुनाह मिटा दे और हर बाल के बदले अपने हां एक दरजा बुलन्द फ़रमा दे।"

औ़रत बालों को कटवाए और गंजे के लिए मुस्तह़ब है कि सर पर उस्तरा फिरवाए और जब जमरे को कंकरियां मारने के बाद सर मुंडवाए तो अब वोह एह़राम से निकल जाएगा और इस के लिए तमाम मम्नूआ़त ह़लाल हो जाएंगी मगर बीवी का कुर्ब और शिकार जाइज़ नहीं। फिर मक्कए मुकर्रमा वापस आए और इसी त़रह़ त़वाफ़ करे जिस त़रह़ हम ने बयान किया है। येह त़वाफ़ ह़ज में फ़र्ज़ है और इसे त़वाफ़े ज़ियारत कहा जाता है। इस का पेहला वक़्त कुरबानी की रात के निस्फ़ के बाद से है और अफ़्ज़ल वक़्त कुरबानी का दिन है और इस के लिए आख़िरी वक़्त मुक़र्रर नहीं बल्कि इसे मुअख़्ख़र कर सकता है लेकिन एह़राम की क़ैद बाक़ी रहेगी और इस त़वाफ़ के बाद ही उस के लिए औ़रत का कुर्ब ह़लाल होगा जब त़वाफ़ कर लिया तो एह़राम से बाहर आने की तक्मील हो गई और एह़राम से मुकम्मल त़ौर पर बाहर आ गया और अब सिर्फ़ अय्यामे तश्रीक़ की रमी और मिना में रात गुज़ारना बाक़ी है। एह़राम से निकलने के बाद ह़ज की इत्तिबाअ़ में येह वाजिब हैं।

एह़राम से निकलने के तीन अस्बाब हैं

(1) रमी (यानी कंकरियां मारना), (2) सर मुंडवाना और (3) फ़र्ज़ त़वाफ़ करना।

ख़ुत़बाते ह़ज[1]

(1) सातवीं ज़ुल ह़िज्जा का ख़ुत़बा (2) नवीं ज़ुल ह़िज्जा का ख़ुत़बा (3) कुरबानी के दिन का ख़ुत़बा (4) मिना से वापसी के पेहले दिन (यानी बारहवीं ज़ुल ह़िज्जा) का ख़ुत़बा और येह तमाम ख़ुत़बे ज़वाल के बाद होने चाहिएं और इन सब में एक ही ख़ुत़बा होगा अलबत्ता अ़रफ़ात में दो ख़ुत़बे होंगे और इन के दरमियान बैठना है।

फिर जब त़वाफ़ से फ़ारिग़ हो जाए तो रात गुज़ारने और कंकरियां मारने के लिए मिना वापस चला जाए और रात मिना में गुज़ारे इसे लैलतुल क़र (यानी ठहरने की रात) कहा जाता है क्यूंकि दूसरे दिन लोग वहां ठहरते हैं और वापस नहीं जाते जब ईद का दूसरा दिन हो और सूरज ढल जाए तो कंकरियां मारने के लिए ग़ुस्ल करे और पेहला जमरा जो अ़रफ़ात की जानिब है उस का क़स्द करे, और येह रास्ते के दाईं त़रफ़ है। इसे सात कंकरियां मारे जब इस से आगे निकल जाए तो रास्ते की दाईं जानिब से थोड़ा हट कर क़िब्ला रुख़ खड़ा हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करे, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه और اَللّٰهُ اَكْبَر पढ़े फिर ह़ुज़ूरे क़ल्ब और आज़ा के ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ दुआ़ मांगे और सूरए बक़रह पढ़ने की मिक़्दार क़िब्ला रुख़ खड़ा रहे फिर जमरए वुस्त़ा की त़रफ़ जाए और इसे भी पेहले जमरे की त़रह़ कंकरियां मारे और यहां भी पेहले की त़रह़ खड़ा हो कर दुआ़ मांगे

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** ह़ज में तीन ख़ुत़बे सुन्नत हैं : "इमाम का मक्के में सातवीं को और अ़रफ़ात में नवीं को और मिना में ग्यारहवीं को ख़ुत़बा पढ़ना।" (बहारे शरीअ़त, ह़ज का बयान, ह़िस्सा 6, स. 13)

फिर जमरए अ़क़्बा की त़रफ़ जाए, उसे सात कंकरियां मारे और किसी अ़मल में मश्ग़ूल न हो फिर अपनी रिहाइश गाह की त़रफ़ लौट आए और येह रात भी मिना में ग़ुज़ारे, उस रात को **"लैलतुन्नफ़रिल अव्वल"** कहा जाता है और यहां सुब्ह़ करे फिर जब तशरीक़ में से दूसरे दिन ज़ोहर की नमाज़ पढ़ ले तो पेहले दिन की त़रह़ इक्कीस कंकरियां मारे। अब उसे इख़्तियार है कि मिना में ठहरे या मक्कए मुकर्रमा लौट आए अगर वोह मिना से सूरज ग़ुरूब होने से पेहले निकल जाए तो उस पर कुछ लाज़िम न होगा लेकिन अगर रात तक ठहरा रहा तो अब वहां से निकलना जाइज़ नहीं बल्कि वहां रात गुज़ारना ज़रूरी है यहां तक कि दूसरे दिन पेहले की त़रह़ इक्कीस कंकरियां मारेगा। मिना में रात न गुज़ारने और कंकरियां न मारने की वज्ह से दम में जानवर ज़ब्ह़ करना लाज़िम हो जाता है और वोह उस का गोश्त सदक़ा कर दे (ख़ुद न खाए) और रात मिना ही में गुज़ारे।[1] सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येही त़रीक़ए कार था।

आठवां अदब : उ़मरह और त़वाफ़े वदाअ़ तक के बक़िय्या उमूर

(जो शख़्स उ़मरह का इरादा रखता हो) वोह ग़ुस्ल करे, एह़राम के कपड़े पेहने और उ़मरह का एह़राम बांधे, उ़मरह की निय्यत कर के तल्बिया कहे, मस्जिदे आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का क़स्द करे और वहां दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े फिर तल्बिया केहता हुवा मक्कए मुकर्रमा आ जाए यहां तक कि मस्जिदे ह़राम में दाख़िल हो जाए। जब मस्जिद में दाख़िल हो तो तल्बिया केहना छोड़ दे और त़वाफ़ के सात चक्कर लगाए। और सई के सात फेरे लगाए जब फ़ारिग़ हो जाए तो सर मुंडवाए और इस का उ़मरह मुकम्मल हो गया।

नवां अदब : त़वाफ़े वदाअ़ का बयान

जब ह़ाजी तमाम काम ख़त्म कर ले और कूच का इरादा करे तो त़वाफ़े वदाअ़ में मश्ग़ूल हो जाए और बिग़ैर रमल और इज़्त़िबाअ़ के सात चक्कर लगाए। जब त़वाफ़ से फ़ारिग़ हो तो मक़ामे इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के पीछे दो रक्अ़तें पढ़े, आबे ज़मज़म पिए फिर मुल्तज़म के पास आ कर दुआ़ मांगे और गिड़गिड़ाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुश्नूदी और मग़फ़िरत का त़लबगार हो।

दसवां अदब : मदीनए मुनव्वरा की ज़ियारत और आदाब

हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

مَنْ زَارَنِیْ بَعْدَ وَفَاتِیْ فَكَاَنَّمَا زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ

---

1 ....**अह़नाफ़ के नज़दीक** येह चीज़ें ह़ज की सुन्नतों में से हैं : "नवीं रात मिना में गुज़ारना, आफ़्ताब निकलने के बाद मिना से अ़रफ़ात को रवाना होना वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के लिए ग़ुस्ल करना, अ़रफ़ात से वापसी में मुज़्दलिफ़ा में रात को रेहना और आफ़्ताब निकलने से पेहले यहां से मिना को चला जाना, दस और ग्यारह के बाद जो दोनों रातें हैं उन को मिना में गुज़ारना और अगर तेरहवीं को मिना में रहा तो बारहवीं के बाद की रात को भी मिना में रहे।"

(बहारे शरीअ़त, ह़ज की सुन्नतें, ह़िस्सा 6,स. 13)

"**तर्जमा :** जिस ने मेरे विसाल के बाद मेरी ज़ियारत की गोया उस ने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की ।"(شعب الایمان للبیهقی ،باب فی المناسك ،فضل الحج والعمرة ،الحدیث ٤١٥١،ج٣،ص٤٨٨)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : مَنْ وَجَدَ سَعَةً وَلَمْ يَزُرْنِى فَقَدْ جَفَانِى "जिस शख़्स ने ताक़त होने के बा वुजूद मेरी ज़ियारत न की उस ने मुझ से जफ़ा की ।"

(الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی ،الرقم١٩٥٦،النعمان بن شبل،ج٨،ص٢٤٨) من وجد سَعَة:بدله:من حج البیت)

नबिय्ये रेहमत, शफ़ीए उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है :

مَنْ جَاءَ نِىْ زَائِرًا لَا يَهُمُّهٗ اِلَّا زِيَارَتِىْ كَانَ حَقًّا عَلَى اللّٰهِ تَعَالٰى اَنْ اَكُوْنَ لَهٗ شَفِيْعًا.

तर्जमा : जो शख़्स मेरी ज़ियारत के लिए आए और मेरी ज़ियारत के सिवा उस का कोई मक़्सद न हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि मैं उस की शफ़ाअ़त करूं ।

(المعجم الکبیر ،الحدیث١٣١٤٩،ج١٢،ص٢٢٥،بتغیرٍ قلیلٍ)

मदीनए पाक में दाख़िल होने के आदाब

जो शख़्स नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का इरादा करे तो वोह रास्ते में कसरत से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़े जब मदीनए मुनव्वरा की दीवारों और दरख़्तों पर नज़र पड़े तो कहे اَللّٰهُمَّ هٰذَا حَرَمُ رَسُوْلِكَ،وَاجْعَلْهُ لِىْ وِقَايَةً مِّنَ النَّارِ،وَاَمَانًا مِّنَ الْعَذَابِ وَسُوْءِ الْحِسَابِ "**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़रमे पाक है । इसे मेरे लिए जहन्नम की आग से रुकावट बना दे और अ़ज़ाब और बुरे ह़िसाब से अम्न का बाइ़स बना ।"

दाख़िल होने से पेहले हुर्रा के कूंएं से ग़ुस्ल करे, ख़ुश्बू लगाए और निहायत पाक साफ़ कपड़े पेहने । फिर तवाज़ोअ़ के साथ ताज़ीम बजा लाते हुवे दाख़िल हो और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करे :

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ رَبِّ اَدْخِلْنِىْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِىْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّىْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِيْرًا

"**तर्जमा :** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मिल्लत पर, ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे सच्चाई के साथ दाख़िल कर और सच्चाई के साथ बाहर निकाल और अपनी त़रफ़ से मेरे लिए मददगार ग़लबा अ़त़ा फ़रमा ।"

मस्जिदे नबवी علیٰ صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام में दाख़िल होने के आदाब

फिर मस्जिद शरीफ़ का इरादा करे और दाख़िल हो कर मिम्बर के पास दो रक्अ़तें अदा करे, मिम्बर शरीफ़ के पाए को अपने दाएं कन्धे के मुक़ाबिल रखे और मुंह उस सुतून की त़रफ़ करे जिस त़रफ़ सन्दूक़ है और मस्जिद शरीफ़ के क़िब्ला का दाइरा दोनों आंखों के सामने हो येह नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के खड़े होने की जगह थी फिर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो और आप के रुख़े अन्वर के सामने इस त़रह़ खड़ा हो कि क़िब्ला की त़रफ़ पीठ हो और रौज़ए मुबारका की दीवार की त़रफ़ रुख़ कर के सुतून से चार गज़ के फ़ासिले पर खड़ा हो, क़िन्दील सर के ऊपर हो, दीवार को हाथ लगाना या बोसा देना सुन्नत और अदब नहीं।

प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ करने का त़रीक़ा

फिर अ़र्ज़ करे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا اَمِيْنَ اللّٰهِ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَاصَفْوَةَ اللّٰهِ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا خِيْرَةَ اللّٰهِ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا اَحْمَدُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا مُحَمَّدُ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا شَفِيْعُ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا عَاقِبُ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَابَشِيْرُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا نَذِيْرُ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا طٰهٰ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا طَاهِرُ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا اَکْرَمُ وُلْدِ آدَمَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا رَسُوْلَ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَاسَيِّدَ الْمُرْسَلِيْنَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا خَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا قَائِدَ الْخَيْرِ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا فَاتِحَ الْبِرِّ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا نَبِيَّ الرَّحْمَةِ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا سَيِّدَ الْاُمَّةِ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ يَا قَائِدَ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ،

اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ وَ عَلٰى اَهْلِ بَيْتِکَ الَّذِيْنَ اَذْهَبَ اللّٰهُ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَ طَهَّرَهُمْ تَطْهِيْرًا،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ وَ عَلٰى اَصْحَابِکَ الطَّيِّبِيْنَ وَاَزْوَاجِکَ الطَّاهِرَاتِ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ،جَزَاکَ اللّٰهُ عَنَّا اَفْضَلَ مَاجَزٰى نَبِيًّاعَنْ قَوْمِهٖ،وَرَسُوْلًا عَنْ اُمَّتِهٖ ،وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْکَ کَمَا ذَکَرَکَ الذَّاکِرُوْنَ، وَ غَفَلَ عَنْ ذِکْرِکَ الْغَافِلُوْنَ، وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْکَ فِى الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ،اَفْضَلَ وَ اَکْمَلَ وَ اَعْلٰى وَ اَجَلَّ وَ اَطْيَبَ وَ اَطْهَرَ مَا صَلّٰى عَلٰى اَحَدٍ مِّنْ خَلْقِهٖ،کَمَا اسْتَنْقَذَنَا بِکَ مِنَ الضَّلَالَةِ،وَبَصَّرَنَا بِکَ مِنَ الْعَمَايَةِ،وَ هَدَانَا بِکَ مِنَ الْجَهَالَةِ،اَشْهَدُ اَنْ لَّااِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ،وَ اَنَّکَ عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ وَ اَمِيْنُهٗ وَصَفِيُّهٗ وَ خِيْرَتُهٗ مِنْ خَلْقِهٖ ،وَاَشْهَدُ اَنَّکَ قَدْبَلَّغْتَ الرِّسَالَةَ،وَاَدَّيْتَ الْاَمَانَةَ،وَ نَصَحْتَ الْاُمَّةَ،وَ جَاهَدْتَّ عَدُوَّکَ،وَهَدَيْتَ اُمَّتَکَ،وَ عَبَدْتَّ رَبَّکَ حَتّٰى اَتَاکَ الْيَقِيْنُ،فَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْکَ وَ عَلٰى اَهْلِ بَيْتِکَ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ،وَ کَرَّمَ وَ شَرَّفَ.

''तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अमीन ! आप पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप पर सलाम हो, ऐ

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के चुने हुवे ! आप पर सलाम हो, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में सब से बेहतर ! आप पर सलाम हो, ऐ अह़मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप पर सलाम हो, ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप पर सलाम हो, ऐ शफ़ीअ़ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप पर सलाम हो, ऐ आ़क़िब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप पर सलाम हो, ऐ ख़ुश ख़बरी सुनाने वाले ! आप पर सलाम हो, ऐ डर सुनाने वाले ! आप पर सलाम हो, ऐ طٰہٰ ! आप पर सलाम हो, ऐ पाकीज़ा ज़ात ! आप पर सलाम हो, ऐ औलादे आदम में सब से ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाले ! आप पर सलाम हो, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल ! आप पर सलाम हो, ऐ तमाम जहानों के पालने वाले के रसूल ! आप पर सलाम हो, ऐ रसूलों के सरदार ! आप पर सलाम हो, ऐ सब भलाइयों के दरवाज़े खोलने वाले ! आप पर सलाम हो, ऐ रेह़मत वाले नबी ! आप पर सलाम हो, ऐ उम्मत के सरदार ! आप पर सलाम हो, ऐ चमकती पेशानी वालों के क़ाइद ! आप पर सलाम हो, आप पर सलाम हो और आप के एह्ले बैत पर जिन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नापाकी को दूर किया और उन्हें ख़ूब पाक किया, आप पर सलाम हो और आप के पाकीज़ा सह़ाबा पर, आप की पाकबाज़ अज़्वाज पर जो मोमिनीन की माएं हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को उस से भी अफ़्ज़ल जज़ा अ़ता फ़रमाए जो उस ने किसी नबी को उस की क़ौम की त़रफ़ से और किसी रसूल को उस की उम्मत की त़रफ़ से अ़ता फ़रमाई, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रेह़मत नाज़िल फ़रमाए जब भी याद करने वाले आप का ज़िक्र करें और ग़ाफ़िल लोग आप के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हों, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अव्वलीनो आख़िरीन में आप पर रेह़मत फ़रमाए जो किसी मख़्लूक़ पर नाज़िल होने वाली रेह़मत से अफ़्ज़ल, कामिल तरीन, आला, बुलन्द तरीन और सब से ज़्यादा पाकीज़ा हो जिस त़रह़ उस ने हमें आप के ज़रीए़ गुमराही से निकाला और आप के ज़रीए़ हमें अन्धेपन से बचा कर बीनाई अ़ता फ़रमाई और आप के सबब से हमें जहालत से हिदायत की त़रफ़ हमारी रेहनुमाई फ़रमाई, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई माबूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे, रसूल, अमीन, चुने हुवे और मख़्लूक़ में सब से अफ़्ज़ल हैं और मैं गवाही देता हूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम पहुंचा दिया, अमानत अदा कर दी, उम्मत की ख़ैर ख़्वाही की, अपने दुश्मन के ख़िलाफ़ जिहाद किया, उम्मत को हिदायत दी और अपने विसाल तक अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की। आप पर और आप की पाकीज़ा आल पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रेह़मत और सलाम हो और इस का करम और शरफ़ हो।"

और अगर किसी का सलाम आप की बारगाह में पहुंचाने की वसिय्यत हो तो अ़र्ज़ करे : **"आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर फुलां की त़रफ़ से सलाम हो।"**

हज़रते सय्यिदाना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ करने का त़रीक़ा

फिर एक गज़ के फ़ासिले पर हट कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर सलाम भेजे क्यूंकि उन का सरे मुबारक नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कन्धे मुबारक के पास है और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सरे मुबारक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कन्धे मुबारक के पास है, फिर एक गज़ के फ़ासिले पर हट कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर सलाम भेजे और दोनों पर इस त़रह़ सलाम भेजे :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمَا یَا وَزِیْرَیْ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ،اَلْمُعَاوِنَیْنِ لَہٗ عَلَی الْقِیَامِ
بِالدِّیْنِ مَادَامَ حَیًّا،اَلْقَائِمَیْنِ فِیْ اُمَّتِہٖ بَعْدَہٗ بِاُمُوْرِ الدِّیْنِ،تَتَّبِعَانِ فِیْ ذٰلِکَ اٰثَارَہٗ،وَ تَعْمَلَانِ بِسُنَّتِہٖ،فَجَزَاکُمَا
اللّٰہُ خَیْرَ مَا جَزٰی وَزِیْرَیْ نَبِیٍّ عَلٰی دِیْنِہٖ خَیْرًا۔

"**तर्जमा :** ऐ नाइबीने रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ! और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात में दीन के मुआ़मले में मदद करने वालो ! और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बाद उम्मत में उमूरे दीन क़ाइम करने वालो ! तुम पर सलाम हो इस सिलसिले में तुम नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नक़्शे क़दम पर चले और आप की सुन्नत के मुत़ाबिक़ अ़मल किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी नबी के दो वज़ीरों को उस के दीन के एतिबार से जो जज़ा दी है तुम्हें उस से बेहतर जज़ा अ़त़ा फ़रमाए।"

फिर लौट कर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर और सुतून (जो कि इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के दौर में था) के दरमियान आप के सरे अन्वर के सामने खड़ा हो कर क़िब्ला की त़रफ़ मुंह करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द और बुज़ुर्गी बयान करे और नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करे : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ने इरशाद फ़रमाया है :

وَلَوْ اَنَّھُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَھُمْ جَآءُوْکَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰہَ وَاسْتَغْفَرَ لَھُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰہَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا۝ (پ٥، النسآء: ٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मेह़बूब ! तुम्हारे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम ने तेरा फ़रमान सुना और तेरे हुक्म को माना, तेरे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़स्द किया, अपने गुनाहों के मुआ़मले में उन को शफ़ीअ़ बनाते हैं जिन गुनाहों ने हमारी पीठ को बोझल कर दिया, हम अपनी ख़त़ाओं का एतिराफ़ करते हैं और अपनी लग़्ज़िशों से तौबा करते हैं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू हमारी तौबा क़बूल फ़रमा और हमारे ह़क़ में अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा, उन की उस क़द्रो मन्ज़िलत के वसीले से जो तेरी बारगाह में है और इस ह़क़ के सदक़े जो तुझ पर है।

www.dawateislami.net

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर रेह़्म फ़रमा, मुजाहिदीन, मुहाजिरीन, अन्सार और हमारे उन भाइयों को जो ह़ालते ईमान में हम से पेहले चले गए, बख़्श दे, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर और अपने ह़रम शरीफ़ में हमारी इस ह़ाज़िरी को आख़िरी ह़ाज़िरी न बनाना बल्कि अपनी रेह़मत के सबब बार बार इस दर की ह़ाज़िरी नसीब फ़रमाना, ऐ सब से बढ़ कर रेह़्म फ़रमाने वाले।

रियाज़ुल जन्नत की फ़ज़ीलत

फिर रियाज़ुल जन्नत में जाए और वहां नमाज़ पढ़े और जिस क़दर मुमकिन हो कसरत से दुआ़ मांगे क्यूंकि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है :

مَابَيْنَ قَبْرِىْ وَمِنْبَرِىْ رَوْضَةٌ مِّنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ وَمِنْبَرِىْ عَلٰى حَوْضِىْ.

तर्जमा : मेरी क़ब्रे अन्वर और मिम्बर का दरमियानी ह़िस्सा जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर मेरे ह़ौज़ पर है।

(صحیح البخاری، کتاب فضل الصلاۃ فی مسجد مکۃ والمدینۃ، باب فضل مابین القبر والمنبر، الحدیث:۱۱۹۶، ص۹۳، قبری بدلہ بیتی)

फिर मिम्बर के पास दुआ़ मांगे और मुस्तह़ब येह है कि अपना हाथ निचले पाए पर रखे और येह भी मुस्तह़ब है कि जुमेरात के दिन निकले और शुहदा की क़ब्रों की ज़ियारत करे, सुब्ह़ की नमाज़ मस्जिदे नबवी में अदा करे और ज़ियारत के लिए निकल जाए और ज़ोहर की नमाज़ के लिए मस्जिद की त़रफ़ लौट आए ताकि उस से मस्जिदे नबवी में फ़राइज़ की जमाअ़त फ़ौत न हो जाए।

जन्नतुल बक़ीअ़ में ह़ाज़िरी[1]

और हर रोज़ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम पेश करने के बाद जन्नतुल बक़ीअ़ जाना मुस्तह़ब है। और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا, ह़ज़रते

1....**अमीरे एह्ले सुन्नत बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **रफ़ीकुल ह़रमैन में फ़रमाते हैं :** "जन्नतुल बक़ीअ़ के मदफ़ूनीन की ख़िदमत में बाहर ही खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ करें और बाहर ही से दुआ़ मांगें क्यूंकि **नज्दियों** ने जन्नतुल बक़ीअ़ शरीफ़ नीज़ जन्नतुल मअ़ला (मक्कए मुकर्रमा) दोनों मुक़द्दस क़ब्रिस्तानों के मक़्बरों और मज़ारों को निहायत ही बे दर्दी और गुस्ताख़ी के साथ शहीद कर दिया है। हज़ारहा सह़ाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم और बे शुमार एह्ले बैते अत़हार رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم व औलियाए किबार رَحِمَهُمُ اللهُ व उ़श्शाक़े ज़ार رَحِمَهُمُ اللهُ के मज़ारात के नुक़ूश तक मिटा दिए हैं। आप अगर अन्दर तशरीफ़ ले गए तो आप को क्या मालूम कि आप का पाउं किसी सह़ाबी या किसी वली के मज़ार शरीफ़ पर पड़ रहा है बल्कि आ़म मुसलमानों की क़ब्रों पर भी पाउं रखना ह़राम है। जो रास्ता क़ब्रें मुन्हदिम कर के बनाया जाए उस पर चलना ह़राम है। बल्कि इमामे एह्ले सुन्नत, आला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि अगर किसी रास्ते के बारे में शक भी हो कि येह रास्ता क़ब्रों को मिटा कर बनाया गया है तो उस पर भी चलना ह़राम है। وَالْعِيَاذُ بِاللهِ تَعَالٰى जन्नतुल बक़ीअ़ के दरवाज़े ही पर ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ करना ज़रूरी नहीं। अस्ल त़रीक़ा तो येह है कि उस सम्त से ह़ाज़िर हों जहां से क़िब्ले को आप की पीठ हो और मदफ़ूनीने बक़ीअ़ के चेहरे आप की त़रफ़ हों।" (रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 200)

सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन बिन अ़ली, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली, ह़ज़रते सय्यिदुना जाफ़र बिन मुह़म्मद और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की क़ब्रों की ज़ियारत करे, मस्जिदे फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا में नमाज़ पढ़े और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साह़िबज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी ह़ज़रते सफ़िय्या (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) की क़ब्रों की ज़ियारत करे।

ह़ाजी को चाहिए कि वोह रास्ते में तिजारत न करे ताकि सफ़रे ह़ज से उस का इरादा सिर्फ़ इ़बादत ही हो और जहां तक दूसरे का ख़र्च बरदाश्त करना मुमकिन हो तो करे और ह़ज में अपनी तवज्जोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रखे और इसे किसी ह़ाल में भी न भूले।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए बाहम महब्बत करने वाले नूर के मिम्बरों पर होंगे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ऐसे बन्दे भी हैं जो न अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं और न शुहदा लेकिन अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और शुहदाए इ़ज़्ज़ाम उन के मक़ामो मर्तबे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उन के क़ुर्ब पर रश्क करेंगे।" एक आराबी ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह कौन लोग होंगे ?" हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह मुख़्तलिफ़ शह्रों के लोग होंगे इन के दरमियान कोई ख़ूनी रिश्ता न होगा मगर वोह एक दूसरे से सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर महब्बत करते और तअ़ल्लुक़ रखते होंगे। बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के लिए अपने (अ़र्श के) सामने नूर के मिम्बर रखने का हुक्म फ़रमाएगा। और उन का ह़िसाब भी उन्ही मिम्बरों पर फ़रमाएगा। लोग तो ख़ौफ़ज़दा होंगे लेकिन वोह बे ख़ौफ़ होंगे।" (المعجم الکبیر،الحدیث ۳۴۳۳،ج۳، ص ۲۹۰ بتغیر)

बाब : 08 तिलावते कुरआने पाक का बयान

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है :

مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ ثُمَّ رَأٰى أَنَّ اَحَدًا اُوْتِىَ اَفْضَلَ مِمَّا اُوْتِىَ فَقَدْ اِسْتَصْغَرَ مَا عَظَّمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى.

तर्जमा : जिस ने कुरआन पढ़ा फिर येह ख़याल किया कि किसी को उस से अफ़्ज़ल चीज़ दी गई है तो उस ने उस चीज़ को ह़क़ीर जाना जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अ़ज़मत अ़ता फ़रमाई है।

(الاستيعاب في معرفة الأصحاب ،باب حرف الراء ،باب رجاء ،الرقم٧٧٢،رجاء الغنوى ،ج٢،ص٧٥ مفهوماً)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है :

مَا مِنْ شَفِيْعٍ اَفْضَلُ مَنْزِلَةً عِنْدَاللّٰهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْقُرْآنِ لَا نَبِيٌّ وَّلَا مَلَكٌ وَلَا غَيْرُهُمَا.

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बरोज़े क़ियामत कुरआने पाक से ज़्यादा किसी शफ़ाअ़त करने वाले का मर्तबा न होगा। न किसी नबी का, न फ़रिश्ते का और न ही किसी और का।

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ को पैदा करने से दो हज़ार साल पेहले सूरए त़ाहा और सूरए यासीन की तिलावत फ़रमाई। जब फ़रिश्तों ने कुरआन को सुना तो कहा : मुबारक हो उस उम्मत के लिए जिन पर येह कुरआन नाज़िल होगा, मुबारक हैं वोह सीने जो इसे उठाएंगे और ख़ुश ख़बरी है उन ज़बानों के लिए जो इस की तिलावत करेंगी।" (سنن الدارمی، کتاب فضائل القرآن ،باب فی فضل سورة طٰہٰ ویٰسٓ ،الحدیث٣٤١٤،ج٢،ص٥٤٧تا٥٤٨)

ग़ाफ़िल लोगों की तिलावत की मज़म्मत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "बहुत से तिलावते कुरआन करने वाले ऐसे हैं कि कुरआन उन पर लानत भेजता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "दोज़ख़ के फ़रिश्ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ना फ़रमान ह़ामिलीने कुरआन को बुत परस्तों से भी जल्दी पकड़ेंगे।"

तौरात शरीफ़ में है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दे ! क्या तुझे मुझ से ह़या नहीं आती ? तेरे पास किसी दोस्त का ख़त़ आता है और तू रास्ते में चल रहा हो तो रास्ते से हट कर उसे पढ़ने के लिए बैठ जाता है और इस के एक एक ह़र्फ़ में ग़ौर करता है ह़त्ताकि तू उस से कुछ भी

www.dawateislami.net

नहीं छोड़ता और येह मेरी किताब है जिसे मैं ने तेरी त़रफ़ उतारा है, देख ! मैं ने इस में तेरे लिए कितनी बातों को तफ़्सील से बयान किया और कितनी बातों को तकरार से बयान किया ताकि तू इस के त़ूल (लम्बाई) व अ़र्ज़ (चौड़ाई) में ग़ौरो फ़िक्र करे फिर तू इस से मुंह फेरता है, क्या मैं तेरे नज़्दीक तेरे भाई से भी पीछे हूं ?" ऐ मेरे बन्दे ! तेरा भाई तुझे कोई वाक़िआ़ सुनाता है तो तू पूरी त़रह़ मुतवज्जेह हो कर सुनता है और पूरी दिल जमई से उस की बातों को सुनता है, अगर कोई दरमियान में बात करता है या तुझे उस की बात से बे तवज्जोह करता है तो तू इशारे से उसे रोकता है जबकि मैं तेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हूं और तुझ से कलाम करता हूं और तू अपना दिल मुझ से फेर लेता है क्या तू ने मुझे अपने भाई से भी हल्का समझ रखा है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से बहुत ज़्यादा बुलन्द व आला है ।

क़ुरआने पाक पढ़ने के आदाब

तिलावत करने वाले को चाहिए कि वोह बा वुज़ू हो और ह़ालते अदब में खड़ा या बैठा हो और सब से अफ़्ज़ल नमाज़ में ह़ालते क़ियाम में क़िराअत करना है । सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है :

مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فِيْ اَقَلَّ مِنْ ثَلَاثٍ لَمْ يَفْهَمْهُ

तर्जमा : जिस शख़्स ने तीन दिन से कम में मुकम्मल क़ुरआने पाक पढ़ा उस ने नहीं समझा ।

(جامع الترمذی ،ابواب القراءات ،باب فی:کم أقرأ القرآن؟ ،الحدیث۲۹۴۹،ص۱۹۴۸)

बाज़ लोगों ने हर रात में एक क़ुरआने पाक ख़त्म करना मकरूह जाना है और शायद हर हफ़्ते में ख़त्म करना बेहतर है और तिलावत के अन्दर तरतील (यानी ठहर ठहर कर पढ़ना) मुस्तह़ब है ।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ هٰذَا الْقُرْآنَ نُزِّلَ بِحُزْنٍ ، فَاِذَا قَرَأْتُمُوْهُ فَتَحَازَنُوْا

तर्जमा : बेशक येह क़ुरआन ह़ुज़्न के साथ उतारा गया है । पस जब इसे पढ़ो तो ह़ुज़्न (यानी ग़म) ज़ाहिर करो ।

(سنن ابن ماجة ،ابواب اقامة الصلوات ،باب فی حسن الصوت بالقرآن ،الحدیث۱۳۳۷،ص۲۵۵۶"فتحازنوا"بدله "فَابْكُوا")

और तिलावत करने वाले को चाहिए कि आयते सजदा के ह़क़ की रिआ़यत रखे । लिहाज़ा अगर बा वुज़ू हो और ख़ुद पढ़े या दूसरे से सुने तो सजदा करे । क़ुरआने मजीद में चौदह सजदे हैं । सूरए ह़ज में दो सजदे जबकि सूरए صٓ में सजदा नहीं ।[1]

1....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** "सूरए ह़ज और सूरए صٓ में एक एक सजदा है ।"

(تنویر الابصارمع الدرالمختار،کتاب الصلاة،باب سجود التلاوة،ج۱،ص۱۰۴)

www.dawateislami.net

कुरआने मजीद को ताज़ीम और ग़ौरो फ़िक्र के साथ पढ़ना चाहिए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी मख़्लूक़ पर मेहरबानी फ़रमाई कि उस ने इसे अपने अ़ज़ीम अ़र्श से उस दरजे में नाज़िल फ़रमाया कि मख़्लूक़ समझ सके यहां तक कि उस के कलाम के मआ़नी जो उस की ज़ाती सिफ़त है उसे मख़्लूक़ की समझ के दरजे तक पहुंचा दिया और मख़्लूक़ के लिए वोह सिफ़त हुरूफ़ और आवाज़ की लपेट में कैसे ज़ाहिर होती अगर उस के कलाम की जलालत हुरूफ़ के लिबास में मस्तूर न हो तो अ़र्श और ज़मीन को उस के सुनने की ताब न होती बल्कि जो कुछ इन दोनों के दरमियान है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बादशाही की अ़ज़मत और नूरी शुआ़ओं से मुतफ़र्रिक़ हो जाता है अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को साबित न रखता तो वोह उस के कलाम को सुनने की त़ाक़त न रखते जिस त़रह़ पहाड़ उस की अदना तजल्ली को बरदाश्त न कर सका और रेज़ा रेज़ा हो गया, लिहाज़ा बन्दे को चाहिए कि कुरआने मजीद को पढ़ने के साथ साथ अपने दिल में मुतकल्लिम की अ़ज़मत को भी ह़ाज़िर करे और येह ख़याल करे कि इस के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से कलाम फ़रमा रहा है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اِنَّ لِلْقُرْاٰنِ ظَهْرًا وَّبَطْنًا وَحَدًّا وَّمَطْلَعًا **"तर्जमा :** बेशक कुरआने मजीद का एक ज़ाहिर, एक बात़िन, एक ह़द और एक जाए ज़ुहूर है।" (الزهد لابن المبارك ويليه كتاب الرقائق ،باب فى لزوم السنة ،الحديث٩٣،ص٢٣،مفهوماً)

अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मैं चाहूं तो सूरए फ़ातिह़ा की तफ़्सीर से सत्तर ऊंट भर दूं।"

इस से वाज़ेह़ होता है कि कुरआने मजीद के असरार ख़त्म नहीं हो सकते और इस के अ़जाइबात बे शुमार हैं और येह चीज़ें दिल की पाकीज़गी पर मौक़ूफ़ हैं। नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के ह़क़ में दुआ़ फ़रमाई : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इसे दीन की समझ और कुरआने मजीद की तावील सिखा दे।" (المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عبد الله بن العباس بن عبد المطلب،الحديث ٢٨٨١،ج١،ص٦٧٤)

येह इस बात पर दलालत है कि तफ़्सीरे कुरआने मजीद की त़रह़ मस्मूअ़ (यानी सुनी हुई) और मन्क़ूल (यानी रिवायत की हुई) नहीं है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया

لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ (پ٥، النسآء:٨٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ज़रूर उन से इस की ह़क़ीक़त जान लेते येह जो बाद में काविश करते हैं।

इस आयत में एह्ले इ़ल्म के लिए इस्तिम्बात़ करना साबित है और येह इस बात पर दलालत है कि येह चीज़ सिर्फ़ समाअ़त पर मौक़ूफ़ नहीं। इस बात को समझ लो बहुत मुफ़ीद है। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

www.dawateislami.net

बाब : 09 अज़्कार और दुआओं का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (پ ٢٤،المؤمن: ٦٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इरशादे मुबारक है :

فَاِذَا قَضَیْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِیٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ج (پ٥، النسآء: ١٠٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो अल्लाह की याद करो खड़े और बैठे और करवटों पर लेटे।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

ذَاكِرُ اللّٰهِ فِی الْغَافِلِیْنَ كَالْحَیِّ بَیْنَ الْاَمْوَاتِ

तर्जमा : ग़ाफ़िल लोगों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले की मिसाल इस त़रह़ है जिस त़रह़ मुर्दों में ज़िन्दा हो।

(صحیح البخاری ،کتاب الدعوات ،باب فضل ذکر اللّٰه،الحدیث٦٤٠٧،ص٥٣٨،مفهوماً)

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

ذَاكِرُ اللّٰهِ فِی الْغَافِلِیْنَ كَشَجَرَةٍ خَضْرَاءَ فِی وَسْطِ الْهَشِیْمِ.

तर्जमा : ग़ाफ़िल लोगों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले की मिसाल इस त़रह़ है जैसे सूखे दरख़्तों में सर सब्ज़ दरख़्त हो।

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی محبة اللّٰه،فصل فی إدامة ذکر اللّٰه،الحدیث٥٦٥،ج١،ص٤١١"الهشیم"بدله"الشجر")

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रेह़मत निशान है : "जो लोग किसी जगह बैठ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं तो फ़रिश्ते उन का इह़ात़ा कर लेते हैं और रेह़मत उन्हें ढांप लेती है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी बारगाह में (अपनी शान के मुत़ाबिक़) उन का तज़किरा फ़रमाता है।"

(سنن ابن ماجة ،ابواب الادب ،باب فضل الذکر ،الحدیث٣٧٩١،ص٢٧٠٢)

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो लोग किसी जगह जम्अ़ होते हैं और इस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र नहीं करते और न ही नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजते हैं तो बरोज़े क़ियामत वोह मजलिस उन के लिए बाइ़से ह़सरत होगी।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ،کتاب البر والاحسان ،باب الصحبة والمجالسة ،الحدیث٥٩١،ج١،ص٣٩٧)

नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

اَفْضَلُ مَاقُلْتُ اَنَاوَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ قَبْلِی لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ.

तर्जमा : मैं ने और मुझ से पेहले अम्बियाए किराम ने सब से अफ़्ज़ल बात येह कही कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई माबूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं ।

(موطأ للامام مالك ،كتاب الحج ،باب جامع الحج ،الحديث ٩٨٣،ج١،ص٣٨٧)

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुबारक है : "जो शख़्स हर नमाज़ के बाद तैंतीस बार سُبْحٰنَ اللّٰه, तैंतीस बार اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ, और तैंतीस बार اَللّٰهُ اَكْبَر पढ़े और सौ का अ़दद لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْکَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُيُحْيِیْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ पर ख़त्म करे तो उस के गुनाह बख़्श दिए जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों ।"

(السنن الكبرى للنسائی، كتاب عمل اليوم والليلة،باب التسبيح والتكبير.....الخ،الحديث:٩٩٧٠/٩٩٧١،ج٦، ص٤١-٤٢)

एक शख़्स ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या ने मुझ से मुंह मोड़ लिया है और मेरा माल कम पड़ गया है । नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तू फ़रिश्तों की नमाज़ और मख़्लूक़ की तस्बीह़ क्यूं नहीं पढ़ता जिस के सबब उन्हें रिज़्क़ मिलता है । रावी केहते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह क्या है ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ तुलूए़ फ़ज्र और नमाज़े फ़ज्र के दरमियान सौ मरतबा येह कलिमात पढ़ा करो, दुन्या तेरे पास ज़लीलो रुस्वा हो कर आएगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर कलिमे से एक फ़रिश्ता पैदा फ़रमाएगा जो क़ियामत तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करेगा और इस का सवाब तेरे लिए होगा ।"

(المجروحين لابی حاتم محمد بن حبان البستی،باب الالف ،الرقم٦٢،اسحاق بن ابراهيم الطبری ،ج١، ص١٤٨-١٤٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, बीबी आमिना के गुलशन के महकते फूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब बन्दा اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ केहता है तो येह (कलिमा) ज़मीन और सातों आस्मानों के दरमियान को भर देता है जब दूसरी मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ केहता है तो सातवें आस्मान से ले कर सब से निचली ज़मीन तक को भर देता है और जब तीसरी मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ केहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है सुवाल कर तुझे अ़त़ा किया जाएगा ।

www.dawateislami.net

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है : "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ और لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، سُبْحَانَ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ बाक़ी रेहने वाली नेकियां हैं ।" (شعب الایمان للبیهقی،باب فی الصلوات ،فصل فی الصلوات وما فی أدائهن من الکفارات ،الحدیث۲۸۱۷، ج۳، ص۴۳-۴۴)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अम्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स मज़्कूरा बाला कलिमात केहता है उस के गुनाह बख़्श दिए जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों ।"

(جامع الترمذی ، کتاب الدعوات ،باب ماجاء فی فضل التسبیح والتکبیروالتهلیل والتحمید،الحدیث۳۴۶۰،ص۲۰۰۸)

जान लो ! मज़्कूरा अज़्कार में से नफ़्अ़ बख़्श वोह ज़िक्र होता है जो हुज़ूरे क़ल्ब के साथ हो । जो दिल की हुज़ूरी के बिग़ैर हो उस से कम नफ़्अ़ हासिल होता है क्यूंकि ज़िक्र का मक़्सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत है और येह चीज़ हमेशा हुज़ूरे क़ल्ब के साथ ज़िक्र करने से हासिल होती है और इसी से इन्सान बुरे ख़ातिमे से महफ़ूज़ रेहता है । وَاللّٰهُ اَعْلَم

दुआ़ के आदाब

दुआ़ के लिए अच्छे अवक़ात का ख़याल रखे, बा वुज़ू क़िब्ला रुख़ हो, पस्त आवाज़ हो, गिड़गिड़ाते हुवे और क़बूलिय्यत का यक़ीन रखते हुवे दुआ़ करे, बार बार दुआ़ करे, दुआ़ की इब्तिदा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजने नीज़ गुनाहों को छोड़ने का पुख़्ता इरादा करते हुवे दुआ़ मांगे ।

दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल

मरवी है कि एक दिन नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर ख़ुशी से चमक रहा था आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे पास जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िर हुवे और कहा : "ऐ मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप इस बात पर राज़ी नहीं कि आप की उम्मत में से जो शख़्स एक मरतबा आप पर दुरूद भेजेगा मैं उस पर दस रेहमतें नाज़िल करूंगा ।" (سنن النسائی ، کتاب السهو ،باب الفضل فی الصلاة علی النبی ﷺ ،الحدیث۱۲۹۶،ص۲۱۷۱)

मज़ीद आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक भेजता है तो जब तक वोह दुरूद शरीफ़ भेजता रेहता है फ़रिश्ते उस के लिए दुआ़ए रेहमत करते रेहते हैं अब बन्दे की मर्ज़ी है कम पढ़े या ज़्यादा ।" (سنن ابن ماجة ،ابواب اقامة الصلوات ،باب الصلاة علی النبی ﷺ ،الحدیث۹۰۷،ص۲۵۳۰)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखे तो जब तक उस किताब में मेरा नाम रहेगा फ़रिश्ते उस शख़्स के लिए मुसल्सल बख़्शिश मांगते रहेंगे ।"(المعجم الاوسط ،الحدیث۱۸۳۵،ج۱،ص۴۹۷)

www.dawateislami.net

इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ص (پ٤،ال عمران: ١٣٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब कोई बे ह़याई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें **अल्लाह** को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहें।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ۝ (پ٣،ال عمران: ١٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और पिछले पहर से मुआ़फ़ी मांगने वाले।

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

اِنِّىْ لَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ فِى الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ سَبْعِيْنَ مَرَّةً

तर्जमा : मैं दिन रात सत्तर मरतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करता और उस की बारगाह में तौबा करता हूं।

(كتاب الدعاء للطبرانى ،باب من قال سبعين مرة ،الحديث١٨٣٨،ص٥١٦, بدون والليلة)

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है :

مَا أَصَرَّ مَنِ اسْتَغْفَرَ وَاِنْ عَادَ فِى الْيَوْمِ سَبْعِيْنَ مَرَّةً

तर्जमा : वोह शख़्स जो इस्तिग़फ़ार करे गुनाह पर इसरार करने वाला नहीं अगर्चे वोह एक दिन में सत्तर बार गुनाह करे।

(سنن ابى داؤد ،كتاب الوتر ،باب فى الاستغفار ،الحديث١٥١٤،ص١٣٣٥)

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है : "जो शख़्स गुनाह करता है और फिर यक़ीन रखता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह पर मुत्तलअ़ है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देता है अगर्चे वोह इस्तिग़फ़ार न भी करे।"

(المعجم الاوسط ،الحديث٤٤٧٢،ج٣،ص٢٤٤)

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब गुनहगार हो सिवाए उस के जिसे मैं आ़फ़िय्यत दूं पस तुम मुझ से बख़्शिश मांगो मैं तुम्हें बख़्श दूंगा और जिस शख़्स को येह यक़ीन हो कि मैं उसे बख़्शने पर क़ादिर हूं तो मैं उसे बख़्श देता हूं और मुझे कुछ परवाह नहीं।"

(مصنف ابن ابى شيبة ،كتاب الدعاء ،باب فى مسألة العبد لربه وأنه لا يخيبه ،الحديث٣،ج٧،ص٩٠)

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे मग़फ़िरत बुन्याद है :

www.dawateislami.net

"जो इस त़रह़ दुआ़ करे : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरी ज़ात पाक है, मैं ने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया और बुरे आमाल किए, मुझे बख़्श दे क्यूंकि तेरे सिवा कोई बख़्शने वाला नहीं तो उस के गुनाह बख़्श दिए जाते हैं अगर्चे च्यूंटियों के रेंगने की त़रह़ ही (पोशीदा) हों।"

(تفسیرالقرطبی،سورۃ آل عمران،تحت الآیۃ۱۷،الجزالرابع تحت جلد۲،ص۳۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "गुनाह छोड़े बिग़ैर इस्तिग़फ़ार करना झूटों की तौबा है।"

दुआ़ के बेहतर अल्फ़ाज़

और मुस्तह़ब येह है कि दुआ़ इन अल्फ़ाज़ के साथ शुरूअ़ करे :

سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَلِیِّ الْاَعْلَی الْوَهَّابِ،لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ
لَا شَرِیْکَ لَهٗ،لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَهُوَ حَیٌّ لَّایَمُوْتُ،وَهُوَعَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ،رَضِیْتُ بِاللّٰهِ
رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ نَبِیًّا،ثُمَّ یَقُوْلُ:اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ،عَالِمَ الْغَیْبِ وَ
الشَّهَادَةِ،رَبَّ کُلِّ شَیْءٍ وَّمَلِیْکَهٗ، اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ،اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ،وَمِنْ شَرِّ الشَّیْطٰنِ وَشِرْکِهٖ

"**तर्जमा :** मेरा रब पाक है जो बुलन्द, आला और बहुत अ़त़ा करने वाला है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वोह वाह़िद है, उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिए बादशाही है, उसी के लिए ह़म्द है, वोह ज़िन्दा करता है और मौत देता है और वोह ज़िन्दा है, उसे मौत नहीं, और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है। मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब होने, इस्लाम के दीन होने और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हूं। फिर इस त़रह़ अ़र्ज़ करे : ऐ ज़मीनों और आस्मानों के पैदा फ़रमाने वाले ! ऐ पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले ! ऐ हर शै के रब और इस के मालिक ! मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं अपने नफ़्स, शैत़ान और शिर्क के शर से तेरी पनाह त़लब करता हूं।"

फिर येह दुआ़ मांगे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ فِیْ دِیْنِیْ وَاَهْلِیْ وَمَالِیْ اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِیْ وَآمِنْ رَوْعَاتِیْ

"**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से मुआ़फ़ी और अपने दीन, एह्ल और माल की सलामती का सुवाल करता हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे उ़यूब को ढांप दे और मुझे मेरे ख़ौफ़ से अम्न अ़त़ा फ़रमा।"

जान लो ! दुआ़एं बहुत सी हैं लिहाज़ा उसी दुआ़ में मश्ग़ूल रहो जिस में अपने नफ़्स को भी ह़ाज़िर समझो पस सलाम है उस पर जो हिदायत की पैरवी करे।

www.dawateislami.net

बाब : 10 औरादो वज़ाइफ़ का बयान

जान लो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को अपने बन्दों के लिए नर्म बनाया ताकि वोह उसे ठिकाना बनाएं और उस से ज़ादे राह ह़ासिल करें, उस के मसाइब और हलाकतों से बचें और येह जान लें कि ज़िन्दगी उन को इस त़रह़ ले जा रही है जिस त़रह़ कश्ती अपने सुवार को ले जाती है पस लोग इस जहां में सफ़र में हैं इन की पेहली मन्ज़िल पिन्घोड़ा और आख़िरी मन्ज़िल क़ब्र है और वत़न जन्नत या दोज़ख़ है, उ़म्र सफ़र की मसाफ़त, उस के साल उस के मराह़िल और महीने फ़रसख़ हैं। उस के दिन मील, सांस क़दम, इ़बादत पूंजी और अवक़ात अस्ल सरमाया हैं, उस की ख़्वाहिशात व अग़राज़ डाकू हैं, उस का नफ़्अ़ सलामती के घर में बड़ी सल्त़नत और हमेशा की नेमत के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात के ज़रीए़ कामयाबी ह़ासिल करना है और इस का नुक़्सान نَعُوْذُ بِاللّٰه अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दूरी के साथ इ़ब्रतनाक सज़ाएं, त़ौक़ और जहन्नम के दरजात में दर्दनाक अ़ज़ाब है पस जो शख़्स अपनी उ़म्र में एक सांस भी ग़फ़्लत में गुज़ारे तो उसे इस क़दर ह़सरत होगी जिस की इन्तिहा नहीं और इस क़दर नुक़्सान होगा जिस का इख़्तिताम नहीं।

औराद की फ़ज़ीलत, तरतीब और इस के अह़काम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿۱﴾ اِنَّ لَکَ فِی النَّهَارِ سَبۡحًا طَوِیۡلًا ۝ وَاذۡکُرِ اسۡمَ رَبِّکَ وَتَبَتَّلۡ اِلَیۡهِ تَبۡتِیۡلًا ۝ (پ ۲۹، المزمل: ۷،۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक दिन में तो तुम को बहुत से काम हैं और अपने रब का नाम याद करो और सब से टूट कर उसी के हो रहो।

﴿۲﴾ وَاذۡکُرِ اسۡمَ رَبِّکَ بُکۡرَةً وَّاَصِیۡلًا ۝ وَمِنَ الَّیۡلِ فَاسۡجُدۡ لَهٗ وَسَبِّحۡهُ لَیۡلًا طَوِیۡلًا ۝ (پ ۲۹، الدھر: ۲۵-۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब का नाम सुब्ह़ो शाम याद करो और कुछ रात में उसे सजदा करो और बड़ी रात तक उस की पाकी बोलो।

अगर तू ऐसी सआ़दत का त़लबगार है जिस के बाद बदबख़्ती न हो तो अपने तमाम शबो रोज़ को इ़बादत व त़ाअ़त में गुज़ार क्यूंकि हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम, रसूले मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी इ़बादत का हुक्म दिया गया बावुजूद इस के कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अगलों और पिछलों के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिए, पस तू इ़बादत करने का ज़्यादा ह़क़दार है और तेरा मुआ़मला ख़त़रनाक है। कमाने और दुन्यावी मुआ़मलात में ब क़दरे ह़ाजत मश्ग़ूल हो और दीगर अवक़ात को आख़िरत के रास्ते में इस्तिमाल कर।

www.dawateislami.net

रात के क़ियाम को न छोड़ क्यूंकि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रात का क़ियाम करना ज़रूरी है अगर्चे बकरी का दूध दोहने की मिक़्दार हो।"

(الموسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب التهجد وقیام اللیل ،باب الحث علی قیام اللیل.....الخ، الحدیث: ۱۵، ج۱، ص۲٤۸)

तुझे नर्म बिस्तर तय्यार कर के नफ़्स को सुकून नहीं देना चाहिए बल्कि नमाज़ और ज़िक्र में मश्ग़ूल रेहना चाहिए यहां तक कि तुझे नींद आ जाए। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : "जब तुम में से कोई सोता है तो शैत़ान उस की पेशानी पर तीन गिरहें लगाता है, हर गिरह की जगह पर फूंक मार कर केहता है : "लम्बी रात है, सो जा।" पस अगर वोह बेदार हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे तो एक गिरह खुल जाती है, अगर वुज़ू करे तो दूसरी गिरह खुल जाती है फिर नमाज़ पढ़े तो तीसरी गिरह भी खुल जाती है पस वोह हश्शाश बश्शाश सुब्ह़ करता है, वरना सुब्ह़ के वक़्त उस पर सुस्ती त़ारी होती है।"

(صحیح البخاری ، کتاب التهجد ،باب عقد الشیطان .....الخ ،الحدیث۱۱٤۲،ص۸۹، علی ناصیة:بدله:علی قافیة رأس)

एक ह़दीसे मुबारका में है कि सरापाए रेह़मत, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स का ज़िक्र किया गया जो रात भर सुब्ह़ तक सोता है तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "शैत़ान ने उस के कान में पेशाब किया है।"

(صحیح مسلم ، کتاب صلاة المسافرین ،باب الحث علی صلاة اللیل وان قلت ،الحدیث۱۸۱۷،ص۸۰۰)

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : "वोह दो रक्अ़तें जो बन्दा रात के निस्फ़ आख़िर में पढ़ता है वोह उस के लिए दुन्याओ मा फ़ीहा (यानी दुन्या और जो कुछ उस में है) से बेहतर हैं अगर मेरी उम्मत पर मशक़्क़त न होती तो मैं येह उन पर लाज़िम कर देता।" (فردوس الاخبار للدیلمی ،باب اللام ،الحدیث ٥٤٤٤، ج۲، ص۲۲۷)

फ़ज़ीलत वाले दिन और रातें

दिनों का पीछे ज़िक्र हो चुका है, बहर ह़ाल फ़ज़ीलत वाली रातें पन्दरह हैं :

रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे की त़ाक़ रातें,

सतरह रमज़ानुल मुबारक की रात : येह वोह रात है जिस की सुब्ह़ यौमे फ़ुरक़ान है, जिस दिन में दो लश्कर बाहम मुक़ाबिल हुवे और वाक़िअ़ए बद्र पेश आया।

मुह़र्रम की पेहली और दसवीं रात, रजब की पेहली और पन्दरहवीं की रात और सत्ताईसवीं (यानी मेराज) की रात। इन रातों में नमाज़ पढ़ना अह़ादीस से साबित है।

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "इस रात में अ़मल करने वाले के लिए सौ साल की नेकियों का सवाब है। जो शख़्स इस में बारह रक्अ़त पढ़े, हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा और सूरए ق पढ़े, दो रक्अ़तों के बाद तशह्हुद पढ़े और आख़िर में सलाम फेरे फिर सौ मरतबा पढ़े : "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ" और सौ मरतबा इस्तिग़फ़ार पढ़े और सौ बार नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हदिय्यए दुरूदो सलाम पेश करे और फिर अपने दीन और उमूरे आख़िरत के लिए जो चाहे दुआ़ मांगे, सुब्ह़ रोज़ा रखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तमाम दुआ़ओं को क़बूल फ़रमाएगा अलबत्ता गुनाह के कामों की दुआ़ न हो।"

(شعب الایمان للبیهقی ،باب فی الصیام ،تخصیص شهر رجب بالذکر ،الحدیث ۳۸۱۲،ج۳،ص۳۷٤،بتغیرٍ قلیلٍ)

शाबान की पन्दरहवीं रात : इस में एक सौ रक्अ़त पढ़े हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद दस मरतबा सूरए इख़्लास पढ़े और बिल ख़ुसूस ईदैन की रातों को इ़बादत करना मुस्तह़ब है।

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे पाक है :

مَنْ اَحْيٰى لَيْلَتَيِ الْعِيْدَيْنِ لَمْ يَمُتْ قَلْبُهٗ يَوْمَ تَمُوْتُ الْقُلُوْبُ

तर्जमा : जिस ने ईदैन की रातों को ज़िन्दा रखा (यानी इ़बादत की) उस का दिल उस दिन मुर्दा न होगा जिस दिन (लोगों के) दिल मुर्दा हो जाएंगे।

(سنن ابن ماجة ،ابواب الصیام ،باب فیمن قام لیلتی العیدین ،الحدیث ۱۷۸۲،ص۲۵۸۳"من أحیی"بدله"من قام")

और माहे ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम की आख़िरी रात इ़बादत करने की बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत है।

हुक्मरानों और साहिबे सल्त़नत लोगों पर ह़िसाब की सख़्तियां

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बरोज़े क़ियामत लोग जम्अ़ होंगे, तो कहा जाएगा : "इस उम्मत के फ़ुक़रा और मसाकीन कहां हैं ?" तो वोह खड़े हो जाएंगे" पूछा जाएगा : "तुम ने क्या अ़मल किए ?" वोह अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ने हमें आज़माइश में मुब्तला किया तो हम ने सब्र किया और हुक्मरानी व सल्त़नत का वाली हमारे इ़लावा दूसरों को बना दिया।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "तुम ने सच कहा।" या इसी की मिस्ल इरशाद फ़रमाएगा (येह रावी का शक है) फिर वोह दूसरे लोगों से बहुत पेहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और ह़िसाब की सख़्तियां हुक्मरानों और साहिबे सल्त़नत लोगों पर बाक़ी रेह जाएंगी।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "उस दिन मोमिनीन कहां होंगे ?" हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उन के लिए नूर के मिम्बर रखे जाएंगे और उन पर बादलों से साया किया जाएगा।" (صحیح ابن حبان ،باب وصف الجنه واهلها ، الحدیث ۷۳۷٦، ج۹، ص ۲۵۳)

www.dawateislami.net

हिस्सा दुवुम

आ़दात

बाब 11 : खाने पीने के आदाब का बयान

बाब 12 : आदाबे निकाह़ का बयान

बाब 13 : कस्बे मआ़श के आदाब

बाब 14 : ह़लालो ह़राम का बयान

बाब 15 : आदाबे मह़ब्बत

बाब 16 : गोशा नशीनी का बयान

बाब 17 : सफ़र के आदाब

बाब 18 : समाअ़ और वज्द का बयान

बाब 19 : नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना

बाब 20 : आदाबे मईशत और अख़्लाक़े नबुव्वत का बयान

बाब : 11 खाने पीने के आदाब का बयान

ह़लाल खाना मिलने के बाद तेरा खाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **इबादत व इत़ाअ़त पर कुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत** से हो।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ط (پ ۱۸، المؤمنون: ۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ पैग़म्बरो ! पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छा काम करो।

जब तेरा खाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए है तो मुनासिब है कि पेहले हाथों को धोया जाए। सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلْوُضُوْءُ قَبْلَ الطَّعَامِ يَنْفِى الْفَقْرَ وَبَعْدَهٗ يَنْفِى اللَّمَمَ

तर्जमा : खाने से पेहले वुज़ू करना (यानी हाथ धोना) फ़क़्र को दूर करता है और बाद में धोना दीवानगी (यानी पागलपन) को दूर करता है।

(مسند الشهاب القضاعی ،باب الوضوء قبل الطعام.....الخ ،الحدیث ۳۱۰،ج۱،ص۲۰۵)

और खाने को दस्तरख़्वान पर रखना चाहिए क्यूंकि येह सुन्नत के ज़्यादा क़रीब है।

जब नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए खाना लाया जाता तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे ज़मीन पर रखते और बेशक येह तवाज़ोअ़ के ज़्यादा क़रीब है।

(الزهد للامام احمد بن حنبل ،الحدیث ۲۲،ص۲۸،مختصرًا)

हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है :

لَا اٰكُلُ مُتَّكِئًا،اِنَّمَا اَنَا عَبْدٌ،اٰكُلُ كَمَا يَاْكُلُ الْعَبْدُ،وَ اَشْرَبُ كَمَا يَشْرَبُ الْعَبْدُ

तर्जमा : मैं टेक लगा कर नहीं खाता, मैं बन्दा हूं, उसी त़रह़ खाता हूं जिस त़रह़ बन्दा खाता है और उसी त़रह़ पीता हूं जिस त़रह़ बन्दा पीता है।

(الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی ،الرقم۱۴۸۹۔عبد الحَکم بن عبد اللّٰہ القَسُملی بصری ،ج۷،ص۲۸)

(صحیح البخاری ،کتاب الأطعمة ،باب الأکل متکئاً ،الحدیث۵۳۹۸،ص۴۶۶)

कहा गया है कि चार बातें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद जारी हुईं : ऊंचे दस्तरख़्वान (यानी टेबल वग़ैरा), छलनियां (छलनी की जम्अ़, छानने का आला), उश्नान (साबुन की जगह इस्तिमाल की जाने वाली एक बूटी) और पेट भर कर खाना।

हम येह नहीं केहते कि ऊंचे दस्तरख़्वान पर खाना नाजाइज़ है क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद शुरूअ़ होने वाला हर काम बिदअ़त व मम्नूअ़ नहीं।

खाने वाले को चाहिए कि दस्तरख़्वान पर अच्छे त़रीक़े से बैठे और इसी पर बरक़रार रहे। नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़रीक़ए मुबारका इसी त़रह़ था और बाज़ अवक़ात खाने के लिए दो ज़ानू हो कर पाउं की पुश्त पर तशरीफ़ फ़रमा होते और कभी दायां घुटना खड़ा कर के बाएं पर तशरीफ़ फ़रमा होते थे।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب الأطعمة ،باب فی الأکل من أعلی الصفحة ،الحدیث۳۷۷۳،ص۱۵۰۱،مختصراً)

लेट कर और टेक लगा कर खाना पीना मकरूह है। अलबत्ता ! चने वग़ैरा खाए जा सकते हैं और कम खाने पीने का इरादा करे क्यूंकि इ़बादत के लिए खाने की निय्यत कम खाने से ही दुरुस्त हो सकती है।

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "आदमी अपने पेट से ज़्यादा बुरा बरतन नहीं भरता, बन्दे के लिए तो चन्द लुक़्मे काफ़ी हैं जो उस की पीठ को सीधा रखें, अगर ऐसा न कर सके तो तिहाई खाने के लिए, तिहाई पीने के लिए और तिहाई सांस के लिए हो।"

(جامع الترمذی ،ابواب الزهد ،باب ماجاء فی کراهیة کثرة الأکل ،الحدیث۲۳۸۰،ص۱۸۹۰)

और खाने की त़रफ़ उसी वक़्त बढ़े जब भूका हो क्यूंकि सेर होने के बावुजूद पेट भर कर खाना दिल को सख़्त कर देता है और शिकम सेर होने से पेहले खाने से हाथ रोक ले (जब रोटी आ जाए) तो लज़ीज़ खाने और सालन का इन्तिज़ार न करे क्यूंकि रोटी की इ़ज़्ज़त येही है कि इस के लिए सालन का इन्तिज़ार न किया जाए।

और खाना मिल कर खाना चाहिए अगर्चे घरवाले और बच्चे हों क्यूंकि बेहतरीन खाना वोह है जिस पर ज़्यादा हाथ जम्अ़ हों।

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत फ़रमाते हैं : "नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तन्हा खाना तनावुल न फ़रमाते थे।" (مکارم الاخلاق للخرائطی ،باب ماجاء فی اطعام الطعام.....الخ ،الحدیث۳۱۷،ج۱،ص۳۳۱)

आदाबे त़आ़म (यानी खाने के आदाब) का बयान

शुरूअ़ में بِسْمِ اللّٰه और आख़िर में اَلْحَمْدُ لِلّٰه पढ़े और हर लुक़्मे के साथ بِسْمِ اللّٰه केहना अच्छा है ताकि उसे खाने की ह़िर्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दे पस पेहले लुक़्मे के साथ بِسْمِ اللّٰه, दूसरे के साथ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ और तीसरे लुक़्मे के साथ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़े और बुलन्द आवाज़ से पढ़े ताकि दूसरों को भी याद आ जाए। दाएं हाथ से खाए, नमक से शुरूअ़ करे और इसी पर ख़त्म करे, लुक़्मा छोटा हो और इसे अच्छी त़रह़ चबाए, जब तक पेहले लुक़्मे को निगल न ले दूसरे लुक़्मे की त़रफ़ हाथ न बढ़ाए और खाने में ऐ़ब न निकाले क्यूंकि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कभी भी खाने में ऐ़ब न निकालते, अगर पसन्द आता तो खा लेते वरना छोड़ देते और अपने सामने

से खाते अलबत्ता फल इधर उधर से खा सकता है। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : كُلْ مِمَّا يَلِيْكَ "यानी अपने आगे से खाओ।"

(صحيح البخارى ،كتاب الأطعمة ،باب الأكل مما يليه ،الحديث٥٣٧٧،ص٤٦٤)

फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हाथ मुबारक फल पर इधर उधर घूमने लगा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस बारे में पूछा गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ هُوَ نَوْعًا وَّاحِدًا "यानी येह एक क़िस्म का खाना नहीं।"

(جامع الترمذى ،كتاب الأطعمة ،باب ماجاء فى التسمية فى الطعام ،الحديث١٨٤٨،ص١٨٣٩،مفهوماً)

और प्याले के गिर्द से और खाने के दरमियान से न खाए बल्कि रोटी को कनारों से खाए छुरी के साथ रोटी या गोश्त न काटे इस से मन्अ़ किया गया है।

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنْهَشُوْا نَهْشًا "**तर्जमा :** गोश्त को दांतों से नोच कर खाओ।"

(جامع الترمذى ،كتاب الأطعمة ،باب ماجاء [أنه قال]: انهشوا اللحم نهشا ،الحديث١٨٣٥،ص١٨٣٨)

रोटी पर प्याला या कोई और चीज़ न रखे मगर जिस चीज़ के साथ रोटी खा रहा है (उसे रख सकता है जैसे अचार वग़ैरा)।

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ज़्ज़त निशान है :

اَكْرِمُوا الْخُبْزَ فَاِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى اَنْزَلَهٗ مِنْ بَرَكَاتِ السَّمَاءِ

तर्जमा : रोटी की इ़ज़्ज़त करो क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे आस्मानी बरकात से उतारा है।

(الاصابة فى تمييز الصحابة ،حرف الزاى المنقوطة ،الرقم٢٩٥٦ـزيد ابو عبد الله ،ج٢،ص٥١٦)

और रोटी के साथ हाथों को न पोंछे। नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम में से किसी का लुक़्मा गिर जाए तो वोह उसे उठा ले, अगर उस के साथ कुछ लगा हुवा हो तो उसे दूर कर दे उसे शैत़ान के लिए न छोड़े।"

(صحيح مسلم ،كتاب الأشربة ،باب استحباب لعق الأصابع .....الخ ،الحديث٥٣٠١،ص١٠٤٠)

और उंगलियों को चाट लेना चाहिए। गर्म खाने में फूंक न मारे कि इस से मन्अ़ किया गया है। खजूरें त़ाक़ अ़दद में खाए और एक ही प्लेट में खजूरें और गुठलियां जम्अ़ न करे।

पीने के आदाब में से येह है कि गिलास को दाएं हाथ में पकड़े, بِسْمِ الله पढ़े, छोटे छोटे घूंट ले, चूस कर पिए और बड़े घूंट न भरे कि इस से जिगर की बीमारी पैदा होती है। और पीने के बाद

येह पढ़े : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ جَعَلَهٗ عَذْبًا فُرَاتًا بِرَحْمَتِهٖ وَلَمْ یَجْعَلْهُ مِلْحًا اُجَاجًا بِذُنُوْبِنَا "तर्जमा : तमाम तारीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए हैं जिस ने अपनी रेह़मत से इसे मीठा, प्यास बुझाने वाला बनाया और हमारे गुनाहों के सबब खारा और कड़वा नहीं बनाया।"

जो चीज़ भी लोगों पर फेरी जाए तो सीधे हाथ से इब्तिदा की जाए और पानी को तीन सांसों में पिये, खाने पीने के शुरूअ़ और आख़िर में اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे जब खाने से फ़ारिग़ हो जाए तो खाने के टुकड़ों को चुनना मुस्तह़ब है और (दांतों का) ख़िलाल करे और कहा गया है कि जो प्याले को चाटे और धो कर उस का पानी पी ले तो उसे एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है फिर पढ़े :

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ وَتَنْزِلُ الْبَرَكَاتُ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ قُوَّةً عَلٰی مَعْصِیَتِکَ

"तर्जमा : तमाम तारीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए हैं जिस की नेमत से नेकियां मुकम्मल होती और बरकतें उतरती हैं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस को अपनी ना फ़रमानी के लिए कुव्वत का बाइस न बना।"

फिर सूरए इख़्लास और सूरए क़ुरैश की तिलावत करे, जब तक दस्तरख़्वान न उठाया जाए उस वक़्त तक न उठे, अगर किसी दूसरे के हां खाना खाए तो उस के लिए यूं दुआ़ मांगे : اَكَلَ طَعَامَكُمُ الْاَبْرَارُ وَ اَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُوْنَ وَصَلَّتْ عَلَیْكُمُ الْمَلَائِكَةُ "तर्जमा : तुम्हारा खाना नेक लोग खाएं, तुम्हारे पास रोज़ेदार इफ़्तार किया करें और फ़रिश्ते तुम्हारे लिए रेह़मत की दुआ़ करते रहें।"

और (खाने के बाद) येह दुआ़ पढ़ना मुस्तह़ब है :

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَآوَانَا سَیِّدُنَا وَمَوْلَانَا "तर्जमा : तमाम तारीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए हैं जिस ने हमें खिलाया, पिलाया, किफ़ायत दी और ठिकाना दिया, वोह हमारा सरदार व मालिक है। फिर दोनों हाथों को धो ले।"

इजतिमाई दावत के आदाब

जब इजतिमाई दावत में हो तो उस वक़्त तक खाना शुरूअ़ न करे जब तक वोह शख़्स जो उस से उ़म्र में बड़ा हो इब्तिदा न करे, उस वक़्त तक येह सब्र करे अलबत्ता ख़ुद इस की इत्तिबाअ़ की जाती हो तो फिर इब्तिदा करना ठीक है और अच्छी बातें करे, अपने दोस्त के साथ नर्मी का बरताव करे और किसी को क़सम न दे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "खाने की शान नहीं कि इस पर क़सम खाई जाए।" और खाने के लिए तीन बार केहने में ह़रज नहीं और जब कोई दूसरा शख़्स बतौ़रे इ़ज़्ज़त उस की त़रफ़ खाने का बरतन बढ़ाए तो उसे क़बूल कर ले। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक और ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا एक दावत में इकठ्ठे हुवे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने थाल उन के आगे कर दिया तो ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रुक गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "जब कोई तुम्हारी इ़ज़्ज़त करे तो उसे क़बूल करो, रद न करो क्यूंकि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़त करना है।"

www.dawateislami.net

चन्द अफ़राद थाल में एक ही बार हाथ धो लें तो भी कोई ह़रज नहीं और जहां तक मुमकिन हो तमाम लोगों का पानी थाल में जम्अ़ करना मुस्तह़ब है।

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

اِجْمَعُوْا وَضُوْءَ كُمْ جَمَعَ اللّٰهُ شَمْلَكُمْ "**तर्जमा :** अपने वुज़ू का पानी इकठ्ठा करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे बिखरे हुवे काम जम्अ़ फ़रमा देगा।"

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی المطاعم والمشارب ،فصل فی آداب الأکل والشرب ،الحدیث٥٨١٩،ج٥،ص٧١)

और बेहतर येही है कि साह़िबे दावत ख़ुद मेहमानों के हाथों पर पानी उंडेले और (पानी वाला) थाल दाईं त़रफ़ से फेरा जाए। वोह काम जिसे लोग ना पसन्द करते हैं उस के करने से बचना चाहिए मसलन खाने में उन की त़रफ़ देखना, बरतन में हाथ झाड़ना, क़िल्लते अकल (यानी कम खाने) को ज़ाहिर करने के लिए उन से पेहले खाना खाना छोड़ देना।

ह़ज़रते सय्यिदुना जाफ़र बिन मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि जब तुम दस्तरख़्वान पर अपने भाइयों के साथ बैठो तो ज़्यादा देर बैठो क्यूंकि येह साअ़तें तुम्हारी उ़म्र में शुमार नहीं होतीं।"

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है :

لَا تَزَالُ الْمَلَائِكَةُ تُصَلِّيْ عَلٰى اَحَدِكُمْ مَا دَامَتْ مَائِدَتُهٗ مَوْضُوْعَةً بَيْنَ يَدَيْهِ حَتّٰى تُرْفَعَ

तर्जमा : फ़रिश्ते तुम में से हर एक के लिए रेह़मत की दुआ़ मांगते रेहते हैं जब तक उस का दस्तरख़्वान उस के सामने हो यहां तक कि उसे उठा लिया जाए।

(المعجم الاوسط ،الحدیث٤٧٢٩،ج٣،ص٣٢٤، بدون" بین یدیه حتی ترفع")

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "बन्दा जो कुछ अपने ऊपर, अपने मां बाप पर और दूसरों पर ख़र्च करता है उस का बरोज़े क़ियामत ह़िसाब लिया जाएगा। अलबत्ता जो कुछ वोह अपने भाइयों की दावत पर ख़र्च करता है (उस का ह़िसाब न होगा) और येह उस के लिए जहन्नम की आग से आड़ बन जाएगा।"

अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि "खाने के एक साअ़ पर अपने भाइयों को जम्अ़ करना मुझे ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्द है। और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इकठ्ठे हो कर क़ुरआने मजीद पढ़ते और कुछ न कुछ खा कर अलग होते थे।"

www.dawateislami.net

ह़दीसे मुबारक में है : बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे से फ़रमाएगा : "ऐ इब्ने आदम ! मैं भूका था तू ने मुझे खाना नहीं खिलाया।" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मैं तुझे कैसे खिलाता ह़ालांकि तू तो तमाम जहानों को पालने वाला है।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "तेरा मुसलमान भाई भूका था तू ने उसे खाना नहीं खिलाया, अगर तू उसे खिलाता तो गोया मुझे खिलाता।"

(صحیح مسلم ،کتاب البر ،باب فضل عیادة المریض ،الحدیث٦٥٥٦،ص١١٢٨،مفهوماً)

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जन्नत में ऐसे बालाख़ाने (यानी कमरे) हैं जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से दिखाई देता है। उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों के लिए तय्यार कर रखा है जो नर्मी से गुफ़्तगू करते, खाना खिलाते और रात को उस वक़्त नमाज़ पढ़ते हैं जब लोग सोए होते हैं।"

(السنن الکبری للبیهقی ،کتاب الصیام ،باب من لم یر بسرد الصیام بأسا.....الخ ،الحدیث٨٤٧٩،ج٤،ص٤٩٥)

बन्दे को चाहिए कि उस दावत में न जाए जिस में उसे नहीं बुलाया गया। ह़दीसे मुबारक में है :

اَنَّ مَنْ مَّشٰی اِلَی الطَّعَامِ لَمْ یُدْعَ اِلَیْهِ مَشٰی فَاسِقًا،وَّ اَکَلَ حَرَامًا

तर्जमा : जो शख़्स ऐसी दावत में गया जहां उसे नहीं बुलाया गया था वोह फ़ासिक़ बन कर गया और उस ने ह़राम खाया।

(فردوس الاخبار للدیلمی ،باب المیم ،الحدیث٦١١٧،ج٢،ص٢٨٧)

अलबत्ता ! जब उसे मालूम हो कि साह़िबे दावत उस की आमद पर ख़ुश होगा तो जा सकता है।

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हैसम बिन तैहान और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के घर का इरादा किया और येह तीनों ह़ज़रात भूक से थे।"

(جامع الترمذی،ابواب الزهد باب ماجاء فی معیشة اصحاب النبی ﷺ الحدیث: ٢٣٦٩،ص١٨٨٩، مفهوماً)

अगर वोह जाए और साह़िबे ख़ाना घर पर न हो और इसे मालूम हो कि वोह उस के खाने पर ख़ुश होगा तो आगे बढ़ कर खाना खा ले। और खाने के आदाब में से येह भी है कि वोह अपने भाई से किसी मख़्सूस चीज़ का मुत़ालबा न करे क्यूंकि हो सकता है उस चीज़ का ह़ाज़िर करना उस पर मुश्किल हो अलबत्ता अगर उसे यक़ीन हो (कि ब आसानी मिल जाएगी) तो ह़रज नहीं। अगर वोह दो

खानों में से एक का इख़्तियार दे तो उसे इख़्तियार करे जो उसे पसन्दीदा हो और मेहमानों से येह बात केहने में भी ह़रज नहीं कि जो चाहो पसन्द करो क्यूंकि इस में बहुत ज़्यादा सवाब है।

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो शख़्स अपने भाई की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ उसे लज़्ज़त पहुंचाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिए दस लाख नेकियां लिख देता है, उस के दस लाख गुनाह मिटा देता है और उस के दस लाख दरजात बुलन्द फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तीन जन्नतों जन्नतुल फ़िरदौस, जन्नते अ़दन और जन्नते ख़ुल्द से खिलाएगा।"

मेहमान से येह न कहे कि क्या मैं आप के लिए खाना पेश करूं ? बल्कि उसे चाहिए कि उस के सामने खाना रख दे अगर वोह खाए तो ठीक वरना उठा लिया जाए, इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है।

ज़ियाफ़त (यानी मेहमान नवाज़ी) के आदाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "मेहमान के लिए तकल्लुफ़ न करो क्यूंकि इस त़रह़ तुम उस से नफ़रत करने लगोगे और जो मेहमान से नफ़रत करता है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बुग़्ज़ करता है और जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बुग़्ज़ करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ना पसन्द करता है।"

(البحر الزخار بمسند البزار، مسند سلمان الفارسی، الحدیث:٢٥١٤،ج٦، ص٤٨٢، مختصراً)

फ़क़ीर व ग़नी के लिए दावत क़बूल करना सुन्नत है। बाज़ आस्मानी किताबों में मज़्कूर है कि एक मील चल कर मरीज़ की इयादत करो, दो मील चल कर जनाज़े में शरीक हो और तीन मील चल कर दावत क़बूल करो।

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَوْ دُعِیْتُ اِلٰی کُرَاعٍ لَاَجَبْتُ "**तर्जमा :** अगर मुझे (कराउ़ल ग़मीम में भी) बकरी के पाए की दावत दी जाए तो मैं क़बूल करूंगा।" (صحیح البخاری، کتاب الھبۃ، باب القلیل من الھبۃ، الحدیث٢٥٦٨، ص٢٠٢)

कराउ़ एक जगह का नाम है जो मदीने से चन्द मील के फ़ासिले पर है। जब नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم माहे रमज़ान में उस जगह की त़रफ़ सफ़र फ़रमाते तो रोज़ा न रखते, और दौराने सफ़र नमाज़ में क़स्र किया करते।"

अगर नफ़्ली रोज़ा हो तो उसे इफ़्त़ार कर दे क्यूंकि मुसलमान के दिल को ख़ुश करना रोज़ा रखने से अफ़्ज़ल है। अगर खाने, जगह या बिछोने के बारे में शुबा हो या दावत देने वाला फ़ासिक़,

www.dawateislami.net

ज़ालिम या बिदअ़ती हो, या दावत के ज़रीए़ फ़ख़्र व मुबाहात का त़लबगार हो तो दावत क़बूल करना मन्अ़ है नीज़ क़बूलिय्यते दावत का मक़्सद इत़ाअ़त हो न कि पेट की ख़्वाहिश को पूरा करना और मेज़बान के घर से उस की इजाज़त के बिग़ैर न निकले।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हम नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में खड़े खड़े और चलते फिरते खाते पीते थे।[1]

(جامع الترمذی ،ابواب الأشربة ،باب ماجاء فی الرخصة فی الشرب قائما ،ا لحدیث ۱۸۸۰،ص۱۸۴۲)

एह्ले मय्यित की त़रफ़ खाना ले जाना मुस्तह़ब है। इस बात को समझ लो येह तुम्हारे लिए मुफ़ीद है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ، وَاِلَیْہِ الْمَرْجِعُ وَالْمَاٰبُ

ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से माल का सुवाल किया आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अ़त़ा फ़रमाया, मैं ने दोबारा सुवाल किया आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर अ़त़ा फ़रमाया, मैं ने तीसरी बार सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर मुझे अ़त़ा फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : "बेशक येह माल सर सब्ज़ और मीठा है पस जिस ने इसे अच्छी निय्यत से लिया तो उसे इस में बरकत दी जाएगी और जिस ने दिल के ह़िर्स व लालच से ह़ासिल किया उसे इस में बरकत नहीं दी जाएगी और वोह ऐसा है कि खा कर भी सेर नहीं होता, और (आगाह रहो कि) **ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से अफ़्ज़ल है।**" (صحیح البخاری،کتاب الرقاق،باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم ھذاالمال.....الخ،الحدیث:۶۴۴۱،ص۵۴۱)

1....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के खड़े खड़े खाने पीने के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीस की वज़ाह़त **मिरआतुल मनाजीह़** में यूं बयान फ़रमाते हैं : "खड़े हो कर पीना ज़रूरत के मौक़अ़ पर था या ज़मज़म या वुज़ू का बचा हुवा (पानी)। बाक़ी पानी बैठ कर पिए या खड़े हो कर पीना बयाने जवाज़ के लिए था, बैठ कर पीना बयाने इस्तिह़बाब के लिए। लिहाज़ा दोनों अ़मल दुरुस्त हैं।" (مرأة المناجیح شرح مشکوٰۃالمصابیح،ج۶،ص۷۶)

बाब : 12 आदाबे निकाह़ का बयान

क्या गोशा नशीनी से निकाह़ अफ़्ज़ल है ?[1]

निकाह़ की अफ़्ज़लिय्यत के बारे में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है यहां तक कि बाज़ उ़लमा ने इसे इ़बादत के लिए गोशा नशीनी से अफ़्ज़ल क़रार दिया है जबकि दीगर उ़लमा ने भी इस की अफ़्ज़लिय्यत का एतिराफ़ किया है लेकिन इ़बादत के लिए गोशा नशीनी को इस पर मुक़द्दम क़रार दिया है जब तक कि नफ़्स निकाह़ का मुश्ताक़ न हो और बाज़ उ़लमा ने कहा है कि हमारे ज़माने में इस को तर्क करना अफ़्ज़ल है क्यूंकि अक्सर कमाई दुरुस्त नहीं और औ़रतों के अख़्लाक़ भी मज़मूम हैं।

निकाह़ की तरग़ीब

निकाह़ की तरग़ीब पर मुन्दरिजए ज़ैल आयात दलालत करती हैं।

चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने रेह़मत निशान है :

﴿۱﴾ وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ

(پ۱۸، النور: ۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और निकाह़ कर दो अपनों में उन का जो बे निकाह़ हों और अपने लाइक़ बन्दों का।

﴿۲﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا۝

(پ۱۹، الفرقان: ۷٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब ! हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़गारों का पेश्वा बना।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मह़ब्बत निशान है :

اَلنِّكَاحُ سُنَّتِيْ فَمَنْ اَحَبَّ فِطْرَتِيْ فَلْيَسْتَنَّ بِسُنَّتِيْ

तर्जमा : निकाह़ मेरी सुन्नत है पस जो शख़्स मेरी फ़ित़रत (यानी इस्लाम) से मह़ब्बत करता है वोह मेरी सुन्नत को अपनाए।

(السنن الکبری للبیهقی، کتاب النکاح، باب الرغبة فی النکاح، الحدیث ۱۳٤٥۱، ج۷، ص۱۲٤)

1....हमारे उ़लमा के नज़दीक ग़लबए शहवत के वक़्त निकाह़ करना वाजिब और ह़ालते एतिदाल में सुन्नते मुअक्कदा है और येह नवाफ़िल में मश्ग़ूल होने से अफ़्ज़ल है। जैसा कि **फ़तावा शामी** में है : "सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ ग़लबए शहवत के वक़्त निकाह़ करना वाजिब है और ह़ालते एतिदाल में सुन्नते मुअक्कदा है जबकि बन्दा वत़ी, मह़र और नफ़क़ा (यानी ख़र्च वग़ैरा) पर क़ादिर हो और (रद्दुल मुह़तार के) गुज़श्ता सफ़ह़ात में हम बयान कर चुके हैं कि नवाफ़िल में मश्ग़ूल होने से निकाह़ करना अफ़्ज़ल है। और निकाह़ तर्क करने वाला गुनहगार है क्यूंकि सुन्नते मुअक्कदा का तर्क करना गुनाह है। और अगर निकाह़ से अपने आप को और औ़रत को ह़राम से बचाने की निय्यत और औलाद का इरादा हो तो निकाह़ करना अज्रो सवाब का मूजिब है। इसी त़रह़ सुन्नत पर अ़मल और हुक्मे इलाही बजा लाने की निय्यत हो तो अज्रो सवाब मिलेगा लेकिन अगर मह़ज़ शहवत पूरी करने और हुसूले लज़्ज़त की निय्यत हो तो कोई सवाब नहीं।" (رد المحتار مع الدر المختار، ج٤، ص۷۲تا۷٤)

www.dawateislami.net

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान निकाह़ से कनारा कशी इख़्तियार करने पर दलालत करता है : "दो सौ साल के बाद लोगों में से बेहतर वोह शख़्स होगा जो हल्की पीठ वाला हो (यानी) ऐसा शख़्स जिस के बीवी बच्चे न हों।"

(تاریخ بغداد،الرقم:٣٢٥٤، ابراهیم بن النضر بن مروان بن سوید العطار،ج٦،ص١٩٥)

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लोगों पर ऐसा ज़माना आएगा कि आदमी की हलाकत उस की बीवी, मां बाप और औलाद के बाइ़स होगी वोह उसे मुफ़्लिसी की आ़र दिलाएंगे और उसे ऐसे काम करना पड़ेंगे जो उस के बस से बाहर होंगे और वोह ऐसे रास्तों पर चल पड़ेगा जिन में उस का दीन चला जाएगा और वोह हलाक हो जाएगा।"

(الزهد الکبیر للبیهقی ،الحدیث٤٣٩،ص١٨٣، مفهوماً)

निकाह़ के फ़वाइद का बयान

निकाह़ के फ़वाइद बेशुमार हैं। इन में से नेक औलाद का होना, शहवत का ख़त्म होना, घर की देख भाल और क़बीले का बढ़ना भी है और इन के नान व नफ़क़ा का बन्दोबस्त कर के इन के साथ रेहने में मुजाहदे का सवाब ह़ासिल होता है। अगर बेटा नेक हो तो तुझे उस की दुआ़ से बरकत ह़ासिल होगी और अगर फ़ौत हो जाए तो (बरोज़े क़ियामत तेरा) शफ़ीअ़ होगा।

निकाह़ की आफ़ात

निकाह़ का नुक़्सान येह है कि इन्सान के लिए ह़लाल माल में से ख़र्च करना मुश्किल हो जाता है जबकि रिज़्क़े ह़लाल कमाना वाजिब है और इसी त़रह़ बीवी के हुक़ूक़ को पूरा करने में कोताही हो जाती है और इस के हुक़ूक़ ख़ावन्द पर लाज़िम हैं और बन्दे पर औ़रतों के साथ हुस्ने सुलूक और नर्मी का बरताव करना ज़रूरी है और इस बात पर क़वी लोग ही क़ादिर होते हैं, बड़ी मुसीबतों में से एक मुसीबत येह है कि बीवी और औलाद उसे हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और आख़िरत के रास्ते पर चलने से ग़ाफ़िल कर देते हैं और अक्सर निकाह़ करने के बाद इन्सान बख़ील हो जाता है और येह भी हलाक कर देने वाली चीज़ों में से है हम ने तुम्हें निकाह़ के फ़वाइद और मसाइब पर आगाह कर दिया और येह मुख़्तलिफ़ अश्ख़ास और ह़ालात के एतिबार से मुख़्तलिफ़ होते हैं पस अपने ह़ाल पर ग़ौर करो और अपने लिए उस बात को इख़्तियार करो जो तुम्हारे लिए राहे आख़िरत में बेहतर हो। وَاللّٰهُ اَعْلَم

अ़क़्दे निकाह़ की शराइत़[1]

(1).....वली की इजाज़त । अगर वली न हो तो बादशाह की इजाज़त होनी चाहिए । (2).....अगर औ़रत सय्यिबा (यानी बेवा या मुत़ल्लक़ा) बालिग़ा हो तो उस की रिज़ा का पाया जाना (3).....ऐसे दो गवाहों का ह़ाज़िर होना जिन की अ़दालत (नेक होना) ज़ाहिर हो और अगर उन का ह़ाल पोशीदा हो तब भी निकाह़ मुन्अ़क़िद हो जाता है और (4).....अ़क़्द के वक़्त ईजाब और इस के साथ ही क़बूल का पाया जाना, अ़क़्दे निकाह़ लफ़्ज़े निकाह़ या तज़वीज या जो इन के हम माना लफ़्ज़ के साथ हो, ख़्वाह किसी भी ज़बान में हो, दो मुकल्लफ़ शख़्सों के दरमियान हो और उन में कोई औ़रत न हो, चाहे वोह शख़्स ख़ावन्द और वली हों या उन दोनों के वकील हों ।

आदाबे निकाह़

अ़क़्दे निकाह़ के वक़्त औ़रत के वली को निकाह़ का पैग़ाम देना आदाबे निकाह़ में से है, न तो औ़रत इस वक़्त इ़द्दत में हो और न ही उस से पेहले किसी ने उसे मंगनी का पैग़ाम दिया हो क्यूंकि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मंगनी के पैग़ाम पर पैग़ाम देने से मन्अ़ फ़रमाया है ।

(صحیح البخاری ،کتاب النکاح ،باب لا یخطب علی خطبة اخیه حتی ینکح أو یدع،الحدیث٥١٤٢،ص٤٤٥)

निकाह़ के आदाब में से निकाह़ से पेहले ख़ुत़बे का होना है और ईजाबो क़बूल के साथ ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना का होना है । पस निकाह़ करवाने वाला कहे : بِسْمِ اللّٰهِ ،وَالْحَمْدُلِلّٰهِ،وَالصَّلَاةُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ(صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) "मैं ने तेरा निकाह़ कर दिया ।" शौहर भी इसी त़रह़ कहे फिर वोह कहे मैं ने इतने मह्र पर इस का निकाह़ क़बूल किया ।

और मर्द का ह़ाल औ़रत को बता देना मुस्तह़ब है क्यूंकि येह बाहमी मह़ब्बत के ज़्यादा क़रीब है । इसी त़रह़ निकाह़ से पेहले औ़रत को देखना मुस्तह़ब है । इसी त़रह़ आदाबे निकाह़ में से दो आ़दिल गवाहों के इलावा निकाह़ के इज़्हार के लिए नेक लोगों का जम्अ़ करना है और चाहिए कि वोह निकाह़ के साथ आंखों की ह़िफ़्ज़त, नेक औलाद की त़लब और उम्मत की कसरत की निय्यत करे ।

मन्कूहा के मुतअ़ल्लिक़ शराइत़

वोह लोन्डी न हो ।[2] बशर्ते कि मर्द आज़ाद औ़रत का मह्र अदा करने पर क़ादिर हो, रज़ाअ़त (यानी दूध) की वज्ह से ह़राम न हो, क्यूंकि रज़ाअ़त की वज्ह से वोह तमाम (उसूल व

1....**सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی लिखते हैं : "निकाह़ की चन्द शर्तें हैं : (1) आ़क़िल (2) बुलूग़ और (3) गवाह होना । "(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 7, स. 9) निकाह़ के तफ़्सीली मसाइल जानने के लिए **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 7** का मुत़ालआ़ फ़रमाएं ।

2....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "आज़ाद औ़रत निकाह़ में हो तो बांदी से निकाह़ जाइज़ नहीं और आज़ाद निकाह़ में न हो तो बांदी से निकाह़ जाइज़ है जैसा कि **फ़तावा हिन्दिया** और **दुर्रे मुख़्तार** में है कि "आज़ाद औ़रत निकाह़ में है और बांदी से निकाह़ किया सह़ीह़ न हुवा । (الفتاوی الهندیه،کتاب النکاح القسم السابع،ج١،ص٢٧٩) अगर हुर्रा निकाह़ में न हो तो बांदी से निकाह़ जाइज़ है अगर्चे इतनी इस्तित़ाअ़त है कि आज़ाद औ़रत से निकाह़ करे ।" (الدرالمختار،کتاب النکاح،ج٤،ص١٣٦)

www.dawateislami.net

फ़ुरूअ़) ह़राम हो जाते हैं जो नसब की वज्ह से ह़राम होते हैं और हुरमत पांच बार दूध पीने से साबित होती है इस से कम में हुरमत साबित नहीं होती।[1]

ख़ुश गवार ज़िन्दगी के आठ ख़साइल

(1) दीनदारी (2) हुस्ने अख़्लाक़ (3) हुस्ने सूरत (4) मह्र का कम होना (5) बच्चा पैदा करने वाली होना (6) कंवारी होना (7) अच्छे ह़सब व नसब वाली होना और (8) ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदार न हो। येह वोह तमाम चीज़ें हैं जिन पर अह़ादीस व अक़्वाल दलालत करते हैं।

ख़ावन्द और बीवी की ज़िम्मेदारियां

ख़ावन्द पर ह़क़ है कि वलीमा करे। हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ "तर्जमा : वलीमा करो अगर्चे एक बकरी ही हो।" (صحيح البخارى، كتاب النكاح، باب الصفرة للمتزوج، الحديث٥١٥٣، ص٤٤٦)

औ़रतों से हुस्ने मुआ़शरत और रिआ़यत, ग़ैरत में हुस्ने सियासत, नफ़क़ा, तालीम, बारी तक़्सीम करना, ना फ़रमानी की सूरत में अदब सिखाना, और जिमाअ़ करना है और अ़ज़ल करना (यानी जिमाअ़ करते वक़्त जब मनी निकलने लगे तो बीवी से अ़लाह़दा हो कर माद्दए मन्विया को बाहर ख़ारिज कर देना) मकरूह है।

और जब बच्चा पैदा हो तो उस के कान में अज़ान देना। इसी त़रह़ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है। (سنن ابى داؤد، كتاب الادب، باب فى المولود يؤذن فى أذنه، الحديث٥١٠٥، ص١٥٩٧)

और उस का अच्छा सा नाम रखना। नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हें बरोज़े क़ियामत तुम्हारे नामों से पुकारा जाएगा इस लिए अपने अच्छे नाम रखो।" (سنن ابى داؤد، كتاب الادب، باب فى تغيير الاسماء، الحديث٤٩٤٨، ص١٥٨٥)

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक** अढ़ाई साल के अन्दर थोड़ा या ज़्यादा दूध पीने से हुरमत साबित हो जाती है। जैसा कि **अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "बच्चे को दो बरस तक दूध पिलाया जाए इस से ज़्यादा की इजाज़त नहीं। दूध पीने वाला लड़का हो या लड़की और येह जो बाज़ अ़वाम में मश्हूर है कि लड़की को दो बरस तक और लड़के को ढाई बरस तक पिला सकते हैं येह सह़ीह़ नहीं येह हुक्म दूध पिलाने का है और निकाह़ ह़राम होने के लिए ढाई बरस का ज़माना है यानी दो बरस के बाद अगर्चे दूध पिलाना ह़राम है मगर ढाई बरस के अन्दर अगर दूध पिला देगी, हुरमते निकाह़ साबित हो जाएगी और इस के बाद अगर पिया तो हुरमते निकाह़ नहीं अगर्चे पिलाना जाइज़ नहीं।" (الدرالمختار، كتاب النكاح، باب الرضاع، ج٤، ص٣٨٧ تا٣٨٩، ملخصا)

और जिस का नाम ना पसन्दीदा हो तो उसे तब्दील करना मुस्तह़ब है। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा ही किया और इरशाद फ़रमाया : لَا تَجْمَعُوْا بَيْنَ اِسْمِيْ وَكُنْيَتِيْ "तर्जमा : मेरे नाम और कुन्यत को जम्अ़ न करो।" (المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند ابی هريرة ،الحديث٩٦٠٤،ج٣،ص٤٢٨)

और खजूर या किसी मीठी चीज़ के साथ बच्चे को घुट्टी देना मुस्तह़ब है। औ़रत पर हर ह़ालत में मर्द की इत़ाअ़त करना और उस के अह़वाल और अमवाल की निगरानी करना नीज़ शौहर के रिश्तेदारों से अच्छा बरताव करना लाज़िम है।

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर शख़्स पर मुझ से क़ब्ल जन्नत में दाख़िल होना ह़राम किया है, लेकिन मैं ने अपनी दाईं जानिब देखा कि एक औ़रत मुझ से पेहले जन्नत में जा रही है। मैं ने इस्तिफ़्सार किया येह मुझ से पेहले (जन्नत के) दरवाज़े तक कैसे पहुंची ? तो मुझ से कहा गया : ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह औ़रत ख़ूब सूरत थी और इस के पास यतीम बच्चियां थीं इस ने इन पर सब्र किया यहां तक कि इन का मुआ़मला जहां तक पहुंचना था वहां तक पहुंचा, पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस के उस अ़मल को पसन्द फ़रमाया।"

(مكارم الاخلاق للخرائطی ،باب العطف علی البنات.....الخ ،الحديث٦٠٥،ج٢،ص١٤٥)

मरवी है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "वोह औ़रत जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर और आख़िरत पर ईमान रखती है उस के लिए जाइज़ नहीं कि वोह किसी मय्यित पर तीन दिन से ज़्यादा सोग मनाए अलबत्ता अपने ख़ावन्द पर चार महीने दस दिन सोग मनाए।" औ़रत के लिए अपनी इद्दत के इख़्तिताम तक ख़ावन्द के घर में ठहरे रेहना लाज़िम है। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ

(سنن النسائی ،كتاب الطلاق ،باب عدة المتوفی عنها زوجها ،الحديث٣٥٣٤،ص٢٣١٨)

बाब : 13 कस्बे मआ़श के आदाब

इस में चन्द फ़ुसूल हैं

कस्बे मआ़श की फ़ज़ीलत के बारे में ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

مِنَ الذُّنُوْبِ ذُنُوْبٌ لَا يُكَفِّرُهَا اِلَّا الْهَمُّ فِىْ طَلَبِ الْمَعِيْشَةِ

तर्जमा : गुनाहों में से बाज़ गुनाह ऐसे हैं जिन्हें त़लबे मआ़श का इरादा ही मिटा सकता है।

(المعجم الاوسط ،الحديث ١٠٢،ج١،ص٤٢،بتغيرٍ)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

اَلتَّاجِرُ الصُّدُوْقُ يُحْشَرُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ

तर्जमा : सच्चा ताजिर बरोज़े क़ियामत सिद्दीक़ीन और शुहदा के साथ उठाया जाएगा।

(جامع الترمذى ،ابواب البيوع ،باب ماجاء فى التجار .....الخ ،الحديث١٢٠٩،ص١٧٧٢،بدون:يحشر يوم القيامة)

ह़दीसे मुबारक में है : اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُؤْمِنَ الْمُحْتَرِفَ **"तर्जमा :** बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पेशा इख़्तियार करने वाले मोमिन को पसन्द करता है।" (المعجم الاوسط ،الحديث٨٩٣٤،ج٦،ص٣٢٧)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "मुझे येह वह़ी नहीं आई कि तुम माल जम्अ़ कर के ताजिर बन जाओ बल्कि मुझे येह वह़ी की गई :"

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۝ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ۝ (پ١٤، الحجر:٩٨،٩٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अपने रब को सराहते हुवे उस की पाकी बोलो और सजदे वालों में हो और मरते दम तक अपने रब की इ़बादत में रहो।

(حلية الاولياء، ابومسلم خولانى ،الحديث١٧٧٨،ج٢،ص١٥٣)

जान लो ! सुवाल करना कराहत से ख़ाली नहीं, इस लिए रोज़ी कमाना अफ़्ज़ल है। अलबत्ता ! वोह शख़्स जिस से मुसलमानों के मसालेह़ मुतअ़ल्लिक़ हों तो उस को कस्ब छोड़ कर मुसलमानों के मसालेह़ को क़ाइम करना बेहतर है और इस की मसालेह़ के माल और दीगर अमवाल से किफ़ायत की जाएगी इसी लिए सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को ख़लीफ़ा बनने के बाद तिजारत छोड़ने का मश्वरा दिया पस आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने तिजारत छोड़ दी। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की मसालेह़ के माल से किफ़ायत की जाती थी और आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मख़्लूक़ के उमूर को क़ाइम फ़रमाते थे।

मुआ़मलात की सेह्हत की शराइत़

बैअ़ के तीन अरकान हैं : (1) आ़क़िद (यानी अ़क़्द करने वाला) (2) माक़ूद अ़लैह (यानी जिस चीज़ पर अ़क़्द किया जाए) (3) अल्फ़ाज़ (जो अ़क़्द में इस्तिमाल किए जाएं)।

अ़क़्द करने वाले को चाहिए कि वोह इन चार क़िस्म के लोगों से सौदा न करे : (1) बच्चा (2) पागल (3) ग़ुलाम और (4) अन्धा। और काफ़िर के साथ बैअ़ करना जाइज़ है लेकिन क़ुरआने पाक और मुसलमान ग़ुलाम उसे नहीं बेचा जाएगा और अगर ह़र्बी हो तो उसे अस्लह़ा भी फ़रोख़्त नहीं किया जाएगा। और वोह जानवर जो खाए नहीं जाते उन की चरबी और शराब की ख़रीदो फ़रोख़्त नीज़ हाथी के दांतों की ख़रीदो फ़रोख़्त जाइज़ नहीं।[1] और वोह तेल जो नजासत के गिरने से नापाक हो जाए उस को बेचना जाइज़ है। कुत्ते, कीड़े मकोड़ों और सांप की ख़रीदो फ़रोख़्त जाइज़ नहीं और तस्वीरों वाली चादरें बेचना और इस्तिमाल करना जाइज़ है।

तस्वीरों वाली चादरों के बारे में शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से इरशाद फ़रमाया : اِتَّخِذِیْ مِنْهَا نَمَارِقَ **"तर्जमा :** इन के बिछोने बना लो।" (صحیح البخاری، کتاب المظالم، باب هل تُكْسَرُ الدِّنانُ.....الخ، الحدیث ۲۴۷۹، ص۱۹۵، بتغیرٍ)

और इन को लटकाना जाइज़ नहीं, अलबत्ता ! इन्हें बिछा कर इस्तिमाल करना जाइज़ है। जिस चीज़ का सौदा किया जा रहा हो वोह बेचने वाले की मिल्किय्यत में हो और इसे सिपुर्द करने पर क़ादिर हो, देखी हुई हो और ईजाबो क़बूल के लफ़्ज़ इस्तिमाल करने चाहिएं। ह़क़ीर चीज़ों और खाई जाने वाली चीज़ों (जैसे फल वग़ैरा) में एक येह क़ौल है जिसे इब्ने सरीज ने ज़िक्र किया है कि इन (मामूली चीज़ों) में उ़मूमी ह़ाजत होने की वज्ह से हाथों हाथ लेन देन ही काफ़ी है (ईजाबो क़बूल के अल्फ़ाज़ की ज़रूरत नहीं) जहां तक सूद का तअ़ल्लुक़ है तो इस में बहुत ज़्यादा वईदें हैं इस लिए इस से बचना चाहिए। बैए़ सलम जाइज़ है। इसी त़रह़ इजारा भी जाइज़ है और उन की शराइत़ क़ुतुबे फ़िक़्ह में मौजूद हैं वहां से मुत़ालआ़ कर लेना चाहिए।

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** "हाथी दांत और हड्डी को बेच सकते हैं और इस की चीज़ें बनी हुई इस्तिमाल कर सकते हैं।" (رد المحتار، کتاب البیوع، مطلب فی التداوی.....الخ، ج۷، ص۲۶۷)

मुआ़मलात में अ़द्ल करने और ज़ुल्म से बचने का बयान

जानना चाहिए ! बाज़ अवक़ात मुफ़्ती किसी मुआ़मले के सहीह़ होने का फ़तवा दे देता है लेकिन वोह ज़ुल्म पर मुश्तमिल होता है जिस की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़मला करने वाले से नाराज़ हो जाता है।

इन में से एक क़िस्म ज़ख़ीरा अन्दोज़ी है और येह खाने की अश्या में होती है और ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करने वाला लानती है और इस के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी सख़्त वईदें हैं उन में से उ़यूब को छुपाना भी है, बेशक ऐसा करना ख़ियानत है। उन में से तराज़ू का सहीह़ रखना भी है। क्यूंकि तराज़ू दुरुस्त न होने की वज्ह से बहुत ज़्यादा ग़लतियां होती हैं और इसी के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ0 (پ۳۰، المطففین:۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कम तोलने वालों की ख़राबी है।

पस तल्बीस की तमाम अक़्साम ह़राम हैं चुनान्चे, ऐसी चीज़ों की त़रफ़ बढ़ना जाइज़ नहीं जिन के ख़रीदने का इरादा न हो और ख़रीदने वाले की तरग़ीब के लिए बेचने वाले से ज़्यादा क़ीमत के साथ त़लब करे और शहरी का देहाती से ख़रीदना भी मम्नूअ़ है, अगर उस ने अपने दोस्त या उस के बेटे से छान बीन के बिग़ैर कोई चीज़ ख़रीदी तो उस के लिए ख़रीदने वाले से ज़िक्र करना ज़रूरी है यहां तक कि वोह उस के ख़रीदने पर भरोसा न करे। उसे चाहिए कि वोह एह़सान करे और वोह येह कि वोह दूसरे से इतनी ज़्यादा क़ीमत वुसूल न करे जो आ़म त़ौर पर न ली जाती हो, और ख़रीदो फ़रोख़्त में नर्मी बरतना मुस्तह़ब है।

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

رَحِمَ اللّٰهُ اِمْرَأً سَهَّلَ الْبَيْعَ، سَهَّلَ الشِّرَاءَ، سَهَّلَ الْقَضَاءَ، سَهَّلَ الْاِقْتِضَاءَ

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रेह़्म फ़रमाए जो ख़रीदो फ़रोख़्त और लेन देन में आसानी करे।

(مسند ابی یعلی الموصلی، حدیث رجل غیر مسمی عن النبی ﷺ، الحدیث ۶۷۹۵، ج۶، ص۵۰)

पस जो शख़्स नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस दुआ़ को ग़नीमत जाने उस के मुआ़मले में दुन्याओ आख़िरत का नफ़्अ़ है। चुनान्चे, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

مَنْ اَنْظَرَ مُعْسِراً اَوْتَرَكَهٗ حَاسَبَهُ اللّٰهُ حِسَابًا يَّسِيْرًا

तर्जमा : जो किसी तंगदस्त को मोहलत दे या बिल्कुल मुआ़फ़ कर दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का आसान ह़िसाब लेगा।

(صحیح مسلم، کتاب الزھد، باب حدیث جابر.....الخ، الحدیث ۷۵۱۲، ص۱۱۹۷، مختصراً)

अगर कोई सौदा तोड़ना चाहे तो उस की बात मान लेना भी एह़सान है।

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है :

مَنْ اَقَالَ نَادِماً صَفْقَتَهٗ اَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَثْرَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

तर्जमा : जो शख़्स नादिम होने वाले का सौदा वापस ले ले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की लग़ज़िशों को मुआ़फ़ फ़रमा देगा।

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ، كتاب البيوع ،باب الاقالة ،الحديث٥٠٠٧،ج٧،ص٢٤٣،بدون:صفقته)

ऐसा नहीं होना चाहिए कि तिजारत तुझे इतना मश्ग़ूल कर दे कि तू सिर्फ़ दुन्या में ही नफ़्अ़ का त़ालिब हो और आख़िरत के अस्ल माल को ज़ाएअ़ कर दे। इस सूरत में तू वाज़ेह़ ख़सारा पाने वाला होगा तिजारत करने में निय्यत, ह़लाल कमाने, सुवाल से बचने और माल ह़ासिल करने की होनी चाहिए ताकि तू इस के ज़रीए़ त़लबे आख़िरत के लिए फ़राग़त पा सके।

जानना चाहिए ! अस्लाफ़ رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰى इबादात और फ़र्ज़े किफ़ाया मसलन मय्यित को ग़ुस्ल देना, दफ़्न करना, अज़ान और नमाज़े तरावीह़ पर उजरत लेना ना पसन्द समझते थे। अगर वोह उस त़रीक़े पर तिजारत करे जो हम ने ज़िक्र किया तो दुन्या का बाज़ार उसे बाज़ारे आख़िरत यानी मसाजिद से ग़ाफ़िल नहीं करेगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ

(پ١٨،النور:٣٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीदो फ़रोख़्त अल्लाह की याद से।

पस आदमी सुब्ह़ से चाश्त तक मस्जिद में रहे फिर नमाज़ के अवक़ात में मस्जिद में जाए। पस जब भी अज़ान की आवाज़ सुने तो मुआ़मलाते दुन्यवी को छोड़ दे। "बाज़ बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ जब अज़ान सुनते और उन्हों ने हथोड़ा उठाया हुवा होता हो उसे वहीं पर छोड़ देते और न मारते।" और बाज़ार में भी दिल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता रहे इस के मुतअ़ल्लिक़ बहुत से फ़ज़ाइल हैं। चुनान्चे, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : "जो बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त येह कलिमात पढ़े तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिए दस लाख नेकियां लिख देता है : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ "**तर्जमा :** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई माबूद नहीं, वोह एक है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए ह़म्द है, वोह ज़िन्दा रखता और मारता है, वोह ख़ुद ज़िन्दा है उस के लिए मौत नहीं, तमाम भलाई उसी के इख़्तियार में है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।"

(جامع الترمذی ، كتاب الدعوات ،باب مايقول اذا دخل السوق، الحديث٣٤٢٨،ص٢٠٠٥)

इन्सान को चाहिए कि अपने मुआ़मलात का ख़याल रखे यहां तक कि वोह कोई ऐसा काम न करे कि जिस से बरोज़े क़ियामत छुटकारा मुश्किल हो क्यूंकि अ़न क़रीब उस से उस के मुआ़मलात का मुह़ासबा होगा और इस से उस की निय्यत और लोगों के ह़ुक़ूक़ का मुत़ालबा किया जाएगा कि उस ने उस का ख़याल रखा या ज़ाएअ़ कर दिया। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ

बाब : 14 ह़लालो ह़राम का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : طَلَبُ الْحَلَالِ فَرِیْضَۃٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ "**तर्जमा :** ह़लाल का त़लब करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।" (المعجم الاوسط،الحدیث ٨٦١٠،ج٦،ص٢٣١ "فریضة" بدله "واجب")

बाज़ लोग जिन पर काहिली और सुस्ती ह़ावी है वोह इस त़रफ़ माइल हैं कि ह़लाल बाक़ी नहीं है और हर चीज़ में मफ़्क़ूद है उन का येह केहना जहालत है क्यूंकि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है :

اَلْحَلَالُ بَیِّنٌ وَّالْحَرَامُ بَیِّنٌ وَّبَیْنَھُمَا اُمُوْرٌ مُّتَشَابِھَاتٌ

तर्जमा : ह़लाल वाज़ेह़ है और ह़राम भी और इन के दरमियान चन्द चीज़ें मुश्तबेह हैं।

(صحیح البخاری ،کتاب البیوع ،باب الحلال بین والحرام بین وبینهما مشتبهات ،الحدیث ٢٠٥١،ص١٦٠)

फ़ज़ीलते ह़लाल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

یٰۤاَیُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّیِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ (پ١٨،المؤمنون :٥١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ पैग़म्बरो ! पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छा काम करो।

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िक्मत निशान है : "जो शख़्स चालीस दिन तक ह़लाल रिज़्क़ खाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को रौशन कर देता है और उस के दिल से ह़िक्मत के चश्मे उस की ज़बान पर जारी फ़रमा देता है।" और एक रिवायत में है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दुन्या में परहेज़गारी अ़त़ा फ़रमाता है।"

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना साद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मुस्तजाबुद्दावात बना दे।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَطِبْ طُعْمَتَکَ تُسْتَجَبْ دَعْوَتُکَ "**तर्जमा :** अपने खाने को पाकीज़ा बनाओ तुम्हारी दुआ़ क़बूल होगी।"

(المعجم الاوسط ،الحدیث٦٤٩٥،ج٥، ص٣٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत में है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त,

www.dawateislami.net

मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "बैतुल मुक़द्दस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक फ़रिश्ता है जो हर रात पुकारता है कि जिस ने ह़राम खाया न उस के नफ़्ल क़बूल हैं न फ़र्ज़ ।" (فردوس الاخبار للديلمی ،باب الميم ،الحديث٦٢٦٣،ج٢،ص٣٠٠، مختصرًا)

केहते हैं : "सर्फ़" से मुराद नफ़्ल और "अ़द्ल" से मुराद फ़र्ज़ हैं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स दस दिरहम के बदले कपड़ा ख़रीदे और इस की क़ीमत में एक दिरहम ह़राम का हो तो जब तक वोह कपड़ा उस पर होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाएगा ।" (المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب ،الحديث٥٧٣٦،ج٢،ص٤١٦-٤١٧)

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : كُلُّ لَحْمٍ نَبَتَ مِنَ الْحَرَامِ فَالنَّارُ اَوْلٰى بِهٖ "तर्जमा : हर वोह गोश्त जो ह़राम से परवान चढ़े आग उस के लिए बेहतर है ।" (جامع الترمذی ،ابواب السفر ،باب ماذكر فی فضل الصلاة ،الحديث٦١٤،ص١٧٠٦،مفهوماً)

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَنْ لَّمْ يُبَالِ مِنْ اَيْنَ اِكْتَسَبَ الْمَالَ لَمْ يُبَالِ اللّٰهُ تَعَالٰى مِنْ اَيْنَ اَدْخَلَهُ النَّارَ

तर्जमा : जो शख़्स इस बात की परवाह नहीं करता कि उस ने कहां से माल कमाया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को इस बात की परवाह नहीं कि वोह उसे जहन्नम के किस दरवाज़े से दाख़िल करे ।

(صحيح البخاری ،كتاب البيوع ،باب من لم يبال من حيث كسب المال ،الحديث٢٠٥٩،ص١٦١، بدون من اين .....الخ)

मरफ़ूअ़न और मौक़ूफ़न ह़दीस मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَلْعِبَادَةُ عَشَرَةُ اَجْزَاءٍ فَتِسْعَةٌ مِّنْهَا فِیْ طَلَبِ الْحَلَالِ

तर्जमा : इ़बादत के दस ह़िस्से हैं जिन में से नौ ह़िस्से त़लबे ह़लाल में हैं ।

(فردوس الاخبار للديلمی ،باب العين ،الحديث٤٠٦٢،ج٢،ص٨٦، العبادة بدله العافية)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे मुबारक है : "जिस शख़्स ने गुनाह के ज़रीए़ माल ह़ासिल कर के उस से सिलए रेह़मी की या सदक़ा किया या उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च किया है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस सब के साथ जहन्नम में डाल देगा ।" (مراسيل ابی داؤد ،باب زكوة الفطر ،ص٩،من رواية القاسم بن مخيمره، بتغير)

एक रिवायत में है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपने ग़ुलाम की कमाई से दूध नोश फ़रमाया फिर ग़ुलाम से उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उस ने कहा

www.dawateislami.net

मैं ने एक क़ौम के लिए कहानत की (यानी उन्हें झूटी ख़बरें दीं) तो उन्हों ने मुझे दूध दिया था (येह सुन कर) आप अपनी उंगली मुंह में डाल कर क़ै करने लगे (रावी केहते हैं कि) आप ने इस क़दर क़ै की, कि मैं समझा आप की जान निकल जाएगी फिर अ़र्ज़ किया : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो कुछ रगों ने उठाया और आंतों में मिल गया उस से तेरी बारगाह में माज़िरत ख़्वाह हूं और तुझ से तौबा करता हूं। एक और रिवायत में है कि येह बात नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बताई गई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम्हें मालूम नहीं कि सिद्दीक़ अपने पेट में हमेशा पाकीज़ा चीज़ ही दाख़िल करता है।" (صحیح البخاری ، کتاب مناقب الانصار ،باب ایام الجاهلیة ،الحدیث ۳۸۴۲،ص ۳۱۲، مختصرًا)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स की नमाज़ क़बूल नहीं करता जिस के पेट में ह़राम ग़िज़ा हो।

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल तुस्तरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं : "जो शख़्स चाहता है कि उस पर सिद्दीक़ीन के ह़ालात ज़ाहिर हों वोह हमेशा ह़लाल व पाक खाना खाए और सुन्नत और ज़रूरी काम के इ़लावा कुछ न करे।"

ह़लाल के दरजात

जानना चाहिए ! दारे ह़र्ब से ली जाने वाली चीज़ें ह़लाल हैं ख़्वाह वोह किसी भी त़रीक़े से ली जाएं। इसी त़रह़ शिकार के ज़रीए़ या लकड़ी जम्अ़ करने के साथ जिस का वोह मालिक हो या जो चीज़ें कानों से निकाली जाती हैं और जो कुछ एह्ले ह़र्ब से लिया जाता है वोह ख़ुम्स (यानी पांचवां ह़िस्सा) निकालने के बाद ह़लाल होता है जबकि वोह बादशाह की त़रफ़ से जंग की सूरत में ह़ासिल हो और ह़द्दे ज़रर तक मिट्टी खाना ह़राम है और इस के बारे में मुमानअ़त का हुक्म वारिद है जिसे उ़मूमे तह़रीम से जाना जाता है पस उस से बचना बेहतर है।

ह़लालो ह़राम के दरजात

जानना चाहिए ! ह़राम सारे का सारा ह़राम है अलबत्ता बाज़ दूसरे बाज़ की निस्बत ज़्यादा ख़बीस है और ह़लाल तमाम का तमाम पाक है अलबत्ता बाज़ ह़लाल दूसरे बाज़ से ज़्यादा पाक और साफ़ होता है। पस इन के मुख़्तलिफ़ दरजात हैं :

पेहला दरजा : ह़राम में से पेहला और सब से कम दरजा वोह है कि जिस के ह़राम होने का फ़ुक़हा ने फ़तवा दिया हो इस से बचना ज़रूरी है।

दूसरा दरजा : सालिह़ीन का तक़वा है यानी हर उस चीज़ से बचना जिस में ह़राम होने का एह़तिमाल हो अगर्चे ज़ाहिर की बुन्याद पर मुफ़्ती उसे खाने की इजाज़त दे दे लेकिन येह मिन जुम्ला शुबे के मक़ामात से है।

तीसरा दरजा : जिसे फ़तवा की रू से ह़राम नहीं क़रार दिया जाता और इस के ह़लाल होने में भी शुबा नहीं लेकिन उस की वज्ह से ह़राम के इरतिकाब का ख़ौफ़ होता है और येह ऐसी चीज़ का छोड़ना है जिस में कोई ह़रज नहीं इस डर से कि ह़रज वाली चीज़ में न पड़ जाए।

चौथा दरजा : वोह उमूर जिन में बिल्कुल ह़रज नहीं और न ही उन की वज्ह से ह़रज वाले कामों में पड़ने का ख़ौफ़ होता है लेकिन वोह ग़ैरुल्लाह के लिए होते हैं और न ही उन के हुसूल से इ़बादते ख़ुदावन्दी पर कुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत होती है या वोह चीज़ जो उन अस्बाब से ह़ासिल की हो जिस में किसी क़िस्म के ह़राम होने की कराहिय्यत या गुनाह हो तो ऐसी चीज़ों को छोड़ना सिद्दीक़ीन की परहेज़गारी है।

शुबहात के मरातिब का बयान

नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "ह़लाल भी वाज़ेह़ है और ह़राम भी और उन के दरमियान कुछ चीज़ें मुश्तबेह हैं जिन्हें अक्सर लोग नहीं जानते पस जो शख़्स शुबहात से बचा उस ने अपनी इ़ज़्ज़त और दीन को मह़फ़ूज़ कर लिया और जो आदमी शुबहात में पड़ा वोह ह़राम में पड़ गया जिस त़रह़ चरवाहा मम्नूअ़ चरागाह के गिर्द (बकरियां) चराता है तो क़रीब है कि वोह उस में चला जाए।"

صحيح مسلم، كتاب المساقاة والمزارعة، باب أخذ الحلال وترك الشبهات، الحديث ٤٠٩٤، ص٩٥٥، بتغيرٍ)

दरमियानी क़िस्म : इस से मुराद शुबा है और इस की मिसाल येह है कि बारिश का पानी दूसरे की मिल्किय्यत में जाने से पेहले क़त़ई त़ौर पर ह़लाल होता है और शराब ह़राम मह़ज़ है। शुबा पैदा होने के पांच मक़ामात हैं : पेहला येह कि ह़राम और ह़राम करने वाले सबब में शक वाक़ेअ़ हो और येह इस बात से ख़ाली न होगा कि या तो दोनों एह़तिमाल बराबर होंगे या एक एह़तिमाल दूसरे पर ग़ालिब होगा अगर दोनों एह़तिमाल बराबर हों तो हुक्म पेहले से मालूम सूरत के मुत़ाबिक़ होगा पस **इस्तिस्ह़ाब** होगा।[1] और अगर एक एह़तिमाल ग़ालिब हो तो हुक्म ग़ालिब के मुत़ाबिक़ होगा। पस इस को हम चार अक़्साम में बयान करते हैं।

(1) उस का ह़राम होना मालूम हो फिर ह़लाल करने वाले सबब में शक हो। इस की मिसाल येह है कि वोह शिकार पर तीर फेंक कर उसे ज़ख़्मी कर दे फिर वोह शिकार पानी में गिर जाए और इसे मुर्दा ह़ालत में मिले और इसे मालूम न हो कि वोह डूबने से मरा या ज़ख़्मी होने से तो येह ह़राम है क्यूंकि इस में अस्ल हुरमत है अलबत्ता जब वोह किसी मुअ़य्यन त़रीक़े पर मरे और मुअ़य्यन त़रीक़े में शक हो गया, तो यक़ीन को शक के ज़रीए़ तर्क नहीं किया जाएगा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

(2) ह़लाल होना मालूम हो और ह़राम होने में शक हो तो हुक्म ह़िल्लत (यानी ह़लाल होने) का है जिस त़रह़ दो आदमी दो औ़रतों से निकाह़ करें और एक परिन्दा उड़े तो उन में से एक कहे

1....**इस्तिस्ह़ाब** से मुराद येह है कि एक मस्अले को दूसरे मस्अले पर क़ियास करते हुवे हुक्म लगाना। (التعريفات، ص١٨)

www.dawateislami.net

अगर येह कव्वा हो तो मेरी बीवी को त़लाक़ है और दूसरा कहे अगर येह कव्वा न हुवा तो मेरी बीवी को त़लाक़ है और परिन्दे का मुआ़मला मुश्तबेह रहे तो जब तक ज़ाहिर न हो उन में से किसी की औ़रत के ह़राम होने का हुक्म नहीं लगाया जाएगा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

(3) अस्ल तो हुरमत हो लेकिन उस पर ऐसा हुक्म त़ारी हो जो ग़ालिब गुमान के मुत़ाबिक़ उस के ह़लाल होने को वाजिब कर दे तो येह चीज़ मश्कूक है और ग़ालिब हुक्म ह़लाल का ही है। इस की मिसाल येह है कि वोह शिकार की त़रफ़ तीर फेंके तो वोह ग़ाइब हो जाए फिर उसे वोह शिकार मुर्दा ह़ालत में मिले और इस पर तीर के निशान के इ़लावा कोई निशान न पाया जाए लेकिन येह एह़तिमाल है कि वोह गिरने की वज्ह से मरा है या किसी दूसरे सबब से अगर किसी सदमे या गिरने का सबब ज़ाहिर हो जाए तो उसे पेहली क़िस्म के साथ मिलाया जाएगा, इस क़िस्म में इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى के अक़्वाल मुख़्तलिफ़ हैं और मुख़्तार क़ौल येही है कि वोह ह़लाल है।

(4) उस का ह़लाल होना मालूम हो लेकिन ग़ालिब गुमान के मुत़ाबिक़ उस पर कोई ह़राम वाला सबब त़ारी हो जाए जो शरअ़न मोतबर हो पस इस्तिस्ह़ाब कमज़ोर होने की वज्ह से ख़त्म हो जाएगा। और ग़ालिब गुमान के मुत़ाबिक़ हुक्म लगाया जाएगा। इस की मिसाल येह है कि दो बरतनों के मुतअ़ल्लिक़ उस का ग़ालिब गुमान हो कि एक नापाक है किसी ऐसी अ़लामते मुअ़य्यना से जो ग़ालिब गुमान को वाजिब करती है, पस उस से पीना ह़राम होगा जिस त़रह़ उस से वुज़ू करना मम्नूअ़ होता है।

शुबे का दूसरा मक़ाम

शक की ऐसी सूरत है जो ह़लालो ह़राम के मिलने से पैदा होती है वोह इस त़रह़ कि ह़राम ह़लाल के साथ मिल जाए और मुआ़मला मुश्तबेह होने की बिना पर तमीज़ न हो सके और येह बाहम मिलना या तो ऐसी तादाद के साथ होगा जो दोनों त़रफ़ से या एक त़रफ़ से शुमार में नहीं आती या वोह तादाद शुमार में आ सकती है फिर अगर वोह तादाद जो शुमार में आ सकती है वोह शुमार में आने वाली तादाद से मिल जाए तो फिर बाहम मिलना इस त़रह़ होगा जिस त़रह़ माएअ़ चीज़ें मिलती हैं या बाहम मिलना इब्हाम के साथ होगा कि तमीज़ हो सकती हो जैसे ग़ुलाम वग़ैरा, इसे तीन क़िस्मों में बयान किया जाता है।

(1) तादाद के साथ इब्हाम पैदा हो जाए जिस त़रह़ मुर्दार दस ज़ब्ह़ किए हुवे जानवरों में मिल जाए या दूध पिलाने वाली औ़रत दीगर दस औ़रतों में मिल जाए तो इस से बिल इत्तिफ़ाक़ बचना वाजिब है क्यूंकि इस में इज्तिहाद की गुन्जाइश नहीं।

(2) मादूद ह़राम ग़ैर मादूद ह़लाल से मिल जाए जैसे दस दूध पिलाने वाली औ़रतें एक बड़े शह्र में मिल जुल जाएं तो उस शह्र की औ़रतों में निकाह़ करना ह़राम नहीं और इ़ल्लत, ग़लबा और

www.dawateislami.net

ह़ाजत दोनों चीज़ें बन सकती हैं। क्यूंकि हर वोह शख़्स जिस का ह़राम होने वाला रिश्तेदार मख़्लूत़ हो जाए उस पर निकाह़ का दरवाज़ा बन्द करना मुमकिन नहीं, इसी त़रह़ जिस शख़्स को मालूम हो कि दुन्यावी माल में ह़राम माल मिल गया है तो उस पर खाना और ख़रीदो फ़रोख़्त करना ह़राम नहीं क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर दीन में ह़रज पैदा नहीं किया और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में एक ढाल और इबा (यानी चोग़ा) चोरी हो गया तो दुन्या में किसी को ढाल और इबा ख़रीदने से मन्अ़ नहीं किया गया। इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

(3) ग़ैर मादूद ह़राम ग़ैर मादूद ह़लाल के साथ मिल जाए जिस त़रह़ हमारे ज़माने के माल हैं और जो लोग येह केहते हैं कि इस मुअ़य्यन चीज़ से किसी चीज़ का लेना ह़राम नहीं अलबत्ता येह कि इस मुअ़य्यन चीज़ के साथ कोई अ़लामते मुअ़य्यना मिल जाए (अगर इस मुअ़य्यन चीज़ पर कोई अ़लामते ह़ुरमत न हो) तो उस का छोड़ना परहेज़गारी है, इन अ़लामात में ज़ालिम बादशाह का क़ब्ज़ा और दीगर अ़लामात हैं जिन का ज़िक्र आएगा।

हमारी इस बात पर दलील येह है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के ज़माने में मुआ़मलात और अमवाल के वुसूल करने को तर्क नहीं किया गया बावुजूद शराबों की क़ीमत और सूद के अमवाल की कसरत के जो ज़िम्मी लोगों के हाथों से दूसरे मालों में मिल जाते थे। शुबा पैदा होने वाले मक़ामात में से येह भी है कि चीज़ उन में से हो जो ज़िम्मियों से ख़रीदी जाती हैं लेकिन उस की क़ीमत माले ह़राम से अदा की गई हो अलबत्ता अगर खाने को क़ीमत पर क़ब्ज़ा करने से पेहले रिज़ामन्दी से सिपुर्द कर दे और वोह उसे क़ीमत अदा करने से पेहले खा ले तो वोह बिल इत्तिफ़ाक़ ह़लाल है। ह़राम के मुक़ाबले में माल के अदा करने से वोह चीज़ ह़राम नहीं हो जाती बल्कि माल के अदा करने का मक़्सद ज़िम्मेदारी से बरी होना है गोया कि उस ने क़ीमत अदा नहीं की और जो उस ने खाया वोह ह़राम नहीं हुवा।

और अगर क़ीमत के ह़राम होने का इ़ल्म होने के बावुजूद वोह अपनी ज़िम्मेदारी से बरियुज़्ज़िम्मा हो गया तो येह ज़िम्मे से बरी होने और ह़लाल होने को वाजिब करती है। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

तजस्सुस और सुवाल का बयान

जानना चाहिए ! न तो हर ह़ाल में तारीफ़ की जा सकती है और न ही हर ह़ाल में उसे तर्क किया जा सकता है। अगर माल ऐसे शख़्स से लिया जाए जो नेक लोगों के लिबास में हो तो उस का इस ह़ाल में होना ही काफ़ी है और अगर ज़ालिम और फ़ासिक़ लोगों के लिबास में हो तो उस का इस ह़ाल में होना ही काफ़ी है, लेकिन अगर वोह मस्तूरुल ह़ाल हो यानी न तो उस पर नेक लोगों या ताजिरों की अ़लामत हो और न ज़ालिमों की तो अ़दालते इस्लाम पर इक्तिफ़ा करते हुवे ज़ाहिर पर भरोसा किया जाएगा और येह उन में से है जिस से सुवाल करना जाइज़ है और जब आदमी का वज़ीफ़ा हो और इस से

ह़राम में दाख़िल होने का ख़ौफ़ हो या बादशाह और किसान का माल हो तो इस से बचना परहेज़गारी है और बाज़ ऐसे हैं जिन्हों ने अक्सर की त़रफ़ देखा है और इसी का एतिबार किया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस मुह़ासिबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अगर किसी का कोई दोस्त या भाई हो तो उस से सुवाल नहीं करना चाहिए क्यूंकि बाज़ अवक़ात उस के सामने वोह चीज़ ज़ाहिर हो जाती है जो उस से पोशीदा थी पस येह चीज़ गुस्से की त़रफ़ ले जाती है जो हर ह़ालत में गुनाह है।"

जानना चाहिए ! जिस शख़्स का बाज़ माल ह़राम हो उस से सुवाल करने का कोई फ़ाएदा नहीं क्यूंकि बाज़ अवक़ात वोह किसी मक़्सद की वज्ह से झूट बोलता है लिहाज़ा बेहतर येही है कि उस के इलावा किसी दूसरे से सुवाल किया जाए। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

माली मज़ालिम से तौबा का बयान

जानना चाहिए ! जो शख़्स तौबा करे और इस के क़ब्ज़े में मख़्लूत़ (यानी मिला जुला) माल हो तो उस पर लाज़िम है कि वोह ह़राम को अलग कर दे और दूसरी ज़िम्मेदारी येह है कि उस निकाले हुवे माल को ख़र्च कर दे।

पेहली ज़िम्मेदारी : तमीज़ करने और ह़राम माल को अलग करने के बारे में है अगर वोह माल मालूम है, जो किसी से छीना है या अमानत वग़ैरा का माल है तो उस का मुआ़मला आसान है, अगर वोह मिला हुवा है मसलन उसे मालूम है कि उस में निस्फ़ माल ह़राम है या ऐसी तिजारत से कमाया है जिस में झूट बोला और ख़ियानत की तो उस पर इतनी मिक़्दार अलग कर देना लाज़िम है और अगर मिक़्दार मालूम न हो तो एह़तियात़, ज़न्ने ग़ालिब और यक़ीन से उसे अलग कर दे।

दूसरी ज़िम्मेदारी : माल को ख़र्च करने के बारे में है, जब वोह ह़राम माल अलग कर दे तो अगर उस माल का कोई मुअ़य्यन मालिक हो तो उसे लौटा दे और अगर मालिक न हो तो वुरसा की त़रफ़ लौटा दे और अगर ग़ाइब हो तो उस के आने का इन्तिज़ार करे या जिस जगह वोह है वहां पहुंचाने की मशक़्क़त उठाए और अगर उस माल का कोई मुअ़य्यन मालिक न हो तो उसे सदक़ा कर दे या मुसलमानों के मसालेह़ मसलन सराएं, मसाजिद और पुल वग़ैरा बनाने पर ख़र्च कर दे, बेहतर येह है कि किसी ईमानदार क़ाज़ी के सिपुर्द कर दे, बद दियानत क़ाज़ी के सिपुर्द कर के अपनी ज़िम्मेदारी से ओ़हदा बर आ न होगा और इस ह़राम माल को सदक़ा करने और मुसलमानों के मसालेह़ पर ख़र्च करने के जवाज़ पर बहुत सी अह़ादीस और अक़्वाल दलालत करते हैं। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस बकरी को सदक़ा करने का हुक्म दिया जो भुनी हुई आप की बारगाह में पेश की गई और इस बकरी ने आप से कलाम करते हुवे अ़र्ज़ की, कि वोह ह़राम है तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : "इसे (काफ़िर) क़ैदियों को खिला दो।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث رجل ،الحديث ٢٢٥٧٢،ج٨،ص٣٥٥)

www.dawateislami.net

बादशाहों के वज़ाइफ़ और इनआ़मात

येह इस्लाह़ात की एक क़िस्म है। जो शख़्स इसे लेता है उसे इस में ग़ौर करना चाहिए कि अगर वोह माल उस टेक्स से हो जो मुसलमानों पर मुक़र्रर किया जाता है या ज़बरदस्ती लिया गया हो तो इस से लेना जाइज़ नहीं लेकिन अगर माले विरासत, ज़मीन से ह़ासिल होने वाले अमवाल, माले फ़ै (वक़्फ़), माले ग़नीमत और जिज़्ये में से हो तो लेना जाइज़ है, लेकिन इस शर्त़ पर कि उस को माल देने में कोई मस्लह़त या ज़रूरत हो, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मौक़िफ़ है कि हर मुसलमान का बैतुल माल पर ह़क़ है।

जानना चाहिए ! जिज़्ये के चार ख़ुम्स मुसलमानों के मसालेह़ के लिए हैं और पांचवां ख़ुम्से मुअ़य्यना मसारिफ़ के लिए है, अगर वोह बादशाह माल इस लिए लेता है कि उसे फ़ुक़रा पर सदक़ा कर देगा मगर परहेज़गारी येह है कि वोह न ले, और उन में से बादशाह के पास जाना है और शायद बादशाह के पास जाना औला है लेकिन इस शर्त़ पर कि वोह उस में अपने लिए रग़बत न करे और दूसरे की इक़्तिदा न करे और बादशाह से लेते वक़्त येह गुमान न करे कि उस का माल ह़लाल है वरना वोह उस के सबब उस जैसे कामों पर जुरअत करेगा। وَاللّٰہُ اَعْلَمُ इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा।

रेहमते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक नाम सुन कर दुरूद न पढ़ने पर वईदें

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

(1).....“जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा फिर उस ने मुझ पर दुरूद पढ़ने में कोताही की तो बेशक वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।” (المعجم الکبیر،الحدیث:۲۸۸۷،ج۳،ص۱۲۸)

(2).....“जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा और वोह मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया तो वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।”

(المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الفضائل،باب ماعطی الله محمدًا،الحدیث:۱۵۵،ج۷،ص۴۴۳)

(3).....“बख़ील है वोह शख़्स जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा फिर उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा।” (جامع الترمذی، ابواب الدعوات، باب رغم انف رجل.....الخ،الحدیث:۳۵۴۶،ص۲۰۱۶)

बाब : 15 आदाबे मह़ब्बत

जानना चाहिए ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए एक दूसरे से मह़ब्बत करना और दीनी भाईचारा अफ़्ज़ल नेकी है और येह हुस्ने ख़ुल्क़ का समरा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए बाहम मह़ब्बत और भाईचारा क़ाबिले तारीफ़ है।

हुस्ने अख़्लाक़ के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है :

وَاِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیۡمٍ۝ (پ۲۹، القلم: ٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम्हारी ख़ू बू (ख़ुल्क़) बड़ी शान की है।

उख़ुव्वत और उल्फ़त के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

فَاَصۡبَحۡتُمۡ بِنِعۡمَتِهٖۤ اِخۡوَانًا ۚ (پ٤، ال عمران:١٠٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उस के फ़ज़्ल से तुम आपस में भाई हो गए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

لَوۡ اَنۡفَقۡتَ مَا فِی الۡاَرۡضِ جَمِیۡعًا مَّاۤ اَلَّفۡتَ بَیۡنَ قُلُوۡبِهِمۡ وَلٰکِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَیۡنَهُمۡ ؕ (پ١٠، الانفال:٦٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है सब ख़र्च कर देते उन के दिल न मिला सकते लेकिन अल्लाह ने उन के दिल मिला दिए।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम में से वोह शख़्स मजलिस में मेरे ज़्यादा क़रीब है जिस के अख़्लाक़ सब से अच्छे हों, जो अपने पेहलूओं को झुका देते हों और दूसरों से मह़ब्बत करते हैं और दूसरे उन से मह़ब्बत करते हैं।"

(مکارم الأخلاق للطبرانی مع مکارم الأخلاق لابن ابی الدنیا ، باب ما جاء فی حسن الخلق ،الحدیث٦،ص٣١٤)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "मोमिन मह़ब्बत करने वाला होता है और इस से मह़ब्बत की जाती है और उस शख़्स में कोई भलाई नहीं जो दूसरों से मह़ब्बत नहीं करता और न उस से मह़ब्बत की जाती है।" (المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث ابی مالك سهل بن الساعدی ،الحدیث٢٢٩٠٣،ج٨،ص٤٣٥،بتغیرٍ)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे अच्छा दोस्त अ़त़ा कर देता है अगर येह भूल जाए तो वोह उसे याद दिलाता है और अगर उसे याद हो तो वोह उस की मदद करता है।" (سنن ابی داؤد ، کتاب الخراج ،باب فی اتخاذ الوزیر ،الحدیث٢٩٣٢،ص١٤٤٢،مفهوماً)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रिफ़्अ़त निशान है : "जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए किसी को भाई बनाता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस का एक दरजा बुलन्द कर देता है जिस तक वोह किसी दूसरे अ़मल के ज़रीए नहीं पहुंच सकता।" (الموسوعة لابن ابی الدنیا ،کتاب الاخوان ،باب الرغبة فی الاخوان والحث علیهم ،الحدیث٢٦،ج٨،ص١٥٨،مفهوماً)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए उख़ुव्वत का माना

दीनी और दुन्यावी उख़ुव्वत में फ़र्क़

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने उल्फ़त निशान है :

اَلْاَرْوَاحُ جُنُوْدٌ مُّجَنَّدَةٌ، فَمَا تَعَارَفَ مِنْهَا اِئْتَلَفَ وَمَا تَنَاكَرَ مِنْهَا اِخْتَلَفَ

तर्जमा : अरवाह एक मुज्तमअ़ लश्कर थीं। उन में जिन्हों ने एक दूसरे को पहचाना वोह आपस में मह़ब्बत करने लगीं और जिन्हों ने एक दूसरे को न पहचाना वोह अलग अलग हो गईं।

(صحيح مسلم، كتاب البر، باب الأرواح جنود مجنّدة، الحديث٦٧٠٨، ص١١٣٧)

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मह़ब्बत निशान है, इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ رُوْحَيِ الْمُؤْمِنَيْنِ لَيَلْتَقِيَانِ عَلٰى مَسِيْرَةِ يَوْمٍ، مَارَاٰى اَحَدُهُمَا صَاحِبَهٗ قَطُّ

तर्जमा : बेशक दो मोमिनों की रूहें एक दिन की मसाफ़त पर बाहम मिलती हैं ह़ालांकि उन में से एक ने दूसरे को कभी देखा नहीं होता।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحديث٦٦٤٧، ج٢، ص٥٨٨، بتغيرٍ قليلٍ)

इन्सान दूसरे से या तो अपनी ज़ात के लिए मह़ब्बत करता है क्यूंकि दूसरा इन्सान ख़ूब सूरत होता है और ज़ाती तौ़र पर उसे पसन्द होता है या वोह शख़्स किसी ख़ारिजी मक़्सद के लिए ज़रीआ़ होता है और येह ग़रज़ मसालेह़ दुन्या के मुतअ़ल्लिक़ है या दूसरा शख़्स आख़िरत के लिए वसीला होता है। या दूसरे से मह़ब्बत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए होती है और मह़ज़ उसी की ख़ातिर होती है न इस दोस्ती से मक़्सद हुसूले दुन्या होता है न आख़िरत बल्कि इस से मह़ब्बत इस वज्ह से होती है कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बन्दा है पस जो किसी शख़्स से मह़ब्बत करता है तो वोह उस से भी मह़ब्बत करता है जिस से वोह शख़्स मह़ब्बत करता है और येही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए उख़ुव्वत है जिस त़रह़ बनी आ़मिर का मजनूं केहता है :

أَمُرُّ عَلَى الدِّيَارِ دِيَارِ لَيْلٰى أُقَبِّلُ ذَا الْجِدَارِ وَذَا الْجِدَارَا وَمَا حُبُّ الدِّيَارِ شَغَفْنَ قَلْبِيْ وَلٰكِنْ حُبُّ مَنْ سَكَنَ الدِّيَارَا

तर्जमा : मैं लैला के अ़लाक़े से गुज़रता हूं तो दीवारों को बोसे देता हूं। उस अ़लाक़े की मह़ब्बत मेरे दिल पर ग़ालिब नहीं बल्कि मैं उस की मह़ब्बत में ऐसा करता हूं जो उस में रेहता है।

जिस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए मह़ब्बत करना ज़रूरी है इसी त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए नफ़रत करना भी ज़रूरी है जो किसी इन्सान से इस लिए मह़ब्बत करता है कि वोह उस के

www.dawateislami.net

मेह़बूब का मेह़बूब है और इस के मेह़बूब की इत़ाअ़त करने वाला है तो ज़रूरी है कि वोह उस के दुश्मन से भी नफ़रत करे क्यूंकि वोह उस के दोस्त का ना फ़रमान है।

जानना चाहिए ! हर शख़्स दोस्ती के क़ाबिल नहीं होता। जैसा कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है :

اَلْمَرْءُ عَلٰى دِيْنِ خَلِيْلِهٖ فَلْيَنْظُرْ اَحَدُكُمْ مَنْ يُّخَالِلُ

तर्जमा : इन्सान अपने दोस्त के दीन पर होता है लिहाज़ा तुम में से हर कोई देखे कि वोह किस से दोस्ती करता है।

(موسوعة لابن ابی الدنیا ،کتاب الاخوان ،باب من أمر بصحبته.....الخ ،الحدیث۳۷،ج۸،ص ۱۶۰)

पस चन्द ख़स्लतों का एतिबार ज़रूरी है कि उस का दोस्त आ़क़िल हो, अच्छे अख़्लाक़ का मालिक हो, फ़ासिक़ व बिदअ़ती और दुन्या का ह़रीस न हो। जहां तक अ़क़्ल का तअ़ल्लुक़ है वोह अस्ल माल है, अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم अपने अश्आ़र में फ़रमाते हैं :

فَلَا تَصْحَبْ اَخَا الْجَهْلِ ۔۔۔ وَاِيَّاكَ وَاِيَّاهُ
فَكَمْ مِنْ جَاهِلٍ اَرْدٰى ۔۔۔ حَلِيْمًا حِيْنَ آخَاهُ
يُقَاسُ الْمَرْءُ بِالْمَرْءِ ۔۔۔ اِذَا مَا الْمَرْءُ مَاشَاهُ
وَلِلشَّيْءِ مِنَ الشَّيْءِ ۔۔۔ مَقَايِيْسٌ وَاَشْبَاهُ
وَلِلْقَلْبِ عَلَى الْقَلْبِ ۔۔۔ دَلِيْلٌ حِيْنَ يَلْقَاهُ

तर्जमा : (1).....किसी जाहिल की सोह़बत इख़्तियार न कर वोह तुझ से दूर रहे तू उस से दूर रेह।
(2).....कितने ही जाहिल हैं जो अ़क़्लमन्द के भाई बन कर उसे हलाक कर देते हैं।
(3).....इन्सान को दूसरे इन्सान से क़ियास किया जाता है क्यूंकि आदमी अपनी चाहत के मुत़ाबिक़ होता है।
(4).....अश्या बाज़ दूसरी अश्या के मुशाबेह होती हैं।
(5).....और दिल जब दूसरे दिल से मिलता है तो उस से राह पा लेता है।

और येह कैसे हो सकता है कि अह़मक़ तुझे नफ़्अ़ दे बल्कि वोह तो नुक़्सान ही पहुंचाता है इसी लिए किसी ने कहा है :

اِنِّيْ لَآمَنُ مِنْ عَدُوٍّ عَاقِلٍ ۔۔۔ وَاَخَافُ خِلًّا يَعْتَرِيْهِ جُنُوْنُ
فَالْعَقْلُ فَنٌّ وَاحِدٌ وَطَرِيْقُهُ ۔۔۔ اَدْرِيْ فَارْصُدُ وَالْجُنُوْنُ فُنُوْنُ

तर्जमा : (1).....मैं अ़क़्लमन्द दुश्मन से अम्न में हूं लेकिन ऐसे दोस्त से डरता हूं जो मजनून हो।
(2).....अ़क़्ल एक ही फ़न है और इस का रास्ता मुझे मालूम है पस मैं उस का ख़याल रखता हूं लेकिन जुनून के कई फ़न हैं।

इसी लिए कहा गया है कि बे वुक़ूफ़ से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब का बाइ़स है और ऐसे ही फ़ासिक़ की सोह़बत का कोई फ़ाएदा नहीं क्यूंकि जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता है वोह गुनाहे कबीरा पर इसरार नहीं करता और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरता उस के फ़साद से अम्न नहीं होता।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

وَلَاتُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَاقَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَاوَاتَّبَعَ هَوٰهُ

(پ ۱۵، الکھف:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला।

एक त़बीअ़त दूसरी त़बीअ़त से मुतास्सिर हो जाती है जबकि इन्सान को इ़ल्म तक नहीं होता और येही ह़ाल बिदअ़ती का है।

और हुस्ने अख़्लाक़ के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लक़मा बिन उ़मर अ़त़ारिदी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी वफ़ात के वक़्त अपने बेटे को वसिय्यत करते हुवे जामेअ़ बात इरशाद फ़रमाई, आप ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ बेटे ! अगर तुम्हें लोगों की सोह़बत इख़्तियार करनी पड़े तो ऐसे आदमी की सोह़बत इख़्तियार करना कि जब तू उस की ख़िदमत करे तो वोह तेरी ह़िफ़ाज़त करे अगर तू उस की सोह़बत इख़्तियार करे तो वोह तुझे ज़ीनत बख़्शे और अगर तुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो वोह तुझे बरदाश्त करे। ऐसे शख़्स की सोह़बत इख़्तियार कर कि जब तू भलाई के साथ अपना हाथ फैलाए तो वोह भी उसे फैला दे और अगर तुम में कोई अच्छाई देखे तो उसे शुमार करे और अगर बुराई देखे तो उसे दुरुस्त करे। तू उस आदमी की सोह़बत इख़्तियार कर कि जब तू उस से मांगे तो वोह तुझे दे, अगर तू ख़ामोश रहे तो ख़ुद ब ख़ुद दे और अगर तुझ पर कोई मुसीबत नाज़िल हो तो वोह ग़म ख़्वारी करे। उस शख़्स की सोह़बत इख़्तियार कर कि जब तुम बात करो तो वोह तुम्हारी तस्दीक़ करे, अगर तुम किसी काम का इरादा करो तो वोह तुझे अच्छा मश्वरा दे और अगर तुम दोनों में इख़्तिलाफ़ हो जाए तो वोह तुम्हारी बात को तरजीह़ दे।"

अमीरुल मोमिनीन, मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم अपने अश्आ़र में फ़रमाते हैं : "तुम्हारा सच्चा दोस्त वोह है जो तुम्हारा साथ दे और तुम्हें नफ़्अ़ पहुंचाने के लिए अपने आप को नुक़्सान पहुंचाए और जब तुझे गर्दिशे ज़माना पहुंचे तो तुम्हारे मुआ़मलात को दुरुस्त करने के लिए ख़ुद परेशानी उठाए।

अस्लाफ़ में से बाज़ ऐसे बुज़ुर्ग भी हैं जो अपने दोस्त की मौत के बाद चालीस साल तक उस के एह्लो अ़याल की ख़बरगीरी करते रहे, उन की ह़ाजात को पूरा करते और हर रोज़ उन के पास जा कर अपने माल से उन की मदद करते और वोह बच्चे अपने बाप को उस की मौत के बाद भी अपनी आंखों के सामने पाते बल्कि वोह उस से ऐसी शफ़्क़त पाते जो वोह अपने बाप की ज़िन्दगी में भी बाप से न पाते थे।

लिहाज़ा बेहतर येही है कि उस का दोस्त मुत्तक़ी होने के साथ आ़लिम भी हो, ताकि वोह उस के इ़ल्म से नफ़्अ़ उठाए, ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ बेटे ! उ़लमा के साथ बैठ और उन के घुटनों के साथ अपने घुटने मिला क्यूंकि दिल ह़िक्मत की बातों से इस त़रह़ ज़िन्दा होते हैं जिस त़रह़ मुर्दा ज़मीन मूसलाधार बारिश से ज़िन्दा होती है ।"

उख़ुव्वत और मह़ब्बत के ह़ुक़ूक़

जानना चाहिए ! उख़ुव्वत दो आदमियों के दरमियान राबित़ा होता है जिस त़रह़ मियां बीवी के दरमियान अ़क़्दे निकाह़ है । जब भाईचारा क़ाइम हो जाए तो येह तेरे माल, नफ़्स, ज़बान और दिल पर कुछ ह़ुक़ूक़ लाज़िम करता है कि तुम उसे मुआ़फ़ करो, उस के लिए दुआ़ करो, इख़्लास व वफ़ा से पेश आओ और तक्लीफ़ व तकल्लुफ़ को छोड़ दो ।

(1) **माल :** येह ह़क़ माल के मुतअ़ल्लिक़ है और इस में सब से कम मर्तबा येह है कि तुम उसे अपने ग़ुलाम की त़रह़ समझो और उस की ज़रूरत पूरी करना तुम्हारा मक़्सद हो और उस में दरमियाना दरजा येह है कि तुम उसे अपने जैसा समझो क्यूंकि उख़ुव्वत शिर्कत और मसावात को लाज़िम करती है और इस में बुलन्द दरजा येह है कि तू उसे अपने ऊपर तरजीह़ दे इस त़रह़ कि तू अपनी ह़ाजत छोड़ दे ताकि उस की ह़ालत दुरुस्त हो जाए और येह बुलन्द तरीन दरजात में से है, इस के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी अह़ादीसे मुबारका वारिद हैं । चुनान्चे,

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मह़ब्बत निशान है : "जब दो आदमी एक दूसरे के साथ (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए) दोस्ती इख़्तियार करते हैं तो उन में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ज़्यादा पसन्द वोह होता है जो अपने साथी पर ज़्यादा नर्मी करने वाला होता है । (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ،کتا ب البر والاحسان ،باب الصحبة والمجالسة ،الحدیث ٥٦٧،ج١،ص٣٨٨،مفهوماً)

(2) **मदद करना :** यानी अपने भाई की इस त़रह़ मदद करना कि उस के सुवाल करने से पेहले ही उस की ह़ाजात को पूरा कर दिया जाए और इस के भी दरजात हैं जो माल के गुज़श्ता तीनों दरजात के बराबर हैं ।

(3) **बुरी बात से गुरेज़ करना :** येह ह़क़ अपने भाई के सामने बुरी बात से गुरेज़ करने के बारे में है । लिहाज़ा उस के सामने ऐसी बात न कहे जो उसे ना पसन्द हो । ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी के मुंह पर ऐसी बात न केहते जो उसे ना पसन्द हो ।" (الشمائل المحمدیة للترمذی ،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ ﷺ ،الحدیث٣٢٩، ص١٩٧)

पस जान लो ! अगर तुम हर ऐ़ब से पाक शख़्स तलाश करोगे तो अपने लिए कोई दोस्त न पाओगे । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی इरशाद फ़रमाते हैं : "कोई मुसलमान ऐसा नहीं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करता हो और उस की ना फ़रमानी न करता हो और कोई

www.dawateislami.net

मुसलमान ऐसा नहीं जो उस की ना फ़रमानी करता हो लेकिन फ़रमां बरदारी न करे, जिस की इत़ाअ़त उस की ना फ़रमानियों पर ग़ालिब हो तो येह अ़द्ल है। जब येह चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ में अ़द्ल है तो तेरे ह़क़ में ज़्यादा बेहतर है पस तू ख़ूबियों को ज़ाहिर करने वाला और बुरी बात पर पर्दा डालने वाला हो जा क्यूंकि दुआ़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन अल्फ़ाज़ के साथ सिफ़त बयान की जाती है और कहा जाता है : يَـا مَنْ يُّظْهِرُالْجَمِيْلَ، وَيَسْتُرُ عَلَى الْقَبِيْحِ "**तर्जमा :** ऐ अच्छाइयों को ज़ाहिर करने वाले और बुराइयों की पर्दापोशी फ़रमाने वाले।"

जानना चाहिए ! वोह शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां पसन्दीदा है, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात से मुत्तसिफ़ हो क्यूंकि वोह ऐ़बों पर पर्दा डालने वाला और गुनाहों को बख़्शने वाला है। याद रखो ! आदमी का ईमान उस वक़्त तक मुकम्मल नहीं होता जब तक वोह अपने भाई के लिए भी वोही पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है। इस में कोई शक नहीं कि वोह उस से तवक़्क़ोअ़ रखता है कि वोह उस की पर्दापोशी करे, उस की लग़्ज़िशों को मुआ़फ़ करे और उस के राज़ों को छुपाए।

कहा जाता है कि आज़ाद लोगों के सीने राज़ों की क़ब्रें हैं और येह भी कहा जाता है कि बे वुक़ूफ़ का दिल उस के मुंह में होता है और अ़क़्लमन्द की ज़बान उस के दिल में होती है।

इब्ने मोतज़ का शेर है :

وَمُسْتَوْدَعِيْ سِرًّا تَبَوَّاتُ كَتْمَهٗ فَاَوْدَعْتُهٗ صَدْرِيْ فَصَارَ لَهٗ قَبْرًا

तर्जमा : मेरे पास अपना राज़ रखवाने वाले ! मैं ने तेरे राज़ को अपने सीने में रख दिया और वोह इस लिए क़ब्र बन गया।

(4) **तारीफ़ करना :** चौथा ह़क़ येह है कि उस की ऐसी तारीफ़ करे जिस से वोह ख़ुश होता हो लेकिन ह़क़ से तजावुज़ न हो।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने उख़ुव्वत निशान है : اِذَااَحَبَّ اَحَدُكُمْ اَخَاهُ فَلْيُخْبِرْهُ "**तर्जमा :** जब तुम में से कोई अपने भाई से मह़ब्बत करे तो उसे बता दे।" (الموسوعة لابن ابی الدنیا ،کتاب الاخوان ،باب اعلام الرجل أخاه بشدة مودته اياه ،الحديث ٦٥،ج٨،ص١٦٥)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इस लिए फ़रमाया क्यूंकि येह चीज़ मह़ब्बत में इज़ाफ़े का बाइ़स है और इस माना में बड़ी अच्छी बात कही गई है :

خُذْ مِنْ خَلِيْلِكَ مَا صَفَاوَدَعِ الَّذِيْ فِيْهِ الْكَدَرُ فَالْعُمْرُ اَقْصَرُ مِنْ مُّعَاتَبَةِ الْخَلِيْلِ عَلَى الْغَيَرُ

तर्जमा : अपने दोस्त से अच्छी बातों को क़बूल करो और इस में जो बुरी बातें हों उन्हें छोड़ दो क्यूंकि ज़िन्दगी इतनी नहीं कि तुम दूसरी बातों पर दोस्तों को मलामत करते रहो। एक शेर में कहा गया है :

وَلَسْتَ بِمُسْتَبْقٍ اَخًا لَا تَلُمُّهٗ عَلٰى شَعَثٍ اَيُّ الرِّجَالِ الْمُهَذَّبُ

तर्जमा : तू अपने भाई से आगे बढ़ने वाला नहीं तू उसे उस की बुरी ह़ालत पर मलामत न कर कि कौन सा शख़्स कामिल मुहज़्ज़ब है !

www.dawateislami.net

(5) **वफ़ा और ख़ुलूस :** यानी अपने भाई से इख़्लास और वफ़ा के साथ पेश आना और इस से मुराद येह है कि उस की मह़ब्बत पर साबित क़दम रहे और उस के मरने तक उस पर मुदावमत इख़्तियार करे और उस की वफ़ात के बाद उस की औलाद और दोस्तों से दोस्ती रखे।

ह़दीसे पाक में है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक बूढ़ी औ़रत ह़ाज़िर हुई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की तकरीम की। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस बारे में पूछा गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّهَا كَانَتْ تَاْتِيْنَا اَيَّامَ خَدِيْجَةَ "**तर्जमा :** येह औ़रत ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ज़िन्दगी में हमारे पास आया करती थी।"

(المستدرك ،كتاب الايمان ،باب حسن العهد من الايمان ،الحديث ٤١،ج١،ص١٦٥)

जानना चाहिए ! हुस्ने अ़ह्द ईमान से है और करमे अ़ह्द दीन से है और तुझे हमेशा अपने भाइयों को फ़ज़ीलत देनी चाहिए न कि अपने आप को। इसी के बारे में किसी ने कहा है :

تَـذَلَّـلْ لِـمَـنْ اِنْ تَـذَلَّـلْـتَ لَـهٗ　　يَـرٰى ذَاكَ لِـلْـفَـضْـلِ لَا لِـلْـبَـلَـهِ

وَجَـانِـبْ صَـدَاقَةَ مَـنْ لَا يَـزَالُ　　عَـلَـى الْاَصْـدِقَـاءِ يَـرٰى الْـفَـضْـلَ لَـهٗ

तर्जमा : ऐसे शख़्स के सामने तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो जो इस तवाज़ोअ़ को तुम्हारी फ़ज़ीलत का बाइस समझे तुम्हें अह़मक़ न जाने और जो शख़्स अपने आप को सब दोस्तों से अफ़्ज़ल समझे उस की दोस्ती से परहेज़ करो।

मुसलमान, रिश्तेदार और पड़ोसी के हुक़ूक़

मुसलमान का ह़क़ येह है कि जब एक मुसलमान दूसरे से मुलाक़ात करे तो उसे सलाम करे, जब वोह बुलाए तो उस को जवाब दे, उस के छींकने पर يَرْحَمُكَ اللهُ कहे, बीमार हो तो इ़यादत करे, फ़ौत हो जाए तो जनाज़े में शरीक हो, जब कोई क़सम उठाए तो उस की क़सम को पूरा करे, जब वोह ख़ैर ख़्वाही चाहे तो उस की ख़ैर ख़्वाही करे, ग़ाइब हो तो ग़ैर मौजूदगी में उस की ह़िफ़ाज़त करे, उस के लिए भी वोही चीज़ पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है, और उस के लिए भी वोही ना पसन्द जाने जिसे अपने लिए ना पसन्द समझता है।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने उल्फ़त निशान है : "तुम पर मुसलमानों के चार हुक़ूक़ लाज़िम हैं : नेकी करने वाले की मदद करो, उन के गुनाहगारों के लिए बख़्शिश मांगो, पीठ फेरने वाले के लिए दुआ़ मांगो, और तौबा करने वाले से मह़ब्बत करो।" (فردوس الاخبار للديلمی ،باب الالف ،الحديث ١٥٠٢،ج١،ص٢١٥)

और मुसलमान के ह़क़ में से येह भी है कि तू किसी मुसलमान को अपने क़ौल और फ़ेल से तक्लीफ़ न पहुंचाए।

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीहत निशान है :

اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ

तर्जमा : (कामिल) मुसलमान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।

(صحیح البخاری ، کتاب الایمان ،باب المسلم من سلم المسلمون من لسانه ویده ،الحدیث ۱۰،ص۳)

नबिय्ये रेहमत, शफ़ीए उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلْمُؤْمِنُ مَنْ اَمِنَهُ الْمُؤْمِنُوْنَ عَلٰى اَنْفُسِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ

तर्जमा : (कामिल) मोमिन वोह है जिस से एह्ले ईमान अपने नफ़्सों और मालों को महफ़ूज़ व मामून समझें।

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عبد اللّٰه بن عمرو بن العاص ،الحدیث ٦٩٤٢،ج٢،ص٦٥٤)

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

اَلْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ السُّوْءَ وَاجْتَنَبَهٗ

तर्जमा : मुहाजिर वोह है जो बुराई छोड़ दे और इस से इजतिनाब करे।

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عبد اللّٰه بن عمرو بن العاص ،الحدیث ٦٩٤٢،ج٢،ص٦٥٤)

मुसलमान के हुक़ूक़ में से एक येह भी है कि वोह हर मुसलमान के लिए तवाज़ोअ़ करे किसी पर तकब्बुर न करे, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी अकड़ने वाले मुतकब्बिर को पसन्द नहीं फ़रमाता और अगर कोई दूसरा उस पर तकब्बुर से पेश आए तो बरदाश्त करे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ۝

(پ۹،الاعراف:۱۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेहबूब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

इन हुक़ूक़ में से एक येह भी है कि न अपने बारे में लोगों की शिकायात सुने, न किसी दूसरे के बारे में और न ख़ुद ऐसा करे।

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ "**तर्जमा :** चुग़ुलख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।"

(صحیح البخاری ، کتاب الادب ،باب مایکره من النمیمة ،الحدیث٦٠٥٦، ص٥١٢)

इन हुक़ूक़ में से एक येह भी है कि जिस आदमी को पहचानता हो उस से तीन दिन से ज़्यादा तर्के तअ़ल्लुक़ न करे और किसी के पास उस की इजाज़त के बिग़ैर न जाए और तमाम लोगों से हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आए और मशाइख़ की इ़ज़्ज़त करे, बच्चों पर रहम करे, तमाम लोगों से ख़न्दा पेशानी से मिले और किसी मुसलमान से ऐसा वादा न करे जिसे पूरा न कर सके।

इन हुक़ूक़ में से एक येह भी है कि अगर कोई सूरत बनती हो तो मुसलमानों के दरमियान सुल्ह कराए।

www.dawateislami.net

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "क्या मैं तुम्हें रोज़ा, नमाज़ और सदक़ा से अफ़्ज़ल चीज़ के बारे में न बताऊं ?" सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आपस में सुल्ह करवाना।" (سنن ابی داؤد ،کتاب الادب ،باب فی اصلاح ذات البین ،الحدیث٤٩١٩،ص١٥٨٤)

और वोह मुसलमानों के ऐबों को छुपाए। उन हुक़ूक़ में से एक येह भी है कि वोह तोहमत की जगहों से बचे और हर हाजत मन्द मुसलमान के लिए उस शख़्स के पास सिफ़ारिश करे जो उस की इ़ज़्ज़त करता है और गुफ़्तगू करने से पेहले सलाम करे, जहां तक मुमकिन हो मुसलमान भाई की इ़ज़्ज़त और माल को दूसरे के ज़ुल्म से बचाए।

इन हुक़ूक़ में येह भी है कि जब किसी शरीर से वासिता पड़े तो उसे बरदाश्त करे और इस से बचे और उन हुक़ूक़ में येह भी है कि मुसलमानों की क़ब्रों की ज़ियारत करे और उन के मुर्दों के लिए दुआ़ मांगे।

जहां तक पड़ोसी के हुक़ूक़ का तअ़ल्लुक़ है तो जान लो ! पड़ोसी के हुक़ूक़ आ़म मुसलमानों के हुक़ूक़ से भी ज़्यादा है।

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "पड़ोसी तीन क़िस्म के हैं : **एक** वोह पड़ोसी जिस का एक ही ह़क़ है **दूसरा** वोह है जिस के दो ह़क़ हैं और **तीसरा** वोह जिस के तीन हुक़ूक़ हैं और वोह जिस के तीन हुक़ूक़ हैं, वोह मुसलमान और क़रीबी रिश्तेदार है और जिस के दो ह़क़ हैं वोह मुसलमान है और जिस का एक ह़क़ है वोह मुशरिक है।" (حلیة الاولیاء ،عطاء بن میسرة ،الحدیث٦٩٤٨،ج٥،ص٢٣٥)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी होने की वज्ह से मुशरिक के ह़क़ को साबित करना पड़ोसी के ह़क़ की ताकीद पर दलालत करता है।

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है :

مَازَالَ جِبْرِيْلُ يُوْصِيْنِيْ بِالْجَارِ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ سَيُوَرِّثُهٗ

तर्जमा : ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मुझे हमेशा पड़ोसी के बारे में वसिय्यत करते रहे यहां तक कि मैं ने ख़याल किया कि वोह उसे वारिस बना कर छोड़ेंगे।

(صحیح البخاری ،کتاب الادب ،باب الوصاءة بالجار ،الحدیث٦٠١٤،ص٥٠٩)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने करामत निशान है :

مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْيُكْرِمْ جَارَهٗ

तर्जमा : जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे अपने पड़ोसी की इ़ज़्ज़त करनी चाहिए।

(صحیح البخاری ،کتاب الادب ،باب من کان یؤمن باللّٰه.....الخ ،الحدیث٦٠١٩،ص٥٠٩)

www.dawateislami.net

क़रीबी रिश्तेदारों के हुक़ूक़ के बारे में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे पाक है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मैं रेह़मान हूं और इस रह़म (यानी रिश्तेदारी) का नाम मैं ने अपने नाम से निकाला है पस जिस ने इसे जोड़ा मैं उसे जोडूंगा और जिस ने इसे तोड़ा मैं उसे तोड़ दूंगा।"

(سنن ابی داؤد ، کتاب الزکاۃ ،باب فی صلۃ الرحم ،الحدیث ١٦٩٤،ص١٣٤٩،بتغیر)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाया : "ऐ मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ! जो शख़्स अपने वालिदैन से अच्छा सुलूक करे अगर्चे मेरा ना फ़रमान हो मैं उसे नेकोकार लिख देता हूं और जो वालिदैन की ना फ़रमानी करे अगर्चे मेरा फ़रमां बरदार हो मैं उसे ना फ़रमान लिख देता हूं।"

ग़ुलामों के हुक़ूक़

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी आख़िरी वसिय्यत में इरशाद फ़रमाया : "अपने ग़ुलामों और लोंडियों के सिलसिले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो उन्हें वोही खिलाओ जो ख़ुद खाते हो और वोही लिबास पेहनाओ जो ख़ुद पेहनते हो, जिस काम की उन्हें त़ाक़त नहीं उस की तक्लीफ़ न दो पस उन में से जो पसन्द हों उन्हें रोक लो और जो पसन्द न हों उन्हें बेच दो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ को अ़ज़ाब न दो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें उन का मालिक बनाया है, अगर वोह चाहता तो उन्हें तुम्हारा मालिक बना देता।"

(صحیح البخاری ، کتاب الایمان ،باب المعاصی من امرالجاھلیۃ .....الخ ،الحدیث ٣٠،ص٤ ،مختصراً)

दावते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **ग़ौरो फ़िक्र** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पेहली तारीख़ को अपने यहां के (दावते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिए कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

बाब : 16 गोशा नशीनी का बयान

जान लीजिए ! गोशा नशीनी इख़्तियार करने के बारे में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है । बाज़ उ़लमा ने गोशा नशीनी को पसन्द किया है और इसे मेल जोल से अफ़्ज़ल क़रार दिया है, इन उ़लमा में ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान ख़व्वास और ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم) शामिल हैं, जबकि अक्सर ताबेईन ने मेल जोल को पसन्द किया है क्यूंकि दोस्तों का ब कसरत होना नेकी व तक़्वा के कामों में मुआ़विन होता है और उन उ़लमा ने उख़ुव्वत और उल्फ़त के बारे में वारिद होने वाले नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से इस्तिद्लाल किया है कि जब नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स पेश किया गया जो पहाड़ों में रेह कर इ़बादत करना चाहता था तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "न तुम ऐसा करो और न ही तुम में से कोई दूसरा ऐसा करे कि तुम्हारा इस्लाम के बाज़ मक़ामात पर सब्र करना चालीस साल तक (तन्हा) इ़बादत करने से अफ़्ज़ल है ।"

(الاستیعاب فی معرفة الأصحاب ،باب حرف العین ،الرقم۲۰۵۲ـعسعس بن سلامة التمیمی ،ج۳،ص۳۰۹)

और जिन्हों ने गोशा नशीनी को अफ़्ज़ल क़रार दिया है मसलन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तो इन्हों ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से इस्तिद्लाल किया है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर जुहन्नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नजात क्या है ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَيَسَعْكَ بَيْتُكَ، وَ اَمْسِكْ عَلَيْكَ لِسَانَكَ، وَابْكِ عَلٰی خَطِيْئَتِكَ

तर्जमा : तुम्हें अपना घर काफ़ी हो, अपनी ज़बान को क़ाबू में रखो और अपनी ख़त़ाओं पर आंसू बहाओ ।

(جامع الترمذی ،ابواب الزهد ،باب ماجاء فی حفظ اللسان ،الحدیث۲۴۰۶،ص۱۸۹۳بتغیرٍ)

गोशा नशीनी के फ़वाइद व नुक़्सानात और इस की फ़ज़ीलत का वाज़ेह़ बयान

जान लीजिए ! इस मुआ़मले में इख़्तिलाफ़ लोगों के मुख़्तलिफ़ होने की बुन्याद पर है ।

फ़वाइद : गोशा नशीनी इख़्तियार करने से इ़बादत पर पाबन्दी और इ़ल्मी तरबियत होती है और इन्सान को मेल जोल की वज्ह से सरज़द होने वाले गुनाहों से नजात मिलती है जैसे रिया, और ग़ीबत में मुब्तला होना, नेकी का हुक्म न देना, और बुराई से मन्अ़ न करना को छोड़ना और त़बीअ़त

www.dawateislami.net

में बुरे अख़्लाक़ का आना वग़ैरा वग़ैरा और इसी त़रह़ आदमी सन्अ़त व ह़िर्फ़त के मुआ़मले में दुन्यावी मसालेह़ के लिए फ़ारिग़ हो जाता है।

पेहला फ़ाएदा : इन्सान इ़बादत, ग़ौरो फ़िक्र, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत, उस की बारगाह में मुनाजात और काएनात के सरबस्ता राज़ों से आगाह होने के लिए फ़ारिग़ हो जाता है और येह चीज़ गोशा नशीनी और मख़्लूक़ से जुदाई इख़्तियार करने से ही ह़ासिल होती हैं, इसी बिना पर बाज़ हुकमा का क़ौल है कि गोशा नशीनी पर वोही शख़्स क़ादिर हो सकता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब से उन्स रखता है और जो लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं वोही ज़िक्रे ख़ुदावन्दी की वज्ह से दुन्या में आराम पाते हैं और ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ करने वाले ज़िक्र के साथ ज़िन्दा रेहते हैं और इसी के ज़िक्र पर फ़ौत होते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के साथ साथ उस से डरते हैं और इस बात में कोई शक नहीं कि लोगों से मेल जोल उन के लिए ज़िक्र और फ़िक्र में रुकावट बनता है, इसी लिए नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इब्तिदाअन ग़ारे ह़िरा में सब से अलग हो कर गोशा नशीनी फ़रमाते थे।

जब आदमी ख़ल्वत पर मुदावमत इख़्तियार कर लेता है तो ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़रमान के मुत़ाबिक़ उस के मुआ़मले की इन्तिहा उस मक़ाम पर होती है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "मैं तीस साल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हम कलाम हूं और लोग समझते हैं कि मैं उन से गुफ़्तगू कर रहा हूं।"

किसी (गोशा नशीन) से कहा गया : "तुझे तन्हा रेहने पर किस चीज़ ने उभारा ?" उस ने जवाब दिया : "मैं तन्हा नहीं हूं बल्कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हम नशीन हूं जब मैं चाहता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से हम कलाम हो तो मैं उस की किताब को पढ़ता हूं और जब मैं उस से हम कलाम होना चाहता हूं तो नमाज़ पढ़ता हूं।"

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बैठे हुवे थे कि आप के पास ह़ज़रते सय्यिदुना हरिम बिन ह़य्यान ह़ाज़िर हुवे आप ने उन से पूछा : "कैसे आना हुवा ?" उन्हों ने जवाब दिया : "मैं आप से उन्स ह़ासिल करने आया हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं किसी ऐसे आदमी को नहीं जानता जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की मारिफ़त भी रखता हो और फिर किसी दूसरे से उन्स ह़ासिल करे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जब मैं रात होते देखता हूं तो ख़ुश होता हूं और केहता हूं कि अब मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ख़ल्वत इख़्तियार करूंगा और जब दिन

www.dawateislami.net

निकलते देखता हूं तो लोगों से मुलाक़ात को ना पसन्द जानने की वज्ह से वह़शत मह़सूस करता हूं कि अब वोह चीज़ आ रही है जो मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल कर देगी।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار इरशाद फ़रमाते हैं : "जो शख़्स मख़्लूक़ से गुफ़्तगू के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम कलामी से मानूस नहीं होता वोह कम इ़ल्म और दिल का अन्धा है और इस ने अपनी उ़म्र ज़ाएअ़ कर दी।"

दूसरा फ़ाएदा : गोशा नशीनी की वज्ह से इन्सान उन गुनाहों से मह़फ़ूज़ रेहता है जो उ़मूमन मेल जोल की वज्ह से सरज़द होते हैं मसलन ग़ीबत और रियाकारी में मुब्तला होना, नेकी का हुक्म न देना और न ही बुराई से मन्अ़ करना और इन सब का ज़िक्र अपने मक़ाम पर आएगा।

ह़ासिले कलाम येह है कि मुत़लक़ त़ौर पर येह हुक्म लगाना ना मुमकिन है कि गोशा नशीनी और मेल जोल में से एक बेहतर है क्यूंकि येह लोगों के मरातिब के एतिबार से मुख़्तलिफ़ होता है और उन में ह़ालते एतिदाल ही बेहतर है कि इन्सान इस क़दर तन्हा न हो जाए कि मेल जोल से ह़ासिल होने वाले फ़वाइद खो दे और न ही लोगों से इस क़दर बे तकल्लुफ़ हो जाए कि तन्हाई के फ़वाइद ज़ाएअ़ कर दे और गोशा नशीनी से मुराद येह है कि वोह अपने शर से लोगों को दूर रखे और मुकम्मल त़ौर पर अपने रब عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और लम्बी उम्मीदें न बांधे पस लम्बी उम्मीदें न बांधने की वज्ह से उस का नफ़्स पुर अम्न रहेगा और तन्हाई के ज़रीए़ जिहादे अक्बर की निय्यत करे और इस से मुराद नफ़्स से जिहाद करना है जैसा कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इरशाद फ़रमाया : رَجَعْنَا مِنَ الْجِهَادِ الْاَصْغَرِ اِلَى الْجِهَادِ الْاَكْبَرِ "**तर्जमा :** हम जिहादे असग़र से जिहादे अक्बर की त़रफ़ लौट रहे हैं।" وَاللّٰهُ اَعْلَم इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَاِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَالْمَآبُ

बाब : 17 सफ़र के आदाब

जान लीजिए ! सफ़र की दो अक़्साम हैं : (1) सफ़रे ज़ाहिर (2) सफ़रे बातिन।

(1) सफ़रे ज़ाहिर : इस से मुराद ज़मीन के अत़राफ़ व अकनाफ़ की त़रफ़ जाना है।

(2) सफ़रे बातिन : इस से मुराद **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ जाना है और इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का फ़रमान दलालत करता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़िकायत करते हुवे क़ुरआने मजीद में ज़िक्र फ़रमाया :

وَقَالَ اِنِّیْ ذَاهِبٌ اِلٰی رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ 0 (پ۲۳، الصّٰفّٰت: ۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कहा मैं अपने रब की त़रफ़ जाने वाला हूं अब वोह मुझे राह देगा।

दोनों सफ़रों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान दलालत करता है :

سَنُرِیْهِمْ اٰیٰتِنَا فِی الْاٰفَاقِ وَفِیْۤ اَنْفُسِهِمْ (پ۲۵، حٰمٓ السجدة: ۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अभी हम उन्हें दिखाएंगे अपनी आयतें दुन्या भर में और ख़ुद उन के आपे में।

सब से बड़ा सफ़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बातिनी सफ़र है और येह मुसाफ़िर हमेशा ऐसी जन्नत से लुत़्फ़ अन्दोज़ होता है जिस की चौड़ाई तमाम आस्मानों और ज़मीनों के बराबर है और ऐसी मनाज़िल से बहरावर होता है जिस की घाटियां और चश्मे मुसाफ़िरों की कसरत से तंग नहीं होते बल्कि दो गुने हो जाते हैं और जो शख़्स इस सफ़र से मह़रूम हो वोह तमाम भलाई से मह़रूम होता है और वोह ऐसी पस्ती में रेहता है जिस से कभी भी बुलन्द नहीं होगा और अह़ादीस व आसार में वारिद वोह तमाम आदाब व सुनन इसी सफ़र (यानी सफ़रे आख़िरत) के मुतअ़ल्लिक़ हैं। जबकि ज़ाहिरी सफ़र जो कि चलने और मनाज़िल त़ै करने पर मुश्तमिल होता है, हम इस के फ़वाइद व आदाब चन्द फ़ुसूल में बयान करते हैं।

सफ़र करने में क्या निय्यत हो ?

सब से पेहले बन्दा सफ़र के इरादे के लिए अपनी निय्यत दुरुस्त करे, येह सफ़र ह़ज के लिए हो या किसी आ़लिम या वली की ज़ियारत के लिए हो, ख़्वाह वोह ज़िन्दा हो या वफ़ात पा गया हो, या सरह़दों पर ठहरने और उन की ह़िफ़ाज़त के लिए सफ़र करे या दीनो दुन्या में ख़लल डालने वाली किसी ग़रज़ के लिए हो या ह़लाल रोज़ी कमाने के लिए तिजारत करने का मक़्सद हो यहां तक कि उस की कोई ह़रकत सिर्फ़ दुन्या के लिए न हो वरना येह चीज़ उस के सफ़र की थकावट और मेह़नत को ज़ाएअ़ कर देगी।

जान लो ! बेशक नफ़्स अह्वाल के मुख़्तलिफ़ होने की वज्ह से अपने रज़ाइल और ख़बाइस ज़ाहिर करता है और येह चीज़ सफ़र में बहुत ज़्यादा पाई जाती है और हम ने कुछ आदाबे सफ़र किताबुल ह़ज में बयान कर दिए हैं।

सफ़र में जो रुख़्सत होती है वोह तीन दिन तक मोज़ों पर मस्ह़ करना है जबकि उन मोज़ों को वुज़ू मुकम्मल करने के बाद पेहना हो और फ़र्ज़ नमाज़ के लिए (पानी न मिलने की सूरत में) तयम्मुम करना, फ़र्ज़ नमाज़ में क़स्र करना, (ज़ोहर व अ़स्र और मग़रिब व इशा को अपने अपने वक़्तों में) जम्अ़ करना, सुवारी पर नवाफ़िल अदा करना, (सफ़र में) पैदल चलते हुवे नफ़्ल अदा करना (येह शवाफ़ेअ़ के नज़दीक है) और रोज़ा इफ़्तार करना है। सफ़र करने वाले को चाहिए कि क़िब्ले के दलाइल और जिस त़रफ़ सफ़र कर रहा है उस की मनाज़िल के बारे में जान ले।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بالصواب وَاِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَالْمَآبُ इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा।

रह़्म दिल लोगों की बरकत और संगदिल लोगों की नुहूसत

(1).....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत के रेह़्म दिल लोगों से भलाई त़लब करो, उन के क़रीब रहा करो और संगदिल लोगों से भलाई न मांगो क्यूंकि उन पर लानत उतरती है। ऐ अ़ली ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भलाई को पैदा फ़रमाया तो उस के एह्ल (यानी अफ़राद) को भी पैदा फ़रमाया, फिर भलाई को उन का मेह़बूब कर दिया और इस पर अ़मल करना उन्हें मेह़बूब बना दिया नीज़ उन्हें उस की त़लब में यूं लगा दिया जैसे वोह पानी को क़ह़्त़ ज़दा ज़मीन की त़रफ़ फेर देता है कि उस पानी के ज़रीए वहां वालों को जिला बख़्शे और बेशक जो लोग दुन्या में भलाई वाले होंगे वोही आख़िरत में भी भलाई वाले होंगे।"

(المستدرك، كتاب الرقاق، باب اشقى الاشقياء من اجمتع.....الخ، الحديث: ٧٩٧٨، ج٥، ص٤٥٨)

(2).....दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत के रेह़्म दिल लोगों से अपनी मुरादें मांगो, उन के क़रीब रहा करो क्यूंकि मेरी रेह़मत उन्हीं में है और संगदिल लोगों से मुरादें न मांगो क्यूंकि वोह मेरी नाराज़गी के मुन्तज़िर हैं।"

(كنزالعمال، كتاب الزكاة، قسم الاقوال، الحديث: ١٦٨٠٢، ج٦، ص٢٢٠ "الفضل "بدله" الحوائج

बाब : 18 समाअ़ और वज्द का बयान[1]

जान लो ! समाअ़ के बारे में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है। बाज़ उ़लमा इसे ह़राम क़रार देते हैं और बाज़ मुबाह़ क़रार देते हैं, हम समाअ़ की ह़क़ीक़त और इस के जवाज़ के दलाइल बयान करेंगे पस हम केहते हैं समाअ़ से मुराद अच्छी और मौज़ूनी आवाज़ सुनना है जिस का माना समझा जा सके और वोह दिल को ह़रकत दे। इस का मक़्सद सिर्फ़ कानों और दिल का लज़्ज़त ह़ासिल करना है जिस त़रह़ सब्ज़े को देखने से आंखों को लज़्ज़त मिलती है और दिल को भी लज़्ज़त ह़ासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

يَزِيْدُ فِى الْخَلْقِ مَايَشَآءُ ط (پ ٢٢،فاطر:١) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बढ़ाता है आफ़रीनिश (पैदाइश) में जो चाहे।

मुफ़स्सिरीन ने इस से मुराद अच्छी आवाज़ ली है। शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के बारे में फ़रमाया : لَقَدْ اُوْتِىَ مِزْمَارًامِنْ مَزَامِيْرِ آلِ دَاوٗدَ **"तर्जमा :** उन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के नग़्मात में से एक नग़्मा दिया गया।" (صحيح البخارى ،كتاب فضائل القرآن ،باب حسن الصوت بالقراءة للقرآن ،الحديث٥٠٤٨،ص٤٣٧)

और ह़दीसे मुबारक में इरशाद है : مَابَعَثَ اللّٰهُ نَبِيًّاالَّاوَهُوَحُسْنُ الصَّوْتِ **"तर्जमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो नबी भेजा वोह ख़ुश आवाज़ था।" (الشمائل المحمدية للترمذى ،باب ماجاء فى قراءة رسول الله ﷺ ،الحديث٣٠٣،ص١٨٣)

येह बात केहना मुह़ाल है कि अच्छी आवाज़ से पढ़ना सिर्फ़ तिलावते क़ुरआन के लिए जाइज़ है क्यूंकि बुलबुल की आवाज़ सुनना जाइज़ है पस जब अच्छी आवाज़ का सुनना मुबाह़ है तो उस का मौज़ूनी आवाज़ का सुनना भी ह़राम न होगा और वोह कैसे ह़राम हो सकती है जबकि बुलबुल की आवाज़ का भी एक वज़्न होता है जिस की इब्तिदा और इन्तिहा मुतनासिब होती है तो इस अच्छी

1....**सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى अपनी शोहरए आफ़ाक़ किताब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 स. 154** पर नक़्ल फ़रमाते हैं : "मुतसव्विफ़ा ज़माना कि मज़ामीर के साथ क़व्वाली सुनते हैं और कभी उछलते कूदते हैं और नाचने लगते हैं, इस क़िस्म का गाना बजाना नाजाइज़ है, ऐसी मह़फ़िल में जाना और वहां बैठना नाजाइज़ है। मशाइख़ से इस क़िस्म के गाने का कोई सुबूत नहीं। जो चीज़ मशाइख़ से साबित है वोह फ़क़त़ येह है कि अगर कभी किसी ने उन के सामने कोई ऐसा शेर पढ़ दिया जो उन के ह़ाल व कैफ़ के मुवाफ़िक़ है तो उन पर कैफ़ व रिक़्क़त त़ारी हो गई और बे ख़ुद हो कर खड़े हो गए और इस ह़ाले वारफ़्तगी में उन से ह़रकाते ग़ैर इख़्तियारिया सादिर हुवे, इस में कोई ह़रज नहीं।

मशाइख़ व बुज़ुर्गाने दीन के अह़वाल और इन मुतसव्विफ़ा के ह़ाल व क़ाल में ज़मीनो आस्मान का फ़र्क़ है। यहां मज़ामीर के साथ मह़फ़िलें मुन्अ़क़िद की जाती हैं, जिन में फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार का इजतिमाअ़ होता है, ना एह़लों का मज्मअ़ होता है, गाने वालों में अक्सर बे शरअ़ होते हैं, तालियां बजाते और मज़ामीर के साथ गाते हैं और ख़ूब उछलते, कूदते, थिरकते हैं, इस का नाम ह़ाल रखते हैं। इन ह़रकात को सूफ़ियाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى) के अह़वाल से क्या निस्बत, यहां सब इख़्तियारी हैं वहां बे इख़्तियारी थीं।" (بحواله الفتاوى الهندية كتاب الكراهية، الباب السابع عشر فى الغناء ،ج٥، ص٣٥٢)

www.dawateislami.net

आवाज़ का आदमी या परिन्दे वग़ैरा के ह़ल्क़ से निकलने का हुक्म मुख़्तलिफ़ नहीं होना चाहिए पस जो आवाज़ें मुख़्तलिफ़ अजसाम से निकलती हैं मसलन त़ब्ल, क़ज़ीब, दफ़, और बांसरी की आवाज़ें, इन्हें परिन्दों की आवाज़ों पर क़ियास करना चाहिए तो इन में से सिर्फ़ उसे मुस्तस्ना किया जाएगा जिस की हुरमत पर नस्स वारिद हुई हो और येह इसी त़रह़ है जैसे औतार और मज़ामीर वग़ैरा शराब पीते वक़्त जिन को बजाने की आ़दत थी।

जब शराब पीने से मन्अ़ किया गया तो उस के छुड़ाने में मुबालग़ा करते हुवे उस के तवाबेअ़ से भी मन्अ़ कर दिया गया यहां तक कि इब्तिदा में मटके (यानी शराब के बरतन) तोड़ने की ज़रूरत पेश आई। और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से अश्आ़र को ख़ुश इल्ह़ानी के साथ पढ़ना हमारे मौक़िफ़ के जाइज़ होने पर दलील है यहां तक कि सह़ीह़ बुख़ारी और सह़ीह़ मुस्लिम में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब येह ह़ज़रात मदीने पहुंचे तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हो गए। जब आप से बुख़ार उतरा तो आप ने बुलन्द आवाज़ से येह अश्आ़र पढ़े :

اَلَا لَيْتَ شِعْرِيْ هَلْ اَبِيْتَنَّ لَيْلَةً ۔۔۔ بِوَادٍ وَحَوْلِيْ اِذْخِرٌ وَجَلِيْلٌ

وَهَلْ اَرِدَنْ يَوْمًا مِيَاهَ مِجَنَّةٍ ۔۔۔ وَهَلْ تَبْدَوَنْ لِيْ شَامَةٌ وَطَفِيْلٌ

तर्जमा : काश ! मुझे मालूम होता क्या मैं उस वादी में ठहर सकूंगा जहां मेरे इर्द गिर्द इज़ख़िरुन और जलीलुन (घास का नाम) होंगी और क्या मैं किसी दिन मिजन्नह (जगह का नाम) के चश्मे पर उतरूंगा और क्या शामतुन और त़फ़्यलु (दो पहाड़ों के नाम) मेरे सामने आएंगे।

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مقدم النبی ﷺ واصحاب المدینة، الحدیث:۳۹۲۶،ص۳۲۰)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब बुख़ार होता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यूं केहते :

كُلُّ امْرِيٍٕ مُصَبَّحٌ فِيْ اَهْلِهٖ ۔۔۔ وَالْمَوْتُ اَدْنٰى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهٖ

तर्जमा : हर शख़्स अपने घरवालों के पास सुब्ह़ करता है और मौत उस के जूते के तस्मे से भी ज़्यादा क़रीब होती है। (صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مقدم النبی ﷺ واصحاب المدینة، الحدیث:۳۹۲۶،ص۳۲۰)

सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं अ़र्ज़ की : اَللّٰهُمَّ اِنَّ الْعَيْشَ عَيْشُ الْاٰخِرَةِ فَارْحَمِ الْاَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ **"तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है पस तू अन्सार और मुहाजिरीन पर रह़्म फ़रमा।"

(صحیح البخاری، کتاب الجهاد، باب التحریض علی القتال، الحدیث:۲۸۳٤،ص۲۲۸)

समाअ़ के आसार

समाअ़ इस एतिबार से कि येह दिल को ह़रकत देने वाला है और जो चीज़ इस पर ग़ालिब होती है उस को उभारता है। पस हम केहते हैं कि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक राज़ है कि उस ने

www.dawateislami.net

बा वज़्न आवाज़ों की रूह़ के साथ एक मुनासबत रखी है यहां तक कि येह रूह़ में एक अ़जीब तासीर पैदा कर देती हैं कभी तो नग़मात ग़मगीन कर देते हैं, कभी ख़ुश करते और कभी रुला देते हैं और कभी सुन कर हंसी आती है, और बाज़ नग़मात आज़ा में अ़जीबो ग़रीब ह़रकात पैदा कर देते हैं। येह गुमान नहीं करना चाहिए कि येह माना और मफ़्हूम के समझने की वज्ह से होता है बल्कि ह़ैवानात में इस की तासीर देखी गई है ख़ुसूसन ऊंट में। और बच्चे के बारे में देखा गया है कि न तो वोह बात कर सकता है न समझ सकता है (मगर लोरी सुन कर चुप हो जाता है ह़ालांकि वोह उसे समझता नहीं) और जिन साज़ों की आवाज़ें समझ नहीं आतीं उन की तासीर का मुशाहदा है ख़ुसूसन ऊंट, कि जब कभी उन पर बयाबान लम्बे हो जाते हैं और बोझ तले दबे होने की वज्ह से थक जाते हैं तो हुदी ख़्वां के अश्आ़र सुन कर गर्दन लम्बी कर लेते हैं और सफ़र तै कर लेते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र मुह़म्मद बिन दावूद दीनवरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जो रक़्क़ी के नाम से मारूफ़ हैं फ़रमाते हैं कि मैं जंगल में था, मुझे एह्ले अ़रब का एक क़बीला मिला, उन में से एक शख़्स ने मेरी दावत की, मुझे एक ख़ैमे में ले गया। मैं ने वहां एक सियाह ग़ुलाम को बेड़ियों में जकड़ा हुवा देखा, घर के सामने चन्द ऊंट मरे पड़े थे। मैं ने एक ऊंट को देखा जो निहायत कमज़ोर और मरने के क़रीब था। मुझ से उस ग़ुलाम ने कहा : आप मेहमान हैं और सिफ़ारिश कर सकते हैं पस आप मेरे लिए सिफ़ारिश करें क्यूंकि मेरा आक़ा मेहमान की इ़ज़्ज़त करता है और इस की सिफ़ारिश रद नहीं करता। हो सकता है वोह मेरे पाउं से बेड़ियां खोल दे, जब खाना सामने आया तो मैं ने खाने से इन्कार कर दिया और कहा : मैं उस वक़्त तक नहीं खाऊंगा जब तक इस ग़ुलाम के बारे में सिफ़ारिश न कर लूं। तो वोह केहने लगा : इस ग़ुलाम ने मेरा सारा माल हलाक कर दिया। मैं ने पूछा : इस ने क्या किया? उस ने जवाब दिया : येह ख़ुश आवाज़ है, मैं इन ऊंटों के किराये पर गुज़र अवक़ात करता था, इस ने इन पर बहुत भारी बोझ लादा और हुदी ख़्वानी करता रहा यहां तक कि इस की ख़ुश आवाज़ी की वज्ह से एक रात में तीन रातों की मसाफ़त तै हो गई, जब बोझ उतारा गया तो इस ऊंट के इ़लावा तमाम ऊंट मर गए लेकिन चूंकि आप मेरे मेहमान हैं इस लिए मैं आप की इ़ज़्ज़त करते हुवे येह ग़ुलाम आप को हिबा करता हूं। मैं ने उस की आवाज़ सुननी चाही, सुब्ह़ हुई तो मैं ने उस ग़ुलाम से कहा : जो ऊंट फ़ुलां कूंएं से पानी निकालता है उस के साथ हुदी ख़्वानी करो। जब उस ने अपनी आवाज़ बुलन्द की तो ऊंट रस्सियां तोड़ कर इधर उधर भागने लगा और मैं भी मुंह के बल गिर पड़ा, मेरा ख़याल है कि मैं ने इस से ज़्यादा अच्छी आवाज़ नहीं सुनी।

समाअ़ की तासीर अ़जीब होती है और जिसे समाअ़ ह़रकत न दे वोह नाक़िस, राहे एतिदाल से हटा हुवा और रूह़ानिय्यत से दूर है। परिन्दे ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْهِ السَّلَام की आवाज़ सुनने के लिए उन के सर के ऊपर (यानी फ़ज़ा) में खड़े हो जाते थे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "समाअ़ दिल में वोह चीज़ नहीं डालता जो उस में न हो बल्कि समाअ़ का काम दिल में मौजूद चीज़ को ह़रकत देना है पस **नौह़े की**

www.dawateislami.net

आवाज़ मकरूह है क्यूंकि येह मज़मूम चीज़ को ह़रकत देता है और वोह फ़ौत होने वाले पर ग़म का इज़हार करना है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

لِكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ (پ۲۷، الحدید:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : इस लिए कि ग़म न खाओ उस पर जो हाथ से जाए।

शादी और वलीमा, अ़क़ीक़ा वग़ैरा ख़ुशी के मवाक़ेअ़ पर समाअ़ **मकरूह नहीं** क्यूंकि इस के ज़रीए़ मुबाह़ या मुस्तह़ब ख़ुशी में इज़ाफ़ा होता है, इस बात पर येह रिवायत दलालत करती है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्के से (मदीनए त़य्यिबा) तशरीफ़ लाए तो औ़रतों ने दफ़ बजा कर ख़ुश आवाज़ी से येह कलाम पढ़ा :

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعِ

तर्जमा : सनिय्यातिल वदाअ़ (यानी वोह पहाड़ियां जहां से मेहमानों को अल वदाअ़ किया जाता था) से हम पर चौदहवीं का चांद तुलूअ़ हुवा और जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पुकारने वाला पुकारे हम पर शुक्र अदा करना लाज़िम है।

इस पर सह़ीह़ बुख़ारी और सह़ीह़ मुस्लिम की रिवायत भी दलालत करती है उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है वोह फ़रमाती हैं कि "(कमसिनी में) मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे अपनी चादर मुबारक में छुपाए हुवे थे और मैं उन ह़ब्शियों को देख रही थी जो मस्जिद में खेल (यानी जंगी मश्क़ें कर) रहे थे यहां तक कि मैं ख़ुद ही थक गई।"

सह़ीह़ बुख़ारी और सह़ीह़ मुस्लिम में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मेरे पास तशरीफ़ लाए और मिना के अय्याम में मेरे पास दो (ना बालिग़) बच्चियां थीं जो दफ़ बजाती और नाचती थीं और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने आप को चादर से ढांप रखा था। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इन्हें झिड़क दिया तो नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने चेहरए मुबारक से चादर हटा कर फ़रमाया : دَعْهُمَا يَا اَبَا بَكْرٍ فَاِنَّهَا اَيَّامُ عِيْدٍ "**तर्जमा :** ऐ अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ! इन्हें छोड़ दो, येह ईद के दिन हैं।"

(صحیح مسلم، کتاب صلاۃ العیدین، باب الرخصۃ فی اللعب .....الخ، الحدیث۲۰۶۳، ص۸۱۷)

इसी त़रह़ एक और ह़दीस में है : वोह दोनों (ना बालिग़) बच्चियां गाती नाचती थीं। येह तमाम उमूर समाअ़ के जवाज़ पर क़त़ई त़ौर पर दलालत करते हैं और औ़रतों की आवाज़ (के सुनने) के मुबाह़ होने पर दलालत करते हैं जबकि (सुनने से) फ़ितने का अन्देशा न हो।

पस समाअ़ दिल के जज़्बात को उभारता है अगर इस के दिल में जाइज़ इ़श्क़ हो तो इस का उभारना जाइज़ है और अगर इ़श्क़ ह़राम हो तो उभारना नाजाइज़ है और येह समाअ़ एह्ले ग़फ़्लत का होता है।

www.dawateislami.net

उन लोगों का समाअ़ जो एह्ले दिल हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत और इस की मुलाक़ात के इश्तियाक़ में मश्हूर हैं वोह जिस चीज़ को भी देखते हैं उस में उस ज़ाते पाक का दीदार करते हैं जब भी कोई चीज़ उन के कानों को खट खटाती है तो वोह उसे उसी ज़ात से या उस के ह़वाले से समझते हैं तो उन लोगों का समाअ़ उन के इश्क़ और मह़ब्बत को मज़ीद पुख़्ता करता और शौक़ को उभारता है और दिल के लिए चक़माक़ (यानी आग जलाने वाले पथ्थर) का काम देता है और ऐसे मुकाशफ़ात और लत़ाइफ़ को निकालता है जो बयान से बाहर हैं उन को वोही पहचानता है जो उन को चखता है और जिस की ह़िस चखने से आ़री होती है वोह उन का इन्कार करता है सूफ़िया की ज़बान में उसे वज्द कहा जाता है और जो चीज़ भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत और इस की मुलाक़ात के शौक़ को बढ़ाती है अगर्चे वोह फ़राइज़ में से न भी हो फिर भी कम अज़ कम मुबाह़ात में से (ज़रूर) होगी और येह कैसे नाजाइज़ हो सकता है ह़ालांकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ में भी इसी त़रफ़ इशारा है, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ حُبَّکَ وَحُبَّ مَنْ اَحَبَّکَ وَحُبَّ مَایُقَرِّبُنِیْ اِلٰی حُبِّکَ "तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी मह़ब्बत, अपने मुह़िब्बीन की मह़ब्बत और उन लोगों की मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमा जो मुझे तेरी मह़ब्बत के क़रीब कर दे ।" (المعجم الكبير، الحديث ٢١٦، ج ٢٠، ص ١٠٩، "اللهم ارزقنی" بدله "اللهم انی أسألك")

पस अब जान लीजिए ! समाअ़ बात़िन को ह़रकत देता है लेकिन जो लोग भलाई में क़वी और कामिल होते हैं उन्हें ख़ारिज से किसी ह़रकत देने वाले की ज़रूरत नहीं होती ।

जानना चाहिए ! समाअ़ के आदाब में से येह भी है कि उसे पूरी तवज्जोह से सुना जाए, और जहां तक मुमकिन हो बुलन्द आवाज़ से न रोए न ह़रकत करे ख़ुसूसन नौजवानों को मशाइख़ के सामने और मुब्तदी (जो अभी इब्तिदा में है) को मुन्तही (तक्मील कर लेने वाले) के सामने ऐसा नहीं करना चाहिए और ज़रूरी है कि वोह समाअ़ के दौरान अपने दिल और नफ़्स के अह़वाल की निगरानी में मश्ग़ूल रहे यहां तक कि अपने नफ़्स को ह़रकात और वज्द के इज़हार से रोके और बाज़ उ़लमा वज्द के तह़क़्क़ुक़ के लिए बनावटी वज्द करने के भी क़ाइल हैं ताकि उस के बात़िन में छुपी हुई चीज़ उभर आए जिस त़रह़ आग पथ्थर में छुपी होती है (जब एक पथ्थर को दूसरे पर मारते हैं तो आग निकल आती है) और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बेहतर जानता है ।

इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा । وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ

www.dawateislami.net

बाब : 19 नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना

जान लीजिए ! नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना दीन के उसूलों में से है क्यूंकि इस से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बिअ़्सत का मक़्सद ह़ासिल होता है और इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान दलालत करता है :

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ط (پ٤، ال عمران:١٠٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में एक गिरोह ऐसा होना चाहिए कि भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें ।

ह़दीस शरीफ़ में है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने एक ख़ुत़्बे में इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम येह आयत पढ़ते हो : يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ج لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ط (پ٧، المآئدة:١٠٥) **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जबकि तुम राह पर हो ।" और इस का मफ़्हूम ग़लत़ अन्दाज़ से बयान करते हो जबकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : "जो कोई क़ौम गुनाह का काम करे और उन में रोकने के क़ाबिल कोई शख़्स हो लेकिन वोह न रोके तो क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब को अपने अ़ज़ाब में मुब्तला कर दे ।" (سنن ابی داؤد ، کتاب الملاحم ،باب الأمر والنهی ،الحدیث٤٣٣٨،ص١٥٣٩، بتغیر)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालबा ख़ुशनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस आयत : لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ط (پ٧، المآئدة:١٠٥) **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जबकि तुम राह पर हो ।" की तफ़्सीर पूछी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अबू सालबा ! नेकी का हुक्म दो और बुराई से मन्अ़ करो अगर तुम देखो कि बुख़्ल की इत़ाअ़त और ख़्वाहिशे नफ़्स की इत्तिबाअ़ की जाती है, दुन्या को तरजीह़ दी जाती है और हर ज़ी राए अपनी राए पर इतराता है, तो तुम अपनी फ़िक्र करो और अ़वाम को छोड़ दो बेशक तुम्हारे बाद अन्धेरी रात के टुकड़े की त़रह़ फ़ितने हैं उस वक़्त जो दीन इख़्तियार करेगा जिस त़रह़ तुम ने इख़्तियार किया है तो उसे तुम में से पचास (के सवाब के बराबर) सवाब मिलेगा ।

(سنن ابی داؤد ، کتاب الملاحم ،باب الأمر والنهی ،الحدیث ٤٣٤١،ص١٥٣٩،بتغیر)

जानना चाहिए ! اَمْرِبِالْمَعْرُوْف के चार अरकान हैं :

(1) **मोह़तसिब** (यानी एह़तिसाब करने वाला) (2) **मोह़तसिब अ़लैह** (जिस का एह़तिसाब किया जाए) (3) **मोह़तसिब फ़ी** (जिस में एह़तिसाब हो) (4) **नफ़्से एह़तिसाब ।**

(1) **मोह़तसिब :** इस के लिए शर्त़ येह है कि वोह मुसलमान हो, मुकल्लफ़ हो । पस रिआ़या में से हर एक इस में दाख़िल है उस में विलायत और इजाज़त का होना शर्त़ नहीं ।

www.dawateislami.net

दूसरी शर्त़ : इस्लाम है कि उस की निय्यत इस्लाम की मदद की हो।

अ़दालत (यानी आ़दिल होने) की शर्त़ में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है। बाज़ उ़लमा اَمْرِبِالْمَعْرُوْف और نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान की वज्ह से अ़दालत की शर्त़ लगाते हैं :

لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ0 (پ ٢٨، الصف: ٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्यूं केहते हो वोह जो नहीं करते।

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ 0 (پ ١، البقرة: ٤٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो।

इस के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी अह़ादीस वारिद हैं।

बाज़ उ़लमा फ़रमाते हैं कि इस में अ़दालत की शर्त़ नहीं, और येही बात ह़क़ है क्यूंकि बिल इज्माअ़ एह़तिसाब में तमाम गुनाहों से मासूम होना शर्त़ नहीं जब उ़लमाए किराम का अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सग़ीरा गुनाहों से मासूम होने के बारे में इख़्तिलाफ़ है।[1] तो दूसरों के मासूम होने की कैसे उम्मीद रखी जा सकती है, फिर जब येह शर्त़ न पाई जाएगी तो येह चीज़ اَمْرِبِالْمَعْرُوْف और نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر के तर्क करने का सबब बनेगी पस इस में कितनी दूरी है कि वोह ख़ुद शराब नोशी करता हो और दूसरों को इस से मन्अ़ करे और कहे : मुझ पर दो बातें लाज़िम हैं पेहली रुकना और दूसरी रोकना और मैं इन में से एक तो कर रहा हूं इस उम्मीद पर कि मुझे दूसरी के तर्क की तौफ़ीक़ मिल जाए। और काफ़िर को इस काम से रोका गया है क्यूंकि काफ़िर का मुसलमान को मन्अ़ करना मुसलमानों पर मुसल्लत़ है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا 0 (پ٥، النسآء: ١٤١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** काफ़िरों को मुसलमानों पर कोई राह न देगा।

और मुसलमान येह कर सकता है पस वोह लोगों को धमकी देने, डराने और मारने वग़ैरा में से जो चीज़ भी उस के लाइक़ हो उस के साथ मन्अ़ करेगा येह हुक्म बादशाह या इमाम वग़ैरा के लिए मुख़्तलिफ़ नहीं पस हर वोह शख़्स जो ग़ैर मुनासिब फ़ेल का मुर्तकिब हो उसे रोका जाएगा इस पर

---

1 ....**अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी ह़नफ़ी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं : "अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام शिर्को कुफ़्र और हर ऐसे अम्र से जो ख़ल्क़ के लिए बाइसे नफ़रत हो जैसे किज़्ब व ख़ियानत व जहल वग़ैरहा सिफ़ाते ज़मीमा (यानी बुरी सिफ़तों) से, नीज़ ऐसे अफ़्आ़ल से जो वजाहत और मुरुव्वत के ख़िलाफ़ हैं **क़ब्ले नबुव्वत और बादे नबुव्वत बिल इज्माअ़ मासूम हैं** और कबाइर से भी मुत़लक़न मासूम हैं और ह़क़ येह है कि तामिदे सग़ाइर से भी क़ब्ले नबुव्वत और बादे नबुव्वत मासूम हैं।"

(الحديقة الندية شرح الطريقة المحمدية، الباب الثانى فى الامور المهمة فى الشريعة، الفصل الاوّل فى تصحيح الاعتقاد، ج١، ص٢٨٨)

दलील येह रिवायत है कि मरवान बिन ह़कम ने नमाज़े ईद से पेहले ख़ुत़बा दिया तो एक शख़्स ने कहा : "ख़ुत़बा नमाज़ के बाद होता है।" मरवान ने कहा : "ऐ फ़ुलां ! येह काम छोड़ दिया गया है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उस शख़्स ने अपना फ़र्ज़ पूरा किया है, रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें इरशाद फ़रमाया :

مَنْ رَاٰی مُنْکَرًا فَلْیُنْکِرْہُ بِیَدِہٖ فَاِنْ لَّمْ یَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِہٖ فَاِنْ لَّمْ یَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِہٖ وَذَالِکَ اَضْعَفُ الْاِیْمَانِ

तर्जमा : जो शख़्स बुराई को देखे तो उसे अपने हाथ से रोके अगर इस की त़ाक़त न हो तो ज़बान से रोके और अगर इस की त़ाक़त न हो तो दिल में बुरा जाने और येह ईमान का कमज़ोर तरीन दरजा है।

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند ابی سعید الخدری ،الحدیث١١٨٧٦،ج٤،ص١٨٤، بتغیرٍ)

इस ह़दीस से मालूम हुवा कि एह़तिसाब के मुख़्तलिफ़ मरातिब हैं।

आख़िरी शर्त़ : वोह मोह़तसिब फ़ी है और येह दूसरा रुक्न है हर वोह बुराई जो इज्तिहाद के बिग़ैर मालूम हो अइम्मए मोतबिरीन के नज़दीक इस में इख़्तिलाफ़ का मह़ल नहीं पस कोई शाफ़ेई उस ह़नफ़ी को मन्अ़ नहीं करता जो ऐसी नबीज़ पिए जिस से नशा नहीं होता और कोई ह़नफ़ी किसी शाफ़ेई को नहीं रोकता जो गोह और बिज्जू खाता है।

और आख़िरी रुक्न मोह़तसिब अ़लैह है उस के लिए शर्त़ येह है कि वोह इन्सान हो क्यूंकि बच्चे को भी शराब पीने से रोका जाएगा, हां ! बाज़ अफ़्आ़ल मजनून और बच्चे के ह़क़ में मुन्किर नहीं होते (जैसे नमाज़ वग़ैरा) और न ही उन को इस से रोका जाएगा।

मोह़तसिब के आदाब का बयान

मोह़तसिब को चाहिए कि वोह आ़लिम, मुत्तक़ी, हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर, नर्म त़बीअ़त का मालिक होना चाहिए और वोह सख़्ती से पेश आने वाला न हो। जहां तक इ़ल्म का तअ़ल्लुक़ है तो मोह़तसिब को एह़तिसाब की हुदूद का इ़ल्म होना चाहिए। परहेज़गारी येह है कि वोह एह़तिसाब में इस ह़द तक रहे जिस की शरीअ़त ने इजाज़त दी है। हुस्ने अख़्लाक़ के साथ नर्मी इख़्तियार करे, सख़्ती न करे ताकि वोह ह़द्दे शरअ़ से तजावुज़ न कर जाए पस उस का फ़साद उस की इस्लाह़ पर ह़ावी न हो और एह़तिसाब के मुआ़मले में शफ़्क़त को मद्दे नज़र रखे यहां तक कि जब उसे कोई शख़्स किसी चीज़ से मन्अ़ करे या उसे ना पसन्दीदा चीज़ का सामना हो तो शरीअ़त की ह़द से तजावुज़ न करे कि अगर वोह एह़तिसाब को भूल जाए और नफ़्से एह़तिसाब के मुआ़मले में बुराई का मुर्तकिब हो।

इ़बादात में मुख़्लजा मुन्किरात

बुराई का मुर्तकिब उस शख़्स की त़रह़ है जो ह़ालते नमाज़ में क़िब्ले से मुंह फेर ले या इत़मीनान से रुकूअ़ व सुजूद न करे या क़िराअत में ग़लत़ी करे तो उन जैसों को रोकना वाजिब है और

www.dawateislami.net

येह एक अफ़्ज़ल नेकी है और नवाफ़िल पढ़ने से बेहतर है। इन ख़राबियों में से मोअज़्ज़िनीन का अज़ान को ज़्यादा खींच कर पढ़ना, लम्बा करना और कलिमात को इस क़दर लम्बा खींचना कि वोह अपनी ह़द से निकल जाएं।[1] और तुलूए़ फ़ज्र के बाद एक ही मस्जिद में एक से ज़्यादा बार अज़ान केहना क्यूंकि इस में कोई फ़ाएदा नहीं और इन ख़राबियों में से ऐसे कपड़े पेहनना भी है जिन पर रेशम ग़ालिब हो और उन "**क़िस्सा गोओं**" का कलाम भी है जिस में वोह बिदआ़त को मिलाते हैं और जुम्आ़ के दिन दवाएं और तावीज़ात बेचने के लिए ह़ल्क़े बनाना भी इन्हीं में शामिल है। जो ख़राबियां हम ने ज़िक्र की हैं इन जैसी और ख़राबियां भी हैं लेकिन उन को शुमार करना हमारा मक़्सद नहीं।

बादशाहों को नेकी की दावत देना और बुराई से मन्अ़ करना

एह्तिसाब के दरजात

जानना चाहिए ! एह्तिसाब के चार दरजे हैं :

(1) बुराई से आगाह करना (2) वाज़ करना (3) सख़्त बात केहना और (4) सख़्ती से रोकना।

उमरा व सलात़ीन को आगाह करना और वाज़ो नसीह़त करना है क्यूंकि इन से सख़्त बात करना या सख़्ती से रोकना फ़ित्ना बरपा होने का सबब है जिस की वज्ह से ऐसी शर अंगेज़ी होगी जो इन की अपनाई हुई बुराई से भी ज़्यादा बुरी होगी। हां ! अगर मालूम हो कि सख़्त गुफ़्तगू फ़ाएदे मन्द होगी और शर अंगेज़ी का बाइ़स न होगी तो फिर कोई ह़रज नहीं और वोह इन्ही में से है जो इन बातों की परवाह नहीं करता इस पर ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान दलालत करता है :

خَيْرُ الشُّهَدَاءِ حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، ثُمَّ رَجُلٌ قَامَ اِلٰى اِمَامٍ فَاَمَرَهٗ وَنَهَاهُ فِيْ ذَاتِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ فَقَتَلَهٗ عَلٰى ذٰلِكَ

तर्जमा : शुहदा में सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं फिर वोह शख़्स है जिस ने ह़ाकिम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी का हुक्म दिया और उस की ना फ़रमानी से मन्अ़ किया पस इस वज्ह से ह़ाकिम ने उसे क़त्ल कर दिया।

(تاریخ بغداد ،الرقم۳۰۷۸ـ ابراھیم بن جابر بن عیسیٰ أبو اسحاق غِطْرِیفی ،ج٦،ص ٥٠، مختصرًا)

1....**सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 3, स. 36** पर नक़्ल फ़रमाते हैं : "कलिमाते अज़ान में लेहून ह़राम है, मसलन **अल्लाह** या अक्बर के **ह़म्ज़ा** को **मद** के साथ **आल्लाह** या **आक्बर** पढ़ना, यूहीं अक्बर में **बा** के बाद **अलिफ़** बढ़ाना ह़राम है।"

(بحوالہ الدرالمختار، کتاب الصلوٰۃ،باب الاذان، ج٢،ص٦٣)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اَفْضَلُ الْجِهَادِ كَلِمَةُ حَقٍّ عِنْدَ سُلْطَانٍ جَائِرٍ **"तर्जमा :** अफ़्ज़ल जिहाद ज़ालिम हुक्मरान के सामने कलिमए ह़क़ केहना है।" (المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند ابی سعید الخدری ،الحدیث ۱۱۱۴۳،ج٤،ص٣٩)

अगर कलिमए ह़क़ केहने वाला इस वज्ह से क़त्ल कर दिया जाए तो शहीद है। जैसा कि अह़ादीसे मुबारका में मरवी है।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ब्बह बिन मुह़सिन अ़न्ज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है, वोह फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बसरा में हमारे अमीर थे। जब भी वोह ख़ुत़बा देते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजते, इस के बाद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिए दुआ़ करते। इस पर मुझे बहुत ग़ुस्सा आया, मैं ने उन के पास जा कर कहा : आप उन के रफ़ीक़ (यानी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) को छोड़ कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को उन पर फ़ज़ीलत देते हो ? उन्हों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को मेरी शिकायत लिख भेजी और लिखा : ज़ब्बह बिन मुह़सिन मेरे ख़ुत़बे में दख़्ल अन्दाज़ी करता है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन्हें लिखा कि उसे मेरी त़रफ़ भेज दें। आप फ़रमाते हैं : उन्हों ने मुझे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रफ़ भेजा मैं आप के पास गया, दरवाज़ा खट खटाया तो आप तशरीफ़ लाए और पूछा : कौन ? मैं ने अ़र्ज़ की : मैं ज़ब्बह बिन मुह़सिन अ़न्ज़ी हूं।

आप ने फ़रमाया : तुम्हारे लिए मरह़बा नहीं। मैं ने अ़र्ज़ की : मरह़बा तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है और जहां तक एह्ल का तअ़ल्लुक़ है तो मेरे पास न एह्ल है न माल। लेकिन ऐ उ़मर ! आप बताएं कि आप ने मुझे क्यूं किसी ग़लत़ी और क़ुसूर के बिग़ैर बसरा से बुलाया ? आप ने फ़रमाया : मेरे आ़मिल और तेरे दरमियान क्या झगड़ा है ? आप फ़रमाते हैं, मैं ने कहा : मैं आप को बताता हूं कि जब वोह ख़ुत़बा देते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना और नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजते हैं फिर आप के लिए दुआ़ करते हैं। मुझे इस पर ग़ुस्सा आया, मैं ने उठ कर पूछा : आप ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को उन के रफ़ीक़ (अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) पर फ़ज़ीलत क्यूं दी है ? उन्हों ने चन्द जुम्ए़ ऐसा ही किया, फिर आप के पास मेरी शिकायत लिख भेजी।

येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रोने लगे और फ़रमाने लगे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम उस की निस्बत ज़्यादा तौफ़ीक़ दिए गए और ज़्यादा हिदायत याफ़्ता हो, क्या तुम मेरा क़ुसूर मुआ़फ़ कर सकते हो ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी मग़फ़िरत

www.dawateislami.net

फ़रमाए। उन्हों ने कहा : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की मग़फ़िरत फ़रमाए। "ज़ब्बह बिन मुह़सिन बयान करते हैं कि फिर आप ने रोना शुरूअ़ कर दिया और फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक रात और एक दिन उ़मर फ़ारूक़ और इस की आल से बेहतर है, क्या मैं उन की उस रात और दिन को तुम्हारे सामने बयान न करूं ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : जी हां।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : वोह रात जब नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुश्रिकीन की वज्ह से मक्कए मुकर्रमा से हिजरत का इरादा फ़रमाया तो रात के वक़्त निकले। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के हमराह थे, आप कभी नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे हो जाते, कभी पीछे, कभी दाईं त़रफ़ चलते कभी बाईं त़रफ़। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! येह क्या है ? तुम ने ऐसा कभी नहीं किया।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब मैं ख़याल करता हूं कोई घात लगाए न हो तो आप के आगे हो जाता हूं, और जब सोचता हूं कि कोई पीछा न कर रहा हो तो पीछे हो जाता हूं और कभी दाईं त़रफ़ और कभी बाईं त़रफ़ हो जाता हूं, मुझे आप के बारे में फ़िक्र होती है नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस रात पाउं मुबारक की उंगलियों के बल चले यहां तक कि वोह दुखने लगीं। जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप की उंगलियों की येह ह़ालत देखी तो आप को कन्धों पर उठा लिया और दौड़ पड़े यहां तक कि ग़ार के दहाने पर आ पहुंचे और आप को उतारा और अ़र्ज़ की : उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को ह़क़ के साथ भेजा ! जब तक मैं इस ग़ार में दाख़िल न हो जाऊं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दाख़िल न होंगे ताकि अगर वहां कोई मूज़ी चीज़ हो तो उस का नुक़्सान मुझे पहुंचे, बयान करते हैं फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दाख़िल हुवे तो वहां कोई चीज़ न देखी चुनान्चे, आप को उठा कर अन्दर ले गए।

ग़ार में एक सूराख़ था जिस में सांप और बिच्छू थे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस पर अपना पाउं रख दिया ताकि कोई सांप वग़ैरा निकल कर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ न पहुंचाए, उस से सांप निकल कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को डसते रहे और तक्लीफ़ की वज्ह से आप के आंसू रुख़्सार मुबारक पर गिरने लगे तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! ग़म न कर, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे साथ है। पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर सुकून व इत़मीनान उतारा, तो येह आप की वोह रात थी।

और आप का दिन वोह है जब रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी हुवा तो बाज़ अ़रब क़बाइल मुर्तद हो गए, बाज़ ने कहा : हम नमाज़ नहीं पढ़ेंगे और बाज़ ने कहा : हम ज़कात न देंगे,

www.dawateislami.net

मैं आप के पास मश्वरा देने की ग़रज़ से आया, मैं ने कहा : ऐ ख़लीफ़ए रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! लोगों से उल्फ़त और नर्मी का बरताव कीजिए, आप ने फ़रमाया : क्या दौरे जाहिलिय्यत में सख़्त और इस्लाम में नर्म हो गए हो ? मैं किस वज्ह से उन से नर्मी बरतूं ? नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी हो गया और वही का सिलसिला बन्द हो गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर वोह मुझे एक रस्सी भी न देंगे जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में देते थे तो मैं उन लोगों से जिहाद करूंगा। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम ने उन लोगों के ख़िलाफ़ जिहाद किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस मुआ़मले में दुरुस्त राए रखने वाले थे। तो येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वोह दिन है। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ सख़्ती से लिखा (कि वोह ऐसा न करें)। (صحیح البخاری، کتاب الاعتصام، باب الاقتداء بسنن رسول اللّٰہ ﷺ، الحدیث ٧٢٨٤/٧٢٨٥، ص٦٠٦)

इस बात को समझ लो फ़ाएदा देगी। وَاللّٰہُ اَعْلَم

छे अश्ख़ास जिन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की लानत है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

"छे अश्ख़ास ऐसे हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और हर मुस्तजाबुद्दावात नबी عَلَیْہِ السَّلَام लानत फ़रमाता है : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब में ज़्यादती करने वाला (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर को झुटलाने वाला (3) मेरी उम्मत पर इस लिए ज़बर दस्ती त़ाक़त के ज़रीए़ मुसल्लत़ हो जाने वाला ताकि जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुअ़ज़्ज़ज़ किया उन्हें ज़लील करे और जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रुस्वा किया है उन्हें मुअ़ज़्ज़ज़ बनाए (4) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुरमत को ह़लाल ठहराने वाला (5) मेरी औलाद के मुआ़मले में उस चीज़ को ह़लाल समझने वाला जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़राम किया और (6) मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला।"

(المستدرک، کتاب التفسیر، سورۃ واللیل اذا یغشی، باب ستۃ لعنھم اللہ .....الخ، الحدیث: ٣٩٩٦، ج٣، ص٣٧٥)

बाब : 20 आदाबे मईशत और अख़्लाक़े नबुव्वत का बयान

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आदाब का बयान

जानना चाहिए ! नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारगाहे ख़ुदावन्दी में ब कसरत गिड़गिड़ाते और अच्छे आदाब और उ़म्दा अख़्लाक़ की हमेशा दुआ़ करते थे।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी दुआ़ में अ़र्ज़ करते : اَللّٰهُمَّ حَسِّنْ خَلْقِيْ وَخُلُقِيْ "**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी सूरत और अख़्लाक़ अच्छे कर दे।" (المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عبد الله بن مسعود ،الحديث٣٨٢٣،ج٢،ص٦٦،بتغير)

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन हिशाम फ़रमाते हैं कि मैं उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो उन्हों ने फ़रमाया : "क्या तुम क़ुरआन नहीं पढ़ते ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! पढ़ता हूं।" आप ने फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अख़्लाक़ क़ुरआन है।" (صحيح مسلم ،كتاب صلاة المسافرين ،باب جامع صلاة الليل ومن نام عنه أومرض ،الحديث١٧٣٩،ص٧٩٤)

क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आदाब यूं इरशाद फ़रमाए :

﴿۱﴾ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ۝ (پ٩ ،الاعراف:١٩٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेह़बूब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

﴿۲﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ج (پ١٤،النحل:٩٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी और रिश्तेदारों के देने का और मन्अ़ फ़रमाता है बे ह़याई और बुरी बात और सरकशी से।

﴿۳﴾ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ط اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ۝ (پ٢١، لقمٰن:١٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो उफ़्ताद (मुसीबत) तुझ पर पड़े उस पर सब्र कर बेशक येह हिम्मत के काम हैं।

हुस्ने अख़्लाक़ के मुतअ़ल्लिक़ इस के इ़लावा भी बहुत सी आयात मौजूद हैं।

जब ग़ज़वए उहुद के दिन नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने के दांत मुबारक शहीद हो गए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर पर ख़ून बहने लगा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ून पोंछ रहे थे और फ़रमा रहे थे : "वोह क़ौम कैसे कामयाब होगी जिन्हों ने अपने नबी

www.dawateislami.net

(صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के चेहरे को ख़ून आलूद कर दिया ह़ालांकि वोह उन्हें उन के रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाता हो।" पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुक़द्दसा नाज़िल फ़रमाई :

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ (پ٤،ال عمران:١٢٨) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह बात तुम्हारे हाथ नहीं।

येह बात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़्कूरा बाला फ़रमान की वज्ह से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाई।

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند انس بن مالك بن النضر ،الحديث ١٢٨٣١،ج٤،ص٣٥٧)

जान लीजिए ! इस क़िस्म की आयात कुरआने मजीद में ब कसरत मौजूद हैं और इन का मक़्सूदे अव्वल अदब और तहज़ीब है फिर इसी से तमाम मख़्लूक़ पर नूर चमका।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاقِ "**तर्जमा :** मुझे अच्छे अख़्लाक़ की तक्मील के लिए भेजा गया है।"

(السنن الكبرى للبيهقى ،كتاب الشهادات ،باب بيان مكارم الاخلاق.....الخ ،الحديث ٢٠٧٨٢،ج١٠،ص٣٢٣)

अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : उस मुसलमान पर तअ़ज्जुब है जिस का मुसलमान भाई उस के पास किसी ह़ाजत के लिए आए और वोह अपने आप को उस के साथ भलाई के क़ाबिल न समझे, अगर उसे सवाब की उम्मीद और अ़ज़ाब का डर न हो तो उसे अच्छे अख़्लाक़ की त़रफ़ जल्दी करनी चाहिए क्यूंकि येह अख़्लाक़ राहे नजात पर दलालत करते हैं। एक शख़्स ने पूछा : आप ने येह बात नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनी है ? आप ने फ़रमाया : हां ! जब आप के पास "क़बीलए त़ीअ" के क़ैदी लाए गए। उन में एक लड़की ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप मुनासिब समझें तो मुझे रिहा कर दें और मुझ पर क़बाइले अ़रब को न हंसाएं क्यूंकि मैं अपनी क़ौम के सरदार की बेटी हूं और बेशक मेरा बाप क़ौम की ह़िफ़ाज़त करता, क़ैदियों को रिहा करवाता, भूकों को जी भर कर खाना खिलाता, सलाम को आ़म कराता और किसी मांगने वाले का सुवाल रद न करता, मैं ह़ातिम त़ाई की बेटी हूं। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ लड़की ! येह सच्चे मोमिनीन की सिफ़ात हैं, अगर तुम्हारा बाप मुसलमान होता तो हम उस के लिए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से रेह़मत की दुआ़ मांगते। और फ़रमाया : इस को रिहा कर दो, इस का बाप अच्छे अख़्लाक़ को पसन्द करता था और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अच्छे अख़्लाक़ को पसन्द फ़रमाता है और फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अच्छे अख़्लाक़ वाला ही जन्नत में दाख़िल होगा।" (دلائل النبوة للبيهقى ،باب وفد طىء.....الخ ،ج٥،ص٣٤١)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : "बेशक

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम को अच्छे अख़्लाक़ और उ़म्दा आमाल से ढांपा है और अच्छा सुलूक करना, अच्छा अ़मल करना, नर्म गुफ़्तगू करना, नेकी करना, खाना खिलाना, सलाम को आ़म करना, मुसलमान मरीज़ की इ़यादत करना ख़्वाह वोह नेक हो या फ़ासिक़ो फ़ाजिर, मुसलमान के जनाज़े में शरीक होना, मुसलमान या काफ़िर पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करना, बूढ़े मुसलमान की इ़ज़्ज़त करना, खाने की दावत क़बूल करना, मेहमान के लिए दुआ़ करना, मुआ़फ़ करना, सुल्ह़ कराना, सख़ावत, करम नवाज़ी, बख़्शिश करना, सलाम में इब्तिदा करना, गुस्से पर क़ाबू रखना और लोगों को मुआ़फ़ करना हुस्ने अख़्लाक़ से है।''

इस्लाम का हुस्न इन चीज़ों से ख़त्म हो जाता है : ''खेल कूद, गाने बजाने के तमाम आलात, हर कीना व ऐ़ब की बात, झूट, ग़ीबत, बुख़्ल, कन्जूसी, जफ़ा, धोका, मक्रो फ़रेब, चुग़ली, लोगों के दरमियान बिगाड़ पैदा करना, क़त़ए़ रेह़मी, बद अख़्लाक़ी, तकब्बुर, फ़ख़्र शैख़ी बघारना, इतराना, मज़ाक़ करना, फ़ोह़्श बातें करना और सुनना, कीना, ह़सद, बदफ़ाली, सरकशी, दुश्मनी और ज़ुल्म करना।

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें ख़ैर ख़्वाही की हर बात बताई और इस का हुक्म दिया और हर खोट या ऐ़ब से हमें डराया और इस से मन्अ़ फ़रमाया और इन सब के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत काफ़ी है :

اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآئِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ ج

(پ۱٤،النحل:۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी और रिश्तेदारों के देने का और मन्अ़ फ़रमाता है बे ह़याई और बुरी बात और सरकशी से।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे वसिय्यत फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''ऐ मुआ़ज़ ! मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने, सच बोलने, वादा पूरा करने, अमानत की अदाएगी, ख़ियानत न करने, पड़ोसी की ह़िफ़ाज़त, यतीम पर रेह़म करने, नर्म गुफ़्तगू करने, सलाम फैलाने, अच्छा अ़मल करने, उम्मीद कम रखने, ईमान पर क़ाइम रेहने, क़ुरआने मजीद की समझ ह़ासिल करने, आख़िरत से मह़ब्बत करने, ह़िसाबो किताब से डरने और आ़जिज़ि़ओ इन्किसारी करने की वसिय्यत करता हूं और तुम्हें किसी दाना को गाली देने, किसी सच्चे को झुटलाने, गुनहगार की इत़ाअ़त करने, इमामे आ़दिल की ना फ़रमानी करने, और ज़मीन में फ़साद फैलाने से मन्अ़ करता हूं और हर पथ्थर, दरख़्त और ढेले के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करता हूं नीज़ हर गुनाह से तौबा करने, पोशीदा गुनाह की पोशीदा और अ़लानिय्या गुनाह की अ़लानिय्या तौबा करने की वसिय्यत करता हूं।''

(حلیۃ الاولیاء ،معاذ بن جبل ،الحدیث۸۱۳،ج۱،ص۳۰٤، بتغیرٍ)

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को आदाब सिखाए और उन्हें अच्छे अख़्लाक़ और उ़म्दा आदाब की दावत दी।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े आ़लिया का बयान

येह अख़्लाक़े ह़मीदा उ़लमाए किराम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن ने अह़ादीस से अख़ज़ किए।

चुनान्चे, उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं कि "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम लोगों से ज़्यादा बुर्दबार थे।"

(أخلاق النبی علیه السلام لابی الشیخ الاصبهانی،باب ما روی فی کظمه الغیظ و حلمه ،الحدیث١٦٨،ج١،ص١٨٠)

सब से ज़्यादा बहादुर थे। (صحیح مسلم ،کتاب الفضائل ،باب شجاعته ﷺ ،الحدیث ٦٠٠٦، ص ١٠٨٥)

सब से बढ़ कर आ़दिल थे। (الشمائل المحمدیة ﷺ للترمذی ،باب ماجاء فی تواضع.....الخ،الحدیث٣١٩،ص١٩٣،مفهوماً)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम लोगों से ज़्यादा मुआ़फ़ फ़रमाने वाले थे। (ह़दीसे पाक में है) "आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी ऐसी औ़रत को हाथ नहीं लगाया जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **लोंडी** न हो या आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **निकाह़** में न हो या वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **मह़रम** न हो।" (صحیح البخاری ،کتاب الطلاق ،باب اذا اسلمت المشرکة .....الخ ،الحدیث٥٢٨٨، ص٤٥٧، بتغیرٍ قلیلٍ)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब लोगों से ज़्यादा सख़ी थे।

(المعجم الاوسط ،الحدیث٦٨١٦،ج ٥، ص١٣١،مفهوماً)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास कोई दिरहमो दीनार रात के वक़्त नहीं बचते थे अगर कोई बच जाता और कोई लेने वाला न होता तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस वक़्त तक घर में दाख़िल न होते जब तक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मोह़ताज लोगों को दे कर उस से बरिय्युज़्ज़िम्मा न हो जाते।

(سنن ابی داؤد ،کتاب الخراج ،باب فی الامام یقبل هدایا.....الخ، الحدیث٣٠٥٥، ص١٤٥٣، مختصرًا)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो कुछ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ा फ़रमाया आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से सिर्फ़ एक साल की ग़िज़ा ह़ासिल करते, और वोह भी सब से ज़्यादा अर्ज़ां (यानी सस्ते) खजूरें और जव होते। बाक़ी सब कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में सदक़ा फ़रमा देते।

(صحیح مسلم ،کتاب الجهاد ،باب حکم الفیء ،الحدیث٤٥٧٥،ص٩٨٩،مختصرًا)

जब भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कोई चीज़ भी मांगी जाती अ़त़ा फ़रमाते।

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند انس بن مالك بن النضر ،الحدیث١٣٩٧٧،ج٤،ص٥٥٦)

फिर अपने साल भर की ख़ूराक में से मांगने वालों को अपने आप पर तरजीह़ देते यहां तक कि बाज़ अवक़ात साल पूरा होने से पेहले ख़ूराक ख़त्म हो जाती और अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में कोई चीज़ न पेश की जाती तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब्र फ़रमाते।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने नालैने मुबारक ख़ुद गांठते, और कपड़ों में पैवन्द लगाते और घर के काम काज में हाथ बटाते। (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث ٢٥٣٩٦، ج٩، ص٥١٩)

एह्ले ख़ाना के साथ गोश्त काटते। (المرجع السابق، مسند السيدة عائشة، الحديث٢٤٦٨٥، ج٩، ص٣٨٦مفهوماً)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से बढ़ कर बा ह़या थे, आप की निगाह किसी के चेहरे पर न ठहरती थी। (صحيح البخاری، كتاب الادب، باب الحياء، الحديث:٦١١٩، ص٥١٦، بدون"لايثبت بصره فی وجه أحد")

ग़ुलाम और आज़ाद सब की दावत क़बूल फ़रमाते।

(جامع الترمذی، ابواب الجنائز، باب آخر فی سنة عيادة المريض.....الخ، الحديث١٠١٧، ص١٧٤٨، بدون الحر)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हदिय्या क़बूल फ़रमाते, अगर्चे दूध का एक घूंट या ख़रगोश की रान होती और बदले में तोह़फ़ा अ़ता फ़रमाते, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हदिय्या तनावुल फ़रमाते।

(صحيح البخاری، كتاب الهبة، باب المكافاة فی الهبة، الحديث٢٥٨٥، ص٢٠٣۔المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث٢٥٠٦٤، ج٩، ص٤٥٦۔صحيح مسلم، كتاب الصيد، باب اباحة الأرنب، الحديث٥٠٤٨، ص١٠٢٦)

लेकिन सदक़ा नहीं खाते थे। (سنن ابی داؤد، كتاب الديات، باب فيمن سقى رجلا .....الخ، الحديث٤٥١٢، ص١٥٥٤)

किसी लोंडी और मिस्कीन की दावत क़बूल फ़रमाने से एराज़ न फ़रमाते थे।

(سنن النسائی، كتاب الجمعة، باب ما يستحب من تقصير الخطبة، الحديث١٤١٥، ص٢١٨٠، مفهوماً)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने रब عَزَّوَجَلَّ के लिए ग़ुस्सा फ़रमाते आप को अपनी ज़ात के लिए ग़ुस्सा न आता था। (الشمائل المحمدية ﷺ للترمذی، باب كيف كان كلام رسول الله ﷺ، الحديث٢١٥، ص١٣٥، بدون"ويغضب لربه")

कभी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भूक की वज्ह से अपने शिकमे अक़्दस पर पथ्थर बांधते।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبد الله، الحديث١٤٢٢٤، ج٥، ص٢٤، بتغيرٍ)

कभी जो कुछ मिल जाता तनावुल फ़रमा लेते, जो मिलता उसे रद न फ़रमाते और ह़लाल चीज़ खाने से इजतिनाब न फ़रमाते। (جامع الترمذی، ابواب الأطعمة، باب ماجاء فی الخل، الحديث١٨٤١، ص١٨٣٨، مفهوماً)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जो लिबास मयस्सर होता ज़ेबे तन फ़रमाते, कभी शिम्ला (यानी छोटी चादर) कभी यमनी चादर और कभी ऊनी जुब्बा पेहनते जो भी मुबाह़ लिबास मयस्सर होता पेहन लेते। (صحيح البخاری، كتاب اللباس، باب البرود.....الخ، الحديث٥٨١٠/٥٨١٣/٥٧٩٩، ص٤٩٦/٤٩٥، مفهوماً)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चांदी की अंगूठी दाएं हाथ की छोटी उंगली में पेहनते ।

(صحيح مسلم ، كتاب اللباس ،باب فى خاتم الورق فصه حبشى ،الحديث٥٤٨٧،ص١٠٥٣ـصحيح البخارى ، كتاب اللباس ،باب الخاتم فى الخنصر ،الحديث٥٨٧٤،ص٥٠٠)

कभी बाएं हाथ में भी पेहन लेते । (صحيح مسلم ، كتاب اللباس ،باب فى لبس الخاتم .....الخ ،الحديث٥٤٨٩،ص١٠٥٣)

अपने पीछे अपने ग़ुलाम या किसी दूसरे शख़्स को सुवार कर लेते ।

(صحيح البخارى ، كتاب الحج ،باب الركوب والارتداف فى الحج ،الحديث١٥٤٣/١٥٤٤،ص١٢١)

जो सुवारी मिल जाती उस पर सुवार हो जाते कभी घोड़े पर, कभी सियाही माइल सफ़ेद ख़च्चर पर, कभी गधे पर, कभी पैदल नंगे पाउं बिग़ैर चादर और इमामा व टोपी के चल पड़ते ।

(صحيح البخارى ، كتاب الجهاد ،باب الفرس القطوف ،الحديث٢٨٦٧،ص٢٣١)

(ايضًا، باب بلغة النبى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم البيضاء ،الحديث٢٨٧٤،ص٢٣١)(ايضًا،باب الردف على الحمار،الحديث٢٩٨٧،ص٢٤٠)

(ايضًا، كتاب فضل الصلاة فى مسجد مكة والمدينة ،باب اتيان مسجد .....الخ،الحديث ١١٩٤،ص ٩٣)

(صحيح مسلم ، كتاب الجنائز باب فى عيادة المرضى ،الحديث٢١٣٨،ص٨٢٣)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने के आख़िरी कनारे तक बीमारों की इयादत के लिए तशरीफ़ ले जाते । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुश्बू को पसन्द और बदबू को ना पसन्द फ़रमाते ।

(سنن النسائى ، كتاب عشرة النساء ،باب حب النساء ،الحديث٣٣٩١،ص٢٣٠٧)

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند السيدة عائشة ،الحديث٢٦١٧٩،ج١٠،ص٩٩)

फ़ुक़रा के साथ बैठते । (سنن ابى داؤد ، كتاب العلم ،باب فى القصص ،الحديث٣٦٦٦،ص١٤٩٤)

मसाकीन को अपने साथ खाना खिलाते ।

(صحيح البخارى ، كتاب الرقاق ،باب كيف كان عيش النبى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم.....الخ ،الحديث٦٤٥٢،ص٥٤٢،مفهوماً)

अख़्लाक़ी एतिबार से अफ़्ज़ल लोगों की इ़ज़्ज़त करते और एह्ले शरफ़ के साथ नेकी कर के उन्हें मानूस फ़रमाते ।

(الشمائل المحمدية صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم للترمذى ،باب ماجاء فى تواضع رسول الله صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ،الحديث٣١٩،ص١٩١تا١٩٣،مفهوماً)

सिलए रेह़मी फ़रमाते लेकिन उन को उन से अफ़्ज़ल लोगों पर तरजीह़ न देते ।

(المستدرك ، كتاب معرفة الصحابة ،ذكر فداء العباس يوم بدر،الحديث٥٤٦١،ج٤،ص٣٨٨)

किसी पर ज़ुल्मो ज़्यादती न करते ।

(سنن ابى داؤد ، كتاب الادب ،باب فى حسن العشرة ،الحديث٤٧٨٩، ص١٥٧٦، مفهوماً)

उ़ज़्र पेश करने वाले का उ़ज़्र क़बूल फ़रमाते ।

(صحيح البخارى ، كتاب المغازى ،باب حديث كعب بن مالك ،الحديث٤٤١٨،ص٣٦٣،مفهوماً)

हंसी मिज़ाह़ फ़रमाते मगर ह़क़ बात केहते ।

(جامع الترمذى ،ابواب البر والصلة ،باب ماجاء فى المزاح ،الحديث١٩٩٠، ص١٨٥١)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़हक़हा लगाए बिग़ैर मुस्कुराते ।

(جامع الترمذی ،ابواب المناقب ،باب قول ابن جزء:ما رأیت أحدا أکثر تبسما ،الحدیث۳٦٤۲،ص۲۰۲۷)

जाइज़ खेल देखते तो ना पसन्द न फ़रमाते ।

(صحیح مسلم ،کتاب العیدین ،باب الرخصة فی اللعب.....الخ ،الحدیث۲۰٦٤،ص۸۱۷مفهومًا)

अपने घरवालों से दौड़ लगाने का मुक़ाबला फ़रमाते ।

(سنن ابی داؤد ،کتاب الجهاد ،باب فی السبق.....الخ ،الحدیث۲۵۷۸،ص۱٤۱٤)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हां ग़ुलाम और लोंडियां थीं लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाने और लिबास के मुआ़मले में उन से बरतरी न फ़रमाते, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी से न पढ़े थे, जहालत के अ़लाक़े और सह़राओं में ह़ालते फ़क़्र में परवान चढ़े और बकरियां चराईं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुर्रे यतीम थे, क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदे मोह़तरम और वालिदए मोह़तरमा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) इन्तिक़ाल फ़रमा चुके थे । पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम अच्छे अख़्लाक़, क़ाबिले तारीफ़ त़रीक़ों और अगले पिछलों की ख़बरों की तालीम दी और ऐसी बातें सिखाईं जिन पर आख़िरत में नजात और कामयाबी का दारो मदार है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की पैरवी करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । आमीन

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कुछ दीगर आदाब

उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मोमिनीन में से किसी को बुरा भला नहीं कहा बल्कि उस के लिए रेह़मत और कफ़्फ़ारे की दुआ़ फ़रमाई ।"

(صحیح مسلم ،کتاب البر ،باب من لعنه النبی ﷺ .....الخ ،الحدیث٦٦١۹،ص۱۱۳۲،مفهومًا)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी किसी औ़रत या ख़ादिम पर लानत नहीं भेजी ।

(صحیح مسلم ،کتاب الفضائل، باب مباعدته ﷺ للآثام.....الخ، الحدیث ٦۰۵۰،ص ۱۰۸۸، مالعن بدله ماضرب)

एक बार जिहाद के मौक़अ़ पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर आप उन पर लानत भेजें ?" तो आप ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّمَا بُعِثْتُ رَحْمَةً وَلَمْ اُبْعَثْ لَعَّانًا "**तर्जमा :** मुझे रेह़मत बना कर भेजा गया है लानत करने वाला बना कर नहीं भेजा गया ।" (صحیح مسلم ،کتاب البر ،باب النهی عن لعن الدواب وغیرها ،الحدیث٦٦١۳، ص۱۱۳۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को ह़क़ के साथ नबिय्ये बरह़क़ बना कर भेजा ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस काम को ना पसन्द फ़रमाया तो मुझे कभी भी नहीं फ़रमाया : तुम ने ऐसा क्यूं किया ? और जब कभी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ में से किसी ने मुझे मलामत की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "इसे कुछ न कहो (जो कुछ हुवा) येही तक़्दीर में लिखा था।"

(أخلاق النبی ﷺ للاصبهانی ،باب کرمه و کثرة احتماله و کظمه الغیظ.....الخ ،الحدیث ٤١،ج١،ص٤٣)

मज़ीद फ़रमाते हैं : जब भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दो कामों में से इख़्तियार दिया गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आसान काम इख़्तियार फ़रमाया लेकिन अगर इस में गुनाह या क़त्ए़ रेह़्म होता तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से तमाम लोगों से ज़्यादा दूर होते।"

(صحیح البخاری ،کتاب المناقب ،باب صفة النبی ﷺ ،الحدیث ٣٥٦٠،ص ٢٩٠، بدون قطعیة الرحم)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास जो भी आज़ाद, ग़ुलाम या लोंडी आती आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस की ह़ाजत पूरी करने के लिए उठ खड़े होते।

(سنن النسائی ،کتاب الجمعة ،باب ما یستحب من تقصیر الخطبة ،الحدیث ١٤١٥،
ص ٢١٨٠ـسنن ابن ماجة ،ابواب الزهد ،باب البراءة من الکبر والتواضع ،الحدیث٤١٧٧،ص ٢٧٣١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पेहले तौरात शरीफ़ की पेहली सत़्र में इन औसाफ़ के साथ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिफ़त बयान की, फ़रमाया : मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** के रसूल, मेरे पसन्दीदा बन्दे हैं, न सख़्त मिज़ाज और न सख़्ती करने वाले हैं, न बाज़ारों में चीख़ने वाले और न बुराई का बदला बुराई से देने वाले। बल्कि दर गुज़र करते और मुआ़फ़ करते हैं, उन की विलादत मक्कए मुकर्रमा में होगी और मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत करेंगे और उन की हुकूमत शाम में भी होगी और तहबन्द बांधेंगे, वोह और उन के सह़ाबा कुरआन और इ़ल्म के मुह़ाफ़िज़ होंगे, **वुज़ू में हाथ और पाउं धोएंगे**।"

इन्जील में भी इसी त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ मज़्कूर हैं।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारका थी कि जिस से मुलाक़ात होती तो सलाम में पेहल फ़रमाते। (شعب الایمان للبیهقی ،باب فی حب النبی ﷺ ،فصل فی خَلْقه و خُلُقه ،الحدیث ١٤٣٠،ج٢،ص١٥٥)

जब कोई शख़्स किसी काम के लिए आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ठहराता तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ठहरे रेहते यहां तक कि वोह पेहले चला जाता। (المعجم الکبیر ،الحدیث٤١٤،ج٢٢،ص١٥٨)

जब कोई आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हाथ पकड़ता तो जब तक वोह न छोड़ता आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न छोड़ते। (جامع الترمذی ،ابواب صفة القیامة ،باب تو اضعة مع جلیسه ﷺ ،الحدیث ٢٤٩٠،ص١٩٠٢)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब अपने किसी सह़ाबी से मुलाक़ात फ़रमाते तो मुसाफ़ह़ा करने में पेहल फ़रमाते फिर उस का हाथ पकड़ कर उंगलियों में उंगलियां डाल लेते और ख़ूब मज़बूती से पकड़ते।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب،باب فی المعانقة،الحدیث ٥٢١٤،ص١٦٠٤ـصحیح مسلم ،کتاب صفات المنافقین، باب ابتداء الخلق و خلق آدم علیه السلام،الحدیث ٧٠٥٤،ص١١٦٤ـمعرفة علوم الحدیث للحاکم ،ذکر النوع العاشر علوم الحدیث،ص٣٣)

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उठते बैठते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते ।

(الشمائل المحمدية ﷺ للترمذی ،باب ماجاء فی تواضع رسول الله ﷺ ،الحديث ٣١٩،ص١٩٣)

जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ रहे होते और कोई शख़्स आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन्तिज़ार में बैठा होता तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ मुख़्तसर कर के उस की त़रफ़ मुतवज्जेह होते और पूछते क्या तुम्हें कोई काम है ? फिर जब उस के काम से फ़ारिग़ होते तो बाक़ी नमाज़ पढ़ते ।

(الشفاء للقاضی عياض،الباب الثانی فی تكميل محاسنه ،فصل وأما حسن عشرته، ج١، ص١٢٢)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बैठने का त़रीक़ा उ़मूमन येह था कि दोनों पिन्डलियों को इकठ्ठा खड़ा कर के बैठते (और दोनों हाथों से उस के गिर्द घेरा डाल लेते) । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मजलिस में आप की निशस्त मुम्ताज़ न थी क्यूंकि जहां मजलिस ख़त्म होती आप वहीं तशरीफ़ फ़रमा हो जाते, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर रू बक़िब्ला हो कर बैठते और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास जो भी आता उस की इ़ज़्ज़त फ़रमाते यहां तक कि जिस के साथ आप का क़राबत या रज़ाअ़त का रिश्ता न भी होता उस के लिए भी चादर बिछा देते और इसे उस पर बिठाते ।

(الشفاء للقاضی عياض،الباب الثانی فی تكميل محاسنه ،فصل وأما حسن عشرته ،ج١،ص١٢٢،مختصرًا)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आने वाले को अपना बिछोना पेश करते ।

(الشفاء للقاضی عياض،الباب الثانی فی تكميل محاسنه ،فصل وأما حسن عشرته ،ج١،ص١٢٢)

अगर वोह इन्कार करता तो उसे इसरार कर के बिठाते, जब आप अपनी मजलिस ख़त्म फ़रमाते तो येह पढ़ते : سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّااِلٰهَ اِلَّااَنْتَ وَحْدَكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْكَ "**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू पाक है और तेरे लिए ही ह़म्द है, मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं तुझ से बख़्शिश मांगता हूं और तेरी त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं ।" फिर फ़रमाते : येह कलिमात मुझे जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने बताए हैं ।"

(السنن الكبرى للنسائی، كتاب عمل اليوم والليلة،باب كفارةمايكون فی المجلس،الحديث ١٠٢٦١،ج٦،ص١١٣، بدون"وحدك لا شريك لك")

रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू और तबस्सुम

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम लोगों से बढ़ कर फ़सीह़ो बलीग़ और सब से ज़्यादा शीरीं गुफ़्तगू फ़रमाते । चुनान्चे, शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़साह़त निशान है : اَنَااَفْصَحُ الْعَرَبِ "**तर्जमा :** मैं एह्ले अ़रब में सब से ज़्यादा फ़सीह़ हूं ।"

(المعجم الكبير ،الحديث ٥٤٣٧،ج٦،ص٣٦،" أفصح"بدله" أعرب")

www.dawateislami.net

बेशक जन्नती जन्नत में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बान (यानी अ़रबी ज़बान) में गुफ़्तगू करेंगे। (المستدرك ،كتاب معرفة الصحابة ،باب لسان أهل الجنة عربى ،الحديث٧٠٨٣،ج٥،ص١١٨)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इख़्तिसार के बावुजूद जामेअ़ कलाम फ़रमाते जो न तो फ़ुज़ूल होता और न उस में कमी होती, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बात मुकम्मल करने के बाद दूसरी बात इरशाद फ़रमाते और ठहर ठहर कर गुफ़्तगू फ़रमाते यहां तक कि सुनने वाला उसे याद कर के मह़फ़ूज़ कर लेता।

(الشمائل المحمدية ﷺ للترمذى ،باب كيف كان كلام رسول الله ﷺ ،الحديث٢١٥، ص١٣٤-١٣٥، بتغيرٍ- جامع الترمذى ،ابواب المناقب ،باب قول عائشة كان يتكلم بكلام يبينه فصل،الحديث٣٦٣٩،ص٢٠٢٧،مفهوماً)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुशी और ग़ज़ब दोनों ह़ालतों में सच्ची बात फ़रमाते।

(سنن ابى داؤد ،كتاب العلم ،باب كتابة العلم ،الحديث٣٦٤٦،ص١٤٩٣،مفهوماً)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से ज़्यादा तबस्सुम फ़रमाते और ख़ुश रेहते जब तक क़ुरआन नाज़िल न हो रहा होता या क़ियामत का तज़किरा न होता या ख़ुत़बा वाज़ न होता।

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند الزبير بن العوام ،الحديث١٤٣٧،ج١،ص٣٥٤،مفهوماً- مكارم الاخلاق للطبرانى مع مكارم الاخلاق لابن ابى الدنيا ،باب فضل تبسم الرجل.....الخ، الحديث٢٢، ص٣١٩)

एक दिन एक आराबी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा उस वक़्त आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अनवर का रंग मुतग़य्यर था, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उसे ख़िलाफ़े आ़दत समझते थे पस आराबी ने कुछ पूछना चाहा तो सह़ाबए किराम ने उसे मन्अ़ कर दिया और फ़रमाया : हम आप का रंग बदला हुवा देखते हैं। आराबी ने कहा : मुझे पूछने दो उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को नबिय्ये बरह़क़ बना कर भेजा है ! मैं आप को हंसाए बिग़ैर न छोड़ूंगा चुनान्चे, उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें ख़बर मिली है कि मसीह़ दज्जाल लोगों के लिए सरीद (यानी शोरबे में मिली हुई रोटी) लाएगा और लोग उस वक़्त भूक से मर रहे होंगे, मेरे मां बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान हों आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे क्या फ़रमाते हैं कि मैं उस सरीद के खाने से रुका रहूं और इस से बचते हुवे कमज़ोर हो कर मर जाऊं या मैं उस के सरीद से खाऊं यहां तक कि जब ख़ूब सेर हो जाऊं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाऊं और दज्जाल का इन्कार कर दूं ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان फ़रमाते हैं : येह सुन कर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस क़दर हंसे कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दाढ़ें मुबारक ज़ाहिर हो गईं फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नहीं, बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस चीज़ के साथ दूसरे मुसलमानों को बे नियाज़ करेगा तुझे भी मुस्तग़नी कर देगा।" (صحيح البخارى ،كتاب الفتن ،باب ذكر الدجال ،الحديث٧١٢٢،ص٥٩٤،مفهوماً)

जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कोई मस्अला पेश आता तो उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर देते और अपनी क़ुव्वत और त़ाक़त से बराअत का इज़हार फ़रमाते और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से

www.dawateislami.net

रेहनुमाई की दुआ़ मांगते और अ़र्ज़ करते : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ह़क़ को ह़क़ दिखा और इस की इत्तिबाअ़ की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और बुराई को बुराई दिखा और इस से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और उमूर के मुश्तबेह होने से मुझे बचा ताकि मैं तेरी रेहनुमाई के बिग़ैर नफ़्स की इत्तिबाअ़ न करने लगूं, मेरी ख़्वाहिश को अपनी इत़ाअ़त के ताबेअ़ कर दे और मुझ से मेरी तनदुरुस्ती में अपनी रिज़ा का काम ले और जब ह़क़ बात में इख़्तिलाफ़ होने लगे तो मेरी रेहनुमाई फ़रमा, बेशक तू ही सीधे रास्ते की त़रफ़ रेहनुमाई फ़रमाता है।" (صحیح مسلم ،کتاب صلاۃ المسافرین ،باب صلاۃ النبی ﷺ ودعائہ باللیل ،الحدیث ۱۸۱۱،ص ۸۰۰،مختصراً)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के खाने के आदाब और अख़्लाक़

बाज़ अख़्लाक़ो आदाब तो खाने पीने के बाब में गुज़र चुके हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ककड़ी को ताज़ा खजूर और नमक के साथ भी तनावुल फ़रमाते।

(صحیح البخاری ،کتاب الاطعمۃ ،باب القثاء والرطب ،الحدیث ۵۴۴۰،ص ۴۶۹ ـ أخلاق النبی ﷺ لابی الشیخ الأصبھانی، باب أکلہ للقرع ومحبتہ ﷺ،الحدیث ۶۳۷،ج ۲،ص ۲۱۴)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फलों में तर खजूर, ख़रबूज़ा और अंगूर ज़्यादा पसन्द थे।

(المعجم الاوسط ،الحدیث ۷۹۰۷،ج ۶،ص ۳۶ ـ الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی ،الرقم ۱۲۹۰ ـ عمرو بن خالد الأسدی الکوفی ،ج ۶،ص ۲۲۴)

बाज़ अवक़ात आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अंगूर का ख़ोशा मुंह में रख कर एक एक दाना खाते और इस से गिरने वाला पानी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारक पर मोतियों की त़रह़ मालूम होता। (المعجم الکبیر، الحدیث ۱۲۷۲۷،ج ۱۲، ص ۱۱۵، بدون "یری رؤائہ علی لحیتہ کاللؤلؤ")

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अक्सर खाना पानी और खजूर होता।

(صحیح البخاری ،کتاب الاطعمۃ ،باب الرطب والتمر .....الخ ،الحدیث ۵۴۴۲،ص ۴۶۹)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दूध और खजूर को इकठ्ठा कर लेते और उन को "अत़य्यिबैन" का नाम देते (यानी उ़म्दा खाने)। (المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث رجل عن النبی ﷺ ،الحدیث ۱۵۸۹۳،ج ۵،ص ۳۸۵)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसन्दीदा खाना गोश्त था और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते : "येह समाअ़त को बढ़ाता है और दुन्या और आख़िरत में खानों का सरदार है, अगर मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से हर रोज़ गोश्त खाने का सुवाल करता तो वोह मुझे रोज़ाना गोश्त खिलाता।"

(أخلاق النبی ﷺ لابی الشیخ الأصبھانی ،باب ما روی فی أکلہ اللحم ﷺ ،الحدیث ۵۸۷،ج ۲،ص ۱۵۳ ـ سنن ابن ماجۃ، ابواب الاطعمۃ ،باب اللحم ،الحدیث ۳۳۰۵،ص ۲۶۷۷،بدون" لو سألت ربی أن یطعمنیہ کل یوم لفعل")

"आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गोश्त और कद्दू से सरीद बना कर खाते।"

(تفسیر القرطبی ،سورۃ الصافات ،تحت الآیۃ:۱۴۶، الجزء الخامس عشر،تحت ج ۸،ص ۹۶)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कद्दू को पसन्द फ़रमाते और फ़रमाते :

اِنَّهَا شَجَرَةُ اَخِیْ یُوْنُسَ "**तर्जमा :** येह मेरे भाई ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام का दरख़्त है ।"

(تفسیر القرطبی ،سورة الصافات ،تحت الآیة:١٤٦،الجزء الخامس عشرتحت ج٨،ص٩٦)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "जब हन्डिया पकाओ तो उस में कद्दू ज़्यादा डालो क्यूंकि वोह ग़मगीन दिलों को तक़विय्यत देता है ।"

(الفوائدالشهیربالغیلا نیات لابی بکرالشافعی ،باب فی اکل النبی صلی اللہ علیہ وسلم القرع ،الحدیث٩١٢،ج٢، ص٤٥٩)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शिकार किए हुवे परिन्दे का गोश्त भी तनावुल फ़रमाते ।

(جامع الترمذی ،ابواب المناقب ،باب حدیث الطیر .....الخ ،الحدیث٣٧٢١،ص٢٠٣٥)

लेकिन न तो ख़ुद शिकार के पीछे जाते, न शिकार करते थे अलबत्ता इस बात को पसन्द फ़रमाते कि कोई आप के लिए शिकार कर के लाए और आप उसे तनावुल फ़रमाएं ।

(المعجم الکبیر ،الحدیث٧٣٤٢،ج٨،ص٥١تا٥٢،مفهوماً)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोटी और घी तनावुल फ़रमाते ।

(سنن ابن ماجة ،ابواب الأطعمة ،باب الخبز الملبق.....الخ ،الحدیث٣٣٤١،ص٢٦٧٩،بتغیرٍ)

बकरी के दस्त और शाने का गोश्त पसन्द फ़रमाते ।

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان ،باب ادنی اهل الجنة منزلة فیها،الحدیث١٩٤،ص٧١٤،مفهوماً
الجامع الصغیر للسیوطی ،باب کان ،الحدیث٦٥١٨،ج١۔٢،ص٤٠٥،بتغیرٍ)

हन्डिया में से कद्दू बत़ौरे सालन इस्तिमाल होने वाली चीज़ों में से सिरका और खजूरों में से उ़म्दा खजूर पसन्द थी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़जवा खजूर के लिए बरकत की दुआ़ फ़रमाई ।

(السنن الکبری للنسائی،ابواب الاطعمة ،باب الدباء،الحدیث٦٦٦٧،ج٤،ص١٥٦،مفهوماً۔الجامع الصغیر للسیوطی
،باب کان ،الحدیث٦٥١٢،ج١۔٢،ص٤٠٥،مفهوماً۔الجامع الصغیر للسیوطی ،باب کان ،الحدیث٦٥٠٢،ج١۔٢،ص٤٠٥،مفهوماً)

इरशाद फ़रमाया :

هِیَ مِنَ الْجَنَّةِ وَشِفَاءٌ مِنَ السُّمِّ وَالسِّحْرِ "**तर्जमा :** येह जन्नत से है और ज़ह्र और जादू से शिफ़ा है ।"

(جامع الترمذی ، ابواب الطب ،باب ماجاء فی الکمأة والعجوة ،الحدیث٢٠٦٦،ص١٨٥٨)
(صحیح مسلم ،کتاب الاشربة، باب فضل تمرالمدینة ،الحدیث٥٣٣٩،ص١٠٤٣)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब्ज़ियों में कासनी, रैह़ान और ख़ुरफ़ा को पसन्द फ़रमाते ।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिबास के मुतअ़ल्लिक़ आदाब और अख़्लाक़

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जो लिबास मयस्सर होता ज़ेबे तन फ़रमा लेते और ज़्यादा तर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का लिबास सफ़ेद होता, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اَلْبِسُوْهَا اَحْيَاكُمْ وَكَفِّنُوْا فِيْهَا مَوْتَاكُمْ

तर्जमा : सफ़ेद लिबास अपने ज़िन्दों को पेहनाओ और अपने मुर्दों को उस से कफ़न दो ।

(سنن ابی ماجة ،کتاب اللباس ،باب البیاض من الثیاب ،الحدیث٣٥٦٦،ص٢٦٩١ـالمعجم الصغیرللطبرانی ،الحدیث٣٨٩،ج١،ص١٣٨ـ١٣٩)

बाज़ अवक़ात आप बाहर तशरीफ़ लाते और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अंगूठी के साथ धागा बंधा होता उस के साथ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी बात को याद करते ।

(الکامل فی ضعفاء الرجال،الرقم٢٥٠،بشر بن ابراهیم الانصاری، ج٢، ص١٦٧، مفهوماً)

"आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इ़मामा शरीफ़ के नीचे टोपी पेहनते और इ़मामे के बिग़ैर भी टोपी पेहनते, बाज़ अवक़ात आप सर से टोपी उतार कर अपने सामने सुतरा बना लेते और इस की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ते ।"

(أخلاق النبی ﷺ لابی الشیخ الأصبهانی ،باب ذکر قلنسوته ﷺ،الحدیث٣٠٠،ج١،ص٣٢٧،بدون: ربما ینزع قلنسوته من رأسه)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब कपड़ा पेहनते तो दाईं त़रफ़ से शुरूअ़ करते ।"

(جامع الترمذی ،ابواب اللباس ،باب ماجاء فی القمص ،الحدیث١٧٦٦،ص١٨٣١)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह पढ़ते : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ مَااُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِی النَّاسِ

"**तर्जमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे वोह चीज़ पेहनाई जिस के ज़रीए़ मैं अपने पर्दे की जगह को ढांपता हूं और इस के साथ लोगों में ज़ीनत ह़ासिल करता हूं ।"

(جامع الترمذی ،کتاب الدعوات ،باب ما أصر من استغفر، الحدیث٣٥٦٠،ص٢٠١٨ـ
المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند علی بن ابی طالب ،الحدیث١٣٥٢،ج١،ص٣٣١)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब कपड़ा उतारते तो बाईं जानिब से उतारते ।

(اخلاق النبی ﷺ لابی الشیخ الاصبهانی ،ذکر محبته للتیامن .....الخ ،الحدیث٧٧٣،ج٢،ص٣٨٤،مفهوماً)

"आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए जुम्अ़ा के दिन पेहनने के लिए मख़्सूस लिबास था ।"

(المعجم الصغیرللطبرانی ،الحدیث٤٢٥،ج١،ص١٥٢،بتغیرٍ)

www.dawateislami.net

जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नया कपड़ा पेहनते तो पुराना कपड़ा किसी मिस्कीन को दे देते और फ़रमाते : "जो शख़्स किसी मुसलमान को अपना ज़ाइद कपड़ा पेहनाए और वोह सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए पेहनाए तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़मान, उस की हिफ़ाज़त और उस की त़रफ़ से भलाई में होता है जब तक पेहनने वाला उसे पेहने रहे ख़्वाह ज़िन्दा हो या मुर्दा।"

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی الملابس والاوانی ،فصل فیما یقول اذالبس ثوباً ،الحدیث٦٢٨٦،ج٥، ص١٨١۔١٨٢)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चमड़े का एक गद्दा था जिस में खजूर की छाल भरी हुई थी, वोह तक़रीबन दो हाथ लम्बा एक हाथ और एक बालिश्त चौड़ा था, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक कम्बल था, जहां आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बैठते वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए दोहरा कर के नीचे बिछाया जाता।

(صحیح البخاری ،کتاب الرقاق ،باب کیف کان عیش النبی ﷺ.....الخ ،الحدیث٦٤٥٦،ص٥٤٢۔
الشمائل المحمدیة ﷺ للترمذی ،باب ما جاء فی فراش رسول اللّٰه ﷺ ،الحدیث٣١٢،ص١٨٨،بتغیرٍ)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चमड़े की पेटी पेहनते थे जिस में चांदी की तीन कड़ियां थीं।

(الطبقات الکبری لابن سعد ،ذکر درع رسول اللّٰه ﷺ ،ج١،ص٣٧٨،مفهوماً)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शुजाअ़त

अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "बद्र के दिन हम ने अपने आप को देखा कि हम नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पनाह ले रहे थे जबकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी निस्बत दुश्मन के ज़्यादा क़रीब थे और इस दिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब लोगों से ज़्यादा जिहाद करने वाले थे।" (المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند علی بن ابی طالب ،الحدیث٦٥٤،ج١،ص١٨٦)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोजिज़ात

जानना चाहिए ! बेशक जिस ने भी नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़वाल और अख़्लाक़ का मुशाहदा किया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्क़ूल उमूर का ग़ौर से मुत़ालआ़ किया उसे मालूम हुवा कि अव्वलीनो आख़िरीन उन जैसी अमसाल पेश करने से आ़जिज़ हैं और येह चीज़ वह़ी और तन्ज़ील के बिग़ैर मुतसव्वर नहीं यहां तक कि एक ख़ालिस अ़रबी ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए अनवर देख कर कहा : وَاللّٰهِ مَاهٰذَا وَجْهُ كَذَّابٍ قَطُّ "**तर्जमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह किसी झूटे शख़्स का चेहरा नहीं।"

साहिबे बसीरत के लिए आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिद्क़ और नबुव्वत की येही दलील काफ़ी है।

www.dawateislami.net

सरापाए मोजिज़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाज़ मोजिज़ात

हम यहां उन बाज़ वाक़िआत का ज़िक्र करते हैं जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मोजिज़ात की सूरत में सादिर हुवे, इन में से एक मोजिज़ा येह है कि जब क़ुरैश ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से शक़्क़े क़मर का मुत़ालबा किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए चांद को शक़्क़ कर दिया गया।

(جامع الترمذی ،ابواب تفسیر القرآن ،باب ومن سورة القمر ،الحدیث٣٢٨٦،ص١٩٨٧)

इन में से एक मोजिज़ा येह है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ज़वए ख़न्दक़ के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के घर में बहुत से सह़ाबए किराम को (थोड़े से) खाने से सेर फ़रमा दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के घर में भी (थोड़ा सा खाना) बहुत से लोगों को खिलाया।

(صحیح البخاری ،کتاب المناقب ،باب علامات النبوة فی الاسلام ،الحدیث٣٥٧٨، ص٢٩١۔
صحیح البخاری ،کتاب المغازی ،باب غزوة الخندق وهی الأحزاب ،الحدیث٤١٠٢،ص٣٣٦)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक उंगलियों से पानी के चश्मे फूट पड़े जिस से तमाम लश्कर ने पानी पिया जबकि वोह प्यासे थे और उन्हें छोटे से प्याले के पानी से वुज़ू करवाया जो इस क़दर तंग था कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दस्ते अक़्दस भी उस में फैल न सकता था।

(المعجم الکبیر ،الحدیث١٠٠١٦،ج١٠،ص٧٩۔٨٠)

ऐसे बहुत से मोजिज़ात हैं मगर साह़िबे बसीरत का ईमान लाना इन चीज़ों पर मौक़ूफ़ नहीं। وَاللّٰهُ اَعْلَم

दावते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **ग़ौरो फ़िक्र** के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पेहली तारीख़ को अपने यहां के (दावते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिए कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हि़स्सा सिवुम
मोहलिकात

बाब : 21 अ़जाइबाते क़ल्ब का बयान

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक इब्ने आदम के बदन में गोश्त का एक टुकड़ा है, अगर वोह दुरुस्त हो जाए तो सारा जिस्म दुरुस्त रेहता है और इस के सबब तमाम बदन दुरुस्त हो जाता है, सुनो ! वोह दिल है।"

(مسند ابی داؤد الطیالسی، الجزء الثالث، النعمان بن بشیر، الحدیث۷۸۸،ص۱۰۶۔۱۰۷)

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب فضل من استبراء لدینه ، الحدیث۵۲،ص۶)

इस ह़दीसे पाक से ज़ाहिर हुवा कि जिस्म में अस्ल दिल ही है और वोह अमीर (यानी निगरान) है कि सारा जिस्म उस की इत़ाअ़त करता है और बाक़ी सारे आज़ा रिआ़या की त़रह़ हैं।

अब हम क़ल्ब (यानी दिल), रूह़, नफ़्स और अ़क़्ल के माना बयान करते हैं।

क़ल्ब के मआ़नी

लफ़्ज़े क़ल्ब दो माना पर बोला जाता है।

पेहला माना : क़ल्ब यानी दिल : येह एक सनौबरी शक्ल (यानी चिलग़ोज़ा की त़रह़) का गोश्त है, जो सीने के बाईं जानिब रखा गया है, जो अन्दर से खोखला है, जिस में सियाह ख़ून होता है, येह रूह़ का मअ़दिन और इस की जगह है और यूं ही इसी शक्ल में येह गोश्त जानवरों और फ़ौतशुदा लोगों के पास भी होता है।

दूसरा माना : येह एक रूह़ानी रब्बानी लत़ीफ़ा (यानी ह़क़ाइक़ व असरार की मारिफ़त का मह़ल) है और इस का जिस्मानी क़ल्ब से तअ़ल्लुक़ होता है और येही लत़ीफ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मारिफ़त रखता है और इस चीज़ का इदराक करने वाला होता है, जिसे ख़याल व वेह्म नहीं समझ सकते और येही ह़क़ीक़ते इन्सान है, इसी को ख़ित़ाब होता है, इसी माना की त़रफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में इशारा किया गया है :

اِنَّ فِیْ ذٰلِکَ لَذِکْرٰی لِمَنْ کَانَ لَهٗ قَلْبٌ

(پ۲۶، ق: ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक इस में नसीह़त है उस के लिए जो दिल रखता हो।

अगर दिल से मुराद सनौबरी शक्ल का गोश्त हो, तो येह हर शख़्स के पास मौजूद होता।

जब येह बात जान ली, तो येह भी समझ लो कि इस (रूह़ानी व रब्बानी) लत़ीफ़े का सनौबरी शक्ल के गोश्त से बहुत गेहरा तअ़ल्लुक़ है, जो बयान से बाहर है, बल्कि येह मुशाहदा और अ़यान पर मौक़ूफ़ होता है और इस के बारे में येही कहा जा सकता है, कि दिल इस लत़ीफ़े के लिए बादशाह की त़रह़ है और येह गोश्त इस के लिए घर और ममलुकत की त़रह़ है (इस लत़ीफ़े का दिल से आराज़ जैसा तअ़ल्लुक़ नहीं) क्यूंकि अगर इस का दिल से तअ़ल्लुक़ आराज़ के तअ़ल्लुक़ की त़रह़ होता तो इस के बारे में येह फ़रमाने इलाही عَزَّوَجَلَّ दुरुस्त न होता :

اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ (پ۹،الانفال:۲٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह का हुक्म आदमी और इस के दिली इरादों में ह़ाइल हो जाता है।

रूह़ के मआ़नी

रूह़ के भी दो मआ़नी हैं।

पेहला माना : रूह़ त़बीआ़ है और येह धुवां (यानी लत़ीफ़ जिस्म) है जिस का मर्कज़ दिल के ख़ला में सियाह ख़ून होता है और दिल से मुराद सनोबरी शक्ल का गोश्त है और येह शुरयानों के ज़रीए़ तमाम अज्ज़ाए बदन तक पहुंचता है। इस की मिसाल घर में रखे हुवे चराग़ की त़रह़ है, जिस से घर के तमाम कोने रौशन हो जाते हैं और त़बीब जब लफ़्ज़े रूह़ बोलते हैं, तो इस से येही माना मुराद लेते हैं।

दूसरा माना : येह वोह रब्बानी लत़ीफ़ा है, जो ह़क़ीक़ते दिल का माना है, रूह़ और क़ल्ब एक ही त़रीक़े से इस लत़ीफ़े पर वारिद होते हैं, इसी त़रफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमान में इशारा फ़रमाया है :

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ (پ۱۵،بنیٓ اسرائیل:۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम से रूह़ को पूछते हैं तुम फ़रमाओ रूह़ मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है।

नफ़्स के मआ़नी

इस के भी दो मआ़नी हैं :

पेहला माना : येह वोह माना है जो ग़ज़ब, शहवत और (इन्सान में पाई जाने वाली) मज़मूम सिफ़ात की क़ुव्वत का जामेअ़ है। हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से भी येही मुराद है :

اَعْدٰى عَدُوِّكَ نَفْسُكَ الَّتِيْ بَيْنَ جَنْبَيْكَ

तर्जमा : तेरा सब से बड़ा दुश्मन तेरा नफ़्स है, जो तेरे पेहलूओं के दरमियान है।

(الزهد الكبير للبيهقى،الجز الثانى، فصل فى ترك الدنيا ومخالفة النفس والهوى، الحديث۳٤۳،ص۱٥٦_۱٥۷)

(नफ़्स से दुश्मनी) नफ़्स से जिहाद करना है। और नफ़्स की ख़्वाहिशात को तोड़ने का हुक्म दिया गया है।

दूसरा माना : येह वोह रब्बानी लत़ीफ़ा है, जो रूह़ और क़ल्ब के दोनों माना में से एक है। इसी त़रह़ नफ़्स का क़ल्ब व रूह़ के लफ़्ज़ के साथ इसी लत़ीफ़े पर इत़लाक़ किया जाता है और येही ह़क़ीक़ते इन्सान है, जिस की वज्ह से वोह तमाम ह़ैवानात से मुमताज़ होता है।

जब येह सिफ़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से मुज़य्यन हों और उस से बुरी सिफ़ात व शहवात के आसार ख़त्म हो जाएं, तो उसे **नफ़्से मुत़मइन्ना** कहा जाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमान से भी येही मुराद है, चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

يَآاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ (پ۳۰،الفجر:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ इत़मीनान वाली जान।

और नफ़्स के इस दरजे पर पहुंचने से पेहले सिफ़ात के एतिबार से इस के दो दरजे हैं। पेहले दरजे में इसे नफ़्से लव्वामा कहा जाता है। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़रमान में इसी की क़सम इरशाद फ़रमाई है :

وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝ (پ۲۹،القیٰمة:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर मलामत करे।

और इस से मुराद वोह नफ़्स है, जो गुनाहों पर अपने आप को मलामत करता है और गुनाहों की त़रफ़ माइल नहीं होता, न उन से ख़ुश होता है और इस दरजे पर पहुंचने से पेहले एक और दरजा है और येह बुराई का हुक्म देने वाला नफ़्स (यानी **नफ़्से अम्मारा**) है जिस के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ (پ۱۳،یوسف:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है।

और येह इस ह़ालत पर होता है, कि न तो नेकी का हुक्म देता और न बुराई पर मलामत करता है और नफ़्स का येह दरजा निहायत क़ाबिले मज़म्मत है और मुत़मइन्ना बेहतरीन नफ़्स है और लव्वामा इन दोनों के दरमियान है। न तो शर पर राज़ी होता है कि इस की त़रफ़ माइल हो और न ही इत़मीनान की त़ाक़त रखता है कि भलाई की त़रफ़ क़रार पकड़े और इस भलाई से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र है।

अ़क़्ल के मआ़नी

इस के कई मआ़नी हैं लेकिन हमारे यहां इस से मुराद दो मआ़नी हैं।

पेहला माना : अश्या के ह़क़ाइक़ का इल्म।

दूसरा माना : अ़क़्ल से मुराद वोह आ़लम है जिस के लिए इल्म सिफ़त की त़रह़ होता है और इस माना से मुराद वोह लत़ीफ़ए रब्बानी है जिस का ज़िक्र पेहले गुज़र चुका है और अ़क़्ल से पेहला माना मुराद लेना मुमकिन नहीं क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब से पेहले अ़क़्ल को पैदा फ़रमाया फिर उस से फ़रमाया :

"आगे बढ़।" तो वोह बढ़ी, फिर फ़रमाया : "पीछे हो।" तो वोह पीछे हो गई।

(حیلة الاولیاء، سفیان بن عیینة، الحدیث ۱۰۸۹٤، ج۷، ص۳۷۲)

जब येह बात वाज़ेह हो गई, कि आयाते मुक़द्दसा और अहादीसे मुबारका में मज़कूर क़ल्ब, अ़क़्ल, रूह और नफ़्स से मुराद रब्बानी लत़ीफ़ा है, लिहाज़ा जब हम उन्हें मुत़लक़ ज़िक्र करेंगे तो हमारी मुराद येही लत़ीफ़ा होगी। इस बात को जान लो।

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल तुस्तरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "दिल अ़र्श (की मिस्ल) और सीना कुरसी (की त़रह़) है।" येह फ़रमान इस बात पर दलालत करता है कि उन के नज़दीक भी दिल से मुराद सनौबरी शक्ल के गोश्त के इलावा कोई और चीज़ है।

दिल के लश्कर

जब दिल के बारे में मालूम हो गया तो अब हम दिल के लश्करों को बयान करते हैं। दिल के लश्कर दो क़िस्म के हैं : एक वोह लश्कर जो आंखों से दिखाई देता है और येह हाथ, पाउं, आंख और दीगर आज़ा हैं। और दूसरा वोह लश्कर है जो बसीरत से दिखाई देता है (यानी दिल की आंखों से दिखाई देता है) और येह वोह सिफ़ात हैं जिन का अ़न क़रीब ज़िक्र होगा।

इस पर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने नसीह़त निशान भी दलालत करता है : "बेशक इन्सानी बदन में एक लोथड़ा (यानी गोश्त का टुकड़ा) है, अगर वोह दुरुस्त हो जाए तो सारा जिस्म दुरुस्त हो जाता है, सुन लो ! वोह दिल है।" (صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب فضل من استبراء لدینه، الحدیث ۵۲، ص٦)

(مسند ابی داؤد الطیالسی، الجزء الثالث، النعمان بن بشیر، الحدیث ۷۸۸، ص۱۰٦-۱۰۷)

दिल को बादशाह और मख़्दूम होना चाहिए, नफ़्स और तमाम आज़ा को इस के अवामिर व नवाही का ताबेअ़ होना चाहिए, लेकिन अगर तमाम आज़ा दिल के मुत़ीअ़ न हों और उन पर शहवत ग़ालिब हो तो अमीर (यानी दिल) मामूर बन जाता है और मुआ़मला उलट हो जाता है और बादशाह (यानी दिल) किसी कुत्ते या दुश्मन के क़ब्ज़े में क़ैद शख़्स की त़रह़ हो जाता है। चुनान्चे, जब आदमी ह़िर्स या शहवत की पैरवी करता है तो ह़ालते नींद या बेदारी में गोया अपने आप को ख़िन्ज़ीर या गधे के सामने सजदा करते हुवे देखता है और येही जाली सूफ़िया की ह़ालत है और अगर वोह ग़ुस्से की पैरवी करता है तो गोया अपने आप को कुत्ते के सामने सजदा करते हुवे देखता है। दर ह़क़ीक़त गधे की पैरवी शहवत की पैरवी है और ख़िन्ज़ीर की इत़ाअ़त ह़िर्स की पैरवी है और जब आदमी इस ह़ालत (यानी ख़्वाहिश व ह़िर्स की पैरवी) में होता है तो वोह अपने ऊपर मुसल्लत़ शैत़ान का पैरूकार बन जाता है पस जब ख़्वाहिशात का तसल्लुत़ उन सिफ़ात के साथ जो शैत़ान के लश्कर हैं, दिल पर त़वील हो जाता है तो इस लश्कर को शिकस्त देने के लिए दिल की मदद नहीं की जाती और दिल अ़र्सए दराज़ तक मग़्लूब रेहता है और वोह इस लत़ीफ़े की ख़ासिय्यत को ज़ाएअ़ करने का सबब बन जाता है। अहादीस में दिल की सियाही से येही मुराद है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इन फ़रामीन :

﴿۱﴾ اُولٰٓئِکَ الَّذِیْنَ طَبَعَ اللّٰہُ عَلٰی قُلُوْبِھِمْ (پ۲٦، محمّد:١٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह हैं वोह जिन के दिलों पर **अल्लाह** ने मोहर कर दी।

﴿۲﴾ کَلَّا بَلْ سکتہ رَانَ عَلٰی قُلُوْبِھِمْ (پ۳۰،المطففین:١٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं, बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है।

में मोहर और ज़ंग से येही मुराद है और दिल की मिसाल आईने की सी है। जब तक वोह ज़ंग और गर्दो गुबार से साफ़ रेहता है, उस में अश्या दिखाई देती हैं लेकिन जब इस पर ज़ंग ग़ालिब आ जाता है तो इसे साफ़ करना और उस से ज़ंग को दूर करना मुमकिन नहीं होता क्यूंकि वोह ज़ंग उस पर ग़ालिब आ चुका होता है और उस पर उस की तह जम चुकी होती है जिस की वज्ह से वोह ज़ाएअ़ हो जाता है और उस की ह़ालत येह हो जाती है कि कोई भी साफ़ करने वाला उसे साफ़ और दुरुस्त नहीं कर सकता, मोहर और ज़ंग से येही मुराद है।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "बेशक दिल को भी ज़ंग लग जाता है जिस त़रह़ लोहे को ज़ंग लग जाता है।" अ़र्ज़ की गई : "इस की सफ़ाई कैसे होगी ?" फ़रमाया : "मौत को याद करने और कुरआने पाक की तिलावत करने से।" (شعب الایمان للبیھقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ادمان تلاوتہ، الحدیث٢٠١٤،ج٢،ص٣٥٢)

जब दिल की हुक्मरानी मुकम्मल तौ़र पर ख़त्म हो जाती है तो शैत़ान ह़ाकिम बन जाता है और अच्छी सिफ़ात बुरी सिफ़ात से बदल जाती हैं।

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दिल चार अक़्साम के हैं : (1) वोह दिल जो साफ़ है और उस में चराग़ रौशन होता है, येह मोमिन का दिल है (2) वोह दिल जो सियाह औंधा होता है, येह काफ़िर का दिल है (3) वोह दिल जिस पर ग़िलाफ़ चढ़ा होता है और उस का ग़िलाफ़ बंधा होता है, येह मुनाफ़िक़ का दिल है (4) वोह दिल जिस में ईमान और निफ़ाक़ की आमेज़िश होती है, उस में ईमान उस सब्ज़ी की मिस्ल है जिसे अच्छा पानी नश्वो नुमा देता है और उस में निफ़ाक़ की मिसाल उस ज़ख़्म की त़रह़ है जिसे पीप बढ़ाती है, पस उस पर जो माद्दा ग़ालिब आ जाता है उसी का हुक्म उस पर लगाया जाता है। और एक रिवायत में है कि दिल को वोही (ग़ालिब आने वाला) माद्दा ले जाता है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث١١١٢٩،ج٤، ص٣٦بتغیرٍ)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّھُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَکَّرُوْا فَاِذَا ھُمْ مُّبْصِرُوْنَ0 (پ۹،الاعراف:٢٠١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैत़ानी ख़याल की ठेस लगती है, होशियार हो जाते हैं, उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में इस बात की ख़बर दी गई है कि ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ से दिल की बसीरत और सफ़ाई ह़ासिल होती है और तक़्वा से ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ पर क़ुदरत होती है।

www.dawateislami.net

पस तक़्वा ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ का दरवाज़ा, ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ कश्फ़ का दरवाज़ा और कश्फ़ बहुत बड़ी कामयाबी की कुन्जी है।

जान लो ! दिल की मिसाल आईने की त़रह़ है और उ़लूमे ह़क़ाइक़ की मिसाल उन तसावीर की त़रह़ है जो आईने में दिखाई देती हैं। आईना भी शै है और ह़क़ाइक़ भी बिज़्ज़ात शै हैं और आईने में तस्वीर का हुसूल भी शै है, पस येह तीनों अश्या हैं।

पस "इ़ल्म" आईने में किसी चीज़ का हुसूल है और "दिल" आईने की मिसाल है और "ह़क़ाइक़" बिज़्ज़ात एक तीसरी चीज़ है। जब येह मालूम हो गया तो जान लो ! आईने में सूरत के वाज़ेह़ न होने के पांच अस्बाब हैं :

पेहला सबब : आईना अच्छा न हो और वोह येह है कि अभी उसे आईने की शक्ल न दी गई हो और न ही पॉलिश किया गया हो।

दूसरा सबब : उस में गदला पन हो और ज़ंग लगा हुवा हो।

तीसरा सबब : जिस चीज़ को आईने में देखना हो वोह उस से हटी हुई हो, वोह यूं कि वोह चीज़ आईने के पीछे हो।

चौथा सबब : आईना और सूरत के दरमियान पर्दा लटका दिया गया हो।

पांचवां सबब : जिस चीज़ की सूरत देखना मक़्सूद है उस की सम्त मालूम न हो।

इसी त़रह़ दिल भी एक आईना है जिसे इस मक़्सद के लिए तय्यार किया गया है कि इस में तमाम मामूरात के ह़क़ाइक़ मुन्कशिफ़ हों लेकिन पांच अस्बाब की वज्ह से दिल ह़क़ाइक़ से ख़ाली होता है।

पेहला सबब : दिल में ही कमी और नुक़्सान हो जैसे बच्चे और पागल का दिल।

दूसरा सबब : गुनाहों की कदूरत और ख़बासत जो ख़्वाहिशात की कसरत की वज्ह से दिल पर जम्अ़ हो गई हो, इसी की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़रमान में इशारा फ़रमाया :

﴿۲﴾ كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ (پ۳۰،المطففین:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं, बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है।

और सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : مَنْ قَارَفَ ذَنْبًا فَارَقَهٗ عَقْلٌ لَمْ يَعُدْ اِلَيْهِ اَبَدًا **"तर्जमा :** जो शख़्स कोई गुनाह करता है उस से अ़क़्ल जुदा हो जाती है और कभी भी उस की त़रफ़ वापस नहीं लौटती।"

इस का तक़ाज़ा येह है कि वोह इस बुराई के बाद नेकी करे, जो उस के दिल को सैक़ल (साफ़) कर दे और अगर वोह गुनाह की बजाए नेकी करे तो यक़ीनन दिल की रौशनी बढ़ेगी।

तीसरा सबब : येह है कि ह़क़ीक़ते मत़्लूबा से दिल फिरा हुवा हो और उस की तवज्जोह सिर्फ़ इ़बादात की तरतीब की त़रफ़ हो। उसे चाहिए कि वोह उस त़रह़ हो जाए जिस त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया जिस का ज़िक्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में इस त़रह़ फ़रमाया :

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا (پ۷،الانعام:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर।

चौथा सबब : चौथी रुकावट ह़िजाब है, वोह इस त़रह़ कि उस के दिल में शहवत बाक़ी होती है या बचपन से अपनाया हुवा फ़ासिद अ़क़ीदा होता है और उस का असर बाक़ी रेहता है।

पांचवां सबब : जिस सम्त से मत़लूब ह़ासिल होता है उस से नावाक़िफ़ होना भी एक रुकावट है। उसे उस चीज़ पर मुकम्मल त़ौर पर ईमान होना चाहिए जो उसे ह़ासिल न हो और येही ईमान बिल ग़ैब है और जब तक उसे येह ईमान न हो तो येह कैसे मुमकिन है कि वोह उन चीज़ों को त़लब करे जिन के वुजूद का उसे इ़ल्म ही नहीं ? चुनान्चे, ग़फ़्लत रुकावट बन जाती है।

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

لَوْلَا اَنَّ الشَّیَاطِیْنَ یَحُوْمُوْنَ عَلٰی قُلُوْبِ بَنِیْ آدَمَ لَنَظَرُوْا اِلٰی مَلَکُوْتِ السَّمَاءِ.

तर्जमा : अगर शयात़ीन ने इन्सानों के दिलों को घेरा हुवा न होता तो वोह आस्मान की बादशाही की त़रफ़ देख लेते।[1]

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ، الحدیث۸٦٤۸، ج۳،ص۲٦۹۔۲۷۰، بتغیرٍ)

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़ली वक़ार है :

کُلُّ مَوْلُوْدٍ یُوْلَدُ عَلَی الْفِطْرَۃِ فَاَبَوَاہُ یُھَوِّدَانِہٖ اَوْ یُنَصِّرَانِہٖ اَوْ یُمَجِّسَانِہٖ.

तर्जमा : हर बच्चा (दीने) फ़ित़रत पर पैदा होता है फिर उस के वालिदैन उसे यहूदी, ईसाई या मजूसी बना देते हैं।

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب ما قیل فی أولاد المشرکین، الحدیث۱۳۸۵،ص۱۰۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में अ़र्ज़ किया गया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم!

1....औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के दिलों में जल्वए ह़क़ इस क़दर आश्कार होता है कि काबए मुबारका भी उन का इस्तिक़्बाल करता है जैसा कि "ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا जब ह़ज के लिए तशरीफ़ ले गईं तो काबए मुबारका ने ख़ुद आगे बढ़ कर उन का इस्तिक़्बाल किया।"

(تذکرۃ الاولیاء،حضرت سَیِّدَتُنا رابعہ بصریہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہا،ص٦۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कहां है ? ज़मीन में है या आस्मान में ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "एह्ले ईमान के दिलों में है।" (مسند الشامیین للطبرانی، الحدیث ۸٤۰، ج۲، ص۱۹، بتغیر)

(ह़दीसे कुदसी है) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

لَمْ يَسَعْنِيْ اَرْضِيْ وَ سَمَآئِيْ وَوَسَعَنِيْ قَلْبُ عَبْدِيَ الْمُؤْمِنِ .

तर्जमा : मैं अपने ज़मीनो आस्मान में नहीं समा सकता बल्कि मैं अपने मोमिन बन्दे के दिल में समाता हूं।

(فردوس الاخبار للدیلمی، باب القاف، الحدیث ٤٤٦٢، ج۲، ص۱۳۵، بتغیر)

इसी वज्ह से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे दिल ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ को देखा।" क्यूंकि उन्हों ने अपने दिल का तज़किया किया था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا0 (پ۳۰، الشمس:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचा जिस ने उसे सुथरा किया।

जान लो ! क़बूले ह़क़ के तीन दरजात हैं।

(1) बचपन से सुन कर क़बूल करना इस में ख़त़ा का इमकान है और येह अ़वाम की तक़्लीद है।

(2) वोह अपने मत़लूब के कलाम को सुने मसलन घर के अन्दर से सुने। येह बात उस चीज़ पर दलालत करती है कि येही शख़्स मत़लूब है।

(3) घर में दाख़िल हो कर अपनी आंखों से उस का मुशाहदा व मुआ़एना करना और अमीरुल मोमिनीन, मौलाए मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के इस फ़रमान से येही मुराद है कि अगर पर्दा हट जाए तो ईमान में यक़ीनन इज़ाफ़ा होगा।

और येह अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, सिद्दीक़ीन और औलिया عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का ईमान है और येह ईमान सह्व व ग़फ़्लत से पाक होता है।

जब कि काफ़िर, बच्चे और मजनून के ह़क़ाइक़ पर मुत्तलअ़ न होने की मिसाल उस बीना शख़्स की है जो अन्धेरे में होता है क्यूंकि निगाह अक्सर कामिल होती है लेकिन देखना मुमकिन नहीं होता ह़त्ताकि सूरज की रौशनी में इन्सान साबिक़ा बीनाई से देखने लगता है। इसी त़रह़ अ़क़्लमन्द और बालिग़ होने से पेहले पागल और बच्चे के दिल पर इ़ल्म मुन्कशिफ़ नहीं होता क्यूंकि उन के दिल की तख़्ती क़लम के नक़्श को क़बूल करने पर तय्यार नहीं होती और क़लम से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ है जिसे उस ने बन्दों के दिलों में उ़लूम नक़्श करने का सबब बनाया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

اَلَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ0عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمْ 0 (پ۳۰، العلق:٤-٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस ने क़लम से लिखना सिखाया आदमी को सिखाया जो न जानता था।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़लम मख़्लूक़ के क़लम के मुशाबेह नहीं जिस त़रह़ उस के औसाफ़ मख़्लूक़ के औसाफ़ के मुशाबेह नहीं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़लम लकड़ी और बांस से बना हुवा नहीं जैसे उस की ज़ात न जोहर (यानी जिस्म) है न अ़र्ज़ (जो क़ाइम रेहने के लिए दूसरे जिस्म का मोह़ताज हो)।

यक़ीनन तेरे लिए दिल की मिसाल ज़ाहिर हो गई यानी दिल लत़ीफ़ए रब्बानिय्या है जो बादशाह की त़रह़ है और जिस्म उस की सल्त़नत की त़रह़ है और कुव्वते अ़क़्लिय्या मुफ़क्किरा उस की वज़ीर है और मज़मूम सिफ़ात उस के सिपाही हैं और दिल जब तक वज़ीर के मश्वरे के मुत़ाबिक़ इस्तिमाल पर क़ुदरत रखता है और अ़क़्ल के मश्वरे के मुत़ाबिक़ अपनी सल्त़नत में तसर्रुफ़ करता है वोह अपनी सल्त़नत में दुरुस्त रेहता है लेकिन अगर शहवात और मज़मूम सिफ़ात अ़क़्ल के मश्वरे को ख़त्म करने पर मुसल्लत़ हो जाएं तो येह चीज़ अ़द्ल के ख़िलाफ़ होती है और हम उस की दूसरी मिसाल देते हैं कि येह शिकार करने वाले घुड़ सुवार की त़रह़ है, बदन उस की सुवारी और ग़ज़ब व शहवत उस के कुत्ते हैं। अगर घोड़ा उस की इत़ाअ़त करे, दरिन्दा और कुत्ता उस के मुत़ीअ़ हों तो शिकार का मक़्सद पूरा होगा और वोह उ़लूम और दाइमी सआ़दत का हुसूल है लेकिन अगर घोड़ा सरकश हो और उस की इत़ाअ़त न करे या कुत्ता सिधाया हुवा न हो, न उस के इशारे पर भागे, न रुके तो मुआ़मला ख़राब हो जाएगा और मक़्सूद ह़ासिल न होगा और डर है कि कुत्ता शिकार पर ग़लबा पा कर उसे खा जाएगा चे जाए कि वोह शिकार उस के लिए रोक कर रखे।

जान लो ! दिल के लिए हुसूले इ़ल्म के चन्द दरजात हैं।

इन में से एक दरजा वोह है जो उ़लमा का है कि वोह मुक़द्दमात से नताइज और दलाइल से मदलूलात तक रसाई ह़ासिल करते हैं। उन में से एक दरजा वोह है जो कश्फ़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इरादे के ज़रीए ह़ासिल होता है जिस त़रह़ अम्बियाए किराम علٰی نبینا وعلیہم الصلوٰۃ والسلام का मर्तबा है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में इरशाद फ़रमाया :

وَكَذٰلِكَ نُرِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ (پ۷،الانعام:۷۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इसी त़रह़ हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों और ज़मीन की।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : اَللّٰهُمَّ اَرِنَا الْاَشْیَاءَ كَمَا هِیَ **"तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** ! हमें अश्या की ह़क़ीक़त से आगाही अ़त़ा फ़रमा।"

पस अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिए बिग़ैर किसी दलील, बुरहान और मुक़द्दमे के ह़क़ाइक़ मुन्कशिफ़ किए जाते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से भी येही मुराद है :

مَا یَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا (پ۲۲، فاطر:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** जो रेह़मत लोगों के लिए खोले उस का कोई रोकने वाला नहीं।

www.dawateislami.net

और येह रेह़मत उन दिलों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अबदी रेह़मो करम का फ़ैज़ान होता है जो उस के त़ालिब होते हैं और उसी की त़रफ़ नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इस फ़रमान में इशारा फ़रमाया :

اِنَّ لِرَبِّكُمْ فِیْ اَیَّامِ دَهْرِكُمْ نَفَحَاتٌ اَلَا فَتَعَرَّضُوْا لَهَا.

तर्जमा : बेशक तुम्हारे अय्यामे ज़िन्दगी में तुम्हारे रब की त़रफ़ से कुछ ख़ुश गवार झोंके हैं, सुनो ! उन को ज़रूर ह़ासिल करते रहा करो।

(المعجم الاوسط، الحديث٢٨٥٦،ج٢،ص١٥٥)

तअ़र्रिज़ से मुराद तज़किया के साथ फ़लाह़ व सआ़दत ह़ासिल करना है।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है :

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝ (پ٣٠، الشمس:٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचा जिस ने उसे सुथरा किया।

और एराज़ से मुराद दिल को रोक कर बदबख़्ती का मुस्तह़िक़ होना है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝ (پ٣٠، الشمس:١٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नामुराद हुवा जिस ने उसे मासिय्यत में छुपाया।

और जब बन्दे की त़रफ़ से इरादे को ज़ाहिर करने का कहा जाए तो उस की मिसाल दुआ़ करना और हिदायत के नुज़ूल को त़लब करना है और अगर येह बन्दे के लिए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बिग़ैर त़लबे नुज़ूल व सबब के हो तो उस की मिसाल नुज़ूल फ़रमाना है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान में इसी त़रफ़ इशारा है :

يَنْزِلُ اللّٰهُ تَعَالٰى كُلَّ لَيْلَةٍ اِلٰى سَمَآءِ الدُّنْيَا.

तर्जमा : हर रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आस्माने दुन्या की त़रफ़ तजल्ली फ़रमाता है।

(المسند للامام احمد بن حنبل، حديث جبير بن مطعم، الحديث١٦٧٤٧،ج٥،ص٦١٧-٦١٨)

और ह़दीसे क़ुदसी में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَقَدْ طَالَ شَوْقُ الْاَبْرَارِ اِلٰى لِقَائِیْ، وَاَنَا اِلٰى لِقَائِهِمْ لَاَشَدُّ شَوْقًا.

तर्जमा : मेरे नेक बन्दों का मेरी मुलाक़ात के लिए शौक़ बढ़ गया और मुझे भी उन की मुलाक़ात का बहुत ज़्यादा शौक़ है।

(فردوس الاخبار للديلمی، باب الياء، الحديث٨١٢٦،ج٢،ص٤٦٢)

एक और ह़दीसे क़ुदसी में है :

مَنْ تَقَرَّبَ اِلَیَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ اِلَيْهِ ذِرَاعًا.

तर्जमा : जो शख़्स एक बालिश्त मेरे क़रीब होता है मैं एक हाथ उस के क़रीब हो जाता हूं।

(صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب فی الحض علی التوبة والفرح بها، الحديث٦٩٥٢،ص١١٥٣)

मुख़्तसर येह कि तुम जान लो ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का जूद इस बात का तक़ाज़ा करता है कि सआ़दत बिग़ैर किसी बुख़्ल के ह़ासिल हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का करमे सरमदी (यानी दाइमी) इस बात का तक़ाज़ा करता है कि दिल अस्ल फ़ित़रत में इस सआ़दत के क़बूल करने को तय्यार रहे और उसी की त़रफ़ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान में इशारा है :

كُلُّ مَوْلُوْدٍ يُوْلَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ.

तर्जमा : हर बच्चा (दीने) फ़ित़रत पर पैदा होता है।

(صحيح البخاری، كتاب الجنائز، باب ما قيل فی أولاد المشركين، الحديث ١٣٨٥، ص١٠٨)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ज़ीशान है :

﴿١﴾ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِیْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَیْهَا (پ٢١، الروم: ٣٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह की डाली हुई बिना जिस पर लोगों को पैदा किया।

﴿٢﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْۤ اَحْسَنِ تَقْوِیْمٍ ۝ (پ٣٠، التين: ٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने आदमी को अच्छी सूरत पर बनाया।

हां ! इस के बाद इन दो उमूर के दरमियान दीगर ऐसे उमूर आ जाते हैं जो (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मतो जलाल से) मानेअ़ और ग़ाफ़िल करने वाले होते हैं और वोह ख़्वाहिशात, ख़बाइस और मशाग़िल हैं। चुनान्चे, जब येह मवानेअ़ ख़त्म हो जाते हैं तो उमूरे अस्ल मुक़्तज़ियात की त़रफ़ लौट जाते हैं और दिल पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत और उस का जलाल ज़ाहिर हो जाता है और वोह हमेशा की सआ़दत तक पहुंच जाता है पस किसी चीज़ में से बरतन में जितना डाला जाता है उतना ही वोह ग़ैर के लिए वुस्अ़त इख़्तियार करता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

اَلرَّبّٰنِیُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ (پ٦، المائدة: ٤٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आ़लिम और फ़क़ीह।

जिस शख़्स को येह सआ़दत ह़ासिल हो जाती है वोह मुअ़ज़्ज़ज़ फ़रिश्तों की त़रह़ हो जाता है और रब्बानी (यानी अल्लाह वाला) बन जाता है।

अमीरुल मोमिनीन, मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के फ़रमान में इसी जानिब इशारा है। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक ज़मीन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बरतन हैं और वोह दिल हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक इन में से ज़्यादा पसन्दीदा वोह बरतन है जो नर्म, साफ़ और मज़बूत़ हो।" फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस की वज़ाह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "जो दीन में ज़्यादा मज़बूत़, यक़ीन में ज़्यादा साफ़ और अपने भाइयों के लिए ज़्यादा नर्म हैं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में इसी त़रफ़ इशारा है :

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِیْ بَحْرٍ لُّجِّیٍّ (پ١٨، النور: ٤٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : या जैसे अन्धेरियां किसी कुंडे के (गेहराई वाले) दरिया में।

www.dawateislami.net

येह मुनाफ़िक़ के दिल की मिसाल है। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आ़लीशान : فِیْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝ (پ۳۰،البروج:۲۲) "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : लौहे़ मह़फ़ूज़ में।" से मुराद मोमिन का दिल है।

जान लो ! बेशक इन्सान में अपनी फ़ित़रत और तरकीब के एतिबार से चार क़िस्म की सिफ़ात की आमेज़िश होती है : (1) दरिन्दों वाली सिफ़ात (2) जानवरों वाली सिफ़ात (3) शैत़ानी सिफ़ात और (4) रब्बानी सिफ़ात। चुनान्चे, जब इस पर गुस्सा मुसल्लत़ हो तो दरिन्दों वाले काम करता है और जब इस पर शहवत ग़ालिब हो तो जानवरों वाले काम करता है और इन्सान पर इन दो सिफ़ात की वज्ह से और ह़िर्स, क़ह्र, ग़लबा, फ़रेब और धोके में मुब्तला होने की वज्ह से शैत़ानिय्यत ग़ालिब आ जाती है और इस ह़ैसिय्यत से कि ह़क़ीक़त में रूह़ अम्रे रब्बानी है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया :

قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّیْ (پ۱۵ بنیٓ اسرائیل:۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ! रूह़ मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है।

तो वोह (यानी नफ़्स) अपने लिए रब होने का दावा करता है, ह़ाकिमिय्यत पसन्द करता है और इत़ाअ़त को तर्क कर देता है और जब इ़ल्मो मारिफ़त की त़रफ़ मन्सूब किया जाए तो ख़ुश हो जाता है और जब उसे जाहिल कहा जाए तो ग़मगीन हो जाता है।

जब तुम ने येह बात जान ली तो येह भी जान लो कि इ़बादात में मश्ग़ूल होने और इन पर हमेशगी इख़्तियार करने का मक़्सद येह है कि दिल ना मुनासिब बातों से उचाट हो जाए और ऐसी बातें बाक़ी रहें जिन का दिल में रखना ज़रूरी है।

येह बात اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़न क़रीब रियाज़ते नफ़्स के बाब में ज़िक्र की जाएगी और जान लो ! इ़ल्मे सालेह़ का दिल के लिए ह़ासिल होना अगर सीखने और मुक़द्दमात की तक़्दीम के त़रीक़े से हो तो येह उ़लमा का त़रीक़ा है और जो इस के इ़लावा है वोह सूफ़िया का त़रीक़ा है और वोह कश्फ़ व मुशाहदे के ज़रीए इ़ल्म का ह़ुसूल है।

चुनान्चे, इस की दो अक़्साम हैं, इन में एक की मिसाल नफ़्स में इल्हाम का वाक़ेअ़ होना है और येही दिल में किसी चीज़ का डालना है। ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : "बेशक रूहुल कुद्स (यानी ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام) ने मेरे दिल में येह बात डाली है कि जिस से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चाहें मह़ब्बत करें, बेशक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस से अ़लाह़दा होने वाले हैं, जो चाहें अ़मल करें, बेशक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस का बदला दिया जाएगा और जितनी चाहें ज़िन्दगी गुज़ारें बिल आख़िर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी होना है।

(شعب الایمان للبیھقی، باب فی الزھد وقصر الأمل، الحدیث ۱۰۵۴۱، ج۷، ص۳۴۹، بتغیرٍ)

और एक दूसरी क़िस्म है जो इल्हाम की जिन्स से है। वोह येह है कि ह़क़ाइक़ इन्सान पर ज़ाहिर हो जाएं और वोह उन मुअक्किल फ़रिश्तों को भी देख ले, जिन से वोह फ़ाएदा ह़ासिल करता है।

www.dawateislami.net

येह बात आप पेहले जान चुके हैं, कि अश्या के ह़क़ाइक़ लौहे़ मह़फ़ूज़ में मन्क़ूश होते हैं, पस जब दिल साफ़ शफ़्फ़ाफ़ शीशे की त़रह़ हो जाता है, तो जब भी ह़िजाब उठता है और शीशा लौहे़ मह़फ़ूज़ के सामने होता है, तो उस में उ़लूम के ह़क़ाइक़ ज़ाहिर हो जाते हैं और ह़िजाब का उठना कभी नींद में होता है और कभी बेदारी में और येही सूफ़िया की आ़दत है। और कभी ह़िजाब का उठना मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लुत़्फ़ो करम की हवाओं के चलने से होता है जो बन्दे की त़रफ़ से बिग़ैर किसी सबब और तय्यारी के होता है। चुनान्चे, दिल के लिए ग़ैब के ह़िजाब से उ़लूम के कुछ असरार वाज़ेह़ हो जाते हैं और इस कश्फ़ की तक्मील मौत से होती है और कभी मौत से कुल्ली त़ौर पर ह़िजाब उठ जाता है, इसी की त़रफ़ शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने फ़रमान में इशारा फ़रमाया : اَلنَّاسُ نِيَامٌ فَاِذَا مَاتُوْا اِنْتَبَهُوْا "**तर्जमा :** लोग सोए हुवे हैं, जब उन्हें मौत आएगी तो बेदार हो जाएंगे।"

(حلية الاولياء، سفيان الثورى، الحديث٩٥٧٦،ج٧،ص٥٤)

और सूफ़िया का दिल की सफ़ाई का त़रीक़ा भी मौत के क़रीब है इसी वज्ह से वोह लोग इ़ल्म सीखने में मसरूफ़ नहीं होते बल्कि दिल की सफ़ाई और अ़लाइके़ दुन्या से क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ी में मश्ग़ूल रेहते हैं ताकि येह चीज़ कुल्ली त़ौर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होने का सबब बन जाए फिर वोह अपना मुआ़मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर देते हैं, पस वोह उन के दिल पर ज़ाहिर होने वाले अन्वारो तजल्लिय्यात को ज़्यादा जानता है, और येही अम्बियाए किराम और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का त़रीक़ा है कि वोह पढ़ने पढ़ाने से उ़लूमो ह़क़ाइक़ ह़ासिल नहीं करते बल्कि वोह उ़लूमो मआ़रिफ़ के ख़ज़ाने पाते हैं और इन के ज़रीए़ (ज़ाहिरी त़ौर पर) इ़ल्म ह़ासिल करने से मुस्तग़नी हो जाते हैं। सीखने वाले इ़ल्म और उन के त़रीक़े की मिसाल कन्ज़ और कीमिया है और जब तक तू कन्ज़ (यानी अस्ली ख़ज़ाने) पर मुत्त़लअ़ न हो जाए इ़ल्म के ह़ासिल करने को न छोड़ क्यूंकि इस त़रह़ करना हलाकत का सबब है।

उ़लूम के एतिबार से दिल की ह़ालत नीज़ उ़लमाए ज़ाहिर और सूफ़िया के त़रीक़े में फ़र्क़ का बयान

ऐ भाई जान ले ! दिल के दो दरवाज़े हैं : एक दरवाज़ा वोह है जो **आ़लमे ह़वास** की त़रफ़ है।[1] और दूसरा वोह है जो आ़लमे ग़ैब की त़रफ़ है। नींद में कुछ ग़ौरो फ़िक्र करने से इस बात की सच्चाई सामने आती है क्यूंकि तू नींद में अ़जाइबात देखता है और तेरे लिए ग़ैब ज़ाहिर हो जाता है और वोह चीज़ भी ज़ाहिर हो जाती है जो कुछ मुद्दत बाद वाक़ेअ़ होगी और बेदारी में येह दरवाज़ा अम्बियाए

1 ....ह़वास से **ह़वासे ख़म्सा** मुराद हैं और इन पांच ह़वास यानी **देखने, सुनने, सूंघने, चखने** और **छूने** की कुव्वतों को **ह़वासे ख़म्सा** केहते हैं।" (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात, स. 576)

www.dawateislami.net

किराम और औलियाए इ़ज़ाम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن के लिए खुलता है और येह चीज़ उस के लिए है जो अपने दिल को मा सिवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पाक कर के मुकम्मल तौ़र पर उसी की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाए। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने फ़रमान में इसी त़रफ़ इशारा फ़रमाया : سَبَقَ الْمُفْرِدُوْنَ **"तर्जमा :** मुफ़रिदून सबक़त ले गए।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में अ़र्ज़ किया गया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुफ़रिदून कौन हैं ?"

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में कोशिश करते हैं ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ उन के बोझों को हल्का कर देगा और वोह बरोज़े क़ियामत हल्के फुल्के होंगे।" (फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ख़बर देते हुवे इरशाद फ़रमाया कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन का वस्फ़ बयान करते हुवे फ़रमाता है : "मैं उन की त़रफ़ अपनी रेह़मत से मुतवज्जेह होता हूं, क्या तुम देखते नहीं कि मैं जिन की त़रफ़ अपनी नज़रे रेह़मत फ़रमाता हूं क्या कोई जानता है कि मैं उन्हें क्या अ़त़ा फ़रमाना चाहता हूं ?" फिर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़ीद इरशाद फ़रमाया : (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है कि) "पेहले मैं उन के दिलों में अपना नूर दाख़िल फ़रमा देता हूं, चुनान्चे, वोह मेरे बारे में यूं ख़बर देते हैं जैसे मैं उन के बारे में ख़बर देता हूं।"

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب سبق المفردون، الحدیث۳۵۹۶،ص۲۰۲۲، مختصراً۔وبتغیرٍ)

पस इन तमाम ख़बरों का दुख़ूल दिल के उस दरवाज़े से होता है जो इल्मे ग़ैब की त़रफ़ होता है और वोही इल्मे इलाही है।

बाज़ सूफ़िया फ़रमाते हैं : दिल में ग़ैब की त़रफ़ एक रौशनदान होता है।

अब हम एक ह़िकायत के ज़रीए़ उ़लमाए ज़ाहिर और सूफ़िया के त़रीक़े के दरमियान फ़र्क़ बयान करते हैं।

मन्क़ूल है, चीन और रूम वालों ने किसी बादशाह के सामने नक़्शो निगार और तसावीर बनाने के सिलसिले में बाहम मुक़ाबला किया। बादशाह ने अपनी राए के मुत़ाबिक़ एक मकान उन के सिपुर्द कर दिया कि इस की एक जानिब चीन वाले नक़्शो निगार करें और दूसरी जानिब रूम वाले। और दरमियान में पर्दा डाल दिया ताकि वोह एक दूसरे का काम देख न सकें, रूम वालों ने अपनी त़रफ़ बे शुमार अ़जीबो ग़रीब क़िस्म के ख़ूब सूरत नक़्शो निगार किए और चीन वालों ने अपनी त़रफ़ की दिवार को ख़ूब अच्छी त़रह़ साफ़ शफ़्फ़ाफ़ कर के शीशे की मिस्ल बना दिया। जब एह्ले रूम फ़ारिग़ हो गए तो चीन वालों ने कहा : हम भी फ़ारिग़ हो गए हैं। बादशाह को उन पर तअ़ज्जुब हुवा कि वोह किसी क़िस्म का नक़्शो निगार किए बिग़ैर कैसे फ़ारिग़ हो गए ? तो उन्हों ने कहा : आप को इस पर क्या एतिराज़ है ? आप पर्दा उठा कर देख लीजिए। जब पर्दा उठाया गया तो रूम वालों के बनाए हुवे नक़्शो निगार चीन वालों की चमकाई हुई दीवार में चमक रहे थे क्यूंकि वोह दीवार को साफ़ करते और चमकाते रहे जब कि दूसरे सिर्फ़ नक़्शो निगारी में मसरूफ़ रहे।

(فیض القدیر شرح الجامع الصغیر،تحت الحدیث۲۴۱۹،ج۲،ص۶۴۸)

www.dawateislami.net

(इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى इस ह़िकायत को नक़्ल करने के बाद इरशाद फ़रमाते हैं :) "इसी त़रह़ सूफ़ियाए किराम अपने दिल को साफ़ करते और चमकाते रेहते हैं जब कि दूसरे लोग सिर्फ़ नक़्शो निगारी में मसरूफ़ रेहते हैं, चुनान्चे, वोह चीज़ जो उ़लमा पर ज़ाहिर नहीं होती वोह सूफ़ियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर ज़्यादा चमक दमक के साथ ज़ाहिर हो जाती है और उ़लमा ने जो कुछ ह़ासिल किया होता है उस के इ़लावा सूफ़िया पर ऐसे ऐसे उमूर ज़ाहिर होते हैं इ़ल्म ह़ासिल कर के जिन तक पहुंचने का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।"

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान में इसी त़रफ़ इशारा फ़रमाया :

مَـالَاعَيْـنٌ رَأَتْ وَلَا اُذُنٌ سَـمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلٰى قَلْبِ بَشَرٍ.

तर्जमा : (वोह ऐसी नेमतें हैं) जिन्हें किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल में उन का गुमान गुज़रा।

(صحيح البخارى، كتاب بدء الخلق، باب ماجاء فى صفة الجنة وأنها مخلوقة، الحديث ٣٢٤٤، ص٢٦٣)

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَيَعْلَمُ اَحَدٌ اِذَا وَاجَهْتُهٗ بِوَجْهِىْ اَىُّ شَىْءٍ اُرِيْدُ اَنْ اُعْطِيَهٗ.

तर्जमा : क्या कोई जानता है जब मैं किसी की त़रफ़ अपनी रेह़मत के साथ मुतवज्जेह होता हूं तो मैं उसे क्या देना चाहता हूं।

येही वोह ज़िन्दगी है, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से मुराद है :

اِذَادَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ج (پ٩،الانفال:٢٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिए बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी।

पस उस वक़्त दिल नहीं मरता।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ने इरशाद फ़रमाया : "मिट्टी ईमान के मह़ल (की जगह) को नहीं खाती।"

चुनान्चे, जब हर शख़्स के लिए उस की मेह़नत के मुत़ाबिक़ अज्र है तो मोमिन अपने अन्वार के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात की कोशिश करता है।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बाज़ ईमान वालों को पहाड़ की मिस्ल नूर अ़त़ा किया जाएगा और बाज़ को इस से कम ह़त्ताकि इन में से आख़िरी शख़्स को पाउं के अंगूठे पर नूर अ़त़ा किया जाएगा, कभी वोह चमकने लगेगा और कभी बुझ जाएगा। जब वोह रौशन होगा तो येह क़दम बढ़ाते हुवे चलेगा और जब बुझ जाएगा तो येह खड़ा हो जाएगा और पुल सिरात़ से भी वोह अपने नूर के मुत़ाबिक़ गुज़रेंगे। इन में

से बाज़ पलक झपकने की देर में गुज़र जाएंगे, बाज़ बिजली चमकने की त़रह़, बाज़ बादलों की त़रह़, बाज़ सितारा टूटने की त़रह़ और बाज़ सरपट दौड़ते घोड़े की त़रह़ गुज़रेंगे। और जिस शख़्स को क़दमों के अंगूठे पर नूर अ़त़ा किया जाएगा वोह अपने चेहरे, हाथों और पाउं पर घिसटता गुज़रेगा, एक हाथ को खींचेगा तो दूसरा लटक जाएगा एक पाउं खींचेगा तो दूसरा लटक जाएगा। उस के इर्द गिर्द आग पहुंच जाएगी पस (उस के साथ) इसी त़रह़ होता रहेगा यहां तक कि वोह नजात पा जाएगा।"

(المعجم الكبير، الحديث٩٧٦٣،ج٩،ص٣٥٨)

इसी त़रह़ ईमान के दरजात के एतिबार से (लोगों में) बाहमी फ़र्क़ ज़ाहिर होगा।

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

لَوْ وُزِنَ اِيْمَانُ اَبِىْ بَكْرٍ بِاِيْمَانِ الْعَالَمِ سِوَى النَّبِيِّيْنَ لَرَجَحَ.

तर्जमा : अगर अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के ईमान का अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इ़लावा दूसरे लोगों के ईमान से मुवाज़ना किया जाए तो येह बढ़ जाएगा।

(شعب الايمان للبيهقى، باب القول فى زيادة الايمان .....الخ، الحديث٣٦،ج١،ص٦٩)

इस की मिसाल इस त़रह़ है जैसे कोई शख़्स कहे : अगर सूरज और तमाम चराग़ों की रौशनी का मुवाज़ना किया जाए तो सूरज की रौशनी ज़्यादा होगी। लिहाज़ा लोगों का ईमान चराग़ और शम्अ़ की रौशनी की त़रह़ है, औलियाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का ईमान चांद सितारों की रौशनी की त़रह़ है जब कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ईमान की मिसाल सूरज की रौशनी की त़रह़ है।

त़रीक़ए सूफ़िया के सह़ीह़ होने का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "**मोमिन बारीक पर्दे के पीछे से देखता है, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह ह़क़ बात है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दिलों में डालता और ज़बानों पर जारी करता है।"

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَاِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰهِ.

तर्जमा : मोमिन की फ़िरासत से डरो क्यूंकि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर से देखता है।

(جامع الترمذى، ابواب تفسير القرآن، باب سورة الحجر، الحديث٣١٢٧،ص١٩٦٨)

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اِنَّ مِنْ اُمَّتِىْ مُحَدَّثِيْنَ وَمُكَلَّمِيْنَ وَاِنَّ عُمَرَ مِنْهُمْ. "**तर्जमा :** बेशक मेरी उम्मत में कुछ मुह़द्दसीन व मुकल्लमीन हैं और उ़मर फ़ारूक़ इन्ही में से हैं।"

(صحيح البخارى، كتاب فضائل اصحاب النبى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم، باب مناقب عمر بن الخطاب.....الخ، الحديث٣٦٨٩، ص٣٠٠ بدون مُكَلَّمِيْن)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की क़िराअत में "وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِکَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَانَبِیٍّ" के बाद "وَّلَامُحَدَّث" के अल्फ़ाज़ भी हैं और मुह़द्दस से मुराद **सिद्दीक़ीन** हैं।

ह़ासिले कलाम येह है कि जिस शख़्स ने अपनी उ़म्र में एक भी सह़ीह़ ख़्वाब देखा उसे दलाइल की ज़रूरत नहीं।

इस पर बेशुमार अह़ादीस, रिवायात और आयात दलालत करती हैं।

जान लो ! दिल के आ़लमे ग़ैब की त़रफ़ खुलने वाले दरवाज़े के मुक़ाबले में एक और दरवाज़ा जो शैत़ान की त़रफ़ खुलता है और शैत़ान का भी इसी त़रह़ असर होता है जिस त़रह़ फ़रिश्ते का असर होता है और बुरी सिफ़ात दिल की त़रफ़ शैत़ान के दाख़िल होने के रास्ते हैं। जितना बुरी सिफ़ात से इजतिनाब किया जाए उतना ही शैत़ान के रास्ते तंग या बन्द हो जाते हैं, और बुरी सिफ़ात को अपनाने से शैत़ान पर वोह दरवाज़े कुशादा हो जाते हैं और अगर तू उन दरवाज़ों को बन्द कर देगा, तो दिल ह़िक्मत की जगह और फ़रिश्तों के नुज़ूल की जगह बन जाएगा और अगर उन्हें खुला छोड़ देगा तो दिल शैत़ान की रिहाइश गाह बन जाएगा और इस बाब के बाद आने वाले अबवाब शहवात का क़ल्अ़ क़म्अ़ करने और दिल को उन से ख़ाली करने के बारे में आएंगे। तुम इन्हें समझ लो बहुत फ़ाएदा होगा। وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ

नमाज़ में आमीन कहें और गुनाह मुआ़फ़ करवाएं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **है :**

"जब इमाम "غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْہِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ 0" कहे तो आमीन कहा करो क्यूंकि जिस का क़ौल फ़रिश्तों के क़ौल के मुवाफ़िक़ हो जाए उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिए जाते हैं।"

एक रिवायत में है कि "जब तुम में से कोई आमीन केहता है तो फ़रिश्ते आस्मानों पर आमीन केहते हैं, अगर उन दोनों का क़ौल मुवाफ़िक़ हो जाए तो उस शख़्स के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिए जाते हैं।"

एक और रिवायत में है कि "जब इमाम "غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْہِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ 0" कहे तो तुम आमीन कहा करो क्यूंकि जिस का क़ौल फ़रिश्तों के क़ौल के मुवाफ़िक़ हो जाए तो इस की वज्ह से मस्जिद में मौजूद हर शख़्स की मग़फ़िरत कर दी जाती है।"

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب جہر الماموم بالتامین، رقم ۷۸۲، ج۲، ص۲۷۵)

बाब : 22 रियाज़ते नफ़्स का बयान

इस में चन्द फ़ुसूल हैं

रसूले अकरम, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

رَجَعْنَا مِنَ الْجِهَادِ الْاَصْغَرِ اِلَى الْجِهَادِ الْاَكْبَرِ.

तर्जमा : हम छोटे जिहाद से बड़े जिहाद की त़रफ़ पलटे ।

(الزهد الكبير للبيهقى،الجز الثانى، فصل فى ترك الدنيا ومخالفة النفس والهوى، الحديث٣٧٣،ص١٦٥، مفهوماً)

जान लो ! नफ़्स की कुछ बीमारियां हैं जिन से इस का पाको साफ़ होना ज़रूरी है इस त़रह़ वोह हमेशा की सआ़दत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब ह़ासिल कर सकता है ।

हुस्ने अख़्लाक़ की फ़ज़ीलत आप पेहले जान चुके हैं ।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ حُسْنَ الْخُلُقِ يُذِيْبُ الْخَطِيْئَةَ كَمَا تُذِيْبُ الشَّمْسُ الْجَلِيْدَ.

तर्जमा : बेशक अच्छे अख़्लाक़ गुनाह को इस त़रह़ मिटा देते हैं जिस त़रह़ सूरज बर्फ़ को पिघला देता है ।

(شعب الايمان للبيهقى، باب فى حسن الخلق ،الحديث٨٠٣٦،ج٦،ص٢٤٧-٢٤٨)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं कि हम नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "गुज़श्ता रात मैं ने एक अ़जीब बात देखी, मैं ने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा जो अपने घुटनों के बल झुका हुवा था, उस के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान ह़िजाब था पस हुस्ने अख़्लाक़ आया और उस ने उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब में पहुंचा दिया ।" (مكارم الاخلاق للخرائطى، باب ثواب حسن الخليقةوجسيم خطرها، الحديث٤٩،ج١،ص٥٢)

अच्छे और बुरे अख़्लाक़ का बयान

कहा जाता है कि फ़ुलां अच्छे ख़ल्क़ और अच्छे ख़ुलुक़ यानी अच्छे ज़ाहिरो बात़िन वाला है । ज़ाहिर का हुस्न ख़ूब सूरती है जैसा कि आप जानते हैं और बात़िनी हुस्न से मुराद बुरी सिफ़ात पर अच्छी सिफ़ात का ग़ालिब होना है और बात़िन में तफ़ावुत (यानी फ़र्क़), ज़ाहिर में तफ़ावुत से ज़्यादा होता है और इसी की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने अक़्दस में इशारा फ़रमाया :

चुनान्चे, इरशादे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ है :

اِنِّیْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِیْنٍ ۝ فَاِذَا سَوَّیْتُهٗ وَ نَفَخْتُ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِیْ (پ۲۳،ص:۷۱-۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मैं मिट्टी से इन्सान बनाऊंगा फिर जब मैं उसे ठीक बना लूं और उस में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकूं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस आयते मुबारका में आगाह फ़रमाया कि इन्सान की ज़ाहिरी सूरत मिट्टी से बनी हुई है और उस की बात़िनी सूरत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के आ़लमे अम्र से है। लिहाज़ा हुस्ने ख़ुल्क़ से हमारी मुराद बात़िनी सूरत का अच्छा होना है पस जिस क़दर बन्दा बुरी सिफ़ात से कनारा कशी इख़्तियार करता है, उस के बदले में अच्छी सिफ़ात पाई जाती हैं, पस येही अच्छे अख़्लाक़ हैं और हुस्ने अख़्लाक़ की मुकम्मल सूरत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिए है, क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुस्ने अख़्लाक़ के इस माना में दरजए कमाल पर फ़ाइज़ हुवे ।

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : حَسِّنُوْا اَخْلَاقَكُمْ **"तर्जमा :** अपने अख़्लाक़ को संवारो ।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ما جاء فی معاشرة الناس، الحدیث۱۹۸۷، ص۱۸۵۱، مفهوماً)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमा कर इस बात से आगाह फ़रमाया, कि अख़्लाक़ तब्दीली को क़बूल करते और तसर्रुफ़ से मुतास्सिर होते हैं। लिहाज़ा तुझे ग़ुस्सा, शहवत और ह़िर्स से बचने की कोशिश करनी चाहिए और येह तमाम सिफ़ात हुक्मे शरअ़ के मुत़ाबिक़ होनी चाहिएं, पस जब तू ऐसा करेगा तो मक़्सद ह़ासिल हो जाएगा और येह चीज़ ना पसन्दीदा अश्या पर सब्र करने और मुजाहदे से ह़ासिल होती है ताकि इस के बाद येह आ़दत बन जाए।

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : اَلْخَیْرُ عَادَةٌ **"तर्जमा :** बेहतरीन चीज़ आ़दत है ।"

(سنن ابن ماجة، کتاب السنة، باب فضل العلماء والحث علی طلب العلم، الحدیث۲۲۱،ص۲۴۹۰)

मिसाल के त़ौर पर जो शख़्स अस्ल फ़ित़रत से सख़ी न हो तो वोह तकल्लुफ़ से इस आ़दत को अपनाता है और इसी त़रह़ जिस की तख़्लीक़ तवाज़ोअ़ पर न हो तो उसे उस चीज़ को आ़दत बनाने में मशक़्क़त होती है और इसी त़रह़ वोह तमाम सिफ़ात जिन का इ़लाज उन की ज़िद के साथ किया जाता है ह़त्ताकि मक़्सद ह़ासिल हो जाए चुनान्चे, इ़बादात पर हमेशगी और ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त बात़िनी सूरत को ह़सीन बना देते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उन्स ह़ासिल हो जाता है।

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

اُعْبُدِ اللّٰهَ فِی الرِّضَا فَاِنْ لَّمْ تَسْتَطِعْ فَفِی الصَّبْرِ عَلٰی مَا تَکْرَهُ خَیْرٌ کَثِیْرٌ.

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत रिज़ामन्दी से करो अगर ऐसा न हो सके तो ना गवार बात पर सब्र करने में बहुत ज़्यादा भलाई है।

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصبر علی المصائب، فصل فی ذکر ما فی الأوجاع .....الخ، الحدیث ۱۰۰۰۰، ج۷، ص۲۰۳، بتغیر)

पस इब्तिदा में सब्र कर यहां तक कि तू राज़ी हो जाए, क्यूंकि अस्ल फ़ित़रत भी बात़िनी सूरत के हुस्न का तक़ाज़ा करती है और इसी त़रफ़ माइल होती है और नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान में इसी जानिब इशारा फ़रमाया : اَلْحَسَنَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا "**तर्जमा :** एक ह़सना दस नेकियों के बराबर है।" (صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب فضل الصوم، الحدیث ۱۸۹٤، ص۱٤۸)

और येही अस्ले फ़ित़रत की मुवाफ़क़त है।

अख़्लाक़ संवारने का तफ़्सीली त़रीक़ा

बेशक हम जान चुके हैं, कि जिस्म की बीमारी का इ़लाज उस की ज़िद के साथ होता है। इसी त़रह़ मरज़े दिल का मुआ़मला है। और येह चीज़ लोगों के मुख़्तलिफ़ होने के एतिबार से मुख़्तलिफ़ होती है क्यूंकि त़बीअ़तें मुख़्तलिफ़ होती हैं और शैख़ अपनी क़ौम में इस त़रह़ होता है जैसे नबी अपनी उम्मत में, वोह मुरीद का ह़ाल देखता है और उस पर ग़ालिब आने वाली सिफ़ात को जानता है और उन चीज़ों को भी जानता है जिन से मुरीद का इ़लाज मुमकिन होता है, लिहाज़ा वोह उसे इब्तिदाई मरह़ले में इ़बादात, कपड़ों को पाको साफ़ रखने, नमाज़ों पर पाबन्दी इख़्तियार करने और तन्हाई में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने में मश्ग़ूल रखता है। पस इस त़रह़ उस के पोशीदा उ़यूब ज़ाहिर हो जाते हैं जिस त़रह़ पथ्थर में छुपी आग (एक पथ्थर को दूसरे पर मारने से) ज़ाहिर हो जाती है और अगर उस के पास ज़ाइद माल हो तो शैख़ उसे ले कर मोह़ताजों में बांट देता है ताकि उस का दिल फ़ारिग़ हो जाए और उस के दिल का फ़ारिग़ होना ही अस्ल चीज़ है। फिर उस के ग़ैर के दिल का फ़ारिग़ होना उस के माल के लिए वबाल है और उस के ग़मों को बढ़ाता है और इन ग़मों की बरकत से उस पर उस का मक़्सूद आसान हो जाता है और तहज़ीबे अख़्लाक़ का त़रीक़ा येह भी है, कि उस की बाज़ सिफ़ात को दूसरी सिफ़ात पर मुसल्लत़ कर दिया जाए। चुनान्चे, वोह आ़रिज़ी रिया के ज़रीए़ सख़ावत में रग़बत इख़्तियार करे (जब कि इसे दिल में न जमने दे), ताकि वोह बुख़्ल, दुन्या की मह़ब्बत और उस के जम्अ़ करने को तर्क कर दे और ग़ुस्सा व शहवत का इस्तिमाल तर्क कर दे, ताकि वोह उसे पाक दामनी और दुरुस्तगी पर उभारे, फिर इस के बाद रियाकारी की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और रियाज़त की मुद्दत में ह़ासिल होने वाली दीन की क़ुव्वत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ अपनी तवज्जोह के ज़रीए़ उस का क़ल्अ़ क़म्अ़ कर दे और नफ़्स की ज़िद के साथ इ़बादात की पाबन्दी कर के इस का इ़लाज करे और बाज़ शुयूख़ के बारे में मरवी है, कि अगर उन का नफ़्स रात के किसी ह़िस्से में क़ियाम से

www.dawateislami.net

सुस्ती करता, तो एक मुद्दत तक सर के बल खड़ा होना उस पर लाज़िम कर देते, ताकि वोह क़दमों पर खड़ा होना ख़ुशी से इख़्तियार करे और इसे ग़नीमत जाने।

नफ़्स के उ़यूब पहचानने का बयान

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

اِذَا اَرَادَاللّٰهُ بِعَبْدٍخَيْرًا بَصَّرَهٗ بِعُيُوْبِ نَفْسِهٖ.

तर्जमा : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे उस के उ़यूब दिखा देता है।

(شعب الایمان للبیھقی، باب فی الزھد وقصر الأمل، الحدیث ۱۰۵۳۵، ج۷، ص۳۴۷)

अपने उ़यूब पहचानने के त़रीक़ों में से सब से बेहतरीन त़रीक़ा येह है, कि इन्सान अपने मुर्शिद के सामने बैठे और उस के हुक्म के मुत़ाबिक़ अ़मल करे, कभी उसी वक़्त उस पर अपने उ़यूब ज़ाहिर हो जाते हैं और कभी उस का मुर्शिद उसे उस के उ़यूब से आगाह कर देता है। येह त़रीक़ा सब से आला व बेहतरीन है, मगर आज कल येह बहुत मुश्किल है। दूसरा त़रीक़ा येह है कि कोई नेक दोस्त तलाश करे, जो इस मुआ़मले के असरार से वाक़िफ़ हो, उस की सोह़बत इख़्तियार करे और उसे अपने नफ़्स का निगरान बनाए, ताकि वोह उस के अह़वाल को मुलाह़ज़ा कर के उस के उ़यूब से आगाह करे। अकाबिर अइम्मए दीन इसी त़रह़ किया करते थे।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते थे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रेह़्म फ़रमाए जो मुझे मेरे उ़यूब बताए।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से अपने ऐ़बों के बारे में पूछा : "क्या आप तक मेरी कोई ऐसी बात पहुंची है जो आप को ना पसन्द हो ?" उन्हों ने बताने से माज़िरत की, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इसरार किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "मैं ने सुना है कि आप अपने दस्तर ख़्वान पर दो सालन जम्अ़ करते हैं और आप के पास दो जोड़े हैं, एक दिन का और एक रात का।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फिर पूछा : "इस के इ़लावा भी कोई बात पहुंची है ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "अगर सिर्फ़ येही दो हैं तो मैं इन्हें काफ़ी हो जाऊंगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जो कि मुनाफ़िक़ीन की पहचान के मुआ़मले में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के राज़दार थे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उन से पूछते : क्या आप को मुझ में मुनाफ़क़त के आसार नज़र आते हैं ? तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इस क़दर बुलन्द मर्तबा और अ़ज़ीम मन्सब पर फ़ाइज़ होने के बा वुजूद इस त़रह़ अपने नफ़्स को इस क़दर तोहमत लगाते थे।

www.dawateislami.net

अगर तुझे कोई दोस्त न मिले तो अपने ह़ासिदीन की बातों पर ग़ौर कर, तू ऐसे ह़ासिद को पाएगा जो तेरे ऐबों का मुतलाशी होता है और इस में इज़ाफ़ा करता है, पस तू उस से फ़ाएदा उठा और उस की त़रफ़ से बताए जाने वाले तमाम उ़यूब के साथ अपने नफ़्स को मुत्तहम जान और अगर कोई शख़्स तुझे तेरे ऐब बताए तो उस पर ग़ज़ब व ग़ुस्सा न कर क्यूंकि उ़यूब सांप और बिच्छू हैं जो दुन्याओ आख़िरत में तुझे डसते हैं। क्यूंकि जो शख़्स तुझे बताए कि तेरे कपड़ों के नीचे सांप है तो तू उस शख़्स का एह़सान मन्द होता है, लेकिन अगर तू उस पर ग़ुस्सा करे तो येह आख़िरत में तेरे ईमान की कमज़ोरी पर दलील है। और अगर तू उस की नसीह़त से फ़ाएदा उठाए तो येह तेरी क़ुव्वते ईमानी पर दलील है और जान ले कि नाराज़ होने वाली आंख बुराइयों को ज़ाहिर करती है, और ईमान का क़वी होना तुझे उस वक़्त फ़ाएदा देगा जब तू ह़ासिदों की मलामत को ग़नीमत जाने और इन उ़यूब से बचे।

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पूछा गया : आप को अदब किस ने सिखाया ?" आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : मुझे किसी ने अदब नहीं सिखाया, मैं ने जाहिल की जहालत (कि येह भी एक ऐब है) को देखा तो उस से कनारा कशी इख़्तियार कर ली।"

जान लो ! जो कुछ हम ने बयान किया है जब तुम इस में ग़ौरो फ़िक्र करोगे तो तुम्हारी बसीरत की आंख खुल जाएगी, और तुम उस से फ़ाएदा ह़ासिल करोगे, अगर तुम्हें येह चीज़ न ह़ासिल हो तो कम अज़ कम इस पर ईमान लाना और इस की तस्दीक़ करना ज़रूरी है। क्यूंकि पेहली चीज़ ईमान है और फिर इस मन्ज़िल तक पहुंचना है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ (پ۲۸،المجادلة:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इल्म दिया गया दरजे बुलन्द फ़रमाएगा।

पस तक़्वा इन आमाल के हुसूल में अस्ल माल की हैसिय्यत रखता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ (پ۲۸، الطلاق:۲-۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के लिए नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो।

मन्क़ूल है कि अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी ने ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहा : "ऐ यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ! बेशक ह़िर्स और ख़्वाहिश ने बादशाहों को ग़ुलाम बनाया और सब्र व तक़्वा ने ग़ुलामों को बादशाह बना दिया।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

www.dawateislami.net

اِنَّـهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَايُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ (پ۱۳،یوسف:۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो परहेज़गारी और सब्र करे तो **अल्लाह** नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करता।

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बिन मुह़म्मद ख़ज़ाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं रात को जागा और अपने वज़ीफ़े में मश्ग़ूल हो गया, लेकिन मैं ने उस में वोह लज़्ज़त न पाई जो पेहले पाया करता था चुनान्चे, मैं ने सोने का इरादा किया लेकिन सो न सका, लिहाज़ा बैठ गया लेकिन बैठ भी न सका तो बाहर निकल गया, क्या देखता हूं कि एक शख़्स कम्बल में लिपटा हुवा रास्ते में पड़ा है, जब वोह मेरे आने पर मुत्तलअ़ हुवा तो केहने लगा : "ऐ अबू क़ासिम ! ज़रा मेरे पास तशरीफ़ लाइए।" मैं ने कहा : "ऐ मोह़तरम ! पेहले से आप ने कोई इत्तिलाअ़ नहीं दी।" उस शख़्स ने कहा : जी हां ! मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा की, कि वोह तेरे दिल को मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह कर दे।" मैं ने कहा : "वोह तेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो गया है, (अब बताओ) तुम्हारी क्या ह़ाजत है ? उस ने कहा : "नफ़्स की बीमारी इस (नफ़्स) का इलाज कब बनती है ? मैं ने कहा : "जब तू नफ़्स की ख़्वाहिश में इस की मुख़ालफ़त करे।" पस वोह अपने नफ़्स की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर केहने लगा : "ऐ नफ़्स ! अब सुन लिया ! मैं ने तुझे सात बार इस बात का जवाब दिया लेकिन तू ने इन्कार किया और कहा : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से ही सुनूंगा (तो अब तू ने सुन लिया)।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि वोह शख़्स चला गया और मैं उसे न पहचान सका।

अच्छे अख़्लाक़ की अ़लामात का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۱﴾قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْمَامَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝ (پ۱۸،المؤمنون:۱تا۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं और वोह जो किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं और वोह जो अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करते हैं मगर अपनी बीबियों या शरई बान्दियों पर जो उन के हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत नहीं तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही ह़द से बढ़ने वाले हैं और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़ह्द की रिआ़यत करते हैं और वोह जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं येही लोग वारिस हैं।

www.dawateislami.net

﴿۲﴾ اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ (پ۱۱،التوبہ:۱۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तौबा वाले इ़बादत वाले।

﴿۳﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا (پ۹،الانفال:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ईमान वाले वोही हैं कि जब **अल्लाह** याद किया जाए उन के दिल डर जाएं और जब उन पर उस की आयतें पढ़ी जाएं उन का ईमान तरक़्क़ी पाए।

﴿۴﴾ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا (پ۱۹،الفرقان:۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रह़मान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं।

इब्तिदाई उ़म्र में बच्चों की तरबियत का त़रीक़ा

बाज़ बच्चे ऐसे होते हैं कि उन्हें अगर इब्तिदाई उ़म्र में मुश्फ़िक़ की मामूली सी तवज्जोह ह़ासिल हो जाए, तो वोह उन के लिए काफ़ी होती है। जिस त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना सहल तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى से मन्क़ूल है, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मेरी उ़म्र तीन साल थी और मैं रात को उठ कर अपने मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन सव्वार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب को ख़ल्वत में नमाज़ पढ़ते देखता था। एक दिन मेरे मामूं ने मुझ से पूछा : "क्या तू उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद नहीं करता जिस ने तुझे पैदा किया ?" मैं ने पूछा : "मैं उसे किस त़रह़ याद करूं ?" उन्हों ने फ़रमाया : "जब तुम बिस्तर पर लेटने लगो तो तीन बार ज़बान को ह़रकत दिए बिग़ैर मह़्ज़ दिल में येह कलिमात कहो : اَللّٰهُ مَعِىَ، اَللّٰهُ نَاظِرٌ اِلَىَّ، اَللّٰهُ شَاهِدِىْ "यानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे साथ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा गवाह है।"

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने चन्द रातें येह कलिमात पढ़े फिर उन्हें बताया तो उन्हों ने फ़रमाया : "हर रात सात मरतबा पढ़ो।" मैं ने उन्हें पढ़ा फिर उन्हें बताया तो उन्हों ने फ़रमाया : "हर रात ग्यारह मरतबा येह कलिमात पढ़ो। मैं ने उसी त़रह़ पढ़ा, तो मेरे दिल में उस की लज़्ज़त पाई गई, जब एक साल गुज़र गया तो मेरे मामूं ने मुझ से फ़रमाया : "मैं ने जो कुछ तुम्हें सिखाया है उसे याद रखो और क़ब्र में जाने तक हमेशा पढ़ते रेहना, तुम्हें दुन्याओ आख़िरत में नफ़्अ़ देगा।" मैं ने कई साल तक ऐसा किया तो अपने अन्दर इस का मज़ा पाया फिर एक दिन मेरे मामूं ने फ़रमाया : "ऐ सहल ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस शख़्स के साथ हो, उसे देखता हो और उस का गवाह हो, वोह उस की ना फ़रमानी कैसे कर सकता है ? गुनाह से बचो।" मैं तन्हाई में येह ज़िक्र करता रहा फिर उन्हों ने मुझे मक्तब में भेजा, तो मैं ने अ़र्ज़ की : "मुझे डर है कि कहीं मेरे ज़िक्र में ख़लल न आ जाए। चुनान्चे, उन्हों ने उस्ताद साह़िब से येह शर्त़ मुक़र्रर की, कि मैं उन के पास जा कर सिर्फ़ एक घन्टा पढ़ूंगा, फिर लौट आऊंगा, मैं मक्तब जाता रहा और क़ुरआने मजीद ह़िफ़्ज़ कर

लिया, उस वक़्त मेरी उ़म्र छे-सात साल थी, मैं रोज़ाना रोज़ा रखता, बारह साल तक मैं जव की रोटी खाता रहा, तेरह साल की उ़म्र में मुझे एक मस्अला पेश आया, मैं ने घरवालों से कहा : "मुझे बसरा भेज दो ताकि मैं वहां के उ़लमा से इस के बारे में दरयाफ़्त करूं लेकिन उन में किसी ने मुझे शाफ़ी जवाब न दिया, फिर मैं उ़ब्बादान की त़रफ़ निकला।

मैं ने वहां पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़बीब ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह उ़ब्बादानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه नामी बुज़ुर्ग से मस्अला पूछा तो उन्हों ने मुझे क़ाबिले इत़मीनान जवाब दिया, मैं उन के पास ठहर गया, उन के कलाम से नफ़्अ़ ह़ासिल करता और आदाब सीखता रहा, फिर मैं तुस्तर की त़रफ़ आ गया, मैं ने अपनी रोज़ी का इन्तिज़ाम यूं किया कि मेरे लिए एक दिरहम के एक फ़िर्क़ (चार किलो) जव ख़रीदे जाते, उन्हें पीस कर रोटी पकाई जाती, मैं हर रात सह़री के वक़्त एक ऊक़िया रोटी खाता जो नमक और सालन के बिग़ैर होती, चुनान्चे, एक दिरहम मुझे साल भर के लिए काफ़ी हो जाता फिर मैं ने इरादा किया, कि तीन दिन मुसलसल रोज़ा रखूंगा, फिर इफ़्त़ार करूंगा फिर पांच दिन, फिर सात दिन और फिर पच्चीस दिन का मुसलसल रोज़ा रखा और बीस साल तक मेरा येही मामूल रहा। फिर मैं ज़मीन में सैरो सियाह़त के लिए निकला, फिर तुस्तर वापस लौट आया और मैं सारी रात क़ियाम करता था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो क़वी और करीम है वोही इस की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाने वाला है।"

मुरीद बनने की शराइत़

जान लो ! जो शख़्स आख़िरत की खेती का इरादा करता है, उस की अ़लामत येह है कि वोह दुन्या की खेती को छोड़ देता है। लिहाज़ा जो शख़्स अपने दिल से आख़िरत का यक़ीनी मुशाहदा कर लेता है उस की अ़लामत येह है कि वोह दुन्या को ह़क़ीर समझता है और जो शख़्स नफ़ीस जोहर देख ले और उस के हाथ में मुनक्का हो तो अब उसे मुनक्के की रग़बत नहीं रेहती जो ऐसा नहीं करता (यानी आख़िरत की खेती का इरादा नहीं रखता) तो इस का मत़लब है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत पर ईमान नहीं रखता।

(पस मालूम हुवा) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक रसाई का न होना राहे सुलूक पर गामज़न न होने की वज्ह से है, इस राह पर गामज़न न होना इरादा न होने की वज्ह से है और इरादे में रुकावट ईमान का न होना है, और ज़ाहिरी त़ौर पर अ़दमे ईमान का सबब सीधा रास्ता दिखाने वालों और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते की त़रफ़ रेहनुमाई करने वाले उ़लमा का न पाया जाना है। चुनान्चे, जो शख़्स अपने नफ़्स से या इस के ग़ैर से आगाह हो जाए तो उस के लिए चन्द शराइत़ हैं (मुरीद बनने से पेहले) इन का पाया जाना ज़रूरी है।

पेहली शर्त़ : पर्दे और रुकावट को उठा देना है और येह चार हैं :

(1) माल (2) जाहो मर्तबा (3) तक़्लीद और (4) गुनाह।

जहां तक माल का तअ़ल्लुक़ है तो वोह ज़रूरत से ज़ाइद तक़्सीम कर दे, और जाह से ख़लासी इस त़रह़ मुमकिन है कि वोह वत़न से दूर चला जाए, या तवाज़ोअ़ व पोशीदगी को इख़्तियार

www.dawateislami.net

करे और उस चीज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जो जाहो मर्तबा को ख़त्म कर देती है, और तक़्लीद का ह़िजाब इस त़रह़ दूर होता है कि वोह मज़ाहिब के तअ़स्सुब को छोड़ दे और لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के माने की ईमान के साथ तस्दीक़ करे, और उन आमाल पर अ़मल पैरा हो जो इस कलिमे की तस्दीक़ करते और इसे साबित करते हैं, और दुन्या और उस की ख़्वाहिशात और उन तमाम चीज़ों को छोड़ दे जिन की त़रफ़ नफ़्स माइल होता है, तो उस वक़्त वोह अपनी पूरी हिम्मत के साथ ह़क़ीक़त में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होगा और उस के लिए दुरुस्त एतिक़ाद ज़ाहिर हो जाएगा, जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ (پ۲۱،العنکبوت:۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे।

जहां तक गुनाहों का तअ़ल्लुक़ है तो वोह उन्हें छोड़ दे, और उन की जगह इ़बादात बजा लाए, गुज़श्ता गुनाहों पर शर्मिन्दा हो और तौबा करे और लोगों के हुक़ूक़ लौटा दे। जब वोह ऐसा करे और इन चारों उमूर से फ़ारिग़ हो जाए तो वोह उस शख़्स की त़रह़ हो गया जो वुज़ू करता है, नापाकी को दूर करता है, शर्मगाह को ढांपता है और नमाज़ के लिए तय्यार हो जाता है। उस वक़्त उसे राहे आख़िरत से वाक़िफ़ एक शैख़ की ज़रूरत होती है, कि वोह उस की रेहनुमाई करे और उस वक़्त वोह शैख़ के सामने इस त़रह़ होता है, जिस त़रह़ ग़ुस्ल देने वाले के हाथों में मय्यित होती है कि वोह ख़ुद ब ख़ुद ह़रकत नहीं करती बल्कि ग़ुस्ल देने वाला जिस त़रह़ चाहता है, उसे ह़रकत देता है। उस वक़्त उसे चाहिए कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा व ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र علیٰ نبینا وعلیہما الصلوٰۃ والسلام के वाक़िए़ को याद करे और अपने शैख़ पर किसी ह़ालत के बारे में एतिराज़ न करे। उस वक़्त उसे चार चीज़ों का हुक्म दिया जाएगा : (1) ख़ल्वत (2) ख़ामोशी (3) भूक (4) बेदारी।

जहां तक भूक का तअ़ल्लुक़ है तो इस से मुराद दिल का ख़ून कम होना है, इस में दिल की सफ़ेदी व नूर है, भूक से दिल की चरबी पिघल जाती है, येह दिल की नर्मी का सबब है, येह नर्मी मुकाशफ़े की चाबी है, जिस त़रह़ सख़्ती जो नर्मी की ज़िद है, ह़िजाब का बाइ़स होती है और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को इरशाद फ़रमाया : "भूक से शैत़ान की गुज़रगाहों को तंग करो।"

इस फ़रमान में इसी त़रफ़ इशारा है और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने रुफ़क़ा से इरशाद फ़रमाया : "अपने पेटों को भूका रखो ताकि तुम दिल (की आंखों) से अपने रब का दीदार करो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "चार ख़स्लतों के बिग़ैर अब्दाल का मर्तबा ह़ासिल नहीं होता : (1) पेट को भूका रखना (2) बेदारी (3) ख़ामोशी (4) लोगों से दूर रेहना।"

जहां तक बेदारी का तअ़ल्लुक़ है तो येह दिल को रौशन व मुनव्वर करती है, और भूक बेदार रेहने में मदद देती है और येह दोनों चीज़ें दिल को मुनव्वर करने में मददगार साबित होती हैं। नींद दिल को सख़्त और मुर्दा कर देती है मगर येह कि ब क़दरे ज़रूरत हो (तो दिल के लिए नुक़्सान देह नहीं) अब्दाल की येह सिफ़ात बयान की गई हैं, कि उन की नींद ग़लबे के वक़्त, खाना फ़ाक़े के वक़्त और कलाम ज़रूरत के वक़्त होता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : "सत्तर सिद्दीक़ीन इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं, कि नींद की कसरत का सबब ज़्यादा पानी पीना है।"

ख़ामोशी गोशा नशीनी और ख़ल्वत की सूरत में आसान होती है और कलाम का ज़्यादा ह़रीस वोह शख़्स होता है जो साह़िबे इ़ल्म हो, क्यूंकि इस से रुकना बहुत मुश्किल होता है लेकिन इस का फ़ाएदा व नफ़्अ़ भी बहुत ज़्यादा है, क्यूंकि इसी के ज़रीए़ बात़िन ग़ैब की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है और उस दुन्यावी ज़िन्दगी से एराज़ करता है।

जब कि ख़ल्वत का फ़ाएदा येह है कि इन्सान ग़फ़्लत से बच जाता है, ताकि मक़्सद के लिए फ़ारिग़ हो सके और उस मक़्सद के लिए ह़वास का सुकून ज़रूरी है, कि इस से इन्सान का दिल ह़रकत के क़ाबिल हो जाता है और उस के लिए ख़ल्वत ज़रूरी है, फिर बेहतर येह है कि वोह ऐसे कमरे में ख़ल्वत इख़्तियार करे, जिस में अन्धेरा हो, ताकि उस की नज़र किसी ऐसी चीज़ पर न पड़े जो उसे ग़ाफ़िल कर दे, लेकिन अगर तारीक कमरा मयस्सर न हो तो वोह अपने सर को किसी चीज़ से लपेट ले या आंखें बन्द कर ले, और ह़वास के सुकून की सूरत वोह निदाए ह़क़ सुनेगा, नीज़ **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के जमाल का मुशाहदा करेगा, क्या तुम नहीं देखते ! कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब निदा दी गई तो इरशाद फ़रमाया गया :

﴿۱﴾ يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۝ (پ۲۹،المزمل:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ झुरमुट मारने वाले।

﴿۲﴾ يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝ (پ۲۹،المدثر:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले।

जब बन्दा भूक, ख़ल्वत, बेदारी और ख़ामोशी इख़्तियार करे तो उसे चाहिए कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे, उस का त़रीक़ा येह है कि घर के एक कोने में बा वुज़ू, क़िब्ला रू हो कर बैठ जाए और अपनी ज़बान से **अल्लाह**, **अल्लाह** का विर्द करे, और मुसलसल ज़िक्र करता रहे, अपने दिल और तमाम ह़वास को ज़बान से अदा होने वाले कलिमात को सुनने के लिए ह़ाज़िर रखे और मुसलसल इस ज़िक्र में मसरूफ़ रहे, यहां तक कि ज़बान की ह़रकत ख़त्म हो जाए गोया येह कलिमाते त़य्यिबात ख़ुद ब ख़ुद ज़बान पर जारी हैं, फिर वोह ज़बान से दिल की त़रफ़ लौटे, जब दिल ज़िक्र से रुक जाए तो ज़बान से ज़िक्र जारी रहे। जब दिल ज़िक्र में रासिख़ हो जाए तो ज़बान से ख़ामोश हो जाए और इसी त़रह़ करता रहे, यहां तक कि दिल से हुरूफ़ मिट जाएं और हुरूफ़ के बिग़ैर साफ़ व

www.dawateislami.net

शफ़्फ़ाफ़ ज़िक्र बाक़ी रहे, फिर ज़िक्र से आगे बढ़ कर हमेशगी की ह़ालत इख़्तियार करे और जब उस पर कुछ चीज़ों का ज़ुहूर हो जाए तो साबिक़ा ह़ालत की त़रफ़ लौट आए, और अपने शैख़ से इस का ज़िक्र करे, क्यूंकि वोह उन असरारो रुमूज़ को जानता है जो मुरीद पर सफ़ाई व कदूरत के मुआ़मले में त़ारी होते हैं, और मुरीद पर जो ख़यालात, वसाविस और सह़ीह़ अह़वाल पाए जाते हैं उन का खुद ब खुद जानना मुमकिन नहीं। लिहाज़ा वोह अपने शैख़ को बता दे क्यूंकि वोह उसे ज़्यादा जानता है और जब तक वोह समझता है कि उस का नफ़्स अभी तक ज़ेर नहीं हुवा तो तमाम अह़वाल में उस के लिए ज़िक्र करना ज़रूरी है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ (پ۷،الانعام:۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** कहो, फिर उन्हें छोड़ दो।

चुनान्चे, उस पर जब कोई वस्वसा या बुरा ख़याल ग़ालिब हो, और उस के ग़ाइब होने तक वोह उसे जान नहीं पाता तो इस में कोई ह़रज नहीं, लिहाज़ा जब उस के दिल से वस्वसा निकल जाए और वोह ह़क़ीक़त से आगाह हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना शुरूअ़ कर दे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

﴿۱﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓىٕفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝ (پ۹،الاعراف:۲۰۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैत़ानी ख़याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं। उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।

﴿۲﴾ وَاِمَّا یَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۝ (پ۹،الاعراف:۲۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ सुनने वाले ! अगर शैत़ान तुझे कोई कोंचा दे (किसी बुरे काम पर उक्साए) तो **अल्लाह** की पनाह मांग बेशक वोही सुनता जानता है।

और अपनी सारी ज़िन्दगी पाबन्दी से ज़िक्र करता रहे, हो सकता है कि अ़न क़रीब वोह मलूके दीन (यानी दीन के बादशाहों) में से हो जाए जिन पर ह़क़ाइक़ ज़ाहिर हो जाते हैं, और वोह उन चीज़ों को देखते हैं जिन्हें न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी दिल पर उन का गुमान गुज़रा। अगर उस पर कोई शै ज़ाहिर न हो तो वोह ज़िक्र पर हमेशगी इख़्तियार करे, कि ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की आमद के वक़्त उस पर वोह अश्या ज़ाहिर हो जाएं और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो वोह मक़्सूद तक पहुंच जाएगा। इस बात को समझ लो तुम्हें फ़ाएदा होगा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

बाब : 23 पेट और शर्मगाह की शहवत का बयान

इस में चन्द फ़ुसूल हैं

जान लो ! तमाम आफ़ात की अस्ल पेट की शहवत है और इसी से शर्मगाह की शहवत पैदा होती है, ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आज़माइश इसी के ज़रीए़ हुई और आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को दुन्या में भेजा गया, इसी की वज्ह से आदमी दुन्या का त़ालिब होता है और इस में रग़बत करता है।

भूक की फ़ज़ीलत और शिकम सेरी की मज़म्मत का बयान

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "भूक और प्यास के ज़रीए़ अपने नफ़्सों के ख़िलाफ़ जिहाद करो, क्यूंकि इस का सवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने जितना है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को भूक और प्यास से बढ़ कर कोई अ़मल पसन्द नहीं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : لَایَدْخُلُ مَلَکُوتُ السَّمَاءِ مَنْ مَّلَاءَ بَطْنَہٗ "**तर्जमा :** जो शख़्स अपने पेट को भरता है आस्मान के फ़रिश्ते उस के पास नहीं आते।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِلْبَسُوْا وَاشْرَبُوْا وَکُلُوْا فِیْ اَنْصَافِ الْبُطُوْنِ،فَاِنَّہٗ جُزْءٌ مِّنَ النُّبُوَّۃِ

तर्जमा : लिबास पेहनो और आधा पेट खाओ पियो, बेशक येह नबुव्वत का एक जुज़ है।

(فردوس الاخبار للدیلمی، باب الالف، الحدیث۳۳۸/۳۳۹،ج۱،ص۶۸، بدون واشربوا)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَفْضَلُکُمْ مَنْزِلَۃً عِنْدَ اللّٰہِ تَعَالٰی اَطْوَلُکُمْ جُوْعًا وَّ تَفَکُّرًا وَاَبْغَضُکُمْ اِلَی اللّٰہِ کُلُّ نَوُّمٍ اَکُوْلٍ شَرُوْبٍ.

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां तुम सब से अफ़्ज़ल वोह है जो ज़्यादा भूका रेहता है और ग़ौरो फ़िक्र करता है और सब से बुरा वोह है जो ख़ूब सोता और ज़्यादा खाता पीता है।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रिश्तों के सामने उस शख़्स पर फ़ख़्र फ़रमाता है, जो दुन्या में कम खाता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मेरे बन्दे की त़रफ़ देखो ! मैं ने दुन्या में इसे खाने पीने के मुआ़मले में आज़माइश में डाला तो इस ने मेरे लिए उन्हें छोड़ दिया। ऐ मेरे फ़रिश्तो ! गवाह हो जाओ जो बन्दा (मेरी ख़ात़िर) एक लुक़्मा भी छोड़ देगा, मैं उस के बदले उसे जन्नत के दरजात अ़त़ा फ़रमाऊंगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : "मुझे रात के खाने से एक लुक़्मा छोड़ देना, रात भर क़ियाम करने से ज़्यादा पसन्द है।"

हम ने वाज़ेह़ कर दिया कि भूक से रिक़्क़त (यानी नर्मी) और इन्किसारी पैदा होती है, अकड़ और ग़ुरूर ख़त्म हो जाता है और भूक का फ़ाएदा येह है कि, इन्सान मुसीबत, एह्ले मुसीबत, अ़ज़ाब और तमाम शहवात के ख़त्म करने को नहीं भूलता, इसी के ज़रीए़ इन्सान नफ़्सो शैत़ान पर ग़ालिब आ कर उस पर तसल्लुत़ ह़ासिल कर लेता है, और इसी के ज़रीए़ इन्सान बेदारी पर हमेशगी इख़्तियार करता और नींद को दूर करता है, इसी लिए बाज़ शुयूख़ दस्तर ख़्वान पर खड़े हो कर केहते : ऐ गिरोहे मुरीदीन ! न ज़्यादा खाओ, न पियो वरना ज़्यादा सोओगे, और नतीजतन ज़्यादा नुक़्सान उठाओगे।

भूक से इ़बादत पर दवाम आसान हो जाता है जब कि सेर हो कर खाने वाला इ़बादत में सुस्ती करता है, और खाने की कसरत उस की तलाश, उसे पकाने, हाथ धोने, ख़िलाल करने और पानी लेने के लिए पानी वाली जगह पर जाने का तक़ाज़ा करती है।

निवाला चबाने में भी वक़्त सर्फ़ होता है

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى बाज़ मशाइख़ के बारे में बयान फ़रमाते हैं कि वोह सत्तू खाते थे, उन से इस के बारे में पूछा गया तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने रोटी चबाने और येह सत्तू खाने के दरमियान सत्तर तस्बीह़ात का फ़र्क़ पाया इस लिए मैं ने चालीस साल से रोटी नहीं चबाई।"

जान लीजिए ! जिस शख़्स ने येह यक़ीन कर लिया कि हर सांस एक नफ़ीस जौहर है जो निहायत क़ीमती है वोह इस के ज़ाएअ़ होने पर अपना मुह़ासबा ज़रूर करेगा। भूक का फ़ाएदा येह भी है कि इस से नफ़्स व बदन सेह़्ह़त मन्द रेहता है क्यूंकि जो कम खाता है वोह कम ही बीमार होता है। और इस के फ़वाइद में से येह भी है कि इन्सान को ईसार व क़ुरबानी पर क़ुदरत ह़ासिल होती है और वोह फ़ज़ीलत को पा लेता है।

पेट की शहवत को तोड़ने वाली रियाज़ात

जान लो ! जिस त़रह़ पेहले बयान हो चुका है कि खाना ह़लाल हो तो इस सिलसिले में तीन वज़ाइफ़ हैं : (1) क़िल्लत व कसरत के एतिबार से खाने की मिक़्दार (2) जल्द या देर से, किस वक़्त खाया जाए और (3) खाने वाली चीज़ की क़िस्म का तअ़य्युन।

www.dawateislami.net

पेहला वज़ीफ़ा : खाना कम खाने के सिलसिले में तदरीजन (यानी आहिस्ता आहिस्ता) रियाज़त का रास्ता इख़्तियार किया जाए क्यूंकि जिस शख़्स को ज़्यादा खाने की आ़दत हो वोह फ़ौरन ही कम खाने की त़रफ़ आ जाए तो उस का मिज़ाज बरदाश्त न कर सकेगा चुनान्चे, अपने नफ़्स का ख़याल रखते हुवे आहिस्ता आहिस्ता कमी करे, मसलन अगर वोह एक दिन में तीन रोटियां खाता है तो हर रोज़ रोटी का तीसवां ह़िस्सा कम करे। इस त़रह़ एक महीने में एक रोटी और दो महीनों में दो रोटियां कम हो जाएंगी और उस पर येह चीज़ गिरां भी न होगी और येह तदरीज इस एतिबार से हो कि जिस पर वोह बाक़ी रेह सके और एतिमाद कर सके।

खाने की मिक़्दार के एतिबार से दरजात

खाने की मिक़्दार के एतिबार से भी दरजात हैं :

पेहला दरजा : सिद्दीक़ीन का है कि उन्हों ने खाने में इतनी मिक़्दार पर क़नाअ़त की, कि जिस से ज़िन्दगी और अ़क़्ल क़ाइम रेह सके और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने फ़रमान में इसी त़रफ़ इशारा फ़रमाया : حَسِبَ ابْنُ اٰدَمَ لُقَيْمَاتٌ يُقِمْنَ صُلْبَهٗ **"तर्जमा :** बन्दे के लिए चन्द लुक़्मे काफ़ी हैं जो उस की पीठ को सीधा रख सकें।" (سنن ابن ماجة، ابواب الاطعمة، باب اقتصاد فی الأكل و كراهة الشبع، الحديث ٣٣٤٩، ص٢٦٧٩)

दूसरा दरजा : येह है कि बन्दा अपने नफ़्स को दिन रात में निस्फ़ मुद (यानी आधा किलो) का आ़दी बना ले और येह रोटी का वोह ह़िस्सा है, जो चार मन (यानी चार किलो) में से होता है और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की आ़दते मुबारका इसी के क़रीब थी, आप सात या नौ लुक़्मे तनावुल फ़रमाते थे।

तीसरा दरजा : येह है कि वोह रियाज़त के ज़रीए़ नफ़्स को दिन रात में मुद का आ़दी बनाए, उस की अढ़ाई रोटियां बनती हैं, और येह पेट के तिहाई से ज़्यादा है।

चौथा दरजा : येह है कि वोह खाने की मिक़्दार मुद से एक किलो तक ले जाए और येह इन्तिहाई मिक़्दार है, इस से ज़्यादा खाना इसराफ़ है, क़रीब है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान के तह़्त दाख़िल हो जाए :

وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ (پ٨، الاعراف: ٣١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और खाओ और पियो और ह़द से न बढ़ो।

इस का एक त़रीक़ा और भी है कि भूक लगने के बाद खाना खाया जाए और सेर होने से पेहले हाथ खींच लिया जाए। इस से आगे न बढ़े लेकिन इस में ख़त़रा है, क्यूंकि हो सकता है कि वोह

www.dawateislami.net

सच्ची भूक पर आगाह न हो सके और उस पर मुआ़मला मुश्तबे हो जाए। केहते हैं कि : "सच्ची भूक की अ़लामत येह है कि वोह सालन का मुत़ालबा न करे" और एक क़ौल येह भी है कि : "वोह रोटियों के दरमियान फ़र्क़ न करे (यानी एक रोटी को दूसरी पर तरजीह़ न दे)।"

जान लो ! येह ह़ालत अश्ख़ास के मुख़्तलिफ़ होने से बदलती रेहती है इस लिए खाने की मिक़्दार का तअ़य्युन मुमकिन नहीं, लिहाज़ा हर शख़्स अपने नफ़्स में ग़ौरो फ़िक्र करे।

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इरशाद फ़रमाते हैं : "अगर दुन्या मोटे ताज़े जानवर का ख़ून होती, तो भी मोमिन की रोज़ी ह़लाल ही होती, क्यूंकि मोमिन ज़रूरत के वक़्त खाता है और सिर्फ़ इतना खाता है जिस से उसे कुव्वत ह़ासिल हो जाए।"

दूसरा वज़ीफ़ा : मुरीदीन में से बाज़ खाने की मिक़्दार की बजाए फ़ाक़े के ज़रीए़ रियाज़त करते हैं। इन में से बाज़ तीन दिन, बाज़ तीस दिन जब कि बाज़ चालीस दिन तक कुछ न खाते और बहुत से उ़लमा व सुलह़ा और सूफ़िया इस मुद्दत तक पहुंचे, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान ख़व्वास, ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى) इन्ही में से हैं।

बाज उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم इरशाद फ़रमाते हैं : "जो शख़्स चालीस दिन तक (रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिए) खाना छोड़ देता है, उस पर मलकूत से कुदरत के असरार ज़ाहिर हो जाते हैं, यानी उस पर बाज़ असरारे इलाही عَزَّوَجَلَّ खोल दिए जाते हैं।"

इसी गिरोह के एक सूफ़ी बुज़ुर्ग का गुज़र एक राहिब के पास से हुवा, तो उस ने उस की ह़ालत के बारे में गुफ़्तगू की और उसे इस्लाम की त़रफ़ माइल किया, राहिब ने कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चालीस दिन तक कुछ न खाते थे और येह मोजिज़ा है, जो सिर्फ़ सच्चे नबी ही को ह़ासिल होता है।" सूफ़ी बुज़ुर्ग ने उस से कहा : "अगर मैं पचास दिन तक कुछ न खाऊं, तो तुम अपने दीन को छोड़ कर दीने इस्लाम में दाख़िल हो जाओगे ?" उस ने कहा : "हां।" चुनान्चे, वोह सूफ़ी बुज़ुर्ग उस के सामने बैठ गए, ह़त्ताकि पचास दिन तक कुछ न खाया, फिर राहिब से केहने लगे : "मैं साठ दिन तक इज़ाफ़ा करता हूं।" और साठ दिन तक कुछ न खाया। इस पर राहिब को तअ़ज्जुब हुवा और केहने लगा : "मैं नहीं समझता था कि कोई शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से भी ज़्यादा दिन भूका रेह सकता है।" पस येही वाक़िआ़ उस के इस्लाम लाने का सबब बना।

येह बहुत बड़ा दरजा है और इस तक सिर्फ़ वोही लोग पहुंचते हैं, जो कश्फ़ व मुजाहदे में मश्ग़ूल हो कर भूक और ह़ाजत से मुस्तग़नी हो जाते हैं और उन का नफ़्स इस लज़्ज़त में पूरा ह़क़ वुसूल करता है, उस को भूक और ह़ाजत भुला देता है, चुनान्चे, आ़लमे ग़ैब से उन्हें रूह़ानी कुव्वत ह़ासिल हो

जाती है। शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने फ़रमान में इसी त़रफ़ इशारा फ़रमाया : اَبِيْتُ عِنْدَ رَبِّيْ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِيْ "तर्जमा : मैं अपने रब के हां रात गुज़ारता हूं, मेरा रब मुझे खिलाता और पिलाता है।"

(صحيح البخاری، كتاب الصوم، باب التنكيل لمن أكثر الوصال، الحديث ١٩٦٥، ص١٥٣)

दूसरा दरजा : येह है कि वोह दो से तीन दिन तक कुछ न खाए और येह आ़दत है।

तीसरा दरजा : येह है कि दिन रात में सिर्फ़ एक बार खाने पर इक्तिफ़ा करे और येह सब से कम दरजा है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब सुब्ह़ खाना खाते, तो शाम को न खाते और शाम को तनावुल फ़रमाते तो सुब्ह़ न खाते।" (شعب الايمان للبيهقی، باب فی المطاعم والمشارب، فصل فی ذم كثرة الأكل، الحديث ٥٦٤٤، ج٥، ص٢٧)

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से इरशाद फ़रमाया :

اِيَّاكِ وَالْاِسْرَافَ فَاِنَّ اَكْلَتَيْنِ فِيْ يَوْمٍ مِنَ السَّرَفِ. **तर्जमा :** इसराफ़ से बचो, दिन में दो बार खाना इसराफ़ है।

(شعب الايمان للبيهقی، باب فی المطاعم والمشارب، فصل فی ذم كثرة الأكل، الحديث ٥٦٤٠، ج٥، ص٢٦، بتغيرٍ قليلٍ)

जान लो ! वोह भूक क़ाबिले तारीफ़ है, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल न करे, क्यूंकि जब येह ह़द से तजावुज़ करती है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल कर देती है, मगर जिस शख़्स पर शहवत का बहुत ज़्यादा ग़लबा हो, तो वोह उन शहवतों को ख़त्म करने के लिए ऐसा कर सकता है, लेकिन अगर ऐसा न हो तो एतिदाल की राह सब से बेहतर है।

फिर उस ख़्वाहिश को छोड़ने में दो आफ़तें हैं, जिन से बचना बहुत ज़रूरी है :

(1) बाज़ अवक़ात इन्सान अकेले में तो खाता है, लेकिन लोगों के मज्मअ़ में नहीं खाता, तो येह शिर्के ख़फ़ी है और अक्सर येह इन्सान को निफ़ाक़ तक ले जाता है।

(2) इन्सान पसन्द करता है कि उसे कम खाना खाने वाला और पाक दामन समझा जाए, तो इस सूरत में वोह छोटी आफ़त को छोड़ कर उस से बड़ी चीज़, यानी जाह व शोहरत की ख़्वाहिश का मुर्तकिब हो जाता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि : "जब तुम्हें कोई ख़्वाहिश हो और तुम उसे छोड़ना चाहते हो, तो उस में से थोड़ा सा ले लो, नफ़्स की मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ न खाओ, तो गोया तुम ने अपने आप को ख़्वाहिश से दूर कर दिया और नफ़्स की ख़्वाहिश को पूरा न कर के उसे भी ठेस पहुंचाई, पस येह नफ़्स की शहवत को तर्क करना और नफ़्स की इत़ाअ़त न करना है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जाफ़र बिन मुह़म्मद सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "जब मुझे कोई ख़्वाहिश होती है, तो मैं अपने नफ़्स पर निगाह डालता हूं, अगर ज़ाहिर में उस की तमन्ना पाता हूं, तो उसे खिला देता हूं, क्यूंकि उस के रोकने से येह अफ़्ज़ल है और अगर ख़्वाहिश पोशीदा हो और ज़ाहिर में तर्क करना चाहता है, तो उसे छोड़ने के ज़रीए सज़ा देता हूं और उस में से कुछ नहीं खाता, तो उस पोशीदा ख़्वाहिश पर नफ़्स को सज़ा देने का येह त़रीक़ा है।

जान लो ! जो खाने की ख़्वाहिश तर्क कर देता है, लेकिन रियाकारी में पड़ता है, तो वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो बिच्छू से भाग कर सांप के पास चला जाए।

शर्मगाह की शहवत तोड़ने का त़रीक़ा

जान लो ! दो फ़ाएदों के लिए इन्सान को जिमाअ़ की लज़्ज़त दी गई :

पेहला फ़ाएदा : येह है कि उस से लज़्ज़त ह़ासिल कर के उस पर आख़िरत की लज़्ज़त को याद करे, क्यूंकि अगर जिमाअ़ की लज़्ज़त देर पा होती, तो तमाम जिस्मानी लज़्ज़ात से क़वी होती, जिस त़रह़ आग की तक्लीफ़ जिस्म की तमाम तकालीफ़ से बढ़ कर है।

दूसरा फ़ाएदा : येह है कि इस में नस्ल की बक़ा और वुजूद का दवाम है।

लेकिन इन दो फ़ाएदों के इलावा इस में ऐसी आफ़त हैं, कि अगर उन्हें क़ाबू कर के एतिदाल की ह़द की त़रफ़ न लौटाया जाए तो वोह दीनो दुन्या को हलाक कर देती हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान : مَالَاطَاقَةَ لَنَابِهٖ ج (پ۳،البقرۃ:۲۸۶) **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस की हमें सहार (त़ाक़त) न हो।" की तफ़्सीर में कहा गया है कि इस से मुराद शहवत की शिद्दत है और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान : وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ (پ۳۰،الفلق:۳) **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अन्धेरी डालने वाले के शर से जब वोह डूबे।" की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि इस से मुराद उ़ज़्वे मख़्सूस का मुन्तशिर होना है।

बाज़ रावियों ने इस ह़दीस को नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब किया है, कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यूं दुआ़ फ़रमाया करते थे : اَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ سَمْعِیْ وَبَصَرِیْ وَقَلْبِیْ وَمَنِیِّیْ **"तर्जमा :** या **अल्लाह** ! मैं अपने कानों, आंखों, दिल और माद्दए मनविय्या के शर से तेरी पनाह चाहता हूं।" (سنن ابی داؤد، کتاب الوتر، باب فی الاستعاذۃ، الحدیث ۱۵۵۱،ص۱۳۳۷)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اَلنِّسَاءُ حَبَائِلُ الشَّیْطَانِ **"तर्जमा :** औ़रतें शैत़ान की रस्सियां हैं।"

(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب کلام ابن مسعود، الحدیث ۳۷،ج۸،ص۱۶۲)

www.dawateislami.net

अगर येह शहवत न होती तो औ़रतें मर्दों पर मुसल्लत़ न होतीं।

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे, कि इब्लीस आप عَلَیْہِ السَّلَام के सामने आया और उस के सर पर एक टोपी थी जिस में कई रंग चमक रहे थे। जब वोह आप عَلَیْہِ السَّلَام के क़रीब हुवा तो टोपी उतार कर रख दी और आप को सलाम किया, आप عَلَیْہِ السَّلَام ने पूछा : "तू कौन है ?" उस ने कहा : "मैं इब्लीस हूं।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे ज़िन्दा न रखे, तू क्यूं आया ?" उस ने जवाब दिया : "चूंकि आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां एक मक़ामो मर्तबा ह़ासिल है इस लिए आप عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ करने ह़ाज़िर हुवा हूं।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने पूछा : "मैं ने तेरे सर पर जो देखा वोह क्या है ?" उस ने जवाब दिया : "इस के ज़रीए़ मैं इन्सानों के दिल उचक लेता हूं।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस से पूछा : "वोह कौन सा ऐसा अ़मल है जिस के ज़रीए़ तू इन्सान पर ह़ावी हो जाता है ?" शैत़ान ने जवाब दिया : "जब वोह अपने आप पर इतराने लगता है, अपने आमाल को ज़्यादा जानता है और गुनाहों को भूल जाता है।" (फिर केहने लगा) मैं आप को तीन बातों से डराता हूं : (1) किसी ग़ैर मह़रम औ़रत के साथ तन्हाई इख़्तियार न करें, क्यूंकि जो शख़्स ऐसी औ़रत के साथ अ़लाह़दगी में होता है, जो उस के लिए ह़लाल नहीं, तो मैं अपने कारन्दों को भेजने की बजाए ख़ुद वहां जाता हूं, यहां तक कि उन्हें फ़ितने में मुब्तला कर देता हूं (2) जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से वादा करें तो उसे पूरा करें और (3) जब सदक़े का माल निकालें, तो उसे ख़र्च कर दें, क्यूंकि जब कोई शख़्स सदक़े का माल अलग कर के रखता है, तो मैं उसे ख़र्च करने में रुकावट बन जाता हूं।" फिर शैत़ान येह केहता हुवा वापस चला गया : "हाए अफ़्सोस ! ह़ज़रते मूसा को वोह बात मालूम हो गई जिस के ज़रीए़ मैं लोगों को धोका देता हूं।"

कभी साह़िबे शहवत का मुआ़मला इस ह़द तक बढ़ जाता है कि वोह उ़ज़्वे मख़्सूस से इश्क़ करता है और इसी मक़ाम से ह़ाजत को पूरा करना चाहता है। येह चौपायों में ज़्यादा पाई जाती है, येह मज़मूम है और ज़्यादती हमेशा मज़मूम है और वोह येह है कि उस ह़द तक शहवत का ग़लबा हो, कि उस के आसार अ़क़्ल की इत़ाअ़त न करें और अ़न्नीन (यानी ना मर्द) के ह़क़ में शहवत का बिल्कुल न होना भी मज़मूम है, और बेहतरीन उमूर वोह हैं जो एतिदाल पर हों। जब शहवत ह़द से बढ़ जाए तो उसे भूक या निकाह़ के ज़रीए़ ख़त्म करे।

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ नौजवानों के गिरोह ! तुम पर निकाह़ करना लाज़िम है, पस जो औ़रत के हुक़ूक़ पूरे करने की त़ाक़त नहीं रखता, वोह रोज़े रखे क्यूंकि येह जिन्सी ख़्वाहिश को कम कर देते हैं।" (صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب من لم یستطع الباء ۃفلیصم، الحدیث٥٠٦٦،ص٤٣٨،مفھومًا)

मुरीद पर निकाह करना वाजिब है या तर्क करना

जान लो ! मुरीद को अपने इब्तिदाई मरह़ले में मुनासिब येही है कि वोह अपने आप को निकाह़ में मश्ग़ूल न करे जैसा कि गुज़र चुका है, कि येह चीज़ उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होने से रोक देगी, इसी लिए ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स शादी करता है वोह दुन्या की त़रफ़ झुक जाता है। नीज़ उन्हों ने येह भी इरशाद फ़रमाया : "मैं ने किसी मुरीद को नहीं देखा जो शादी के बाद पेहली ह़ालत पर रहा हो।"

जान लो ! अगर तुम अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ियास करो, तो येह तुम्हारी बहुत बड़ी ग़लत़ी है क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दुन्या और आख़िरत की कोई चीज़ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल नहीं करती और उसी की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़रमाने आ़लीशान में इशारा फ़रमाया :

مَازَاغَ الْبَصَرُ وَمَاطَغٰی ۝ (پ۲۷، النجم:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आंख न किसी त़रफ़ फिरी न ह़द से बढ़ी।

क्यूंकि कोई चीज़ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल नहीं कर सकती, पस जब तुझ पर शहवत ग़ालिब हो तो तुझे रोज़ा, भूक, प्यास, और बेदारी इख़्तियार करनी चाहिए, ग़ालिब गुमान येही है कि इन चीज़ों से शहवत ख़त्म हो जाएगी, लेकिन येह ख़िलाफ़े आ़दत ह़द से ज़्यादा हो और वोह आंख पर क़ाबू न रख सकता हो तो इस ख़ुसूसी ह़ालत की वज्ह से उस के लिए निकाह़ करना ज़रूरी है, ताकि वोह राह़त पा ले, क्यूंकि जो शख़्स आंख की ह़िफ़ाज़त पर क़ुदरत न रखे वोह दिल पर कैसे क़ाबू पा सकता है और जब बन्दे की सोच मुन्तशिर रहे तो उस के लिए मुजर्रद (यानी शादी के बिग़ैर) रेहने का कोई फ़ाएदा नहीं, बल्कि उस पर उस चीज़ का ख़ौफ़ है जो ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाई : "अपनी नज़र की ह़िफ़ाज़त करो, क्यूंकि येह दिल में शहवत का बीज बोती है और फ़ितने के लिए येही काफ़ी है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नज़र की वज्ह से आज़माइश में पड़े, इस लिए आप عَلَیْهِ السَّلَام ने अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام से फ़रमाया : "ऐ बेटे ! शेर और सांप के पीछे चलो, लेकिन औ़रत के पीछे न चलो।" ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन ज़करिय्या عَلَیْهِ السَّلَام से पूछा गया : "ज़िना की इब्तिदा क्या है ?" आप ने फ़रमाया : "देखना और ख़्वाहिश करना।"

अगर मुरीद का नफ़्स उस से ऐसी चीज़ का मुत़ालबा न करे जिस को वोह ख़त्म नहीं कर सकता तो उस के लिए निकाह़ न करना बेहतर है।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सुलैमान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के बारे में मरवी है, कि उन को हर रोज़ अस्सी हज़ार दिरहम आमदनी होती, उन्हों ने एह्ले बसरा और उन के उ़लमा को लिखा, कि वोह किसी औ़रत से उन की शादी करा दें। वोह सब ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या बसरिय्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا

के साथ निकाह़ कराने पर मुत्तफ़िक़ हुवे, तो उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا की त़रफ़ लिखा : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم،اَمَّا بَعْدُ! "यानी ह़म्दो सलात के बाद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या के माल से रोज़ाना मुझे अस्सी हज़ार दिरहम का मालिक बनाता है, कुछ दिन बाद येह एक लाख हो जाएंगे, मैं तुम्हारे लिए ऐसा ऐसा करूंगा पस तुम मेरी दावते निकाह़ क़बूल कर लो।"

ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا ने उन्हें जवाब में लिखा : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم،اَمَّا بَعْدُ! "दुन्या से बे रग़बती में बदन की राह़त है और दुन्या की रग़बत, परेशानी और ग़म का बाइ़स है। जब तुम्हारे पास मेरा येह ख़त़ पहुंचे, तो अपने लिए ज़ादे राह तय्यार कर के आख़िरत की तय्यारी करो, अपने नफ़्स को वसिय्यत करने वाले बनो, दूसरे लोगों को अपना वसी मुक़र्रर न करो, वोह तुम्हारी मीरास को तक़्सीम कर लेंगे, हमेशा रोज़ा रखो और मौत पर ही इफ़्त़ार करो और जहां तक मेरा तअ़ल्लुक़ है, तो अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे इस क़दर दौलत अ़त़ा फ़रमाए, जिस क़दर तुम्हें दी है, बल्कि इस से भी दुगनी अ़त़ा फ़रमाए तब भी मुझे येह बात पसन्द नहीं होगी कि मैं पलक झपकने की देर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल हो जाऊं।"

इस से येह बात वाज़ेह़ हो गई कि जो चीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल कर दे वोह नुक़्सान देह है।

शहवत की मुख़ालफ़त करने पर फ़ज़ीलत

जान लो ! पाक दामनी येह है कि वोह शहवत पर क़ादिर न हो और क़ुदरत होने के बा वुजूद शहवत की मुख़ालफ़त करना अफ़्ज़ल है और येह सिद्दीक़ीन का दरजा है इसी लिए नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ عَشِقَ فَعَفَّ فَكَتَمَ فَمَاتَ فَهُوَ شَهِيْدٌ.

तर्जमा : जिसे इश्क़ हुवा और उस ने पाक दामनी इख़्तियार करते हुवे उसे छुपाया और इसी ह़ालत में मर गया तो वोह शहीद है।

(کنز العمال، کتاب الجهاد، الحدیث ۱۱۱۹۹، ج ٤، ص ۱۸۰)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रेह़मत निशान है : "सात आदमी ऐसे हैं जिन्हें बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा, जिस दिन उस के इ़लावा कोई साया न होगा, और आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन (सात अफ़राद) में उस शख़्स को भी शुमार फ़रमाया जिसे कोई ह़सबो नसब वाली ह़सीनो जमील औ़रत (बुरे काम की) दावत दे तो वोह कहे : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं जो तमाम जहानों का रब है।" (جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب ماجاء فی الحب فی الله، الحدیث ۲۳۹۱، ص ۱۸۹۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار के बारे में मरवी है कि आप बहुत ख़ूब सूरत थे। एक औ़रत आप के पास आई और आप को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करना चाहा लेकिन आप ने इन्कार फ़रमा दिया और उस औ़रत को वहीं घर में छोड़ कर भाग खड़े हुवे, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ियारत की गोया मैं उन से पूछ रहा था : "क्या आप ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं ?" आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमा रहे थे : "हां ! मैं यूसुफ़ हूं जिस की त़रफ़ इरादा मन्सूब है और तुम सुलैमान हो जिस ने इरादा नहीं किया।"

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ وَإِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَالْمَاٰبِ.

ज़ोह्र से पेहले और बाद, नवाफ़िल अदा करने का सवाब

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

(1)...."जो शख़्स पाबन्दी के साथ ज़ोह्र से पेहले और बाद में चार चार रक्अ़तें अदा करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जहन्नम को ह़राम फ़रमा देगा।" जब कि एक रिवायत में है कि "उस के चेहरे को जहन्नम की आग कभी न छू सकेगी।"

(مسند احمد، حدیث ام حبیبہ بنت ابی سفیان، رقم ۲۶۸۲۵، ج۱۰، ص۲۳۲ بتغیر قلیل)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन साइब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़वाले शम्स के बाद ज़ोह्र से पेहले चार रक्अ़तें अदा फ़रमाया करते और इरशाद फ़रमाते कि "येह वोह घड़ी है जिस में आस्मानों के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं लिहाज़ा मैं पसन्द करता हूं कि इस घड़ी में मेरा कोई नेक अ़मल आस्मानों तक पहुंचे।" (مسند احمد، احادیث عبد اللہ بن السائب، رقم ۱۵۳۹۶، ج۵، ص۲۵۰ بتغیر قلیل)

www.dawateislami.net

बाब : 24 ज़बान की आफ़ात

जान लो ! ज़बान का ख़त़रा बहुत बड़ा है और इस के ख़त़रे से नजात सिर्फ़ ख़ामोशी में है। येही वज्ह है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ामोशी की तारीफ़ की और ख़ामोश रेहने की तरग़ीब दी।

चुनान्चे, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : مَنْ صَمَتَ نَجَا "जो ख़ामोश रहा उस ने नजात पाई।"

(جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة، باب حدیث من کان یؤمن اللّٰه فلیکرم ضیفه، الحدیث ۲۵۰۱، ص۱۹۰۳)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَلصَّمْتُ حِكَمٌ وَقَلِيْلٌ فَاعِلُهٗ "**तर्जमा :** ख़ामोशी ह़िक्मत है और इसे इख़्तियार करने वाले कम हैं।"

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی حفظ اللسان، فصل فی فضل السکوت عما لا یعنیه، الحدیث ۵۰۲۶، ج۴، ص۲۶۴)

शहनशाहे नबुव्वत, पैकरे जूदो ह़िक्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है :

مَنْ يَّتَكَفَّلُ لِيْ مَابَيْنَ لِحْيَيْهِ وَرِجْلَيْهِ اَتَكَفَّلُ لَهٗ بِالْجَنَّةِ

तर्जमा : जो शख़्स मुझे दो जबड़ों के दरमियान वाली चीज़ (यानी ज़बान) और दो टांगों के दरमियान वाली चीज़ (यानी शर्मगाह) की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب حفظ اللِّسان، الحدیث ۶۴۷۴، ص۵۴۳، مفهومًا)

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे वसिय्यत फ़रमाएं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस त़रह़ इ़बादत कर गोया तू उसे देख रहा है, अपने आप को मरने वालों में शुमार कर, और अगर तू चाहे तो मैं तुझे बताऊं, कि तेरे लिए कौन सी चीज़ बेहतर है, फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बान मुबारक की त़रफ़ इशारा फ़रमाया।"

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب حفظ اللسان وفضل الصَّمت، الحدیث ۲۲، ج۷، ص۴۲-۴۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है आप फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या हमारी गुफ़्तगू पर भी मुवाख़ज़ा होगा ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने जबल ! तेरी मां तुझ पर रोए, लोगों को उन के नथ्नों के बल जहन्नम में गिराने वाली ज़बान की काटी हुई खेती (यानी गुफ़्तगू) के सिवा और क्या है।" (جامع الترمذی، ابواب الایمان، باب ماجاء فی حرمة الصلاة، الحدیث ۲۶۱۶، ص۱۹۱۵)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने मुंह में छोटे छोटे पथ्थर रखते थे, जिन के ज़रीए़ गुफ़्तगू से परहेज़ करते, नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़बान की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाते : "इस ने मुझे हलाकत की जगहों में पहुंचाया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई माबूद नहीं ! कोई चीज़ ज़बान से ज़्यादा क़ैद की मोह़ताज नहीं।"

अब हम ज़बान की आफ़ात बयान करेंगे, पेहले छोटी आफ़ात को बयान करेंगे फिर दरजा ब दरजा बड़ी आफ़ात बयान की जाएंगी।

पेहली आफ़त : बे मक़्सद कलाम करना

जान लो ! जब तुम बे मक़्सद गुफ़्तगू करोगे, यानी ऐसी गुफ़्तगू जिस की तुम्हें ह़ाजत नहीं, तो अपना वक़्त ज़ाएअ़ करोगे और इस के ज़रीए़ अपने आप को ह़िसाबो किताब के लिए पेश करोगे, तो इस त़रह़ तुम अच्छी चीज़ दे कर इस के बदले बुरी चीज़ लेने वाले बन जाओगे, क्यूंकि अगर तुम इस की बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते या ख़ामोश रेहते या ग़ौरो फ़िक्र में मश्ग़ूल रेहते तो उस के नतीजे में बुलन्द दरजात पा लेते।

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है :

مِنْ حُسْنِ اِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهٗ مَالَايَعْنِيْهِ.

तर्जमा : इन्सान के इस्लाम की अच्छाई, फ़ुज़ूल बातों को तर्क कर देना है।

(جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب حدیث: من حسن اِسلام المرء تركه مالا يعنيه، الحديث٢٣١٧،ص١٨٨٥)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि उहुद के दिन हमारा एक ग़ुलाम शहीद हो गया, हम ने उसे भूक की वज्ह से पेट पर पथ्थर बांधे हुवे पाया, उस की मां ने उस के चेहरे से गर्दो ग़ुबार साफ़ करते हुवे कहा : ऐ बेटे ! तुम्हें जन्नत मुबारक हो। तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हें कैसे मालूम हुवा ? (कि येह जन्नती है) हो सकता है येह फ़ुज़ूल कलाम करता हो और ऐसी गुफ़्तगू से मन्अ़ करता हो जो इसे नुक़्सान न पहुंचाती थी।"

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب النهی عن الکلام فیما لایعنیك، الحدیث١٠٩، ج ٧، ص ٨٥)

जान लो ! बे मक़्सद कलाम येह है कि तू मजलिस में ऐसे सच्चे वाक़िआ़त बयान करे जो दौराने सफ़र तुझे पहाड़ों और जंगलों में पेश आएं।

दूसरी आफ़त : फ़ुज़ूल गोई करना

दूसरी आफ़त येह है कि तू ऐसी बात का तकरार करे, जिस के तकरार करने का कोई फ़ाएदा न हो और उस में ज़्यादा अल्फ़ाज़ इस्तिमाल करे जिन की ज़रूरत न हो। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन

www.dawateislami.net

अबी रिबाह़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इरशाद फ़रमाते हैं : तुम से पेहले लोग फ़ुज़ूल कलाम को ना पसन्द करते थे। मिसाल के तौ़र पर येह बात भी फ़ुज़ूल है कि तुम कहो, "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस कुत्ते को दूर फ़रमा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़र्रफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इरशाद फ़रमाते हैं कि : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत का लिह़ाज़ रखा करो और कुत्ते या गधे का नाम लेते वक़्त भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र न करो मसलन येह न कहो : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन्हें दूर कर दे वग़ैरा वग़ैरा।"

फ़ुज़ूल गोई की कोई ह़द नहीं। नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

طُوْبٰی لِمَنْ اَمْسَکَ الْفَضْلَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَ اَنْفَقَ الْفَضْلَ مِنْ مَّالِهٖ

तर्जमा : उस शख़्स को मुबारक हो जो अपनी ज़बान को फ़ुज़ूल गोई से रोक ले और अपने ज़ाइद माल को ख़र्च कर दे।

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزکاة، فصل فی کراهیة .....الخ، الحدیث۳۳۸۸،ج۳،ص۲۲۵، لسانه:بدله: قوله)

ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कोई शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वाला ऐसा कलिमा केहता है जिस के बारे में उस का ख़याल नहीं होता कि वोह किस बुलन्दी तक पहुंचेगा मगर इस की वज्ह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक उस के लिए अपनी रिज़ा लिख देता है और कोई आदमी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी वाला एक कलिमा केहता है, ह़ालांकि वोह शख़्स इसे मामूली समझता है लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के सबब क़ियामत तक उस के लिए नाराज़गी लिख देता है।"

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب النهی عن فضول الکلام والخوض فی الباطل، الحدیث ۷۰،ج۷،ص۶۷۔۶۸)

(इमाम ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते थे : ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की इस रिवायत ने मुझे अक्सर बातों से रोका है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एक शख़्स ऐसी बात केहता है जिस के ज़रीए़ अपने पास बैठने वालों को हंसाता है, मगर वोह इस के बाइ़स सुरय्या (सितारे) से भी ज़्यादा दूर जा गिरता है।"

(الموسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب النهی عن فضول الکلام، الحدیث ۷۱، ج۷، ص۶۸۔۶۹)

तीसरी आफ़त : गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ कलाम करना

तीसरी आफ़त येह है कि गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू करना जिस त़रह़ औ़रतों के ह़ालात, शराब की मजालिस और बदकारों के मक़ामात का ज़िक्र करना इसी जानिब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में इशारा है :

وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۝ (پ۲۹،المدثر:۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे।

www.dawateislami.net

और हम ने दूसरी आफ़त के बयान में ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत ज़िक्र कर दी है।

चौथी आफ़त : बह़्सो मुबाहसा करना और झगड़ना

गुज़श्ता बयान की गई ममनूअ़ चीज़ों के बारे में झगड़ना या उन तक पहुंचने की तरकीबें बनाना भी मन्अ़ है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ज़्ज़त निशान है :

لَا تُمَارِ اَخَاکَ وَلَا تُمَازِحْهُ وَلَا تَعِدْهُ مَوْعِدًا فَتُخْلِفَهُ.

तर्जमा : अपने भाई से झगड़ा न करो, न उस से मज़ाक़ करो और उस से वादा करो तो उस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी न करो।

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی المراء، الحدیث ۱۹۹۵، ص ۱۸۵۲)

ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "जो शख़्स ह़क़ पर होने के बावुजूद झगड़ा छोड़ दे, उस के लिए जन्नत के आला दरजे में घर बनाया जाता है, और जो बात़िल होने की वज्ह से झगड़ा छोड़ दे उस के लिए जन्नत के गिर्दो नवाह़ में घर बनाया जाता है।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی المراء، الحدیث ۱۹۹۳، ص ۱۸۵۱، اعلی بدله وسط)

पांचवीं आफ़त : लड़ाई झगड़ा करना

यानी इन्सान का दूसरे का ह़क़ या माल ह़ासिल करने के लिए झगड़ना और येह भी क़ाबिले मज़म्मत है। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَبْغَضُ الرِّجَالِ اِلَی اللّٰهِ الْاَلَدُّ الْخَصِمُ

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां सब से ना पसन्दीदा शख़्स वोह है जो बहुत ज़्यादा झगड़ालू हो।

(صحیح البخاری، کتاب المظالم، باب قول اللّٰه تعالی: وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ، الحدیث ۲۴۵۷، ص ۱۹۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ جَادَلَ فِی خُصُوْمَةٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ لَمْ يَزَلْ فِی سُخْطِ اللّٰهِ حَتّٰی يَنْزِعَ.

तर्जमा : जो शख़्स बेजा झगड़ता है, वोह हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी में होता है, यहां तक कि उसे छोड़ दे।

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب ذم الخصومات، الحدیث ۱۵۳، ج ۷، ص ۱۱۱)

www.dawateislami.net

छटी आफ़त : तकल्लुफ़ और बनावट से गुफ़्तगू करना

तकल्लुफ़ के साथ फ़साहतो बलाग़त से भरपूर और बनावटी कलाम करना।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَنَا وَاَتْقِيَاءُ اُمَّتِيْ بَرَاءٌ مِّنَ التَّكَلُّفِ.

तर्जमा : मैं और मेरी उम्मत के परहेज़गार लोग तकल्लुफ़ से बरी हैं।

ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं, हुज़ूर नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत के बुरे लोग वोह हैं जो त़रह़ त़रह़ की नेमतों से परवान चढ़ते हैं, मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने खाते हैं, त़रह़ त़रह़ के लिबास पेहनते हैं और (तकल्लुफ़ के साथ) गुफ़्तगू करते हैं।

(الكامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم١٤٦٦ـعبدالحميد بن جعفر بن الحكم الانصاری، ج٧،ص٤)

सातवीं आफ़त : गाली गलोच और फ़ोह़्श कलामी करना

येह भी क़ाबिले मज़म्मत है। चुनान्चे, नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِيَّاكُمْ وَالْفُحْشَ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفُحْشَ وَلَا التَّفَحُّشَ.

तर्जमा : फ़ोह़्श कलामी से बचो, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़ोह़्श कलामी और ब तकल्लुफ़ फ़ोह़्श कलाम करने को पसन्द नहीं फ़रमाता।

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الغصب، الحديث٥١٥٤،ج٧،ص٣٠٧)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए बद्र में क़त्ल होने वाले मुशरिकीन को गाली देने से मन्अ़ फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : اَلْبَذَاءُ وَالْبَيَانُ شُعْبَتَانِ مِنَ النِّفَاقِ "**तर्जमा :** फ़ोह़्श गोई और कसरते कलाम निफ़ाक़ के दो शोबे हैं।"(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی العَيِّ، الحديث٢٠٢٧،ص١٨٥٤)

आठवीं आफ़त : लानत करना

लानत ख़्वाह हैवानात व जमादात पर की जाए या इन्सान पर (मज़मूम है), सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : اَلْمُؤْمِنُ لَيْسَ بِلَعَّانٍ "**तर्जमा : मोमिन** लानत करने वाला नहीं होता।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی اللعنة، الحديث١٩٧٧،ص١٨٥٠)

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं : "जो क़ौम किसी पर लानत भेजती है तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब साबित हो जाता है।"

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इरशाद फ़रमाती हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने एक ग़ुलाम को लान त़ान करते सुना, तो उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर दो या तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! क्या सिद्दीक़ भी हो और लान त़ान भी करे, रब्बे काबा की क़सम ! ऐसा नहीं हो सकता।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसी दिन अपना ग़ुलाम आज़ाद कर दिया और नबिय्ये रेह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : "मैं दोबारा येह कलिमात नहीं कहूंगा।" (الادب المفرد للبخاری، باب من لعن عبدہ فأعتقہ، الحدیث ۳۲۲، ص ۱۰۰-۱۰۱)

जान लो ! जिस शख़्स के लिए शरीअ़त में मलऊ़न होना साबित हो जैसे अबू जह्ल, फ़िरऔ़न वग़ैरा तो ऐसों पर लानत भेजने में ह़रज नहीं लेकिन बन्दा उन पर लानत न भेजे तो भी कोई ह़रज नहीं और जहां तक यहूदी का तअ़ल्लुक़ है तो उस पर लानत भेजने में ख़त़रा है क्यूंकि मुमकिन है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की क़िस्मत में इस्लाम क़बूल करना लिख दिया हो, तो इस सूरत में लानत भेजने में ख़त़रा है लेकिन अगर कोई क़ैद लगा कर लानत भेजना चाहे तो वोह यूं कहे : "अगर वोह ह़ालते कुफ़्र पर मरे तो उस पर लानत हो।" ह़ासिले कलाम येह कि इब्लीस (यानी शैत़ान) पर लानत न भेजने में कोई ह़रज नहीं चे जाए कि कोई दूसरा हो, चुनान्चे, लानत न करना और इस से ज़बान को बचाना ही बेहतर है।

नवीं आफ़त : गाने गाना और शेर केहना

गाने के बारे में समाअ़ के बाब में ज़िक्र गुज़र चुका है, और जहां तक शेर का तअ़ल्लुक़ है तो कलाम अच्छा हो तो अच्छा है और बुरा हो तो बुरा। लेकिन शेर केहने को पेशा बना लेना **मज़मूम** है। चुनान्चे, नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

لَاَنْ یَّمْتَلِیَ بَطْنُ اَحَدِکُمْ قَیْحاً خَیْرٌ لَّہٗ مِنْ اَنْ یَّمْتَلِیَ شِعْرًا.

तर्जमा : तुम में से किसी के पेट का पीप से भर जाना अश्आ़र से भर जाने से बेहतर है।

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب مایکرہ أن یکون الغالب علی الانسان الشِّعْر.....الخ، الحدیث ٦١٥٤، ص ٥١٩)

(ग़लत़) अश्आ़र पर मुदावमत इख़्तियार करना और इन के लिए सफ़र करना ममनूअ़ है मगर सह़ीह़ अश्आ़र के जवाज़ पर बहुत सी अह़ादीस वारिद हैं।

दसवीं आफ़त : हंसी मिज़ाह़ करना

मिज़ाह़ की अस्ल येह है कि इस से रोका गया है और येह मज़मूम है अलबत्ता थोड़ा सा हो तो जाइज़ है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : لَا تُمَارِ اَخَاکَ وَلَا تُمَازِحْہُ "**तर्जमा :** न अपने भाई की बात काटो और न उस का मज़ाक़ उड़ाओ।" (جامع الترمذی، ابواب البر والصلۃ، باب ماجاء فی المراء، الحدیث ۱۹۹۵، ص ۱۸۵۲)

www.dawateislami.net

जान लो ! इस में ह़द से बढ़ना मन्अ़ है कि कसरते मज़ाक़ से ज़्यादा हंसी पैदा होती है और नतीजतन दिल मुर्दा हो जाता है।

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : اِنِّیْ لَاَمْزَحُ وَلَا اَقُوْلُ اِلَّا حَقًّا **"तर्जमा :** मैं मिज़ाह़ करता हूं, लेकिन ह़क़ बात के सिवा कुछ नहीं केहता।" (أخلاق النبی ﷺ لابی الشیخ الاصبهانی ،باب ما روی فی کظمه الغیظ و حلمه ﷺ ،الحدیث ١٧٤،ج١،ص١٨٦)

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : "तुम खजूरें खा रहे हो, जब कि तुम्हारी आंखों में दर्द है तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "मैं दूसरी त़रफ़ से खा रहा हूं।" येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिए।" (سنن ابن ماجة، ابواب الطب، باب الحمية، الحديث٣٤٤٣، ص٢٦٨٤)

ग्यारहवीं आफ़त : मज़ाक़ उड़ाना और तमस्ख़ुर करना

येह भी ह़राम है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ (پ٢٦،الحجرٰت:١١) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** न मर्द मर्दों से हंसें।

इस का माना दूसरे की तौहीन करना, उसे ह़क़ीर जानना और उस के ऐबों से आगाह करना है और बाज़ अवक़ात येह चीज़ उस के क़ौलो फ़ेल की नक़्ल उतारने के ज़रीए़ पाई जाती है।

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले के लिए जन्नत का दरवाज़ा खोला जाएगा और कहा जाएगा : आओ ! आओ ! वोह ग़म और तक्लीफ़ की ह़ालत में आएगा जब वोह आएगा तो उस पर दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा। फिर दूसरा दरवाज़ा खोला जाएगा और कहा जाएगा : आओ ! आओ ! वोह ग़म व अलम में आएगा जब वोह आएगा तो उस पर वोह दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा, इसी त़रह़ मुसलसल होता रहेगा, यहां तक कि उस के लिए दरवाज़ा खोला जाएगा और कहा जाएगा : आओ ! आओ ! तो वोह नहीं आएगा।" (موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب ما نُهی عنه العباد ان یسخر بعضهم من بعض، الحدیث ٢٨٧،ج٧،ص١٨٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ عَيَّرَ اَخَاهُ بِذَنْبٍ قَدْ تَابَ مِنْهُ لَمْ يَمُتْ حَتّٰى يَعْمَلَهٗ. **तर्जमा :** जो आदमी अपने (मुसलमान) भाई को उस के किसी गुनाह पर आ़र दिलाता है जिस से वोह तौबा कर चुका हो, तो आ़र दिलाने वाला मरने से पेहले उस अ़मल में मुब्तला होगा।

(جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة، باب فی وعید من عیرأخاه بذنب، الحدیث٢٥٠٥،ص١٩٠٣)

www.dawateislami.net

बारहवीं आफ़त : राज़ को ज़ाहिर करना

किसी के राज़ को ज़ाहिर करने से मन्अ़ किया गया है, क्यूंकि इस के ज़रीए़ तक्लीफ़ पहुंचाई जाती है और दूसरों के ह़क़ को मामूली समझा जाता है, शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : اَلْحَدِيْثُ بَيْنَكُمْ اَمَانَةٌ "गुफ़्तगू तुम्हारे दरमियान अमानत है।" (موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب حفظ السِر، الحدیث٤٠٦،ج٧،ص٢٤٤)

तेरहवीं आफ़त : झूटा वादा करना

झूटा वादा करने से भी मन्अ़ किया गया है और येह निफ़ाक़ की अ़लामात में से है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ (پ٦، المائدہ: ١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपने क़ौल पूरे करो।

नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सदाक़त निशान है : اَلْعِدَةُ عَطِيَّةٌ "**तर्जमा :** वादा पूरा करना अ़तिय्या है।" (المعجم الاوسط، الحدیث١٧٥٢،ج١،ص٤٧٥)

चौदहवीं आफ़त : झूट बोलना और झूटी क़सम खाना

येह निहायत क़बीह़ गुनाहों में से है, मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बाद ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस मक़ाम पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे, जहां आज मैं खड़ा हूं, फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रो पड़े और फ़रमाया : नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِيَّاكُمْ وَالْكِذْبَ، فَاِنَّهٗ مَعَ الْفُجُوْرِ وَهُمَا فِى النَّار "**तर्जमा :** झूट से बचो क्यूंकि झूट बोलने वाला बदकार के साथ होता है और वोह दोनों दोज़ख़ में होंगे।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الدعاء، باب الدعاء بالعفو والعافية، الحدیث٣٨٤٩،ص٢٧٠٦)

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : اِنَّ الْكِذْبَ بَابٌ مِّنْ اَبْوَابِ النِّفَاقِ "**तर्जमा :** बेशक झूट मुनाफ़क़त के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है।"

(مساوئ الأخلاق للخرائطی، باب ماجاء فی الکذب وقبح ما أتی به أهله، الحدیث١٠٧،ج١، ص١١٧)

बाज़ अस्लाफ़ से मन्क़ूल है कि इशारतन झूट बोलने की गुन्जाइश है और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : तोरिया[1] करने से आदमी झूट से बच जाता है।"

1....सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "तोरिया यानी लफ़्ज़ के जो ज़ाहिर माना हैं वोह ग़लत़ हैं मगर उस ने दूसरे माना मुराद लिए जो सह़ीह़ हैं, ऐसा करना बिला ह़ाजत जाइज़ नहीं और ह़ाजत हो तो जाइज़ है। तोरिया की मिसाल येह है कि तुम ने किसी को खाने के लिए बुलाया वोह केहता है मैं ने खाना खा लिया। इस के ज़ाहिर माना येह हैं कि इस वक़्त का खाना खा लिया है मगर वोह येह मुराद लेता है कि कल खाया है येह भी झूट में दाख़िल है। (मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं) एह्याए ह़क़ के लिए तोरिया जाइज़ है।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16 स. 160-161 मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

पन्द्रहवीं आफ़त : ग़ीबत

हम पेहले शरीअ़त में इस के मुतअ़ल्लिक़ वारिद होने वाली मज़म्मत को ज़िक्र करते हैं। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا (پ۲٦، الحجرٰت:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एक दूसरे से ह़सद न करो, आपस में बुग़्ज़ न रखो, बैअ़ नज्श न करो।[1] एक दूसरे से रूगर्दानी न करो और एक दूसरे की ग़ीबत भी न करो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! भाई भाई बन जाओ।"

(صحیح مسلم، کتاب البر، باب تحریم ظلم المسلم .....الخ، الحدیث ٦٥٤١،ص١١٢٧)

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب الغیبة وذمها، الحدیث١٦٣،ج٧،ص١١٦تا١١٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "ग़ीबत से बचो, बेशक ग़ीबत ज़िना से सख़्त तर है, क्यूंकि जब आदमी ज़िना कर के तौबा करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है और ग़ीबत करने वाले की बख़्शिश उस वक़्त तक नहीं होती, जब तक वोह शख़्स मुआ़फ़ न कर दे जिस की ग़ीबत की है।"

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب الغیبة وذمها، الحدیث١٦٤،ج٧، ص١١٨)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "शबे मेराज मैं ऐसी क़ौम के पास से गुज़रा, जो अपने चेहरों को अपने नाख़ुनों से नोच रहे थे, मैं ने जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام से पूछा : "येह कौन लोग हैं ?" उन्हों ने जवाब दिया : "येह वोह हैं जो लोगों की ग़ीबत करते थे और उन की इ़ज़्ज़तों के पीछे पड़ते थे।" (موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب الغیبة وذمها، الحدیث١٦٥،ج٧،ص١١٨)

---

1 ....सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **"नज्श मकरूह है,** हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ फ़रमाया : **नज्श येह है कि मबीअ़ (यानी बेची जाने वाली चीज़) की क़ीमत बढ़ाए और ख़ुद ख़रीदने का इरादा न रखता हो।** इस से मक़्सूद येह होता है कि दूसरे गाहक को रग़बत पैदा हो और क़ीमत से ज़्यादा दे कर ख़रीद ले और येह ह़क़ीक़तन ख़रीदार को धोका देना है। जैसा कि बाज़ दुकानदारों के यहां इस क़िस्म के आदमी लगे रेहते हैं, गाहक को देख कर चीज़ के ख़रीदार बन कर दाम बढ़ा दिया करते हैं और उन की इस ह़रकत से गाहक धोका खा जाते हैं। गाहक के सामने मबीअ़ की तारीफ़ करना और उस के ऐसे औसाफ़ बयान करना जो न हों ताकि ख़रीदार धोका खा जाए, येह भी नज्श है।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा 11, स. 73-74)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वही भेजी और फ़रमाया : "जो शख़्स ग़ीबत से तौबा करते हुवे फ़ौत हुवा, वोह जन्नत में सब से आख़िर में दाख़िल होगा और जो ग़ीबत पर इसरार की ह़ालत में फ़ौत हुवा, वोह जहन्नम में सब से पेहले दाख़िल होगा।"

ग़ीबत की तारीफ़

ग़ीबत येह है कि तुम अपने किसी भाई का ज़िक्र उन अल्फ़ाज़ में करो कि अगर उस तक येह बात पहुंचे तो वोह इसे ना पसन्द करे। ख़्वाह तुम उस के बदन या ख़ानदान के ऐ़ब का ज़िक्र करो या उस की फ़ेली, क़ौली, दीनी या दुन्यवी कोताही बयान करो। यहां तक कि उस के लिबास, मकान और जानवर का ऐ़ब बयान करना भी ग़ीबत है।

जान लो ! ग़ीबत के सिलसिले में इशारतन गुफ़्तगू करना और समझना सराह़तन गुफ़्तगू करने की त़रह़ है और ऐसी ह़रकत जिस से मक़्सूद समझ में आ जाए उस में और सरीह़ गुफ़्तगू करने में कोई फ़र्क़ नहीं और ग़ीबत सुनने वाला ग़ीबत करने वाले के साथ (गुनाह में) शरीक होता है, ग़ीबत तवज्जोह से सुनना और ग़ीबत करने वाले की बात पर इज़्हारे तअ़ज्जुब भी ग़ीबत है, क्यूंकि येह भी ग़ीबत करने वाले की मदद करना और उस के साथ शरीक होना है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : "जो शख़्स अपने (मुसलमान) भाई की ग़ैर मौजूदगी में उस की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, कि वोह क़ियामत के दिन उस की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा।" (موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب ذب المسلم عن عرض أخیه، الحدیث ٢٤٠، ج٧، ص١٥٩)

कब ग़ीबत की रुख़्सत है ?

ग़ीबत करने की इजाज़त उस वक़्त है जब शरई त़ौर पर कोई सह़ीह़ मक़्सद हो, और येह छे सूरतें हैं :

(1) **ज़ालिम की शिकायत करना :** जिस त़रह़ कोई शख़्स क़ाज़ी के सामने किसी के रिश्वत लेने या ज़ुल्म वग़ैरा करने की शिकायत करे, येह जाइज़ है।

(2) **मदद त़लब करना :** यानी बुराई को बदलने और गुनाहगार को इस्लाह़ की त़रफ़ लौटाने के लिए मदद त़लब करना।

(3) **फ़तावा के लिए :** इस की सूरत येह है, कि वोह इस त़रह़ कहे : "मेरे बाप या भाई पर इस मुआ़मले में ज़ुल्म किया गया, इस से बचना कैसे मुमकिन है ?" लेकिन इस मुआ़मले में इशारतन केहना ज़्यादा मुनासिब है।

(4) **मुसलमानों को बुराई से बचाना :** हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اُذْكُرُوا الْفَاجِرَ بِمَا فِيْهِ مِنْ مُسَاوِيْهِ يَحْذَرُهُ النَّاسُ.

तर्जमा : फ़ाजिर की बुराइयां बयान करो, ताकि लोग उस से बचें।

(الكامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم ٣٦١،الجارود بن يزيد أبو الضحاك النيسابوری،ج٢،ص٤٣٠)

(5) **ऐ़ब वाले नाम से मारूफ़ होना :** कोई शख़्स अपने किसी ऐ़ब के साथ मारूफ़ हो जैसे लंगड़ा, अन्धा तो इस सूरत में उसे उस नाम से पुकारने में ग़ीबत नहीं।

(6) **अ़लानिय्या फ़िस्क़ का मुर्तकिब होना :** जो शख़्स अ़लानिय्या फ़िस्क़ का मुर्तकिब हो जैसे हीजड़ा, शराब की मजलिस क़ाइम करने वाला और अ़लानिय्या शराब पीने वाला। नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

مَنْ أَلْقٰى جِلْبَابَ الْحَيَاءِ عَنْ وَّجْهِهٖ فَلَاغِيْبَةَ لَهٗ.

तर्जमा : जो शख़्स अपने चेहरे से ह़या की चादर उतार दे उस की ग़ीबत नहीं होती।

(مكارم الاخلاق لابن ابی الدنيا، باب ذكر الحياء وما جاء فيه، الحديث١٠٢،ص٨٧-٨٨،بدون:عن وجهه)

ग़ीबत के कफ़्फ़ारे का बयान

जान लो ! ग़ीबत करने वाले पर लाज़िम है कि वोह शर्मिन्दा हो, तौबा करे और अपने किए पर अफ़्सोस का इज़हार करे, ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ से बाहर आ जाए। फिर जिस की ग़ीबत की थी उस से मुआ़फ़ी मांगे ताकि ज़्यादती से बरियुज़्ज़िम्मा हो जाए। लेकिन जब मुआ़फ़ी मांगे तो ग़मगीन और शर्मिन्दा हो।

और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : "ग़ीबत करने वाले के लिए इस्तिग़फ़ार काफ़ी है, मुआ़फ़ी मांगने की ज़रूरत नहीं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : كَفَّارَةُ مَنِ اغْتَبْتَ اَنْ تَسْتَغْفِرَ لَهٗ "**तर्जमा :** ग़ीबत का कफ़्फ़ारा येह है कि जिस की तुम ने ग़ीबत की उस के लिए दुआ़ए मग़फ़िरत करो।"

(موسوعة لابن ابی الدنيا، كتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب كفارة الاغتياب، الحديث٢٩٣،ج٧،ص١٨٨-١٨٩)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जब तुम अपने भाई का गोश्त खाओ (यानी उस की ग़ीबत करो), तो उस का कफ़्फ़ारा येह है कि उस की तारीफ़ करो और उस के लिए भलाई की दुआ़ मांगो।" बेहतर येही है कि इज़हारे नदामत के साथ साथ मुआ़फ़ी मांगी जाए।

सोलहवीं आफ़त : चुग़ली खाना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ۝ (پ۲۹، القلم:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बहुत ताने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : "ग़ैर साबितुन्नसब (यानी बिग़ैर निकाह के पैदा होने वाला) राज़ को नहीं छुपाता।"

इस में इस बात की त़रफ़ इशारा है कि जो शख़्स (राज़ की) बात को नहीं छुपाता और चुग़ली खाता है, तो येह उस के ह़रामी होने की दलील है, उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से इस्तिद्लाल किया है :

عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ۝ (پ۲۹، القلم:۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : दुरुश्त ख़ू उस सब पर तुर्रह येह कि उस की अस्ल में ख़त़ा।

زَنِيم से मुराद ह़रामी है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝ (پ۳۰، الهمزة:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ख़राबी है उस के लिए जो लोगों के मुंह पर ऐ़ब करे, पीठ पीछे बदी करे।

هُمَزَةٍ से मुराद बहुत ज़्यादा चुग़ली खाने वाला है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝ (پ۳۰، اللهب:٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : लकड़ियों का गठ्ठा सर पर उठाए।

केहते हैं कि वोह चुग़ली खाने वाली और बातों को इधर उधर पहुंचाने वाली थी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا (پ۲۸، التحريم:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर उन्हों ने उन से दग़ा की तो वोह **अल्लाह** के सामने उन्हें कुछ काम न आए।

ह़दीसे पाक में इरशाद है : لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ "**तर्जमा :** चुग़ल ख़ोर जन्नत में दाख़िल न होगा।"

(صحيح البخاری، کتاب الادب، باب مایکره من النمیمة، الحدیث٦٠٥٦، ص٥١٢)

قَتَّات से मुराद चुग़ल ख़ोर है, इस के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी अह़ादीसे मुबारका वारिद हैं।

चुग़ली की तारीफ़

चुग़ली की तारीफ़ येह है कि ऐसी बात ज़ाहिर करना जिस का ज़ाहिर करना ना पसन्द हो। ख़्वाह वोह ना पसन्द करे जिस से सुनी गई या जिस के बारे में सुनी गई या कोई तीसरा आदमी ना पसन्द करे। ख़्वाह बोल कर या लिख कर इस का इज़्हार हो या इशारा, किनाया से हो।

पस चुग़ली की ह़क़ीक़त पोशीदा बात को ज़ाहिर करना और इस से पर्दा हटाना है।

सतरहवीं आफ़त : मुनाफ़क़त

मुनाफ़क़त येह है कि कोई शख़्स आपस में मुख़ालिफ़ दो अश्ख़ास में से हर एक के पास जाए और हर एक से उस के मुवाफ़िक़ बात करे, येह ऐन निफ़ाक़ है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَنْ كَانَ لَهٗ وَجْهَانِ فِى الدُّنْيَا كَانَ لَهٗ لِسَانَانِ مِنْ نَّارٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

तर्जमा : जो शख़्स दुन्या में दो चेहरों वाला हो बरोज़े क़ियामत उस की आग की दो ज़बानें होंगी।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی ذی الوجهین، الحدیث۴۸۷۳،ص۱۵۸۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बरोज़े क़ियामत तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से सब से बुरा उस शख़्स को पाओगे जिस के दो चेहरे हैं जो इधर कुछ केहता है और उधर कुछ केहता है।" दूसरी रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं : "जो इन के पास एक चेहरे से आता है और दूसरों के पास दूसरा चेहरा ले कर आता है।" (صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب خیار الناس، الحدیث۶۴۵۴،ص۱۱۲۰)

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت و آداب اللِّسان، باب ذم ذی اللِّسانین، الحدیث۲۷۷، ج۷، ص۱۷۸-۱۷۹)

अट्ठारहवीं आफ़त : बे जा तारीफ़ करना

बाज़ मक़ामात पर तारीफ़ करना मन्अ़ है और मज़म्मत करना तो सरीह़ ग़ीबत और इ़ज़्ज़त के दरपै होना है इस का हुक्म गुज़र चुका है, तारीफ़ करने में छे आफ़ात हैं, चार आफ़ात का तअ़ल्लुक़ तारीफ़ करने वाले से और दो का तअ़ल्लुक़ उस के साथ है जिस की तारीफ़ की जाए।

तारीफ़ करने वाले के लिए आफ़ात

(1).....ह़द से बढ़ कर तारीफ़ करता है यहां तक कि झूट में दाख़िल हो जाता है।

(2).....इज़्हारे मह़ब्बत के लिए तारीफ़ करता है और इस में रियाकारी को दाख़िल कर देता है।

(3).....बाज़ अवक़ात बिग़ैर तह़क़ीक़ के बात करता है और इस पर मुत्तलअ़ नहीं होता।

(4).....ममदूह़ (यानी जिस की तारीफ़ की जाए उस) को ख़ुश करता है ह़ालांकि वोह ज़ालिम या फ़ासिक़ होता है और येह जाइज़ नहीं। नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

إِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰی یَغْضَبُ اِذَا مُدِحَ الْفَاسِقُ.

तर्जमा : जब फ़ासिक़ की तारीफ़ की जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़गी फ़रमाता है।

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصَّمت وآداب اللِّسان، باب الغیبة التی یحل.....الخ، الحدیث ۲۳۰، ج۷، ص۱۵٤)

ममदूह के लिए आफ़ात

दो एतिबार से तारीफ़ ममदूह (यानी जिस की तारीफ़ की जाए उस) के लिए नुक़्सान देह है।

(1).....उस में तकब्बुर और ख़ुद पसन्दी आ जाती है।

(2).....जब उस की अच्छी तारीफ़ की जाती है तो ख़ुश होता है और अपने नफ़्स पर मुत़मइन होता है और उस की कोताही को भूल जाता है लिहाज़ा उस की नेकी की कोशिश में कमी वाक़ेअ़ हो जाती है। इसी लिए नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِکَ، وَیْحَکَ لَوْ سَمِعَهَا مَا اَفْلَحَ.

तर्जमा : तुम ने अपने दोस्त की गर्दन काट दी, तेरी ख़राबी हो अगर वोह उसे सुनता तो कामयाबी न पाता।

(المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث ابی بکرة نفیع بن الحارث بن کلدة، الحدیث۲۰۵۳۵،ج۷،ص۳۳٤بتقدمٍ وتآخرٍ)

उन्नीसवीं आफ़त : गुफ़्तगू में छोटी ग़लतियों से ला परवाही करना

ख़ुसूसन ऐसी गुफ़्तगू में ग़लतियां करना जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस की सिफ़ात के मुतअ़ल्लिक़ हो। इस की मिसाल ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत है कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल पैकरे हुस्नो जमाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से कोई येह न कहे : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे और मैं चाहूं, बल्कि यूं कहे : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे फिर मैं चाहूं।"

(ابن ماجة، ابواب الکفارات،باب النهی أن یقال ما شاء اللّٰه وشئت، الحدیث۲۱۷،ص۲٦۰٤)

(येह इस लिए फ़रमाया) क्यूंकि अ़त़फ़े मुत़लक़ में (यानी वाव के ज़रीए़ अ़त़फ़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का) शरीक केहलाने का वेह्म पाया जाता है।

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

لَا تَقُوْلُوْا لِلْمُنَافِقِ "سَیِّدُنَا" فَاِنَّهٗ اِنْ یَّکُنْ سَیِّدَکُمْ فَقَدْ اَسْخَطْتُّمْ رَبَّکُمْ.

तर्जमा : किसी मुनाफ़िक़ को न कहो : ऐ हमारे सरदार ! क्यूंकि अगर वोह तुम्हारा सरदार है तो तुम ने अपने रब को नाराज़ किया।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب لایقول المملوك ربی وربتی، الحدیث٤۹۷۷،ص۱۵۸۸)

www.dawateislami.net

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : "जो शख़्स कहे : "मैं इस्लाम से बरी हूं" अगर वोह सच्चा है तो वोह उसी त़रह़ है जिस त़रह़ उस ने कहा और अगर झूटा है तो इस्लाम की त़रफ़ सह़ीह़ व सालिम नहीं पलटेगा।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الأیمان والنذور، باب ماجاء فی الحلف بالبراء قوبملة غیرالاسلام، الحدیث۳۲۵۸،ص۱٤٦۷،بتقدمٍ وتاخرٍ)

बीसवीं आफ़त : सिफ़ाते बारी तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करना

आ़म लोगों का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कलाम और सिफ़ात के बारे में सुवालात करना कि वोह क़दीम हैं या ह़ादिस ? और उन का ऐसी बातें करना फ़ुज़ूल है बल्कि उन पर लाज़िम है कि उन चीज़ों के बारे में जानने की बजाए अ़मल में मश्ग़ूलिय्यत इख़्तियार करें क्यूंकि अगर आ़म लोग भी इन मसाइल में दख़्ल अन्दाज़ी शुरूअ़ कर दें तो कुफ़्रिय्या कलिमात में जा पड़ेंगे और उन्हें इस का शुऊ़र तक न होगा और उन का इस मुआ़मले में सुवाल करना इसी त़रह़ है जिस त़रह़ घोड़ों की रखवाली करने वाले का बादशाही राज़ों के मुतअ़ल्लिक़ पूछना।

ह़दीसे मुबारक में इरशाद है :

نَهٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْقِيْلِ وَالْقَالِ، وَكَثْرَةِ السُّوَالِ، وَإِضَاعَةِ الْمَالِ.

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बह़सो मुबाह़सा करने, ब कसरत सुवाल करने और माल को ज़ाएअ़ करने से मन्अ़ फ़रमाया।

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب ما یکره من قیل وقال، الحدیث٦٤٧٣، ص٥٤٣)

मुख़्तसर येह कि आ़म लोगों का हुरूफ़ के क़दीम या ह़ादिस होने के मुतअ़ल्लिक़ बह़स करना ऐसे ही है जैसे बादशाह किसी आदमी की त़रफ़ ख़त़ लिखे और उस में चन्द उमूर का ज़िक्र करे और वोह उन उमूर पर अ़मल करने के बजाए इस बात पर वक़्त ज़ाएअ़ कर दे कि उस ख़त़ का काग़ज़ पुराना है या नया। पस ऐसा शख़्स ज़रूर सज़ा का मुस्तह़िक़ होगा। وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ

बाब : 25 गुस्सा, कीना और ह़सद की आफ़ात

जान लो ! गुस्सा एक छुपी हुई आग है जो दिल में होती है। जिस त़रह़ राख के नीचे छुपी हुई चिंगारी होती है। और येह छुपे हुवे तकब्बुर को बाहर निकालती है। शायद गुस्सा उसी आग से हो जिस से शैत़ान को पैदा किया गया है।

गुस्से की मज़्मत का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे कोई मुख़्तसर सा अ़मल बताइए ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا تَغْضَبْ "**तर्जमा :** गुस्सा न करो।" उस ने दोबारा येही सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا تَغْضَبْ "**तर्जमा :** गुस्सा न करो।"

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الحذرمن الغضب، الحدیث٦١١٦،ص٥١٦)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम अपने में से पेहलवान किसे समझते हो ?" हम ने अ़र्ज़ की : "जिसे लोग पछाड़ न सकें।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पेहलवान वोह नहीं, बल्कि पेहलवान तो वोह है जो गुस्से के वक़्त अपने आप पर क़ाबू रखे।"

(صحیح مسلم، کتاب البر، باب فضل من یملك نفسه عند الغضب.....الخ، الحدیث٦٦٤١،ص١١٣٣)

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : مَا غَضِبَ اَحَدٌ اِلَّا اَشْفٰی عَلٰی جَهَنَّمَ . **तर्जमा :** जो शख़्स गुस्सा करता है वोह जहन्नम के कनारे पर जा पहुंचता है।

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی حسن الخلق، فصل فی ترك الغضب، الحدیث٨٣٣١،ج٦،ص٣٢٠،مفهوماً)

गुस्से की ह़क़ीक़त

जान लो ! आदमी की तख़्लीक़ इस अन्दाज़ में की गई कि उस की फ़ना और बक़ा मक़्सूद थी लिहाज़ा उस में गुस्सा रख दिया गया। येह ह़मिय्यत व ग़ैरत की क़ुव्वत है जो इन्सान के बात़िन से फूटती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने गुस्से को आग से पैदा फ़रमाया और इसे इन्सान के बात़िन में रख दिया पस जब वोह इरादा करता है तो गुस्से की आग भड़क उठती है और जब जोश पैदा होता है तो दिल का ख़ून खोल कर रगों में फैल जाता है फिर वोह आग की त़रह़ बदन के बालाई ह़िस्से की त़रफ़ उठता है या उस पानी की त़रह़ जो (बरतन के अन्दर) खोलता है और इस त़रह़ वोह चेहरे की त़रफ़ उठता है पस चेहरा सुर्ख़ हो जाता है।

चुनान्चे, जब अपने से कम मर्तबे वाले पर गुस्सा आए और उसे मालूम हो कि वोह इस पर क़ुदरत रखता है तो जिल्द सुर्ख़ हो जाती है लेकिन अगर अपने से बड़े पर गुस्सा आए और उसे ख़ौफ़

www.dawateislami.net

महसूस हो तो ख़ून ज़ाहिरी जिल्द से इकठ्ठा हो कर वापस चला जाता है, उस का रंग ज़र्द हो जाता है और वोह ग़मगीन हो जाता है लेकिन अगर गुस्सा किसी बराबर वाले पर आए तो ख़ून सुकड़ने और फेलने की वज्ह से चेहरे पर ज़र्दी और सुर्ख़ी वाली कैफ़िय्यात त़ारी हो जाती हैं और वोह मुज़त़रिब हो जाता है।

मुख़्तसर येह कि दिल गुस्से का मक़ाम है और इस का माना येह है कि इन्तिक़ाम लेने के लिए दिल के ख़ून का जोश मारना।

इन्तिक़ाम लेने के एतिबार से लोगों के दरजात

इस एतिबार से लोगों के तीन दरजे हैं।

पेहला दरजा : तफ़रीत़ है, मत़लब येह कि गुस्से का बिल्कुल न पाया जाना और इस का कमज़ोर होना है और इस से मुराद ह़मिय्यत व ग़ैरत का न होना है जो कि मज़मूम है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के इस क़ौल से येही मुराद है कि जिस शख़्स को ग़ैरत दिलाई जाए उसे फिर भी गुस्सा न आए, वोह गधा है।

दूसरा दरजा : इस से मुराद ह़ालते एतिदाल है, येही वोह वस्फ़ है जिस के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की तारीफ़ फ़रमाई। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया :

اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ (پ٢٦،الفتح:٢٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल।

तीसरा दरजा : इफ़रात़ है, वोह येह कि बन्दा ह़द से निकल जाए और उस पर गुस्सा इस क़दर ग़ालिब आ जाए कि उस की अ़क़्ल दीन की सियासत व त़ाअ़त में न रहे। चुनान्चे, आदमी इस त़रह़ हो जाए जैसे मजबूर होता है और येह क़ाबिले मज़म्मत है। उस का ज़ाहिर तब्दील होता दिखाई देता है जो बद सूरत होता है और उस के बात़िन की शक्ल इस से भी ज़्यादा बद सूरत होती है।

मरवी है कि एक मरतबा उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا गुस्से में आ गईं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम्हारे पास शैत़ान आ गया ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "क्या आप के साथ शैत़ान नहीं ?" फ़रमाया : "मेरे साथ भी है, लेकिन मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के मुक़ाबिल मेरी मदद फ़रमाई और वोह मुसलमान हो गया। अब वोह मुझे भलाई के इलावा कोई बात नहीं केहता।"

(المعجم الاوسط، الحديث١٩٧، ج١، ص٧١)

(صحيح مسلم، كتاب صفات المنافقين، باب تحريش الشيطان .....الخ، الحديث٧١٠٨، ص١١٦٨)

अमीरुल मोमिनीन, मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इरशाद फ़रमाते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या के लिए गुस्सा नहीं फ़रमाते थे, जब ह़क़

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को गुस्सा दिलाता तो किसी को मालूम न होता (कि गुस्सा आया भी है या नहीं) और न कोई उस गुस्से की ताब ला सकता यहां तक कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़क़ में कामयाब हो जाते।" (الشمائل المحمدية ﷺ للترمذی، باب کیف کان کلام رسول اللہ ﷺ، الحدیث ۲۱۵، ص ۱۳۵)

जान लीजिए ! अगर्चे गुस्से का मुकम्मल त़ौर पर इज़ाला मुमकिन नहीं लेकिन इसे कम करने की कोशिश करना तो मुमकिन है, ख़ुसूसन जब कि येह ज़रूरियाते ज़िन्दगी में से भी नहीं और इस त़रह़ कि वोह अपने नफ़्स को ज़िल्लत पहुंचाए और येह जाने कि इस ज़िल्लत और कमीनगी के बा वुजूद उसे बरतरी का इज़हार नहीं करना चाहिए। अब हम गुस्से का इलाज बयान करेंगे।

गुस्से का इलाज

गुस्से के इलाज की चन्द सूरतें

इन में से एक येह है कि वोह गुस्सा पी जाने के सवाब से आगाह हो जैसा कि गुज़र चुका है फिर अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डराए और येह यक़ीन रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ पर इस से ज़्यादा क़ुदरत रखता है और अपने आप को इन्तिक़ाम के अन्जाम से डराए क्यूंकि दुश्मन भी इसी त़रह़ उसे तक्लीफ़ देने पर कमरबस्ता है। इस त़रह़ येह त़वील दुश्मनी बन जाएगी और गुस्से के वक़्त दूसरों की शक्ल बिगड़ने में ग़ौरो फ़िक्र करे और अपने आप को इस पर क़ियास करे और सोचे कि गुस्से में आने वाला ह़म्ला करने वाले दरिन्दे की त़रह़ होता है और बुर्दबार शख़्स अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن (के अख़्लाक़) की नज़ीर होता है।

जब इन्सान ग़ौर करेगा तो उसे मालूम होगा कि उस का गुस्सा इस वज्ह से है कि उस का काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत के मुत़ाबिक़ हुवा है, उस के इरादे के मुत़ाबिक़ नहीं हुवा और इसी वज्ह से अह़ादीसे मुबारका में वारिद है कि गुस्से का आना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी का सबब है। जब तू ने इन उमूर को जान लिया तो तुझ पर लाज़िम है कि गुस्से के वक़्त اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْم पढ़। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी त़रह़ हुक्म फ़रमाया कि गुस्से के वक़्त اَعُوْذُ بِاللهِ पढ़ो।"

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الحذر من الغضب، الحدیث ۶۱۱۵، ص ۵۱۶)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को जब गुस्सा आता तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन का नाक पकड़ कर इरशाद फ़रमाते : "ऐ अ़वेश (इस्मे आ़इशा की तसग़ीर) ! यूं कहो : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब ! मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे दिल के गुस्से को ख़त्म फ़रमा और मुझे गुमराह करने वाले ज़ाहिरिओ बात़िनी फ़ितनों से मह़फ़ूज़ फ़रमा।" (عمل الیوم واللیلۃ لابن السنی، باب ما یقول اذا غضب، الحدیث ۴۵۵، ص ۱۴۲)

(صحیح مسلم، کتاب الجنۃ، باب عرض مقعد المیت من الجنۃ والنار علیہ.....الخ، الحدیث ۷۲۱۳، ص ۱۱۷۵)

इन्सान को चाहिए कि ग़ुस्से के वक़्त येह (मुन्दरिजए बाला) अल्फ़ाज़ कहे, खड़ा हो तो बैठ जाए और बैठा हो तो लेट जाए। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक ग़ुस्सा एक चिंगारी है जो दिल में भड़कती है, क्या तुम इस की वज्ह से रगों के फूलने और आंखों की सुर्ख़ी को नहीं देखते पस जब तुम में से कोई ऐसी बात (यानी ग़ुस्सा) पाए तो अगर खड़ा हो तो बैठ जाए और बैठा हो तो लेट जाए अगर इस त़रह़ भी ग़ुस्सा ख़त्म न हो तो ठन्डे पानी से वुज़ू या ग़ुस्ल करे क्यूंकि पानी ही आग को बुझाता है।"

(جامع الترمذی، ابواب الفتن، باب ماأخبرالنبی ﷺ أصحابه بماهو کائن الی یوم القیامة، الحدیث ۲۱۹۱، ص۱۸۷۲۔سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب مایقال عندالغضب، الحدیث ۴۷۸۲/۴۷۸۴، ص۱۵۷۵)

फ़ज़ीलते ह़िल्म का बयान[1]

जान लीजिए ! ह़िल्म (यानी त़बई बुर्दबारी) ग़ुस्सा पी जाने से अफ़्ज़ल है क्यूंकि ग़ुस्सा पीने से मुराद तकल्लुफ़न बरदाश्त करना और तकल्लुफ़न बुर्दबार बनना है जब कि त़बई बुर्दबारी अ़क़्ल के कामिल होने की दलील है और क़ुव्वते ग़ज़ब का टूटना अ़क़्ल के मा तह़्त है और इस की इब्तिदा तकल्लुफ़न बुर्दबार बनने से होती है फिर येह आ़दत बन जाती है। जैसा कि ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "इ़ल्म सीखने से ह़ासिल होता है और बुर्दबारी तकल्लुफ़न बरदाश्त करने से पैदा होती है। जो शख़्स भलाई ह़ासिल करने की कोशिश करता है उसे भलाई दी जाती है और जो शर से बचना चाहता है उसे बचा लिया जाता है।" (المعجم الاوسط، الحدیث ۲۶۶۳، ج۲، ص۱۰۳)

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "इ़ल्म ह़ासिल करो और इ़ल्म के साथ सुकून और बुर्दबारी भी त़लब करो। इन के लिए नर्मी इख़्तियार करो जिन से सीखते हो और जिन को सिखाते हो और मुतकब्बिर उ़लमा में से न होना वरना तुम्हारी जहालत तुम्हारी बुर्दबारी पर ग़ालिब आ जाएगी।" (الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم ۱۱۶۵، عباد بن کثیر، ج۵، ص۵۴۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल, रसूले मक़्बूल, बीबी आमिना के महकते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ करते हुवे अ़र्ज़ की : **اَللّٰهُمَّ اَغْنِنِیْ بِالْعِلْمِ وَزَيِّنِّیْ بِالْحِلْمِ وَاَكْرِمْنِیْ بِالتَّقْوٰی وَجَمِّلْنِیْ بِالْعَافِيَةِ** "**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे इ़ल्म के साथ ग़ना, बुर्दबारी के साथ ज़ीनत, तक़्वा के साथ इ़ज़्ज़त और आ़फ़िय्यत के साथ ख़ूब सूरती अ़त़ा फ़रमा।"

(کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب الثامن فی الدعاء، الفصل السادس فی جوامع الادعیة، الحدیث ۳۶۶۰، ج۲، ص۸۱)

---

1 ....ग़ुस्सा व ग़ज़ब के वक़्त इत़्मीनान से रेहने और ग़ुस्से की शिद्दत पर क़ाबू पाने का नाम "ह़िल्म" है। अगर कोई ऐसा सबब पाया जाए जिस की वज्ह से ग़ुस्सा करना लाज़िम हो तो ऐसा ग़ुस्सा ह़िल्म के मनाफ़ी नहीं और अगर कोई इस सबब पर भी क़ाबू पा ले तो येह भी ह़िल्म ही में शामिल है।" (الحدیقة الندیة، الخلق العشرون من الاخلاق الستین المذمومة.....الخ، ج۱، ص۶۳۸)

www.dawateislami.net

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां बुलन्दी तलाश करो।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह क्या है ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो, जो तुम्हें महरूम करे उसे अ़ता करो और जो तुम से जहालत का सुलूक करे उस के साथ बुर्दबारी से पेश आओ।" (مکارم الأخلاق لابن ابی الدنیا، الحدیث۲۳،ص۳۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا (پ۱۹، الفرقان:۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो केहते हैं बस सलाम।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "इस से मुराद बुर्दबार लोग हैं कि जब उन से जहालत का सुलूक किया जाए तो वोह जहालत से पेश नहीं आते।"

जब कोई शख़्स तेरी ग़ीबत करे, तुझे गाली दे या आ़र दिलाए तो तुझे बुर्दबारी का रवय्या अपनाना चाहिए क्यूंकि इसी में दारैन की नजात है, दुन्या में एह़तिराम के इज़ाफ़े का सबब है और आख़िरत के सवाब में बहुत ज़्यादा इज़ाफ़ा होता है।

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنْ اِمْرُؤٌ عَيَّرَكَ بِمَا فِيْكَ فَلَا تُعَيِّرْهُ بِمَا فِيْهِ.

तर्जमा : अगर कोई तुझे तेरे किसी ऐ़ब के सबब आ़र दिलाए तो तू उसे उस के ऐ़ब के सबब आ़र न दिला।

(سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب ماجاء فی اسبال الأزار، الحدیث۴۰۸۴،ص۱۵۲۱)

अ़फ़्वो दरगुज़र की फ़ज़ीलत का बयान

अ़फ़्व का माना येह है कि किसी के ज़िम्मे इन्सान का ह़क़ हो और उसे छोड़ दे जैसे क़िसास, माल या तावान छोड़ देना।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने नसीह़त निशान है :

خُذِ الْعَفْوَ (پ۹، الاعراف:۱۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेह़बूब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ط (پ۲، البقرة:۲۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मर्दो ! तुम्हारा ज़्यादा देना परहेज़गारी से नज़दीक तर है।

www.dawateislami.net

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! तीन चीज़ें ऐसी हैं कि अगर मैं क़सम खाता तो उन पर खाता : (1) सदक़े से माल कम नहीं होता पस सदक़ा किया करो (2) कोई शख़्स किसी दूसरे की ज़्यादती को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ाजूई के लिए मुआफ़ कर दे तो बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमाएगा और (3) जो शख़्स अपने ऊपर सुवाल का दरवाज़ा खोल लेता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर मोहताजी का दरवाज़ा खोल देता है।"

(جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب ماجاء مثل الدنیا مثل أربعة نفر، الحدیث ۲۳۲۵،ص۱۸۸٦)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "आ़जिज़ी व इन्किसारी बन्दे के मर्तबे में इज़ाफ़ा करती है पस तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें रिफ़्अ़त अ़ता फ़रमाएगा, दरगुज़र करना बन्दे की इ़ज़्ज़त को बढ़ाता है पस मुआफ़ किया करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाएगा और सदक़ा माल को बढ़ाता है पस सदक़ा करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रेह़्म फ़रमाएगा।"

(کنزالعمال، کتا ب الاخلاق/قسم الاقوال، الباب الاول، الفصل الثانی، التواضع، الحدیث ۵۷۱٦،ج۳،ص٤۸۔٤۹)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

مَنْ دَعَا عَلٰى مَنْ ظَلَمَهٗ فَقَدِ انْتَصَرَ .

तर्जमा : जिस ने अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले के ख़िलाफ़ बद दुआ़ की उस ने अपना बदला ले लिया।

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب من دعا علی من ظلمه فقد انتصر، الحدیث ۳۵۵۲،ص۲۰۱۷)

नर्मी की फ़ज़ीलत का बयान

जान लो ! नर्मी क़ाबिले तारीफ़ है और येह अच्छे अख़्लाक़ का नतीजा है, इस की ज़िद सख़्त मिज़ाजी और गर्मी है।

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से इरशाद फ़रमाया : "जिस शख़्स को नर्मी से हिस्सा मिला उसे दुन्याओ आख़िरत की भलाई से हिस्सा मिला और जो शख़्स नर्मी से मह़रूम रहा वोह दुन्याओ आख़िरत की भलाई से मह़रूम रहा।" (مسند ابی یعلی الموصلی، مسند عائشة، الحدیث ٤۵۱۳،ج٤،ص۱۱۸۔۱۱۹)

नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है :

اِذَا اَحَبَّ اللّٰهُ اَهْلَ بَيْتٍ اَدْخَلَ عَلَيْهِمُ الرِّفْقَ.

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी घराने को पसन्द फ़रमाता है तो उन में नर्मी पैदा कर देता है।

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند السیدة عائشة، الحدیث ۲٤٤۸۱،ج۹،ص۳٤۵، إذا أحب: بدله: إذا أراد)

www.dawateislami.net

ह़सद की मज़्मत का बयान[1]

ह़सद कीने के नताइज में से और कीना गुस्से के नताइज में से है। चुनान्चे, शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلْحَسَدُ يَاْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَاْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ.

तर्जमा : ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खा जाती है।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الحسد، الحدیث۴۹۰۳،ص۱۵۸۳)

ह़सद की ह़क़ीक़त येह है कि जब किसी (मुसलमान) भाई को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नेमत मिलती है तो ह़ासिद इन्सान उसे ना पसन्द करता है और उस भाई से नेमत का ज़वाल चाहता है। अगर वोह अपने भाई को मिलने वाली नेमत को ना पसन्द नहीं करता और न उस का ज़वाल चाहता है बल्कि वोह चाहता है कि उसे भी ऐसी ही नेमत मिल जाए तो इसे **रश्क** केहते हैं।

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

اَلْمُؤْمِنُ يَغْبِطُ وَالْمُنَافِقُ يَحْسُدُ.

तर्जमा : मोमिन रश्क करता और मुनाफ़िक़ ह़सद करता है।

(سِيَرُ أعلامِ النُبَلَاء، الرقم۱۲۸۶ـالفضیل بن عیاض بن مسعود بن بشر، ج۷،ص۶۴۱،بتغیرٍ قلیلٍ)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا (پ۱،البقرۃ:۱۰۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बहुत किताबियों ने चाहा काश ! तुम्हें ईमान के बाद कुफ़्र की त़रफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से।

इस आयते मुबारका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़बर दी कि कुफ़्फ़ार ने ह़सद करते हुवे मुसलमानों से ईमान की नेमत का ज़ाइल होना चाहा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ (پ۵،النسآء:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस की आरज़ू न करो जिस से **अल्लाह** ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी।

1....किसी की दीनी या दुन्यवी नेमत के ज़वाल की तमन्ना करना या येह इरादा करना कि किसी को येह नेमत न मिले "ह़सद" केहलाता है। (الحدیقۃ الندیۃ،الخلق الخامس عشر من الاخلاق السیئۃ المذمومۃ.....الخ،ج۱،ص۶۰۰)

www.dawateislami.net

यहां पर नही से मुराद ख़ास उसी नेमत के अपनी त़रफ़ मुन्तक़िल होने की तमन्ना करने से रोकना है जब कि किसी मुसलमान का येह आरज़ू करना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे भी इसी जैसी नेमत अ़ता फ़रमाए तो येह आरज़ू मज़मूम नहीं और अगर येह चीज़ दीन में हो तो क़ाबिले तारीफ़ है। (इसी को रश्क केहते हैं)

जान लो ! ह़सद के बहुत से अस्बाब हैं और वोह दुश्मनी, फ़ख़्र, बुग़्ज़, तकब्बुर, ख़ुद पसन्दी, पसन्दीदा मक़ासिद के फ़ौत होने का ख़ौफ़, हुकूमत की ख़्वाहिश, नफ़्स की ख़बासत और उस का बुख़्ल है और येह सब के सब मज़मूम हैं।

ह़सद का इ़लाज येह है कि तुम इस बात में ग़ौर करो कि येह दुन्याओ आख़िरत में नुक़्सान देता है। जहां तक दुन्यवी नुक़्सान का तअ़ल्लुक़ है तो वोह येह है कि तुझे इस से अज़िय्यत होती है और तू दिन रात ग़मो अलम का शिकार रेहता है। और दीनी नुक़्सान येह है कि तू (बन्दे पर) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नेमत से नाख़ुश रेहता है और तेरा येह रवय्या इस नेमत वाले के लिए बाइ़से सवाब और तेरे लिए बाइ़से गुनाह है। जब तू येह बात जानता है कि तू अपने दुश्मन का दोस्त नहीं बन सकता (कि उसे फ़ाएदा पहुंचाए) तो तुझ पर ज़रूरी है कि तू तकल्लुफ़न ह़सद को छोड़ दे।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है, नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

ثَلَاثَةٌ فِی الْمُؤْمِنِ، لَهٗ مِنْهُنَّ مَخْرَجٌ، وَمَخْرَجُهٗ مِنَ الْحَسَدِ اَنْ لَايَبْغِیْ.

तर्जमा : मोमिन में तीन ख़ामियां पाई जाती हैं और उस के लिए इन से निकलने का रास्ता भी है और ह़सद से निकलने का रास्ता येह है कि वोह ह़द से न बढ़े।

(فردوس الاخبار للدیلمی، باب الفاء، الحدیث ٤٣٩٢، ج٢، ص١٢٥)

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ تَعَالٰی وَحْدَهٗ

(और सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए हैं जो यक्ता है)

बाब : 26 दुन्या की मज़म्मत का बयान

जान लो ! दुन्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के दोस्तों और उस के दुश्मनों की भी दुश्मन है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दुश्मन इस त़रह़ है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को उस के रास्ते पर चलने नहीं देती येही वज्ह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब से उसे पैदा फ़रमाया उस की त़रफ़ नज़रे रेह़मत नहीं फ़रमाई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्तों की इस त़रह़ दुश्मन है कि वोह उन के सामने मुज़य्यन हो कर आती है और अपनी आराइश व तरो ताज़गी से उन्हें धोका देती है ह़त्ताकि उन्हें इस के छोड़ने में सब्र आज़मा मराह़िल से गुज़रना पड़ता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मनों की इस त़रह़ दुश्मन है कि अपने मक्रो फ़रेब के ज़रीए़ आहिस्ता आहिस्ता उन्हें अपने जाल में फंसा लेती है यहां तक कि वोह इस में क़ैद हो जाते हैं और इस पर एतिमाद करते हैं। इस त़रह़ उन्हें ज़लीलो रुस्वा कर के पेहले से ज़्यादा मोह़ताज कर देती है।

दुन्या की मज़म्मत

जान लो ! अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बिअ़्सत का मक़्सद लोगों को आख़िरत की त़रफ़ दावत देना था और इसी मक़्सद के लिए आस्मानी किताबें नाज़िल की गईं और अक्सर आयात भी इस पर दलालत करती हैं।

मरवी है, एक मरतबा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र एक मुर्दा बकरी के पास से हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम्हें मालूम है कि येह बकरी अपने मालिक के नज़दीक किस क़दर ह़क़ीर है ?" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! जिस क़दर येह बकरी अपने मालिक के नज़दीक ह़क़ीर है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक दुन्या इस से भी ज़्यादा ह़क़ीर व ज़लील है, अगर दुन्या की क़द्रो क़ीमत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो काफ़िर को इस का एक घूंट भी न पिलाता।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب مثل الدنيا، الحديث ٤١١٠، ص٢٧٢٧)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ "दुन्या मोमिन का क़ैदख़ाना और काफ़िर की जन्नत है।"

(صحيح مسلم، كتاب الزهد والرقاق، باب الدنيا سجن للمؤمن وجنة للكافر، الحديث٧٤١٧، ص١١٩١)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

اَلدُّنْيَا مَلْعُوْنَةٌ، مَلْعُوْنٌ مَافِيْهَا اِلَّا مَا كَانَ لِلّٰهِ مِنْهَا.

तर्जमा : दुन्या और जो कुछ इस में है मलऊ़न है मगर इस में से जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए हो।

(مراسيل ابى داؤد، باب فى سب الدنيا، ص٢٠)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स अपनी दुन्या से मह़ब्बत करता है वोह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाता है और जो शख़्स अपनी आख़िरत से मह़ब्बत करता है वोह अपनी दुन्या को नुक़्सान पहुंचाता है पस फ़ना होने वाली पर बाक़ी रेहने वाली को तरजीह़ दो ।" (المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی موسی الاشعری، الحدیث ۱۹۷۱۷، ج۷، ص۱۶۵)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : حُبُّ الدُّنْیَا رَأْسُ کُلِّ خَطِیْئَۃٍ "**तर्जमा :** दुन्या की मह़ब्बत हर गुनाह की अस्ल है ।"

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا، کتاب ذم الدنیا، الجزء الاوّل، الحدیث ۹، ج۵، ص۲۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : हम अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पानी मंगवाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में पानी और शहद पेश कर दिया गया । जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे अपने मुंह के क़रीब किया तो रो पड़े यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बाक़ी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भी रुला दिया, फिर दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان तो ख़ामोश हो गए मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ामोश न हुवे बल्कि मुसलसल रोते रहे ह़त्ताकि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ख़याल करने लगे कि हम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कुछ पूछ नहीं सकेंगे । रावी फ़रमाते हैं कि फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी आंखों से आंसू पोंछे तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "ऐ ख़लीफ़ए रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किस वज्ह से रो पड़े ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था और मैं ने देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी चीज़ को अपने से दूर फ़रमा रहे हैं ह़ालांकि मुझे कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही थी, मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप किस चीज़ को अपने से दूर फ़रमा रहे हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "येह दुन्या है जो मिसाली सूरत में मेरे सामने आई, मैं ने उस से कहा : मुझ से दूर हो जा तो वोह दोबारा आ कर केहने लगी : "अगर्चे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से दूर हो जाएंगे लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाद वाले मुझ से दूर नहीं हो सकेंगे ।"

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है :

یَا عَجَباً کُلَّ الْعَجَبِ لِلْمُصَدِّقِ بِدَارِ الْخُلُوْدِ وَھُوَ یَسْعٰی لِدَارِ الْغُرُوْرِ.

तर्जमा : उस शख़्स पर बहुत तअ़ज्जुब है जो हमेशा के घर की तस्दीक़ करता है ह़ालांकि वोह धोके वाले घर (यानी दुन्या) के लिए कोशिश कर रहा होता है ।

(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب ما ذکر عن نبینا صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم فی الزھد، الحدیث ۶۱، ج۸، ص۱۳۳)

www.dawateislami.net

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "बेशक दुन्या मीठी और सर सब्ज़ है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें इस में बाक़ी रखा है ताकि वोह देखे कि तुम कैसे अ़मल करते हो। जब बनी इसराईल के लिए दुन्या ख़ूब आरास्ताओ पैरास्ता की गई और फैला दी गई तो वोह ज़ेवरात, औ़रतों, ख़ुश्बू और कपड़ों में मस्त हो गए।"

(جامع الترمذی، ابواب الفتن، باب مااخبر النبی صلی اللہ علیہ وسلم.....الخ، الحدیث ۲۱۹۱، ص ۱۸۷۲)(الزھد لابن ابی الدنیا، الحدیث ۲۰، ج ۱، ص ۲۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या को रब न बनाओ वरना वोह तुम्हें अपना ग़ुलाम बना लेगी, अपना माल उस के पास जम्अ़ करो जो इसे ज़ाएअ़ नहीं करता क्यूंकि जिस के पास दुन्या का ख़ज़ाना हो उसे आफ़त का डर होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास माल जम्अ़ करवाने वाले को आफ़त का ख़ौफ़ नहीं होता।"

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने एक ख़ुत़बे में इरशाद फ़रमाया : "मोमिन दो ख़ौफ़ों के दरमियान होता है : एक उस मुद्दत पर जो गुज़र गई और वोह नहीं जानता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के बारे में क्या मुआ़मला फ़रमाएगा, दूसरी वोह मुद्दत जो बाक़ी है और वोह नहीं जानता कि उस के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क्या फ़ैसला फ़रमाएगा। पस इन्सान को अपनी ज़ात से अपनी ज़ात के लिए, अपनी दुन्या से अपनी आख़िरत के लिए, अपनी ज़िन्दगी से मौत के लिए और अपनी जवानी से बुढ़ापे के लिए ज़ादे राह तय्यार करना चाहिए क्यूंकि दुन्या तुम्हारे लिए और तुम्हें आख़िरत के लिए पैदा किया गया है। और उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मौत के बाद मुआ़फ़ी मांगने की कोई जगह नहीं और दुन्या के बाद जन्नत या दोज़ख़ के इ़लावा कोई घर नहीं।"

(شعب الایمان للبیھقی، باب فی الزھد وقصر الامل، الحدیث ۱۰۵۸۱، ج ۷، ص ۳۶۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّ حَقًّا عَلَى اللّٰهِ اَنْ لَا يَرْفَعَ شَيْئًا مِنَ الدُّنْيَا اِلَّا وَضَعَهٗ.

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या में जिस चीज़ को बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है उसे पस्त भी कर देता है।

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحدیث ۶۵۰۱، ص ۵۴۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "कौन है जो समुन्दर की मौज पर घर बनाए तो तुम्हारी दुन्या की येही मिसाल है लिहाज़ा इसे मुस्तक़िल ठिकाना न बनाओ।"

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ ह़वारियो ! दीन को सलामत रखते हुवे थोड़ी दुन्या पर राज़ी रहो जिस त़रह़ दुन्यादार लोग दुन्या को सलामत रखते हुवे थोड़े दीन पर राज़ी हो जाते हैं।"

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम फ़रमाया : एक ह़िस्सा मोमिन के लिए, एक मुनाफ़िक़ के लिए और एक काफ़िर के लिए। मोमिन इसे तोशए आख़िरत बनाता है, मुनाफ़िक़ ज़ाहिरी ज़ीनत इख़्तियार करता है और काफ़िर नफ़्अ़ उठाता है।" और अबुल ह़सन बाहिली ने कहा :

يَا خَاطِبَ الدُّنْيَا إِلٰى نَفْسِهٖ تَنَحَّ عَنْ خِطْبَتِهَا تَسْلَمِ
إِنَّ الَّتِيْ تَخْطُبُ غَدَّارَةٌ قَرِيْبَةُ الْعُرْسِ مِنَ الْمَأْثَمِ

तर्जमा : ऐ दुन्या को निकाह़ का पैग़ाम देने वाले ! इस बात से बाज़ आ जा, सलामत रहेगा क्यूंकि जिस से तू निकाह़ करना चाहता है वोह धोकेबाज़ है, इस से शादी गुनाह के क़रीब करती है।

إِذَا امْتَحَنَ الدُّنْيَا لَبِيْبٌ تَكَشَّفَتْ لَهٗ عَنْ عَدُوٍّ فِيْ ثِيَابِ صَدِيْقٍ

तर्जमा : जब कोई अ़क़्लमन्द दुन्या को ग़ौर से देखता है तो उसे दोस्त के लिबास में दुश्मन नज़र आता है।

يَا رَاقِدَ اللَّيْلِ مَسْرُوْرًا بِأَوَّلِهٖ إِنَّ الْحَوَادِثَ قَدْ يَطْرُقْنَ أَسْحَارًا
أَفْنَى الْقُرُوْنَ الَّتِيْ كَانَتْ مُنَعَّمَةً كَرُّ اللَّيَالِيْ إِقْبَالًا وَّإِدْبَارًا

तर्जमा : ऐ रात को सोने वाले ! तू इस के पेहले ह़िस्से पर ख़ुश होता है बेशक ह़ादिसात कभी सह़री के वक़्त भी पहुंचते हैं वोह बस्तियां जो नेमतों से भरपूर थीं इन्क़िलाबे ज़माना ने उन्हें फ़ना कर दिया।

बाज़ ह़ुकमा का क़ौल है कि दिन तीर हैं, लोग निशाना हैं और ज़माना हर रोज़ तुम्हारी त़रफ़ अपने तीर फैंकता है और अपने दिनों और रातों के ज़रीए तुम्हें हलाक करता है यहां तक कि तुम्हारे तमाम अज्ज़ा न ले ले पस तू ह़वादिसाते ज़माना की मौजूदगी में कैसे सलामत रेह सकता है, अगर तुझ पर वोह नुक़्सान ज़ाहिर कर दिया जाए जो उन दिनों ने तुम्हारे अन्दर किया है तो हर आने वाले दिन से तू घबरा जाए और इन लम्ह़ात का गुज़रना तुझ पर भारी हो जाए लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तदबीर इस सोच पर ग़ालिब है, इन आफ़ात के बा वुजूद इन्सान दुन्यावी लज़्ज़ात से लुत़्फ़ अन्दोज़ होता है और जब कोई ह़कीम इसे ख़मीर बनाता है तो येह अन्दराइन (एक क़िस्म का कड़वा दरख़्त जिस का फल भी कड़वा होता है) से भी ज़्यादा कड़वा होता है और इस के ज़ाहिरी अफ़्आ़ल को देख कर कोई भी इस के उ़यूब को बयान नहीं कर सकता।

एक ह़कीम का क़ौल है कि दुन्या का माल अपने ख़यालात के एतिबार से धोका है फिर उस के चले जाने के बाद इफ़्लास है जो झूटे ख़्वाबो ख़यालात के मुशाबेह है।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اَلدُّنْيَا حُلْمٌ وَأَهْلُهَا عَلَيْهَا مَجَازُوْنَ وَمَعَاقَبُوْنَ وَهَالِكُوْنَ.

तर्जमा : दुन्या ख़्वाब की त़रह़ है लेकिन दुन्या वालों को इसी पर जज़ाओ सज़ा और हलाकत होगी।

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन, मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को दुन्या की मिसाल यूं लिख भेजी कि येह सांप की त़रह़ है, इस का जिस्म नर्मो मुलाइम है लेकिन इस का ज़ह्र हलाक कर देता है लिहाज़ा इस में जो चीज़ तुम्हें अच्छी लगे उस से दूर रहो क्यूंकि वोह तेरे पास बहुत कम वक़्त रहेगी, उस की जुदाई पर यक़ीन रखते हुवे उस के ख़यालात को दूर करो, दुन्या की सब से ज़्यादा ख़ुशी की ह़ालत से ज़्यादा परहेज़ करो क्यूंकि जब दुन्यादार उस से ख़ुश हो कर मुत़मइन हो जाता है तो उस से इसे ना पसन्दीदा बात पहुंचती है, وَالسَّلَام

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है :

اِنَّمَا مَثَلُ صَاحِبِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ الْمَاشِیْ فِی الْمَاءِ، هَلْ يَسْتَطِيْعُ الَّذِیْ يَمْشِیْ فِی الْمَاءِ اَنْ لَا تَبْتَلَّ قَدَمَاهُ.

तर्जमा : दुन्यादार की मिसाल पानी पर चलने वाले शख़्स की है, तो क्या पानी पर चलने वाला अपने पाउं को गीला होने से बचा सकता है ?

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزهد وقصر الامل، الحدیث ۱۰۵۸۳، ج۷، ص ۳۶۱)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَا الدُّنْيَا فِی الْاٰخِرَةِ اِلَّا كَمَثَلِ مَا يَجْعَلُ اَحَدُكُمْ اَصْبَعَهٗ فِی الْيَمِّ فَلْيَنْظُرْ مَا يَرْجِعُ اِلَيْهِ.

तर्जमा : आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या इसी त़रह़ है जैसे तुम में से कोई अपनी उंगली को समुन्दर में डालता है तो उसे देखना चाहिए कि वोह क्या ले कर आती है ।

(صحیح مسلم، کتاب الجنة، باب فناء الدنیا .....الخ، الحدیث ۷۱۹۷، ص ۱۱۷۳)

दुन्या की ह़क़ीक़त व माहिय्यत का बयान

जान लो ! बेशक दुन्याओ आख़िरत को तेरी दो ह़ालतों से ताबीर किया गया है, जो क़रीब है इस का नाम दुन्या है और येह सब कुछ मौत से पेहले है और जो दूर है उसे आख़िरत केहते हैं और येह सब मौत के बाद है और दुन्या में इ़ल्मो अ़मल ही ऐसी चीज़ है जो मौत के बाद तुम्हारा साथ देगी, येह (इ़ल्मो अ़मल) आख़िरत के मुआ़मलात में शुमार किए जाते हैं, अगर्चे सूरी एतिबार से येह इस आ़लम में हैं । जैसा कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

حُبِّبَ اِلَیَّ مِنْ دُنْيَاكُمْ ثَلَاثٌ: اَلطِّيْبُ وَالنِّسَاءُ وَجُعِلَتْ قُرَّةُ عَيْنِیْ فِی الصَّلٰوةِ.

तर्जमा : मुझे तुम्हारी दुन्या में से तीन चीज़ें मेह़बूब हैं : ख़ुश्बू, औ़रतें और मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ बनाई गई ।

(سنن النسائی، کتاب عشرة النساء، باب حب النساء، الحدیث ۳۳۹۱/۳۳۹۲، ص ۲۳۰۷)

पस आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ को दुन्या और इस की लज़्ज़ात में शुमार फ़रमाया क्यूंकि नमाज़ की ह़रकात **"मह़सूसात व मुशाहदात"** में दाख़िल हैं ।

www.dawateislami.net

दूसरी क़िस्म जो इस के मुक़ाबिल है उस से मुराद वोह तमाम चीज़ें हैं जिन से फ़ौरी लज़्ज़त ह़ासिल होती है, मौत के बाद उन से कोई फ़ाएदा ह़ासिल नहीं होता जैसे गुनाह और मुबाह़ चीज़ों से ज़रूरत से ज़ाइद फ़ाएदा उठाना।

तीसरी क़िस्म इन दोनों के दरमियान है इस से मुराद हर वोह चीज़ है जो उख़रवी आमाल पर मददगार हो जैसे खाने, पीने, लिबास और निकाह़ वग़ैरा के मुआ़मलात में से ब क़दरे ज़रूरत ह़ासिल करना और येह पेहली क़िस्म की त़रह़ दुन्या में से नहीं और बाज़ हुकमा ने इन तमाम अक़्साम को जम्अ़ कर दिया और इरशाद फ़रमाया : "तेरी दुन्या वोह है जो तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल कर दे।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमान में दुन्यवी ख़्वाहिशात को पांच उमूर में जम्अ़ फ़रमा दिया :

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ

(پ ۲۷،الحدید:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जान लो कि दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़्यादती चाहना।

पस इन पांच उमूर से सात चीज़ें ह़ासिल होती हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमान में जम्अ़ फ़रमाया :

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج (پ۳،ال عمران:۱٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : लोगों के लिए आरास्ता की गई उन ख़्वाहिशों की मह़ब्बत, औ़रतें और बेटे और तले ऊपर सोने चांदी के ढेर और निशान किए हुवे घोड़े और चौपाए और खेती येह जीती दुन्या की पूंजी है।

जान लो ! बन्दे ने दुन्या में अपने नफ़्स और मक़्सद को भुला दिया। इस की मिसाल उस ह़ाजी की सी है जो रास्ते की मनाज़िल पर ठहरता है, जानवर को चारा खिलाता, उस की ख़बरगीरी करता है, उस की सफ़ाई करता और उसे त़रह़ त़रह़ के कपड़ों से आरास्ता करता है, उस के लिए त़रह़ त़रह़ की घास लाता है और बर्फ़ के ज़रीए़ उस के पानी को ठन्डा करता है यहां तक कि क़ाफ़िला चला जाता है और येह ह़ज और क़ाफ़िले के जाने से ग़ाफ़िल होता है और इस बात से भी ग़ाफ़िल होता है कि इस जंगल में रेहने की वज्ह से वोह दरिन्दों का लुक़्मा बन जाएगा जब कि अ़क़्लमन्द आदमी ऊंटनी के मुआ़मले में सिर्फ़ ब क़दरे ह़ाजत बात पर इक्तिफ़ा करता है। इसी त़रह़ आख़िरत में सोच बिचार करने वाला शख़्स अपने लिए दुन्या में से सिर्फ़ उस चीज़ पर इक्तिफ़ा करता है जिस से वोह आख़िरत के रास्ते पर चलने के लिए कुव्वत ह़ासिल कर सके और जिन लोगों पर शहवत व ग़फ़्लत ग़ालिब होती है वोह खाने और पेहनने के लिए कमाते हैं और कमाने के लिए खाते और पेहनते हैं और एक गिरोह वोह है जिन्हों ने अपनी तख़्लीक़ के मक़्सद को पहचान लिया और इस के लिए उन्हों ने तय्यारी की और दीगर ह़ाजात व ज़रूरियात से बचते रहे और ह़ाजत और ज़रूरत के मुत़ाबिक़ ही उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे।

बाब : 27 बुख़्ल और हुब्बे माल की मज़्मत

हुब्बे माल की मज़्मत

माल की महब्बत की मज़्मत तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इन फ़रामीन से वाज़ेह है :

﴿۱﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ (پ۲۸، المنافقون:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक़्सान में हैं।

﴿۲﴾ اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ (پ۲۸، التغابن:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं।

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है :

حُبُّ الْمَالِ وَ الشَّرَفِ يُنْبِتَانِ النِّفَاقَ كَمَا يُنْبِتُ الْمَاءُ الْبَقْلَ.

तर्जमा : माल और शरफ़ (यानी बड़ाई) की महब्बत दिल में इस तरह मुनाफ़क़त पैदा करती हैं जैसे पानी सब्ज़ी उगाता है।

(السنن الکبرٰی للبیهقی، کتاب الشهادات، باب الرجل یغنی.....الخ، الحدیث۲۱۰۰۸، ج۱۰، ص۳۷۷-۳۷۸، بتغیرٍ قلیلٍ)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "दो ख़ूं ख़्वार भेड़िये बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिए जाएं तो वोह इस क़दर नुक़्सान नहीं करते जितना नुक़्सान मुसलमान आदमी के दीन में माल और मन्सब की महब्बत से होता है।"

(جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب ماذئبان جائعان .....الخ، الحدیث۲۳۷۶، ص۱۸۹۰، ضارّیان بدله جائعان)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीहत निशान है :

هَلَكَ الْمُكْثِرُوْنَ اِلَّا مَنْ قَالَ بِهٖ فِيْ عِبَادِ اللّٰهِ هٰكَذَا وَهٰكَذَا وَ قَلِيْلٌ مَّا هُمْ.

तर्जमा : ज़्यादा माल वाले हलाक हो गए सिवाए इस के जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में कसरत से अपना माल ख़र्च करे और वोह थोड़े हैं।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هریرة، الحدیث۸۰۹۱، ج۳، ص۱۸۰، بدون:عباد الله)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "मेरे बाद ऐसे लोग आएंगे जो दुन्या के लज़ीज़ और रंग ब रंगे खाने खाएंगे, ख़ूब सूरत औरतों से निकाह करेंगे, नर्मो मुलाइम और रंग ब रंगे लिबास में मल्बूस होंगे और उ़म्दा और तेज़ रफ़्तार घोड़ों पर सुवार होंगे, उन के पेट थोड़ी चीज़ से सेर नहीं होंगे और उन के नफ़्स ज़्यादा पर भी क़नाअ़त नहीं करेंगे, वोह दुन्या की तरफ़ इस तरह जाएंगे कि सुब्हो शाम इसी को मद्दे नज़र रखेंगे

और ह़क़ीक़ी माबूद को छोड़ कर इसे ही अपना माबूद और रब समझेंगे, उन का मुआ़मला इसी त़रह़ रहेगा और वोह दुन्या की ख़्वाहिशात की पैरवी करेंगे। जो आदमी ऐसे ज़माने को पाए ख़्वाह वोह तुम्हारी औलाद से हो या तुम्हारी औलाद की औलाद से, उसे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से क़सम है कि वोह ऐसे लोगों को न सलाम करे, न उन के मरीज़ों की इ़यादत करे, न उन के जनाज़ों में जाए और न ही उन के बड़ों की इ़ज़्ज़त करे और जिस ने ऐसा किया उस ने इस्लाम को गिराने में मदद की।" (المعجم الكبير، الحديث ٧٥١٢، ج٨، ص١٠٧، مختصراً)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "इन्सान केहता है : मेरा माल, मेरा माल और तुम्हारे लिए तो तुम्हारा माल वोही है जो तुम ने सदक़ा कर के बाक़ी रखा या खा कर फ़ना कर दिया या पेहन कर पुराना कर दिया।"

(صحيح مسلم، كتاب الزهد والرقائق، باب الدنياسجن للمؤمن وجنة للكافر، الحديث ٧٤٢٠، ص١١٩١)

एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे क्या हो गया है कि मुझे मौत पसन्द नहीं है ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम्हारे पास माल है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपना माल आगे भेज दे क्यूंकि मोमिन का दिल अपने माल के साथ होता है अगर उसे आगे भेज दे तो उस से मिलना चाहता है और अगर पीछे छोड़ दे तो उस के साथ पीछे रेहना चाहता है।" (الزهد لابن المبارك، باب فى طلب الحلال، الحديث ٦٣٤، ص٢٢٤)

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : "इन्सान के दोस्त तीन क़िस्म के हैं, एक मौत तक उस का साथ देता है, दूसरा क़ब्र तक और तीसरा मह़शर तक साथ देता है। इन्सान की मौत तक साथ देने वाला उस का माल है, क़ब्र तक साथ देने वाले उस के घरवाले हैं और मह़शर तक साथ देने वाला उस का अ़मल है।"

(صحيح البخارى، كتاب الرقاق، باب سكرات الموت، الحديث ٦٥١٤، ص٥٤٦، بتغيرٍ)

माल की तारीफ़ व मज़म्मत का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बाज़ मक़ामात पर माल को लफ़्ज़े ख़ैर के साथ ज़िक्र फ़रमाया। चुनान्चे, इरशादे रब्बानी है :

اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ِالْوَصِيَّةُ (پ٢، البقرة: ١٨٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर कुछ माल छोड़े तो वसिय्यत कर जाए।

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ज़्ज़त निशान है : نِعْمَ الْمَالُ الصَّالِحُ لِلرَّجُلِ الصَّالِحِ "**तर्जमा :** क्या ही अच्छा माल नेक बन्दे के लिए है।"

(شعب الايمان للبيهقى، باب التوكل والتسليم، الحديث ١٢٤٨، ج٢، ص٩١)

www.dawateislami.net

माल के भी वोही फ़ज़ाइल हैं जो सदक़ा और ह़ज के मुतअ़ल्लिक़ बयान किए गए हैं।

जान लो ! अ़क़्लमन्द और साहिबे बसीरत लोगों का मक़्सद उख़रवी सआ़दत पाना है और माल उस के लिए वसीला है, कभी माल के ज़रीए़ तक़्वा और इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल की जाती है और कभी उसे आख़िरत की राह में ख़र्च किया जाता है और जो शख़्स ऐशो इ़शरत के लिए माल ह़ासिल करता है या इस के ज़रीए़ गुनाहों और शहवत रानी में मुन्हमिक होता है तो येह उस के ह़क़ में मज़मूम है।

जान लो ! माल की मिसाल येह है कि येह सांप की त़रह़ है जिस में ज़ह्र भी है और तिरयाक़ (यानी इ़लाज) भी। इस के फ़ाएदे तिरयाक़ हैं और इस की आफ़ात इस का ज़ह्र है। पस जिस शख़्स को इस का इ़ल्म हो और वोह इस के ज़ह्र से बचने और इस के तिरयाक़ से नफ़्अ़ उठाने पर क़ादिर हो तो उस के लिए येह क़ाबिले तारीफ़ है।

क़नाअ़त और लोगों के माल से बे नियाज़ होने की तारीफ़ और हिर्स की मज़म्मत

जान लीजिए ! फ़क़्र क़ाबिले तारीफ़ है लेकिन फ़क़ीर को चाहिए कि जो कुछ लोगों के पास है उस में त़म्अ़ न करे और येह ख़ूबी तब पैदा हो सकती है जब वोह खाने, पीने और लिबास के मुआ़मले में ब क़दरे ज़रूरत पर क़नाअ़त करे, और अदना और कम मिक़्दार पर इक्तिफ़ा करे और अपनी उम्मीद को एक दिन या एक महीने तक बढ़ा दे ताकि उस के अन्दर फ़ाक़ा पर सब्र करने की क़ुव्वत पैदा हो जाए वरना येह चीज़ उसे मालदारों से त़म्अ़ रखने, मांगने और ज़िल्लत इख़्तियार करने की त़रफ़ ले जाएगी।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक रूहुल क़ुद्स (यानी ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام) ने मेरे दिल में येह बात डाली कि कोई जान अपना पूरा रिज़्क़ ह़ासिल किए बिग़ैर नहीं मरती पस तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और अच्छे त़रीक़े से मांगो।" (التمهيد لابن عبد البر، باب الف، اسحاق بن عبد الله بن ابی طلحة، تحت الحديث ١٥، ج١، ص٢٣٩)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं : एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

يَا أَبَا هُرَيْرَةَ! إِذَا اشْتَدَّ بِكَ الْجُوْعُ فَعَلَيْكَ بِرَغِيْفٍ وَّكُوْزٍ مِّنْ مَاءٍ وَعَلَى الدُّنْيَا الدِّمَارُ.

तर्जमा : ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ! जब तुम्हें सख़्त भूक लगे तो तुम्हारे लिए एक रोटी और पानी का एक प्याला काफ़ी है और दुन्या पर राख डालो (यानी उसे छोड़ दो)।

(شعب الايمان للبيهقی، باب فی الزهد وقصر الأمل، الحديث ١٠٣٦٦، ج٧، ص٢٩٥)

www.dawateislami.net

क़नाअ़त पसन्दी का हुसूल

जान लीजिए ! येह तीन चीज़ों का मुरक्कब है : (1) सब्र (2) इ़ल्म और (3) अ़मल।

(1)...पेहली चीज़ अ़मल है यानी मईशत में एतिदाल और ख़र्च में किफ़ायत इख़्तियार करना। जो शख़्स क़नाअ़त में बुज़ुर्गी चाहता है उसे चाहिए कि कम ख़र्च करे। ह़दीसे पाक में इरशाद है : اَلتَّدْبِيْرُ نِصْفُ الْمَعِيْشَةِ **तर्जमा :** तदबीर से काम लेना निस्फ़ मईशत है।"

(فردوس الاخبار للديلمی، باب التاء، الحديث ٢٢٤٠، ج١، ص٣٠٧)

(2)...दूसरी चीज़ ख़्वाहिशात कम रखना है ताकि वोह किसी दूसरे ह़ाल में भी ह़ाजत की वज्ह से परेशान न हो।

(3)...तीसरी येह कि वोह इस बात को जान ले कि क़नाअ़त में इ़ज़्ज़त है और सुवाल करने से बचत है जब कि त़म्अ़ में ज़िल्लत ही ज़िल्लत है, पस इस त़रह़ फ़िक्रे मदीना करते हुवे इस (ह़िर्स) से जान छुड़ा ले।

सख़ावत की फ़ज़ीलत

जान लो ! जब माल न हो तो बन्दे को क़नाअ़त इख़्तियार करनी चाहिए। अगर माल मौजूद हो तो ईसार और सख़ावत से काम ले, बुख़्ल न करे। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : "सख़ावत जन्नत के दरख़्तों में से एक दरख़्त है जिस की टहनियां ज़मीन की त़रफ़ झुकी हुई हैं, जो शख़्स इस से एक टहनी लेता है तो वोह उसे जन्नत की त़रफ़ ले जाती है और बुख़्ल जहन्नम का एक दरख़्त है, जो बख़ील होता है वोह इस की टहनियों से एक टहनी ले लेता है और वोह टहनी उसे नहीं छोड़ती ह़त्ताकि उसे जहन्नम में दाख़िल कर देती है।" (الكامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم٦٦ـ ابراهيم بن اسماعيل بن ابی حبيبة، ج١، ص٣٨٣)

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام फ़रमाते हैं कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "येह वोह दीन है जिसे मैं ने अपने लिए पसन्द किया और इस की इस्लाह़ सख़ावत और हुस्ने अख़्लाक़ पर मुन्ह़सिर है, पस जिस क़दर हो सके इन दोनों चीज़ों के ज़रीए़ इस की इ़ज़्ज़त करो।"

(الكامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم١٠٠٣، عبدالله بن ابراهيم، ج٥، ص٣١٤)

एक दूसरी रिवायत में इरशाद फ़रमाया : فَاَكْرِمُوْهُ بِهِمَا مَا صَحِبْتُمُوْهُ "**तर्जमा :** जब तक इस दीन पर रहो इन दोनों चीज़ों के ज़रीए़ उस का एह़तिराम करो।" (المرجع السابق)

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ज़्ज़त निशान है :

مَا حَبَلُ اللّٰهُ وَلِيًّا إِلَّا عَلَى السَّخَاءِ وَحُسْنِ الْخُلُقِ.

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर वली को फ़ित़रन हुस्ने अख़्लाक़ और सख़ावत की ख़ूबी अ़ता फ़रमाई।

(الكامل فى ضعفاء الرجال لابن عدى، الرقم٢٤،احمد بن عبد الرحمٰن بن الحارث، ج١، ص٣٠٨)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया गया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सा ईमान अफ़्ज़ल है ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلصَّبْرُ وَالسَّمَاحَةُ **तर्जमा :** सब्र और सख़ावत।"

(مسند ابى يعلى الموصلى، مسند جابر بن عبد الله، الحديث١٨٤٩،ج٢، ص٢٢٠)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रफ़ दो थैलों में एक लाख अस्सी हज़ार दिरहम भेजे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक थाल मंगवाया और उन दराहिम को लोगों में तक़्सीम करना शुरूअ़ कर दिया। जब शाम का वक़्त हुवा तो फ़रमाया : "ऐ लड़की ! हमारी इफ़्त़ारी लाओ।" वोह रोटी और ज़ैतून ले कर आईं। ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आज माल तक़्सीम फ़रमाया, अगर एक दिरहम का गोश्त ख़रीद लेतीं तो हम उस से इफ़्त़ारी कर लेते !" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इरशाद फ़रमाया : अगर तुम याद दिलाती तो मैं ऐसा कर लेती।"

बुख़्ल की मज़म्मत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

﴿۱﴾ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ (پ ٢٨،الحشر:٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं।

﴿۲﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ (پ٤، ال عمران:١٨٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिए अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिए बुरा है अ़न क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का त़ौक़ होगा।

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "बुख़्ल से बचो क्यूंकि इसी ने तुम से पेहले लोगों को हलाक किया, उन को एक दूसरे का ख़ून बहाने और ह़राम चीज़ों को ह़लाल ठहराने पर बरअंगेख़्ता किया।"

(صحيح مسلم، كتاب البر والصلة، باب تحريم الظلم، الحديث٦٥٧٦،ص١١٢٩)

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "बख़ील, मक्कार, ख़ियानत करने वाला और बद अख़्लाक़ जन्नत में नहीं जाएंगे।"

www.dawateislami.net

ईसार की फ़ज़ीलत

जान लीजिए ! सख़ावत में सब से बुलन्द दरजा ईसार का है, इस का माना येह है कि अपनी ज़रूरत के बा वुजूद माल के साथ सख़ावत करना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की तारीफ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ط

(پ ۲۸ ، الحشر: ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी जानों पर उन को तरजीह देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोहताजी हो ।

नबिय्ये रेहमत, शफ़ीए उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

أَيُّمَا رَجُلٍ إِشْتَهٰى شَهْوَةً فَرَدَّ شَهْوَتَهٗ وَآثَرَ عَلٰى نَفْسِهٖ غُفِرَلَهٗ.

तर्जमा : जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो फिर अपनी ख़्वाहिश तर्क कर दे और दूसरे को अपने ऊपर तरजीह दे तो उस की बख़्शिश कर दी जाएगी ।

(الكامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم۱۲۸۹ـعمرو بن خالد، ج٦، ص۲۲۳)

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक मेहमान आया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने घर में कुछ न पाया तो एक अन्सारी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवे और मेहमान को अपने घर ले गए फिर उस के सामने खाना रखा और बीवी को चराग़ बुझाने का हुक्म दिया, ख़ुद खाने की त़रफ़ हाथ बढ़ाते रहे जैसे खा रहे हों हालांकि खा नहीं रहे थे यहां तक कि मेहमान ने खाना खा लिया । जब सुब्ह हुई तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَقَدْ عَجِبَ اللّٰهُ مِنْ صَنِيْعِكُمْ إِلٰى ضَيْفِكُمْ .

तर्जमा : तुम्हारा अपने मेहमान से (हुस्ने) सुलूक से पेश आना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बहुत पसन्द आया ।

(صحیح مسلم، کتاب الأشربة، باب اکرام الضیف .....الخ، الحدیث۵۳۵۹،ص۱۰٤٥)

तो येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ط

(پ ۲۸ ، الحشر: ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी जानों पर उन को तरजीह देते हैं अगर्चे इन्हें शदीद मोहताजी हो ।

बुख़्ल का इलाज

जान लीजिए ! बुख़्ल का सबब माल की मह़ब्बत है और माल की मह़ब्बत के दो अस्बाब हैं । (1)...**पेहला सबब** ख़्वाहिशात की मह़ब्बत है जिन तक माल के बिग़ैर पहुंचना मुमकिन नहीं और उस के साथ लम्बी ज़िन्दगी की उम्मीद भी होती है क्यूंकि अगर उसे यक़ीनी त़ौर पर मालूम हो कि वोह एक

www.dawateislami.net

दिन या एक महीने बाद मर जाएगा तो फिर माल ख़र्च करने में सख़ावत से काम ले और अगर उम्मीद कम हो तो इस त़वील उम्मीद की जगह औलाद आ जाती है तो वोह उन के लिए माल रोक कर रखता है।

इसी लिए नबिय्ये अकरम, नूरे मजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَلْوَلَدُ مَبْخَلَةٌ مَجْبَنَةٌ مَجْهَلَةٌ.

तर्जमा : औलाद बुख़्ल, बुज़दिली और जहालत में मुब्तला करने वाली है।

(سنن ابن ماجة، ابواب الادب، باب بر الوالدوالاحسان .....الخ، الحديث٣٦٦٦،ص٢٦٩٦، بدون: مجهلة)

और जब इस के साथ साथ फ़क्र का ख़ौफ़ हो और रिज़्क़ के आने का पुख़्ता यक़ीन न हो तो ला मुहाला बुख़्ल मज़बूत़ हो जाता है।

(2)...**दूसरा सबब** येह है कि वोह माल से मह़ब्बत करता है ह़ालांकि वोह जानता है कि उसे इस माल की कभी ज़रूरत न पड़ेगी क्यूंकि वोह बूढ़ा होता है और उस की औलाद भी नहीं होती लेकिन वोह मह़ज़ माल से मह़ब्बत करता है, येह दिल का पुराना मरज़ है और हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगते हैं। ऐसे शख़्स की मिसाल उस आदमी की त़रह़ है जो किसी पर आ़शिक़ हो जाता है फिर उस के क़ासिद (यानी पैग़ाम देने वाले) से मह़ब्बत करने लग जाता है और उसे भूल जाता है क्यूंकि दिरहमो दीनार का मक़्सद ह़ाजात तक पहुंचना है जब कि येह शख़्स मक़्सद को भूल गया और वसीला व वासित़े पर आ़शिक़ हो गया और जो शख़्स दिरहम और पथ्थर में सिवाए ह़ाजात के पूरा करने के कोई फ़र्क़ करे, वोह जाहिल है।

जान लीजिए ! बुख़्ल का इ़लाज येह है कि ख़्वाहिशात और उम्मीद कम करे और कसरत से मौत को याद करे नीज़ हम अ़स्र लोगों की मौत में ग़ौरो फ़िक्र करे, क़ब्रों की ज़ियारत और उन में जो कीड़े मकोड़े हैं, उन में ग़ौरो फ़िक्र करे और उन अह़वाल में सोचो बिचार करे। और अगर दिल की तवज्जोह औलाद की त़रफ़ हो तो उस का इ़लाज यूं करे कि उन को पैदा करने वाले ने उन का रिज़्क़ भी पैदा फ़रमाया है और कितने ही बच्चे ऐसे हैं जो मीरास पाते हैं लेकिन वोह उन का रिज़्क़ नहीं होता और कितने ही बच्चे ऐसे हैं कि वोह माले विरासत नहीं पाते लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माल की सूरत में उन्हें रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा देता है। अगर उस की औलाद नेक होगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेक लोगों का वाली है और अगर फ़ासिक़ होगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन जैसों को मुसलमानों में ज़्यादा न करे क्यूंकि वोह अपने माल से गुनाहों पर मदद ह़ासिल करते हैं और बुख़्ल से छुटकारे का नफ़्अ़ बख़्श त़रीक़ा येह भी है कि वोह इस बात पर ग़ौर करे कि लोग बख़ीलों की मज़म्मत करते हैं और उन से नफ़रत करते हैं और सख़ावत करने वालों की तारीफ़ करते और उन में रग़बत रखते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ج

(پ٣،البقرة:٢٦٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : शैत़ान तुम्हें अन्देशा दिलाता है मोह़ताजी का और हुक्म देता है बे ह़याई का।

शायद येह बात उसे फ़ाएदा दे।

www.dawateislami.net

फ़क्र की फ़ज़ीलत और ग़ना की मज़म्मत

उ़लमाए सू की मज़म्मत

मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़लमाए सू (यानी बद अ़क़ीदा और बुरे उ़लमा) ! लोग तुम्हारे केहने पर रोज़े रखते, नमाज़ पढ़ते और सदक़ा देते हैं मगर तुम ख़ुद उस पर अ़मल नहीं करते जिस का तुम्हें हुक्म दिया गया है और इस बात का दर्स देते हो जो ख़ुद नहीं जानते, पस तुम कितना बुरा फ़ैसला करते हो कि ज़बान से तौबा करते हो मगर ख़्वाहिशात की **पैरवी** करते हो, इस बात से तुम्हें कोई फ़ाएदा ह़ासिल न होगा कि अपने ज़ाहिर को तो पाको साफ़ कर लो लेकिन तुम्हारे दिल मैले के मैले रहें, मैं सच केहता हूं : "**छलनी** की त़रह़ न हो जाओ कि उस से साफ़ **आटा निकल** जाता है और छान रेह जाता है ऐसे ही तुम ज़बान से **ह़िक्मत** की बातें करते हो लेकिन तुम्हारे दिलों में **खोट** बाक़ी है।"

ऐ दुन्या के मतवालो ! जो शख़्स दुन्या में ख़्वाहिशात को नहीं छोड़ता और दुन्या से उस की रग़बत ख़त्म नहीं होती वोह आख़िरत को कैसे पा सकता है, मैं तुम से सच केहता हूं : "तुम्हारे दिल तुम्हारे आमाल की वज्ह से रोते हैं तुम ने दुन्या को अपनी ज़बान के नीचे और अ़मल को अपने पाउं के नीचे रखा हुवा है, मैं सच केहता हूं : तुम ने अपनी आख़िरत को ख़राब कर दिया, तुम्हें आख़िरत को बेहतर बनाने से दुन्या को बेहतर बनाना ज़्यादा पसन्द है, अगर तुम जानते हो तो बताओ कि लोगों में और तुम में ज़्यादा नुक़्सान वाला कौन है ? तुम पर अफ़्सोस है ! कब तक अन्धेरे में चलने वालों को रास्ता दिखाओगे और ख़ुद ह़ैरान खड़े रहोगे गोया तुम दुन्या वालों को पुकारते हो कि वोह उसे तुम्हारे लिए छोड़ दें, ठहरो, रुक जाओ, तुम पर अफ़्सोस है ! अगर चराग़ घर की छत पर रख दिया जाए तो अन्धेरे घर को क्या फ़ाएदा होगा, इसी त़रह़ अगर इ़ल्म का नूर सिर्फ़ तुम्हारी ज़बानों पर हो और तुम्हारे दिल ख़ाली हों तो उस इ़ल्म का क्या फ़ाएदा ?"

ऐ दुन्या दारो ! तुम परहेज़गार बन्दों की त़रह़ नहीं हो और न ही आज़ाद मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों की त़रह़ हो, क़रीब है कि दुन्या तुम्हें जड़ से उखाड़ कर मुंह के बल फैंक दे फिर तुम अपने नथनों पर औंधे गिर जाओ फिर तुम्हारे गुनाहों ने तुम्हें पेशानी से पकड़ रखा हो और इ़ल्म तुम्हें पीछे से धक्का दे ह़त्ताकि तुम्हें तुम्हारे मालिक के सामने यूं पेश कर दे कि तुम बर्हना जिस्म और तन्हा हो और वोह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों पर खड़ा करे फिर तुम्हें तुम्हारे बुरे आमाल की सज़ा दे।

इस से साबित हुवा कि **फ़क्र ही औला व अफ़्ज़ल है,** जिस ने ग़ना को अफ़्ज़ल कहा उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और सलफ़े सालिह़ीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن को मामूली जाना, हम इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं। जिन लोगों

www.dawateislami.net

को नफ़्स ने धोके में मुब्तला किया और उन की बदबख़्ती उन पर ग़ालिब है, वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के माल की दलील पेश करते हैं। हम तुम्हारे सामने एक ह़िकायत बयान करते हैं जिस से इन का फ़साद वाज़ेह़ हो जाएगा।

हम केहते हैं कि (जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा तो) बाज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم केहने लगे : हमें ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर माल छोड़ कर फ़ौत होने की वज्ह से (आख़िरत का) डर है तो ह़ज़रते सय्यिदुना काब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "سُبْحٰنَ اللّٰہ तुम्हें ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर क्या ख़ौफ़ है ? उन्हों ने तो पाक माल कमाया, पाक त़रीक़े से ख़र्च किया और पाक अन्दाज़ में छोड़ा।" येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंची तो वोह ग़ुस्से की ह़ालत में ह़ज़रते सय्यिदुना काब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तलाश में बाहर निकल पड़े, उन का गुज़र एक ऊंट के जबड़े की हड्डी पर से हुवा तो उसे उठा लिया, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना काब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तलाश करने लगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना काब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बताया गया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप की तलाश में हैं तो वोह भाग गए ह़त्ताकि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर दाख़िल हो गए, जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर में दाख़िल हुवे तो ह़ज़रते सय्यिदुना काब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठ कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे बैठ गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "ऐ यहूदी औ़रत से पैदा होने वाले ! इधर आ, तेरा ख़याल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो माल छोड़ा है उस में कोई ह़रज नहीं ह़ालांकि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र !" मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ाज़िर हूं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बरोज़े क़ियामत मालदारों का सरमाया बहुत कम होगा मगर जिस ने इस त़रह़ दिया और (येह फ़रमा कर) दाएं बाएं और आगे पीछे की त़रफ़ इशारा किया" और फ़रमाया : "ऐसे लोग कम हैं।" फिर फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान हों, मैं ह़ाज़िर हूं।"

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे येह बात पसन्द नहीं कि मेरे पास उहुद (पहाड़) के बराबर सोना हो जिसे मैं राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करूं और दुन्या से जाते वक़्त मेरे पास उस में से सिर्फ़ दो क़ीरात़ बाक़ी बचें।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! दो ख़ज़ाने बच जाते तो भी ?" फ़रमाया : "बल्कि दो क़ीरात़।" फिर फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! तुम ज़्यादा चाहते हो और मैं कम चाहता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी येही चाहता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب الترغیب فی الصدقۃ، الحدیث ٢٣٠٤، ص ٨٣٤)

(फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा) हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो येह फ़रमाते हैं और ऐ यहूदिया के बत़्न से पैदा होने वाले ! तुम केहते हो कि ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो कुछ छोड़ा है उस में कोई ह़रज नहीं। तू ने भी झूट बोला और जो कोई येह कहे वोह भी झूटा है। किसी ने भी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बात का जवाब न दिया यहां तक कि आप तशरीफ़ ले गए।

मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास यमन से एक क़ाफ़िला आया तो मदीनए त़य्यिबा में शोर मच गया, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पूछा : "येह क्या है ?" बताया गया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ऊंट आए हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इरशाद फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सच फ़रमाया।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक येह बात पहुंची तो उन्हों ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस के बारे में दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने फ़रमाया : मैं ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : "मैं ने जन्नत में देखा कि मुहाजिरीन और (आ़म) मुसलमानों में से फ़क़ीर लोग दौड़े दौड़े दाख़िल हो रहे हैं और मैं ने उन के साथ अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा किसी मालदार शख़्स को दाख़िल होते हुवे नहीं देखा और वोह उन के साथ घुटनों के बल चल कर दाख़िल हो रहे हैं।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی امامة الباهلی، الحدیث ۲۲۲۹۵، ج۸، ص۲۸۹، بتغیرٍ)

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السیدة عائشة، الحدیث ۲۴۸۹۶، ج۹، ص۴۲۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर फ़रमाया : "मैं येह तमाम ऊंट अपने साज़ो सामान के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में सदक़ा करता हूं और इन के साथ जो ग़ुलाम हैं वोह भी आज़ाद हैं शायद कि मैं भी इन के साथ दौड़ता हुवा दाख़िल हो जाऊं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़मरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, वोह फ़रमाते हैं कि मुझे बारगाहे नबवी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में एक मक़ाम ह़ासिल था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ इ़मरान ! हमारे हां तुम्हारी क़द्रो मन्ज़िलत है, अगर तुम चाहो तो ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इ़यादत के लिए मेरे साथ चलो।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं ह़ाज़िर हूं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान हों।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हुवे तो मैं भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ उठ खड़ा हुवा यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दरवाज़े पर जा खड़ा हुवा, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरवाज़ा खट खटाया और फ़रमाया : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ ऐ बेटी ! क्या मैं आ सकता हूं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! तशरीफ़ लाइए।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं भी और जो कोई मेरे साथ है वोह भी ?" उन्हों ने पूछा : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कौन है ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"इ़मरान बिन ह़सीन।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को ह़क़ के साथ नबी बना कर भेजा ! मेरे ऊपर सिर्फ़ एक अ़बा (यानी चोग़ा) है।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हाथ के इशारे से बताया कि उसे अपने ऊपर इस इस त़रह़ लपेट लें। उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं ने अपना जिस्म तो छुपा लिया, सर कैसे ढांपूं ?" नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास एक पुरानी चादर थी, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की त़रफ़ फैंक दी और फ़रमाया : "इस से अपना सर लपेट लो।" फिर उन्हों ने इजाज़त दी तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "ऐ मेरी बेटी ! तुम पर सलाम हो, तुम्हारा क्या ह़ाल है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे दर्द है, और इस तक्लीफ़ में इस वज्ह से भी इज़ाफ़ा हो गया है कि मेरे पास खाने के लिए कुछ नहीं, मुझे भूक ने निढाल कर दिया है (येह सुन कर) रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रो पड़े और इरशाद फ़रमाया :

"**ऐ मेरी लख़्ते जिगर** ! न घबरा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने भी तीन दिन से कुछ नहीं चखा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरी तुम से ज़्यादा इ़ज़्ज़त है, अगर मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मांगू तो वोह मुझे खिलाएगा लेकिन मैं ने दुन्या पर आख़िरत को तरजीह़ दी है।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ातूने जन्नत के कन्धे पर अपने दस्ते अक़्दस से थपकी दी और फ़रमाया : "तुम्हें ख़ुश ख़बरी हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम जन्नती औ़रतों की सरदार हो।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "फ़िरऔ़न की बीवी ह़ज़रते आसिया और ह़ज़रते मरयम बिन्ते इ़मरान (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) का क्या होगा ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ह़ज़रते आसिया अपने ज़माने की औ़रतों की सरदार है, ह़ज़रते मरयम अपने ज़माने की औ़रतों की सरदार है, ह़ज़रते ख़दीजा अपने ज़माने की औ़रतों की सरदार है और तुम अपने ज़माने की औ़रतों की सरदार हो, तुम ऐसे मकान में रहोगी जिस में कोई तक्लीफ़ और शोरो गुल न होगा।" फिर इरशाद फ़रमाया : "अपने चचा के बेटे (यानी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) के साथ क़नाअ़त इख़्तियार करो, मैं ने तुम्हारा निकाह़ ऐसे शख़्स से किया है जो दुन्या में भी सरदार है और आख़िरत में भी।"

(حلية الاولياء، فاطمة بنت رسول الله ﷺ، الحديث ١٤٥٠/١٤٥١، ج٢، ص٥٢، مفهومًا)
(المعجم الكبير، الحديث١٢١٧٩، ج١١، ص٣٢٨، مفهومًا)

इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ

www.dawateislami.net

बाब : 28 हुब्बे जाह और रिया की मज़्मत

हुब्बे जाह

जान लीजिए ! बेशक जाह व मन्सब दिलों को पसन्द है, इसे सिर्फ़ सिद्दीक़ीन ही तर्क करते हैं, इसी लिए कहा गया है कि "सिद्दीक़ीन के ज़ेहनों से निकलने वाली आख़िरी चीज़ सरदारी की मह़ब्बत है।" अब हम चन्द फ़स्लों में इस की ग़रज़ बयान करते हैं।

जान लो ! जाह का मत़लब शोहरत का फैल जाना है और येह मज़मूम है मगर उस शख़्स के लिए नहीं जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपना दीन फैलाने के लिए मश्हूर कर दे। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

حَسْبُ إِمْرَئٍ مِنَ الشَّرِّ، إِلَّا مَنْ عَصَمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى، أَنْ يُشِيْرَ النَّاسُ إِلَيْهِ بِالْأَصَابِعِ فِيْ دِيْنِهٖ وَدُنْيَاهُ.

तर्जमा : किसी इन्सान के लिए बुराई के त़ौर पर इतना ही काफ़ी है कि लोग उस के दीन या दुन्या के मुआ़मले में उस की त़रफ़ उंगलियों से इशारे करें अलबत्ता जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मह़फ़ूज़ फ़रमाए।

(شعب الایمان للبیھقی، باب فی اخلاص العمل للّٰہ.....الخ، الحدیث ٦٩٧٧، ج٥، ص٣٦٦-٣٦٧)

अमीरुल मोमिनीन, मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं : "ख़र्च करो लेकिन शोहरत न चाहो, अपनी शख़्सिय्यत को इस त़रह़ बुलन्द न करो कि तुम्हारा ज़िक्र किया जाए और लोग तुम्हें जानें बल्कि अपने आप को छुपा कर रखो और ख़ामोशी इख़्तियार करो मह़फ़ूज़ रहोगे, इस त़रह़ नेक लोग तुम से ख़ुश होंगे और बदकारों को ग़ुस्सा आएगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने शोहरत को अच्छा समझा उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्दीक़ नहीं की।"

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक गिरोह को अपने साथ चलते देखा तो फ़रमाया : "येह त़म्अ़ की मख्खियां और जहन्नम के बिछोने हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "हम ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन काब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ उन के पीछे पीछे चल रहे थे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें देखा तो अपना कोड़ा बुलन्द कर दिया, उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! देखिये, आप क्या कर रहे हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "येह त़रीक़ा पीछे चलने वाले के लिए ज़िल्लत और आगे चलने वाले के लिए फ़ितना है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर से निकले तो लोग आप के पीछे हो लिए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की त़रफ़

www.dawateislami.net

मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "तुम मेरे पीछे क्यूं चलते हो ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस वज्ह से मैं अपना दरवाज़ा बन्द रखता हूं अगर तुम्हें मालूम हो जाए तो तुम में से कोई आदमी मेरे पीछे न चले ।"

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "अगर मर्दों के पीछे लोगों के जूतों की आवाज़ें आने लगें तो ऐसे मवाक़ेअ़ पर अह़मक़ों के दिल कम ही क़ाबू में रेहते हैं ।"

गुमनामी की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है :

رُبَّ اَشْعَثَ اَغْبَرَ،ذِیْ طِمْرَیْنِ،لَا یُؤْبَهُ،لَهُ لَوْ اَقْسَمَ عَلَی اللّٰهِ لَاَبَرَّهُ،مِنْهُمُ الْبَرَاءُ بْنُ مَالِکٍ.

तर्जमा : बहुत से बिखरे बालों, गर्द आलूद चेहरों और दो पुराने कपड़ों वाले लोग, जिन को ह़क़ीर समझा जाता है अगर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लें तो वोह उसे ज़रूर पूरा फ़रमाता है, उन्ही में से ह़ज़रते बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं ।

(جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب البراء ابن مالك، الحديث ٣٨٥٤،ص٢٠٤٧)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दो बोसीदा कपड़ों में मल्बूस कई लोग ऐसे हैं जिन की त़रफ़ तवज्जोह नहीं दी जाती, अगर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लें तो वोह उसे पूरा फ़रमाता है, अगर वोह यूं केह दे : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से जन्नत का सुवाल करता हूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत अ़त़ा फ़रमाता है लेकिन उसे दुन्या में से कुछ नहीं देता ।"

(فردوس الاخبار للديلمی،باب الراء، الحديث٣٠٦٦،ج١، ص٤١٢)

(البحر الزخار بمسند البزار، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث٢٠٣٥ ج٥،ص٤٠٣-٤٠٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ज़्ज़त निशान है : "बेशक परागन्दा बालों, गर्द आलूद चेहरों और दो बोसीदा कपड़ों वाले लोग जन्नती हैं, जिन्हें लोग ह़क़ीर समझते हैं, जब वोह उमरा के पास जाने की इजाज़त त़लब करते हैं तो उन को इजाज़त नहीं दी जाती, जब औ़रतों को निकाह़ का पैग़ाम देते हैं तो उन से निकाह़ नहीं किया जाता, जब वोह बात करते हैं तो उन (की बात सुनने) के लिए ख़ामोशी इख़्तियार नहीं की जाती, उन की ज़रूरियात उन के सीनों में ह़रकत करती हैं, अगर बरोज़े क़ियामत उन का नूर लोगों में तक़्सीम किया गया तो तमाम लोगों को काफ़ी हो जाएगा ।"

(شعب الايمان للبيهقی، باب فی الزهد وقصر الأمل، الحديث١٠٤٨٦،ج٧،ص٣٣٣)

www.dawateislami.net

मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में दाख़िल हुवे तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर के पास रोते हुवे देखा, पूछा : क्यूं रो रहे हो ? उन्हों ने जवाब दिया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते हुवे सुना : "थोड़ा सा दिखावा भी शिर्क है, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुत्तक़ी पोशीदा रेहने वाले लोगों को पसन्द फ़रमाता है, जब वोह ग़ाइब हों तो लोग उन्हें तलाश नहीं करते और जब कहीं आएं तो उन को कोई पहचानता नहीं, उन के दिल हिदायत के चराग़ हैं, वोह हर गर्द आलूद अन्धेरे मक़ाम से नजात पाते हैं।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الفتن، باب من ترجی له السلامة من الفتن، الحدیث۳۹۸۹،ص۲۷۱٦، ینجون: بدله: یخرجون)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : (ऐ लोगो !) इ़ल्म के चश्मे और हिदायत के चराग़ बनो, घरों को (चटाई की त़रह़) लाज़िम पकड़ो, रात के चराग़ बनो और ताज़ा दिल रहो, तुम्हारे कपड़े पुराने हों तो एह्ले आस्मान तुम्हें पहचानेंगे अगर्चे तुम एह्ले ज़मीन के नज़्दीक कमतर समझे जाओ।"

हुब्बे जाह की मज़्मत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

تِلْکَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ (پ ۲۰، القصص:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह आख़िरत का घर हम उन के लिए करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद।

जान लीजिए ! जाह व मर्तबे की ह़क़ीक़त येह है कि इन्सान लोगों के दिलों का मालिक हो जाए जैसा कि मालदार होने का मत़लब दिरहमो दीनार का मालिक होना है और जिस त़रह़ साह़िबे माल अपने माल के ज़रीए़ अपने मक़ासिद तक पहुंच जाता है, इसी त़रह़ दिलों का मालिक उस के ज़रीए़ अपने मक़ासिद तक पहुंच जाता है, जाहो मर्तबा भी एक मक़्सद है और जिस त़रह़ माल मुख़्तलिफ़ क़िस्म के पेशों से कमाया जाता है इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात के ज़रीए़ दिलों को अपनी त़रफ़ माइल किया जाता है और दिल पुख़्ता एतिक़ाद से ही मुसख़्ख़र होते हैं पस जिस शख़्स के दिल में किसी शख़्स के कामिल औसाफ़ का पुख़्ता यक़ीन हो जाए तो उस का दिल उस की त़रफ़ माइल हो जाएगा बल्कि लोगों के दिलों का मालिक होने का मत़लब येह है कि उसे अपना बन्दा व ग़ुलाम बनाना है और जब माल मेह़बूब है तो जाहो मर्तबा उसे बदरजए औला पसन्द होगा।

जान लीजिए ! जाहो मर्तबा बुलन्दी और मिल्किय्यत को त़लब करने वाली रूह़ की ग़िज़ा है जब कि रूह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के आ़लमे अम्र से है जो रबूबिय्यत, बुलन्दी और लोगों को अपना बन्दा बनाने का मुत़ालबा करती है, कमाल को पसन्द करती और उसे त़लब करती है, इसी बिना पर तुम देखते हो कि जो भी जाह का त़ालिब होता है वोह इस इरादे से जुदा नहीं होता (यानी वोह बुलन्दी वग़ैरा का इरादा रखता है)।

जान लीजिए ! तारीफ़ से नफ़्स को ख़ुशी और फ़रह़त होती है क्यूंकि तारीफ़ में इस के कामिल होने का एह़सास होता है और नफ़्स कामिल से मह़ब्बत करता है और इस के बर अ़क्स मज़म्मत को ना पसन्द करता है क्यूंकि इस में नाक़िस होने का शुऊ़र पाया जाता है और नफ़्स नाक़िस चीज़ को ना पसन्द करता है।

हुब्बे जाह का इलाज

जान लीजिए ! जो जाहो मर्तबे की मह़ब्बत में मुब्तला हो जाए तो उस का सारा मक़्सद हुब्बे जाह और उस में मज़ीद इज़ाफ़े की त़लब ही रेह जाती है और वोह मख़्लूक़ के दिलों का शिकारी बन जाता है और येह चीज़ उसे रिया और निफ़ाक़ की त़रफ़ ले जाती है, इसी लिए नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे (यानी मालो जाह की मह़ब्बत को) दो ख़ूं ख़्वार भेड़ियों से तश्बीह दी जो बकरियों के रेवड़ में होते हैं।"

(جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب ماذئبان جائعان .....الخ، الحدیث۲۳۷٦،ص۱۸۹۰، ضاریان بدله جائعان)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : إِنَّهُ يُنْبِتُ النِّفَاقَ كَمَا يُنْبِتُ الْمَاءُ الْبَقْلَ **तर्जमा :** येह (यानी मालो जाह की मह़ब्बत दिल में) निफ़ाक़ को ऐसे उगाती है जैसे पानी सब्ज़ी को उगाता है।"

(السنن الکبری للبیهقی، کتاب الشهادات، باب الرجل یغنی.....الخ، الحدیث۲۱۰۰۸،ج۱۰،ص۳۷۷۔۳۷۸)

हुब्बे जाह का इ़लाज इ़ल्मो अ़मल दो त़रीक़ों से मुमकिन है।

(1)....हुब्बे जाह का इ़ल्मी इ़लाज

इस का इ़ल्मी इ़लाज येह है कि इन्सान येह बात जान ले कि उस का मक़्सद दिलों पर मालिक होना है और हम ने बयान कर दिया है कि अगर येह बात सह़ीह़ त़ौर पर ह़ासिल हो भी जाए तो मौत तक बाक़ी रेहती है लिहाज़ा येह बाक़ी रेहने वाले आमाले सालेह़ा में से नहीं बल्कि अगर मशरिक़ो मग़रिब तक तमाम रूए ज़मीन के लोग तुझे सजदा भी करें तो पचास साल तक न सजदा करने वाले रहेंगे और न तू बाक़ी रहेगा और तुम्हारा ह़ाल जाहो मर्तबा रखने वाले उन लोगों की त़रह़ हो जाएगा जो मर चुके हैं और येह वेह्मी कमाल है जिस की कोई ह़क़ीक़त नहीं क्यूंकि येह मौत के साथ ख़त्म हो जाता है और येह ऐसे ही है जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को लिखा : **امّا بعد** (यानी ह़म्दो सलात के बाद) ! गोया आप वोह आख़िरी शख़्स हैं जिस पर मौत लिखी गई है और वोह मर गया है।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब में लिखा : **امّا بعد** गोया आप दुन्या में आए ही नहीं और हमेशा आख़िरत में रहे।"

इन लोगों की निगाह अन्जाम की त़रफ़ थी और इन्हें मालूम था कि जो चीज़ आने वाली है, वोह क़रीब है।

www.dawateislami.net

(2).....हुब्बे जाह का अ़मली इलाज

हमारे अस्लाफ़ رحمہم اللہ تعالٰی ने कई त़रीक़ों से इस का इ़लाज किया मसलन उन में से किसी ने ह़लाल मशरूब पिया जो शराब के मुशाबेह है, लोगों ने उसे छोड़ दिया और सोचा कि येह शराब पीने वाला है, उन में से कोई शख़्स ज़ाहिद मारूफ़ था, पस वोह ह़म्माम में गया और किसी दूसरे का लिबास पेहन कर निकला और रास्ते में ठहर गया यहां तक कि लोगों ने उसे पहचान लिया और उसे पकड़ कर लिबास उतरवा कर ख़ूब मारा और कहा : "येह शख़्स चोर है और यूं लोगों ने उन्हें छोड़ दिया।"

जाहो मर्तबे को तर्क करने का बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि लोगों से अ़लाह़दगी इख़्तियार कर के ऐसी जगह चला जाए जहां उसे कोई न जानता हो क्यूंकि जो शख़्स अपने शहर में गोशा नशीनी इख़्तियार करता है तो येह भी रिया की एक क़िस्म है कि लोगों को उस की गोशा नशीनी का इ़ल्म होगा और इस से वोह लोगों में ज़्यादा मश्हूरो मारूफ़ हो जाएगा।

मद्ह़ को पसन्द और मज़म्मत को ना पसन्द करने से ख़लासी कैसे मुमकिन है ?

हम ने बयान किया है कि जाहो मर्तबे की चाहत का सबब कमाले वेह्मी है तब तू ने जान लिया कि इस की कोई ह़क़ीक़त नहीं सिवाए फ़ौरी (यानी दुन्यावी) फ़ाएदे के कुछ फ़ाएदा नहीं जब कि आख़िरत में तो इस का कोई फ़ाएदा है ही नहीं। अगर मद्ह़ किसी दीनी अम्र के सबब हो तो येह भी इसी त़रह़ ह़िर्स ही है क्यूंकि दीनी मुआ़मले का कमाल तो अच्छे ख़ातिमे के साथ और इस ख़त़रे से छुटकारे के बाद ही है।

रियाकारी[1]

जान लीजिए ! रियाकारी ह़राम है और रियाकार पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब होता है, इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के येह फ़रामीन दलालत करते हैं।

चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۱﴾ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝ (پ۳۰، الماعون: ٤تا٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं वोह जो दिखावा करते हैं।

1....उख़रवी उमूर, आमाले सालेह़ा, इ़ल्मे दीन पढ़ने और पढ़ाने में दुन्यावी फ़वाइद के ह़ुसूल की निय्यत करने को "**रिया**" केहते हैं और इस इरादए दुन्या के लिए इस पर किसी क़िस्म का जब्र भी न किया गया हो। अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ारिस बिन असद मुह़ासिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى इरशाद फ़रमाते हैं : "बन्दे का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में लोगों की निय्यत करना रिया है।" (الحديقة الندية،الخلق التاسع من الاخلاق الستين المذمومة،ج١،ص ٤٦١)

﴿۲﴾ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ۝ (پ۱۶، الکھف: ۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे ।

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया गया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! नजात किस चीज़ में है ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

أَنْ لَا يَعْمَلَ الْعَبْدُ بِطَاعَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى يُرِيْدُ بِهَا النَّاسَ.

तर्जमा : बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत लोगों को दिखाने के लिए न करे ।

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मुझे तुम पर सब से ज़्यादा ख़ौफ़ शिर्के असग़र का है ।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! शिर्के असग़र क्या है ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रियाकारी ।" (फिर फ़रमाया) बरोज़े क़ियामत जब बन्दा अपने आमाल ले कर ह़ाज़िर होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "उन लोगों के पास जाओ जिन के लिए दुन्या में दिखावा करते थे और देखो ! क्या उन के पास कोई बदला पाते हो ।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، حديث محمود بن لبيد، الحديث ۲۳۶۹۲، ج۹، ص۱۶۰)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : جُبُّ الْحُزْن "(यानी ग़म के कूंएं) से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो ।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह क्या है ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

وَادٍ فِيْ جَهَنَّمَ أُعِدَّ لِلْقُرَّاءِ الْمُرَائِيْنَ.

यानी येह जहन्नम की एक वादी है जो रियाकार क़ारियों के लिए बनाई गई है ।

(سنن ابن ماجة، كتاب السنة، باب الانتفاع بالعلم والعمل به، الحديث ۲۵۶، ص۲۴۹۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी सनद के साथ एक शख़्स से रिवायत करते हैं, उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से अ़र्ज़ की : "मुझे कोई ह़दीस सुनाइये जो आप ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनी हो ।" रावी फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रो पड़े यहां तक कि मैं ने गुमान किया कि वोह ख़ामोश न होंगे ।" जब आप ख़ामोश हुवे तो इरशाद फ़रमाया : मैं ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते हुवे सुना : "ऐ मुआ़ज़ ! मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! मैं ह़ाज़िर हूं ।" तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम से एक ह़दीस बयान करता हूं, अगर तुम ने उसे याद रखा तो वोह तुम्हें नफ़्अ़ देगी और अगर ज़ाएअ़ कर दिया या उस की ह़िफ़ाज़त न की तो बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तुम्हारी कोई दलील काम न आएगी ।"

www.dawateislami.net

(फिर फ़रमाया) ऐ मुआ़ज़ ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आस्मानो ज़मीन को पैदा करने से पेहले सात फ़रिश्ते पैदा फ़रमाए फिर आस्मानों की तख़्लीक़ फ़रमाई फिर हर दरवाज़े पर एक मुहाफ़िज़ फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमाया। जब आमाल के मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते बन्दे के सुब्ह से शाम तक के आमाल ले कर ऊपर जाते हैं और उस अ़मल में सूरज की चमक जैसा नूर होता है, जब वोह आस्माने दुन्या तक पहुंचते हैं और इस अ़मल को बहुत ज़्यादा समझते हैं तो पेहले आस्मान का मुहाफ़िज़ फ़रिश्ता उन को रोक लेता है और केहता है : "इस अ़मल को साहिबे अ़मल के मुंह पर दे मारो, मैं ग़ीबत का फ़रिश्ता हूं और मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है कि ग़ीबत करने वाले के अ़मल को यहां से आगे बढ़ने न दूं।"

इस के बाद आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "फिर फ़रिश्ते बन्दे के दीगर अच्छे आमाल ले जाते हैं और उन आमाल को कसीर और पाक समझते हैं जब दूसरे आस्मान तक पहुंचते हैं तो वहां का मुअक्किल फ़रिश्ता केहता है : "ठहरो और येह अ़मल साहिबे अ़मल के मुंह पर दे मारो, मैं फ़ख़्र का फ़रिश्ता हूं, उस शख़्स ने अपना येह अ़मल दुन्या के लिए किया था, मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है कि मैं उस के अ़मल को यहां से आगे न बढ़ने दूं क्यूंकि वोह लोगों में बैठ कर अपने उस अ़मल पर फ़ख़्र करता था।"

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद फ़रमाया : "फिर फ़रिश्ते बन्दे के दीगर आमाल मसलन सदक़ा, रोज़ा और नमाज़ वग़ैरा ले कर जाएंगे और उन में ऐसा नूर चमक रहा होगा कि फ़रिश्ते भी हैरान रेह जाएंगे, जब तीसरे आस्मान तक पहुंचेंगे तो वहां का मुअक्किल फ़रिश्ता कहेगा : "ठहरो, और इस अ़मल को साहिबे अ़मल के मुंह पर दे मारो, मैं तकब्बुर का फ़रिश्ता हूं, मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है कि मैं उस के अ़मल को यहां से आगे न बढ़ने दूं, वोह मजालिस में लोगों पर तकब्बुर किया करता था।

फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "फिर फ़रिश्ते बन्दे का वोह अ़मल ले कर जाते हैं जो सितारे की त़रह़ चमकता है उस में तस्बीह़, नमाज़ और ह़ज की आवाज़ होती है, जिस त़रह़ शहद की मख्खी की आवाज़ होती है यहां तक कि जब वोह उसे ले कर चौथे आस्मान तक पहुंचते हैं तो वहां का मुअक्किल फ़रिश्ता केहता है : "ठहर जाओ और इस अ़मल को साहिबे अ़मल के मुंह पर दे मारो और इसे उस की पीठ और पेट पर मारो, मैं ख़ुद पसन्दी का फ़रिश्ता हूं, मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं इस के अ़मल को आगे न बढ़ने दूं क्यूंकि येह शख़्स जब अ़मल करता था तो इस में ख़ुद पसन्दी को दाख़िल कर लेता था।"

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद इरशाद फ़रमाया : "फिर फ़रिश्ते किसी और अ़मल को ले कर ऊपर जाते हैं और वोह अ़मल दुल्हन की त़रह़ आरास्ता होता है यहां तक कि जब वोह पांचवें आस्मान तक पहुंचते हैं तो वहां का मुअक्किल फ़रिश्ता केहता है : "ठहर जाओ और येह अ़मल, अ़मल करने वाले के मुंह पर दे मारो और उस के कन्धों पर रख दो, मैं ह़सद का फ़रिश्ता हूं, जब कोई शख़्स इस की त़रह़ कुछ सीखता या अ़मल करता तो येह ह़सद करता था इसी त़रह़ किसी बन्दे को कोई

www.dawateislami.net

फ़ज़ीलत हासिल होती तो येह उस से ह़सद करता और उस की बुराई बयान करता। मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म फ़रमाया है कि इस के अ़मल को आगे न बढ़ने दूं।"

फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "फिर फ़रिश्ते बन्दे का नमाज़, ज़कात, ह़ज, उ़मरह और रोज़ों का अ़मल ले कर ऊपर जाते हैं, जब वोह छटे आस्मान तक पहुंचते हैं तो वहां का मुअक्किल फ़रिश्ता केहता है : "ठहर जाओ और इस अ़मल को साह़िबे अ़मल के मुंह पर दे मारो क्यूंकि जब किसी बन्दे को कोई मुसीबत या तक्लीफ़ पहुंचती तो येह उस पर रेह़्म नहीं करता था बल्कि उस की मुसीबत पर ख़ुश होता था, मैं रेह़मत का फ़रिश्ता हूं, मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म फ़रमाया है कि इस के अ़मल को आगे न बढ़ने दूं।"

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद फ़रमाया : "फिर फ़रिश्ते बन्दे का वोह अ़मल जो रोज़ा, नमाज़, नफ़्क़ा, ज़कात, इजतिहाद और तक़्वा की सूरत में होता है जिस की आवाज़ बिजली की कड़क और चमक सूरज की रौशनी की त़रह़ होती है और उस के हमराह तीन हज़ार फ़रिश्ते होते हैं जब येह सातवें आस्मान तक पहुंचते हैं तो वहां का मुअक्किल फ़रिश्ता केहता है : ठहरो, और येह अ़मल साह़िबे अ़मल के मुंह पर दे मारो, उस के आज़ा पर मारो और उस के ज़रीए़ उस के दिल पर कुफ़्ल लगा दो क्यूंकि मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि जो अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए न हो मैं उस के रास्ते में रुकावट बनूं उस शख़्स ने अपने अ़मल से ग़ैरुल्लाह का इरादा किया उस का मक़्सद फ़ुक़्हा के नज़्दीक बुलन्दी ह़ासिल करना, उ़लमा के दरमियान तज़किरा और शह़रों में मश्हूर होने का था और हर वोह अ़मल जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए न हो वोह रिया है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रियाकार के अ़मल को क़बूल नहीं फ़रमाता।"

फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "फिर फ़रिश्ते बन्दे की नमाज़, ज़कात, रोज़ा, ह़ज, उ़मरह, अच्छे अख़्लाक़, ख़ामोशी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र को ले कर ऊपर जाते हैं और उस के साथ आस्मानों के फ़रिश्ते होते हैं यहां तक कि वोह तमाम पर्दों से निकलते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होते हैं और उस की बारगाह में उस बन्दे के ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए किए हुवे अच्छे आमाल की गवाही देते हैं।" हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से फ़रमाता है : "तुम मेरे बन्दे के आमाल के निगरान हो जब कि मैं इस के नफ़्स की निगरानी करता हूं, बेशक इस ने येह आमाल मेरे लिए नहीं किए बल्कि मेरे इलावा किसी और के लिए किए हैं, इस पर मेरी लानत है।" तो तमाम फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "इस पर तेरी, हम सब फ़रिश्तों की, सातों आस्मानों और जो कुछ इस में है, सब की लानत हो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं और मैं मुआ़ज़ हूं, (मुझे) कैसे नजात ह़ासिल होगी ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मुआ़ज़ ! मेरी इत्तिबाअ़ करो अगर्चे तुम्हारे अ़मल में कमी हो, ऐ मुआ़ज़ ! अपने कुरआन पढ़ने वाले भाइयों के बारे में कुछ

केहने से अपनी ज़बान रोक कर रखो, अपने गुनाहों को अपने ऊपर डालो, दूसरों के ज़िम्मे न लगाओ, उन को बुरा भला केह कर अपनी पाकीज़गी का इज़्हार न करो, अपने आप को उन पर बुलन्द न समझो, दुन्यवी अ़मल को आख़िरत के अ़मल में दाख़िल न करो, अपनी मजलिस में तकब्बुर न करो ताकि लोग तेरे बुरे अख़्लाक़ से बचे रहें, तीसरे आदमी की मौजूदगी में किसी से सरगोशी न करो, लोगों पर अपनी अ़ज़मत का इज़्हार न करो वरना तुम दुन्यावी भलाई से मह़रूम हो जाओगे और लोगों की बे इ़ज़्ज़ती न करो वरना बरोज़े क़ियामत जहन्नम में उस के कुत्ते तुम्हें चीर फाड़ देंगे।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

وَالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۝ (پ۳۰، النّٰزِعٰت: ۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नर्मी से बन्द खोलें।

"ऐ मुआ़ज़ ! क्या तुम जानते हो, वोह कौन हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! वोह कौन हैं ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "वोह जहन्नम के कुत्ते हैं जो गोश्त और हड्डियों को दांतों से नोचेंगे।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! कौन इन ख़साइल की त़ाक़त रख सकता और उन कुत्तों से बच सकता है ?" तो आक़ाए नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुआ़ज़ ! येह चीज़ हर उस शख़्स के लिए आसान है जिस के लिए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आसान फ़रमा दे, तेरे लिए येही काफ़ी है कि तू लोगों के लिए भी वोही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है और उन के लिए भी वोही ना पसन्द करे जो अपने लिए ना पसन्द करता है।" रावी केहते हैं : "मैं ने किसी को ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से ज़्यादा क़ुरआने मजीद की तिलावत करते नहीं देखा, वोह इस ह़दीस के डर से ऐसा करते थे।"

(الترغیب والترھیب، المقدمة، باب الترھیب من الریاء.....الخ، الحدیث ۵۹، ج۱، ص۴۸ تا ۵۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे को उस के अ़मल पर इतना सवाब नहीं देता जिस क़दर सवाब निय्यत पर अ़त़ा फ़रमाता है क्यूंकि निय्यत ज़्यादा पहुंचने वाली होती है और इस में रिया नहीं होती।"

रिया की ह़क़ीक़त का बयान

रिया "رُؤْيَة" से है (यानी देखना) और सुमआ़ "سِمَاع" से है (यानी सुनना) रिया की अस्ल येह है कि अच्छे आमाल दिखा कर लोगों के हां अपना मक़ाम बनाना और लोगों के नज़्दीक मर्तबे का हुसूल कभी इ़बादत के ज़रीए़ और कभी इ़बादत के बिग़ैर होता है, इ़बादत के इ़लावा सूरतों में रिया येह है मसलन मोटे कपड़े पेहनना, उन्हें पिन्डली के क़रीब तक लटकाना, रंग का ज़र्द होना, आंखों को अन्दर की त़रफ़ धंसाना, बालों को बखेरे रखना, आवाज़ को पस्त रखना, तकल्लुफ़ के साथ वक़ार व सुकून से चलना और चादरें पेहनना वग़ैरा, येह तमाम चीज़ें इ़बादत में भी रिया को शामिल हैं और जब इन से दिखावे का इरादा हो तो येह ह़राम हैं। इसी त़रह़ उ़लमा के रियाकारी करने से मुराद जलालते

www.dawateislami.net

इ़ल्मी के इज़हार के लिए वाज़ो नसीह़त में मुसज्जअ़ व मुक़फ़्फ़ा (यानी फ़साह़तो बलाग़त से भरपूर) अल्फ़ाज़ इस्तिमाल करना है लेकिन अगर इस से इरादा येह हो कि लोग इस त़रह़ दीन के क़रीब होंगे तो दुरुस्त है और इसी त़रह़ कभी अस्ल वाज़ में वाज़ करने वाले की निय्यत दुरुस्त होती है तो इस सूरत में इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ का इस्तिमाल जाइज़ है।

अस्ल इ़बादत में रियाकारी येह है कि इन्सान लोगों के दरमियान हो तो त़वील रुकूअ़ व सुजूद करे ताकि लोग उसे इ़बादत गुज़ार और मुत्तक़ी समझें और कभी वोह ख़ल्वत में भी इस चीज़ का तकल्लुफ़ करता है ताकि लोगों के सामने भी इस त़रह़ कर सके और समझता है कि उस ने घर में त़वील रुकूअ़ व सजदा कर लिया इस लिए वोह रिया से बच गया और अगर उस का येही अ़ज़्म हो तो भी वोह दिखावे में मज़ीद आगे निकल गया और वोह इस में मुख़्लिस नहीं, पस रिया की सह़ीह़ तारीफ़ येही है कि इस से मुराद जाहो मर्तबा का त़लब करना है ख़्वाह इ़बादात के ज़रीए़ हो या बिग़ैर इ़बादत के, अगर बिग़ैर इ़बादत के हो जैसा कि माल में से ह़लाल त़लब करना तो वोह ह़राम नहीं मगर येह कि वोह माल धोके के ज़रीए़ ह़ासिल किया गया हो और येह चीज़ माल और मर्तबा दोनों में बराबर ह़राम है। इस से येह न समझा जाए कि हुब्बे जाह मुकम्मल त़ौर पर ह़राम है क्यूंकि ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए कुछ न कुछ जाहो मर्तबा की ज़रूरत होती है जिस त़रह़ ह़ाजत को पूरा करने के लिए थोड़ा माल कमाना जाइज़ होता है और ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़रमान से येही मुराद है, जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़रमान में ज़िक्र फ़रमाया :

قَالَ اجْعَلْنِیْ عَلٰی خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ ۝ (پ۱۳، یوسف:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : यूसुफ़ ने कहा मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बेशक मैं ह़िफ़ाज़त वाला इ़ल्म वाला हूं।

पस जाहो मर्तबे में ज़ह्र व तिरयाक़ (यानी नफ़्अ़ व नुक़्सान) दोनों हैं जैसा कि माल के बारे में गुज़र चुका है और जिस त़रह़ माल की कसरत इन्सान को सरकश और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल कर देती है इसी त़रह़ ज़्यादा जाहो मर्तबे का मुआ़मला है लेकिन अगर तुम्हारी ख़्वाहिश के बिग़ैर तुम्हें बहुत ज़्यादा इ़ज़्ज़त मिल जाए, और वोह तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल न करे। पस तेरा इसे इस्तिमाल करना इसी त़रह़ है जिस त़रह़ सख़ावत, ईसार और मख़्लूक़े ख़ुदा को नफ़्अ़ पहुंचाने के लिए माल का इस्तिमाल करना है। इस का वोही हुक्म है जो माले कसीर का है जो पेहले गुज़र चुका है क्यूंकि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और अइम्मए उ़ज़्ज़ाम व ख़ुलफ़ाए राशिदीन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की इ़ज़्ज़त से बढ़ कर इ़ज़्ज़त का ह़ुसूल मुमकिन नहीं लेकिन इन्सान को चाहिए कि उसे येह चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल न करे और न इस के ज़वाल पर उसे कोई दुख हो, उस का लोगों के पास जाते वक़्त अच्छे कपड़े पेहनना रिया तो है लेकिन येह ह़राम नहीं क्यूंकि इस में इ़बादत के ज़रीए़ रिया नहीं और इस पर उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रिवायत दलील है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि एक दिन रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ जाने का इरादा फ़रमाया और आप

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पानी के मटके में देख कर अपना इमामा शरीफ़ और ज़ुल्फ़ों को दुरुस्त फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या आप भी ऐसा करते हैं ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

نَعَمْ إِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يُحِبُّ الْعَبْدَ اَنْ يَتَزَيَّنَ لِاِخْوَانِهٖ اِذَا خَرَجَ اِلَيْهِمْ "**तर्जमा :** हां, बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को पसन्द फ़रमाता है कि वोह अपने दोस्तों की त़रफ़ जाते वक़्त उन के लिए ज़ीनत इख़्तियार करे ।"

बेशक हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह अ़मल इबादत के त़ौर पर था क्यूंकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मख़्लूक़ को दावत देने पर मामूर थे और अगर उन लोगों की निगाहों में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई मक़ाम न होता तो वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दावत क़बूल न करते ।

जान लीजिए ! रिया की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, अगर इबादत करने का मक़्सद दिखावा हो तो येह क़त़ई त़ौर पर इबादत को बात़िल कर देता है और उस की इबादत की निय्यत में रिया ग़ालिब हो तो येह भी रिया के हुक्म में दाख़िल है लेकिन अगर सवाब और रिया दोनों का इरादा बराबर हो कि इस में से हर एक का मुस्तक़िल इरादा हो तो उस ने नजात पाई, न उस के लिए सवाब होगा न अ़ज़ाब और उस ने नफ़्अ़ पाया । अगर अस्ल इबादत का इरादा हो लेकिन रिया उस पर ग़ालिब हो अगर्चे रिया इबादत पर मुक़द्दम न हो और इसी त़रह़ अगर रिया तो हो मगर इबादत के इरादे की वज्ह से न हो तो इन दोनों सूरतों में शायद उस का अस्ल अ़मल तो ज़ाएअ़ न होगा लेकिन उस के सवाब में कमी होगी या उस को रिया के मुत़ाबिक़ सज़ा होगी और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुन्दरिजए ज़ैल फ़रमाने आ़लीशान उस के दोनों इरादों के बराबर होने पर मह़मूल किया जाएगा और आख़िरी क़िस्म उस से निकल जाएगी ।

चुनान्चे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान ह़िकायत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : أَنَا أَغْنَى الْاَغْنِيَاءِ عَنِ الشِّرْكِ "**तर्जमा :** मैं सब से बढ़ कर शिर्क से बे नियाज़ हूं ।"

(صحيح مسلم، كتاب الزهد، باب تحريم الرياء، الحديث ٧٤٧٥، ص١١٩٥، الاغنياء: بدله: الشركاء)

जान लीजिए ! अगर अस्ल ईमान में रिया हो तो येह निफ़ाक़ है और मुनाफ़िक़ जहन्नम के सब से निचले त़बक़े में हमेशा रहेगा लेकिन अगर अस्ल ईमान के बजाए उसूलो फ़राइज़ में रिया हो तो येह पेहले से कम है और अगर नवाफ़िल या इबादत में रिया हो तो इस का हुक्म गुज़र चुका है ।

रियाए ख़फ़ी का बयान

रियाए ख़फ़ी वोह है जो च्यूंटी की चाल से भी पोशीदा है और येह मुस्तक़िल त़ौर पर बन्दे को इबादत पर नहीं उभारता और न ही लोगों के सामने इबादत को कम करने में मुअस्सिर होता है लेकिन

वोह इस बात को पसन्द करता है कि लोग उसे इ़बादत की वज्ह से पहचानें, उस की इ़बादतो रियाज़त पर आगाह हों और वोह इस से ख़ुश होता है, येही मख़्फ़ी रिया है।

रियाए ख़फ़ी का इलाज

रिया का इलाज और उसे दूर करने का त़रीक़ा येह है कि वोह येह बात जान ले कि रिया का सबब माल की मह़ब्बत, जाहो मर्तबा और हुब्बे मद्ह़ है जिस का ज़िक्र पेहले गुज़र चुका है और इस के बाद येह चीज़ रिया दूर कर सकती है कि उसे ग़ौर करना चाहिए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के बात़िन पर मुत्त़लअ़ है और अ़न क़रीब उस से फ़रमाएगा : "मैं तेरे ख़याल में सब देखने वालों से हल्का था।" जब वोह इस बात में ग़ौर करेगा कि उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ ही लौटना है और रियाकारी का सिलसिला तो मौत के साथ ख़त्म हो जाएगा तो उसे मालूम हो जाएगा कि इसे तर्क करना ही बेहतर है।

गुनाह छुपाने की रुख़्सत

जान लीजिए ! इख़्लास की अस्ल येह है कि ज़ाहिरो बात़िन यक्सां हों। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अ़लानिया अ़मल को अपने ऊपर लाज़िम कर लो।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अ़लानिया अ़मल क्या है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "जब कोई शख़्स उस पर मुत्त़लअ़ हो तो तुम्हें उस से ह़या न आए।"

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रेह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَنْ اِرْتَكَبَ شَيْئًا مِنْ هٰذِهِ الْقَاذُوْرَاتِ فَلْيَسْتَتِرْ بِسِتْرِ اللّٰهِ تَعَالٰى.

तर्जमा : जो शख़्स इन नापाक कामों में से किसी अ़मल का इरतिकाब करे तो उसे चाहिए कि उस पर पर्दा डाल दे जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पर्दा डाला।

(المستدرك، كتاب التو بة، باب من ألم فليستتر بستر الله، الحديث ٧٦٨٩، ج٥، ص٣٤٦-٣٤٧، بدون: من ارتكب)

इन्सान को चाहिए कि वोह दूसरे लोगों के गुनाह में मुब्तला होने को इसी त़रह़ ना पसन्द करे जिस त़रह़ वोह अपने आप से गुनाह के इरतिकाब को ना पसन्द करता है।

रिया के ख़ौफ़ से इबादात को छोड़ना जाइज़ नहीं

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि) "जब अस्ल रिया इ़बादत पर बरअंगेख़्ता तो न करे मगर उसे दौराने इ़बादत रिया में पड़ने का ख़ौफ़ हो तो उसे

चाहिए कि वोह इ़बादत को तर्क न करे क्यूंकि शैत़ान का मक़्सद इ़बादत छोड़ने से ह़ासिल होता है बल्कि उसे इ़बादत को बजा लाना चाहिए और रिया को इस की दवा से दूर करना चाहिए।" इसी वज्ह से बाज़ उ़लमा का येह क़ौल है कि मख़्लूक़ के देखने की वज्ह से इ़बादत को तर्क करना **रिया** है और लोगों के लिए इ़बादत करना **निफ़ाक़ महज़** है।

जान लीजिए ! बाज़ इ़बादात ऐसी हैं जो मख़्लूक़ के मुतअ़ल्लिक़ हैं जैसे ख़िलाफ़ते इमामत, सल्त़नत, तदरीस और वाज़ वग़ैरा। चुनान्चे, शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

لَيَوْمٌ مِنْ إِمَامٍ عَادِلٍ خَيْرٌ مِنْ عِبَادَةِ الرَّجُلِ وَحْدَهٗ سِتِّيْنَ عَامًا.

तर्जमा : आ़दिल ह़ुक्मरान का एक दिन आ़म आदमी की साठ साल की इ़बादत से बेहतर है।

(المعجم الكبير، الحديث ١١٩٣٢، ج١١، ص٢٦٧، مفهوماً)

जान लीजिए ! बेशक मुत्तक़ी लोग इन ओ़ह्दों से दूर भागते थे क्यूंकि इन में बहुत बड़े ख़त़रे हैं इस लिए कि इस में बात़िनी सिफ़ात को माल, जाहो मर्तबे की मह़ब्बत और दीगर आफ़ात के साथ ह़रकत होती है, इसी लिए रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَامِنْ وَالِيْ عَشِيْرَةٍ إِلَّا جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَغْلُوْلَةً يَدُهٗ إِلٰى عُنُقِهٖ أَطْلَقَهٗ عَدْلُهٗ أَوْ أَوْبَقَهٗ جَوْرُهٗ.

तर्जमा : जो शख़्स किसी ख़ानदान का वाली हो वोह बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि उस का हाथ उस की गर्दन के साथ बन्धा होगा उस का इन्साफ़ उसे छुड़ाएगा या उस का ज़ुल्म उसे हलाक कर देगा।

(حلية الاولياء، راشد بن سعد، حديث ٨٠٥٣، ج٦، ص١٢٧)

पस आ़क़िल के लिए येही मुनासिब है कि वोह ख़त़रे की जगह से भागे लिहाज़ा इन्सान अपने नफ़्स में ग़ौर करे, अगर सवाब की त़लब ग़ालिब है तो अमारत क़बूल करे और इस की अ़लामत येह है कि जब कोई उस का क़ाइम मक़ाम ज़ाहिर हो जाए और उसे किफ़ायत करे तो वोह उसे ग़नीमत समझे और उस से ग़ुस्सा न करे, इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ

www.dawateislami.net

बाब : 29 तकब्बुर और उ़ज्ब (यानी ख़ुद पसन्दी) की मज़म्मत

तकब्बुर का बयान[1]

इस में चन्द फ़ुसूल हैं : जान लीजिए ! तकब्बुर मज़मूम है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿۱﴾ وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝ (پ ۱۳، ابراهيم:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हों ने फ़ैसला मांगा और हर सरकश हटधर्म ना मुराद हुवा।

﴿۲﴾ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ (پ ۹، الاعراف:۱٤٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं।

﴿۳﴾ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝ (پ ۲٤، المؤمن:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह यूं ही मोहर कर देता है मुतकब्बिर सरकश के सारे दिल पर।

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنَ الْكِبْرِ.

तर्जमा : जिस शख़्स के दिल में राई के दाने बराबर भी तकब्बुर हो वोह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر و بيانه، الحديث۲٦۷،ص٦٩٤)

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلْكِبْرِيَاءُ رِدَائِيْ، وَالْعَظْمَةُ أِزَارِيْ، فَمَنْ نَازَعَنِيْ وَاحِداً مِنْهُمَا أَلْقَيْتُهٗ فِيْ جَهَنَّمَ.

तर्जमा : बड़ाई मेरी चादर और अ़ज़मत मेरा इज़ार है, तो जिस ने इन दोनों में से किसी एक में मुझ से झगड़ा किया मैं उसे जहन्नम में फेंक दूंगा।

(سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب البرأة من الكبر.....الخ، الحديث٤١٧٤،ص٢٧٣١)

---

1 ....."ख़ुद को दूसरों से अफ़्ज़लो आला और बेहतर समझ कर ख़ुश होना "**तकब्बुर**" केहलाता है।"

(الحديقة الندية،ج١، ص٥٤٣)

www.dawateislami.net

तकब्बुर का माना

तकब्बुर नफ़्स की एक सिफ़त है जो नफ़्स के देखने से पैदा होती है और ज़ाहिरन तकब्बुर से जो कुछ ज़ाहिर होता है वोह इस सिफ़त के लिए असर की त़रह़ है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ मांगी : أَعُوْذُ بِكَ مِنْ نَفْخَةِ الْكِبْرِيَاءِ "**तर्जमा :** मैं तकब्बुर की फूंक से तेरी पनाह चाहता हूं।"

(سنن ابن ماجة، ابواب اقامة الصلوات والسنة فيها، باب الاستعاذة فى الصلاة، الحديث٨٠٨،ص٢٥٢٥)

तकब्बुर की अक़्साम

अगर तकब्बुर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हो यानी वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम की इत़ाअ़त न करे तो येह मुकम्मल कुफ़्र है, अगर रसूलों पर तकब्बुर हो कि वोह अपने जैसे बशर की इत़ाअ़त नहीं करता तो येह भी मुकम्मल कुफ़्र है और तीसरी क़िस्म मख़्लूक़ पर तकब्बुर करना है कि वोह लोगों पर बड़ाई चाहे और उन्हें अपनी ख़िदमत करने और अपने लिए आ़जिज़ी इख़्तियार करने की दावत दे और येह किब्रियाई में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ झगड़ा करने की त़रह़ ही है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को येह ज़ेबा नहीं कि वोह लोगों से अपनी इत़ाअ़त कराए। और अगर तकब्बुर मालो जाह के साथ हो तो इस का इलाज पीछे गुज़र चुका है, अच्छी चीज़ को देख कर तकब्बुर आना तो अच्छी चीज़ ही के ख़िलाफ़ है (यानी अच्छी चीज़ को देख कर तकब्बुर नहीं आता) और अगर तकब्बुर नेकियों और इल्मो अ़मल की वज्ह से हो तो इस बारे में ह़क़ीक़त येह है कि येह बात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए हो। जब इन्सान आमाल के साथ लोगों पर तकब्बुर करता है तो गोया उस ने अपना अज्र वुसूल कर लिया जैसा कि अह़ादीस में वारिद है। पस क़रीब है कि उस का अज्र ज़ाएअ़ हो जाए और येही उस के इलाज का त़रीक़ा है। और वोह जो अपने अन्दर ख़यालात पाता है इस के मुक़ाबले में उसे राह़त ह़ासिल होगी। पस जब उस का नफ़्स लोगों पर बरतरी चाहने पर उभारे तो उसे आ़जिज़ी का पैकर बनना चाहिए और इस पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करनी चाहिए ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इस से नजात अ़त़ा फ़रमाए और जब भी उस का नफ़्स तकब्बुर से ख़लासी चाहे तो वोह चार उमूर के साथ अपने नफ़्स को आज़माए :

(1)...क्या वोह किसी दूसरे की ज़बान पर ह़क़ के ज़ाहिर होने से ग़ुस्से में आता है या नहीं ? और क्या वोह बुलन्दी चाहता है या नहीं ?

(2)...वोह मह़ाफ़िल में अपने हम अ़स्रों को अपने से मुक़द्दम जाने।

(3)...वोह खाना वग़ैरा ज़रूरत की अश्या ख़ुद अपने घर उठा कर लाए कि येह सुन्नत है और अपने घर के काम काज में अपने ग़ुलाम का हाथ बटाए और उस के साथ मिल कर खाना खाए, येह सब सुन्नत है। और फ़ुक़रा की दावत को क़बूल करना, उन के साथ बाज़ार जाना और उन के साथ उन की ज़रूरिय्यात पूरी करना इसी से है।

(4)...मजलिस में आ़म काम काज के कपड़े पेहने कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : اَلْبَذَاذَةُ مِنَ الْاِيْمَانِ "**तर्जमा :** पुराना लिबास पेहनना ईमान से है।" (سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، باب النهی عن کثیر من الارفاه، الحدیث ٤١٦١، ص١٥٢٦)

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है :

مَنِ اعْتَقَلَ الْبَعِيْرَ وَلَبِسَ الصُّوْفَ فَقَدْ بَرِئَ مِنَ الْكِبْرِ.

तर्जमा : जिस ने ऊंटों को बान्धा और ऊनी लिबास पेहना, वोह तकब्बुर से बच गया।

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی الملابس والاوانی، فصل فی التواضع فی اللباس، الحدیث ٦١٦١، ج٥، ص١٥٣، بتقدمٍ وتأخرٍ)

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

مَنْ حَمَلَ حَاجَتَهٗ اِلٰى بَيْتِهٖ فَقَدْ بَرِئَ مِنَ الْكِبْرِ

तर्जमा : जो शख़्स अपनी ज़रूरत की चीज़ ख़ुद घर उठा कर लाए, वोह तकब्बुर से बच गया।

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی حسن الخلق، فصل فی التواضع، الحدیث ٨٢٠١، ج٦، ص٢٩٢، بتغیرٍ)

जब तू ने येह जान लिया तो येह भी जान ले कि तमाम उमूर में मियाना रवी बेहतर है।

पस क़ाबिले तारीफ़ **तवाज़ोअ़** येह है कि इन्सान अपने हम मर्तबा लोगों के साथ बिग़ैर ज़िल्लत के आ़जिज़ी इख़्तियार करे।

उ़ज्ब (यानी ख़ुद पसन्दी) का बयान[1]

जान लीजिए ! ख़ुद पसन्दी क़ाबिले मज़म्मत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

﴿١﴾ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ (پ١٠، التوبه:٢٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कसरत पर इतरा गए थे।

﴿٢﴾ وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝ (پ١٦، الکهف: ١٠٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।

﴿٣﴾ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ۝ (پ٢٤، الزمر:٤٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें **अल्लाह** की त़रफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी।

1....**उ़ज्ब** यानी ख़ुद पसन्दी की तारीफ़ येह है कि "अपने नेक अ़मल को बड़ा समझना और जिस शरफ़ की वज्ह से इस नेक अ़मल की सआ़दत मिली उस को दिल से अच्छा जानना। उ़ज्ब का इ़त्लाक़ इस पर भी होता है कि बन्दा नेमते ख़ुदावन्दी का शुक्र अदा न करे और इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एह़सान न माने बल्कि इस नेमत को अपना ज़ाती कारनामा समझे।"

तकब्बुर और **उ़ज्ब** में फ़र्क़ येह है कि "अगर किसी दूसरे पर ख़ुद को फ़ौक़िय्यत दे तो **तकब्बुर** होता है और किसी दूसरे के मुक़ाबले में न हो बल्कि किसी के मुक़ाबले के बिग़ैर ख़ुद को अफ़्ज़लो आला समझे तो उसे **उ़ज्ब** केहते हैं।" (الحدیقة الندیة، ج١، ص٥٤٣ ـ ٥٩٥)

www.dawateislami.net

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है :

ثَلَاثٌ مُهْلِكَاتٌ شُحٌّ مُطَاعٌ وَهَوًى مُتَّبَعٌ، وَإِعْجَابُ الْمَرْءِ بِنَفْسِهٖ.

तर्जमा : तीन बातें हलाकत में डालने वाली हैं : (1) बुख़्ल, जिस की पैरवी की जाए (2) ख़्वाहिश, जिस की इत्तिबाअ़ की जाए और (3) आदमी का अपने नफ़्स पर इतराना।

(المعجم الاوسط، الحديث ٥٤٥٢، ج٤،ص١٢٩)

उ़ज्ब की ह़क़ीक़त

ख़ुद पसन्दी की ह़क़ीक़त येह है कि अपने आप को इ़ल्मो अ़मल में कामिल समझने की वज्ह से इन्सान के दिल में तकब्बुर पैदा हो जाए। अगर उसे इस कमाल के ज़ाइल होने का ख़ौफ़ हो तो वोह ख़ुद पसन्द नहीं केहलाएगा और इसी त़रह़ अगर वोह इस कमाल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नेमत समझ कर इस पर ख़ुश हो तो भी ख़ुद पसन्दी नहीं बल्कि वोह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल पर ख़ुश है। और अगर वोह इस वज्ह से ख़ुश हो कि येह उस की अपनी सिफ़त है और न इस के ज़वाल की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और न येह सोचे कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नेमत है तो येही चीज़ ख़ुद पसन्दी केहलाती है और येही हलाकत में डालने वाली है।

उ़ज्ब का इ़लाज

ख़ुद पसन्दी का इ़लाज येह है कि इन्सान अपने अन्जाम में ग़ौर करे और बलअ़म बिन बाऊ़रा के बारे में ग़ौर करे कि उस का ख़ातिमा कैसे कुफ़्र पर हुवा और इसी त़रह़ इब्लीस की ह़ालत है। पस जिस शख़्स ने बुरे ख़ातिमे के बारे में ग़ौर किया तो उस के लिए अपनी किसी सिफ़त की वज्ह से ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होना ना मुमकिन है। وَاللّٰهُ اَعْلَم

बाब : 30 ग़ुरूर (यानी ख़ुश फ़ेह्मी) की मज़्मत का बयान

जान लीजिए ! येह हलाकत के अस्बाब में सब से वाज़ेह़ सबब है।

ग़ुरूर (यानी ख़ुश फ़ेह्मी) के शिकार लोगों की अक़्साम

इस में मुब्तला लोगों की बहुत सी अक़्साम हैं। हम इन में से चार अक़्साम ज़िक्र करते हैं :

(1)...**उ़लमा** (2)...**आ़बिदीन** (3)...**सूफ़िया और** (4)...**दुन्यादार व मालदार**।

ग़ुरूर की मज़्मत पर आयाते करीमा

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُہٗ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿۱﴾ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ (پ۲۱، لقمٰن:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** के ह़िल्म पर धोका न दे वोह बड़ा फ़रेबी।

﴿۲﴾ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ (پ۲۷، الحدید:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और झूटी त़म्अ़ ने तुम्हें फ़रेब दिया यहां तक कि **अल्लाह** का हुक्म आ गया और तुम्हें **अल्लाह** के हुक्म पर उस बड़े फ़रेबी ने मग़रूर रखा।

ग़ुरूर की मज़्मत पर अह़ादीसे मुबारका

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "अ़क़्लमन्द लोगों की नींद और रोज़ा न रखना क्या ही ख़ूब है, येह लोग बे वुक़ूफ़ों की शब बेदारी और कोशिश को किस त़रह़ नाक़िस करते हैं और साह़िबे यक़ीन व तक़्वा का ज़र्रा बराबर अ़मल धोके के शिकार लोगों के ज़मीन भर अ़मल से अफ़्ज़ल है।" (موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الیقین، الحدیث۸، ج۱، ص۲۳، بتغیر)

ख़ुश फ़ेह्मी येह है कि बन्दा ह़क़ीक़त के ख़िलाफ़ चीज़ का एतिक़ाद रखे, येह जहालत की एक क़िस्म है और नफ़्स का इस चीज़ से सुकून ह़ासिल करना है जो उस के ख़याल में ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ हो लिहाज़ा वोह शख़्स भी धोके का शिकार है जिसे उस का फ़ासिद गुमान इस धोके में मुब्तला करता है कि येह दुन्या नक़्द और यक़ीनी है जब कि आख़िरत का मुआ़मला उधार और शक का है लिहाज़ा हम उधार और शक के लिए नक़्द और यक़ीन को नहीं छोड़ सकते।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमान में इसी त़रफ़ इशारा फ़रमाया :

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۪ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ (پ۱، البقرۃ:۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह हैं वोह लोग जिन्हों ने आख़िरत के बदले दुन्या की ज़िन्दगी मोल ली तो न उन पर से अ़ज़ाब हल्का (हो)।

(इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं कि) येह लोग कुफ़्फ़ार हैं, कभी इन को ईमान अचानक ह़ासिल होता है, कभी दलील व बुरहान के ज़रीए़ और कभी तक़्लीद से ह़ासिल होता है और

www.dawateislami.net

इस में शक नहीं कि मरीज़ सेह्ह़त की उम्मीद रखते हुवे ह़कीम के केहने पर दवा पीता है लेकिन अगर वोह कहे कि मैं उस वक़्त तक दवा नहीं पियूंगा जब तक इस के नफ़्अ़ बख़्श होने का यक़ीन न आ जाए तो येह उस की हलाकत की दलील है। ह़ालांकि अ़क़्ल तो बुरे गुमान और मह़ज़ एह़तिमाल से बचने का तक़ाज़ा करती है और अगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रामीन और मोजिज़ात इस ग़ौरो फ़िक्र करने वाले को यक़ीन का फ़ाएदा न दें तो कम अज़ कम उसे ग़ालिब गुमान या एह़तिमाल का फ़ाएदा भी नहीं देते, जब कि अ़क़्ल मन्द तो एह़तिमाले मह़ज़ से भी बचता है। इसी लिए अमीरुल मोमिनीन, मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने किसी मुल्ह़िद को दलाइल देने के बाद इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम्हारा क़ौल सह़ीह़ है तो मैं ने भी नजात पाई और तुम ने भी और अगर मेरा क़ौल सह़ीह़ है तो मैं ने नजात पाई और तुम हलाक हुवे।" (इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **एह़्याउल उ़लूमुद्दीन** में येह क़ौल नक़्ल करने के बाद तेह़रीर फ़रमाते हैं कि "आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह बात इस लिए नहीं फ़रमाई कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को आख़िरत पर यक़ीन नहीं था बल्कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस से उस की अ़क़्ल के मुत़ाबिक़ कलाम कर के उस पर वाज़ेह़ कर दिया कि अगर तुम्हें आख़िरत पर यक़ीन नहीं तो तुम धोके में मुब्तला हो।")

कुछ लोगों को उन के इस क़ौल ने धोके में डाला कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़ीमो करीम है और बाज़ लोग अपने आबाओ अज्दाद के तक़्वाओ परहेज़गारी से वसीला पकड़ते हैं और येह सब ना मुमकिन है। जब कि इन का येह क़ौल सह़ीह़ है कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़ीमो करीम है लेकिन तमाम आयाते क़ुरआनिया इस बात पर दलालत करती हैं कि उस का रह़्मो करम येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दुन्या में नेकियों की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाता है, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ुद इरशाद फ़रमाता है :

﴿۱﴾ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ۝ (پ۲۷، النجم:۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश।

﴿۲﴾ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ (پ۸، الانعام:۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिसे **अल्लाह** राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है।

फिर बन्दा रिज़्क़ के मुआ़मले में उस के करम पर एतिमाद क्यूं नहीं करता ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ (پ۲۸، الطلاق:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है।

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ (پ۲۸، الطلاق:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रिज़्क़ के मुआमले में अपनी ज़ात पर तवक्कुल और भरोसा करने का हुक्म फ़रमाया और बन्दा इस मुआमले में तो तवक्कुल न करे और उस ने आख़िरत के लिए अ़मल करने का हुक्म दिया है लेकिन इस मुआमले में तवक्कुल करे तो येह इन्तिहाई दर्जे का तज़ाद है और जो शख़्स अपने आबाओ अज्दाद की परहेज़गारी और नसबी तक़्वा पर भरोसा करता है उसे चाहिए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में ग़ौर करे जो ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को फ़रमाया गया :

اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۫ (پ۱۲، هود:٤٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह तेरे घरवालों में नहीं, बेशक उस के काम बड़े ना लाइक़ हैं।

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान में ग़ौर करे जब आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी वालिदए माजिदा की क़ब्र की ज़ियारत और उन के लिए बख़्शिश त़लब की तो आप को ज़ियारत की इजाज़त दी गई लेकिन इस्तिग़फ़ार की इजाज़त न मिली तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रो पड़े।"[1]

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अ़क़्लमन्द वोह है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात को कमज़ोर कर दे और मौत के बाद आने वाली ज़िन्दगी के लिए अ़मल करे और बे वुक़ूफ़ वोह है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से लम्बी उम्मीदें रखे।"

(فردوس الاخبار للديلمی ،باب الكاف، الحديث ٤٩٦٦،ج٢،ص١٨٥الاحمق بدله العاجز)

---

1 ....इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى "**التعظيم والمنة فی ابوی رسول الله صلّی الله علیه وآله وسلّم فی الجنّة**" में तह़रीर फ़रमाते हैं : "इस्तिग़फ़ार की इजाज़त न मिलने वाली ह़दीस से उन (यानी वालिदैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का कुफ़्र लाज़िम नहीं आता क्यूंकि इब्तिदाए इस्लाम में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मक़रूज़ का जनाज़ा पढ़ने और उस के लिए इस्तिग़फ़ार करने से मन्अ़ फ़रमाया गया था ह़ालांकि वोह मुसलमान ही होता है।

इस्तिग़फ़ार की इजाज़त न मिलने की वज्ह या तो येह है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا बा वुजूद येह कि तौह़ीद परस्त थीं, जन्नत से बरज़ख़ में ऐसे उमूर की वज्ह से रुकी हों जो कुफ़्र न हों, इस बात का तक़ाज़ा था कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस्तिग़फ़ार की इजाज़त न दी जाए यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस बारे में इजाज़त दे।"

या **दूसरी वज्ह येह** है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا बिलाशुबा मुवह़्ह़िदा थीं मगर इन तक मुआ़द व बिअ़ूसत का मुआमला न पहुंचा था और येह बहुत बड़ी अस्ल है तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ज़िन्दा फ़रमाया ताकि बिअ़ूसत और तमाम शरीअ़त पर ईमान लाएं येही वज्ह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के ज़िन्दा करने को ह़िज्जतुल विदाअ़ तक मुअख़्ख़र कर दिया यहां तक कि शरीअ़त की तक्मील हो गई। जब येह आयत नाज़िल हुई : اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (پ٦،المآئدة:٣) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया।" तो उन को ज़िन्दा किया गया और वोह तमाम नाज़िल तालीमात पर ईमान लाईं, येह माना निहायत ही नफ़ीस और उ़म्दा है।

(التعظيم والمنة فی ابوی رسول الله صلّی الله علیه وآله وسلّم فی الجنّة،،ص١١٠،١١١)

जान लीजिए ! हमेशा गुनाहों से बचने के साथ साथ दिन रात इत़ाअ़त में मश्ग़ूल रेहने वाला अ़क़्लमन्द, साहिबे बसीरत बुरे ख़ातिमे से ख़ौफ़ज़दा रेहता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इल्तिजा करता है कि वोह उसे दुन्याओ आख़िरत में पुख़्ता क़ौल के साथ साबित क़दम रखे और वोह तक़्दीर की हलाकतों से डरता है।

अगर तुम सुवाल करो कि उम्मीद की जगह कहां है ? तो हम जवाब देंगे कि बेशक उम्मीद व ख़ौफ़ दो अ़लामतें हैं, हर एक का अपना मक़ाम है और उम्मीद के दो मक़ामात हैं, उन में से एक येह है कि जब इन्सान गुनाहों की कसरत के सबब बख़्शिश को बईद समझे और शैत़ान उसे धोके से गुमराह कर के रेह़मत से मायूस करे तो वोह तौबा के ज़रीए़ अपनी बख़्शिश की उम्मीद रखे और दूसरा मक़ाम येह है कि वोह अपने लिए जन्नत की नेमतों और बुलन्द दरजात की उम्मीद रखे जिस त़रह़ अह़ादीस में वारिद है ताकि वोह सिर्फ़ फ़राइज़ पर इख़्तिसार न करे।

शैत़ानी धोके के शिकार लोगों की अक़्साम

अब हम शैत़ान के धोके में मुब्तला होने वाले लोगों की अक़्साम बयान करते हैं।

उ़लमा : उन के शैत़ानी धोके में मुब्तला होने का ज़िक्र किताबुल इ़ल्म में गुज़र चुका है, "**उ़लमा बिल्लाह**" वोह हैं जिन के इ़ल्म में इज़ाफ़े का सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ हो, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِاللّٰهِ وَأَخْشَاكُمْ لِلّٰهِ "**तर्जमा :** मुझे तुम्हारी निस्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़्यादा इ़ल्म है और तुम से ज़्यादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं।"

(صحيح البخاری، كتاب الادب، باب مالم يواجه .....الخ، الحديث ٦١٠١، ص٥١٥، بتغيرٍ قليلٍ)

और जिस आ़लिम को अपने बात़िनी उ़यूब का इ़ल्म न हो या वोह जानता हो लेकिन उन उ़यूब को ज़ाइल करने की कोशिश नहीं करता वोह धोके में मुब्तला है और उसे उस का इ़ल्म यक़ीनन फ़ाएदा नहीं देगा।

आ़बिदीन : और वोह लोग जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की इ़बादात में मश्ग़ूल हैं, येह धोके से मह़फ़ूज़ नहीं सिवाए कुछ अ़क़्ल मन्द लोगों के, जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हिदायत की तौफ़ीक़ बख़्शी। इन (यानी धोके में पड़ने वालों) में से बाज़ वोह हैं जिन्हों ने फ़राइज़ में कोताही बरती और सुन्नतों को उन के अह़काम व शराइत़ के साथ ज़ाएअ़ किया। इन की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जो वस्वसे की वज्ह से वुज़ू करता और लिबास को पाक करने में मसरूफ़ रेहता है यहां तक कि फ़र्ज़ का वक़्त ख़त्म या तंग हो जाता है।

इन में से बाज़ वोह हैं जिन की निय्यत सह़ीह़ नहीं होती, इस में वस्वसा ग़ालिब रेहता है यहां तक कि उन की जमाअ़त फ़ौत हो जाती है। और इन में से बाज़ वोह हैं जिन्हें वस्वसे सूरए फ़ातिह़ा दोबारा पढ़ने पर उभारते हैं तो वोह केहते हैं : "बेशक हम तो हुरूफ़ को मख़ारिज के साथ पढ़ते हैं और दूसरी त़रफ़ तवज्जोह नहीं देते, उन जैसों की मिसाल उस क़ासिद की सी है जिसे ख़त़ दे कर बादशाह

की त़रफ़ भेजा जाता है और वोह मख़ारिजे हुरूफ़ का ख़याल रखते हुवे अल्फ़ाज़ को बार बार दोहराता है लेकिन मह़फ़िल के आदाब से ग़ाफ़िल हो जाता है, ऐसा शख़्स इस लाइक़ है कि उसे पागल ख़ाने भेज दिया जाए या उसे सज़ा दी जाए।

और येही ह़ाल उस शख़्स का है जो ह़ज व रोज़े में मश्ग़ूल रेहता है और दीगर इ़बादात बजा लाता है लेकिन उन की शराइत़ को पूरा नहीं करता मसलन तौबाओ इस्तिग़फ़ार करना और ज़ुल्मन छीनी हुई अश्या वापस करना और आमाल की आफ़त का इ़ल्म नहीं सीखता नीज़ वोह इ़ल्म नहीं सीखता ज़ाहिरो बात़िन पाक रखने के लिए जिस की उसे ज़रूरत है पस ऐसा शख़्स अपने इ़ल्म से धोके में मुब्तला है।

सूफ़िया : येह क़िस्म अस्ली और बनावटी सूफ़िया पर मुश्तमिल है, इन के मुख़्तलिफ़ गिरोह हैं।

(1)...इन में से कुछ वोह हैं जो मह़ज़ ज़ेबो ज़ीनत और ज़ाहिरी आदाब को पसन्द करते हैं और ख़याल करते हैं कि सूफ़ी के लिए येही काफ़ी है।

(2)...इन में से कई ऐसे हैं जिन्हों ने इस पर इज़ाफ़ा किया और उ़म्दा क़िस्म की गुदड़ियां पेहनीं जो आला क़िस्म के रेशम से भी ज़्यादा क़ीमती होती हैं। उन की मिसाल उस बुढ़िया की सी है जिस ने सुना कि बहादुर जवानों के नाम बादशाह के दीवान में लिखे जाते हैं वोह ज़िरह पेहने हुवे अस्लह़ा ले कर बादशाह के दरबार में ह़ाज़िर हुई, बादशाह ने अस्लह़ा और क़िताल व मुबारज़त के मुतअ़ल्लिक़ उस को जांचने का हुक्म दिया। जब उस के सर से ख़ौद (यानी लोहे की टोपी) और बदन से ज़िरह उतारी गई तो मालूम हुवा कि येह बुढ़िया है। उस से कहा गया : येह तो बादशाह की इहानत है। पस उसे पकड़ कर हाथी के आगे डाल दिया गया और उस पर सज़ा जारी कर दी गई।

(3)....एक गिरोह वोह है जो सूफ़िया के उ़लूमो मआ़रिफ़ के चन्द अल्फ़ाज़ सीख कर मारिफ़त का दावा करता है। येह चीज़ हलाकत का बाइ़स है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस से मह़फ़ूज़ रखे।

(4)...इन में से बाज़ लोग ऐसे हैं जो नेक आमाल को छोड़ देते हैं और येह ख़याल करते हैं कि उन्हें आमाल की ज़रूरत नहीं ह़ालांकि वोह येह नहीं जानते कि उन्हें अपने लिए आमाल की ज़रूरत है न कि ग़ैर के लिए।

(5)...इन में ऐसे लोग भी हैं जो हर क़िस्म की नेमतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हैं, न फ़र्क़ करते हैं न तमीज़ और येह भी नहीं जानते कि ह़लाल की कसरत भी उन की शान के ख़िलाफ़ है।

(6) इन में से बाज़ वोह हैं जिन के लिए मारिफ़त का रास्ता खोल दिया गया लेकिन जब उन्हों ने उस की ख़ुश्बू सूंघी तो वहीं खड़े हो गए और येह ख़याल किया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का विसाल ह़ासिल हो गया ह़ालांकि इस रास्ते के अ़जाइब ख़त्म नहीं होते और जो शख़्स इन में से किसी एक के पास ठहर जाता है तो उस का क़ियाम लम्बा हो जाता है।

(5)...कुछ सूफ़िया ऐसे भी हैं जो उन सब से आगे बढ़ गए और मारिफ़त की राह में उन्हें जो अन्वार अ़ता हुवे उन की त़रफ़ तवज्जोह न दी, न उन अ़त़िय्यात की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे जो उन्हें मयस्सर आए और न उन पर ही ख़ुशी का इज़हार कर के उस राह से हटे बल्कि वोह मुसलसल सफ़र करते रहे यहां तक कि उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब अ़ता हो गया और क़ुर्ब की ह़द तक पहुंच गए और उन्हों ने उस वक़्त येह गुमान किया कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंच चुके हैं ह़ालांकि वोह धोके में मुब्तला हुवे क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सत्तर नूरानी पर्दे हैं और जब कोई सालिक (यानी मारिफ़त की मनाज़िल त़ै करने वाला) उन में से किसी एक के पास भी पहुंचता है तो वोह गुमान करता है कि वोह ह़क़ तआ़ला तक पहुंच गया। शायद जो क़ौल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में ज़िक्र फ़रमाया उस में इसी त़रफ़ इशारा है :

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّیْ ۚ (پ۷،الانعام:۷۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उन पर रात का अन्धेरा आया एक तारा देखा बोले इसे मेरा रब ठहराते हो।

इस से आस्मानी सितारा मुराद नहीं क्यूंकि इन सितारों को तो आप عَلَيْهِ السَّلَام बचपन में भी देखते थे और इन को पहचानते थे और येह भी मालूम था कि येह माबूद नहीं क्यूंकि येह एक नहीं, बहुत से हैं फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सितारे से कैसे मुग़ालत़ा खा सकते थे जब कि इस से एक आ़म और जाहिल शख़्स भी धोका नहीं खाता। बल्कि इस से आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुराद अन्वारे ख़ुदावन्दी में से एक नूर था और येह पेहला ह़िजाब है जो सालिक के रास्ते में आता है। जब तक इन पर्दों को उ़बूर न कर लिया जाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने का तसव्वुर ही नहीं किया जा सकता और येह नूर के पर्दे हैं, जो क़ुर्ब व बुअ़द के एतिबार से बाज़ छोटे बाज़ बड़े होते हैं, अन्वारे समाविय्या में सब से छोटे सितारे ही हैं, इस लिए (अन्वारे इलाहिय्या में से) पेहले नूर के लिए बत़ौरे इस्तिआ़रा इस का नाम इस्तिमाल किया गया क्यूंकि येह उन अन्वार में से सब से छोटा है, सब से बड़ा सूरज और इन दोनों के दरमियान चांद है। जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आस्माने दुन्या को देखा जैसा कि इरशादे ख़ुदावन्दी है :

وَكَذٰلِكَ نُرِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ (پ۷،الانعام:۷۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इसी त़रह़ हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों की।

तो एक नूर के बाद दूसरा नूर और एक ह़िजाब के बाद दूसरा ह़िजाब आता गया, जब भी आप عَلَيْهِ السَّلَام के लिए अन्वारे इलाहिय्या عَزَّوَجَلَّ में से कुछ ज़ाहिर हुवा तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस की अ़ज़मत और नूर का मुशाहदा किया और येह ख़याल किया कि वोह ह़क़ीक़त तक पहुंच गए हैं तो फ़रमाया : هٰذَا رَبِّیْ (پ۷،انعام:۷۶) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इसे मेरा रब ठहराते हो।"

चुनान्चे, नूरे नबुव्वत और तौफ़ीक़े इलाही عَزَّوَجَلَّ से आप عَلَيْهِ السَّلَام पर ज़ाहिर हुवा कि आप عَلَيْهِ السَّلَام के आगे नूर है। इस के बाद जब भी आप عَلَيْهِ السَّلَام पर कोई आला दरजा ज़ाहिर हुवा तो आप

www.dawateislami.net

पर येह भेद खुला कि पिछला दरजा कमाल की चोटी से निचले दरजे पर है और आप عَلَيْهِ السَّلَام इस बात पर मुत्तलअ़ हुवे कि इस की एक इन्तिहा है तो बोले :

لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ۝ (پ۷الانعام:۷٦) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुझे खुश नहीं आते डूबने वाले।

इसी त़रह़ आप عَلَيْهِ السَّلَام हर रुकावट से आगे बढ़ते गए और जब उस ला मह़दूद व ला मुन्तहा बारगाह में पहुंचे तो आप عَلَيْهِ السَّلَام का दूसरों से त़म्अ़ ख़त्म हो गया और इरशाद फ़रमाया : (आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुबारक क़ौल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मुक़द्दस कलाम में ज़िक्र फ़रमाया :)

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ (پ۷،الانعام:۷۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मान व ज़मीन बनाए।

और सालिक उस वक़्त तक इन अन्वार व ह़िजाबात तक नहीं पहुंचता जब तक वोह अपने नफ़्स के ह़िजाबात से न निकल जाए और येह भी अम्रे रब्बानी है बल्कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अन्वार में से एक नूर है, इस से मुराद दिल व रूह़ का वोह राज़ है जिस पर ह़क़ीक़ते ह़क़ पूरी त़रह़ ज़ाहिर होती है ह़त्ताकि उस में तमाम आ़लम की गुन्जाइश पैदा हो जाती है और वोह उसे घेर लेता है और उस में सब की सूरत झलकने लग जाती है यहां तक कि उसे लौहे मह़फ़ूज़ कहा जाता है। जब सालिक उस तक पहुंच जाता है तो उस का नूर पूरी त़रह़ चमकता है, उस वक़्त उस में हर चीज़ का वुजूद अपनी अस्ल ह़क़ीक़त व माहिय्यत के साथ ज़ाहिर हो जाता है और येह पेहले मर्ह़ले में एक फ़ानूस के पीछे होता है जो उस के लिए ढांपने वाले की त़रह़ होता है, जैसा कि इस पर क़ुरआने मजीद दलालत करता है, जब उस का नूर रौशन होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर की तजल्ली के बाद जब उस का जमाल दिल में मुन्कशिफ़ होता है तो बसा अवक़ात साह़िबे क़ल्ब अपने दिल की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाता है और इस में ऐसा वाज़ेह़ जमाल देखता है जो उसे दहशत ज़दा कर देता है और बाज़ अवक़ात उसी शको शुबा और दहशत के आ़लम में उस की ज़बान सबक़त ले जाती है और वोह केह देता है : "मैं ह़क़ हूं।"(1)

1....आला ह़ज़रत, इमामे एह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** में तेह़रीर फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदी हुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज قُدِّسَ سِرُّهٗ जिन को अ़वाम "**मन्सूर**" केहते हैं, मन्सूर इन के वालिद का नाम था, और इन का इस्मे गिरामी हुसैन। (आप) अकाबिरे एह्ले ह़ाल से थे, इन की एक बहन इन से ब दरजहा मर्तबए विलायत व मारिफ़त में ज़ाइद थीं। वोह आख़िर शब को जंगल तशरीफ़ ले जातीं और यादे इलाही (عَزَّوَجَلَّ) में मसरूफ़ होतीं। एक दिन इन की आंख खुली, बहन को न पाया, घर में हर जगह तलाश किया, पता न चला, इन को वस्वसा गुज़रा, दूसरी शब में क़स्दन सोते में जान डाल कर जागते रहे। वोह अपने वक़्त पर उठ कर चलीं, येह आहिस्ता आहिस्ता पीछे हो लिए, देखते रहे। **आस्मान से सोने की ज़न्जीर में याक़ूत का जाम उतरा और उन के दहन मुबारक (यानी मुंह शरीफ़) के बराबर आ लगा, उन्हों ने पीना शुरूअ़ किया,** इन से सब्र न हो सका कि येह जन्नत की नेमत न मिले। बे इख़्तियार केह उठे कि बहन ! तुम्हें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की क़सम कि थोड़ा मेरे लिए छोड़ दो, उन्हों ने एक जुरआ़ (यानी एक घूंट) छोड़ दिया, इन्हों ने पिया, उस के पीते ही हर जड़ी बूटी हर दरो दीवार से इन को येह आवाज़ आने लगी कि कौन इस का ज़्यादा मुस्तह़िक़ है कि...(बक़िय्या अगले सफ़ह़े पर)

www.dawateislami.net

पस अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ उस की रफ़ीक़ हो और अल्ताफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ उस की पुश्त पर हों तो वोह चलता रेहता है, वहां खड़ा नहीं होता फिर वोह अन्वारे इलाही عَزَّوَجَلَّ की मनाज़िल की दूरी को पहचान लेता है, अगर न पहचान सके तो हलाक हो जाता है और येही धोके में मुब्तला होने का मक़ाम है क्यूंकि तजल्ली करने वाली शै और जिस में वोह तजल्ली करती है, दोनों एक हो जाती हैं जैसा कि कोई रंगीन चीज़ शीशे में देखी जाए तो शीशा भी रंगीन नज़र आता है और बन्दा ख़याल करता है कि येह शीशे का रंग है और जिस त़रह़ शीशे के बरतन में डाली हुई चीज़ का रंग शीशे के रंग से मिल जाता है (यानी शीशे के बरतन में रंगीन चीज़ डाल दी जाए तो बरतन भी रंगीन नज़र आता है) जैसा कि इस शेर में कहा गया है :

رَقَّ الزُّجَاجُ وَرَاقَتِ الْخَمْرُ فَتَشَابَهَا فَتَشَاكَلَ الْاَمْرُ

فَكَاَنَّمَا خَمْرٌ وَّلَا قَدَحٌ وَكَاَنَّمَا قَدَحٌ وَّلَا خَمْرٌ

तर्जमा : शीशे का बरतन भी साफ़ शफ़्फ़ाफ़ है और शराब भी पतली है तो वोह दोनों एक जैसे हो गए और मुआ़मला मुश्तबेह हो गया गोया शराब है और प्याला नहीं और प्याला है शराब नहीं ।

ईसाइयों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इसी नज़र से देखा तो उन्हें आप عَلَیْہِ السَّلَام में अन्वारे इलाहिय्या चमकते हुवे नज़र आए जिस से उन को मुग़ालत़ा लगा जैसे कोई शख़्स शीशे या पानी में सितारे को देखे और येह ख़याल करे कि सितारा शीशे या पानी में है, और अपना हाथ बढ़ा कर उसे पकड़ना चाहे, तो ऐसा शख़्स धोके का शिकार है ।

(मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं) राहे सुलूक पर चलने में इस क़दर धोके और मुग़ालते हैं जो कई जिल्दों में भी नहीं आ सकते शायद जो कुछ हम ने ज़िक्र किया उस को भी छोड़ना ज़्यादा बेहतर था क्यूंकि इस रास्ते पर चलने वाले को दूसरों से सुनने की ज़रूरत नहीं होती और जो इस रास्ते पर चलने वाला नहीं उसे सुनने का कोई फ़ाएदा नहीं बल्कि बाज़ अवक़ात उसे नुक़्सान होता है क्यूंकि जब वोह ऐसी बात सुनता है जिस को समझ नहीं पाता और घबरा जाता है लेकिन उस के सुनने वाले को एक फ़ाएदा है कि वोह सुने और तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी उस के शामिले ह़ाल रहे, और वोह येह बात जान ले कि जो कुछ उस के मुख़्तसर ज़ेह्न, नाक़िस ख़याल, मुज़य्यन सोच में है मुआ़मला उस से बुलन्द तर है और

(बक़िय्या ह़ाशिय्या)....हमारी राह में क़त्ल किया जाए। इन्हों ने केहना शुरूअ़ किया, "اَنَا لَا حَقُّ" बेशक मैं सब से ज़्यादा इस का सज़ावार (यानी ह़क़दार) हूं।" लोगों के सुनने में आया, "اَنَا الْحَقُّ" (यानी मैं ह़क़ हूं) वोह (लोग) दावए ख़ुदाई समझे, और येह (यानी ख़ुदाई का दावा) कुफ़्र है। और मुसलमान हो कर जो कुफ़्र करे मुर्तद है और मुर्तद की सज़ा क़त्ल है।" (صحیح البخاری، کتاب استتابة المرتدین والمعاندین وقتالهم، ص٥٧٧، حدیث نمبر ٦٩٢٢) पर है कि) रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : مَنْ بَدَّلَ دِیْنَہٗ فَاقْتُلُوْہُ "तर्जमा : जो अपना दीन बदल दे उसे क़त्ल करो।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 26 स. 400)

www.dawateislami.net

औलियाए किराम की बताई हुई ह़िकायात व मुकाशफ़ात की तस्दीक़ करे लेकिन जिस पर बदबख़्ती ग़ालिब हो और उस के गुनाहों ने उस को घेर लिया हो वोह उसे उसी त़रह़ झुटलाता है जिस त़रह़ उस से पेहले सुन कर झुटलाता था। फ़रमाने ख़ुदावन्दी है :

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۝ (پ۱۹،الشعرآء:۲۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अब जानना चाहते हैं ज़ालिम कि किस करवट पर पलटा खाएंगे।

दुन्यादार व मालदार : चौथी क़िस्म उन मालदारों की है जो मसाजिद, सराए और पुल बनाते हैं और उन पर अपना नाम लिखवाते हैं और इस से अपनी शोहरत और लोगों में अपना नाम हमेशा बाक़ी रखना चाहते हैं और येह सब कुछ करने के बाद वोह मग़फ़िरत का त़म्अ़ रखते हैं ह़ालांकि येह दो वज्ह से ख़त़ा और धोका है।

(1).....एक वज्ह तो येह है कि उन की तामीर ऐसे अमवाल से करते हैं जो ज़ुल्म, ग़सब और लूटमार से ह़ासिल हैं, उन के लिए बेहतर तो येह था कि ऐसे फ़लाह़ी काम करने के बजाए उन अमवाल को उन के मालिकों को लौटाते।

(2)....दूसरी वज्ह येह है कि वोह उन तामीरात से रियाकारी और शोहरत चाहते हैं ह़त्ताकि अगर उन्हें कहा जाए कि वोह ऐसी जगह दीनार ख़र्च करें जहां उन का नाम न लिखा जाए तो उन का नफ़्स सख़ावत पर आमादा नहीं होगा ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर आगाह है ख़्वाह वोह अपना नाम लिखें या न लिखें। इस से मालूम हुवा कि उन का मक़्सद सिर्फ़ रिया और शोहरत है।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो माले ह़लाल से मसाजिद तामीर करते और उन की ख़ूब ज़ेबो आराइश करते हैं, येह भी दो वज्ह से धोके में हैं : (1) एक तो येह कि शायद इन के पड़ोस में कोई फ़क़ीर भूका हो जो मदद का ज़्यादा मुस्तह़िक़ हो और (2) दूसरी येह है कि वोह नमाज़ियों को उन नक़्शो निगार और ज़ेबो ज़ीनत की वज्ह से नमाज़ से ग़ाफ़िल कर देता है। वोह इस एतिबार से धोके में हैं कि उन्हों ने बुराई को नेकी समझा और इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह रिवायत दलालत करती है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब मस्जिदे नबवी बनाने का इरादा किया तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "इसे ऊंचाई में सात हाथ बुलन्द रखें और नक़्शो निगार और ज़ेबो ज़ीनत न फ़रमाएं।"(1)

1....**सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स. 140** पर नक़्ल फ़रमाते हैं : "मस्जिद को चूने और गच से मुनक़्क़श करना जाइज़ है, सोने चांदी के पानी से नक़्शो निगार करना भी जाइज़ है जब कि कोई शख़्स अपने माल से ऐसा करे, माले वक़्फ़ से ऐसा नहीं कर सकता। बल्कि मुतवल्लिये मस्जिद ने अगर माले वक़्फ़ से सोने चांदी का नक़्श कराया तो उसे तावान देना होगा। हां ! अगर बानिए मस्जिद ने नक़्श कराया था जो ख़राब हो गया तो मुतवल्लिये मस्जिद माले मस्जिद से भी नक़्शो निगार करा सकता है। बाज़ मशाइख़ दीवारे क़िब्ला में नक़्शो निगार करने को मकरूह बताते हैं, कि नमाज़ी का दिल उधर मुतवज्जेह होगा।"

(بحوالہ الدر المختار ورد المختار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع ج۹،ص۶۳۶)

www.dawateislami.net

मुख़्तसर येह कि जो शख़्स किसी फ़क़ीर, मिस्कीन या नेकी के दीगर कामों पर माल ख़र्च करता है तो वोह अपने नफ़्स से पूछे कि क्या वोह पोशीदा त़ौर पर सख़ावत करना पसन्द करता है ? अगर इसे येह पसन्द नहीं तो ग़ालिबन इस में रियाकारी या शोहरत मक़्सूद है।

सुवाल : अगर आप येह कहें कि इस तक़्सीम के बाद क्या तदाबीर व अस्बाब होंगे ? क्यूंकि आप ने बयान किया है कि कोई गिरोह धोके से मह़फ़ूज़ नहीं।

जवाब : अगर तुम्हारी ख़्वाहिश सच्ची हो तो तदबीर व अस्बाब की त़रफ़ तुम्हारी रेहनुमाई की जाएगी और येह उस के लिए आसान है जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आसान फ़रमा दे लिहाज़ा जो शख़्स ग़ार से सोना चांदी निकालने, समुन्दर की गेहराई से मछली पकड़ने और फ़ज़ा में उड़ते हुवे परिन्दे को उतारने की क़ुदरत रखता है वोह इस आसान काम से आ़जिज़ नहीं होगा, जब इन्सान आमाल की मुसीबतें पहचान ले और येह बात जान ले कि रिया, जाहो मर्तबा और शोहरत जिन का ज़िक्र पेहले गुज़र चुका है, बाक़ी नहीं रेहतीं बल्कि मौत के साथ ख़त्म हो जाती हैं और अपने नफ़्स की ज़िल्लत और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत को जान ले और येह भी जान ले कि दुन्या धोके का मक़ाम और आख़िरत हमेशा का ठिकाना है तो कोई वज्ह नहीं कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए अ़मल न करे और उन आफ़ात से न बचे।

सुवाल : अगर तुम सुवाल करो कि येह सब कुछ करने के बाद किस चीज़ का ख़ौफ़ होगा ?

जवाब : इस का जवाब येह है कि अब इस बात का ख़ौफ़ होगा कि शैत़ान उस पर मुसल्लत़ न हो जाए और कहे तो वोह आदमी है जो उन आफ़ात से बच गया अब तुझ पर ज़रूरी है कि तू मख़्लूक़ को बुला कर वाज़ो नसीह़त करे, येह शैत़ान की चाल है क्यूंकि जो शख़्स दुन्या के मुआ़मले में उस की ना फ़रमानी करता है तो वोह उस के पास दीन के ज़रीए़ आता है, हम ने वाज़ो नसीह़त की शराइत़ बयान की हैं, अगर वोह इन शराइत़ पर पूरा उतरता है तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करते हुवे वाज़ो नसीह़त करे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उसे तौफ़ीक़ ह़ासिल होगी।

हि़स्सा चहारुम

मुन्जियात (नजात दिलाने वाले आमाल)

बाब : 31 तौबा का बयान

जान लीजिए ! तौबा उस माना का नाम है जो तीन उमूर से तरतीब पाता है :

(1) इ़ल्म (2) ह़ाल (3) फ़ेल

इ़ल्म : गुनाहों के नुक़्सानात को जानने का नाम है और येह बन्दे और उस के हर मेह़बूब के दरमियान ह़िजाब है। जब इन्सान को इस बात की पहचान हो जाए तो उस से दिल में एक ह़ाल उठता है और येह मेह़बूब के न मिलने के ख़ौफ़ की वज्ह पर पैदा होने वाला ग़म है और येही नदामत है और (दिल पर) इस नदामत के छा जाने से तौबा और गुज़श्ता गुनाहों की मुआ़फ़ी का इरादा पुख़्ता होता है।

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने राह़त निशान है : اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ **"तर्जमा :** नदामत तौबा है।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث ٤٢٥٢، ص ٢٧٣٥)

क्यूंकि नदामत इ़ल्म के बाद ही होती है जिस त़रह़ हम ने ज़िक्र किया।

तौबा का वुजूब

तौबा के वुजूब पर अ़क़्ल भी दलालत करती है जैसा कि हम ने बयान किया।

तौबा की फ़ज़ीलत

जान लीजिए ! आयात व अह़ादीस तौबा के वुजूब पर दलालत करती हैं जिस त़रह़ अ़क़्ल तौबा के वुजूब पर दलालत करती है जैसा कि हम बयान कर चुके हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿۱﴾ وَتُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ۝ (پ۱۸، النور:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की त़रफ़ तौबा करो, ऐ मुसलमानो ! सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ।

﴿۲﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ (پ۲۸، التحريم:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीह़त हो जाए।

﴿۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ (پ۲،البقرة: ۲۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को।

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : "तौबा करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मेह्बूब है और गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा ही है गोया उस ने गुनाह किया ही नहीं।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث ٤٢٥٠،ص٢٧٣٥، بدون :التائب حبيب الله)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मसर्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मोमिन बन्दे की तौबा पर उस आदमी से भी ज़्यादा ख़ुश होता है जो शख़्स किसी ना मुवाफ़िक़ हलाकत ख़ेज़ जगह पर उतरे, उस के पास अपनी सुवारी भी हो जिस पर उस का खाना पीना हो, वोह सर रख कर गेहरी नींद सो जाए पस जब वोह बेदार हो तो उस की सुवारी जा चुकी हो, वोह उसे तलाश करता फिरे यहां तक कि उसे सख़्त गर्मी और प्यास लगे, जितनी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे और वोह कहे : मैं अपनी उस जगह की त़रफ़ लौट जाता हूं जहां मैं था ताकि वहां जा कर सो जाऊं यहां तक कि मैं मर जाऊं। पस वोह मरने के लिए अपनी कलाई पर सर रख दे फिर जब वोह बेदार हो तो देखे कि उस की सुवारी उस के पास मौजूद है जिस पर उस का खाना और पानी मौजूद है तो जिस क़दर वोह बन्दा उस सुवारी के मिलने पर ख़ुश होता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे की तौबा से उस से कहीं ज़्यादा ख़ुश होता है।" (صحيح البخاری، كتاب الدعوات، باب التوبة، الحديث٦٣٠٨، ص٥٣١،بتغير)

तौबा के वुजूब पर अइम्मए किराम का इजमाअ़ है अगर तू कहे : तौबा कैसे वाजिब है ? जब कि येह तो दिल में पैदा होने वाली नदामत का नतीजा है और येह बन्दे के इख़्तियार में नहीं ? तो हम इस का जवाब येह देंगे कि इस का सबब इख़्तियार में है और वोह अ़मल की कोशिश करना है, इसी लिए हम केहते हैं कि इ़ल्म ह़ासिल करना ज़रूरी है क्यूंकि येह उस वाजिब तौबा में दाख़िल है न इस वज्ह से कि आदमी इ़ल्म को ख़ुद पैदा करता है बल्कि इ़ल्म, नदामत, फ़ेल, इरादा और क़ुदरत सब उस क़ादिरे मुत़लक़ ज़ात की त़रफ़ से है पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें और तुम्हारे आमाल को पैदा फ़रमाया। अरबाबे बसीरत के नज़्दीक येही बात ह़क़ है और इस के इ़लावा गुमराही है।

अगर तुम कहो : क्या बन्दे को काम करने या छोड़ने का इख़्तियार नहीं ? तो हम जवाब देंगे : हां, है और येह हमारे क़ौल के ख़िलाफ़ नहीं कि "हर चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है।" क्यूंकि इख़्तियार भी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पैदाकर्दा है और बन्दा इस इख़्तियार में भी मजबूर है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब सह़ीह़ हाथ और लज़ीज़ खाना भी पैदा किया, मेदे में खाने का शौक़ और दिल में येह इ़ल्म भी पैदा किया कि येह खाना ख़्वाहिश की तस्कीन का ज़रीआ़ है और येह तरद्दुद भी पैदा किया कि ख़्वाहिश के पूरा करने के साथ क्या येह नुक़्सान देह तो नहीं ? और क्या इस के खाना खाने में कोई रुकावट है या नहीं ? फिर इ़ल्म भी पैदा किया कि कोई रुकावट नहीं। लिहाज़ा इन अस्बाब के जम्अ़ होने पर खाने का इरादा पुख़्ता हो जाता है और येह सब उमूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बनाए गए त़रीक़े से तरतीब पाते हैं मसलन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हाथ में लिखने के लिए ह़रकत उस वक़्त तक पैदा

www.dawateislami.net

नहीं करता जब तक वोह उस में सिफ़ते कुदरत पैदा नहीं करता और जब तक उस में ह़यात पैदा नहीं करता नीज़ जब तक पुख़्ता इरादा नहीं करता और मज़बूत़ इरादे को उस वक़्त पैदा करता है जब ख़्वाहिश और मैलाने नफ़्स पैदा फ़रमाता है और येह मैलान उस वक़्त तक नहीं उभरता जब तक इस बात का इ़ल्म पैदा न करे कि येह मैलान इब्तिदा या इन्तिहा में नफ़्स के मुवाफ़िक़ है और इ़ल्म को भी कुदरत, इरादा और इ़ल्म की त़रफ़ लौटने वाले दीगर अस्बाब के बिग़ैर पैदा नहीं फ़रमाता, पस इ़ल्म और त़बई मैलान हमेशा पुख़्ता इरादे के पीछे चलते हैं, और कुदरत और इरादा हमेशा ह़रकत के ताबेअ़ होते हैं और हर फ़ेल में इसी त़रह़ तरतीब है और येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ है लेकिन बाज़ मख़्लूक़ दूसरी बाज़ के लिए शर्त़ क़रार दी गई है और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का त़रीक़ा है जो उस के बन्दों और उस की उस क़ज़ा में जारी हो चुका है, जो पलक झपकने की देर में वाक़ेअ़ हो जाती है और येह मुकम्मल तरतीब है, जो तब्दील नहीं होती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

اِنَّا كُلَّ شَیْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ۝(پ۲۷، القمر:۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फ़रमाई।

और इन अन्दाज़ों में से एक अन्दाज़ा कुदरत, इरादा, क़स्द और इ़ल्म पैदा करने के बाद कातिब के हाथ में ह़रकत को पैदा करना भी है लिहाज़ा जब येह चारों उमूर तक़दीर के तह़्त मुसख़्ख़र इन्सान के जिस्म पर ग़ालिब आ जाते हैं तो ज़ाहिरी उ़लूम वाले और आ़लमे ग़ैब और मलकूत से ना वाक़िफ़ लोग केहते हैं : ऐ फ़ुलां शख़्स ! तह़क़ीक़ तुम ने ह़रकत की, तुम ने लिखा और तुम ने कंकरी फैंकी वग़ैरा जब कि पर्दए ग़ैब और मलकूत से निदा दी जाती है और इरशाद होता है :

﴿۱﴾ وَمَارَمَیْتَ اِذْ رَمَیْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰی ۚ (پ۹،الانفال:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मेह़बूब ! वोह ख़ाक जो तुम ने फैंकी तुम ने न फैंकी थी बल्कि **अल्लाह** ने फैंकी।

﴿۲﴾ قَاتِلُوْهُمْ یُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَیْدِیْكُمْ (پ۱۰،التوبہ:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन से लड़ो, **अल्लाह** उन्हें अ़ज़ाब देगा तुम्हारे हाथों।

यहां आ कर ज़ाहिरी उ़लूम से वाबस्ता लोगों की अ़क़्लें ह़ैरान हो जाती हैं। फिर बाज़ केहते हैं : बन्दा मजबूरे मह़ज़ है। कोई केहता है : वोह अपने अफ़्आ़ल का ख़ालिक़ है। कुछ एतिदाल पर हैं, पस वोह केहते हैं : बन्दा अपने अफ़्आ़ल को ह़ासिल करने वाला है। अगर उन के लिए आस्मानों के दरवाज़े खोल दिए जाएं और वोह आ़लमे ग़ैब और मलकूत को देख लें तो उन पर ज़ाहिर हो जाए कि उन में से हर एक किसी एतिबार से ह़क़ीक़त के मुत़ाबिक़ केहता है लेकिन सब के सब क़ुसूरवार भी हैं क्यूंकि इन में से कोई भी इस बात की ह़क़ीक़त को नहीं समझ सकता और उस की आगाही आ़लमे ग़ैब की त़रफ़ से खुलने वाली खिड़की से नूर के चमकने से ही हो सकती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ैब व ज़ाहिर से बा ख़बर है, और अपने ग़ैब पर सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के किसी को आगाह नहीं फ़रमाता और जो शख़्स सिलसिलए अस्बाब व मुसब्बिबात को ह़रकत दे और उन के तसल्सुल की

www.dawateislami.net

कैफ़िय्यत और उन के मुसब्बिबुल अस्बाब के साथ तअ़ल्लुक़ की वज्ह जान ले तो उस पर तक़्दीर का राज़ वाज़ेह़ हो जाएगा और उसे इस बात का यक़ीनी इ़ल्म ह़ासिल हो जाएगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई ख़ालिक़ और मूजिद नहीं।

एतिराज़ : अगर तू कहे कि आप ने कहा है कि इन्सान को मजबूरे मह़ज़ समझने वाले, अपने अफ़्आ़ल का ख़ालिक़ मानने वाले और अपने अफ़्आ़ल ह़ासिल करने वाला समझने वाले एक एतिबार से सच्चे हैं और एक एतिबार से उन में कोताही पाई जाती है ?

जवाब : तो मैं जवाब दूंगा : हां और मैं तुम्हें येह चीज़ एक मिसाल से समझाऊंगा, मैं केहता हूं : "नाबीना लोगों की एक जमाअ़त ने सुना कि उन के शह्र में हाथी नामी एक अ़जीब ह़ैवान आ गया है और उन्हों ने न कभी उस के बारे में सुना था, न उस की सूरत देखी थी। केहने लगे : हमें उस का मुशाहदा करना चाहिए और जहां तक हो सके उसे हाथ लगा कर पहचानना चाहिए। पस वोह हाथी के पास चले गए और उसे हाथों से टटोला, किसी का हाथ उस के पाउं पर पड़ा, किसी का सूंड पर और किसी का उस के कान पर। फिर केहने लगे : हम ने हाथी को पहचान लिया। जब वापस आए तो दूसरे नाबीनों ने उन से पूछा तो उन के जवाब मुख़्तलिफ़ थे, जिस ने पाउं को छुवा था उस ने कहा : वोह एक खुरदरे सुतून की त़रह़ है अलबत्ता उस से कुछ नर्म है, जिस ने उस की सूंड को हाथ लगाया था उस ने कहा : जैसा तुम केहते हो वैसा नहीं बल्कि सख़्त है, नर्म नहीं चिकना है, खुरदरा नहीं, सुतून की त़रह़ बिल्कुल मोटा नहीं बल्कि सुतून ही की त़रह़ है, जिस ने उस के कान को छुवा था उस ने कहा : वोह एक मोटा चमड़ा है। तो उन में से हर एक ने सच कहा क्यूंकि हर एक ने हाथी की जितनी पहचान ह़ासिल की उतनी ही ख़बर दी और कोई उस से बाहर नहीं निकला लेकिन उन से ग़लत़ी हुई कि उन्हों ने सोचा कि हम ने पूरे हाथी की पहचान ह़ासिल कर ली है।" इस मिसाल से इ़ब्रत ह़ासिल करो क्यूंकि येह अक्सर उन चीज़ों की मिसाल है जिन में लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं।

अब हम मक़्सद की त़रफ़ लौटते हैं और केहते हैं कि हम ने वुजूबे तौबा के तीन अज्ज़ा बयान किए, अब हम केहते हैं कि गुनाह सरज़द होने पर फ़ौरन तौबा करना **वाजिब** है क्यूंकि गुनाहों को तर्क करना हमेशा वाजिब है। इसी त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करना भी हमेशा वाजिब है। जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَتُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا (پ ۱۸، النور: ۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह की त़रफ़ तौबा करो सब के सब।

इस आयत से येह बात मालूम होती है कि तौबा करना तमाम लोगों पर वाजिब है येह इस लिए कि कोई भी इन्सान आज़ा या ख़यालात के गुनाहों से ख़ाली नहीं होता और इस की कम अज़ कम सूरत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात से ग़ाफ़िल होना या उस से तवज्जोह का हट जाना है और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सिद्दीक़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की येह शान है कि वोह इस से भी तौबा करते हैं।

और वोह औलियाए किराम जिन के सीनों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम के लिए खोल दिया और उन के दिलों पर ईमान लिख दिया वोह जानते हैं कि उन का हर सांस ऐसा नफ़ीस जौहर है

www.dawateislami.net

जो कि अनमोल है ह़त्ताकि दुन्या और जो कुछ इस में है, इस का मुक़ाबला एक सांस से किया जाए तो येह (दुन्याओ मा फ़ीहा) इस की क़ीमत के बराबर नहीं हो सकता पस वोह अपने अवक़ात की ह़िफ़ाज़त करते हैं जब कि दीगर लोग अपनी ग़फ़्लतों में पड़े रेहते हैं यहां तक कि उन में से जब किसी की मौत का वक़्त आ जाए :

فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ (پ ۲۸، المنفقون: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर केहने लगे ऐ मेरे रब ! तू ने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में होता।

इस का माना येह है कि जब बन्दे की निगाहों से पर्दा उठता है तो वोह केहता है : ऐ मौत के फ़रिश्ते ! मुझे एक दिन मोहलत दे दे, ताकि मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उ़ज़्र पेश कर सकूं और तौबा करूं और अपने लिए अच्छा तोशा तय्यार कर लूं। फ़रिश्ता जवाब देता है : तू ने सारी ज़िन्दगी ज़ाएअ़ कर दी अब कोई दिन नहीं मिल सकता। तो वोह केहता है : मुझे एक घड़ी मोहलत दे दे। फ़रिश्ता जवाब देता है : तुम ने तमाम साअ़तें ज़ाएअ़ कर दीं अब कोई साअ़त नहीं पस उस पर तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाता है और जान ह़ल्क़ में आ जाती है और इस अफ़्सोस की ह़ालत में उस की सांस सीने में उखड़ जाती है वोह गुज़श्ता नुक़्सान की तलाफ़ी न करने पर ना उम्मीदी और अपनी सारी ज़िन्दगी ज़ाएअ़ करने पर ह़सरत व नदामत के घूंट पीता है। इन ह़ालात के सदमात में उस का अस्ल ईमान मुज़त़रिब हो जाता है। والعیاذ باللہ

जब उस का दम निकलने लगता है तो अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस की कोई नेकी क़बूल हो चुकी हो तो उस की रूह़ तौह़ीद पर निकलती है और येही ह़ुस्ने ख़ातिमा है लेकिन अगर उस के लिए बदबख़्ती का फ़ैसला हो चुका हो तो उस की रूह़ शक और इज़्त़िराब पर निकलती है। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं और येही बुरा ख़ातिमा है, इसी की मिस्ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

﴿۱﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ (پ ٤، النسآء: ١٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह तौबा उन की नहीं जो गुनाहों में लगे रेहते हैं यहां तक कि जब उन में से किसी को मौत आए तो कहे अब मैं ने तौबा की।

﴿۲﴾ اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ (پ ٤، النسآء: ١٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह तौबा जिस का क़बूल करना **अल्लाह** ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वोह उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी ही देर में तौबा कर लें।

इस का माना येह है कि वोह गुनाह सरज़द होने के बाद नेकी करे तो वोह उस बुराई को मिटा देती है जैसा कि ह़दीसे पाक में वारिद है।

मक़्बूल तौबा का बयान

जान लीजिए! जब तुम्हें क़बूलिय्यत का माना मालूम हो गया तो तुम्हें किसी भी सहीह़ तौ़र पर की गई तौबा के क़बूल होने में शक नहीं होना चाहिए। नूरे बसीरत से देखने वाले और अन्वारे कुरआन से फ़ैज़याब होने वाले लोग जानते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मक़्बूल हर क़ल्बे सलीम को बरोज़े क़ियामत क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का एज़ाज़ ह़ासिल होगा और वोह अपनी बाक़ी रेहने वाली आंखों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार कर सकेगा। और उन्हें मालूम है कि दिल अपनी अस्ल के एतिबार से सलामती वाला पैदा किया गया और इस की सलामती गुनाहों का गर्दो गुबार छा जाने से ज़ाइल होती है। उन्हें येह भी मालूम है कि नदामत की आग इस गुबार को जला कर राख कर देती है और नेकी का नूर दिल के चेहरे से गुनाह की तारीकी को मिटा देता है और नेकियों के अन्वार के सामने गुनाहों के अन्धेरे नहीं ठहरते जैसे दिन की रौशनी के सामने रात के अन्धेरों का बस नहीं चलता और जिस त़रह़ साबुन की सफ़ेदी से मैल की कदूरत बाक़ी नहीं रेहती, इसी त़रह़ तौबाओ इस्तिग़फ़ार और नदामत के नूर से गुनाह बाक़ी नहीं रेहते सिवाए इस के कि गुनाहों की कसरत और हमेशगी की वज्ह से दिल ख़राब हो गया हो। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुफ़्फ़ार के बारे में फ़रमाया :

﴿۱﴾ كَلَّا بَلْ سكتة رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ0 (پ۳۰، المطففين: ١٤)

﴿۲﴾ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ (پ۱۰، التوبة: ۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ने उन के दिलों पर मोहर कर दी।

येह बात कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन के बारे में है जहां तक मुसलमानों का तअ़ल्लुक़ है तो येह बात उन के ह़क़ में नहीं क्यूंकि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَوْ عَلِمْتُمُ الْخَطَايَا حَتّٰى تَبْلُغَ السَّمَاءَ ثُمَّ نَدِمْتُمْ لَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ.

तर्जमा : अगर तुम गुनाहों का इर्तिकाब करो यहां तक कि वोह आस्मान तक पहुंच जाएं फिर तुम्हें नदामत हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाएगा।

(سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث ٤٢٤٨، ص٢٧٣٥، مفهوماً)

किन चीज़ों से तौबा करना ज़रूरी है

तमाम गुनाहों से तौबा करना ज़रूरी है जिन के बारे में आप गुज़श्ता मज़मूमा सिफ़ात और उन से पैदा होने वाली बुराइयों के बयान में जान चुके हैं, पस सग़ीराओ कबीरा तमाम गुनाहों से तौबा करना ज़रूरी है और कहा गया है कि "सग़ीरा गुनाह पर इसरार से वोह सग़ीरा नहीं रेहता और इस्तिग़फ़ार से कबीरा गुनाह बाक़ी नहीं रेहता।" जब आप को येह मालूम हो गया तो जान लो कि वोह गुनाह जिन का

ग़ैर से तअ़ल्लुक़ होता है उन से तौबा दूसरे के फ़ैसला करने और मुआ़मला उस के सिपुर्द करने के बाद ही सह़ीह़ होती है जिस त़रह़ क़िसास, दूसरों के ह़ुक़ूक़ ग़स्ब करना, तावान की मुख़्तलिफ़ अक़्साम और ह़द्दे क़ज़्फ़ वग़ैरा। येह उस शख़्स के लिए है जो तौबा का इरादा करे लेकिन जो तौबा न करे तो हमें चाहिए कि उस के दिल से गुनाहों पर इसरार की गिर्हें खोलने के लिए उसे गुनाहगारों के ह़ालात से डराएं जो आयात व अह़ादीस में वारिद हैं और उस शख़्स का ह़ाल और उस की सज़ा को बयान करें जो तौबा किए बिग़ैर फ़िस्क़ो फ़ुजूर की ह़ालत में मर गया और उस पर येह वाज़ेह़ करें कि कभी दुन्या ही में सज़ा मिल जाती है यहां तक कि अगर वोह आख़िरत की सज़ा से अन्धा हो जाए तो शायद दुन्या की सज़ा से ख़ौफ़ खा जाए। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सात अश्ख़ास को अपने अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा जिस दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए के इ़लावा कोई साया न होगा (1) आ़दिल ह़ुक्मरान (2) वोह नौजवान जिस की जवानी इ़बादते इलाही में गुज़री (3) वोह शख़्स जिस का दिल मस्जिद से निकलते वक़्त मस्जिद में लगा रहे ह़त्ताकि वापस लौट आए (4) वोह दो शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए मह़ब्बत करते हुवे जम्अ़ हुवे और मह़ब्बत करते हुवे जुदा हो गए (5) वोह शख़्स जो ख़ल्वत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता हो और इस की आंखों से आंसू बह निकलें (6) वोह शख़्स जिसे कोई माल व जमाल वाली औ़रत गुनाह के लिए बुलाए और वोह कहे कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं" (7) वोह शख़्स जो इस त़रह़ छुपा कर सदक़ा दे कि उस के बाएं हाथ को ख़बर न हो कि दाएं ने क्या सदक़ा किया।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ،باب فضل اخفاء الصدقۃ،الحدیث ۲۳۸۰، ص ۸٤۰بتقدیمٍ وتاخیرٍ)

बाब : 32 सब्रो शुक्र

जान लीजिए ! ईमान के दो हिस्से हैं : एक हिस्सा सब्र और दूसरा हिस्सा शुक्र है जैसा कि अहादीस और आसार इस बात पर शाहिद हैं।

कुरआनो हदीस में सब्र के फ़ज़ाइल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब्र की तारीफ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

﴿۱﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ط (پ۲۱، السجدة: ۲٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उन में से कुछ इमाम बनाए कि हमारे हुक्म से बताते जब कि उन्हों ने सब्र किया।

﴿۲﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۵ بِمَا صَبَرُوْا ط (پ۹، الاعراف: ۱۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तेरे रब का अच्छा वादा बनी इसराईल पर पूरा हुवा बदला उन के सब्र का।

﴿۳﴾ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا (پ ۱٤، النحل: ۹٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़रूर हम सब्र करने वालों को उन का वोह सिला देंगे।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ईमान के बारे में पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : اَلصَّبْرُ وَالسَّمَاحَةُ "**तर्जमा :** सब्र और सख़ावत करना।"

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی حسن الخلق، الحدیث ۸۰۱٤، ج٦، ص۲٤۲)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : اَلصَّبْرُ كَنْزٌ مِنْ كُنُوْزِ الْجَنَّةِ "**तर्जमा :** सब्र जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।" (موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الصبر، الحدیث ۱٦، ج٤، ص۲٤، الجنة: بدله: الخیر)

हक़ीक़ते सब्र का बयान

जान लीजिए ! सब्र इल्म, हाल और अ़मल से मुरक्कब है, इस में इल्म दरख़्त की त़रह, हाल टहनियों की त़रह और अ़मल फल की त़रह है और तू ने जान लिया कि सब्र में दीनी मस्लह़त है और येह ऐसी कुव्वत है जो सब्र का तक़ाज़ा करती है और येह सब्र या तो इबादत पर हमेशगी इख़्तियार करने से या शहवत को तर्क करने से होता है और यूं वोह तमाम अह़वाल में सब्र ही की किसी क़िस्म को इख़्तियार करता है यहां तक कि वोह मुबाह़ कामों में भी मियाना रवी इख़्तियार करता है और ह़द से नहीं बढ़ता और जहां तक इबादत पर सब्र करने का तअ़ल्लुक़ है तो येह जानना चाहिए कि वोह इस पर कुछ रोज़ सब्र करेगा तो इस के मुक़ाबले में हमेशा सआ़दत पाएगा और इबादत पर सब्र में उसे ज़रूरत है कि इसे न ज़ाहिर करे और न ही दिखावे के ज़रीए ज़ाएअ़ करे और सब से बड़ा सब्र ख़्वाहिशाते

www.dawateislami.net

नफ़्सानिय्या और उस के मूजिबात से बचना है जैसा कि इस का ज़िक्र गुज़र चुका है और वोह बातें जिन पर सब्र करना लाज़िमी है येह हैं कि कोई इन्सान इसे क़ौल या फ़ेल के ज़रीए अज़िय्यत दे।

बाज़ सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم फ़रमाते हैं : "हम किसी मुसलमान को उस वक़्त तक मोमिन शुमार न करते थे जब तक वोह अज़िय्यत पर सब्र न करे।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ۝ (پ۱۳، ابراهیم: ۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर इस पर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिए।

और येह सब्र कभी नफ़्से फ़ेल और उस के एह़तिमाल पर और कभी बदले पर होता है और इस में ईमान का कमाल है।

सब्र की एक दूसरी क़िस्म भी है और वोह येह है कि उन चीज़ों पर सब्र करना जो इन्सान के इख़्तियार में नहीं, जिस त़रह़ बीमारी की मुसीबत, बीनाई का चला जाना, आज़ा का ख़राब होना और रिश्तेदारों का फ़ौत होना वग़ैरा।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : "क़ुरआने मजीद में सब्र की तीन सूरतें मज़्कूर हैं : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आ़इद फ़राइज़ की अदाएगी पर सब्र करना और इस के तीन सौ दरजात हैं (2) जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़राम किया उस पर सब्र करना और इस के छे सौ दरजात हैं (3) मुसीबत पर पेहले सदमे के वक़्त सब्र करना और इस के नौ सौ दरजात हैं।"

सब्रे जमील की तारीफ़

सब्रे जमील येह है कि मुसीबत ज़दा दूसरों में पहचाना न जाए और इस मन्ज़िल तक रसाई त़वील मुद्दत तक त़वील रियाज़त से होती है। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

शुक्र

शुक्र की फ़ज़ीलत येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे अपने ज़िक्र के साथ मिला दिया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

﴿۱﴾ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ (پ۲۱، العنکبوت: ۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक **अल्लाह** का ज़िक्र सब से बड़ा।

﴿۲﴾ فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ۝ (پ۲، البقرة: ۱۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा और मेरा ह़क़ मानो और मेरी नाशुक्री न करो।

﴿۳﴾ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ۝ (پ۴، ال عمران: ۱۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अ़न क़रीब **अल्लाह** शुक्र वालों को सिला देगा।

﴿۴﴾ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ۝ (پ۲۲، سباء: ۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले।

www.dawateislami.net

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَلطَّاعِمُ الشَّاكِرُ بِمَنْزِلَةِ الصَّائِمِ الصَّابِرِ "तर्जमा : खाने वाला शुक्र गुज़ार सब्र करने वाले रोज़ादार की त़रह़ है।" (جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة، باب الطاعم الشاکر، الحدیث۲٤۸٦،ص۱۹۰۲)

ह़क़ीक़ते शुक्र का बयान

शुक्र की ह़क़ीक़त येह है कि बन्दा इस बात को जान ले कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा कोई मुनइ़म (यानी नेमत अ़त़ा करने वाला) नहीं, फिर जब तुम ने अपने आज़ा, जिस्म, रूह़ और अपनी मआ़शी ज़रूरिय्यात के मुआ़मले में अपने ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नेमतों के बारे में तफ़्सीलन जान लिया तो तुम्हारे दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस नेमत व फ़ज़्ल पर ख़ुशी पैदा होगी जो तुझ पर है फिर तुम इस के मूजिबात के मुत़ाबिक़ अ़मल बजा लाओगे और येह दिल, ज़बान और तमाम आज़ा के ज़रीए़ शुक्र अदा करना है।

शुक्र के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े

क़ल्ब के ज़रीए़ शुक्र अदा करना येह है कि दिल में तमाम मख़्लूक़ के लिए भलाई रखे और दिल को हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में ह़ाज़िर रखे और इस से ग़ाफ़िल न हो। **ज़बान** से शुक्र अदा करना येह है कि वोह ज़बान के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शुक्र पर दलालत करने वाली ह़म्द के ज़रीए़ उस का शुक्र अदा करे। **आज़ा** के साथ शुक्र अदा करना येह है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नेमतों को उस की इत़ाअ़त में इस्तिमाल करे और गुनाहों में इस्तिमाल करने से बचे और **आंखों** का शुक्र अदा करना येह है कि किसी मुसलमान का ऐ़ब देखे तो उस पर पर्दा डाले और उस के गुनाहों की त़रफ़ न देखे और **कानों** का शुक्र अदा करना येह है कि जो ऐ़ब सुने उस पर पर्दा डाले और उन से सिर्फ़ मुबाह़ चीज़ ही सुने।

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स से पूछा : "तुम ने सुब्ह़ कैसे की ?" उस ने अ़र्ज़ की : "भलाई के साथ।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोबारा इस्तिफ़्सार फ़रमाया, उस ने वोही जवाब दिया ह़त्ताकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीसरी मरतबा पूछा तो उस ने जवाब दिया : "मैं ने भलाई के साथ सुब्ह़ की, मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करता हूं और उस का शुक्र अदा करता हूं।" नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम से येही बात चाहता था।" (المعجم الاوسط، الحدیث٤۳۷۷، ج۳،ص۲۱٦)

हर शख़्स से जब किसी चीज़ के बारे में पूछा जाता है तो वोह दो चीज़ों के दरमियान होता है, शुक्र अदा कर के मुत़ीअ़ बन जाए या शिक्वा कर के ना फ़रमान हो जाए।

अगर कोई सुवाल करे कि शुक्र का क्या माना है और शुक्र तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से दूसरी नेमत पर होता है ? हम जवाब देते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद और ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

मूसा (عَلَيْهِمَا السَّلَام) ने अ़र्ज़ की : "(ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ) मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूं क्यूंकि जब तक मुझे दूसरी नेमत ह़ासिल न हो, मैं शुक्र अदा नहीं कर सकता ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वही फ़रमाई : "जब तुम ने इस बात को जान लिया तो शुक्र अदा हो गया।" और दूसरी रिवायत में है, जब तुम्हें येह बात मालूम हो गई कि येह नेमत मेरी त़रफ़ से है तो तुम्हारा इस पर राज़ी होना ही शुक्र है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बारे में शुक्र का मफ़्हूम

अगर तू कहे : "मैं येह जवाब नहीं समझा क्यूंकि इसी त़रह़ के इ़ल्म का ह़ासिल होना भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तीसरी नेमत है तो जान ले ! येह तौह़ीद के दरवाज़े पर दस्तक देना है और बेशक वोही शुक्र क़बूल फ़रमाने वाला है, उसी का शुक्र अदा किया जाता है, वोह मह़ब्बत फ़रमाने वाला है और उसी से मह़ब्बत की जाती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी चीज़ का वुजूद नहीं और उस की ज़ात के सिवा सब हलाक होने वाले हैं, और येह बात हर ह़ाल में अज़ल व अबद के एतिबार से सह़ीह़ है कि किसी भी चीज़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा वुजूद नहीं जो क़ाइम बिज़्ज़ात हो और बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही बिज़्ज़ात क़ाइम है और बाक़ी हर चीज़ उसी के हुक्म से क़ाइम है, वोह ज़िन्दा और क़ाइम रखने वाला है पस जब उस के इ़लावा कोई चीज़ मौजूद नहीं तो वोही शाकिरो मश्कूर है, वोही मुह़िब्बो मेह़बूब है।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन अबी ह़बीब عليه رحمة الله المجيب ने इसी नज़र से देखा, जब उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान पढ़ा :

اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ۝ (پ ٢٣، صٓ: ٤٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने उसे साबिर पाया, क्या अच्छा बन्दा, बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला है।

तो इरशाद फ़रमाया : तअ़ज्जुब की बात है, ख़ुद ही देता है और ख़ुद ही तारीफ़ करता है।" येह इस बात की त़रफ़ इशारा है कि जब उस ने अपने देने पर उन की तारीफ़ की तो गोया अपनी तारीफ़ की। पस वोही तारीफ़ करने वाला और उसी की तारीफ़ की जाती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सईद मीहनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी इसी नज़र से देखा, जब उन के सामने येह आयत पढ़ी गई :

يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ (پ ٦، المآئدة: ٥٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा।

तो उन्हों ने फ़रमाया : "मेरी उ़म्र की क़सम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें चाहता है, वोह उन्हें पसन्द करता है, वोह उन्हें पसन्द कर सकता है क्यूंकि वोह (इस त़रह़) अपने आप को चाहता है।"

उन्हों ने इस बात की त़रफ़ इशारा किया है कि वोह मुह़िब है और वोही मेह़बूब है, येह बुलन्द रुत्बा है, जब तक आ़म फ़ेह्म मिसाल न बयान की जाए तुम्हारी समझ में नहीं आता, तुम पर येह बात

www.dawateislami.net

पोशीदा नहीं कि जब कोई मुसन्निफ़ अपनी तस्नीफ़ को पसन्द करता है तो वोह अपने आप को पसन्द करता है, जब कोई कारीगर अपनी मसनूअ़ (यानी बनाई हुई चीज़) को चाहता है तो वोह अपने आप को चाहता है और जब कोई अपने बेटे को अपना बेटा होने की वज्ह से पसन्द करता है तो वोह अपने आप को पसन्द करता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के सिवा हर मौजूद चीज़ उसी की बनाई हुई है, अगर वोह इस से मह़ब्बत करता है तो वोह अपने आप से ही मह़ब्बत करता है। येह कैफ़िय्यत तौह़ीद की निगाह से देखने की सूरत में है और सूफ़ियाए किराम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن इसे फ़नाए नफ़्स से ताबीर करते हैं यानी सालिक अपनी ज़ात से और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ से फ़ना हो कर सिर्फ़ उसी को देखता है और दीगर लोग इस बात को नहीं समझ सकते और इस का इन्कार करते हैं और केहते हैं : बन्दा कैसे फ़ना हो सकता है ? जब कि उस का साया इतना लम्बा है जितना उस का क़द है और वोह रात दिन में कई किलो ग़ल्ला खा जाता है ? और वोह अपनी जहालत की वज्ह से उन बुज़ुर्गों का मज़ाक़ उड़ाते हैं। लेकिन आ़रिफ़ीन के लिए शर्त़ है कि वोह जाहिलों के मज़ाक़ का निशाना बनें और इसी त़रफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमान में इशारा है :

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ۝ (پ ۳۰، المطففین: ۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुजरिम लोग ईमान वालों से हंसा करते थे।

अब हम अपने मौज़ूअ़ की त़रफ़ आते हैं, पस हम केहते हैं : शुक्र अदा करना येह है कि नेमत को उसी रास्ते में इस्तिमाल किया जाए जिस के लिए उसे पैदा किया गया। इस की मिसाल येह है कि एक बादशाह ने अपने किसी ग़ुलाम की त़रफ़ घोड़ा बमअ़ साज़ो सामान भेजा ताकि वोह उस पर सुवार हो कर उस के पास आए पस अगर वोह सुवार हो कर बादशाह के पास आता है और उसे उस रास्ते में इस्तिमाल करता है जिस के लिए उसे भेजा गया तो वोह उस नेमत को इस त़रह़ इस्तिमाल करने वाला है जिस मक़्सद के लिए वोह है लेकिन अगर वोह इस पर सुवार हो कर बादशाह से दूर हो जाए और उस से भाग जाए तो येह ह़माक़त और नेमत की नाशुक्री है।

इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ وَاِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَالْمَآبُ.

बाब : 33 रजा और ख़ौफ़ का बयान

रजा

जान लीजिए ! उम्मीद और ख़ौफ़ सालिकीन के मक़ामात और त़ालिबीन के अह़वाल में से हैं और जब तक कोई वस्फ़ आ़रिज़ी और ज़ाइल होने वाला हो, तो उसे **ह़ाल** केहते हैं और जब पुख़्ता हो जाए तो उसे **मक़ाम** कहा जाता है।

पस हम केहते हैं, जान लीजिए ! अगर मुस्तक़्बिल में किसी ऐसी चीज़ का इन्तिज़ार हो जिस से दिल को तक्लीफ़ होती हो उसे ख़ौफ़ कहा जाता है और अगर वोह ऐसी चीज़ हो जिस से दिल को ख़ुशी ह़ासिल होती हो तो उसे उम्मीद कहा जाता है। गोया उम्मीद दिल की राह़त का नाम है जो मेह़बूब चीज़ के इन्तिज़ार से ह़ासिल होती है लेकिन इस का कोई सबब होना ज़रूरी है लिहाज़ा जब इस के अक्सर अस्बाब पाए जाएं तो इस पर रजा (यानी उम्मीद) का लफ़्ज़ सादिक़ आता है और अगर उस का इन्तिज़ार बिग़ैर अस्बाब के हो तो इस पर ग़ुरूर (यानी धोके) का लफ़्ज़ सादिक़ आता है और अगर अस्बाब का होना और न होना बराबर हो तो इस पर तमन्ना का लफ़्ज़ सादिक़ आता है।

एह्ले मारिफ़त जानते हैं कि दुन्या आख़िरत की खेती है, दिल ज़मीन की त़रह़ है, जिस में ईमान बीज की त़रह़ है और इ़बादत ज़मीन को सेराब करने, उलट पुलट करने और ज़मीन को ज़र ख़ेज़ बनाने वाली चीज़ों की त़रह़ है और दुन्या में ग़र्क़ और डूबा हुवा दिल उस बन्जर ज़मीन की त़रह़ है जिस में बीज नहीं उगता और यौमे क़ियामत फ़स्ल काटने का दिन है और हर शख़्स वोही काटेगा जो उस ने बोया होगा और खेती का बढ़ना ईमान के बीज के बिग़ैर ना मुमकिन है और जब दिल में ख़बीस और बुरे अख़्लाक़ हों तो ईमान बहुत कम नफ़्अ़ देता है जिस त़रह़ बन्जर ज़मीन में बीज नहीं उगता पस जिस शख़्स को उ़म्दा ज़मीन, पानी, ज़रूरी सामान और तमाम ख़राबियों से पाक ज़मीन ह़ासिल हो जाए पस वोह उस में अच्छा बीज डाले फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल का उम्मीदवार बन कर खेती के कटने का इन्तिज़ार करे कि वोह ज़मीन को बिजली की गरज और दीगर ख़राबियों से बचाएगा। पस इसी त़रीक़े का नाम उम्मीद है।

और अगर इन्सान शोरज़दा सख़्त ज़मीन में बीज डाल दे कि उस तक पानी न पहुंचे फिर उस के कटने का इन्तिज़ार करे, तो उसे धोका केहते हैं और अगर बीज अच्छी ज़मीन में बोए, लेकिन उसे पानी न मिले और बारिश के पानी पर एतिमाद करते हुवे उस के कटने का इन्तिज़ार करे तो उसे तमन्ना कहा जाता है।

पस तुम्हें मालूम हो गया कि जो शख़्स अपने दिल में ईमान की खेती बोता है और उस को इ़बादात का पानी देता है और दिल को ख़बाइस से पाक करता है, जिस त़रह़ वोह ज़मीन को कांटों और घास फूस से पाक करता है तो उसे उम्मीद रखनी चाहिए लेकिन जो ऐसा नहीं करता वोह फ़ुज़ूल तमन्ना करने वाला और धोके में मुब्तला है।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अ़क़्लमन्द वोह है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात को कमज़ोर कर दे और मौत के बाद आने वाली ज़िन्दगी के लिए अ़मल करे और बे वुक़ूफ़ वोह है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से लम्बी उम्मीदें रखे।" (فردوس الأخبار للديلمی، باب الكاف، الحديث ٤٩٦٦، ج٢، ص١٨٥، الاحمق بدله العاجز)

ऐसे लोगों के बारे में ख़बर देते हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ (پ٩، الاعراف: ١٦٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर उन की जगह उन के बाद वोह ना ख़लफ़ आए कि किताब के वारिस हुवे, इस दुन्या का माल लेते हैं और केहते अब हमारी बख़्शिश होगी।

इस आयते मुबारका में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वाज़ेह़ फ़रमाया कि इस क़िस्म की उम्मीद की कोई ह़क़ीक़त नहीं जब तक वोह तमाम अस्बाब न पाए जाएं जिन का इस से पेहले होना ज़रूरी है, इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद ख़ैल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की येह रिवायत भी दलालत करती है कि उन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "मैं उस शख़्स की अ़लामत पूछने आया हूं, जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भलाई का इरादा फ़रमाता है और उस की अ़लामत भी बयान फ़रमा दीजिए जिस से भलाई का इरादा नहीं फ़रमाता ?" नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से पूछा : "तुम ने सुब्ह़ किस ह़ाल में की ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि मैं भलाई और एह्ले ख़ैर से मह़ब्बत करता हूं और अगर मैं किसी नेकी पर क़ादिर होता हूं तो उस की त़रफ़ जल्दी करता हूं और सवाब के मिलने पर यक़ीन रखता हूं और अगर मुझ से कोई अ़मल छूट जाए तो उस पर ग़मगीन होता हूं और उस का मुश्ताक़ होता हूं।" तो नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस से भलाई का इरादा फ़रमाता है उस की येही अ़लामत है और अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का तेरे साथ दूसरा इरादा होता तो वोह तुम्हें उस की त़रफ़ ले जाता, फिर उसे इस बात की परवाह न होती कि तुम किस वादी में हलाक होते हो।" (حلية الاولياء، عبد الله بن مسعود، الحديث ١٣٠٠، ج١، ص٤٦١)

पस नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस शख़्स की अ़लामत बयान की जिसे भलाई के लिए मुन्तख़ब किया जाता है और उस से रजा का माना भी मालूम होता है।

उम्मीद की फ़ज़ीलत और तरग़ीब

जानना चाहिए ! उम्मीद के साथ अ़मल करना ख़ौफ़ के साथ अ़मल करने से अफ़्ज़ल है, क्यूंकि सब से ज़्यादा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़रीब वोह लोग हैं जो सब से ज़्यादा उस से मह़ब्बत रखते हैं और मह़ब्बत उम्मीद के साथ ग़ालिब होती है, क्यूंकि भलाई की उम्मीद क़ुर्ब व मह़ब्बत पैदा करती है,

www.dawateislami.net

जब कि ख़ौफ़ दूर भागने का सबब बनता है और उसी की त़रफ़ शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान में इशारा है :

لَا يَمُوْتُنَّ أَحَدُكُمْ إِلَّا وَهُوَ يَحْسُنُ الظَّنَّ بِاللّٰهِ.

तर्जमा : तुम में से हर एक को इस ह़ालत में मौत आए, कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखता हो।

(صحيح مسلم، كتاب الفتن، باب الامر بحسن الظن بالله عند الموت، الحديث٧٢٢٩، ص١١٧٦)

हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर, मेह़बूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक शख़्स के पास तशरीफ़ ले गए, जो नज़्अ़ के आ़लम में था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : "तुम अपने आप को कैसा पाते हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं अपने आप को यूं पाता हूं कि मुझे अपने गुनाहों का ख़ौफ़ भी है और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रेह़मत की उम्मीद भी। तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐसे वक़्त में जिस बन्दे के दिल में येह दोनों बातें (यानी उम्मीद और ख़ौफ़) जम्अ़ हों, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस की उम्मीद के मुत़ाबिक़ अ़त़ा फ़रमाता है और जिस चीज़ से उसे ख़ौफ़ होता है उस से अम्न अ़त़ा फ़रमाता है।" (جامع الترمذی، ابواب الجنائز، باب الرجاء بالله والخوف بالذنب عند الموت، الحديث٩٨٣،ص١٧٤٥)

जानना चाहिए ! जिस शख़्स पर इस ह़द तक मायूसी ग़ालिब हो कि वोह ना उम्मीद हो जाए या उस पर इतना ख़ौफ़ ग़ालिब हो कि उस की वज्ह से वोह अपने आप को और अपने घरवालों को नुक़्सान पहुंचाए, तो येह दोनों ऐसे इ़लाज के मोह़ताज हैं जो उन को राहे एतिदाल की त़रफ़ लाए और वोह शख़्स जिस पर गुनाहों का ग़लबा हो, उस के ह़क़ में उम्मीद के अस्बाब ज़हरे क़ातिल हैं और वोह शहद की त़रह़ हैं जिस में उस शख़्स के लिए शिफ़ा है जिस पर सर्दी ग़ालिब हो और अगर ऐसा शख़्स उसे इस्तिमाल करे जिस पर ह़रारत ग़ालिब हो तो वोह हलाक हो जाएगा। लेकिन जिस शख़्स पर तमन्ना ग़ालिब हो और वोह ना फ़रमान हो तो उस का इ़लाज ख़ौफ़ पैदा करने वाले अस्बाब से करना चाहिए और जिस शख़्स पर ख़ौफ़ ग़ालिब हो उस का इ़लाज उम्मीद से किया जाए, येह दो ह़िस्से हैं जिन से हर एक अपनी ख़ास ह़ालत के मुत़ाबिक़ सेराब होता है।

अमीरुल मोमिनीन, मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इरशाद फ़रमाते हैं : "आ़लिम वोह है जो न तो लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रेह़मत से ना उम्मीद करे और न ही उस की ख़ुफ़्या तदबीर से अम्न दिलाए।"

जब उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वारिस हैं, तो वोह दिलों के भी त़बीब हैं लिहाज़ा येह वोही चीज़ इस्तिमाल करें, जो हर मरीज़ की ह़ालत के मुत़ाबिक़ है।

उम्मीद के ह़ुसूल में नाफ़ेअ़ दवा येह है कि इन्सान उन नेमतों पर ग़ौर करे जो बदन की सेह़्ह़त और आज़ा की सलामती की सूरत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे अ़त़ा फ़रमाईं, फिर उस की रेहनुमाई के

www.dawateislami.net

लिए अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया और उस की इस्लाह़ के लिए खाने पीने की अश्या और दवाएं पैदा फ़रमाईं और उम्मीद के अस्बाब को कुव्वत देने वाली चीज़ (यानी रेह़मत) बनाई जिस के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

﴿۱﴾ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ (پ۲٤،الزمر:٥٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ, ऐ मेरे वोह बन्दो ! जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़्यादती की **अल्लाह** की रेह़मत से ना उम्मीद न हो, बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है।

﴿۲﴾ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ (پ۲٥،الشورٰی:٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते और ज़मीन वालों के लिए मुआ़फ़ी मांगते हैं।

﴿۳﴾ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ (٢٣،الزمر:١٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन के ऊपर आग के पहाड़ हैं और उन के नीचे पहाड़। इस से **अल्लाह** डराता है अपने बन्दों को।

इस आयत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वाज़ेह़ फ़रमाया कि वोह ईमान वालों को डराता है मगर येह (अ़ज़ाब) काफ़िरों के लिए है क्यूंकि येह उन्ही के लिए पैदा किया गया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है :

أُمَّتِيْ أُمَّةٌ مَّرْحُوْمَةٌ لَا عَذَابَ عَلَيْهَا فِي الْآخِرَةِ.

तर्जमा : मेरी उम्मत, उम्मते मर्हूमा है उस पर आख़िरत में कोई अ़ज़ाब नहीं।

(سنن ابی داؤد، کتاب الفتن، باب مایرجی فی القتل، الحدیث٤٢٧٨،ص١٥٣٤)

इस मौज़ूअ़ पर बे शुमार आयात व अह़ादीस वारिद हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़वील ह़दीस में येह मज़मून है कि एक आराबी ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! बरोज़े क़ियामत मख़्लूक़ का ह़िसाब कौन लेगा ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ।" उस ने पूछा : "क्या वोह ख़ुद ह़िसाब लेगा ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हां।" (येह सुन कर) आराबी हंस पड़ा, तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ आराबी ! किस वज्ह से हंसे हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : إِنَّ الْكَرِيْمَ إِذَا قَدَرَ عَفَا وَإِذَا حَاسَبَ سَامَحَ "**तर्जमा :** बेशक करीम जब क़ुदरत पाता है तो मुआ़फ़ कर देता है और जब ह़िसाब लेता है तो भी दरगुज़र फ़रमाता है।" तो शफ़ीक़ आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आराबी ने सच कहा,

www.dawateislami.net

आगाह रहो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बढ़ कर कोई करीम नहीं, वोह सब करीमों से बढ़ कर करीम है ।" फिर फ़रमाया : "येह ह़क़ीक़त आराबी समझ गया ।"

(شعب الایمان للبیهقی ،باب فی حشر الناس ،الحدیث:۲٦۲،ج۱،ص۲٤٦۔۲٤۷،مختصرًا)

और ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

سَبَقَتْ رَحْمَتِیْ غَضَبِیْ. **तर्जमा :** मेरी रेह़मत मेरे ग़ज़ब पर सबक़त ले गई ।

(صحیح مسلم، کتاب التوبة، باب فی سعة رحمة اللّٰه تعالی وأنها تغلب غضبه، الحدیث ۵۹۷۰،ص۱۱۵۵)

ख़ौफ़ का बयान

जानना चाहिए ! ख़ौफ़ और उम्मीद दो लगामें हैं जिन के ज़रीए़ उस शख़्स को क़ाबू किया जाता है जिस के दिल में जमाले ह़क़ ज़ाहिर न हुवा हो और जिस ने दिल के साथ उस जमाले ह़क़ का मुशाहदा कर लिया, वोह ख़ौफ़ो रजा से बुलन्द हो गया ।

ह़ज़रते सय्यिदुना वासिती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इसी बात की त़रफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाया : "ख़ौफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और बन्दे के दरमियान ह़िजाब है और जब दिलों पर ह़क़ ज़ाहिर हो जाए तो उन में उम्मीद व ख़ौफ़ की कोई फ़ज़ीलत बाक़ी नहीं रेहती ।"

ख़ुलासए कलाम येह है, कि जब मुह़िब मेह़बूब के जमाल को ह़ासिल कर लेता है तो उस की तवज्जोह फ़िराक़ के ख़ौफ़ से मेह़बूब के विसाल को ज़ाएअ़ कर देती है, लेकिन हम इस वक़्त मक़ामात की इब्तिदा के बारे में गुफ़्तगू कर रहे हैं, इस लिए हम केहते हैं कि अपने ऊपर ख़ौफ़ त़ारी करने का त़रीक़ा येह है कि इन्सान शिद्दते अ़ज़ाब व ह़िसाब के बारे में वारिद होने वाली आयाते करीमा और अह़ादीसे मुबारका में ग़ौरो फ़िक्र करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मतो जलाल के मुक़ाबले में अपनी ह़ालत देखे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में ग़ौर करे, (जैसा कि ह़दीसे क़ुद्सी है)

هٰؤُلَاءِ فِی الْجَنَّةِ وَلَا اُبَالِیْ، هٰؤُلَاءِ فِی النَّارِ وَلَا اُبَالِیْ. **तर्जमा :** वोह जन्नत में हों तब भी मुझे परवाह नहीं और वोह दोज़ख़ में हों फिर भी मुझे कोई परवाह नहीं ।

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبد الرحمٰن بن قتادة السلمی، الحدیث۱۷٦۷٦،ج٦،ص۲۰۵۔۲۰٦)

और वोह जान ले कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़काम को तर्क करने और उस के नवाही का इर्तिकाब करने से वोह दर्दनाक अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ होगा, और अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तमाम जहानों को हलाक कर दे तो फिर भी उसे कोई परवाह नहीं और उस मिस्कीन ने गुनाहों और जराइम का इर्तिकाब किया है तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने का ज़्यादा मुस्तह़िक़ है, अगर उसे हलाक कर दिया गया तो उस की परवाह नहीं की जाएगी और उस की क्या हैसिय्यत ? जब कि तमाम रसूलों के सरदार,

शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِاللّٰهِ وَاَخْشَاكُمْ لِلّٰهِ. "**तर्जमा :** मुझे तुम्हारी निस्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़्यादा इल्म है और तुम से ज़्यादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं।" (صحيح البخارى، كتاب الادب، باب من لم يواجه الناس .....الخ، الحديث ٦١٠١، ص٥١٥، بتغيرٍ قليلٍ)

(صحيح مسلم، كتاب الصيام، باب صحة صوم من طلع عليه الفجر وهو جنب، الحديث ٢٥٩٣، ص٨٥٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वही फ़रमाई कि "ऐ दावूद ! मुझ से इस त़रह़ डरो जिस त़रह़ चीरने फाड़ने वाले दरिन्दे से डरते हो।"

और दरिन्दे की ह़क़ीक़त येह है कि वोह तुझे हलाक कर देगा और कोई परवाह नहीं करेगा और रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता है हर चीज़ उस से डरती है और जो ग़ैरुल्लाह से डरता है वोह हर चीज़ से डरता है।"

(شعب الايمان للبيهقى، باب فى الخوف من الله تعالى، الحديث ٩٧٤، ج١، ص٥٤١، مفهومًا)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या इस आयत وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ (پ١٨، المؤمنون: ٦٠) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो देते हैं जो कुछ दें और उन के दिल डर रहे हैं" से चोर और ज़ानी मुराद हैं ?" तो नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَا بَلْ يَصُوْمُ وَيَتَصَدَّقُ وَيُصَلِّيْ وَيَخَافُ أَنْ لَا يُقْبَلَ مِنْهُ.

तर्जमा : नहीं, बल्कि वोह शख़्स मुराद है जो रोज़ा रखता, सदक़ा देता और नमाज़ पढ़ता है फिर भी इ़बादत के क़बूल न होने से डरता है।

(سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب التوقى على العمل، الحديث ٤١٩٨، ص٢٧٣٢)

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : "जिस बन्दए मोमिन की आंखों से ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ से आंसू निकलते हैं, वोह अगर्चे मख्खी के सर के बराबर हो फिर उसे उन के निकलते वक़्त कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम की आग पर ह़राम फ़रमा देता है।" (سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب الحزن والبكاء، الحديث ٤١٩٧، ص٢٧٣٢)

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है : "जब हवा में तब्दीली होती और सख़्त आंधी चलती तो नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर का रंग मुतग़य्यर हो जाता और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खड़े हो जाते और हुजरए मुबारका में चक्कर लगाते, कभी अन्दर जाते कभी बाहर तशरीफ़ लाते।"

(صحيح مسلم، كتاب الكسوف، باب التعوذ عند رؤية الريح، الحديث ٢٠٨٤/٢٠٨٥/٢٠٨٦، ص٨١٨)

www.dawateislami.net

येह सब कुछ अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की वज्ह से था और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूरतुल ह़ाक़्क़ह की एक आयत की तिलावत फ़रमाई तो बेहोश हो गए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ج (پ۹، الاعراف:۱۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मूसा गिरा बेहोश।

मरवी है : "रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अब्त़ह़ (के मक़ाम) पर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام की सूरत देखी तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहोश हो गए।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰه بن العباس بن عبد المطلب، الحديث۲۹۶۷، ج۱، ص۶۹۱، مفهوماً)

नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام जब भी मेरे पास आते ख़ुदाए जब्बार عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से कांप रहे होते।"

(العظمة لأبی الشيخ الأصبهانی، باب ذكر الموكلين فی السموات والأضين، الحديث۳۶۵، ص۱۳۱، مفهوماً)

कहा जाता है कि जब इब्लीस लईन पर ज़ाहिर हुवा जो उस पर लाज़िम हो चुका था (यानी मर्दूद होना) तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल व मीकाईल عَلَيْهِمَا السَّلَام रोने लगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वही करते हुवे इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम दोनों क्यूं रोते हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ नहीं।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "तुम इसी त़रह़ रेहना और मेरी ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ न होना।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ से उन के दिल की धड़कन एक मील के फ़ासिले से सुनाई देती।"

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चालीस दिन तक ह़ालते सजदा में रोते रहे और सर न उठाया, ह़त्ताकि आप के आंसूओं से घास उग आई और उस ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सर को ढांप लिया, आप को निदा दी गई : "ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! क्या तुम भूके हो कि तुम्हें खाना खिलाया जाए ? या प्यासे हो कि पानी पिलाया जाए ? या बे लिबास हो तो कपड़े पेहनाए जाएं ?" एक चीख़ बुलन्द हुई और आप عَلَيْهِ السَّلَام के बदन की गर्मी से लकड़ी जल गई, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर तौबाओ मग़फ़िरत नाज़िल फ़रमाई, उन्हों ने अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी लग़्ज़िशों को मेरी हथेली में रख दे, तो आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की लग़्ज़िश आप عَلَيْهِ السَّلَام की हथेली में रख दी गई। पस आप عَلَيْهِ السَّلَام जब भी खाने या पीने या किसी दूसरे काम के लिए हथेली खोलते तो उसे देख कर रोते। रावी

फ़रमाते हैं : "आप عَلَيْهِ السَّلَام को पानी का प्याला दिया जाता, तो उस का तिहाई हिस्सा ख़ाली होता, जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उसे पकड़ते और अपनी लग़्ज़िश को देखते तो उसे होंटों पर न रखते, हत्ताकि प्याला आंसूओं से भर जाता।" आप عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में येह भी मरवी है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام ने विसाल तक आस्मान की त़रफ़ सर नहीं उठाया।

आप عَلَيْهِ السَّلَام अपनी दुआओं में यूं अ़र्ज़ गुज़ार होते : "ऐ मेरे माबूद ! जब मुझे अपनी ख़त़ा याद आती है, तो ज़मीन कुशादगी के बा वुजूद मुझ पर तंग हो जाती है और जब मैं तेरी रेह़मत याद करता हूं, तो मेरी रूह़ मेरी त़रफ़ लौट आती है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरी ज़ात पाक है, मैं तेरे बन्दों में से त़बीबों के पास गया, ताकि वोह मेरे गुनाहों का इलाज करें, तो उन में से हर एक ने तेरी त़रफ़ रेहनुमाई की, पस तेरी रेह़मत से मायूस होने वालों के लिए ख़राबी है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुझे येह बात पहुंची है कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी लग़्ज़िश को याद किया, तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चीख़ते हुवे, सर पर हाथ रख कर पहाड़ों की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए, तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के गिर्द दरिन्दे जम्अ़ हो गए, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आ़जिज़ी करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "जाओ, मुझे तुम से कोई ग़रज़ नहीं, मैं तो उसे चाहता हूं जो अपनी ख़त़ा पर रोए और मेरे सामने रोता हुवा आए, जो ख़त़ाकार नहीं उसे लग़्ज़िशें करने वाले दावूद से क्या काम ?" जब आप عَلَيْهِ السَّلَام को ज़्यादा रोने से रोका जाता, तो आप عَلَيْهِ السَّلَام इरशाद फ़रमाते : "मुझे रोने दो, इस से पेहले कि रोने का दिन चला जाए, हड्डियां जल जाएं और आंतें भड़क उठें और इस से पेहले कि मेरे बारे में सख़्त क़िस्म के फ़रिश्तों को हुक्म दिया जाए, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ख़िलाफ़ वरज़ी नहीं करते और जिस बात का हुक्म दिया जाए वोह बजा लाते हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से लग़्ज़िश हुई तो आप عَلَيْهِ السَّلَام की आवाज़ बदल गई, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! सिद्दीक़ीन की साफ़ आवाज़ में मेरी आवाज़ बदली हुई है।"

मरवी है कि : "जब आप عَلَيْهِ السَّلَام का रोना ज़्यादा हो गया और उस से आप عَلَيْهِ السَّلَام को फ़ाएदा न हुवा तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दिल में तंगी महसूस की और आप عَلَيْهِ السَّلَام का ग़म ज़्यादा हो गया तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! क्या तुझे मेरे रोने पर रेह़म न आया ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप की त़रफ़ वह़ी भेजी : "ऐ दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ! तुम अपनी लग़्ज़िश भूल गए और रोना याद है ?" आप ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे माबूद ! ऐ मेरे सरदार ! मैं अपनी लग़्ज़िश को कैसे भूल सकता हूं जब कि मेरी ह़ालत तो येह थी कि जब मैं तौरात पढ़ता तो जारी पानी रुक जाता, हवा का चलना थम जाता, परिन्दे मेरे सर पर साया करते और वह़शी जानवर मेरे मेह़राब में मुझ से मानूस होते, ऐ मेरे माबूद

عَزَّوَجَلَّ ! ऐ मेरे सरदार ! येह कैसी वह़शत है जो मेरी और तेरे दरमियान ह़ाइल है ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वही फ़रमाई : "ऐ दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ! वोह इत़ाअ़त का उन्स था और येह लग़्ज़िश की वह़शत है ।"

ऐ दावूद ! आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) मेरी मख़्लूक़ में से थे, मैं ने उन्हें अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा फ़रमाया और उन में अपनी रूह़ फूंकी, अपने फ़रिश्तों से उन को सजदा करवाया और उन्हें अपनी करामत का लिबास पेहनाया, उन्हें अपने वक़ार का ताज पेहनाया, उन्हों ने तन्हाई की शिकायत की, तो मैं ने अपनी बन्दी ह़व्वा को उन के निकाह़ में दिया, उन्हें अपनी जन्नत में ठहराया, लेकिन जब उन से लग़्ज़िश हुई तो मैं ने उन्हें बे लिबास कर के अपने क़ुर्ब से दूर कर दिया, ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! मुझ से सुनो और मैं सच ही केहता हूं : तुम ने सुवाल किया तो हम ने तुम्हें अ़त़ा किया, तुम से लग़्ज़िश हुई तो हम ने तुम्हें मोहलत दी और अगर तुम हमारी त़रफ़ रुजूअ़ करोगे, तो हम क़बूल करेंगे ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अबी कसीर عليه رحمة الله العليم फ़रमाते हैं : "हमें ख़बर मिली कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام गिर्याओ ज़ारी करना चाहते, तो इस से पेहले सात दिन इस त़रह़ गुज़ारते कि न खाना खाते, न पानी पीते और न अपनी औ़रतों के क़रीब जाते, जब एक दिन रेहता, तो उन के लिए जंगल में मिम्बर लाया जाता, फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्म फ़रमाते कि वोह शह़रों और इर्द गिर्द वालों को निदा दें, घने दरख़्तों और जंगलों में एलान करें । येह एलान सुन कर जंगलों से दरिन्दे आ जाते, पहाड़ों से कीड़े मकोड़े, टीलों से परिन्दे और कंवारी लड़कियां अपने पर्दों से निकल आतीं और उस दिन तमाम लोग जम्अ़ होते । ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ ला कर मिम्बर पर बैठ जाते और बनी इसराईल आप عَلَيْهِ السَّلَام के इर्द गिर्द होते, उन की हर क़िस्म अ़लाह़दा त़ौर पर आप عَلَيْهِ السَّلَام को घेरे होती, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आप عَلَيْهِ السَّلَام के सर के पास खड़े हो जाते । आप عَلَيْهِ السَّلَام अपने रब عَزَّوَجَلَّ की सना शुरूअ़ करते तो लोग चीख़ें मारते और दहाड़ें मार मार कर रोते, फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام जन्नत और दोज़ख़ का ज़िक्र फ़रमाते तो कीड़े मकोड़े, वह़शी जानवर और दरिन्दे मर जाते फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام क़ियामत की हौलनाकियों का तज़किरा करते और अपने आप पर गिर्याओ ज़ारी करते तो हर क़िस्म की मख़्लूक़ में से एक गिरोह मर जाता । जब ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मरने वालों की कसरत देखते तो अ़र्ज़ करते : "ऐ अब्बा जान ! आप عَلَيْهِ السَّلَام ने सुनने वालों को टुकड़े टुकड़े कर दिया और बनी इसराईल के कई लोग नीज़ बहुत से वह़शी जानवर और कीड़े मकोड़े मर गए पस आप عَلَيْهِ السَّلَام दुआ़ शुरूअ़ कर देते ।

आप عَلَيْهِ السَّلَام ह़ालते दुआ़ ही में होते तो बनी इसराईल में से बाज़ इ़बादत गुज़ार पुकारते : "ऐ दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ! आप ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से जज़ा त़लब करने में जल्दी की ।" रावी केहते हैं : "(येह सुन कर) ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए, जब ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام येह सूरते ह़ाल देखते, तो एक चारपाई ला कर आप عَلَیْہِ السَّلَام को उस पर उठा लेते, और किसी मुनादी को हुक्म देते कि वोह यूं पुकारे : "सुनो ! ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام के साथ जिस का कोई दोस्त और क़रीबी था, वोह चारपाई ला कर उस को उठा ले, क्यूंकि जो लोग आप عَلَیْہِ السَّلَام के हमराह थे, उन्हें जन्नत और दोज़ख़ के ज़िक्र ने हलाक कर दिया है, तो एक औ़रत चारपाई लाती और अपने क़रीबी रिश्तेदार को उठा कर ले जाती और केहती : ऐ वोह शख़्स जो जहन्नम के ज़िक्र से मर गया, ऐ वोह शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से हलाक हो गया।

फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इफ़ाक़ा होता और आप عَلَیْہِ السَّلَام अपना दस्ते मुबारक अपने सर पर रखते और अपनी इ़बादत गाह में दाख़िल हो कर उसे बन्द कर देते और अ़र्ज़ करते : "ऐ दावूद के माबूद عَزَّوَجَلَّ ! क्या तू दावूद पर नाराज़ है ?" और अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुसलसल मुनाजात करते रेहते ह़त्ताकि ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाते और दरवाज़े पर बैठ कर अन्दर आने की इजाज़त त़लब करते, फिर अन्दर दाख़िल होते और आप عَلَیْہِ السَّلَام के पास जव की एक रोटी होती और अ़र्ज़ करते "ऐ अब्बा जान ! इस रोटी के ज़रीए़ त़ाक़त ह़ासिल कीजिए।" चुनान्चे, आप عَلَیْہِ السَّلَام इस से जिस क़दर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता तनावुल फ़रमाते, फिर बनी इसराईल के पास तशरीफ़ ले आते।

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : "एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام लोगों को वाज़ करने और आख़िरत का ख़ौफ़ दिलाने के लिए बाहर तशरीफ़ लाए, तो आप عَلَیْہِ السَّلَام के साथ चालीस हज़ार अफ़राद थे, फिर उन में से तीस हज़ार मर गए और दस हज़ार आप के साथ वापस आए, आप عَلَیْہِ السَّلَام की दो लौंडियां थीं, यहां तक कि जब आप عَلَیْہِ السَّلَام पर ख़ौफ़ की ह़ालत त़ारी होती और आप عَلَیْہِ السَّلَام गिर कर तड़पने लगते, तो वोह दोनों आप عَلَیْہِ السَّلَام के सीने और पाउं पर बैठ जातीं ताकि आप عَلَیْہِ السَّلَام के आज़ा इधर उधर बिखर न जाएं।

सह़ाबए किराम और ताबेईन का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक परिन्दे से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया : "ऐ परिन्दे ! काश मैं तेरी त़रह़ होता और मुझे इन्सान न बनाया गया होता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं चाहता हूं कि मैं एक दरख़्त होता जिसे काट लिया जाता।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं चाहता हूं कि मुझे मरने के बाद उठाया न जाए।"

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "मैं पसन्द करती हूं कि मैं भूली बिसरी हो जाऊं।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चेहरे पर आंसूओं की दो सियाह लकीरें थीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते थे, कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता है वोह अपना ग़ुस्सा

www.dawateislami.net

नहीं निकालता और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां तक़्वा इख़्तियार करता है वोह मन मानी नहीं करता और अगर क़ियामत का दिन न होता तो तुम कुछ और ही देखते।"

अमीरुल मोमिनीन, मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने एक दिन नमाज़े फ़ज्र से सलाम फेरा, उस वक़्त आप को कोई रन्ज था और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपना हाथ उलट पुलट कर रहे थे फिर इरशाद फ़रमाया : "मैं ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को देखा है, लेकिन आज इन जैसा कोई नज़र नहीं आता, वोह इस ह़ाल में सुब्ह़ करते कि रंग ज़र्द होता, बाल बिखरे होते और चेहरा ग़ुबार आलूद होता, (रोने की वज्ह से) उन की आंखों की दरमियानी जगह बकरियों की रानों की त़रह़ होती, वोह ह़ालते सजदा व क़ियाम में क़ुरआने मजीद की तिलावत करते हुवे रात गुज़ार देते, अपनी पेशानी और पाउं पर बारी बारी ज़ोर डालते, सुब्ह़ होती तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हुवे इस त़रह़ कांपते जिस त़रह़ आंधी के दिन दरख़्त हिलता है और उन की आंखों से आंसू बहते ह़त्ताकि उन के कपड़े गीले हो जाते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! गोया मैं ऐसी क़ौम के साथ हूं जो ग़फ़्लत में रात गुज़ारते हैं फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه खड़े हुवे और इस के बाद आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को हंसते हुवे नहीं देखा गया ह़त्ताकि इब्ने मुल्जिम ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को शहीद कर दिया।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब क़ुरआने मजीद की कोई आयत सुनते तो ख़ौफ़ की वज्ह से बेहोश हो कर गिर पड़ते और कई दिन तक आप की इ़यादत की जाती। एक दिन आप ने ज़मीन से एक तिन्का उठाया और फ़रमाया : "काश ! मैं येह तिन्का होता, काश ! मेरा ज़िक्र न होता, काश ! मुझे मेरी मां न जनती, काश ! मुझे भुला दिया गया होता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا (यानी इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन) जब वुज़ू करते तो आप का रंग ज़र्द हो जाता, आप से घरवाले पूछते : "वुज़ू करते वक़्त आप पर येह कैफ़िय्यत क्यूं त़ारी हो जाती है ?" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते : "क्या तुम जानते हो कि मैं किस के सामने खड़ा होने का इरादा कर रहा होता हूं ?"

मन्क़ूल है, अ़र्फ़े के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को इस ह़ाल में देखा गया कि आप गुमशुदा बच्चे की दिल जली मां की त़रह़ रो रहे थे जब कि दीगर लोग दुआ़ मांग रहे थे यहां तक कि जब सूरज ग़ुरूब होने लगा तो आप ने अपनी दाढ़ी को पकड़ा फिर आस्मान की त़रफ़ सर उठाया और अ़र्ज़ की : "अगर तू मुझे बख़्श भी दे तब भी मुझे तुझ से ह़या आती है।" फिर लोगों के साथ वापस तशरीफ़ ले गए।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से डरने वाले लोगों के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : "उन के दिल ख़ौफ़ की वज्ह से ज़ख़्मी होते हैं और आंखें रोती हैं, वोह केहते हैं : "हम कैसे ख़ुश हो सकते हैं ह़ालांकि मौत हमारे पीछे है, क़ब्र हमारे सामने है, क़ियामत हमारे वादे की जगह है, जहन्नम के ऊपर हमारा रास्ता है और हमें अपने रब्बे अ़ज़ीम के सामने खड़ा होना है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب जब बैठते तो क़दमों के बल बैठते, आप से पूछा जाता : "आप इत़मीनान से क्यूं नहीं बैठते ?" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते : "वोह अम्न वालों का बैठना है, चूंकि मैं गुनाहगार हूं, इस लिए अम्न में नहीं हूं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों के दिलों में जो ग़फ़्लत डाली है तो येह भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रेह़मत है कि कहीं वोह उस के ख़ौफ़ से मर न जाएं।"

मन्क़ूल है, एक अन्सारी नौजवान को जहन्नम का ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और उसे गले लगाया पस वोह फ़ौत हो कर गिर पड़ा, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपने रफ़ीक़ के कफ़न दफ़्न का इन्तिज़ाम करो, जहन्नम के ख़ौफ़ ने इस के जिगर को टुकड़े टुकड़े कर दिया है।" وَاللهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

जहन्नम की आग से हिफ़ाज़त के लिए एक मज़बूत दीवार

(1)....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि एक औ़रत अपने बच्चे को ले कर ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे लिए दुआ़ कीजिए क्यूंकि मैं अपने तीन बच्चों को दफ़्ना चुकी हूं।" नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तू तीन बच्चों को दफ़्ना चुकी है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "हां।" इरशाद फ़रमाया : "बेशक तू ने अपने लिए आग से ह़िफ़ाज़त के लिए एक मज़बूत दीवार तय्यार कर ली है।"

(مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب من یموت لہ ولد الخ، رقم ۲۶۳۶، ص ۱۴۱۶)

एक ह़दीस शरीफ़ में येह भी है : "जिस मुसलमान के तीन बच्चे बालिग़ होने से पेहले मर जाएं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी रेह़मत से उसे और उन बच्चों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।" और एक रिवायत में यूं है कि "जिस के तीन बच्चों का इन्तिक़ाल हो जाए वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"

(بخاری، کتاب الجنائز، باب ما قیل فی اولاد المسلمین الخ، رقم ۱۳۸۱، ج ۱، ص ۵۶۵)

www.dawateislami.net

बाब : 34 ज़ोह्दो फ़क्र का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ج (پ۲۲، فاطر:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! तुम सब अल्लाह के मोह़ताज।

जानना चाहिए ! फ़क़ीर वोह है जो उस चीज़ का मोह़ताज हो जिस का वोह मालिक न हो और तमाम लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़क़ीर हैं क्यूंकि वोह अपने वुजूद को क़ाइमो दाइम रखने में उसी के मोह़ताज हैं और उन के वुजूद की इब्तिदा भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही से है और येह चीज़ उन की मिल्किय्यत में नहीं, बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मिल्किय्यत में है, वोह ग़निये मुत़लक़ है। अब हम माल के फ़क़ीर का ज़िक्र करते हैं।

माल का फ़क़ीर

वोह शख़्स जिस के पास ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए माल न हो।

उस फ़क़ीर की मुख़्तलिफ़ ह़ालतें हैं :

पेहली ह़ालत : जब उस के पास माल आए, तो वोह उसे ना पसन्द जाने और उस से दूर भागे, ऐसा शख़्स ज़ाहिद है।

दूसरी ह़ालत : येह है कि न तो वोह माल से भागे और न उस में रग़बत रखे, लेकिन जब मिल जाए तो उसे ना पसन्द न करे, ऐसा शख़्स राज़ी रेहने वाला है।

तीसरी ह़ालत : माल के न होने के मुक़ाबले में इस का पाया जाना उसे पसन्द हो जब वोह आसानी से बिला मेह़नत मिल जाए, लेकिन उस की त़लब में सर तोड़ कोशिश न करे।

चौथी ह़ालत : वोह माल का त़ालिब हो, उस में रग़बत रखता हो लेकिन आ़जिज़ होने की वज्ह से उस की त़लब छोड़ दे।

पांचवीं ह़ालत : उस के पास जो माल मौजूद न हो उस का मोह़ताज हो जैसे भूका शख़्स जिस के पास रोटी न हो और बरह्ना शख़्स जिस के पास अपने लिए या एह्लो अ़याल के लिए कपड़ा न हो और ऐसी ह़ालत वाला शख़्स अगर माल की रग़बत न रखे तो येह अ़जाइब में से है और येही ह़क़ीक़ी ज़ाहिद है।

इन तमाम अह़वाल से आला ह़ालत येह है कि इन्सान के नज़्दीक माल का होना या न होना बराबर हो, ख़्वाह उस के पास माल कम हो या ज़्यादा, उसे कोई परवाह न हो, वोह माल त़लब करने वाले को मह़रूम न रखे और न ही उस की अपनी ज़रूरत उस के दिल में खटके जिस त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बारे में है, कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास एक लाख दिरहम बत़ौरे अ़त़िय्या आए, आप ने उन्हें तक़्सीम कर दिया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दिल में इफ़्त़ार

www.dawateislami.net

के लिए किसी चीज़ का ख़याल तक न आया, हत्ताकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़ादिमा ने अ़र्ज़ की : "अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हमारे लिए एक दिरहम का गोश्त ले लेतीं, तो हम उस से रोज़ा इफ़्तार कर लेते।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम पेहले याद दिला देती तो मैं ऐसा ही करती।"

फ़क्र की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "लोगों में से बेहतर कौन है?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "वोह मालदार शख़्स जो अपनी जान और माल में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हक़ अदा करता है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह शख़्स अच्छा है लेकिन येह शख़्स मुराद नहीं, सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फिर लोगों में से कौन सा शख़्स सब से अच्छा है? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "वोह फ़क़ीर जिस को उस की जिद्दो जोहद अ़ता की गई।" (الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم١٠٦٦ـعبد اللّٰہ بن دینار، ج٥،ص٣٩٣)

मश्हूर ह़दीसे पाक है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

تَدْخُلُ فُقَرَاءُ اُمَّتِي الْجَنَّةَ قَبْلَ أَغْنِيَائِهِمْ بِخَمْسِ مِائَةِ عَامٍ.

तर्जमा : मेरी उम्मत के फ़ुक़रा मालदार लोगों से पांच सौ साल पेहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।

(جامع الترمذی، ابواب الزھد، باب ماجاء ان فقراء المھاجرین یدخلون .....الخ، الحدیث ٢٣٥١،ص١٨٨٨،بتغیرٍ قلیلٍ)

मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक आदमी के पास से गुज़रे जो मिट्टी पर सोया हुवा था और उस के सर के नीचे ईंट थी, उस का चेहरा और दाढ़ी गर्द आलूद हो चुकी थी और उस ने एक तहबन्द बांध रखा था तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरा येह बन्दा दुन्या में ज़ाएअ़ हो गया।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वही फ़रमाई : "ऐ ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ! क्या तुम नहीं जानते कि जब मैं अपने बन्दे पर मुकम्मल त़ौर पर नज़रे रेह़मत फ़रमाता हूं तो उस से तमाम दुन्या समेट लेता हूं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मह़ब्बत निशान है : "बेशक मुझे दो चीज़ें पसन्द हैं, जिस ने उन से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने उन से बुग़्ज़ रखा, उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा, एक फ़क्र और दूसरा जिहाद।"

एक रिवायत में है, हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को सलाम भेजता है

www.dawateislami.net

और इस्तिफ़्सार फ़रमाता है : "क्या आप को येह बात पसन्द है कि मैं इन पहाड़ों को आप के लिए सोना बना दूं और आप जहां भी हों येह आप के साथ रहें ?" नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ देर सरे अक़्दस झुकाए रखा फिर फ़रमाया : "ऐ जिब्रील ! दुन्या उस का घर है जिस का कोई घर न हो, उस का माल है जिस का कोई माल न हो और इसे वोही जम्अ़ करता है जो अ़क़्लमन्द न हो ।" तो जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को क़ौले साबित पर क़ाइम रखे ।" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث ٢٤٤٧٣، ج٩، ص٣٤٣-٣٤٤)

(مصنف ابن ابی شيبة، كتاب الزهد، باب ما قالوا فی البكاء من خشية الله، الحديث ١٨٦، ج٨، ص٣٢١)

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी सियाह़त के दौरान एक ऐसे शख़्स के पास से गुज़रे जो चादर में लिपटे हुवे सो रहा था, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे जगाया और फ़रमाया : "ऐ सोने वाले ! उठ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को याद कर ।" उस ने अ़र्ज़ की : "आप عَلَيْهِ السَّلَام मुझ से क्या चाहते हैं ? मैं ने दुन्या को दुन्या वालों के लिए छोड़ दिया है ।" आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से फ़रमाया : "ऐ मेरे दोस्त ! अगर येह बात है तो सो जाओ ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने जन्नत में झांका, तो उस में अक्सर फ़ुक़रा को पाया और जहन्नम में झांका, तो उस में अक्सर उमरा को पाया ।" (صحيح البخاری، كتاب الرقاق، باب فضل الفقر، الحديث ٦٤٤٩، ص٥٤٢، اغنياء: بدله: النساء)

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ फ़ुक़रा के गिरोह ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर दिल से राज़ी रहो, तब ही अपने फ़क़्र का सवाब पाओगे वरना नहीं ।" (فردوس الاخبار للديلمی، باب الياء، الحديث ٨٢٤٢، ج٢، ص٤٧٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़ी भेजी, कि मुझे शिकस्ता दिल लोगों में तलाश करो, उन्हों ने अ़र्ज़ की : "वोह कौन हैं ?" फ़रमाया : "सच्चे फ़ुक़रा ।"

फ़ुक़रा की फ़ज़ीलत पर अह़ादीस व आसार शाहिद हैं और माल कमाने में भी कोई ह़रज नहीं क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ قُوْتَ آلِ مُحَمَّدٍ كَفَافًا "तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! आले मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ब क़दरे किफ़ायत रोज़ी अ़त़ा फ़रमा ।"

(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب فی الكفاف والقناعة، الحديث ٢٤٢٧، ص٨٤٣-٨٤٤)

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب التاريخ، باب من صفته وأخباره ﷺ، الحديث ٦٣٠٩، ج٨، ص٨٦-٨٧)

www.dawateislami.net

ज़रूरत से ज़्यादा मालो दौलत नुक़्सान देह है और ऐसे रिज़्क़ को रोके रखना उख़रवी लिहाज़ से नुक़्सान का बाइस है जैसा कि रिवायात इस बात पर शाहिद हैं।

सुवाल करने की मुमानअ़त

जानना चाहिए ! कई अहादीस सुवाल करने की मुमानअ़त पर दलालत करती हैं। शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है :

مَنْ سَأَلَ عَنْ ظَهْرِ غِنًى فَإِنَّمَا يَسْتَكْثِرُ مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ.

तर्जमा : जो मालदार होने के बा वुजूद सुवाल करता है, वोह जहन्नम की आग ज़्यादा करता है।

(المعجم الكبير، الحديث ٥٦٢٠، ج٦، ص٩٦-٩٧)

सुवाल करने की इजाज़त

इसी त़रह़ सुवाल करने की इजाज़त पर दलालत करने वाली अह़ादीस भी वारिद हैं। हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

لِلسَّائِلِ حَقٌّ وَإِنْ جَاءَ عَلٰى فَرَسٍ.

तर्जमा : सुवाल करने वाले का ह़क़ है अगर्चे वोह घोड़े पर आए।

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب حق السائل، الحدیث ١٦٦٥، ص١٣٤٧)

(इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं कि) **अगर सुवाल करना मुत्लक़न जाइज़ न होता तो साइल का ह़क़ न होता। और सुवाल करने की इजाज़त ब क़दरे ज़रूरत व ह़ाजत है, लेकिन अगर इस से ज़ाइद का सुवाल हो तो उस की बिल्कुल रुख़्सत (यानी इजाज़त) नहीं।**

साइलीन के अह़वाल का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : फ़ुक़रा की तीन अक़्साम हैं :

(1) वोह फ़क़ीर जो सुवाल नहीं करता अगर उसे कुछ दिया जाए तब भी नहीं लेता, येह रूह़ानी लोगों के साथ आला इल्लिय्यीन में रहेगा।

(2) वोह फ़क़ीर जो मांगता तो नहीं मगर दिया जाए तो ले लेता है, येह मुक़र्रब लोगों के साथ जन्नतुल फ़िरदौस में होगा।

(3) वोह फ़क़ीर जो ह़ाजत के वक़्त मांगता है वोह अस्ह़ाबे यमीन में से सिद्दीक़ीन के साथ होगा।

इस से फ़ुक़रा के पांचों ह़ालात ज़ाहिर हो गए और वोह चीज़ भी वाज़ेह़ हो गई, जिस की हम ने इस बाब की इब्तिदा में वज़ाह़त की और अगर सुवाल ऐसी ज़रूरत या ह़ाजत के लिए हो, जिस के बिग़ैर गुज़ारा नहीं, तो कोई ह़रज नहीं लेकिन येह क़ुर्बे ख़ुदावन्दी के दरजे को कम कर देता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم ने ह़ज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बल्ख़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से दरयाफ़्त फ़रमाया : "जब आप ख़ुरासान से तशरीफ़ लाए तो अपने फ़ुक़रा दोस्तों को किस ह़ाल में छोड़ा ?" उन्हों ने जवाब दिया : "मैं ने उन को इस ह़ाल में छोड़ा, कि अगर उन्हें दिया जाए तो शुक्र अदा करते हैं और अगर न दिया जाए तो सब्र करते हैं।" जब उन्हों ने उन का वस्फ़ यूं बयान किया, कि वोह सुवाल नहीं करते और उन की ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास तारीफ़ की, तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन से फ़रमाया : मैं ने तो बल्ख़ के कुत्तों को इस त़रह़ छोड़ा है !" ह़ज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पूछा : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ ! आप के हां के फ़ुक़रा किस ह़ाल में हैं ?" उन्हों ने फ़रमाया : "हमारे फ़ुक़रा का ह़ाल येह है कि अगर उन को न दिया जाए तो शुक्र अदा करते हैं और अगर दिया जाए, तो दूसरों को अपने ऊपर तरजीह़ देते हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ ने उन के सर को बोसा दे कर फ़रमाया : "या शैख़ ! आप ने सच फ़रमाया।"

ख़ैर ख़्वाही का अनोखा अन्दाज़

जानना चाहिए ! बाज़ अवक़ात बाज़ लोगों के ऐसे अह़वाल होते हैं कि उन के लिए सुवाल करना सुवाल न करने से ज़्यादा फ़ज़ीलत का बाइस होता है जैसा कि मन्क़ूल है कि बाज़ लोगों ने **ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़ुसैन नूरी** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को किसी जगह हाथ फैला कर लोगों से मांगते हुवे देखा, रावी फ़रमाते हैं : मुझे येह बात गिरां गुज़री, पस मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْھَادِی से येह बात ज़िक्र की तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "येह बात तुझे ना गवार न हो, बेशक ह़ज़रते सय्यिदुना नूरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उन्ही लोगों को देने के लिए उन से सुवाल करते हैं, वोह उन से इस लिए सुवाल करते हैं ताकि उन्हें आख़िरत में सवाब मिले और वोह बिग़ैर किसी कमी के अज्र पाएं गोया उन्हों ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान की त़रफ़ इशारा फ़रमाया : يَدُ الْمُعْطِيْ هِيَ الْعُلْيَا "**तर्जमा :** देने वाले का हाथ ऊपर होता है।"

(المعجم الکبیر، الحدیث ١٣٨٤، ج٢، ص٨٥)

बाज़ उ़लमाए किराम येह भी इरशाद फ़रमाते हैं : "देने वाले के हाथ से मुराद माल लेने वाले का हाथ है क्यूंकि इसी (लेने वाले) की वज्ह से सवाब मिलता है और क़द्र इसी की है, जो कुछ वोह लेता है उस की क़द्र नहीं।"

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तराज़ू मंगवाया और एक सौ दिरहम तोले, फिर एक मुठ्ठी मज़ीद दिरहम ले कर उन में मिला दिए और फ़रमाया : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना नूरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास ले जाओ।" मैं ने दिल में सोचा कि किसी चीज़ को इस लिए तोला जाता है कि

उस की मिक़्दार मालूम हो लेकिन इन्हों ने किस त़रह़ इस में मजहूल चीज़ (यानी मुठ्ठी भर दिरहम) को मिला दिया, ह़ालांकि येह तो दाना आदमी हैं ? लेकिन मुझे येह सुवाल करते हुवे ह़या मह़सूस हुई और मैं वोह थैली ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना नूरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास गया, तो उन्हों ने भी तराज़ू मंगवाया और एक सौ दिरहम तोले और फ़रमाया : "येह उन के पास वापस ले जाओ ! और केहना : मैं तुम से कुछ भी क़बूल नहीं करता और जो सौ से ज़ाइद थे वोह रख लिए।" रावी केहते हैं : "मुझे उन के इस अ़मल से मज़ीद तअ़ज्जुब हुवा, चुनान्चे, मैं ने उन से पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अ़क़्लमन्द आदमी हैं, वोह रस्सी के दोनों सिरे ख़ुद ही पकड़ना चाहते हैं, उन्हों ने एक सौ अपने फ़ाएदे के तोले, ताकि आख़िरत का सवाब हो और एक मुठ्ठी बिला वज़्न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए डाल दिए तो जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए था मैं ने वोह ले लिया और जो कुछ उन्हों ने अपने लिए रखा था, मैं ने वापस कर दिया।" रावी फ़रमाते हैं : मैं ने वोह दराहिम ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को वापस कर दिए, तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रोने लगे फिर फ़रमाया : "उन्हों ने अपना माल ले लिया और हमारा माल वापस कर दिया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से मदद मांगी जाती है।"

ऐ इस्लामी भाई ! देख ! हमारे अस्लाफ़ के दिल और अह़वाल कितने साफ़ थे और उन के आमाल किस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए ख़ालिस थे यहां तक कि उन में से **हर एक दूसरे के दिल को देख लेता था** और ज़बान से कुछ केहने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी।

ज़ोह्द का बयान

ज़ोह्द क्या है ?

ज़ोह्द की ह़क़ीक़त येह है कि रग़बत को एक चीज़ से फेर कर किसी दूसरी चीज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह किया जाए, पस जो शख़्स फ़ुज़ूल दुन्या को छोड़ दे और इस की बजाए आख़िरत की त़रफ़ राग़िब हो, तो वोह शख़्स दुन्या में ज़ाहिद है और ज़ोह्द का बुलन्द दरजा येह है कि इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा हर चीज़ ह़त्ताकि आख़िरत से भी एराज़ करे और ज़ाहिद के लिए इस बात का इल्म होना ज़रूरी है, कि आख़िरत दुन्या से बेहतर है और उस अ़मल का होना ज़रूरी है, जो इस से इस ह़ाल में सादिर हो और येही आख़िरत में मुकम्मल रग़बत है और अ़मले दिल और आज़ा की ह़िफ़ाज़त के साथ उन मुआ़मलात में क़ीमत को सिपुर्द करने का नाम है, जो इस बैअ़ के मुनाफ़ी हों और ज़ोह्द की फ़ज़ीलत पर कई आयात और अह़ादीस दलालत करती हैं। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿۱﴾ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا۝ (پ۱۵، الکھف:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ इस पर है कि उन्हें आज़माएं उन में किस के काम बेहतर हैं।

﴿۲﴾ مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ حَرۡثَ الۡاٰخِرَةِ نَزِدۡ لَهٗ فِىۡ حَرۡثِهٖ ۚ وَمَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ حَرۡثَ الدُّنۡيَا نُؤۡتِهٖ مِنۡهَا وَمَا لَهٗ فِى الۡاٰخِرَةِ مِنۡ نَّصِيۡبٍ۝ (پ۲۵،الشوریٰ:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिए उस की खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे इस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं।

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीहत निशान है : "जो शख़्स इस हाल में सुब्ह करे कि उसे दुन्या ही की फ़िक्र हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के काम मुन्तशिर कर देता है और उस का सामान मुतफ़र्रिक़ कर देता है, उस की तंगदस्ती उस के सामने कर देता है और दुन्या तो उसी क़दर आएगी, जो उस की तक़्दीर में लिखी है और जो इस हाल में सुब्ह करे कि उस को आख़िरत की फ़िक्र हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के काम दुरुस्त फ़रमा देता है, उस के सामान की हिफ़ाज़त फ़रमाता और उस के दिल में दुन्या से बे रग़बती डाल देता है नीज़ उस के पास दुन्या ज़लील हो कर आती है।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب الهم بالدنيا، الحديث ٤١٠٥،ص٢٧٢٦، بتغيرٍ قليلٍ)

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिक्मत निशान है : "जब तुम किसी शख़्स को देखो कि उसे ख़ामोशी और दुन्या से बे रग़बती अ़ता की गई है तो उस के क़रीब हो जाओ क्यूंकि उसे हिक्मत अ़ता की गई है।" (سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب الزهد فى الدنيا، الحديث ٤١٠١،ص٢٧٢٦، بتغيرٍ قليلٍ)

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मह़ब्बत निशान है :

إِنْ أَرَدْتَ أَنْ يُحِبَّكَ اللّٰهُ فَازْهَدْ فِي الدُّنْيَا.

तर्जमा : अगर तुम चाहते हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम से मह़ब्बत करे तो दुन्या में ज़ोह्द इख़्तियार करो।

(سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب الزهد فى الدنيا، الحديث ٤١٠٢،ص٢٧٢٦، مفهوماً)

जब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : "मैं सच्चा मोमिन हूं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हारे ईमान की ह़क़ीक़त क्या है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं ने अपने नफ़्स को दुन्या से अ़लाह़दा कर दिया है, पस मेरे नज़्दीक इस (दुन्या) का सोना और पथ्थर बराबर हैं, गोया मैं जन्नत और दोज़ख़ के माबैन हूं और गोया मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के पास खड़ा हूं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम ने (ईमान की ह़क़ीक़त को) पहचान लिया, पस इस को लाज़िम पकड़ना (फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया) येह ऐसा बन्दा है जिस के दिल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नूरे ईमान से मुनव्वर कर दिया।"

(الزهد الكبير للبيهقى، الحديث ٩٧٣،ص٣٥٥،مفهوماً)

www.dawateislami.net

लफ़्ज़े शर्ह का माना

जब सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इन फ़रामीने मुबारका, ﴿۱﴾اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ(پ۲۳،الزمر:۲۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या वोह जिस का सीना **अल्लाह** ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वोह अपने रब की त़रफ़ से नूर पर है। ﴿۲﴾فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ(پ۸،الانعام:۱۲۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिसे **अल्लाह** राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है।" में मौजूद लफ़्ज़े "**شَرْحٌ**" के माना पूछे गए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक नूर जब दिल में दाख़िल होता है तो उस के लिए सीना कुशादा हो जाता है और वोह खुल जाता है, अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या इस की कोई अ़लामत भी है?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया "हां धोके वाले घर (यानी दुन्या) से कनाराकशी इख़्तियार करना और हमेशा वाले घर की त़रफ़ मुतवज्जेह होना, नीज़ मौत आने से पेहले उस की तय्यारी करना।"

(المستدرك، كتاب الرقاق، باب أعلام النور فى الصدور، الحديث۷۹۳۳،ج۵،ص۴۴۲، بتغيرٍ قليلٍ)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स कलिमए त़य्यिबा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ) पर ईमान रखते हुवे आया और उस के साथ कुछ और न मिलाया वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कुछ और मिलाने से क्या मुराद है ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें वाज़ेह़ तौर पर बयान फ़रमाएं ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की वज़ाह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "इस से मुराद दुन्या की मह़ब्बत, इस की त़लब और इस की इत्तिबाअ़ करना है और कुछ लोग ऐसे हैं जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की बातों जैसी बातें करते हैं लेकिन आमाल ज़ालिमों जैसे करते हैं, पस जो शख़्स कलिमए त़य्यिबा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ) पर ईमान रखते हुवे आया और उस (के आमाल) में ज़ालिमों के आमाल में से कुछ न हो तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो गई।" (الكامل فى ضعفاء الرجال لابن عدى، الرقم۱۷۷۵ـمحمد بن عبد الرحمٰن، ج۷،ص۵۵۰)

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सख़ावत यक़ीन में से है और कोई यक़ीन वाला दोज़ख़ में नहीं जाएगा और बुख़्ल शक में से है और शक करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।"

www.dawateislami.net

ज़ोह्द के दरजात

ज़ोह्द के तीन दरजात हैं :

पेहला दरजा : येह है कि इन्सान तकल्लुफ़ के साथ दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करे और अपनी ख़्वाहिशात के बा वुजूद उसे तर्क करने की कोशिश करे, तो ऐसा शख़्स मुतज़ह्हिद है और हो सकता है वोह इस पर मुदावमत इख़्तियार कर के ज़ोह्द को पा ले।

दूसरा दरजा : येह है कि वोह अपनी ख़ुशी से दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करे यानी वोह जिस चीज़ की तम्अ़ कर रहा है इस की निस्बत से दुन्या को ह़क़ीर जाने जैसे कोई शख़्स दो दराहिम के लिए एक दिरहम छोड़ देता है और येह चीज़ उस पर दुश्वार नहीं होती लेकिन इस की तवज्जोह दुन्या और अपने नफ़्स की त़रफ़ भी रेहती है (यानी वोह ख़याल करता है कि उस ने बड़ी अहम चीज़ को छोड़ा है) और येह भी ज़ोह्द है, लेकिन इस में नुक़्सान का अन्देशा है।

तीसरा दरजा : सब से आला है और वोह येह कि बन्दा ख़ुशी से ज़ोह्द इख़्तियार करे और अपने ज़ोह्द में मुबालग़ा इख़्तियार करे और येह ख़याल न करे कि इस ने कोई चीज़ छोड़ी है इस लिए कि वोह जानता है कि दुन्या कोई चीज़ नहीं इस की मिसाल उस शख़्स की है, जिस ने पथ्थर को छोड़ा और मोती ले लिया, पस वोह इस चीज़ को इस का बदला नहीं समझता और दुन्या की आख़िरत के मुक़ाबले में कोई अहम्मिय्यत नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद علیہ رحمۃ اللہ الوحید ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان से पूछा : "आप किस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू कर रहे हैं ?" उन्हों ने जवाब दिया : "ज़ोह्द के बारे में।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : "किस चीज़ में ज़ोह्द ?" जवाब दिया : "दुन्या में" (येह सुन कर) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद علیہ رحمۃ اللہ الوحید ने हाथ झाड़ते हुवे फ़रमाया : "मेरा ख़याल था कि आप किसी चीज़ के बारे में गुफ़्तगू कर रहे होंगे, दुन्या तो कोई चीज़ ही नहीं जिस में ज़ोह्द इख़्तियार किया जाए।"

एह्ले मारिफ़त और मुशाहदात व मुकाशफ़ात से मामूर दिल रखने वालों के नज़्दीक आख़िरत के लिए दुन्या को तर्क करने वाले की मिसाल उस शख़्स की है, जो बादशाह के दरबार में जाना चाहता है, लेकिन दरवाज़े पर मौजूद कुत्ता उसे रोक लेता है, वोह उस के सामने रोटी का एक लुक़्मा डालता है तो वोह उस में मश्ग़ूल हो जाता है, और वोह ख़ुद दरवाज़े में दाख़िल हो जाता है और बादशाह का क़ुर्ब ह़ासिल कर लेता है यहां तक कि उस का हुक्म तमाम ममलुकत में नाफ़िज़ होने लगता है तो तुम्हारा क्या ख़याल है कि क्या वोह अपने ह़ासिल किए हुवे मक़ाम के मुक़ाबले में उस लुक़्मे को ज़्यादा अहम्मिय्यत देगा, जो उस ने कुत्ते के सामने डाला ? शैत़ान भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरवाज़े पर एक कुत्ता है, जो लोगों को दाख़िल होने से रोकता है, ह़ालांकि दरवाज़ा खुला और पर्दा उठा हुवा है। और दुन्या रोटी के एक लुक़्मे की त़रह़ है, अगर तुम इसे खाओ तो उस की लज़्ज़त सिर्फ़ चबाने की ह़द तक है, फिर निगलते ही लज़्ज़त ख़त्म हो जाएगी, फिर इस का बोझ मेदे में बाक़ी रेहता है और

www.dawateislami.net

बदबू की शक्ल इख़्तियार कर लेता है, फिर उस बोझ को निकालने की ज़रूरत पड़ती है। पस जो शख़्स इसे बादशाह का कुर्ब ह़ासिल करने के लिए तर्क करता है, तो वोह इस की त़रफ़ कैसे मुतवज्जेह होगा ? और दुन्या जो किसी शख़्स को सह़ीह़ व सलामत ह़ासिल होती है आख़िरत के मुक़ाबले में इस की वोह निस्बत भी नहीं जो एक लुक़्मे को दुन्यवी मिल्क के साथ ह़ासिल है, क्यूंकि जिस की कोई इन्तिहा हो उसे ग़ैर मुतनाही चीज़ से कोई निस्बत नहीं और दुन्या अ़न क़रीब ख़त्म होने वाली है, अगर्चे उस की उ़म्र लाख साल हो जाए और वोह कदूरतों से बिल्कुल साफ़ हो जाए फिर भी उस का अन्जाम ज़वाल ही है।

ऐ इस्लामी भाई ! जब तू ने येह बात जान ली तो येह भी जान लो ! आला दरजा येह है कि तुम रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिए उस के सिवा हर चीज़ से बे रग़बत हो जाओ और येह चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (के दीदार) की लज़्ज़त और उस के सिवा हर नेमत से ज़ोह्द इख़्तियार करने की मारिफ़त से ह़ासिल होती है। पस तुम्हें चाहिए कि अपनी ज़रूरत के मुत़ाबिक़ खाना, लिबास, निकाह़ और रिहाइश इख़्तियार करो, जिस से तुम्हारे बदन का गुज़ारा हो और तुम अपना दिफ़ाअ़ कर सको, येही ह़क़ीक़ी ज़ोह्द है। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

दुन्या की छे चीज़ें और उन की ह़क़ीक़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या छे चीज़ों पर मुश्तमिल है (1) ग़िज़ा (2) मशरूब (3) लिबास (4) सुवारी (5) निकाह़ और (6) ख़ुश्बू। (1) सब से आला ग़िज़ा शहद है और वोह मख्खियों का लुआ़ब है। (2) सब से आला मशरूब पानी है और इस में नेक, बद, इन्सान और ह़ैवान सब बराबर हैं। (3) सब से आला लिबास रेशम है और वोह कीड़े से बनाया जाता है। (4) सब से आला सुवारी घोड़ा है और इस पर मर्दों को क़त्ल किया जाता है। (5) निकाह़ में सब से आला नेमत औ़रत से सोह़बत करना है और वोह शर्मगाह का शर्मगाह में जाना है। और औ़रत अपने बदन में अच्छे आज़ा को संवारती है, लेकिन उस से इरादा सब से बुरी चीज़ का किया जाता है और (6) सब से आला ख़ुश्बू मुश्क है और वोह हिरन का ख़ून है।" (الزھد وقصر الامل (مترجم)، ص۷۹، مطبوعہ مکتبۃ المدینہ)

बाब : 35 तौहीद और तवक्कुल का बयान

तवक्कुल का बयान

इस की फ़ज़ीलत आयाते करीमा व अहादीसे मुबारका से समझी जा सकती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इरशादे हक़ीक़त बुन्याद है :

﴿۱﴾ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ۝ (پ٦، المائدة: ٢٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है।

﴿۲﴾ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ (پ٢٨، الطلاق: ٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है।

﴿۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ۝ (پ٤، آل عمران: ١٥٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तवक्कुल वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं ने ह़ज के मौसम में तमाम उम्मतों को देखा, पस मैं ने अपनी उम्मत को देखा कि उन्हों ने मैदानों और पहाड़ों को घेर रखा है, मुझे उन की कसरत और अन्दाज़ ने तअ़ज्जुब में डाल दिया, मुझ से पूछा गया : "क्या आप इस बात पर राज़ी हैं ?" मैं ने कहा : "मैं राज़ी हूं।" पूछा गया : "उन के साथ मज़ीद सत्तर हज़ार हैं जो किसी ह़िसाब के बिग़ैर जन्नत में दाख़िल होंगे।"

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया गया : "वोह कौन लोग हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "जो जिस्म नहीं दाग़ते, न फ़ाल लेते हैं और न ही तावीज़ात (यानी ममनूअ़ तावीज़ात) इस्तिमाल करते हैं और अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करते हैं।" हज़रते सय्यिदुना अ़क्काशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हो गए और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ फ़रमाइए कि मुझे भी उन में कर दे। चुनान्चे, नबिय्ये रेह़मत, क़ासिमे नेमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इसे भी उन लोगों में से कर दे।" एक दूसरे सह़ाबी ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : "मेरे लिए भी दुआ़ फ़रमाइए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे भी उन में से कर दे। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़क्काशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) तुम पर सबक़त ले गए।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقاء والتمائم، الحدیث ٦٠٥٢، ج٧، ص٦٢٨، رأیت الأمم: بدله: عرضت علی الأمم)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "अगर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर इस त़रह़ भरोसा करो जैसे उस पर भरोसा करने का ह़क़ है, तो वोह तुम्हें इस त़रह़ रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जैसे परिन्दे को अ़त़ा फ़रमाता है कि वोह सुब्ह़ के वक़्त ख़ाली पेट निकलता और शाम को सेर हो कर लौटता है।"

(جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب فی التوکل علی الله، الحدیث ٢٣٤٤، ص١٨٨٧)

www.dawateislami.net

जब ह़ज़रते ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ (پ۱۹،الفرقان:۵۸) **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो कभी न मरेगा।" पढ़ा तो इरशाद फ़रमाया : "इस आयत के बाद किसी बन्दे के लिए मुनासिब नहीं कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी से पनाह ले।"

ह़क़ीक़ते तौह़ीद और इस के दरजात का बयान

तौह़ीद तवक्कुल की अस्ल है

जानना चाहिए ! तौह़ीद के माना की वज़ाह़त لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ "(यानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई माबूद नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं)" से होती है और क़ुदरत पर ईमान की तरजुमानी لَهُ الْمُلْكُ (यानी उसी की बादशाहत है)" से होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जूदो ह़िक्मत पर وَلَهُ الْحَمْدُ "(यानी उसी के लिए तमाम ख़ूबियां हैं)" दलालत करता है पस जिस शख़्स के दिल पर इस जुम्ले का माना ग़ालिब हो तो वोह **मुतवक्किल** बन जाता है। इन तमाम की अस्ल तौह़ीद है।

मरातिबे तौह़ीद

तौह़ीद के चार मरातिब हैं, अख़रोट की त़रह़ इस के चार ह़िस्से हैं, जैसे (1) मग़्ज़ (2) मग़्ज़ का मग़्ज़ (3) छिल्का और (4) छिल्के का छिल्का।[1]

पेहला मर्तबा : येह है कि इन्सान छिल्के के छिल्के की त़रह़ सिर्फ़ अपनी ज़बान से "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" कहे, येह मुनाफ़िक़ीन का ईमान है, हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते हैं।

दूसरा मर्तबा : येह है कि इन्सान दिल से कलिमे के माना की तस्दीक़ करे और येह आ़म मुसलमानों का ईमान है।

तीसरा मर्तबा : येह है कि इन्सान कश्फ़ के ज़रीए ईमान का मुशाहदा करे और येह मुक़र्रबीन का मक़ाम है और इस की सूरत येह है कि वोह कसरते अस्बाब देखे लेकिन इन सब को ख़ुदाए वाह़िद عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से समझे।

चौथा मर्तबा : येह है कि बन्दा सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की जुस्तजू में रहे, येह सिद्दीक़ीन का मुशाहदा है, सूफ़ियाए किराम की इस्त़िलाह़ में इसे फ़ना फ़ित्तौह़ीद केहते हैं और उस की ह़ालत येह होती है कि वोह बात़िन के तौह़ीद में मुस्तग़्रक़ होने की वज्ह से अपने आप को भी नहीं देखता, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد के फ़रमान कि **"मुझे अपनी याद भुला दी गई"** से येही मुराद है।

1....इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی एह्याउल उ़लूमुद्दीन में इस के बाद तेह़रीर फ़रमाते हैं : "अख़रोट के ऊपर दो छिल्के होते हैं, इस के अन्दर एक मग़्ज़ होता है और उस में तेल होता है जो मग़्ज़ का मग़्ज़ है।"

(احیاء علوم الدین،ج٤،ص٣٠٤)

www.dawateislami.net

इन मरातिब की तफ़्सील

पेहला मर्तबा सिर्फ़ ज़बान से तौहीद का इक़रार करने वाले का है और उस का मक़्सद तल्वारों से बचना और जानो माल की हिफ़ाज़त का फ़ाएदा हासिल करना होता है, जैसा कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : فَإِذَا قَالُوْهَا عَصَمُوْا مِنِّيْ دِمَائَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ **"तर्जमा :** जब वोह ज़बान से इस (कलिमे) का इक़रार कर लेंगे, तो वोह अपनी जान और माल मुझ से महफ़ूज़ कर लेंगे।" (جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب ومن سورة الغاشية، الحديث ٣٣٤١،ص١٩٩٥)

दूसरा मर्तबा उस मुवह्हिद का है जो दिल से कलिमे के माना का एतिक़ाद रखता है और इस में शक नहीं करता लेकिन उस का बातिन कुशादा नहीं। अगर वोह इस हालत पर फ़ौत हो जाए और गुनाहों पर मुवाज़बत की वज्ह से इस कैफ़िय्यत में कमज़ोरी पैदा न हुई हो, तो वोह आख़िरत के अ़ज़ाब से बच जाएगा और बिदअ़ती का मक्र (लोगों के दिलों पर लगी) अ़क़ीदए तौहीद की गिरह को खोलना है जब कि (इ़ल्मे कलाम के ज़रीए बिदअ़ती के मक्रो फ़रेब से बचाने वाले) मुतकल्लिम की तदबीर दिल की गिरह को मज़बूत कर के बांधना है।

तीसरा मर्तबा उस मुवह्हिद का है, जिस का सीना उस के लिए खोल दिया जाता है और वोह कसरते अस्बाब के बा वुजूद एक ही ज़ात का मुशाहदा करता है और जानता है कि इन अस्बाब का सुदूर उसी वह्दहू ला शरीक से ही है।

चौथा मर्तबा उस मुवह्हिद का है जिस के सामने और दिल में सिर्फ़ एक ज़ात होती है, वोह तमाम वासितों और अपने आप से बे नियाज़ होता है और येही हालत सब से आला है, येह अख़रोट के मग़्ज़ से निकलने वाले तेल की त़रह़ है।

चौथे मर्तबे के बारे में गुफ़्तगू करने की ज़रूरत नहीं हमारा कलाम तो तीसरे में है और येह वोह मुवह्हिद है जो एक ही ज़ात को देखता और समझता है कि हर शै का सुदूर उसी ज़ाते वाहिद से है, पस उस वक़्त उस का दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर से चमकने लगता है, जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ज़ीशान है :

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ (پ٢٣،الزمر:٢٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या वोह जिस का सीना **अल्लाह** ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वोह अपने रब की त़रफ़ से नूर पर है।

एतिराज़ : जिस शख़्स का दिल नूरे इलाही عَزَّوَجَلَّ से मुनव्वर न हो वोह केहता है चौथे मर्तबे वाला मुवह्हिद हर चीज़ को एक कैसे समझता है जब कि वोह ज़मीनो आस्मान में अस्बाब और आदाद की कसरत देखता है ?

जवाब : जानना चाहिए ! इन असरार को ज़ाहिर करना मुमकिन नहीं क्यूंकि बाज़ एह्ले मारिफ़त ने फ़रमाया कि रबूबियत के राज़ों को ज़ाहिर करना कुफ़्र है, हां ! येह बताना मुमकिन है कि

www.dawateislami.net

कसरत को अ़क़्ल से देखना मुश्किल है। इस एतिराज़ का जवाब येह है कि एक शै एक एतिबार से कसीर हो सकती है और एक एतिबार से क़लील। जिस त़रह़ इन्सान अपने अज्ज़ा के एतिबार से तो कसीर है लेकिन अपनी हैसिय्यत के एतिबार से वोह शख़्से वाह़िद ही है, वोह एक को देखते हैं जिस में कोई अ़दद नहीं, इसी त़रह़ ख़ालिक़ और मख़्लूक़ में से हर मौजूद के कई एतिबारात हैं, एक एतिबार से वाह़िद है और मुख़्तलिफ़ एतिबारात से कसीर। मिसाल के त़ौर पर इन्सान को ही ले लीजिए अगर्चे येह मक़्सद ग़रज़ के मुत़ाबिक़ तो नहीं लेकिन इस से इस बात की आगाही हो जाती है कि येह एक एतिबार से कसीर और एक एतिबार से वाह़िद है और इसी बात की त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने इशारा फ़रमाया, जब इन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देखा कि वोह अक्सर सफ़र में रेहते हैं तो पूछा : "आप क्या करते हैं ?" उन्हों ने जवाब दिया : "सफ़र में रेहता हूं ताकि तवक्कुल में अपनी ह़ालत को सह़ीह़ कर सकूं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मन्सूर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "तू ने अपने बात़िन की तामीर में ज़िन्दगी ख़र्च कर दी बताओ फ़ना फ़ित्तौह़ीद में कहां हो ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तीसरे मक़ाम पर फ़ाइज़ थे तो ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन से चौथे मक़ाम की त़रफ़ बढ़ने का मुत़ालबा किया। अगर आप **सुवाल** करें कि आप चौथे मक़ाम की तशरीह़ नहीं कर सकते तो तीसरे मक़ाम ही की वज़ाह़त कर दें ? तो मैं येह **जवाब** दूंगा : जानना चाहिए ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई ख़ालिक़ नहीं और उस की इजाज़त के बिग़ैर ज़मीनो आस्मान का एक ज़र्रा भी ह़रकत नहीं करता और फ़क़्र, ग़ना, मौत और ज़िन्दगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इजाज़त से है और वोह हर चीज़ का पैदा करने वाला है, जिस ने इस चीज़ का मुशाहदा किया और जान लिया कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं वोह इस के इलावा हर चीज़ से बे परवाह हो गया और किसी चीज़ की त़रफ़ नज़र न की क्यूंकि हर चीज़ उस की क़ुदरत से मुसख़्ख़र है। येह उसी त़रह़ है कि जब बादशाह किसी को मुआ़फ़ कर दे, तो वोह शख़्स क़लम व क़िरत़ास (यानी काग़ज़) की त़रफ़ नहीं देखेगा और न उन का शुक्र अदा करेगा, बल्कि वोह कातिब की त़रफ़ देखेगा जो बादशाह है उस का शुक्रिय्या अदा करेगा और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा अस्बाब की त़रफ़ देखता है तो वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो क़लम की त़रफ़ देखता और उस का शुक्र अदा करता है और काग़ज़ व सियाही की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है और जिस मुवह़्ह़िद का हम ने ज़िक्र किया है उसे बादशाह का जमाल क़लम को देखने से मदहोश कर देता है या इस बात से मदहोश कर देता है कि उस के दिल में क़लम या सियाही का वुजूद खटके, न तो वोह उसे देखता है, न उसे याद करता है।

अगर तुम सुवाल करो कि येह जमादात में तो ठीक हैं जो कि मुसख़्ख़र हैं लेकिन इसे उस इन्सान में कैसे समझा जाए जो भलाई, मुआ़फ़ी, अ़त़ा करने और मन्अ़ करने में ख़ुद मुख़्तार है और येह बात कैसे समझी जाए कि अस्ल में उसी ने येह सब कुछ किया है ? मैं जवाब देता हूं : इस वक़्त अक्सर

www.dawateislami.net

लोगों के क़दम फिसल जाते हैं, अलबत्ता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुख़्लिस बन्दे मह़फ़ूज़ रेहते हैं, शैत़ान को उन पर कोई तसल्लुत़ ह़ासिल नहीं होता, वोह बसीरत के नूर से मुशाहदा करते हैं कि कातिब मुसख़्ख़र व मजबूर है, जिस त़रह़ तमाम कमज़ोर लोग देखते हैं कि क़लम कातिब के हाथ में मुसख़्ख़र होता है इस सिलसिले में कमज़ोर लोगों को उसी त़रह़ मुग़ालत़ा लगता है, जैसे कोई च्यूंटी ऐसे काग़ज़ पर चले जिस पर लिखा जा रहा हो, तो उस की निगाह किताब के इदराक से क़ासिर हो जाती है, पस वोह क़लम की नोक को देख कर लिखना इसी की त़रफ़ मन्सूब कर देती है, येह इसी त़रह़ है जैसे कमज़ोर लोगों की बसारत। लेकिन जिन लोगों की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी तौफ़ीक़ से मदद फ़रमाई और अपने नूर से उन के सीनों को खोल दिया उन्हों ने इस से बढ़ कर मुशाहदा किया, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के ह़क़ में ज़मीनो आस्मान के हर ज़र्रे की ज़बान को उस कुदरत के तह़्त कुव्वते गोयाई अ़त़ा फ़रमा दी, जिस के साथ हर चीज़ बोलती है, ह़त्ताकि येह अपनी मुनाजात के साथ हर चीज़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ तक़्दीस सुनते हैं नीज़ वोह तमाम अश्या अपनी आ़जिज़ी की शहादत ऐसी ज़बान के साथ देती हैं जो तेज़ है, वोह हुरूफ़ और आवाज़ के बिग़ैर गुफ़्तगू करती हैं और इस गुफ़्तगू को वोह नहीं सुन सकते जो सुनने की कुव्वत नहीं रखते और उस आ़लम में हर ज़र्रा अरबाबे कुलूब (यानी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) के साथ मुनाजात में मसरूफ़ है और येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कलाम का वोह समुन्दर है जिस की इन्तिहा नहीं, जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّیْ

(پ١٦،الكهف:١٠٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिए सियाही हो।

पस येह सब ज़र्रात अरबाबे कुलूब के सामने मलकूत के असरार बयान करते हैं। और राज़ फ़ाश करना बुरी आ़दत है, बल्कि (मश्हूर मक़ूला है) صُدُوْرُ الْأَحْرَارِ قُبُوْرُ الْأَسْرَارِ "यानी आज़ाद लोगों के सीने राज़ों के दफ़ीने हैं।"

क्या आप ने कभी देखा है कि कोई शख़्स बादशाह के राज़ों का अमीन हो और वोह लोगों के सामने बादशाह के राज़ों को बयान कर दे ? और अगर हर राज़ को ज़ाहिर करना जाइज़ होता तो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह इरशाद न फ़रमाते :

لَوْ عَلِمْتُمْ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيْلًا وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيْرًا .

तर्जमा : अगर तुम वोह जानते जो मैं जानता हूं तो तुम कम हंसते और ज़्यादा रोते।

(المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابى ذرالغفارى، الحديث ٢١٥٧٢،ج٨،ص١٢١)

बल्कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन राज़ों को सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सामने बयान फ़रमा देते ताकि वोह रोएं और हंसने से बाज़ रहें। नीज़ अगर राज़ को ज़ाहिर करना जाइज़ होता तो आप तक़्दीर का राज़ फ़ाश करने से मन्अ़ न करते और न ही येह फ़रमाते : "जब सितारों का ज़िक्र हो तो ख़ामोश रहो, जब तक़्दीर का ज़िक्र हो तो ख़ामोश रहो और जब मेरे सह़ाबए किराम का ज़िक्र हो तो ख़ामोश रहो।" (المعجم الكبير، الحديث١٤٢٧، ج٢، ص٩٦، بتقدمٍ وتأخرٍ)

और न ही आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को बाज़ राज़ों से ख़ास फ़रमाते।

अब हम आप को समझाने के लिए एक मिसाल ज़िक्र करते हैं, पस हम केहते हैं : नूरे इलाही عَزَّوَجَلَّ की मशअ़ल से देखने वाले एक शख़्स ने सियाही से काग़ज़ का चेहरा सियाह होता देखा तो पूछा : तेरा चेहरा सियाह कैसे हो गया ? इस का क्या सबब है ? काग़ज़ ने जवाबन कहा : तू ने इस मुत़ालबे में मुझ से इन्साफ़ नहीं किया, मैं ने ख़ुद अपने चेहरे को सियाह नहीं किया, बल्कि सियाही से पूछो वोह दवात में जम्अ़ थी, उस ने अपने वत़न से सफ़र इख़्तियार किया और ज़ुल्मो ज़्यादती करते हुवे मेरे चेहरे के सिह़्ह़न में उतर आई। उस शख़्स ने कहा : तुम ने सच कहा। फिर उस ने सियाही से उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो सियाही ने जवाब दिया : तू ने मुझ से इन्साफ़ नहीं किया, मैं तो पुख़्ता अ़ज़्म किए दवात में बैठी थी कि उस से नहीं निकलूंगी मगर क़लम ने मुझ पर ज़ुल्म कर के मुझे बे वत़न कर दिया, मुझे बखेर कर सफ़ेद काग़ज़ पर फैला दिया जैसा कि तुम देख रहे हो लिहाज़ा मुझ से सुवाल करने के बजाए क़लम से पूछो। वोह शख़्स केहने लगा : तुम ने ठीक कहा। फिर उस ने क़लम से इस के ज़ुल्मो ज़्यादती के बारे में पूछा : तुम ने सियाही को बे वत़न क्यूं किया ? तो उस ने जवाब दिया : हाथ और उंगलियों से पूछो, मैं तो दरिया के कनारे एक लकड़ी की सूरत में खड़ा था, सर सब्ज़ दरख़्तों के दरमियान ख़ुश व ख़ुर्रम था फिर एक हाथ छुरी ले कर आया और मेरा छिल्का उतार लिया और मुझे जड़ से काट कर मेरे पोरे जुदा किए, फिर मुझे तराशा, मेरे सर को शक़ किया और मुझे रौशनाई की सियाही में ग़ोत़ा ज़न कर दिया। वोही हाथ मुझ से ख़िदमत लेता है और मुझे सर के बल चलाता है, तुम ने सुवाल कर के मेरे ज़ख़्मों पर नमक छिड़का और मुझ पर इ़ताब किया, मुझे छोड़ो और उस से पूछो जिस ने मुझ पर ज़ुल्म किया।

उस ने कहा : तुम ने सच कहा। फिर उस ने हाथ से पूछा : तुम ने क़लम पर क्यूं ज़ुल्म किया ? उस ने अपना उ़ज़्र बयान करते हुवे कहा : मैं तो गोश्त, ख़ून, पठ्ठे और हड्डी का मजमूआ़ हूं, क्या तुम ने किसी जिस्म को ख़ुद ब ख़ुद ह़रकत करते देखा है ? मैं तो एक सुवारी हूं जो मुसख़्ख़र है, मुझ पर एक सुवार है जिसे क़ुदरत और वक़्त कहा जाता है, वोही मुझे तमाम रूए ज़मीन में दौड़ाता फिराता है, क्या तू ने नहीं देखा कि ढेले, पथ्थर और दरख़्त कभी अपनी जगह से ख़ुद ब ख़ुद ह़रकत नहीं करते क्यूंकि इन पर इस क़िस्म का मज़बूत़, ग़ालिब और त़ाक़तवर सुवार सुवारी नहीं कर रहा, क्या तुम नहीं देखते कि मुर्दों के हाथ उन चीज़ों में सूरतन तो मसावी होते हैं फिर भी ह़रकत नहीं करते, हाथों और क़लम के दरमियान कोई मुआ़मला नहीं और मेरी हैसिय्यत येह है कि मेरे और क़लम के दरमियान कोई मुआ़मला नहीं, क़ुदरत से मेरे मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करो क्यूंकि मैं तो सुवारी हूं जो मुझ पर सुवार हो वोह मुझे ह़रकत देता है।

उस ने कहा : तुम ने दुरुस्त कहा। फिर उस ने क़ुदरत से उस के मुआ़मले के मुतअ़ल्लिक़ पूछा कि वोह हाथ को क्यूं इस्तिमाल करती है और इस से क्यूं ख़िदमत लेती है ? उस ने जवाब दिया : मुझे मलामत व इ़ताब न करो, बहुत से मलामत करने वालों पर ख़ुद मलामत की जाती है और

www.dawateislami.net

मलामत का शिकार होने वाले कई लोग बे गुनाह होते हैं, तुम पर मेरा मुआ़मला कैसे पोशीदा रेह गया और तुम ने कैसे गुमान कर लिया कि मैं ने हाथ पर ज़ुल्म किया है ह़ालांकि मैं ह़रकत देने से पेहले इस पर सुवार थी, मैं तो इसे ह़रकत नहीं दे रही थी और न ही इसे मुसख़्ख़र कर रही थी बल्कि मैं तो साकिन थी। सोचने वालों ने येह गुमान किया कि मैं मुर्दा या मादूम हूं क्यूंकि मैं न तो ह़रकत करती थी और न किसी को ह़रकत देती थी यहां तक कि एक मुअक्किल मेरे पास आया, उस ने मुझे ह़रकत दी और झन्झोड़ा जैसा कि तुम देख रहे हो। अब मैं इस की मुवाफ़क़त तो कर सकती थी लेकिन मुख़ालफ़त मेरे बस में न थी, इस मुअक्किल को इरादा केहते हैं। मैं तो इस का नाम ही जानती हूं और येह जानती हूं कि इस ने यकबारगी चढ़ाई कर के मुझे गेहरी नींद से जगा दिया और तुझ से ज़बरदस्ती वोह काम लिया कि अगर मेरी राए को पूछता तो मुझे गुन्जाइश थी कि मैं उसे न करती इस ने कहा : तुम ने सच कहा।

फिर उस ने इरादे से पूछा : तुझे कैसे जुरअत हुई कि तू ने इस ख़ामोश व साकित कुदरत को ह़रकत में लगा दिया और इस क़दर ज़बरदस्ती की, कि वोह छुटकारा न पा सकी ? इरादे ने जवाब दिया : मुझ पर जल्दी न करो मेरे पास भी उ़ज़्र है और तुम मुझे मलामत कर रहे हो, क्यूंकि मैं ख़ुद नहीं उठा बल्कि मुझे उठाया गया है, मैं अपने इरादे से नहीं गया बल्कि मुझे सख़्त हुक्म और पुख़्ता इरादे से भेजा गया। जाने से पेहले तो मैं साकिन था लेकिन इ़ल्म का क़ासिद ह़ज़रते दिल से अ़क़्ल की ज़बान पर मेरे पास आया कि कुदरत को उठा दो तो मैं ने मजबूरन उसे उठाया, मैं तो मिस्कीन हूं और इ़ल्मो अ़क़्ल की कुदरत के तह़्त मुसख़्ख़र हूं और मुझे मालूम नहीं कि किस सबब से मैं इस के लिए मुसख़्ख़र किया गया और इस का हुक्म मानना मुझ पर लाज़िम हुवा लेकिन इतनी बात ज़रूर जानता हूं कि मैं बिल्कुल पुर सुकून था, जब तक येह आने वाला न आया था और येही ह़ाकिम आ़दिल है या ज़ालिम ? मैं इस के सामने हाथ बांधे खड़ा हूं और इस की इत़ाअ़त को लाज़िम समझता हूं। जब येह क़त़ई हुक्म दे देता है तो मुझे मुख़ालफ़त की ताब नहीं रेहती, मुझे मेरी उ़म्र की क़सम ! जब तक वोह ख़ुद अपने दिल में मुतरद्दिद और हुक्म में ह़ैरान रेहता है तो मैं ख़ामोश रेहता हूं लेकिन उस के हुक्म का मुन्तज़िर और चोकस रेहता हूं। जब उस का हुक्मे क़त़ई होता है तो मैं अपनी त़बीअ़त के मुत़ाबिक़ और उस के इत़ाअ़त के ग़लबे के तह़्त मजबूर हो जाता हूं और कुदरत को उठाता हूं कि वोह उस के हुक्म के मुत़ाबिक़ अ़मल करे तो मेरे मुआ़मले में इ़ल्म से पूछो, मैं तो शाइ़र के इस क़ौल के मिस्दाक़ हूं :

مَهْمَا تَرَحَّلْتُ عَنْ قَوْمٍ وَقَدْ قَدَرُوْا أَنْ لَا تُفَارِقَهُمْ فَالرَّاحِلُوْنَ هُمُ

तर्जमा : जब मैं एक क़ौम से कूच कर जाता हूं और उन्हों ने फ़र्ज़ किया था कि हम उन से जुदा नहीं होंगे तो जुदा होने वाले वोह हैं।

येह सुन कर उस शख़्स ने कहा : तुम ने सच कहा। फिर वोह इ़ल्म, अ़क़्ल और दिल की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और उन्हें झिड़का कि उन्हों ने इरादे को क्यूं उभारा और कुदरत को ह़रकत देने पर क्यूं मजबूर किया ? तो अ़क़्ल ने जवाब दिया : मैं तो एक चराग़ हूं, मैं ख़ुद ब ख़ुद नहीं जलती, मुझे रौशन किया जाता है। दिल ने कहा : मैं तो एक तख़्ती हूं, मैं ख़ुद ब ख़ुद नहीं फैलती बल्कि मुझे

www.dawateislami.net

फैलाया जाता है। इ़ल्म ने यूं इज़्हारे ख़याल किया : मैं तो एक नक़्श हूं जो दिल की सफ़ेद तख़्ती पर उस वक़्त नक़्श किया जाता है जब अ़क़्ल का चराग़ रौशन होता है, मैं ख़ुद ब ख़ुद मुन्तक़िल नहीं होता, दिल की येह तख़्ती काफ़ी अ़र्से मुझ से ख़ाली रही, तुम क़लम से मेरे बारे में पूछो क्यूंकि लिखाई तो क़लम ही से होती है, उस वक़्त साइल आ़जिज़ हो जाता है, उस का जवाब उसे नफ़्अ़ नहीं देता तो वोह केहता है : इस रास्ते में मेरी थकावट बहुत हो गई और मैं ने बहुत मन्ज़िलें तै़ कर लीं, मुझे जिस से तवक़्क़ोअ़ हुई कि वोह बताएगा उस ने मुझे दूसरों के ह़वाले कर दिया लेकिन कसरत से फिरने की वज्ह से मुझे ख़ुशी हुई क्यूंकि हर एक से ऐसा कलाम सुना जिसे मेरे दिल ने क़बूल किया और हर एक ने एतिराज़ दूर करने के लिए वाज़ेह़ उ़ज़्र पेश किया। अब ऐ इ़ल्म ! तुम्हारा येह केहना कि मैं एक नक़्श और ख़त़ हूं और मुझे क़लम ने लिखा है, येह बात मुझे समझ नहीं आती, मुझे तो एक ही क़लम का इ़ल्म है जो लकड़ी से बनता है, तख़्ती जो लोहे या लकड़ी की होती है, ख़त़ रौशनाई से और चराग़ आग से रौशन होता है, मैं ने इस मन्ज़िल में तख़्ती, चराग़, ख़त़ और क़लम की बात सुनी लेकिन इन में से किसी को देखा नहीं, मैं चक्की की आवाज़ तो सुनता हूं लेकिन चक्की नज़र नहीं आती ? तो इ़ल्म ने उसे जवाब दिया : अगर तुम अपनी बात में सच्चे हो तो तुम्हारे पास पूंजी कम, ज़ादे राह क़लील और सुवारी कमज़ोर है और जिस रास्ते पर जा रहे हो उस में हलाकतें ज़्यादा हैं, पस तुम्हारे लिए येही काफ़ी है कि येह ख़याल छोड़ दो, तुम इस मैदान के मर्द नहीं लिहाज़ा इस से हट जाओ क्यूंकि जिस को जिस काम के लिए पैदा किया गया हो वोह काम उस के लिए आसान कर दिया जाता है। और अगर तुम इस मक़्सद के रास्ते की तक्मील में रग़बत रखते हो तो कान लगा कर सुनो और गवाह रहो।

जान लो ! तुम्हारे रास्ते में येह तीन आ़लम हैं।

(1)...**आ़लमे मुल्क वश्शहादह :** काग़ज़, सियाही, क़लम और हाथ का तअ़ल्लुक़ इस आ़लम से है और इन मनाज़िल को तुम ने आसानी से तै़ कर लिया है।

(2)...**आ़लमे मलकूत :** येह पेहले के बाद है। जब तुम आ़लमे मुल्क से तजावुज़ कर जाओगे तो इस की मन्ज़िल तक पहुंच जाओगे लेकिन इस के रास्ते में बहुत बड़े जंगल, बुलन्दो बाला पहाड़ और ग़र्क़ करने वाले समुन्दर हैं और मुझे नहीं मालूम कि तुम किस त़रह़ इस में सलामत रहोगे।

(3)...**आ़लमे जबरूत :** येह आ़लमे मुल्क और आ़लमे मलकूत के दरमियान है। तुम ने इस की तीनों मन्ज़िलें तै़ कर ली हैं क्यूंकि इस की इब्तिदा में क़ुदरत, इरादा और इ़ल्म की मन्ज़िल हैं और येह आ़लमे मुल्क और आ़लमे मलकूत के दरमियान वासित़ा है क्यूंकि आ़लमे मुल्क का रास्ता आसान है जब कि आ़लमे मलकूत का रास्ता इस से दुश्वार गुज़ार है।

आ़लमे जबरूत, जो आ़लमे मुल्क और आ़लमे मलकूत के दरमियान है, उस कश्ती की त़रह़ है जो पानी और ज़मीन के दरमियान होती है। अब न तो वोह पानी के इज़्त़िराब के ह़द में है और न ही ज़मीन के सुकून और ठहराव की ह़द में। पस ज़मीन पर चलने वाला शख़्स आ़लमुल मुल्क वश्शहादह में है, अगर उस की क़ुव्वत तजावुज़ करे और कश्ती पर सुवार हो जाए तो वोह इस त़रह़ है जैसे आ़लमे जबरूत में चलता है, अगर वोह इस मन्ज़िल पर पहुंच जाए कि बिग़ैर थकावट और बिग़ैर

www.dawateislami.net

कश्ती के पानी पर चल सकता हो तो वोह आ़लमे मलकूत में चलता है लेकिन अगर तुम पानी पर चलने की त़ाक़त नहीं रखते तो वापस आ जाओ कि तुम ज़मीन से आगे बढ़ गए लेकिन कश्ती से पीछे रेह गए, अब तुम्हारे सामने साफ़ पानी बाक़ी है और आ़लमे मलकूत का पेहला मुशाहदा वोह क़लम है जिस के साथ इ़ल्म लिखा जाता है और उस यक़ीन का हुसूल है जिस के ज़रीए़ वोह पानी पर चलता है। क्या तुम ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान नहीं सुना कि जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई कि वोह पानी पर चलते थे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَوْ إِزْدَادَ يَقِيْنًا لَمَشٰى عَلَى الْهَوَاءِ .

तर्जमा : अगर वोह यक़ीन में बढ़ जाते तो हवा पर चलते।

(حلیۃ الاولیاء، وھیب بن الورد، الحدیث ۱۱۷۴۰، ج۸، ص۱۶۶)

(इ़ल्म की येह बातें सुन कर) सुवाल करने वाले सालिक ने कहा : मैं अपने मुआ़मले में ह़ैरान हूं और जो तुम ने रास्ते का ख़त़रा बयान किया है, इस बात से मेरे दिल में ख़ौफ़ पैदा हुवा है और मुझे नहीं मालूम कि मैं इस ख़ौफ़नाक जंगल से गुज़रने की त़ाक़त भी रखता हूं या नहीं, क्या इस की कोई अ़लामत भी है ? इ़ल्म ने जवाब दिया : हां ! अपनी आंखें खोलो, दोनों आंखों की रौशनी को जम्अ़ कर के मेरी त़रफ़ देखो। अगर तुम्हारे सामने वोह क़लम आ जाए जिस के साथ मुझे दिल की तख़्ती पर लिखा जाता है तो तुम इस रास्ते के एह्ल हो, क्यूंकि जो आदमी आ़लमे जबरूत से बढ़ जाए और मलकूत के दरवाज़ों में से पेहले दरवाज़े को खट खटाए तो उस पर क़लम ज़ाहिर हो जाता है, क्या तुम नहीं देखते कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर पेहली मरतबा ही क़लम वाज़ेह़ कर दिया गया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नाज़िल हुवा :

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۝ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ ۝ (پ۳۰، العلق: ۳-۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पढ़ो और तुम्हारा रब ही सब से बड़ा करीम जिस ने क़लम से लिखना सिखाया आदमी को सिखाया जो न जानता था।

सालिक ने कहा : अब मैं ने अपनी आंख खोल ली, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं बांस और लकड़ी को नहीं देखता और न क़लम को जानता हूं मगर येह कि वोह इस त़रह़ है। तो इ़ल्म ने कहा : तुम अपने मक़्सूद से दूर हो गए, क्या तुम ने नहीं सुना कि घर का सामान साह़िबे ख़ाना जैसा होता है ? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात किसी चीज़ के मुशाबेह नहीं ? ऐसे ही उस का दस्ते क़ुदरत दूसरे लोगों के हाथों, उस का क़लम दूसरे क़लमों, उस का कलाम दीगर कलामों और उस का ख़त़ दूसरी तेह़रीरों जैसा नहीं। येह आ़लमे मलकूत से तअ़ल्लुक़ रखने वाले उमूरे इलाहिय्या हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी ज़ात में न जिस्म है, न किसी दूसरे की त़रह़ मकान में है और न ही उस का दस्ते क़ुदरत दूसरे हाथों की त़रह़ गोश्त, हड्डी और ख़ून का मुरक्कब है और न उस की तख़्ती और क़लम लकड़ी का है, उस का कलाम आवाज़ व ह़ुरूफ़ से मुरक्कब नहीं, उस की तेह़रीर नुक़ूश से पाक है और उस की रौशनाई फटकड़ी और माज़ू (एक रंग का नाम है) से पाक है। अगर तुम उन चीज़ों को

www.dawateislami.net

इस त़रह़ नहीं देखते तो मैं तुम्हें हीजड़ा समझता हूं, जो पाकीज़गी की मर्दानगी और तश्बीह की तानीस के दरमियान है, दोनों के दरमियान तज़बज़ुब का शिकार, न इधर का न उधर का।

पस तुम किस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ातो सिफ़ात को अजसाम से और उस के कलाम को हुरूफ़ और आवाज़ से पाक क़रार दोगे ? जब कि तुम ने उस के हाथ, क़लम, तख़्ती और तेह़रीर में ग़ौरो फ़िक्र करना शुरूअ़ कर दिया। अगर तुम सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान : إِنَّ اللّٰهَ خَلَقَ آدَمَ عَلٰى صُوْرَتِهٖ "**तर्जमा :** बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को अपनी (पसन्दीदा) सूरत पर पैदा फ़रमाया।"(1) (صحيح مسلم، كتاب البر، باب النهى عن ضرب الوجه، الحديث٦٦٥٥،ص١١٣٤) से ज़ाहिर माना समझते हो जिस का इदराक बसीरत से होता है न कि बसारत से तो मह़ज़ उस की पाकीज़गी बयान करने वाले बन जाओ और रास्ते को लपेट दो कि तुम मुक़द्दस वादी तक पहुंच चुके हो और दिल की गेहराई के साथ इस बात को सुनो जो तुम्हारे दिल में डाली जाती है। शायद तुम्हें आग से रेहनुमाई मिल जाए और तुम्हें अ़र्श के पर्दों के पीछे से आवाज़ दी जाए, जिस त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आवाज़ दी गई : اِنِّیْۤ اَنَا رَبُّكَ (پ١٦،طٰہٰ:١٢) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक मैं तेरा रब हूं।"

जब सालिक ने इ़ल्म से येह बात सुनी, तो उसे अपने नफ़्स की कोताही का शुऊ़र ह़ासिल हुवा और येह कि वोह तश्बीह व तन्ज़िय्या के दरमियान हीजड़े की सूरत में है तो इसे अपने नफ़्स पर इस क़दर गुस्सा आया कि इस की गर्मी से उस के दिल में आग भड़क उठी। जब उस ने अपने नफ़्स को कोताह नज़री से देखा और क़रीब था, कि उस के दिल के चराग़ का तेल आग के पहुंचे बिग़ैर रौशन हो जाए और जब इस की गर्मी की वज्ह से इस में इ़ल्म फूंका गया, तो इस के तेल ने शोला पकड़ा और वोह नूरुन अ़ला नूर हो गया पस इ़ल्म ने उस से कहा : अब इस फ़ुर्सत को ग़नीमत जानो और अपनी आंख खोलो, शायद तुम आग से रेहनुमाई ह़ासिल कर लो चुनान्चे, उस ने आंख खोली तो उस के लिए क़लमे इलाही عَزَّوَجَلَّ मुन्कशिफ़ हो गया और वोह ऐसा ही था जैसे तन्ज़िय्या के सिलसिले में इ़ल्म ने बयान किया था। न लकड़ी का है, न बांस का, न तो उस का सर है और न ही दुम। वोह हमेशा इन्सानों के दिलों पर मुख़्तलिफ़ उ़लूम लिखता है और हर दिल में इस का एक सिर (यानी राज़)

1....इस ह़दीसे पाक के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मौलाना **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "यानी अपनी पसन्दीदा सूरत पर पैदा फ़रमाया कि तमाम मख़्लूक़ में उसे ह़सीनो जमील फ़रमाया, ख़ुद फ़रमाता है : لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْۤ اَحْسَنِ تَقْوِیْمٍ ۝ (پ٣٠،التين:٤) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने आदमी को अच्छी सूरत पर बनाया।" लिहाज़ा ह़दीस पर येह एतिराज़ नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला तो सूरत से पाक है फिर उस की सूरत कैसी। या येह इज़ाफ़त शरफ़ के लिए है जैसे बैतुल्लाह या नाक़तुल्लाह। बाज़ रिवायात में है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सूरते रह़्मान पर पैदा फ़रमाया, अगर वोह ह़दीस सह़ीह़ हो तो इस का मत़लब भी येही होगा। ख़याल रहे कि इन्सान **अल्लाह** तआ़ला की बड़ी कामिल मख़्लूक़ है, उसे रब ने सुनने, देखने, बोलने और सोचने समझने की त़ाक़त बख़्शी, अगर येह तरक़्क़ी करे तो फ़रिश्तों से अफ़्ज़ल हो जाए, अगर नीचे गिरे तो इब्लीस से बद तरीन हो जाए और इस की सारी कुव्वतें सर और चेहरे में जम्अ़ हैं इस लिए इस पर मारने से मन्अ़ फ़रमाया गया।"

(مرأة المناجيح شرح مشكوة المصابيح،باب ما لا يضمن من الجنايات،الفصل الاول، ج٥، ص٢٥٦-٢٥٧)

www.dawateislami.net

है हालांकि इस का अपना कोई सिर नहीं तो इस से तअ़ज्जुब मुकम्मल हुवा और इस ने कहा : इ़ल्म कितना बेहतरीन दोस्त है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे मेरी त़रफ़ से अच्छी जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। क्यूंकि अब मेरे लिए ज़ाहिर हो गया कि उस ने क़लम के बारे में जो कुछ बयान किया था वोह सच है। बेशक मैं इस क़लम को दीगर क़लमों की त़रह़ नहीं देखता। उस वक़्त उस ने इ़ल्म को रुख़्सत किया और उस का शुक्रिय्या अदा करते हुवे कहा : मैं ने तुम्हारा बहुत वक़्त लिया और बहुत बह़्स की। अब मैं इरादा करता हूं कि क़लम के पास ह़ाज़िरी के लिए सफ़र करूं और उस से उस का मुआ़मला पूछूं।

चुनान्चे, उस ने क़लम की त़रफ़ सफ़र शुरूअ़ कर दिया और उस से पूछा : तुझे क्या हुवा कि तू हमेशा दिलों पर वोह उ़लूम लिखता रेहता है जिन के ज़रीए़ इरादे तक़्दीर की त़रफ़ उठते हैं और फिर मक़्दूरात की त़रफ़ जाते हैं। इस ने कहा : तुम वोह सब कुछ भूल गए हो जो तुम ने **आ़लमुल ग़ैब वश्शहादह** में देखा था और क़लम से तुम ने सुवाल किया तो उस ने जवाब देते हुवे तुम्हें हाथ की त़रफ़ फेर दिया ? उस ने जवाब दिया : मैं नहीं भूला। क़लम ने कहा : मेरा जवाब भी उस के जवाब की त़रह़ है। उस ने कहा : येह कैसे हो सकता है ह़ालांकि तू उस जैसा नहीं है ? क़लम ने जवाब दिया : क्या तू ने सुना नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अपनी सूरत पर पैदा किया ? उस ने कहा : हां, सुना है। उस ने जवाब दिया : मेरे बारे में उस से पूछो जिसे **यमीनुल मुल्क** कहा जाता है। मैं उस के क़ब्ज़े में हूं, वोही मुझे फेरता है, मैं उस के हुक्म के ताबेअ़ व मुसख़्ख़र हूं। पस तस्ख़ीर में क़लमे इलाही और इन्सानी क़लम में कोई फ़र्क़ नहीं, फ़र्क़ सिर्फ़ ज़ाहिरी सूरत का है। सालिक ने पूछा : **यमीनुल मुल्क** कौन है ? क़लम ने जवाब दिया : क्या तुम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह इरशाद नहीं सुना ? وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِیّٰتٌۢ بِیَمِیْنِهٖ (پ۲۴، الزمر:۶۷) **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस की कुदरत से सब आस्मान लपेट दिए जाएंगे।" उस ने कहा : हां, सुना है। क़लम ने कहा : क़लमें भी उसी के क़ब्ज़ए कुदरत में हैं और वोही उन को इधर उधर फेरता है।

अब सालिक ने क़लम से यमीन की त़रफ़ सफ़र शुरूअ़ कर दिया यहां तक कि उसे देखा और उस के अ़जाइबात का मुशाहदा किया जो क़लम के अ़जाइब से ज़्यादा थे इन में से न तो किसी का वस्फ़ बयान किया जा सकता था और न ही शर्ह़ की जा सकती थी, बल्कि कई जिल्दों में इस का सौ वां ह़िस्सा भी नहीं समा सकता था।

ख़ुलासए कलाम येह है कि वोह यमीने कुदरत है जो दीगर दाएं हाथों की त़रह़ नहीं दस्ते कुदरत है लेकिन दूसरे हाथों का सा नहीं, और उंगली है लेकिन दूसरी उंगलियों जैसी नहीं, उस ने क़लम को उस के क़ब्ज़े में ह़रकत करते हुवे देखा तो उस के लिए क़लम का उ़ज़्र ज़ाहिर हो गया, उस ने यमीन से उस के मुआ़मले और क़लम को ह़रकत देने के बारे में सुवाल किया तो उस ने कहा : मेरा भी वोही जवाब है जो तू ने आ़लमुश्शहादह के दाएं हाथ से सुना (कि उस ने कहा था) कि कुदरत से पूछो क्यूंकि हाथ ज़ाती त़ौर पर कुछ नहीं कर सकता, उसे कुदरत ही ह़रकत देती है फिर वोह आ़लमे कुदरत की त़रफ़ गया और उस में ऐसे अ़जाइब देखे जिन के सामने पेहले के अ़जाइब मामूली मालूम हुवे और उस ने यमीन को ह़रकत देने के बारे में पूछा तो उस ने जवाब दिया कि मैं नेक सिफ़त हूं तो

www.dawateislami.net

क़ादिर से पूछ क्यूंकि ज़िम्मेदारी सिफ़त अ़ता करने वाले पर होती है सिफ़त पर नहीं। उस वक़्त क़रीब था कि सालिक लग़ज़िश खा जाता और ज़बान सुवाल की जुरअत कर जाती लेकिन उसे क़ौले साबित के साथ इस्तिक़्लाल नसीब हुवा और उसे बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के पर्दों के पीछे से निदा दी गई : لَا یُسْئَلُ عَمَّا یَفْعَلُ وَهُمْ یُسْئَلُوْنَ ۝ (پ۱۷، الانبیآء: ۲۳) **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और उन सब से सुवाल होगा।" येह सुन कर उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हैबत त़ारी हो गई, वोह बेहोश हो कर गिर पड़ा और एक मुद्दत तक अपनी बेहोशी में तड़पता रहा, जब इफ़ाक़ा हुवा तो अ़र्ज़ करने लगा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू पाक है, तेरी शान किस क़दर अ़ज़ीम है, मैं ने तेरी बारगाह में तौबा की, तुझ पर भरोसा किया और इस बात पर ईमान लाया कि तू ही बादशाह, वाहिद, जब्बारो क़ह्हार है, मैं तेरे इलावा किसी से नहीं डरता, और न ही तेरे सिवा किसी से उम्मीद रखता हूं, तेरे अ़ज़ाब से तेरे ही अ़फ़्वो दर गुज़र में पनाह चाहता हूं, तेरी नाराज़गी से तेरी रिज़ा में पनाह लेता हूं।

अब हम अपने मक़्सद की त़रफ़ पलटते हुवे तवक्कुल का माना बयान करते हैं, पस हम केहते हैं : तवक्कुल से मुराद येह जानते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर दिल का एतिमाद करना है कि उस के इ़ल्मो क़ुदरत से कोई चीज़ भी ख़ारिज नहीं और उस का ग़ैर नफ़्अ़ व नुक़्सान पर क़ादिर नहीं।

तवक्कुल के मुतअ़ल्लिक़ अस्लाफ़ के अक़्वाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा दबीली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा : "तवक्कुल क्या है?" उन्हों ने मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम क्या केहते हो?" मैं ने कहा : "हमारे अस्ह़ाब तो फ़रमाते हैं कि अगर दरिन्दे और सांप तुम्हारे दाएं बाएं हों तो भी तुम्हारे बात़िन में कोई ह़रकत न हो।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाने लगे : "हां! येह तवक्कुल के क़रीब है लेकिन अगर एह्ले जन्नत, जन्नत में नेमतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो रहे हों और जहन्नमियों को जहन्नम में अ़ज़ाब दिया जा रहा हो, फिर तुम उन दोनों के दरमियान तमीज़ करने लगो, तो तवक्कुल से निकल जाओगे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह क़रशी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से तवक्कुल के बारे में पूछा गया तो उन्हों ने फ़रमाया : "हर ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तअ़ल्लुक़ क़ाइम रखना।" साइल ने अ़र्ज़ की : "मज़ीद कुछ फ़रमाइए।" फ़रमाया : "हर उस सबब को छोड़ देना जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने में रुकावट हो।"

तवक्कुल के दरजात

तवक्कुल के तीन दरजे हैं :

(1)...पेहला दरजा येह है कि इन्सान का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर एतिमाद इस त़रह़ हो जिस त़रह़ इस का एतिमाद उस वकील पर होता है जिस की सच्चाई, अमानत, इनायत, हिदायत और शफ़्क़त उसे मालूम होती है।

www.dawateislami.net

(2)...दूसरा दरजा येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ उस का ह़ाल ऐसा हो जैसे बच्चे का ह़ाल अपनी मां के साथ होता है कि उस के सिवा किसी को नहीं पहचानता और तमाम उमूर में उसी की पनाह लेता है और येही उस का पेहला ख़याल होता है जो उस के दिल में पैदा होता है। येह वोह मक़ाम है जो इस बात का तक़ाज़ा करता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रेह़्मो करम पर भरोसा करते हुवे उस के सिवा किसी से सुवाल न किया जाए।

(3)...तीसरा दरजा बीमार की ज़र्दी की त़रह़ है कभी हमेशा रेहती है और कभी ज़ाइल हो जाती है।

अगर तुम सुवाल करो, कि क्या इन अह़वाल में बन्दे के साथ तदबीर और अस्बाब का तअ़ल्लुक़ बाक़ी रेहता है? तो जान लीजिए! तीसरा दरजा तो तदबीर की बिल्कुल नफ़ी करता है जब तक येह ह़ालत बाक़ी रहे और दूसरा मक़ाम भी हर तदबीर की नफ़ी करता है, हां! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से फ़रियाद करना और सुवाल करना बाक़ी रेहता है जैसे बच्चा सिर्फ़ अपनी मां को पुकारता है।

मुतवक्किलीन के आमाल का बयान

बाज़ लोगों का गुमान है कि मुतवक्किल को ऐसा होना चाहिए, जैसे क़स्साब के फट्टे पर गोश्त का टुकड़ा रखा होता है लेकिन येह ग़लत़ है।

आमाले मुतवक्किलीन की अक़्साम

हम केहते हैं, मुतवक्किलीन के आमाल दो अक़्साम में मुन्क़सिम होते हैं: (1) नफ़्अ़ बख़्श चीज़ का ह़ासिल करना और उस की ह़िफ़ाज़त करना (2) नुक़्सान देह चीज़ को दूर करना और उसे ख़त्म करना।

(1) **नफ़्अ़ बख़्श चीज़ का ह़ासिल करना:** रहा नफ़्अ़ मन्द चीज़ ह़ासिल करना तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बनाए हुवे त़रीक़े के मुत़ाबिक़ जारी होता है, इस के ख़िलाफ़ नहीं होता जैसा कि सामने रखे हुवे खाने को चबाना या मुंह तक ले जाना और ऐसा न करना बे वुक़ूफ़ी और पागल पन है और वोह अस्बाब जिन के बारे में ग़ालिब गुमान येही है कि अस्बाब के बिग़ैर उन का ह़ुसूल बहुत मुश्किल है जैसे वोह शख़्स जो शह़रों और क़ाफ़िलों से दूर हो जाए और ऐसे जंगलों में सफ़र कर रहा हो, जहां लोगों की आमदो रफ़्त बहुत कम हो और ऐसे सफ़र में ज़ादे राह साथ न ले जाए, मगर येह चीज़ तवक्कुल में शर्त़ नहीं अलबत्ता अगर वोह ज़ादे राह के बिग़ैर ऐसा करे तो येह **तवक्कुल का आला दरजा है,** और वोह चीज़ जो बहुत कम मक़्सूद की त़रफ़ ले जाती है जैसा कि कमाने की तदबीर न करना तो येह चीज़ तवक्कुल को मुकम्मल त़ौर पर ख़त्म कर देती है।

तवक्कुल का दूसरा दरजा: येह है कि आदमी किसी गाऊं या शह़र में अपने घर या मस्जिद में बैठ जाए तो येह भी तवक्कुल है क्यूंकि ऐसा शख़्स ज़ाहिरी कस्ब को छोड़ देता है लेकिन

www.dawateislami.net

येह पेहले दरजे से कमज़ोर है क्यूंकि येह तन्हाई छोड़ कर लोगों के सामने होता और ऐसी जगह बैठता है जहां लोग इस की ख़बरगीरी करते हैं।

तवक्कुल का तीसरा दरजा : येह है कि वोह सुन्नत के मुत़ाबिक़ रिज़्क़े ह़लाल कमाए जैसा कि कस्ब के बाब में बयान हो चुका है और कहा गया कि येह चीज़ उसे तवक्कुल से ख़ारिज नहीं करती, लेकिन येह तवक्कुल का सब से कमज़ोर दरजा है और इस में येह भी शर्त़ है कि उस का एतिमाद सामान पर न हो, और इस की अ़लामत येह है कि वोह चोरी या माल के ज़ाएअ़ होने पर ग़मज़दा न हो।

अ़यालदार का तवक्कुल

जानना चाहिए ! अ़यालदार का अपने एह्ले ख़ाना के ह़क़ में तवक्कुल करना दुरुस्त नहीं क्यूंकि इस का अपने ह़क़ में मुख़्तलिफ़ उमूर के साथ तवक्कुल करना तो सह़ीह़ है जैसे एक हफ़्ते तक खाना खाने से रुके रेहना और अगर उसे खाना वग़ैरा न मिले तो उस का मरने पर राज़ी रेहना, पस येह चीज़ें एह्लो अ़याल के ह़क़ में तसव्वुर नहीं की जा सकतीं लिहाज़ा उन के लिए कमाना ज़रूरी है जैसे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मन्क़ूल है, कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घरवालों के लिए कस्बे मआ़श के लिए बाज़ार तशरीफ़ ले गए। येह हमारे ज़िक्रकर्दा तीसरे मक़ाम की मिसाल है और बाल बच्चों की वज्ह से साल भर के लिए खाना जम्अ़ कर के रखना साबित है जब कि वोह शख़्स जिस की औलाद न हो और उसे विरासत या किसी और सबब से माल मिल जाए तो **पेहली ह़ालत :** यानी तवक्कुल का आला दरजा येह है कि वोह उस वक़्त के लिए ज़रूरत के मुत़ाबिक़ रख ले और बाक़ी ज़ख़ीरा न करे बल्कि फ़ुक़रा में तक़्सीम कर दे।

दूसरी ह़ालत : येह है कि वोह चालीस दिन या उस से कम के लिए जम्अ़ करे। उस शख़्स के बारे में इख़्तिलाफ़ है कि क्या येह चीज़ उसे मुतवक्किलीन के गिरोह से निकाल देगी ? और क्या येह उस दरजे से मह़रूम हो जाएगा जिस का मुतवक्किलीन से वादा किया गया है ?

तीसरी ह़ालत : येह है कि वोह एक महीने या एक साल के लिए जम्अ़ करे और येह चीज़ मुतवक्किलीन के दरजे से मह़रूमी का सबब है। मन्क़ूल है : ह़ैवानात में से सिर्फ़ तीन ह़ैवान जम्अ़ करते हैं : चूहा, च्यूंटी और इन्सान।

(2) **नुक़्सान देह चीज़ को दूर करना :** दूसरा फ़न येह है कि वोह ज़रर को अपने आप से दूर करे या नुक़्सान पहुंचाने वाली चीज़ों से बचे। मिसाल के त़ौर पर वोह गिरने वाली दीवार, दरिन्दों के ठिकानों और टूटी हुई छत से बचे तो येह चीज़ तवक्कुल को बात़िल नहीं करती बल्कि येह सब कुछ साबित है और येह अस्बाब वेह्मी, ज़न्नी और क़त़ई तीन अक़्साम में मुन्क़सिम होते हैं और तवक्कुल के लिए मौहूम को छोड़ना ज़रूरी है मसलन दम करवाना और इस जैसे दीगर आमाल। क्यूंकि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तवक्कुल करने वालों का वस्फ़ इस त़रह़ बयान फ़रमाया कि "वोह दम करवाने, दाग़ लगाने और फ़ाल लेने को छोड़ देते हैं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन

www.dawateislami.net

की येह सिफ़त बयान नहीं फ़रमाई कि वोह सर्दी से महफ़ूज़ रखने वाला लिबास नहीं पेहनते। हां ! जब तक मुमकिन हो वोह ग़ैर की तक्लीफ़ पर सब्र करे और उसे बरदाश्त करे कि येह तवक्कुल की शराइत़ में से है, जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَدَعْ اَذٰهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ (پ۲۲،الاحزاب:۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन की ईज़ा पर दरगुज़र फ़रमाओ और **अल्लाह** पर भरोसा करो और **अल्लाह** बस (काफ़ी) है कारसाज़।

इसी पर क़ियास करते हुवे बाज़ ह़ालात में दवा को तर्क करने का मुआ़मला है। येह भी इसी त़रह़ साबित है और येह मुतवक्किल के मक़ाम की कुव्वत के एतिबार से है।

दो दिन और दो रातें

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **इरशाद फ़रमाते हैं :**

"क्या मैं तुम्हें उन दो दिनों और दो रातों के बारे में न बताऊं जिन की मिस्ल मख़्लूक़ ने नहीं सुनी, (1) एक दिन वोह है जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आने वाला तेरे पास रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ का मुज़्दा ले कर आएगा या उस की नाराज़गी का पैग़ाम। और (2) दूसरा दिन वोह जब तू अपना नामए आमाल लेने के लिए बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर होगा और वोह नामए आमाल तेरे दाएं हाथ में दिया जाएगा या बाएं में। (और दो रातों में से) (1) एक रात वोह है जो मय्यित अपनी क़ब्र में गुज़ारेगी और उस से पेहले उस ने ऐसी रात कभी नहीं गुज़ारी होगी और (2) दूसरी रात वोह है जिस की सुब्ह़ को क़ियामत का दिन होगा और फिर इस के बाद कोई रात नहीं आएगी।"

बाब : 36 महब्बत, शौक़ और रिज़ा का बयान

जानना चाहिए ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्बत इन्तिहाई बुलन्द मक़्सद और बुलन्द दरजा है और इस के इलावा शौक़, उन्स और रिज़ा महब्बत के ताबेअ़ हैं और जिन लोगों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस लज़्ज़त से महरूम रखा उन्हों ने इस के मुमकिन होने का इन्कार किया है और हम आयात व अहादीस की रौशनी में महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ को वाज़ेह करेंगे। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

﴿۱﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ (پ۲،البقرة: ۱٦٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की महब्बत नहीं।

﴿۲﴾ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗ ۙ (پ٦،المآئدة:٥٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उन का प्यारा।

हदीसे पाक में है : "तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस के नज़दीक उस के एह्लो माल और सब लोगों से ज़्यादा मेहबूब न हो जाए।" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك بن النضر، الحديث ۱۳۱۵۰،ج٤،ص٤١٢)

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب وجوب محبة رسول الله ﷺ.....الخ، الحديث١٦٨،ص٦٨٨)

मश्हूर रिवायत है कि जब मौत का फ़रिश्ता हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की रूह क़ब्ज़ करने के लिए हाज़िर हुवा तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से पूछा : "क्या तुम ने कभी देखा है कि कोई ख़लील अपने ख़लील को मौत दे ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की तरफ़ वही करते हुवे इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम ने किसी मुहिब को अपने मेहबूब की मुलाक़ात को ना पसन्द करते हुवे देखा है ?" तो हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "ऐ मौत के फ़रिश्ते ! अभी मेरी रूह क़ब्ज़ कर लो।"

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ मांगी :

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ وَحُبَّ مَا يُقَرِّبُنِيْ إِلٰى حُبِّكَ إِجْعَلْ حُبَّكَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ

"**तर्जमा :** ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी और अपने मुहिब्बीन की महब्बत अ़ता फ़रमा और उस (अ़मल) की महब्बत अ़ता फ़रमा जो मुझे तेरी महब्बत के क़रीब कर दे और अपनी महब्बत को मेरे नज़दीक ठन्डे पानी से भी ज़्यादा मेहबूब बना दे।"

(جامع الترمذی، كتاب الدعوات، باب دعاء داؤد .....الخ، الحديث ۳٤۹۰،ص۲۰۱۱، مفهومًا)

एक आराबी ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क़ियामत कब क़ाइम होगी ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम ने उस के लिए क्या तय्यारी की है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं ने उस के लिए नमाज़ रोज़े की कोई ज़्यादा तय्यारी नहीं की, अलबत्ता मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत करता हूं। तो मेहबूबे रब्बुल

www.dawateislami.net

आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : أَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ "तर्जमा : आदमी उसी के साथ होगा जिस से उस ने मह़ब्बत की।"

(صحيح البخاری، كتاب الادب ،باب علامة الحبِّ فی اللّٰه .....الخ ،الحديث ٦١٧١/٦١٦٨،ص ٥٢٠)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं ने मुसलमानों को इस्लाम के बाद इस बात से ज़्यादा किसी बात पर ख़ुश होते नहीं देखा।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं : "जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सच्ची मह़ब्बत का ज़ाएक़ा चख लेता है तो येह चीज़ उसे त़लबे दुन्या से बे नियाज़ कर देती है और उसे तमाम लोगों से वह़शत दिलाती है।"

मह़ब्बत का माना

मुह़िब के नज़दीक मह़ब्बत के लज़ीज़ होने की वज्ह से त़बीअ़त उस की त़रफ़ माइल होती है और बुग़्ज़ उस की ज़िद है जो किसी चीज़ से त़बई नफ़रत का नाम है, क्यूंकि वोह त़बीअ़त के मुवाफ़िक़ नहीं होती, और जिस चीज़ की लज़्ज़त बढ़ती है उस की मह़ब्बत में भी इज़ाफ़ा हो जाता है, आंखों की लज़्ज़त देखने में, कानों की लज़्ज़त सुनने में और नाक की लज़्ज़त पाकीज़ा ख़ुश्बूओं में है। इसी त़रह़ हर ह़िस के मुवाफ़िक़ एक चीज़ है जिस से इन्सान लज़्ज़त ह़ासिल करता है और उसी सबब से उस चीज़ से मह़ब्बत करता है।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

حُبِّبَ إِلَيَّ مِنْ دُنْيَاكُمْ ثَلَاثٌ: اَلطِّيْبُ، اَلنِّسَاءُ وَقُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلَاةِ.

तर्जमा : तुम्हारी दुन्या में से मुझे तीन चीज़ें मेह़बूब हैं : (1) ख़ुश्बू (2) औ़रतें और (3) मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ में है।

(سنن النسائی ،كتاب عشرة النساء ، باب حب النساء ،الحديث ٣٣٩١، ص٢٣٠٧، مفهومًا)

ह़दीसे पाक की शर्ह़

इस ह़दीसे पाक से साबित हुवा कि ह़वास के लिए मह़सूस होने वाली अश्या के इ़लावा भी मेह़बूब चीज़ें होती हैं जिन से वोह लज़्ज़त ह़ासिल करते हैं क्यूंकि नमाज़ उन चीज़ों में से नहीं जिन से ह़वासे ख़म्सा (यानी देखने, सुनने, सूंघने, पकड़ने और चखने की क़ुव्वत) के साथ लज़्ज़त ह़ासिल की जाए क्यूंकि बात़िनी बसीरत ज़ाहिरी निगाहों से क़वी होती है और दिल आंख से ज़्यादा इदराक रखता है, अ़क़्ल से ह़ासिल होने वाला जमाले मानवी ज़ाहिरी सूरत के जमाल से आज़म व अकमल होता हैं। पस दिल जिन उमूरे इलाहिय्या शरीफ़ा का इदराक करता है वोह ज़्यादा मुकम्मल व बलीग़ होते हैं और ह़वास उन का इदराक नहीं कर सकते। लिहाज़ा त़बए़ सलीम का इन की त़रफ़ मैलान ज़्यादा होता है पस मह़ब्बत का माना येही हुवा कि दिल का उस चीज़ की त़रफ़ माइल होना जिस के पास में लज़्ज़त ह़ासिल होती है। और इस लज़्ज़त का वोही शख़्स इन्कार करता है जिस को उस की कोताही जानवरों के दरजे में बिठा देती है और इस का इदराक ह़वास से आगे बिल्कुल नहीं बढ़ता।

जानना चाहिए ! इन्सान को सब से ज़्यादा अपनी ज़ात से मह़ब्बत होती है क्यूंकि येह नफ़्स के मुवाफ़िक़ चीज़ों में से सब से बड़ी है और वोह हमेशा बाक़ी रेहना पसन्द करता है और फिर इस से मह़ब्बत करता है, जो इस पर एह़सान करे क्यूंकि इन्सान एह़सान का ग़ुलाम है, और कभी किसी चीज़ से उस की ज़ात की वज्ह से मह़ब्बत करता है क्यूंकि वोह चीज़ ब ज़ाते ख़ुद ह़सीनो जमील होती है और येह मह़ब्बत की सब से बड़ी क़िस्म है जिस में कोई ग़रज़ शामिल नहीं होती, क्यूंकि हर ख़ूब सूरत चीज़ मेह़बूब होती है और जो लोग ख़यालात की क़ैद में बन्द हैं वोह गुमान करते हैं कि जमाल सिर्फ़ मह़सूस चीज़ या ख़याली सूरत में होता है।

जब कि हम केहते हैं, याद रखिए ! हर चीज़ की हुस्नो ख़ूबी वोही है जो उस के मुमकिन व लाइक़ हो, यहां तक कि हम जानते हैं कि घोड़ा उन औसाफ़ से ख़ूब सूरत होता है जिन औसाफ़ से आदमी ह़सीन नहीं होता, और ख़त़ को उस चीज़ के साथ हुस्न ह़ासिल होता है जिस चीज़ से आवाज़ और तसव्वुर को हुस्न ह़ासिल नहीं होता, ह़ालांकि येह तमाम चीज़ें मेह़बूब है और अगर ख़याल करने वाला तसव्वुर करे तो येह चीज़ ह़िस की त़रफ़ लौटती है, पस अख़्लाक़े ह़सना, इ़ल्म, क़ुदरत और अ़क़्ल हर चीज़ ह़सीनो मेह़बूब होती है ह़ालांकि ज़ाहिरी ह़वास से इन का इदराक नहीं हो सकता, बल्कि इन्हें नूरे बसीरत से समझा जाता है और इसी त़रह़ इमामुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप के सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى और दीगर अरबाबे मज़ाहिब की मह़ब्बत मुमकिन है, ह़ालांकि येह ग़ैर मह़सूस है और ह़वासे ख़म्सा से इस का इदराक नहीं होता, बल्कि जब उस ने भलाई की आ़दात के मजमूए़ को सुना और हर उस चीज़ के बारे में सुना जो मह़सूस नहीं, तो उस ने उसे अच्छा जाना और येह अच्छा समझना नूरे बसीरत के ज़रीए़ है। जब येह बात साबित हो गई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा मह़ब्बत का मुस्तह़िक़ कोई नहीं, क्यूंकि वोही अस्ल फ़ित़रत से पैदा करने वाला और बख़्शने वाला है, फिर वोही दवाम, बक़ा और सलामती का सबब है और वोही हर ह़ाल में एह़सान फ़रमाने वाला और वोही ह़सीनो जमील है और हर हुस्नो जमाल उसी के वुजूद से आशकार है।

पस जो शख़्स अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और अइम्मए उ़ज़्ज़ाम से अख़्लाक़े जमीला की वज्ह से मह़ब्बत करता है तो तमाम भलाई उसी से है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए वोह जमाल है कि हर जमाल में इस का असर है और तुम ने जान लिया कि हर ख़ूब सूरत अपनी ज़ात की वज्ह से मेह़बूब होता है और तुम ने येह बात भी पहचान ली कि इन्सान की ख़ासिय्यत सिफ़ाते ह़मीदा से मुज़य्यन होने पर क़ादिर होना है ह़त्ताकि कहा गया है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अख़्लाक़ अपनाओ, और इन्सान के बात़िन में एक ह़क़ीक़त है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के मुनासिब है और दिल के अन्दर एक त़बीअ़त है जिसे नूरे इलाही عَزَّوَجَلَّ कहा जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ (پ ۲۳، الزمر: ۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या वोह जिस का सीना **अल्लाह** ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वोह अपने रब की त़रफ़ से नूर पर है।

www.dawateislami.net

और येही वोह त़बीअ़त है जिस के ज़रीए़ अपनी कुव्वत के मुत़ाबिक़ जमाले रबूबिय्यत का इदराक किया जाता है। जब जमाल मेह़बूब हो तो क्या वुजूद में कोई ऐसी शै है जो उस के फ़ज़्लो करम से अ़त़ा होने वाले जमाल से ज़्यादा जलील, आला, अशरफ़, आज़म और कामिल हो और जिस क़दर उस का इदराक हो उसी क़दर लज़्ज़त ह़ासिल होगी और जिस क़दर लज़्ज़त ह़ासिल होगी उसी क़दर उस से मह़ब्बत होगी।

मुदरिकात की अक़्साम

जानना चाहिए ! मुदरिकात की दो अक़्साम हैं : एक वोह जो ख़याल में आते हैं जिस त़रह़ सूरतें और दूसरे वोह जो ख़याल में नहीं आते जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात और वोह अश्या जिन का न तो जिस्म होता है न ही सूरत जैसे इ़ल्म, कुदरत और इरादा वग़ैरा। जो शख़्स किसी इन्सान को देखे, फिर आंखें बन्द कर ले, तो वोह इस की सूरत को अपने ख़याल में पाता है गोया वोह उस की त़रफ़ देख रहा है लेकिन जब आंख खोल कर उसे देखता है तो उसे दोनों के दरमियान फ़र्क़ मह़सूस होता है और येह फ़र्क़ दोनों सूरतों में इख़्तिलाफ़ की शक्ल में नहीं होता, बल्कि कश्फ़ और ज़्यादा वाज़ेह़ होने के एतिबार से होता है और येह उस शख़्स की त़रह़ है, जिसे दिन का उजाला फैलने से पेहले सुब्ह़ की सफ़ेदी में देखा जाए और फिर मुकम्मल रौशनी के वक़्त दिखाई दे तो दोनों ह़ालतों में फ़र्क़ सिर्फ़ येह होता है कि वोह शख़्स ज़्यादा ज़ाहिर व वाज़ेह़ होता है पस जब तू ने येह जान लिया तो येह भी जान ले ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जारीकर्दा त़रीक़ा है कि जब तक नफ़्स अपनी बुरी सिफ़ात के पर्दे में होता है वोह उन मआ़नी के मुशाहदे तक रसाई ह़ासिल नहीं कर सकता जो आ़लमे मह़सूसात और ख़याल से ख़ारिज होते हैं बल्कि नफ़्स के लिए वोह सिफ़ात इस त़रह़ होती हैं जिस त़रह़ आंख के लिए पलकों का बन्द होना। जिस क़दर वोह बुरी सिफ़ात ख़त्म होती जाती हैं उसी क़दर नफ़्स के कश्फ़, वज़ाह़त, लज़्ज़त और मह़ब्बत में इज़ाफ़ा होता जाता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत का क़ुर्ब बख़्शने वाले अस्बाब

जानना चाहिए ! आख़िरत में सब से ज़्यादा सआ़दत मन्द वोह शख़्स होगा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़्यादा मह़ब्बत होगी क्यूंकि आख़िरत से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी और उस की मुलाक़ात की सआ़दत ह़ासिल करना है और मुह़िब के लिए मेह़बूब के पास आने से बढ़ कर क्या नेमत हो सकती है जब कि वोह एक अ़र्से से इस बात का शौक़ रखता है कि वोह किसी रुकावट के बिग़ैर दाइमी मुशाहदे पर क़ादिर हो, और मह़ब्बत में इज़ाफ़े के दो अस्बाब हैं।

(1)...**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा हर ख़याल को दिल से निकाल देना। क्यूंकि बरतन जब किसी चीज़ से ख़ाली हो तो उस में दूसरी चीज़ की गुन्जाइश होती है और दुन्यावी अ़लाइक़ का तर्क करना ख़ाली होने और तन्हा होने का सबब है और इसी त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमान में इशारा फ़रमाया :

قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ (پ۷، الانعام:۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह कहो, फिर उन्हें छोड़ दो।

(2)...अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मारिफ़त का कामिल होना। पेहले की मिसाल ज़मीन को कांटों और घास फूस से साफ़ करना है और दूसरे की मिसाल ज़मीन में बीज डालना ताकि वोह उगे और उस से मारिफ़त का दरख़्त पैदा हो और वोह कलिमए त़य्यिबा है जिस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِی السَّمَآءِ ۝ (پ۱۳، ابراهیم:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस की जड़ क़ाइम और शाख़ें आस्मान में।

मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ का बयान

जब मह़ब्बत साबित हो जाती है तो मेह़बूब की त़रफ़ शौक़ सह़ीह़ हो जाता है और इस बात पर अह़ादीस व आसार दलालत करते हैं मरवी है, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना काब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : "मुझे तौरात की कोई ख़ास आयत बताइए ?" उन्हों ने जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

طَالَ شَوْقُ الْاَبْرَارِ اِلٰی لِقَائِیْ وَاَنَا اِلٰی لِقَائِهِمْ اَشَدُّ شَوْقًا .

तर्जमा : नेक लोगों का मुझे मिलने का शौक़ त़वील हो गया और मुझे भी उन की मुलाक़ात का बहुत शौक़ है।

फिर फ़रमाया : इस आयत के क़रीब येह भी लिखा है :

مَنْ طَلَبَنِیْ وَجَدَنِیْ، وَمَنْ طَلَبَ غَیْرِی لَمْ یَجِدْنِیْ.

तर्जमा : जिस ने मुझे तलाश किया उस ने मुझे पा लिया और जिस ने मेरे ग़ैर को तलाश किया वोह मुझे नहीं पा सकता।

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया "मैं गवाही देता हूं कि येह बात मैं ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से भी सुनी है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की रिवायात में मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप से फ़रमाया : ऐ दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) ! ज़मीन वालों तक मेरी येह बात पहुंचा दो, कि मैं उस शख़्स का ह़बीब हूं जो मुझ से मह़ब्बत करे, उस का हम नशीन हूं जो मेरे पास बैठे, उस का मूनिस हूं जो मेरे ज़िक्र से मानूस हो, उस का रफ़ीक़ हूं जो मेरा दोस्त हो, जो मुझे इख़्तियार करे मैं उसे इख़्तियार करूंगा, जो मेरी इत़ाअ़त करे मैं उस की बात मानूंगा, जो शख़्स येह जानते हुवे यक़ीने क़ल्ब के साथ मुझ से मह़ब्बत करता है मैं उसे अपनी ज़ात के लिए क़बूल करता हूं और उस से ऐसी मह़ब्बत करता हूं कि मख़्लूक़ में से कोई भी उस से आगे नहीं बढ़ता। जिस ने सच्ची त़लब के साथ मुझे तलाश किया, उस ने मुझे पा लिया और जिस ने मेरे ग़ैर को तलाश किया वोह मुझे नहीं पा सकता।

ऐ ज़मीन वालो ! तुम जिस धोके में हो, उसे छोड़ दो, मेरे करम और दोस्ती की त़रफ़ बढ़ो, मुझ से उन्स ह़ासिल करो मैं तुम से उन्स करूंगा और तुम्हारी मह़ब्बत की त़रफ़ जल्दी करूंगा, मैं ने अपने दोस्तों का ख़मीर अपने ख़लील ह़ज़रते इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام), अपने हम कलाम ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) और अपने मुन्तख़ब बन्दे ह़ज़रते मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ख़मीर से पैदा किया है, बेशक मैं ने मुश्ताक़ लोगों के दिलों को अपने नूर से पैदा फ़रमाया और अपने जलाल से उन को लुत़्फ़ अन्दोज़ किया ।

बाज़ अस्लाफ़ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने किसी सिद्दीक़ बन्दे की त़रफ़ इल्हाम फ़रमाया : "मेरे कुछ बन्दे मुझ से मह़ब्बत करते हैं और मैं उन से मह़ब्बत करता हूं, वोह मेरे मुश्ताक़ और मैं उन का मुश्ताक़ हूं, वोह मुझे याद करते और मैं उन्हें याद करता हूं, वोह मुझे देखते और मैं उन्हें देखता हूं, अगर तू उन के त़रीक़े पर चले, तो मैं तुझ से मह़ब्बत करूंगा और अगर उन की राह से रूगर्दानी करेगा, तो मैं तुझ से नाराज़ होऊंगा ।" उस ने पूछा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! उन की अ़लामात क्या हैं ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "वोह दिन के वक़्त साए को यूं देखते हैं, जिस त़रह़ शफ़ीक़ चरवाहा अपनी बकरियों को देखता है और ग़ुरूबे आफ़्ताब के इस त़रह़ मुश्ताक़ होते हैं जैसे परिन्दे मग़रिब के वक़्त अपने घोंसले के मुश्ताक़ होते हैं और जब अन्धेरा छा जाता है, बिस्तर बिछ जाते हैं, तख़्त लगा दिए जाते हैं और हर मुह़िब अपने मेह़बूब से तन्हाई इख़्तियार कर लेता है तो वोह अपने क़दमों पर खड़े हो जाते हैं, मेरी बारगाह में अपनी पेशानियां बिछा देते हैं, मेरे कलाम के साथ मुझ से सरगोशी करते हैं और मेरे इन्आ़म के बाइ़स मेरी तारीफ़ करते हैं, कोई चीख़ता तो कोई रोता है, कोई आहें भरता तो कोई शिकायत करता है, कोई क़ियाम में है तो कोई क़ादे में, कोई ह़ालते रुकूअ़ में है तो कोई सजदा कर रहा है, वोह मेरी रिज़ा के ह़ुसूल के लिए जो मशक़्क़त उठाते हैं मैं उसे देखता हूं और मेरी मह़ब्बत में जो शिकायत करते हैं मैं उसे सुनता हूं, मैं उन्हें पेहले तीन इन्आ़म अ़त़ा फ़रमाता हूं :

(1)...अपना नूर उन के दिल में डालता हूं, तो वोह मेरे बारे में ऐसे ही ख़बर देते हों, जैसे मैं उन के बारे में ख़बर देता हूं,

(2)...अगर ज़मीनो आस्मान और जो कुछ इस में है, इन के वज़्न के बराबर हो तो मैं उसे उन की नज़रों में कम कर देता हूं,

(3)...मेरी रेह़मत उन की त़रफ़ मुतवज्जेह होती है, क्या कोई जानता है कि मैं जिस की त़रफ़ मुतवज्जेह होता हूं, उसे क्या देता हूं ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त में मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप की त़रफ़ वह़ी भेजते हुवे इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ दावूद عَلَيْهِ السَّلَام कब तक जन्नत का ज़िक्र करते रहोगे और मुझ से मेरे शौक़ का सुवाल नहीं करोगे ?" आप ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरे मुश्ताक़ लोग कौन हैं ?" फ़रमाया : "जो लोग मेरा शौक़ रखते हैं, मैं उन्हें हर कदूरत से पाक कर देता हूं और हर ख़ौफ़ से मुतनब्बेह कर देता हूं और उन के दिलों में अपनी त़रफ़ एक शिगाफ़ कर देता हूं जिस से वोह मुझे देखते हैं और उन के दिलों को अपने दस्ते क़ुदरत से उठा कर अपने आस्मान पर

www.dawateislami.net

रख देता हूं, फिर अपने मुक़र्रब फ़रिश्तों को बुलाता हूं, जब वोह जम्अ़ हो जाते हैं तो मुझे सजदा करते हैं, मैं केहता हूं : मैं ने तुम्हें इस लिए नहीं बुलाया कि मुझे सजदा करो, बल्कि इस लिए बुलाया है, कि तुम्हारे सामने अपने मुश्ताक़ बन्दों के दिल रखूं और उन एह्ले शौक़ के बाइ़स फ़ख़्र करूं, उन के दिल मेरे आस्मान में फ़रिश्तों को इस त़रह़ मुनव्वर करते हैं, जिस त़रह़ ज़मीन वालों को सूरज रौशनी देता है।

ऐ दावूद! मैं ने मुश्ताक़ लोगों के दिलों को अपनी रिज़ा से बनाया और अपनी ज़ाते अक़्दस के नूर से उन को ज़ीनत बख़्शी और उन को मेरे लिए बात करने वाला बनाया और उन के बदनों को ज़मीन में अपनी निगाहे करम का मर्कज़ बनाया, नीज़ उन के दिलों में एक रास्ता बनाया जिस के ज़रीए़ वोह मुझे देखते और रोज़ बरोज़ उन का शौक़ बढ़ता जाता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "**ऐ मेरे रब** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने मुह़िब्बीन का दीदार करा दे।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "ऐ दावूद عَلَیْہِ السَّلَام लुबनान के पहाड़ में जाओ, वहां चौदह आदमी हैं, जिन में नौजवान भी हैं, बूढ़े भी और अधेड़ उ़म्र भी। जब उन के पास जाओ तो उन्हें मेरा सलाम केहना और उन से केहना कि तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ तुम्हें सलाम केहता है और फ़रमाता है : "क्या तुम अपनी ह़ाजत का सुवाल नहीं करते ? तुम तो मेरे मेह़बूब और पसन्दीदा दोस्त हो, मैं तुम्हारी ख़ुशी पर ख़ुश होता और तुम्हारी मह़ब्बत के लिए जल्दी करता हूं, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उन के पास तशरीफ़ ले गए, तो उन को एक चश्मे के पास पाया, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत में ग़ौरो फ़िक्र कर रहे थे। जब उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को देखा, तो उन से दूर होने के लिए उठ खड़े हुवे। ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं और तुम्हारे पास उस का पैग़ाम ले कर आया हूं।" चुनान्चे, वोह आप की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और आप عَلَیْہِ السَّلَام की बात तवज्जोह से सुनने लगे नीज़ उन्हों ने अपनी निगाहों को झुका लिया।

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "मैं तुम्हारी त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम ले कर आया हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें सलाम भेजता है और इस्तिफ़्सार फ़रमाता है, क्या तुम मुझ से अपनी ह़ाजत का सुवाल नहीं करते ? क्या तुम मुझे नहीं पुकारते कि मैं तुम्हारी आवाज़ और तुम्हारा कलाम सुनूं और मैं हर घड़ी तुम्हारी त़रफ़ शफ़ीक़ मेहरबान मां की त़रह़ देखता हूं ? आप عَلَیْہِ السَّلَام फ़रमाते हैं (येह सुन कर) उन के आंसू रुख़्सारों पर बहने लगे।"

उन के शैख़ ने कहा : "(ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !) तू पाक है, तू पाक है, हम तेरे बन्दे और तेरे बन्दों की औलाद हैं, हमारी गुज़श्ता उ़म्र में हमारे दिलों से तेरे ज़िक्र में जो कोताही हुई है उसे मुआ़फ़ फ़रमा दे।"

दूसरे ने अ़र्ज़ की : "(ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !) तू पाक है, तू पाक है, हम तेरे बन्दे और तेरे बन्दों की औलाद हैं, हमारे और तेरे दरमियान जो मुआ़मला है उस में हम पर नज़रे रेह़मत फ़रमा।"

तीसरे ने कहा : "(ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) तेरी ज़ात पाक है, तेरी ज़ात पाक है, हम तेरे बन्दे और तेरे बन्दों की औलाद हैं, क्या हम दुआ़ की जुरअत करें ह़ालांकि तू जानता है कि हमें किसी चीज़ की ह़ाजत नहीं, तू हमें हमेशा अपनी राह पर रख और येह एह़सान हम पर मुकम्मल फ़रमा।"

चौथे ने अ़र्ज़ की : " तू ने हमें माद्दए मनविय्या से पैदा फ़रमाया और हम पर एह़सान फ़रमाया कि हम तेरी अ़ज़मत में ग़ौरो फ़िक्र कर सकें तो जो शख़्स तेरी अ़ज़मत में मश्ग़ूल हो, तेरे जलाल में ग़ौरो फ़िक्र करने वाला हो, क्या वोह कलाम की जुरअत कर सकता है ? हम तो तेरे नूर का क़ुर्ब मांगते हैं।"

पांचवें ने कहा : "हमारी ज़बानें तुझ से दुआ़ करने की त़ाक़त नहीं रखतीं क्यूंकि तेरी शान अ़ज़ीम है, तू अपने औलिया के क़रीब है और एह्ले मह़ब्बत पर तेरे बे शुमार एह़सानात हैं।"

छटे ने कहा : तू ने हमारे दिलों को अपने ज़िक्र की हिदायत अ़त़ा फ़रमाई और अपनी ज़ात में मश्ग़ूलिय्यत के लिए हमें फ़राग़त अ़त़ा फ़रमाई, पस तेरा शुक्र अदा करने में हमारी कोताही को मुआ़फ़ फ़रमा।"

सातवें ने कहा : "तू जानता है कि हमारी ह़ाजत फ़क़त़ तेरी ज़ाते अक़्दस का दीदार करना है।"

आठवें ने कहा : "(ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !) तू ने हमें जो नेमतें अ़त़ा फ़रमाई हैं और हम पर जो फ़ज़्ल किया है हम उन की तक्मील का सुवाल करते हैं।

नवें ने कहा : "हमें तेरी मख़्लूक़ से किसी क़िस्म की ह़ाजत नहीं है, तू हमें सिर्फ़ अपने दीदार की दौलत अ़त़ा फ़रमा।"

दसवें ने कहा : "तू मुझे दुन्या और दुन्यादारों को देखने से नाबीना कर दे और मेरे दिल को आख़िरत में मश्ग़ूल फ़रमा।"

ग्यारहवें ने कहा : "मैं ने जान लिया कि तेरी ज़ात बा बरकत और बुलन्द शान वाली है तू अपने औलिया से मह़ब्बत करता है पस तू हम पर यूं एह़सान फ़रमा कि हमारा दिल हर चीज़ से बे नियाज़ हो कर सिर्फ़ तेरी ज़ात में मश्ग़ूल हो जाए।"

इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वही फ़रमाई कि मेरी त़रफ़ से उन्हें फ़रमा दो : "मैं ने तुम्हारा कलाम सुना और जो कुछ तुम्हें पसन्द है उसे क़बूल किया पस तुम में से हर एक अपने रफ़ीक़ से जुदा हो जाए और अपने लिए ज़मीन में सुरंग बना ले क्यूंकि मैं अपने और तुम्हारे दरमियान से पर्दा उठाने वाला हूं ताकि तुम मेरे नूर और जमाल को देख सको।"

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! येह लोग किस त़रह़ इस दरजे को पहुंचे ?"

तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : इन्हों ने हुस्ने ज़न इख़्तियार किया, दुन्या और दुन्यादारों से कनारा कशी कर के मेरे लिए ख़ल्वत इख़्तियार की और मुझ से मुनाजात करते रहे। और इस मन्ज़िल को वोही शख़्स पा सकता है जो दुन्या और दुन्यादारों को छोड़ दे और उन के बारे में गुफ़्तगू ही न करे और मेरे लिए अपने दिल को (दुन्यावी फ़िक्रों से) ख़ाली कर ले और जब वोह मुझे तमाम मख़्लूक़ के मुक़ाबले में इख़्तियार करता है तो मैं उस पर लुत़्फ़ो करम फ़रमाता हूं, उस के नफ़्स को फ़ारिग़ कर देता हूं, अपने और उस के दरमियान ह़िजाब उठा देता हूं यहां तक कि वोह मुझे इस त़रह़ देखता है जिस त़रह़ कोई शख़्स किसी चीज़ को अपनी आंख से देखता है और उसे अपने नूरे ज़ात के क़रीब कर लेता हूं, अगर वोह बीमार हो जाए तो उस की तीमारदारी इस त़रह़ करता हूं जिस त़रह़ शफ़ीक़ मां अपने बेटे की करती है, अगर वोह प्यासा हो तो उसे सेराब करता हूं, उसे अपने ज़िक्र का मज़ा चखाता हूं।

ऐ दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) ! जब मैं उस के साथ इस त़रह़ का मुआ़मला करता हूं, तो उस का नफ़्स दुन्या और एह्ले दुन्या की त़रफ़ नहीं देखता और मैं दुन्या को उस की नज़र में मेह़बूब नहीं बनाता। वोह मेरी ज़ात में मश्ग़ूल होने से नहीं उकताता और वोह मेरी त़रफ़ जल्दी आना चाहता है, लेकिन मैं उसे मौत देने को पसन्द नहीं करता, क्यूंकि वोह मेरी मख़्लूक़ में मेरी नज़रे (रेह़मत) का मक़ाम है। वोह मेरे इ़लावा किसी को नहीं देखता और मैं भी उस के सिवा किसी को नहीं देखता।

ऐ दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) ! अगर तुम उसे देखो, तो उसे लाग़र जिस्म, टूटे हुवे नफ़्स और टूटे हुवे आज़ा वाला पाओगे, और जब वोह मेरा ज़िक्र सुनता है, तो उस का दिल ठिकाने पर नहीं रेहता, मैं फ़रिश्तों और आस्मान वालों के सामने उस पर फ़ख़्र करता हूं तो उस का ख़ौफ़ और इबादत बढ़ जाती है।

ऐ दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) ! मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं उसे जन्नतुल फ़िरदौस में बिठाऊंगा और अपने दीदार से उस के सीने को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाऊंगा यहां तक कि वोह राज़ी हो जाए, बल्कि रिज़ा से भी ऊपर का मक़ाम ह़ासिल हो जाए।

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की रिवायात में येह भी है कि मेरे उन बन्दों से फ़रमा दो जो मह़ब्बत के साथ मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हैं कि अगर तुम मेरी मख़्लूक़ से पोशीदा रहो तो उस में तुम्हारा क्या नुक़्सान है ? और मैं अपने और तुम्हारे दरमियान से पर्दे उठा दूं ताकि तुम दिल की आंखों से मेरा दीदार कर लो, अगर मैं तुम से दुन्या को लपेट दूं और तुम पर अपना एह़सान आ़म कर दूं, तो दुन्या तुम्हें क्या नुक़्सान देगी ? और अगर तुम मेरी रिज़ा के त़ालिब हो तो मख़्लूक़ की नाराज़गी तुम्हें क्या नुक़्सान देगी ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वाक़िआत में है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वही फ़रमाई : "तुम्हारा गुमान है कि तुम मुझ से मह़ब्बत करते हो, अगर तुम्हें वाक़ेई मुझ से मह़ब्बत है, तो अपने दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकाल दो क्यूंकि मेरी मह़ब्बत और दुन्या की मह़ब्बत एक दिल में इकठ्ठी नहीं हो सकतीं। ऐ दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) ! मुझ से ख़ालिस मह़ब्बत करो और दुन्या वालों से मेल जोल रखो, लेकिन दीन के मुआ़मले में मेरी इत़ाअ़त करो, लोगों की इत़ाअ़त न करना। अलबत्ता ! उन की जो बात मेरी मह़ब्बत के मुवाफ़िक़ हो उसे इख़्तियार करो और जो बात मुश्तबेह हो तो उसे मेरे ह़वाले कर दो, मेरे ज़िम्मए करम पर है कि मैं तुम्हारे उमूर की तदबीर और उन की पुख़्तगी में जल्दी करूं, मैं तुम्हारा क़ाइद व रेहनुमा बनूं, तुम्हें बिन मांगे अ़त़ा करूं और मुश्किलात में तुम्हारी मदद करूं। मैं ने क़सम खाई है कि सिर्फ़ उसी बन्दे को सवाब अ़त़ा करूंगा जिस के इरादे व त़लब को आज़्मा लूं कि वोह मेरे सामने खड़ा होने से डरता है और मुझ से बे नियाज़ी इख़्तियार नहीं करता, जब तुम ऐसे हो जाओगे तो मैं तुम से वह़शत को दूर कर के तुम्हारे दिल को ग़नी कर दूंगा।"

मैं ने क़सम खाई है कि मेरा जो बन्दा अपने नफ़्स पर मुत़मइन हो कर अपने अफ़्आ़ल को देखता है तो मैं उसे उस के सिपुर्द कर देता हूं और अश्या की निस्बत मेरी त़रफ़ करो और अपने आमाल में तज़ाद न आने दो, वरना तुम मशक़्क़त में पड़ जाओगे और न तुम्हारे दोस्त तुम से नफ़्अ़ उठाएंगे और न मेरी मारिफ़त की कोई ह़द पा सकोगे, जिस की कोई इन्तिहा नहीं, जब तुम मुझ से ज़्यादा मांगो, तो मैं तुम्हें ज़्यादा अ़त़ा करूंगा और मेरे ज़्यादा की कोई ह़द न पाओगे, फिर बनी इसराईल को ख़बर दो कि मेरे और मेरी मख़्लूक़ के दरमियान कोई नसबी रिश्ता नहीं, लिहाज़ा उन की रग़बत और इरादा उसी में होना चाहिए जो मेरे पास है ताकि मैं उन को वोह चीज़ अ़त़ा करूं जिसे न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल पर उस का ख़याल गुज़रा। हर वक़्त मुझे अपने सामने ख़याल करो और दिल की नज़र से मेरी त़रफ़ देखो, उन लोगों की त़रफ़ न देखो जिन के दिल मेरी मह़ब्बत से ख़ाली हैं।

"मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं उस शख़्स के लिए सवाब का दरवाज़ा नहीं खोलूंगा, जो मेरी इत़ाअ़त तजरिबे या टाल मटोल के त़ौर पर करता है। ऐ दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) ! तुम जिन्हें सिखाओ उन के लिए तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो और मुरीदों पर ज़्यादती न करो, अगर एह़्ले मह़ब्बत को इ़ल्म हो जाए कि मुरीदों का मेरे नज़्दीक क्या मक़ाम है तो वोह उन के लिए ज़मीन बन जाएं ताकि वोह उन पर चलें। ऐ दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) ! अगर तुम किसी मुरीद को नशे से निकाल कर पाक साफ़ कर दो, तो येह मुझे हर उस चीज़ से ज़्यादा पसन्द है जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है और मैं तुम्हें खरा खोटा परखने वाला लिख दूंगा और जिसे मैं खरा खोटा परखने वाला लिख दूं उस से वह़शत को दूर कर देता हूं और वोह मख़्लूक़ का मोह़ताज नहीं रेहता।"

ऐ दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) ! मेरे कलाम को मज़बूती से थामे रखो, और अपने नफ़्स के ज़रीए़ अपनी आख़िरत के लिए तय्यारी करो और इस में हरगिज़ कोताही न करो, वरना मैं अपनी मह़ब्बत को

www.dawateislami.net

तुम से छुपा दूंगा, मेरे बन्दों को मेरी रेह़मत से ना उम्मीद न करो और अपनी ख़्वाहिश को मेरे लिए तर्क कर दो। मैं ने अपनी मख़्लूक़ में से कमज़ोर लोगों के लिए ख़्वाहिश को जाइज़ क़रार दिया, मगर क़वी व त़ाक़तवर लोगों को क्या हुवा कि वोह ख़्वाहिशात करते हैं क्यूंकि येह मेरी बारगाह में की जाने वाली मुनाजात की ह़लावत को कम कर देती हैं, और क़वी व त़ाक़तवर लोग ख़्वाहिशात करें तो मेरी त़रफ़ से उन की अदना सज़ा येह है कि मैं उन की अ़क़्लों पर अपनी त़रफ़ से ह़िजाब डाल दूंगा, क्यूंकि मैं दुन्या और उस की तरो ताज़गी को अपने मेह़बूब बन्दों के लिए पसन्द नहीं करता। ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! मेरे और अपने दरमियान किसी ऐसे आ़लिम को ज़रीआ़ न बनाना जिसे दुन्या की मह़ब्बत ने मदहोश कर दिया हो, वोह अपने नशे के बाइ़स तुझे मेरे ह़िजाबे मह़ब्बत से दूर कर देगा, येह लोग मेरे मुरीदों के लिए राहज़न हैं और ख़्वाहिशात तर्क करने के लिए हमेशा रोज़ा रख कर मदद ह़ासिल करो, रोज़े को कभी न छोड़ना क्यूंकि मैं दाइमी रोज़े को पसन्द करता हूं।"

"**ऐ दावूद** (عَلَيْهِ السَّلَام) ! अपने नफ़्स से दुश्मनी कर के मेरे मेह़बूब बनो और अपने नफ़्स को शहवात से रोको, ताकि मैं तुम्हारी त़रफ़ नज़रे रेह़मत फ़रमाऊं। देखो ! मेरे और तुम्हारे दरमियान पर्दे उठ गए हैं, मैं तुम्हारी ख़ात़िर मुदारत इस लिए कर रहा हूं कि जब मैं तुम पर सवाब का एह़सान करूं तो तुम मेरे सवाब पर कुव्वत ह़ासिल करो और अगर तुम मेरी इत़ाअ़त करते रहो तो मैं हरगिज़ अपना एह़सान तुम से न रोकूंगा।"

येह रिवायात इ़श्क़ो मह़ब्बत के मुमकिन होने पर दलालत करती हैं। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

बन्दे के लिए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत का बयान

इस बात पर आयात व अह़ादीस दलालत करती हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿۱﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا (پ ۲۸، الصف:٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** दोस्त रखता है उन्हें जो उस की राह में लड़ते हैं परा (सफ़) बांध कर।

﴿۲﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ۝ (پ ۲، البقرہ:۲۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो उसे कोई गुनाह नुक़्सान नहीं देता और गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है गोया उस ने गुनाह किया ही नहीं।" (فردوس الاخبار للديلمی ،باب التاء ،الحديث ۲۲۵۱،ج۱،ص۳۰۸)

फिर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ۝

(پ۲، البقرة:۲۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।

इस का माना येह है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो मरने से पेहले उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है पस उस के गुज़श्ता गुनाह नुक़्सान नहीं देते अगर्चे कसीर हों जिस त़रह़ इस्लाम क़बूल करने वाले को गुज़श्ता कुफ़्र नुक़्सान नहीं देता।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मह़ब्बत के लिए गुनाहों की बख़्शिश का ज़िक्र फ़रमाया :

इरशादे ख़ुदावन्दी है :

يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ط

(پ۳، ال عمران:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा।

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

إِنَّ اللّٰهَ يُعْطِي الدُّنْيَا لِمَنْ يُّحِبُّ وَلِمَنْ لَّا يُحِبُّ، وَلَا يُعْطِي الْإِيْمَانَ إِلَّا لِمَنْ يُّحِبُّ.

तर्जमा : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या उसे भी देता है जिस से मह़ब्बत करता है और उसे भी जिस से मह़ब्बत नहीं करता लेकिन ईमान सिर्फ़ उसे अ़त़ा फ़रमाता है जिस से मह़ब्बत करता है।

(مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزهد، باب کلام ابن مسعود، الحدیث ۳۰، ج۸، ص۱۶۱)

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रिफ़्अ़त निशान है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है और जो तकब्बुर करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे पस्त कर देता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कसरत से याद करता है तो वोह उस से मह़ब्बत फ़रमाता है।" (المعجم الأوسط، الحدیث ۴۸۹۴، ج۳، ص۳۸۲)

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب التواضع والخمول، الحدیث ۷۷، ج۳، ص۵۵۲)

ह़दीसे क़ुदसी में है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

فَإِذَا أَحْبَبْتُهُ كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ.

तर्जमा : जब मैं अपने बन्दे से मह़ब्बत करता हूं तो उस के कान बन जाता हूं जिस से वोह सुनता है।

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحدیث ۶۵۰۲، ص۵۴۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे से मह़ब्बत करता है ह़त्ताकि वोह मह़ब्बते इलाही में उस मक़ाम तक जा पहुंचता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "तुम जो चाहो करो मैं ने तुम्हें बख़्श दिया।"

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "बन्दा नफ़्ली इ़बादत के ज़रीए मेरा क़ुर्ब ह़ासिल करता रेहता है यहां तक कि मैं उस से मह़ब्बत करने लगता हूं।"

(صحيح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحديث ٦٥٠٢، ص٥٤٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दे से मह़ब्बत की अ़लामत येह है कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा से वह़शत मह़सूस करता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के और तमाम अस्बाब के दरमियान ह़ाइल हो जाता है।

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो उसे आज़माइश में डाल देता है और जब उस से बहुत ज़्यादा मह़ब्बत करता है तो उस को चुन लेता है।" पूछा गया : "चुनने से क्या मुराद है ? फ़रमाया : उस का माल और औलाद नहीं छोड़ता।"

(فردوس الاخبار للديلمی، باب الالف، الحديث٩٧٣، ج١، ص١٥١)

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पूछा गया : "आप अपनी सुवारी के लिए दराज़ गोश (यानी गधा) क्यूं नहीं ख़रीद लेते ?" तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : "मुझ पर येह बात शाक़ गुज़रेगी, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी तवज्जोह अपनी ज़ात से हटा कर दराज़ गोश में मश्ग़ूल कर दे।" ह़दीसे पाक में है :

إِذَا أَحَبَّ اللّٰهُ عَبْدًا إِبْتَلَاهُ، فَإِنْ صَبَرَ إِجْتَبَاهُ، وَإِنْ رَضِيَ إِصْطَفَاهُ.

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो उस को आज़माइश में डालता है पस अगर वोह सब्र करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे चुन लेता है और राज़ी हो तो उसे मुन्तख़ब फ़रमा लेता है।

(فردوس الاخبار للديلمی، باب الالف، الحديث٩٧٦، ج١، ص١٥١)

उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : "**बन्दे की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत** की अ़लामत येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस से मह़ब्बत करता है बन्दा उसे अपनी मेह़बूब तरीन चीज़ पर तरजीह़ देता है और ब कसरत उस का ज़िक्र करता है, उस में कोताही नहीं करता और किसी दूसरे काम में मश्ग़ूल होने के बजाए बन्दे को तन्हाई और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करना ज़्यादा मेह़बूब होता है।"

फ़ज़ीलते रिज़ा का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ط (پ٧، المآئدة: ١١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी।

www.dawateislami.net

ह़दीस शरीफ़ में है :

إِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يَتَجَلّٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ فَيَقُوْلُ سَلُوْنِيْ فَيَقُوْلُوْنَ: رِضَاكَ .

तर्जमा : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मोमिनों पर तजल्ली फ़रमा कर इरशाद फ़रमाएगा : मुझ से सुवाल करो तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : हम तेरी रिज़ा के त़लबगार हैं।

(المعجم الاوسط، الحديث ٢٠٨٤، ج١، ص٥٦٦، بتغيرٍ)

पस दीदार के बाद रिज़ा का सुवाल करना बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है।

ह़दीसे पाक में है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की एक जमाअ़त से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम कौन हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "हम मोमिन हैं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर पूछा : "तुम्हारे ईमान की अ़लामत क्या है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "हम आज़माइश पर सब्र करते हैं, फ़राख़ी में शुक्र अदा करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसलों पर राज़ी रेहते हैं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रब्बे काबा की क़सम ! तुम मोमिन हो।" (المعجم الاوسط، الحديث ٩٤٢٧، ج٦، ص٥٦٧، بتغيرٍ)

एक दूसरी रिवायत में है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िक्मत निशान है : "क़रीब था कि हुकमा, उ़लमा अपनी फ़िक़्ह (यानी समझ बूझ) की बदौलत अम्बिया होते।

(الزهد الكبير للبيهقي، الحديث ٩٧٠، ص٣٥٤، حكماء علماء: بدلهما: فقهاء حلماء)

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! किसी ऐसे काम पर मेरी रेहनुमाई फ़रमा, जिस में तेरी रिज़ा हो, ताकि मैं वोह काम करूं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वही फ़रमाई : "मेरी रिज़ा उस में है जो तुम्हें ना पसन्द हो और तुम ना पसन्दीदा चीज़ को बरदाश्त नहीं कर सकते।" आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! इस पर मेरी रेहनुमाई फ़रमा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी रिज़ा इस में है कि तुम मेरे फ़ैसले पर राज़ी रहो।"

याद रखो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा बहुत बड़ा दरवाज़ा है जो उस की त़रफ़ राह पा लेता है वोह आला दरजे पर फ़ाइज़ हो जाता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करने वाला मुरीद

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब नख़्शबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي अपने एक मुरीद को बहुत पसन्द फ़रमाते थे, चुनान्चे, आप उसे अपने क़रीब रखा करते और उस की ज़रूरिय्यात को पूरा करते और मुरीद अपनी इ़बादत व वज्द में मश्ग़ूल रेहता, एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से पूछा : "तुम्हें ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बुस्त़ामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ियारत करनी चाहिए।" मुरीद ने

www.dawateislami.net

कहा : "मुझे उन की ज़रूरत नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बार बार येह बात कही : तुम्हें ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का दीदार करना चाहिए। तो मुरीद जोश में आ गया और उस ने कहा : आप को क्या हो गया, मैं बायज़ीद को क्या करूं जब कि मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दीदार कर लिया है और उस ने मुझे बायज़ीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से बेनियाज़ कर दिया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मुझे भी गुस्सा आ गया और मैं अपने आप पर क़ाबू न पा सका।" मैं ने कहा : "तेरी हलाकत हो, तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को देखने पर मग़रूर है, ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को एक बार देखना तेरे लिए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सत्तर बार दीदार करने से बेहतर है। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : वोह मेरी इस बात से ह़ैरान हो गया और इन्कार करते हुवे केहने लगा : "येह कैसे हो सकता है ?" मैं ने उस से कहा : "तेरी हलाकत हो तू अपने मक़ाम के मुत़ाबिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दीदार करता है, तो वोह तेरी बरदाश्त के मुत़ाबिक़ तुझ पर ज़ुहूर फ़रमाता है और तू ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को देखेगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के मक़ामो मर्तबे के मुत़ाबिक़ उन को जल्वा दिखाता है। पस वोह उस राज़ को समझ गया और केहने लगा : "मुझे उन के पास ले चलो।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सारा वाक़िआ़ बयान करने के बाद आख़िर में फ़रमाया : हम एक टीले पर जा कर खड़े हो गए और उन का इन्तिज़ार करने लगे कि वोह जंगल से हमारी त़रफ़ तशरीफ़ लाएं। आप दरिन्दों से भरे जंगल में रहा करते थे चुनान्चे, जब वोह हमारे पास से गुज़रे तो उन्हों ने एक पोस्तीन अपनी पीठ पर डाल रखी थी।

मैं ने उस नौजवान से कहा : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) हैं।" नौजवान ने उन की त़रफ़ देखा तो बेहोश हो कर गिर पड़ा। हम ने उसे ह़रकत दी तो देखा कि वोह मर चुका है, हम ने बाहम मदद से उसे दफ़्न किया फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से अ़र्ज़ की : "मेरे शागिर्द का आप की त़रफ़ देखने से इन्तिक़ाल हो गया।" तो उन्हों ने फ़रमाया : "नहीं, बल्कि तुम्हारा मुरीद सच्चा था, उस के दिल में एक राज़ था जो अपने वस्फ़ के साथ उस पर ज़ाहिर न हुवा था। जब उस ने मुझे देखा तो उस का क़ल्बी राज़ मुन्कशिफ़ हो गया और वोह उसे बरदाश्त न कर सका क्यूंकि वोह कमज़ोर मुरीदों के मक़ाम पर था इस लिए फ़ौत हो गया।"

रिवायात में है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किसी नबी की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई : "मैं उस शख़्स को अपना ख़लील बनाता हूं जो मेरे ज़िक्र से नहीं उकताता और मेरे इ़लावा किसी के बारे में ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता, और न मख़्लूक़ में से किसी को मुझ पर तरजीह़ देता है, अगर उसे आग में जलाया जाए तो वोह उस की जलन से तक्लीफ़ मह़सूस नहीं करता, और अगर उसे आरों से चीरा जाए तो वोह दर्द मह़सूस नहीं करता।"

जिस शख़्स पर मह़ब्बत इस ह़द तक ग़ालिब न हो तो उसे कैसे मालूम होगा कि मह़ब्बत के पीछे क्या करामात व मुकाशफ़ात हैं, येह सब चीज़ें मह़ब्बत के बाद हैं और मह़ब्बत ईमान के बाद होती है।

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तीन सौ अख़्लाक़ हैं, जो शख़्स तौह़ीद पर होते हुवे, उन में से एक ख़ुल्क़ के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करेगा वोह दाख़िले जन्नत होगा।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "क्या उन में से कोई ख़ुल्क़ मुझ में भी है?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

كُلُّهَا فِيْكَ يَا أَبَابَكْرٍ وَأَحَبُّهَا إِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى السَّخَاءُ.

तर्जमा : ऐ अबू बक्र ! वोह तमाम अख़्लाक़ तुम में पाए जाते हैं और इन में सब से ज़्यादा पसन्दीदा ख़ुल्क़ सख़ावत है।

(مکارم الأخلاق لابن ابی الدنیا، الحدیث:۲۹،ص۳٤۔۳٥، مختصراً،بتغیرٍ)

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है : "मैं ने एक तराज़ू देखा जो आस्मान से लटकाया गया, उस के एक पलड़े में मुझे और दूसरे पलड़े में मेरी उम्मत को रखा गया तो मेरा पलड़ा भारी हो गया फिर एक पलड़े में मेरी उम्मत को और दूसरे पलड़े में अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रखा गया तो अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पलड़ा भारी हो गया।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث ابی بکرة نفیع بن الحارث بن کلدة، الحدیث۲۹٥۲۸،ج۷، ص۳۳۲۔۳۳۳)

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی امامة الباهلی، الحدیث۲۲۲۹٥،ج۸،ص۲۸۹۔۲۹۰)

इन सब बातों के बा वुजूद नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात में इस क़दर मुस्तग़रक़ रेहते, कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दिल में किसी और को ख़लील बनाने की गुन्जाइश न थी इसी लिए आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर मैं लोगों में से किसी को ख़लील बनाता, तो अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लील बनाता लेकिन तुम्हारा दोस्त (यानी नबी) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़लील है।"

(صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل ابی بکر الصدیق، الحدیث٦۱۷٦، ص۱۰۹۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना शिब्ली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "मह़ब्बत लज़्ज़त में दहशत और ताज़ीम में ह़ैरत का नाम है।"

मज़ीद फ़रमाते हैं : "इश्क़ो मह़ब्बत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आग है जिसे वोह अपने औलियाए किराम علیہم الرحمۃ के दिलों में भड़काता है ह़त्ताकि इस की वज्ह से उन के दिलों के ख़यालात, इरादे, ह़ाजात और अ़वारिज़ सब कुछ जल जाता है।"

इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा। وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

www.dawateislami.net

बाब : 37 निय्यत, इख़्लास और सिद्क़ का बयान

निय्यत का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इरशादे नसीह़त बुन्याद है :

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ط (پ ٧، الانعام: ٥٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम उस की रिज़ा चाहते।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ "**तर्जमा :** आमाल का दारो मदार निय्यतों पर है।"

(صحيح البخاری، كتاب بد ء الوحی، باب كيف كان .....الخ، الحديث ١، ص ١)

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "लोग चार क़िस्म के हैं (उन में से दो येह हैं) : पेहला वोह शख़्स जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इ़ल्म और माल अ़त़ा फ़रमाया, वोह अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ अपना माल ख़र्च करता है, जब कि दूसरा शख़्स केहता है : अगर मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़ुलां की मिस्ल अ़त़ा किया होता तो मैं भी उस की त़रह़ अ़मल करता पस इन दोनों का अज्र बराबर है।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب النية، الحديث ٤٢٢٨، ص ٢٧٣٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जब दो मुसलमान अपनी तल्वारों के साथ बाहम लड़ाई करते हैं, तो क़ातिल व मक़्तूल दोनों जहन्नम में जाएंगे।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक तो क़ातिल है, लेकिन मक़्तूल का क्या क़ुसूर है ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्यूंकि इस ने अपने मद्दे मुक़ाबिल को क़त्ल करने का इरादा किया।" (سنن ابن ماجة، ابواب الفتن، باب اذا إلتقى المسلمان بسيفهما، الحديث ٣٩٦٤، ص ٢٧١٥)

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : "जो शख़्स ग़ैरुल्लाह के लिए ख़ुश्बू लगाता है वोह बरोज़े क़ियामत यूं आएगा कि उस की बदबू मुर्दार से भी ज़्यादा होगी, और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए ख़ुश्बू लगाता है वोह बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि उस की ख़ुश्बू कस्तूरी से ज़्यादा महक रही होगी।"

(مصنف عبد الرزاق، كتاب الصيام، باب المرأة تصلی وليس فی رقبتها.....الخ، الحديث ٧٩٦٣، ج ٤، ص ٢٤٧، بتقدّمٍ وتأخّرٍ)

निय्यत की हक़ीक़त का बयान

जानना चाहिए ! निय्यत, इरादा और क़स्द मुतरादिफ़ अल्फ़ाज़ हैं जो एक ही माना में इस्तिमाल होते हैं और येह एक क़ल्बी ह़ालत व सिफ़त है जिसे इ़ल्मो अ़मल ने घेर रखा है, इ़ल्म इस के लिए मुक़द्दमा व शर्त़ की त़रह़ है और अ़मल इस के ताबेअ़ है पस निय्यत उस इरादे का नाम है जो साबिक़ा इ़ल्म और उस के साथ मुल्हिक़ अ़मल के दरमियान होता है जिस से किसी शै को जाना जाता है और उस से इरादा पैदा होता है ताकि वोह अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ अ़मल करे।

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهٖ وَنِيَّةُ الْفَاسِقِ شَرٌّ مِنْ عَمَلِهٖ.

तर्जमा : मोमिन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है और फ़ासिक़ की निय्यत उस के अ़मल से बदतर है।

(المعجم الكبير، الحديث ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥، نية الفاسق .....الخ: بدله: عمل المنافق خيرمن نيته)

अगर अ़मल बिग़ैर निय्यत और निय्यत बिग़ैर अ़मल का आपस में मुवाज़ना किया जाए तो इस बात में कोई शक नहीं कि अ़मल के बिग़ैर सिर्फ़ निय्यत बिला निय्यत अ़मल से बेहतर है, क्यूंकि ऐसा अ़मल जिस से पेहले निय्यत हो उस का सवाब इस साबिक़ा निय्यत की वज्ह से है लिहाज़ा निय्यत बेहतर है क्यूंकि येह वोह इरादा है जो अस्ल इ़ल्म से पैदा होता है और येह दिल के ज़्यादा क़रीब होता है पस हर ह़ाल में मोमिन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है जैसा कि ह़दीसे पाक में गुज़रा।

जहां तक आमाल का तअ़ल्लुक़ है तो वोह गुनाह, इ़बादात और मुबाह़ात की त़रफ़ तक़्सीम होते हैं, पस जो चीज़ फ़ी नफ़्सिही गुनाह है वोह निय्यते इ़बादत से इ़बादत नहीं बनती। और इ़बादात में निय्यत ज़रूरी है क्यूंकि इ़बादत उस वक़्त तक इ़बादत नहीं बन सकती जब तक उस के साथ निय्यत न हो, फिर दाइमी और अच्छी निय्यत इ़बादत के दरजे को बढ़ा देती है, क्यूंकि बाज़ अवक़ात एक फ़ेल तादाद के एतिबार से एक ही होता है लेकिन मुमकिन है कि हुस्ने निय्यत की बदौलत वोह बहुत सी इ़बादात बन जाए, जैसा कि ह़दीसे पाक में है : "बेशक जो बन्दा मस्जिद में बैठा, उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया और जिस की ज़ियारत की जाए उस पर लाज़िम है कि वोह ज़ियारत करने वाले का इकराम करे।" (شعب الايمان للبيهقى، باب فى الصلوات، فضل المشى الى المساجد، الحديث٢٩٤٣، ج٣، ص٨٢)

(المعجم الكبير، الحديث٦١٤٥، ج٦، ص٢٥٥)

मिसाल के त़ौर पर अगर कोई शख़्स मस्जिद में बैठे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार की निय्यत करे, नमाज़ के इन्तिज़ार की निय्यत करे और नमाज़ का इन्तिज़ार करने वाला नमाज़ में ही होता है, मस्जिद में एतिकाफ़ की निय्यत करे, आज़ा को गुनाहों से रोकने और मस्जिद को अपने लिए पनाहगाह बनाने की निय्यत करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और क़ुरआने ह़कीम की

www.dawateislami.net

तिलावत सुनने की निय्यत करे, तो येह सब पै दर पै नेकियां हैं जिन्हें निय्यत के ज़रीए़ ह़ासिल किया जा सकता है।

जहां तक मुबाह़ात का तअ़ल्लुक़ है तो वोह भी हुस्ने निय्यत से इ़बादत के ज़ुमरे में दाख़िल हो जाते हैं, इस पर तवज्जोह देनी चाहिए, इसी त़रह़ तमाम ह़रकातो सकनात हुस्ने निय्यत से इ़बादत बन जाती हैं। इन्सान को चाहिए कि वोह अपनी उ़म्र का एक लम्ह़ा भी ज़ाएअ़ न करे और इस निय्यत के ज़रीए़ जानवरों से मुमताज़ रहे क्यूंकि जानवरों का त़रीक़ा है कि वोह हर काम इरादा व निय्यत के बिग़ैर करते हैं।

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बरोज़े क़ियामत बन्दे से हर चीज़ के बारे में सुवाल होगा यहां तक कि उस की आंखों के सुर्मे, उंगलियों से मिट्टी कुरेदने और अपने भाई का कपड़ा छूने के बारे में भी सुवाल होगा।"

(حلیة الاولیاء، احمد بن ابی الحواری، الحدیث ١٤٤٠٦، ج ١٠، ص ٣١، مختصرًا)

जो शख़्स अपने आमाल पर हमेशगी इख़्तियार करे, ताकि वोह सुन्नत के मुत़ाबिक़ और अच्छी निय्यत से सादिर हों तो वोह मुक़र्रबीन में से है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ۝

(پ ٢٦، ق: ١٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कोई बात वोह ज़बान से नहीं निकालता कि उस के पास एक मुह़ाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "मैं ने एक तह़रीर लिखी और उसे पड़ोसी की दीवार से ख़ुश्क करने का इरादा किया, लेकिन उसे अच्छा न जाना फिर सोचा : येह तो मामूली मिट्टी है और इस में ह़रज भी क्या है ? मगर जब तह़रीर पर मिट्टी डाली तो ग़ैब से आवाज़ आई : "जो शख़्स मिट्टी को मामूली समझता है, वोह अ़न क़रीब जान लेगा कि कल बरोज़े क़ियामत वोह कितना बड़ा ह़िसाब पाएगा।"

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ एक शख़्स ने नमाज़ पढ़ी, उस ने आप का कपड़ा उल्टा देखा तो आप को बताया, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे दुरुस्त करने के लिए हाथ बढ़ाया फिर रोक लिया और ठीक न किया, उस शख़्स ने इस की वज्ह पूछी तो आप ने फ़रमाया : "मैं ने इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए पेहना है और मैं नहीं चाहता कि ग़ैर के लिए इसे दुरुस्त करूं।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : बरोज़े क़ियामत एक आदमी दूसरे आदमी से उलझेगा और कहेगा : "मेरा और तेरा मुआ़मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने है।" दूसरा कहेगा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुझे नहीं जानता ?" वोह जवाब देगा : "क्यूं नहीं, तू ने मेरी दीवार से एक ईंट ली थी और मेरे कपड़े से एक धागा लिया था।"

निय्यत इख़्तियारी चीज़ नहीं

हम केहते हैं कि बाज़ अवक़ात जाहिल शख़्स निय्यत के मुतअ़ल्लिक़ हमारी बातों को सुन कर केहता है कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए पढ़ाने, तिजारत करने और खाने वग़ैरा की निय्यत करता

www.dawateislami.net

हूं, हालांकि येह सब दिल की बात और ख़यालात की मुन्तक़िली है, निय्यत इन से जुदा है और निय्यत येह है, कि इन्सान का दिल उस के मत़लूबा अहम मक़्सद की त़रफ़ बरअंगेख़्ता और माइल हो ख़्वाह वोह मक़्सद फ़ौरी हो या उस का तअ़ल्लुक़ मुस्तक़्बिल से हो, और जब तक किसी काम की त़रफ़ दिल माइल न हो उस वक़्त तक बित्तकल्लुफ़ निय्यत फ़ाएदा नहीं देती, बल्कि निय्यत तब कामिल होगी जब कि दिल उस चीज़ की त़रफ़ मुकम्मल त़ौर पर माइल हो जैसा कि एक पेट भरा आदमी कहे : "मैं भूका रेहने या भूक की वज्ह से खाने की निय्यत करता हूं।" या कोई (इश्क़ो मह़ब्बत से) ख़ाली दिल वाला कहे : "मैं फ़ुलां से इश्क़ो मह़ब्बत और उस का एह़तिराम करने की निय्यत करता हूं और येह चीज़ उस के बात़िन में न हो तो येह मुह़ाल है बल्कि नफ़्स का इस काम पर बरअंगेख़्ता होना उस वक़्त तक मुतसव्वर नहीं हो सकता जब तक उस का कोई सबब न गुज़रा हो क्यूंकि दिल का बरअंगेख़्ता होना किसी अ़र्ज़ और दाई के जवाब में होता है, इस की मिसाल निकाह़ है कि जिस शख़्स पर शहवत ग़ालिब हो और वोह निकाह़ का इरादा करे फिर वोह बित्तकल्लुफ़ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त, आप की सुन्नत और नेक औलाद की निय्यत करे तो येह निय्यत न केहलाएगी क्यूंकि उस के बात़िन में निकाह़ के येह अस्बाब नहीं बल्कि सिर्फ़ शहवत है।

बाज़ अस्लाफ़ से मन्क़ूल है कि वोह निय्यत के न होने की वज्ह से बाज़ इ़बादात से रुक जाते थे यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन علیہ رحمۃ اللہ المتین ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी तो फ़रमाया : "मेरी निय्यत ह़ाज़िर न थी।" अ़ज़ीम कूफ़ी आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन अबी सुलैमान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इन्तिक़ाल हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया : "आप उन के जनाज़े में क्यूं शरीक न हुवे ?" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर मेरी निय्यत ह़ाज़िर होती तो मैं जनाज़ा पढ़ता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه निय्यत के बिग़ैर कलाम न करते, आप से ह़दीस बयान करने का मुत़ालबा होता लेकिन आप बयान न करते आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इस बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : "क्या तुम चाहते हो कि मैं बिग़ैर निय्यत के गुफ़्तगू करूं ? जब मेरी निय्यत ह़ाज़िर होगी तो कलाम करूंगा, और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की गई : "हमारे लिए दुआ़ कीजिए।" तो आप ने इरशाद फ़रमाया : "जब मेरी निय्यत होगी तो दुआ़ करूंगा।"

इख़्लास का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है :

﴿۱﴾ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ (پ ۳۰، البینہ:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन लोगों को तो येही हुक्म हुवा कि **अल्लाह** की बन्दगी करें निरे उसी पर अ़क़ीदा लाते।

﴿۲﴾ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ؕ (پ ۲۳، الزمر: ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हां ख़ालिस **अल्लाह** ही की बन्दगी है।

www.dawateislami.net

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : इख़्लास मेरे राज़ों में से एक राज़ है, जो मैं ने अपने उन बन्दों के दिलों में बत़ौरे अमानत रखा है जिन से मुझे मह़ब्बत है।" (فردوس الاخبار للديلمي، باب القاف، الحديث٤٥٣٩،ج٢،ص١٤٥)

बनी इसराईल में एक आ़बिद था जिस ने त़वील अ़र्से तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की, उस के पास कुछ लोग आए और केहने लगे : "फ़ुलां क़ौम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा एक दरख़्त की पूजा करती है।" येह सुन कर वोह गुस्से में आ गया और अपना कुल्हाड़ा कन्धे पर रख कर दरख़्त काटने के इरादे से चला, रास्ते में उसे एक बुज़ुर्ग के रूप में शैत़ान मिला और पूछने लगा : "कहां का इरादा है ?" आ़बिद ने कहा : "उस दरख़्त को काटने जा रहा हूं।" शैत़ान केहने लगा : "तुझे इस से क्या ग़रज़ कि तू अपनी इ़बादत में मसरूफ़िय्यत छोड़ कर दूसरे मुआ़मलात में पड़ता है।" आ़बिद ने कहा : "येह भी मेरी इ़बादत है।" शैत़ान ने फिर कहा : "मैं तुझे हरगिज़ येह दरख़्त नहीं काटने दूंगा।" पस वोह दोनों लड़ पड़े, आ़बिद ने उसे पकड़ कर ज़मीन पर दे मारा और उस के सीने पर चढ़ बैठा।

शैत़ान ने कहा : "मुझे छोड़ो, मैं तुम से कुछ बात करना चाहता हूं। आ़बिद ने उसे छोड़ दिया।" शैत़ान उस से केहने लगा : "ऐ फ़ुलां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझ से येह चीज़ साक़ित़ की है, तुझ पर फ़र्ज़ नहीं की और न तू उस दरख़्त की इ़बादत करता है और न ही दूसरों का गुनाह तुझ पर होगा, रूए ज़मीन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बे शुमार अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام हैं, अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता तो इन की त़रफ़ उन को भेज देता और उन्हें उस दरख़्त को काटने का हुक्म देता।" आ़बिद ने कहा : "मैं उसे ज़रूर काटूंगा।" शैत़ान उस से फिर लड़ा तो आ़बिद फिर उस पर ग़ालिब आ गया और उसे पछाड़ कर उस के सीने पर चढ़ बैठा, जब इब्लीस आ़जिज़ आ गया तो उस ने कहा : "मेरे पास तेरे लिए एक तजवीज़ है, जिस से मेरे और तेरे दरमियान फ़ैसला हो जाएगा और वोह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर और नफ़्अ़ बख़्श है।" आ़बिद ने पूछा : "वोह क्या ?" उस ने कहा : "मुझे छोड़ो, मैं तुम्हें बताता हूं।" उस ने छोड़ दिया तो शैत़ान ने कहा : "तुम एक फ़क़ीर आदमी हो, तुम्हारे पास कुछ नहीं, तुम लोगों पर बोझ हो, वोह तुम्हारी ख़बरगीरी करते हैं, शायद तुम चाहते होगे कि अपने भाइयों से अच्छा सुलूक करूं, पड़ोसियों की ग़म ख़्वारी करूं, ख़ुद सेर हो कर खाऊं और लोगों से बे नियाज़ हो जाऊं।" आ़बिद ने कहा : "हां ! येह बात तो है।" शैत़ान ने कहा : "तुम दरख़्त काटने का इरादा छोड़ो और वापस चले जाओ, मैं हर रात तुम्हारे सिरहाने दो दीनार रख दिया करूंगा, जब सुब्ह़ उठो तो उन्हें उठा लेना, अपने और अपने एह्लो अ़याल पर ख़र्च करना नीज़ अपने भाइयों पर सदक़ा कर देना, येह तुम्हारे लिए और मुसलमानों के लिए उस दरख़्त को काटने से ज़्यादा मुफ़ीद है क्यूंकि उस की जगह दूसरा दरख़्त लगा दिया जाएगा और उस के काटने से उन लोगों का कोई नुक़्सान न होगा और न ही तुम्हारे मुसलमान भाइयों को कोई फ़ाएदा होगा।

आ़बिद ने शैत़ान की बात में ग़ौरो फ़िक्र किया और सोचने लगा : "इस ने सच कहा, मैं कोई नबी नहीं हूं कि मुझ पर उसे काटना लाज़िम हो और न ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे उस को काटने का हुक्म दिया है कि मैं इस अ़मल के न करने से गुनहगार हो जाऊंगा, और जो कुछ इस बुज़ुर्ग ने ज़िक्र किया है इस में

www.dawateislami.net

ज़्यादा नफ़्अ़ है चुनान्चे, उस ने शैत़ान से इस अ़ह्दो पैमान पर क़सम ली और अपने इ़बादत ख़ाने की त़रफ़ लौट आया, सुब्ह़ हुई तो देखा कि उस के सिरहाने दो दीनार रखे हुवे हैं। उस ने उन्हें उठा लिया, दूसरे दिन भी इसी त़रह़ हुवा लेकिन तीसरे दिन उसे कुछ न मिला तो वोह गुस्से में आ गया और कुल्हाड़ा अपने कन्धे पर रख कर दरख़्त की त़रफ़ चला, रास्ते में फिर बुज़ुर्ग की शक्ल में शैत़ान मिला और पूछा : "कहां जा रहे हो ?" आ़बिद ने कहा : "उस दरख़्त को काटने जा रहा हूं।" शैत़ान ने कहा : "अल्लाह की क़सम ! तुम झूट बोलते हो, तुम इस पर क़ादिर नहीं और न इस काम को कर सकते हो।"

चुनान्चे, आ़बिद ने उसे पकड़ कर पेहले की त़रह़ गिराना चाहा तो शैत़ान ने कहा : "अब ऐसा नहीं हो सकता।" फिर शैत़ान ने उसे पकड़ कर पछाड़ दिया, अब वोह आ़बिद शैत़ान के सामने चिड़या की त़रह़ था और इब्लीसे लईन उस के सीने पर चढ़ बैठा और केहने लगा : "अपने इस इरादे से बाज़ आ जाओ, वरना तुम्हें जान से मार दूंगा।" आ़बिद ने जब अपने आप को बे बस पाया, तो उस ने कहा : "ऐ फुलां ! तू मुझे छोड़ दे और येह बता कि तू मुझ पर कैसे ग़ालिब आ गया, ह़ालांकि पेहली मरतबा मैं तुझ पर ग़ालिब आ गया था और अब तू ग़ालिब आ गया ?" शैत़ान ने कहा : "पेहली मरतबा तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए गुस्सा आया था और तेरी निय्यत आख़िरत की थी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे तेरे हाथों मग़लूब कर दिया और इस मरतबा तुझे अपनी ज़ात और दुन्या के लिए गुस्सा आया तो मैं ने तुझे पछाड़ दिया।" येह ह़िकायत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान की तस्दीक़ करती है :

اِلَّا عِبَادَکَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِیْنَ0 (پ ١٤، الحجر: ٤٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मगर जो उन में तेरे चुने हुवे बन्दे हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना मारूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने आप को मारते हुवे फ़रमाते : "ऐ नफ़्स ! इख़्लास इख़्तियार कर तब ही छुटकारा पाएगा।"

इख़्लास की ह़क़ीक़त का बयान

जानना चाहिए ! हर चीज़ में मिलावट मुमकिन है जब वोह मिलावट से पाक और ख़ाली हो तो उसे ख़ालिस केहते हैं और जिस फ़ेल से वोह अ़मल साफ़ होता है उस को इख़्लास केहते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

مِنْۢ بَیْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِیْنَ 0 (پ ١٤، النحل: ٦٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : गोबर और ख़ून के बीच में से ख़ालिस दूध गले से सहल उतरता पीने वालों के लिए।

जब कोई काम रिया से ख़ाली और रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिए हो तो वोह ख़ालिस होता है।

इख़्लास के बारे में मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के अक़्वाल

ह़ज़रते सय्यिदुना सूसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "इख़्लास येह है कि ख़ुद इख़्लास पर भी नज़र न रहे, क्यूंकि जो शख़्स अपने इख़्लास में इख़्लास को देखता है तो उस का इख़्लास, इख़्लास का मोह़ताज है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा गया : "कौन सी चीज़ नफ़्स पर ज़्यादा सख़्त है? उन्हों ने फ़रमाया : "इख़्लास, क्यूंकि इस में नफ़्स का कोई ह़िस्सा नहीं। और फ़रमाया : इख़्लास येह है कि बन्दे की ह़रकत व सुकून सब कुछ मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिए हो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "**इख़्लास**, आमाल का कदूरतों से पाक होने का नाम है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "लोगों को दिखाने के लिए अ़मल तर्क करना रियाकारी और उन के लिए अ़मल करना शिर्क है और **इख़्लास** येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन दोनों चीज़ों से मह़फ़ूज़ रखे।"

मन्क़ूल है : "इख़्लास हमेशा मुराक़बे में रेहने और तमाम नफ़्सानी ख़्वाहिशात को भूल जाने का नाम है।" وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

सिद्क़ की ह़क़ीक़त का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ (پ ٢١، الاحزاب: ٢٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़ह्द **अल्लाह** से किया था।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : "बेशक **सच** नेकी की त़रफ़ रेहनुमाई करता है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है और आदमी सच बोलता रेहता है यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां **सिद्दीक़** लिख दिया जाता है और **झूट** गुनाह की त़रफ़ ले जाता है, गुनाह जहन्नम का रास्ता दिखाता है और आदमी झूट बोलता रेहता है यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां **कज़्ज़ाब** लिख दिया जाता है।"

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب قول اللّٰہ تعالی یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ.....الایۃ،الحدیث٦٠٩٤،ص٥١٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस की तारीफ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝ (پ ١٦، مریم: ٤١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और किताब में इब्राहीम को याद करो बेशक वोह सिद्दीक़ था ग़ैब की ख़बरें बताता।

सिद्दीक़ का माना

जानना चाहिए ! लफ़्ज़े सिद्दीक़ छे मआ़नी में इस्तिमाल होता है : (1) गुफ़्तगू में सिद्क़ (2) निय्यत व इरादे में सिद्क़ (3) अ़ज़्म में सिद्क़ (4) अ़ज़्म को पूरा करने में सिद्क़ (5) इ़ल्म में सिद्क़ (6) दीन के तमाम मक़ामात की तह़क़ीक़ में सिद्क़।

पस इन तमाम मआ़नी में सिद्क़ से मुत्तसिफ़ होने वाला सिद्दीक़ है क्यूंकि सिद्क़ में मुबालग़ा है और इन मक़ामात में जिस क़दर मुमकिन है वोह इस निस्बत से सादिक़ केहलाता है।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ وَاِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَالْمَآبُ.

www.dawateislami.net

बाब : 38 मुराक़बा व मुह़ासबा का बयान

जानना चाहिए ! यौमे मह़शर के ह़िसाब पर ईमान लाना मुह़ासबे के लिए तय्यारी करने का तक़ाज़ा करता है। नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है :

حَاسِبُوْا أَنْفُسَكُمْ قَبْلَ أَنْ تُحَاسَبُوْا.

तर्जमा : अपने नफ़्सों का मुह़ासबा करो, इस से पेहले कि तुम्हारा मुह़ासबा किया जाए।

(جامع الترمذی، ابواب صفة القيامة، باب حديث الكيس .....الخ، الحديث٢٤٥٩،ص١٨٩٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

﴿١﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝ (پ١٧، الانبياء: ٤٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम अ़द्ल की तराज़ूएं रखेंगे क़ियामत के दिन तो किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो तो हम उसे ले आएंगे और हम काफ़ी हैं ह़िसाब को।

﴿٢﴾ مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ (١٥، الكهف: ٤٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : इस नविश्ते (तेह़रीर) को क्या हुवा न इस ने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो।

﴿٣﴾ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ (پ٢ البقرة: ٢٣٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जान लो कि **अल्लाह** तुम्हारे दिल की जानता है तो उस से डरो।

जानना चाहिए ! जिस शख़्स ने हर लम्ह़े अपने नफ़्स का मुह़ासबा किया क़ियामत के दिन उस की ह़सरतें कम होंगीं और जिस ने अपना मुह़ासबा न किया वोह हमेशा ह़सरत का शिकार रहेगा और क़ियामत के दिन उसे ज़्यादा देर रुकना पड़ेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ (پ٤، ال عمران: ٢٠٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरह़द पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो।

पस ईमान वालों ने अपने नुफ़ूस की निगहबानी इस त़रह़ की, कि पेहले इन से शर्त़ बांधी फिर मुराक़बा (यानी हुज़ूरिए दिल से ख़ुदा का ध्यान) किया फिर सज़ा दी, फिर मुजाहदा किया और फिर झिड़का।

नफ़्स की निगहदाश्त

नफ़्स की निगहदाश्त के लिए मुन्दरिजए ज़ैल छे मक़ामात हैं, हम इस की तश्रीह़ करते हैं :

पेहला मक़ाम : नफ़्स से शराइत़ तै करना

जानना चाहिए ! राहे आख़िरत में अ़क़्ल ताजिर की त़रह़ और नफ़्स उस के शरीक की त़रह़ है क्यूंकि अ़क़्ल उसी की मदद से मक़्सूद तक पहुंच सकती है और अगर नफ़्स को खुली छुट्टी दे दी जाए तो येह अमानत अदा नहीं करता, मगर ह़या और रिया के त़ौर पर। पस अ़क़्ल इस बात की मोह़ताज है कि वोह पेहले नफ़्स से शराइत़ तै करे फिर इस की निगरानी करे, तीसरे मरह़ले में इस का ह़िसाब ले और इस के बाद इसे सज़ा दे। फिर कुछ उमूर इस के सिपुर्द करे, इस पर चन्द शराइत़ आ़इद करे, कामयाबी के रास्तों पर इस की रेहनुमाई करे और इस को सख़्त हुक्म दे।

दूसरा मक़ाम : मुराक़बा करना

जब नफ़्स ख़ियानत करने वाले शरीक की त़रह़ हो तो उसे एक लम्ह़े के लिए भी ढील नहीं दी जा सकती ताकि वोह ख़ियानत न करे, वरना नफ़्अ़ ह़ासिल होने के बजाए अस्ल माल ही ज़ाएअ़ हो जाएगा, लिहाज़ा ह़रकातो सकनात और लह़ज़ात में हमेशा के लिए मुराक़बा होना ज़रूरी है।

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

أُعْبُدْ رَبَّكَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ.

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत इस त़रह़ करो गोया तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देखते हो वोह तो तुम्हें देख रहा है।

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان الايمان والاحسان .....الخ، الحديث٩٣،ص٦٨١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝ (پ٤،النساء:١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह हर वक़्त तुम्हें देख रहा है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद नैशापुरी मुर्तइश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुराक़बा येह है कि हर लम्ह़ा और हर लफ़्ज़ के साथ ग़ैब को मुलाह़ज़ा करते हुवे बात़िन का ख़याल रखना।"

तीसरा मक़ाम : अ़मल के बाद नफ़्स का मुह़ासबा करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ (پ ٢٨ ، الحشر:١٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हर जान देखे कि कल के लिए क्या आगे भेजा।

ह़दीस शरीफ़ में है : "अ़क़्लमन्द के लिए चार घड़ियां होनी चाहिएं जिन में से एक साअ़त वोह अपने नफ़्स के मुह़ासबे के लिए मुक़र्रर करे।"

(شعب الایمان للبیھقی، باب فی تعدید نعم اللّٰہ وشکرھا، فصل فی فضل العقل، الحدیث٤٦٧٧،ج٤،ص١٦٤)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में है कि "जब रात हो जाती तो आप अपने पाउं पर दुर्रा मारते और अपने आप से पूछते कि आज तुम ने क्या अ़मल किया ?"

पस इस से मालूम हुवा कि तुम्हें दिन के आख़िरी ह़िस्से में उस दिन के आमाल के बारे में अपने नफ़्स का मुह़ासबा करना चाहिए।

चौथा मक़ाम : कोताही पर सज़ा देना

एह़तिसाब के बाद भी अगर नफ़्स इ़बादत में कोताही बरते और गुनाह का इर्तिकाब करे, तो इन्सान अपने नफ़्स को खुली छुट्टी न दे, क्यूंकि इसे मोहलत देने की सूरत में गुनाहों का इर्तिकाब आसान हो जाएगा, अगर नफ़्स की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ कोई मुश्तबेह लुक़्मा खाए तो उसे नफ़्स को भूका रख कर सज़ा देनी चाहिए, अगर किसी ग़ैर मह़रम को देखे तो आंख को देखने से रोक कर और बेदार रख कर सज़ा दे, इसी त़रह़ दीगर आज़ाए जिस्म को शहवत से न रुकने पर सज़ा दे, इसी त़रह़ आख़िरत की राह पर चलने वालों के बारे में मन्क़ूल है।

पांचवां मक़ाम : मुजाहदा करना

मुजाहदा येह है कि अगर नफ़्स से ख़ियानत ज़ाहिर हो तो वोह उसे सज़ा दे और अगर वोह नेकी न करे और इत़ाअ़त बजा न लाए तो नफ़्स का मुजाहदा करे और उसे सख़्त मुजाहदात पर आमादा करे मसलन अगर वोह नमाज़े बा जमाअ़त या नवाफ़िल में सुस्ती करे तो पूरी रात इ़बादत में जागना अपने ऊपर लाज़िम करे, लेकिन अगर वोह शब बेदारी से इन्कार करे, तो अपने नफ़्स पर मुजाहदा की फ़ज़ीलत में वारिद होने वाली आयात व अह़ादीस पढ़े।

छटा मक़ाम : झिड़कना

याद रखो ! तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन तुम्हारा नफ़्स है, जो तुम्हारे पेहलूओं में है। उसे यूं पैदा किया गया कि वोह बुराई का हुक्म देने वाला, शर की त़रफ़ माइल होने वाला और नेकी से भागने वाला है और तुम्हें हुक्म दिया गया है कि अपने नफ़्स से मुजाहदा करो, उसे ज़बरदस्ती अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की त़रफ़ माइल करो और इ़बादात करने और शहवात तर्क करने के साथ उसे पाक करो। अगर तुम उसे बिल्कुल ढील दे दोगे, तो वोह सरकश हो जाएगा, भाग जाएगा और तुझ पर ग़ालिब आ जाएगा, तो इस के बाद तेरी इत़ाअ़त न करेगा। अगर तुम इसे मुसलसल झिड़कते और इ़ताब करते रहोगे, तो येह तुम्हारी इत़ाअ़त करेगा और तरक़्क़ी कर के नफ़्से लव्वामा बन जाएगा और इसी त़रह़ नफ़्से लव्वामा नफ़्से मुत़मइन्ना बन जाएगा, पस वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में दाख़िल हो जाएगा

www.dawateislami.net

वोह इस त़रह़ कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से राज़ी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी होगा, लिहाज़ा तुम नफ़्स से एक लम्ह़े के लिए भी ग़ाफ़िल न रहो और जब तक इस की इस्लाह़ न कर लो दूसरे को नसीह़त न करो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने मरयम ! अपने नफ़्स को नसीह़त करो, अगर उस ने नसीह़त मान ली, तो लोगों को नसीह़त करना वरना मुझ से ह़या करना।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ (پ ۲۷، الذّٰریٰت:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है।

पस तुम पर लाज़िम है कि अपने नफ़्स पर तवज्जोह दो और उसे बार बार उस की ह़माक़त, जहालत और धोकादेही बताओ और उसे कहो : तुझे शर्म नहीं आती कि तू लोगों को अह़मक़ व जाहिल बताता है, ह़ालांकि तू ख़ुद सब से बड़ा जाहिल है, बेशक तू जन्नत या दोज़ख़ की त़रफ़ जाएगा और तुझे क्या है कि तू लह्वो लअ़ब और हंसने में मश्ग़ूल है, ह़ालांकि तू हर उस काम के लिए मत़लूब है, शायद तू मौत को दूर समझता है ह़ालांकि वोह क़रीब है, शायद मौत आज दिन, रात या कल आ जाए और मुस्तक़्बिल में वाक़ेअ़ होने वाली हर चीज़ क़रीब ही होती है, क्या तुझे मालूम नहीं कि वोह अचानक आएगी और उस से पेहले कोई क़ासिद नहीं आएगा।

हिकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मैं ने एक रात कूफ़ा में एक इ़बादत गुज़ार को अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करते सुना, वोह केह रहा था : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं ने तेरी मुख़ालफ़त के इरादे से तेरी ना फ़रमानी नहीं की, तेरे मक़ाम से ना वाक़िफ़ होते हुवे भी नहीं की और न ही (अपने आप को) तेरे अ़ज़ाब के लिए पेश करना मक़्सूद था और मैं तुझे ह़क़ीर भी न समझता था, लेकिन मेरे नफ़्स ने इस काम को मेरे सामने अच्छा कर के पेश किया, मेरी बदबख़्ती ने इस मुआ़मले में मेरी मदद की और मुझे तेरी पर्दापोशी से धोका हुवा, तो मैं ने अपनी जहालत की वज्ह से तेरी ना फ़रमानी की और अपने अ़मल से तेरी मुख़ालफ़त की, अब तेरे अ़ज़ाब से मुझे कौन बचाएगा या मैं किस की रस्सी को पकड़ूंगा, अगर तेरी रस्सी मुझ से छूट जाए, बड़ी ख़राबी तो येह है कि कल क़ियामत के दिन तेरे सामने खड़ा होना होगा, जब हल्के फुल्के लोगों से कहा जाएगा : तुम गुज़र जाओ और ज़्यादा बोझ वालों से कहा जाएगा : उतर जाओ तो क्या मैं हल्के फुल्के लोगों के साथ गुज़र जाऊंगा या बोझ वालों के साथ नीचे उतार दिया जाऊंगा ? हाए मेरी बरबादी ! जैसे जैसे मेरी उ़म्र बढ़ती गई गुनाह भी ज़्यादा होते गए, मैं कब तक तौबा करता रहूंगा ? और कब तक दोबारा गुनाह करता रहूंगा ? क्या वोह वक़्त नहीं आया कि मैं अपने रब से ह़या करूं ?"

पस यहां तुम्हारे लिए दो त़रीक़े हैं : एक त़रीक़ा अपने नफ़्स को झिड़कने का है और दूसरा त़रीक़ा रब तआ़ला से मुनाजात करने और नफ़्स पर उस से मदद त़लब करने का है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर कुव्वत व त़ाक़त से बराअत का इज़्हार करने और उस की बारगाह में अपने आप को आ़जिज़ व ह़क़ीर समझने का है कि शायद अल्लाह तआ़ला तुम्हें नफ़्स के शर से मह़फ़ूज़ रखे ।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ وَاِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَالْمَآبُ.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए बाहम मह़ब्बत करने वाले नूर के मिम्बरों पर होंगे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ऐसे बन्दे भी हैं जो न अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं और न शुहदा लेकिन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और शुहदाए इ़ज़्ज़ाम उन के मक़ामो मर्तबे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उन के क़ुर्ब पर रश्क करेंगे ।" एक आराबी ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कौन लोग होंगे ?" हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह मुख़्तलिफ़ शहरों के लोग होंगे इन के दरमियान कोई ख़ूनी रिश्ता न होगा मगर वोह एक दूसरे से सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर मह़ब्बत करते और तअ़ल्लुक़ रखते होंगे । बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के लिए अपने (अ़र्श के) सामने नूर के मिम्बर रखने का हुक्म फ़रमाएगा । और उन का ह़िसाब भी उन्ही मिम्बरों पर फ़रमाएगा । लोग तो ख़ौफ़ज़दा होंगे लेकिन वोह बे ख़ौफ़ होंगे ।" (المعجم الكبير،الحديث ٣٤٣٣،ج٣، ص ٢٩٠ بتغير)

बाब : 39 तफ़क्कुर का बयान

ह़दीस शरीफ़ में है :

تَفَكُّرُ سَاعَةٍ خَيْرٌ مِّنْ عِبَادَةِ سَنَةٍ.

तर्जमा : (आख़िरत के मुआमले में) घड़ी भर के लिए ग़ौरो फ़िक्र करना पूरे साल की इ़बादत से बेहतर है।

(العظمة لابی الشیخ الاصبهانی، باب الامر بالتفکر فی آیات اللّٰه.....الخ، ما ذکر من الفضل.....الخ،الحدیث ٤٤،ص٣٣)

कुरआने मजीद और अह़ादीसे त़य्यिबा में ग़ौरो फ़िक्र, तदब्बुर और इ़ब्रत ह़ासिल करने पर उभारा गया है क्यूंकि येह अन्वारे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की चाबी, बसीरत का मम्बअ़ और उ़लूम के लिए जाल है।

तफ़क्कुर की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ग़ौरो फ़िक्र करने वालों की तारीफ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ج

(پ ٤ ، اٰل عمران : ١٩١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "एक जमाअ़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने लगी, तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में ग़ौरो फ़िक्र न करो क्यूंकि तुम उस की कुदरत का अन्दाज़ा नहीं कर सकते।"

(العظمة لابی الشیخ الاصبهانی، باب الامر بالتفکر فی آیات اللّٰه.....الخ، الحدیث ٥،ص١٨)

मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुछ लोगों के पास तशरीफ़ लाए, जो ग़ौरो फ़िक्र कर रहे थे। रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हें क्या हो गया है कि गुफ़्तगू नहीं करते ?" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ के बारे में ग़ौरो फ़िक्र कर रहे हैं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस की मख़्लूक़ में ग़ौरो फ़िक्र करो, मगर उस के बारे में ग़ौरो फ़िक्र न किया करो, क्यूंकि मग़रिब की त़रफ़ एक सफ़ेद ज़मीन है जिस की रौशनी उस की सफ़ेदी या जिस की सफ़ेदी उस की रौशनी की त़रह़ है, उस की मसाफ़त तुम्हारे चालीस दिनों जितनी है, उस जगह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ऐसी मख़्लूक़ है जो पलक झपकने की मिक़्दार भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी नहीं करते।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या शैत़ान उन (के दिल) में वस्वसे नहीं डालता ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उन को येह भी मालूम नहीं कि शैत़ान पैदा भी किया गया है या नहीं।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने फिर अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !

क्या वोह ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में से हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "हां, और उन को येह ख़बर भी नहीं कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पैदा भी किए गए हैं या नहीं ।"

(العظمة لابی الشیخ الاصبهانی، ما ذکرمن کثرة عباده الله فی ارضه وما خصوا به من النعم، الحدیث ۹٦۰،ص۳۲۵، بتغیرٍ)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं : एक दिन मैं और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे, हमारे और उन के दरमियान पर्दा था, उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पूछा : "ऐ उ़बैद ! तुम्हें हमारे पास आने से किस चीज़ ने रोका है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान ने : زُرْ غِبًّا تَزْدَدْ حُبًّا "**तर्जमा :** मुलाक़ात में देर किया करो, मह़ब्बत में इज़ाफ़ा होगा ।"

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "आप हमें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कोई अनोखी बात बताइए, जो आप ने देखी हो ?" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रोने लगीं और फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हर मुआ़मला अ़जीब था, एक रात आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे साथ आराम फ़रमा रहे थे, यहां तक कि आप के जिस्म के साथ मेरा जिस्म मस हुवा, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने दो ।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मश्कीज़े की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए, उस से वुज़ू फ़रमाया, फिर खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने लगे और इस क़दर रोए कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारक तर हो गई, फिर सजदा किया यहां तक कि ज़मीन तर हो गई, इस के बाद पेहलू पर आराम फ़रमा हो गए ह़त्ताकि ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ाज़िर हो कर नमाज़े फ़ज्र की इत्तिलाअ़ दी और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप क्यूं रो रहे हैं ? ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सबब आप के अगलों पिछलों के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिए हैं ।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ बिलाल ! तुझ पर अफ़्सोस ! मैं क्यूं न रोऊं, आज रात मुझ पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई है :

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ۝ (پ٤،آل عمران:١٩٠) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं अ़क़्लमन्दों के लिए ।" फिर फ़रमाया : "उस शख़्स के लिए ख़राबी है जो इस आयते करीमा को पढ़े लेकिन इस में ग़ौरो फ़िक्र न करे ।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب التوبة، الحدیث٦١٩،ج٢،ص٩، بتغیرٍ)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया : "इन आयात में इन्तिहाई ग़ौरो फ़िक्र क्या है ?" उन्हों ने फ़रमाया : "इन को पढ़ा और समझा जाए ।"

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "सब से बेहतर और आला मजलिस आदमी का तौह़ीद के मैदान में फ़िक्र के साथ बैठना, मारिफ़त की बादे नसीम से लुत्फ़ अन्दोज़ होना और दरियाए मह़ब्बत से मह़ब्बत का प्याला पीना और हुस्ने ज़न के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ देखना है, फिर फ़रमाया : इन मजालिस का क्या केहना, येह कितनी शानदार हैं और इन की शराब किस क़दर लज़ीज़ है और जिस को येह अ़त़ा की गई वोह निहायत ही ख़ुश नसीब और मुबारक बाद का मुस्तह़िक़ है।"

फ़िक्र की ह़क़ीक़त और इस का नतीजा

जानना चाहिए ! फ़िक्र का माना दिल में दो मारिफ़तों को ह़ाज़िर करना है ताकि बन्दा इस से तीसरी मारिफ़त ह़ासिल करे और इस की मिसाल येह है कि वोह पहचान ले कि आख़िरत ही बेहतर और बाक़ी रेहने वाली है और बेहतर और बाक़ी रेहने वाली को इख़्तियार करना ही ज़्यादा मुनासिब है। ग़ौरो फ़िक्र करने का मक़्सद दिल में इ़ल्म का ह़ुसूल है पस येह हर ह़ाल और फ़ेल के एतिबार से नजात को साबित करती है और येह दोनों मारिफ़तें इ़ल्म का नतीजा हैं और इ़ल्म ग़ौरो फ़िक्र करने का नतीजा है।

फ़िक्र की गुज़रगाहें

जानना चाहिए ! बन्दा कभी अपने नफ़्स की ह़ालत को देखता और उस में ग़ौरो फ़िक्र करता है जैसा कि पेहले बयान हो चुका है और कभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात, सिफ़ात और अफ़्आ़ल में ग़ौरो फ़िक्र करता है। जहां तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात में ग़ौरो फ़िक्र करने का तअ़ल्लुक़ है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक रसाई सिर्फ़ उस के ज़िक्र से ही मुमकिन है और इन्सान जिस क़दर उस की सिफ़ात, अफ़्आ़ल, मुल्क व मलकूत में ग़ौरो फ़िक्र करता है तो इस पर जमाले ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के ज़ाहिर होने से उस की मह़ब्बत में इज़ाफ़ा होता है और येह चीज़ अस्माए इलाहिय्या के मआ़नी, उस की सिफ़ात में तदब्बुर करने, ज़मीनो आस्मां और सितारों में ग़ौरो फ़िक्र करने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के सिवा हर चीज़ में ग़ौरो फ़िक्र करने से ह़ासिल होती है क्यूंकि हर चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तख़्लीक़ व सन्अ़त है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

﴿۱﴾ سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِى الْاٰفَاقِ (پ۲۵، حم السجدة: ۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अभी हम उन्हें दिखाएंगे अपनी आयतें दुन्या भर में।

﴿۲﴾ وَفِىْۤ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝ (پ۲۶، الذّٰریٰت: ۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ख़ुद तुम में, तो क्या तुम्हें सूझता नहीं।

पस ग़ौरो फ़िक्र की गुज़रगाह (यानी इस का मक़ाम) तुम्हारा अपना नफ़्स और इस के बाद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तमाम मख़्लूक़ है। इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ

www.dawateislami.net

बाब : 40 मौत और इस के बाद का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِیْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِیْكُمْ

(پ ۲۸، الجمعة: ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह मौत जिस से तुम भागते हो वोह तो ज़रूर तुम्हें मिलनी है ।

बाज़ लोग मौत को कभी कभार याद कर लेते हैं और जब उसे याद करते हैं, तो उसे ना पसन्द समझते हैं क्यूंकि वोह दुन्या में मश्ग़ूल होते हैं, तो ऐसे शख़्स को मौत की याद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मज़ीद दूर कर देती है । लेकिन कुछ लोग मुकम्मल तौर पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर अपने गुनाहों से तौबा कर लेते हैं, पस मौत की याद तौबा के मुकम्मल होने के साथ उन के दिलों में ख़शिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ, ख़ौफ़, तय्यारी और वफ़ा में इज़ाफ़ा कर देती है और वोह शख़्स दुन्या में मश्ग़ूल होने की वज्ह से मौत को ना पसन्द नहीं करता बल्कि ज़ादे राह की कमी और आख़िरत की तय्यारी न होने की वज्ह से मौत को ना पसन्द करता है और येह ना पसन्द जानना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को ना पसन्द करना नहीं और येह मज़मूम भी नहीं है, बल्कि वोह शख़्स आख़िरत की तय्यारी के लिए दुन्यावी ज़िन्दगी चाहता है और इसी मह़ब्बत के साथ उसे इसी तय्यारी में मौत आ जाए तो मौत उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात और उस के जवारे रेह़मत की त़रफ़ ले जाएगी । आ़रिफ़ हमेशा मौत को याद करता है, क्यूंकि मौत के साथ मेह़बूब से मुलाक़ात का वादा है और मुह़िब, मेह़बूब की मुलाक़ात के वक़्त को कभी नहीं भूल सकता । क्यूंकि मौत आ़म तौर पर देर से आती है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मरवी है, जब उन की वफ़ात का वक़्त आया तो इरशाद फ़रमाया : "मेरा दोस्त (यानी मेह़बूब से मुलाक़ात का वादा) मेरी बे सरो सामानी की ह़ालत में आया, मुझे सिर्फ़ नदामत से कामयाबी नहीं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तेरे इ़ल्म में मुझे ग़ना के मुक़ाबले में फ़क़्र, सेह़्ह़त के मुक़ाबले में बीमारी और ज़िन्दगी के मुक़ाबले में मौत ज़्यादा पसन्द है तो मुझ पर मौत आसान फ़रमा दे यहां तक कि मैं तुझ से मुलाक़ात कर लूं ।"

बुलन्द मर्तबा येह है कि बन्दा अपना मुआ़मला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर दे, पस अपने लिए ज़िन्दगी व मौत इख़्तियार न करे । मौत की मह़ब्बत बन्दे को मक़ामे तस्लीम तक पहुंचा देती है, तो वोह अपने नफ़्स के लिए वोही चीज़ इख़्तियार करता है, जो उस का रब عَزَّوَجَلَّ उस के लिए पसन्द करे ।

मौत के ज़िक्र की फ़ज़ीलत

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : اَكْثِرُوْا مِنْ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ "**तर्जमा :** लज़्ज़ात को ख़त्म करने वाली चीज़ मौत को कसरत से याद करो ।" (جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب ماجاء فی ذکر الموت، الحدیث ۲۳۰۷، ص ۱۸۸٤)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : "मौत के बारे में जो कुछ तुम्हें मालूम है अगर जानवरों को मालूम हो जाए तो तुम उन में से किसी फ़र्बा जानवर को न खा सको।"

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزهد وقصر الامل، الحدیث١٠٥٥٧، ج٧، ص٣٥٣)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या शुहदा के साथ किसी और को भी उठाया जाएगा ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां ! जो आदमी दिन रात में बीस मरतबा मौत को याद करे।"

(قوت القلوب للشیخ ابی طالب محمد بن علی المکی، الفصل الثانی والثلاثون، ذکر التداوی وترکه للمتوکل، ج٢، ص ٥٣)

नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : تُحْفَةُ الْمُؤْمِنِ الْمَوْتُ "**तर्जमा :** मौत, मोमिन के लिए तोह़फ़ा है।"

(المستدرك، کتاب الرقاق، باب لا یکون أحد متقیاً.....الخ، الحدیث ٧٩٧٠، ج٥، ص٤٥٥)

नूर के पैकर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : كَفٰى بِالْمَوْتِ وَاعِظًا "**तर्जमा :** मौत वाज़ो नसीह़त के लिए काफ़ी है।

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزهد وقصرالامل، الحدیث١٠٥٥٦، ج٧، ص٣٥٣)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मस्जिद की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए, वहां कुछ लोग बातें कर रहे और हंस रहे थे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मौत को याद करो, उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम वोह जानते जो मैं जानता हूं तो कम हंसते और ज़्यादा रोते।"

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الموت والاستعداد له، الحدیث٩٦، ج٥، ص٤٢٣)

याद रखिए ! बेशक मौत का मुआ़मला बड़ा हौलनाक है, इस में ग़ौरो फ़िक्र करना धोके के घर (यानी दुन्या) से दूर रेहने, ख़ुश फ़ेहमी का शिकार न होने और इस के लिए तय्यारी करने का बाइ़स है, हां ! जब इन्सान इसे मश्ग़ूल दिल के साथ याद करता है, तो इस का असर दिल में ज़ाहिर नहीं होता। इस सिलसिले में त़रीक़ा येह है कि इन्सान अपने दिल को मौत की याद के इ़लावा हर ख़याल से पाक कर दे और इस में इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करे, जिस त़रह़ वोह ख़ुश्की या समुन्दर के सफ़र के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करता है, जिस पर रवाना होने का उस का पुख़्ता इरादा होता है क्यूंकि उस के दिल पर उसी के बारे में सोचो बिचार और उस के लिए तय्यारी करने के इ़लावा कोई ख़याल ग़ालिब नहीं रेहता।

उम्मीदों को कम करना और लम्बी उम्मीदों की मज़म्मत

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से इरशाद फ़रमाया : "जब तू सुब्ह़ करे तो अपने नफ़्स से शाम का ज़िक्र न कर और जब शाम करे तो उस से सुब्ह़ का ज़िक्र न कर, अपनी ज़िन्दगी में मौत के लिए और

www.dawateislami.net

अपनी सेह़्ह़त की ह़ालत में बीमारी के लिए अ़मल कर ले, क्यूंकि ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तू नहीं जानता कि कल तेरा नाम क्या होगा (ज़िन्दा या मुर्दा) । (حلیة الاولیاء، عبد اللّٰہ بن عمر بن الخطاب، الحدیث ۱۱۰۵، ج۱، ص۳۸٦)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रेह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे मुबारक है : "मुझे तुम पर दो बातों का बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ है : ख़्वाहिश की पैरवी करना और लम्बी उम्मीद रखना, ख़्वाहिश की पैरवी तो ह़क़ बात से रोकती है और लम्बी उम्मीद दुन्या से मह़ब्बत में मुब्तला करती है ।"

फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "याद रखो ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे भी दुन्या अ़त़ा फ़रमाता है जिस से मह़ब्बत करता है और उसे भी देता है जिसे ना पसन्द करता है मगर जब वोह किसी बन्दे से मह़ब्बत फ़रमाता है, तो उसे ईमान (की दौलत) अ़त़ा फ़रमाता है, सुन लो ! कुछ लोग दीन वाले हैं और कुछ दुन्या वाले, तुम दीन वाले बनो, दुन्या वाले न बनो, याद रखो ! दुन्या पीठ फेर कर जा रही है, जान लो ! आख़िरत क़रीब आ चुकी है, ख़बरदार ! आज तुम अ़मल के दिन में हो, इस में ह़िसाब नहीं, अ़न क़रीब तुम ह़िसाब के दिन में होगे और वहां कोई अ़मल न होगा ।"

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب قصر الامل، الحدیث۳، ج۳، ص۳۰۳۔۳۰٤)

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ लोगो ! क्या तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या नहीं करते ?" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कैसे ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम वोह माल जम्अ़ करते हो जिसे खाते नहीं और उस चीज़ की उम्मीद रखते हो जिसे ह़ासिल नहीं कर सकते और वोह मकान बनाते हो जिन में तुम्हें रेहना नहीं ।"

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزهد وقصر الامل، الحدیث ۱۰۵٦۲، ج۷، ص۳۵٤۔۳۵۵، لا تسکنون: بدله: لاتعمرو ن)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से एक लौंडी एक सौ दीनार में ख़रीदी और एक महीने का उधार किया, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह बात सुनी, तो इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम उसामा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) पर तअ़ज्जुब नहीं करते जो महीने का सौदा करता है, यक़ीनन उसामा लम्बी उम्मीद वाला है, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! जब मैं अपनी आंखें झपकता हूं तो येह गुमान करता हूं कि कहीं मेरी पलकें खुलने से पेहले ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी रूह़ क़ब्ज़ न फ़रमा ले और जब अपनी पलकें उठाता हूं तो येह ख़याल करता हूं कि कहीं इन्हें झुकाने से पेहले ही मौत का वादा न आ जाए और जब कोई लुक़्मा मुंह में डालता हूं तो येह गुमान करता हूं कि मौत का उच्छू लगने (यानी मौत आने) से पेहले उसे न निगल सकूंगा ।" फिर फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अगर तुम्हें अ़क़्ल है, तो अपने आप को मुर्दों में शुमार करो, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए़ क़ुदरत में मेरी जान है ! जिस बात का तुम से वादा किया गया है, वोह आने वाली है और तुम उसे आने से नहीं रोक सकते ।" (موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب قصر الامل، الحدیث٦، ج۳، ص۳۰٤۔۳۰۵)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पेशाब के लिए तशरीफ़ ले जाते और मिट्टी से त़हारत फ़रमाते थे, मैं अ़र्ज़ करता : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! पानी आप के क़रीब है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते : "मैं नहीं जानता कि मैं उस तक पहुंच सकूंगा या नहीं।" (الزھد لابن المبارك، باب الاعتبار والتفكر، الحديث ٢٩٢، ص٩٩)

एक रिवायत में है, हुज़ूर नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन लकड़ियां ले कर एक लकड़ी अपने सामने गाड़ दी, दूसरी उस के पेहलू में और तीसरी को उस से दूर गाड़ा, फिर फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो, येह क्या है ?" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : اَللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **और उस का रसूल** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **बेहतर जानता है।**") आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह (पेहली लकड़ी) इन्सान है, येह (उस के क़रीब वाली लकड़ी) उस की मौत है और वोह (दूर वाली लकड़ी) उस की उम्मीद है, इन्सान उम्मीद को पाना चाहता है, लेकिन मौत उस के रास्ते में रुकावट बन जाती है।" (موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب قصر الأمل، الحدیث ١٠، ج٣، ص٣٠٦)

सकराते मौत का बयान

सकराते मौत के वक़्त क्या किया जाए ?

जानना चाहिए ! अगर इन्सान के सामने मौत की सख़्तियों के इ़लावा कोई और चीज़ न भी हो, तो फिर भी येह इस लाइक़ है कि इसे ज़िन्दगी ख़ुशियों में मुब्तला न करे और इसे चाहिए कि हमेशा इस में ग़ौरो फ़िक्र करता रहे और इस के लिए ख़ूब तय्यारी करे, जैसा कि किसी दाना का क़ौल है : "सख़्तियां तुम्हारे सिवा किसी और के क़ब्ज़े में हैं, तुम नहीं जानते कि वोह कब तुम्हें ढांप लें।"

ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّحِیْم ने अपने बेटे से फ़रमाया : "ऐ बेटे ! मौत ऐसा मुआ़मला है कि तुम नहीं जानते वोह कब तुम्हें पहुंचे, उस के अचानक आने से पेहले उस की तय्यारी कर लो।"

तअ़ज्जुब की बात है कि अगर किसी इन्सान को येह तवक़्क़ोअ़ हो कि एक लश्करी (यानी सिपाही) आ कर उसे पांच छड़ियां मारेगा, तो उस की ज़िन्दगी बे कैफ़ो बे सुरूर हो जाएगी, पस जब हर शख़्स जानता है कि उस के पास मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام आएंगे, तो उस की ज़िन्दगी बे मज़ा क्यूं नहीं होती।

जानना चाहिए ! सकराते मौत की ह़क़ीक़ी तक्लीफ़ सिर्फ़ वोही शख़्स जान सकता है जिस ने उसे चखा हो और जिस ने उसे नहीं चखा वोह उन तकालीफ़ पर क़ियास कर के उसे जान सकता है जो उसे पहुंची हों या मुर्दों को ह़ालते नज़्अ़ में सख़्ती बरदाश्त करते हुवे देख कर इस से इस्तिद्लाल कर सकता है और क़ियास की सूरत येह है कि वोह जान ले कि उन तकालीफ़ में रूह़ को बहुत कम

www.dawateislami.net

दर्द होता है और मौत वोह दर्द है जो सिर्फ़ रूह़ को पहुंचता है और इस की तमाम आज़ा में शिद्दत होती है तो येह दर्द किस क़दर अ़ज़ीम होगा, क्या आप नहीं देखते ? जब आग जिस्म को जला दे तो उस का दर्द ज़ख़्म से ज़्यादा होता है, क्यूंकि येह रूह़ के तमाम अज्ज़ा को पहुंचती है और मौत की सख़्ती में दर्द के बा वुजूद चीख़ो पुकार की आवाज़ नहीं निकलती, क्यूंकि इस की तक्लीफ़ दिल पर ग़ालिब आ जाती है और तमाम आज़ा का इह़ाता़ कर लेती है तो इस से हर उ़ज़्व की क़ुव्वत ख़त्म हो जाती है, यहां तक कि मदद त़लब करने की क़ुव्वत भी बाक़ी नहीं रेहती ।

मौत की सख़्ती अ़क़्ल को भी ढांप लेती है और परेशान कर देती है, ज़बान को गूंगा कर देती और आज़ा को कमज़ोर कर देती है। मौत के वक़्त इन्सान चाहता है कि रोए, चिल्लाए और मदद त़लब कर के सुकून ह़ासिल करे लेकिन वोह ऐसा नहीं कर सकता और अगर कुछ क़ुव्वत बाक़ी रेहती है तो रूह़ के निकलते वक़्त उस के ह़ल्क़ और सीने से ग़र ग़राहट की आवाज़ सुनाई देती है, उस का रंग बदल कर मटयाला हो जाता है, यहां तक कि उस से मिट्टी का रंग ज़ाहिर होता है जो उस की अस्ल फ़ित़रत है और रूह़ को उस की तमाम रगों से खींच लिया जाता है, फिर दरजा ब दरजा उस के बदन में मौत वाक़ेअ़ होती है, पेहले उस के क़दम ठन्डे पड़ते हैं फिर पिन्डलियां फिर रानें । और हर उ़ज़्व में नई सख़्ती और ह़सरत पैदा होती है ह़त्ताकि गले तक नौबत पहुंचती है उस वक़्त उस की नज़र दुन्या वालों से फिर जाती है और उस पर तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाता है ।

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वालाशान है : "जब तक ग़र ग़रए मौत की कैफ़िय्यत पैदा न हो बन्दे की तौबा क़बूल की जाती है ।" (جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب ان اللّٰہ یقبل العبد ما لم یغرغر، الحدیث۳۵۳۷،ص۲۰۱۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है, नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मौत की तक्लीफ़ और उस के गले में रुकने का ज़िक्र करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "येह तल्वार की तीन सौ ज़र्बों के बराबर है ।" (موسوعۃ لابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللّٰہ، الحدیث۱۹۲،ج۵،ص۴۵۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने अपने वालिदे गिरामी से रिवायत बयान की : "जब मोमिन का कोई दरजा बाक़ी रेह जाता है जिस तक वोह अ़मल के ज़रीए़ नहीं पहुंच सकता, तो उस पर मौत सख़्त कर दी जाती है, ताकि वोह मौत की सख़्तियों और तक्लीफ़ों के बदले जन्नत में अपना दरजा ह़ासिल कर ले और जब काफ़िर की कोई नेकी हो जिस का बदला उसे न दिया गया हो, तो उस पर मौत को आसान कर दिया जाता है ताकि वोह अपनी नेकी का इ़वज़ ह़ासिल कर ले, फिर उसे जहन्नम की त़रफ़ भेज दिया जाता है ।"

किसी बुज़ुर्ग के बारे में मन्क़ूल है कि वोह अक्सर मरज़ुल मौत में मुब्तला लोगों के पास जा कर पूछते : "तुम मौत को कैसा पाते हो ?" जब वोह ख़ुद बीमार हुवे और उन का ह़ाल पूछा गया तो

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "यूं महसूस होता है कि आस्मान ज़मीन से आ मिले हैं और गोया मेरी रूह सूई के नाके से निकल रही है।"

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मोहसिने इन्सानिय्यत, मेहबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने राहत निशान है :

مَوْتُ الْفَجْأَةِ رَاحَةٌ لِلْمُؤْمِنِ وَأَسَفٌ عَلَى الْفَاجِرِ.

तर्जमा : अचानक मौत मोमिन के लिए राहत और फ़ाजिर के लिए अफ़्सोस का बाइस है।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث٢٥٠٩٦، ج٩، ص٤٦٢)

दूसरी मुसीबत

मौत के फ़रिश्ते की शक्ल देखना और दिल पर उस के ख़ौफ़ का त़ारी होना है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बारे में मरवी है, उन्हों ने मलकुल मौत ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : "क्या तुम मुझे वोह सूरत दिखा सकते हो जिस में किसी गुनहगार की रूह क़ब्ज़ करते हो ?" मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाब दिया : "आप नहीं देख सकेंगे।" फिर मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने आप को अपना चेहरा दूसरी त़रफ़ करने का कहा। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने चेहरा दूसरी त़रफ़ फेरा, फिर मुतवज्जेह हुवे तो एक सियाह फ़ाम शख़्स को देखा जिस के बाल खड़े हैं, कपड़े सियाह हैं, उस से बदबू आ रही है और उस के मुंह और नथनों से आग और धुवां निकल रहा है (येह देख कर) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर बेहोशी त़ारी हो गई, फिर इफ़ाक़ा हुवा तो मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام अपनी पेहली सूरत पर आ चुके थे। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ! गुनहगार आदमी को मौत के वक़्त तुम्हारी सूरत देख लेना ही काफ़ी है।"

मलकुल मौत और ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِمَا السَّلَام

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ग़ैरत मन्द थे, जब आप عَلَيْهِ السَّلَام बाहर तशरीफ़ ले जाते, तो दरवाज़ा बन्द कर के जाते, आप ने एक दिन दरवाज़ा बन्द किया और तशरीफ़ ले गए, आप की बीवी ने झांका, तो घर में एक शख़्स था, उन्हों ने पूछा : "इसे कौन यहां लाया है ? अगर ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) तशरीफ़ ले आए तो मुसीबत खड़ी हो जाएगी।" चुनान्चे, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाए, आप ने उसे देखा तो पूछा : "तू कौन है ?" उस ने जवाब दिया : "मैं वोह हूं जो बादशाहों से नहीं डरता और न ही दरबान मुझे रोक सकते हैं।" आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! फिर तो तू मौत का फ़रिश्ता है और ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने कम्बल ओढ़ लिया।"

(موسوعة لابن ابى الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب ملك الموت واعوانه، الحديث٢٤٤، ج٥، ص٤٦٨)

www.dawateislami.net

रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक खोपड़ी के पास से गुज़रे, तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उसे पाउं से ठोकर मारी और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मुझ से गुफ़्तगू कर। उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ रूहुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام ! मैं फुलां फुलां ज़माने का बादशाह हूं, मैं अपनी सल्त़नत में अपने सर पर ताज रखे तख़्त पर बैठा था और मेरे इर्द गिर्द मेरा लश्कर और मेरे नौकर चाकर मौजूद थे कि अचानक मौत का फ़रिश्ता मेरे सामने आया, उसे देखते ही मेरे तमाम जोड़ ढीले पड़ गए, फिर मेरी जान निकल गई, काश ! लोगों का वोह मज्मअ़ बिखरा हुवा होता और उन की उन्सिय्यत की जगह तन्हाई की वह़शत होती।"

मलकुल मौत और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِمَا السَّلَام

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बहुत ग़य्यूर थे, आप एक घर में इ़बादत किया करते थे, जब बाहर तशरीफ़ ले जाते, तो उसे बन्द कर देते, एक दिन वापस तशरीफ़ लाए तो घर के अन्दर एक आदमी को पाया तो पूछा : "तुम्हें मेरे घर में किस ने दाख़िल होने की इजाज़त दी ?" उस ने कहा : "मुझे उस ने इजाज़त दी, जो मुझ से और आप عَلَیْہِ السَّلَام से ज़्यादा इस घर का मालिक है।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने पूछा : "तू कौन है ? क्या तू फ़रिश्ता है ?" उस ने जवाब दिया : "मैं मौत का फ़रिश्ता हूं। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने पूछा : "तुम जिस सूरत में मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ करते हो वोह सूरत मुझे दिखा सकते हो ?" अ़र्ज़ किया : "जी हां ! आप عَلَیْہِ السَّلَام अपना रुख़ दूसरी त़रफ़ फेरे।" जब आप عَلَیْہِ السَّلَام दोबारा मुतवज्जेह हुवे तो देखा एक नौजवान है और आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उस के हुस्न, उ़म्दा कपड़ों और पाकीज़ा ख़ुश्बू का ज़िक्र किया, आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : **"ऐ मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ! मोमिन को मौत के वक़्त तुम्हारी सूरत ही काफ़ी है।"**

किरामन कातिबीन (यानी आमाल लिखने वाले फ़रिश्तों) को देखने का मुआ़मला भी इसी त़रह़ है, ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "हमें येह बात पहुंची है कि जिस शख़्स की रूह़ क़ब्ज़ होती है वोह उस वक़्त तक फ़ौत नहीं होता जब तक अपने आमाल लिखने वाले दोनों फ़रिश्तों को न देख ले, अगर वोह इत़ाअ़त गुज़ार हो तो वोह उस से केहते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हमारी त़रफ़ से अच्छा बदला दे, तू ने कई अच्छी मजलिसों में हमें बिठाया और कई अच्छे आमाल के वक़्त हमें ह़ाज़िरी का मौक़अ़ दिया।" और अगर फ़ाजिर हो तो केहते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हमारी त़रफ़ से अच्छा बदला न दे, तू ने हमें कई बुरी मजलिसों में बिठाया और हमें क़बीह़ कलाम सुनाया और उस वक़्त मुर्दा उन को देख रहा होता है।"

तीसरी मुसीबत

गुनाहगारों को जहन्नम में उन का मक़ाम दिखाना और मुशाहदे से पेहले उन को ख़ौफ़ दिलाना है, क्यूंकि मरने वाले की रूह़ उस वक़्त तक नहीं निकलती जब तक वोह मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से इन दोनों में से एक कलिमा न सुन ले : (1) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! तुझे जहन्नम की ख़बर दी जाती है (2) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली ! तुझे जन्नत मुबारक हो। (एह्ले अ़क़्ल का ख़ौफ़ इसी वज्ह से था)

मुर्दा अपना ठिकाना देख लेता है

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

لَنْ يَخْرُجَ أَحَدُكُمْ مِنَ الدُّنْيَا حَتّٰى يَعْلَمَ أَيْنَ مَصِيْرُهٗ، وَحَتّٰى يَرٰى مَقْعَدَهٗ مِنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ.

तर्जमा : तुम में से कोई हरगिज़ दुन्या से नहीं जाता जब तक कि उसे मालूम न हो जाए कि उस का मक़ाम कहां है और जब तक वोह जन्नत या जहन्नम में अपना ठिकाना न देख ले।

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب مقام المیت فی الجنة أم فی النار، الحدیث ٣٠٣، ج٥، ص٤٩٤، بتغیرٍ)

क़रीबुल मर्ग (यानी मरने के क़रीब शख़्स) को क्या करना चाहिए ?

क़रीबुल मर्ग (यानी मरने के क़रीब) शख़्स के लिए ख़ामोश और पुर सुकून रेहना मुस्तह़ब है और उस की ज़बान पर कलिमए शहादत जारी हो और येह भी मुस्तह़ब है कि दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में हुस्ने ज़न और उस से अपनी बख़्शिश की उम्मीद रखे।

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "मय्यित के लिए तीन बातों में बेहतरी की तवक़्क़ोअ़ जानो : (1) जब उस की पेशानी पर पसीना आ जाए (2) आंखों से आंसू जारी हों और (3) होंट ख़ुश्क हो जाएं। पस येह रेह़मते इलाही के नुज़ूल की अ़लामत है।" (کنزالعمال، کتاب الموت، الباب الثانی، الفصل الاول، الحدیث ٤٢١٧١، ج١٥، ص٢٣٩، بدون: ویست شفتاه)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है :

لَقِّنُوْا مَوْتَاكُمْ قَوْلَ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ.

तर्जमा : अपने फ़ौत होने वालों को कलिमा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की तल्क़ीन करो।

(صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب تلقین الموت .....الخ، الحدیث ٢١٢٣، ص٨٢١)

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं :

www.dawateislami.net

فَإِنَّهَا تَهْدِمُ مَا قَبْلَهَا مِنَ الْخَطَايَا.

तर्जमा : बेशक येह (कलिमए त़य्यिबा) मा क़ब्ल गुनाहों को मिटा देता है।

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، الحدیث۲،ج۵، ص۳۰۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : "मौत का फ़रिश्ता एक आदमी के पास आया जो मर रहा था, उस ने उस के दिल में देखा तो उस में कुछ न पाया उस के जबड़ों को खोला तो ज़बान के कनारे को तालू से मिला हुवा देखा और केह रहा था "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" तो इस कलिमए त़य्यिबा की बदौलत उस की बख़्शिश हो गई।" (موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، الحدیث۹،ج۵،ص۳۰۴)

तल्क़ीन करने में नर्मी की राह इख़्तियार करना मुस्तह़ब है कि शायद कमज़ोरी की वज्ह से ज़बान से पढ़ना मुश्किल होता है अगर वोह इस पर इसरार करेगा तो इस बात का डर है कि क़रीबुल मर्ग शख़्स कलिमा को ना पसन्द समझे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ज़न रखना मुस्तह़ब है।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : (**अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِیْ بِیْ فَلْیَظُنَّ بِیْ خَیْرًا. "**तर्जमा :** बन्दा मुझे अपने गुमान के मुत़ाबिक़ पाता है पस उसे मेरे बारे में अच्छा गुमान रखना चाहिए।"

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب حسن الظن باللّٰہ، الحدیث۸۳،ج۱،ص۹۴)

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب حسن الظن باللّٰہ، الحدیث۶۳۳،ج۲،ص۱۵)

मौत के वक़्त मोहलत नहीं दी जाएगी

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "एक बादशाह ने कहीं जाने के लिए सुवारी तय्यार की, उस ने पेहनने के लिए कपड़े मंगवाए लेकिन वोह उसे पसन्द न आए, दूसरे कपड़े मंगवाए वोह भी पसन्द न आए, कई बार ऐसा करने के बाद उस ने अपने पसन्दीदा कपड़े पेहने, इसी त़रह़ उस ने सुवारी मंगवाई वोह भी पसन्द न आई यहां तक कि उस के पास मुख़्तलिफ़ सुवारियां लाई गईं, तो वोह सब से अच्छी सुवारी पर सुवार हुवा, इतने में इब्लीस आया, उस ने उस की नाक में फूंक मारी, तो वोह तकब्बुर से भर गया फिर लश्कर को साथ ले कर चल पड़ा और वोह तकब्बुर की वज्ह से लोगों की त़रफ़ नहीं देख रहा था। इसी दौरान एक शख़्स आया जिस के कपड़े फटे पुराने थे, उस ने सलाम किया तो बादशाह ने जवाब न दिया। उस ने बादशाह की सुवारी की लगाम पकड़ ली। बादशाह ने कहा : लगाम छोड़ दो, तुम ने बड़ी गुस्ताख़ी की है। वोह केहने लगा : मुझे तुझ से एक काम है। उस ने कहा : मेरे उतरने तक सब्र कर। उस शख़्स ने कहा : नहीं अभी। फिर उस ने लगाम को अच्छी त़रह़ दबाया। बादशाह ने कहा : बोल ! क्या काम है ? उस ने कहा : राज़ की बात है। बादशाह ने अपना सर झुका कर उस के क़रीब किया तो उस ने सरगोशी करते हुवे कहा : मैं मौत का फ़रिश्ता हूं। (येह सुन कर) बादशाह का रंग बदल गया और ज़बान लड़ खड़ाने लगी

और उसे केहने लगा : मुझे इतनी मोहलत दो कि मैं घर जा कर अपने काम मुकम्मल कर लूं और घरवालों को अल वदाअ़ केह लूं। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब तुझे अपने मालो अस्बाब और घरवालों को देखना कभी नसीब न होगा, फिर उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली और वोह लकड़ी की त़रह़ गिर पड़ा, फिर उसी ह़ालत में वोह फ़रिश्ता एक बन्दए मोमिन से मिला, उसे सलाम कहा, उस ने सलाम का जवाब दिया। फ़रिश्ते ने कहा : मुझे तुम से एक काम है। उस ने कहा : बताइए ! फ़रिश्ते ने सरगोशी की और कहा : मैं मौत का फ़रिश्ता हूं। उस आदमी ने कहा : ख़ुश आमदीद व सद मरह़बा ! मुझे एक अ़र्से से आप का इन्तिज़ार था, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे रूए ज़मीन पर किसी ग़ाइब की मुलाक़ात आप की मुलाक़ात से ज़्यादा पसन्द नहीं। फ़रिश्ते ने उस से कहा : आप जिस काम के लिए घर से निकले हैं, उसे पूरा कीजिए। उस ने कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात से ज़्यादा पसन्द और उस से बढ़ कर मुझे कोई ह़ाजत नहीं। फ़रिश्ते ने कहा : आप जिस ह़ाल में चाहेंगे मैं उसी त़रह़ आप की रूह़ निकालूंगा। उस ने पूछा : क्या येह आप के इख़्तियार में है ? फ़रिश्ते ने जवाब दिया : हां ! मुझे येही हुक्म है। उस शख़्स ने कहा : मुझे वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ने दो और ह़ालते सजदा में मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर लेना चुनान्चे, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ालते सजदा में उस की रूह़ क़ब्ज़ की।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं : "बनी इसराईल में से एक शख़्स ने माल जम्अ़ किया। जब उस की मौत का वक़्त आया तो बेटों से केहने लगा : मुझे मेरे मुख़्तलिफ़ अमवाल दिखाओ, उस के पास बहुत से घोड़े, ऊंट और ग़ुलाम लाए गए। जब उस ने उन की त़रफ़ देखा, तो ह़सरत से रोने लगा। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे रोते हुवे देखा तो पूछा : क्यूं रो रहे हो ? उस ज़ात की क़सम जिस ने तुझे येह सब कुछ दिया है ! जब तक मैं तेरी रूह़ और बदन को एक दूसरे से जुदा न कर दूं यहां से नहीं जाऊंगा। उस ने कहा : मुझे कुछ मोहलत दीजिए कि मैं इस माल को तक़्सीम कर दूं। फ़रिश्ते ने कहा : अब तुझे मोहलत नहीं, तू ने येह काम अपनी मौत के आने से पेहले क्यूं न किया ? चुनान्चे, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली।"

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم का विसाले मुबारक

जानना चाहिए ! रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात ज़िन्दगी और विसाल के एतिबार से बेहतरीन नमूना है। जब मेह़बूबे रब्बुल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का भी विसाले ज़ाहिरी हो गया, तो फिर किसी और को दुन्या में हमेशा रेहने की त़म्अ़ करने की कोई गुन्जाइश नहीं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

﴿۱﴾ اَفَائِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ۝

(پ۱۷، الانبیآء: ۳٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या अगर तुम इन्तिक़ाल फ़रमाओ तो येह हमेशा रहेंगे।

﴿۲﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ

(پ ٤، ال عمران : ۱۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हर जान को मौत चखनी है।

www.dawateislami.net

आक़ाए दो जहां عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ाहिरी दुन्या में आख़िरी घड़ियां

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "हम उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुजरए मुबारका में नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे, उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से रुख़्सत होने वाले थे। हमें देख कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों से आंसू जारी हो गए फिर फ़रमाया : "ख़ुश आमदीद ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ज़िन्दा रखे, तुम्हें पनाह दे, तुम्हारी मदद फ़रमाए, मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करता हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तुम्हारी भलाई का त़लबगार हूं, मैं उस की त़रफ़ से तुम्हें वाज़ेह़ डर सुनाने वाला हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शह्रों और बन्दों के सिलसिले में तकब्बुर न करना, मौत क़रीब आ चुकी है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिद्रतुल मुन्तहा, जन्नतुल मावा और भरे हुवे जाम की त़रफ़ लौटना है, मेरी त़रफ़ से अपने आप को और मेरे बाद तुम्हारे दीन में दाख़िल होने वालों को सलाम केहना।" (البحر الزخار بمسند البزار، مسند عبد اللّٰہ بن مسعود، الحدیث۲۰۲۸،ج۵،ص۳۹۴تا۳۹۶)

एक रिवायत में है कि नबियों के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मेह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने विसाले ज़ाहिरी के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाया : مَنْ لِاُمَّتِیْ مِنْ بَعْدِیْ "**तर्जमा :** मेरे बाद मेरी उम्मत के लिए कौन होगा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि मेरे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश ख़बरी सुना दो कि मैं उन्हें उन की उम्मत के बारे में रुस्वा नहीं करूंगा और उन्हें येह भी ख़ुश ख़बरी दे दो, कि जब लोगों को (क़ब्रों से) उठाया जाएगा, तो सब से पेहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाएंगे, जब लोग जम्अ़ होंगे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही उन के सरदार होंगे और कोई उम्मत जन्नत में दाख़िल न होगी यहां तक कि आप की उम्मत उस में दाख़िल हो जाए।" येह सुन कर प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْاٰنَ قَدْ قَرَّتْ عَیْنِیْ "**तर्जमा :** अब मेरी आंखों को ठन्डक ह़ासिल हुई।"

(المعجم الکبیر، الحدیث۲۶۷۶،ج۳،ص۶۳، مفہوماً بدون الآن قَرَّتْ عَیْنِیْ)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे घर में, मेरी बारी के दिन, मेरे सीने और गर्दन के दरमियान विसाल फ़रमाया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के वक़्त मेरे और आप के लुआ़ब को जम्अ़ फ़रमा दिया, मेरे पास मेरे भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ह़ाज़िर हुवे, उन के हाथ में मिस्वाक थी, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिस्वाक की त़रफ़ देखने लगे, तो मैं समझ गई कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे पसन्द फ़रमाया है। मैं ने अ़र्ज़ की : मैं येह मिस्वाक उन से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिए ले लूं ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरे अन्वर के इशारे से फ़रमाया : "हां ! मैं ने उन से वोह मिस्वाक ली, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने दहने मुबारक में दाख़िल फ़रमाया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सख़्त मह़सूस हुई।" मैं ने पूछा : "नर्म कर दूं ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरे अन्वर से इशारा

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "हां ।" मैं ने उसे (दांतों से) नर्म कर दिया । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने पानी का एक प्याला था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस में अपना दस्ते मुबारक दाख़िल करते और फ़रमाते : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ बेशक मौत की सख़्तियां हैं ।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दस्ते मुबारक ऊपर उठाए और फ़रमाया : اَلرَّفِيْقُ الْاَعْلٰى، اَلرَّفِيْقُ الْاَعْلٰى "यानी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही आला दोस्त है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही आला दोस्त है ।" तो मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें इख़्तियार नहीं फ़रमाएंगे ।" (صحيح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ﷺ ووفاته، الحديث ٤٤٤٩، ص ٣٦٥)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! मुझ से सुवाल करो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मौत क़रीब आ गई ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "यक़ीनन क़रीब आ गई और बहुत क़रीब आ गई ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां जो नेमतें हैं वोह आप को मुबारक हों, काश ! हमें अपने अन्जाम का इ़ल्म हो जाता ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हमारा अन्जाम बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ, सिद्रतुल मुन्तहा, जन्नतुल मावा, फ़िरदौसे आला भरपूर प्याले, रफ़ीक़े आला, लुत़्फ़ उठाने और ख़ुश गवार ज़िन्दगी की त़रफ़ है । उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या नबिय्यल्लाह ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कौन ग़ुस्ल दे ?" रसूले करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे एह्ले बैत में क़रीबी शख़्स ।" फिर हम ने अ़र्ज़ की : "आप को किन कपड़ों में कफ़न दें ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाबन फ़रमाया : "मेरे इन्ही कपड़ों, यमनी चादर और मिस्री जुब्बे में"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा क्या होगा ?" (रावी फ़रमाते हैं) येह सुन कर हम सब रो पड़े, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी रोने लग गए, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बस करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए और तुम्हें अपने नबी की त़रफ़ से अच्छा बदला अ़त़ा फ़रमाए, जब तुम मेरे ग़ुस्ल व कफ़न से फ़ारिग़ हो जाओ, तो मुझे मेरे इसी हुजरे में मेरी क़ब्र के कनारे चारपाई पर रख देना और कुछ देर के लिए बाहर निकल जाना, क्यूंकि सब से पेहले मेरा रब मुझ पर दुरूद भेजेगा । (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने रेह़मत निशान है) هُوَ الَّذِیْ یُصَلِّیْ عَلَیْكُمْ وَمَلٰٓىٕكَتُهٗ (پ ٢٢، الاحزاب: ٤٣) "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फ़रिश्ते ।" फिर वोह अपने फ़रिश्तों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ने की इजाज़त देगा, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में सब से पेहले ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मेरे हुजरे में दाख़िल होंगे और मुझ पर दुरूद भेजेंगे फिर ह़ज़रते मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام फिर ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام फिर ह़ज़रते

www.dawateislami.net

मलकुल मौत इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام बहुत बड़े बड़े लश्करों के साथ आएंगे, फिर तमाम फ़रिश्ते आएंगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन सब पर रेह़मत फ़रमाए। (आमीन)

फिर तुम सब लोग क़ाफ़िला दर क़ाफ़िला और गिरोह दर गिरोह आना और मुझ पर दुरूदो सलाम पेश करना और चीख़ो पुकार कर के और रो धो कर मुझे अज़िय्यत न पहुंचाना और तुम में से पेहले इमाम और मेरे एह्ले बैत में से ज़्यादा क़रीब वाले मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ें, फिर औ़रतों का गिरोह, फिर बच्चों का गिरोह। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़ब्र शरीफ़ में कौन उतारेगा ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे एह्ले बैत में से क़रीबी लोग, उन के साथ बेशुमार फ़रिश्ते होंगे जो तुम्हें नज़र नहीं आते, लेकिन वोह तुम्हें देखते हैं, उठो और मेरी त़रफ़ से बाद वालों को मेरा सलाम पहुंचा देना।"

(المعجم الكبير، الحديث٢٦٧٦،ج٣، ص٦٣)

(البحر الزخار بمسند البزار،مسند عبد الله بن مسعود، الحديث٢٠٢٨،ج٥،ص٣٩٤تا٣٩٦)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "जिस दिन नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा, तो सुब्ह़ के वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिज़ाज शरीफ़ में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने कुछ सुकून देखा इस लिए सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ख़ुशी ख़ुशी अपने घरों और काम काज की त़रफ़ रवाना हो गए और नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास सिर्फ़ औ़रतें रेह गईं। हम इसी ह़ालत में थे, गोया कि इस से पेहले ऐसी उम्मीद और ख़ुशी न देखी थी, तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे पास से चली जाओ, येह फ़रिश्ता मुझ से अन्दर आने की इजाज़त मांग रहा है।" चुनान्चे, ह़ुजरए मुबारका से मेरे इ़लावा सब औ़रतें चली गईं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरे अक़्दस मेरी गोद में था, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठ कर बैठ गए, तो मैं एक कोने में हो गई, फ़रिश्ते ने त़वील गुफ़्तगू की, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे बुलाया और अपना सरे अक़्दस मेरी गोद में रख दिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दीगर औ़रतों से फ़रमाया : "तुम भी अन्दर आ जाओ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या येह आहट जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام की न थी ?" नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां, ऐ आ़इशा ! येह मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام थे, जिन्हों ने मेरे पास आ कर अ़र्ज़ की : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास भेजा है और हुक्म फ़रमाया है कि मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास इजाज़त के बिग़ैर न आऊं, अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त नहीं, तो मैं चला जाता हूं और अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इजाज़त देते हैं, तो अन्दर आ जाता हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त के बिग़ैर आप की रूह़ मुबारक क़ब्ज़ न करूं, पस आप क्या फ़रमाते हैं ?" तो मैं ने कहा : "ठहर जाओ यहां तक कि ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام मेरे पास आ जाएं, येह उन के आने का वक़्त है।"

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "हम ने एक ऐसी बात का सामना किया, जिस के बारे में हमारे पास जवाब या राए न थी पस हम ख़ामोश हो गए गोया हम एक बहुत बड़े सदमे की वज्ह से बे ह़िसो ह़रकत हो गए, इस अ़ज़ीम सदमे की हैबत की वज्ह से एह्ले बैत में से कोई शख़्स भी बोल न सकता था।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : उसी वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे, मुझे उन के आने का इ़ल्म हो गया और बाक़ी लोग बाहर चले गए, वोह दाख़िल हुवे और अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को सलाम केहता है और आप की मिज़ाज पुर्सी फ़रमाता है, ह़ालांकि वोह आप का ह़ाल हम से बेहतर जानता है, मगर वोह आप को मज़ीद करामत व शराफ़त और तमाम मख़्लूक़ से ज़्यादा अ़ज़मतो बुज़ुर्गी अ़त़ा फ़रमाना चाहता है और वोह चाहता है कि येह (मिज़ाज पुर्सी) आप की उम्मत के लिए सुन्नत बन जाए।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे दर्द मह़सूस हो रहा है।" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ख़ुश ख़बरी हो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को उस मक़ाम तक पहुंचाना चाहता है जो उस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिए तय्यार किया है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ जिब्राईल ! मलकुल मौत मुझ से इजाज़त चाहता है" फिर आप ने पूरी बात बताई ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! बेशक आप का रब عَزَّوَجَلَّ आप का मुश्ताक़ है, क्या उस ने आप को नहीं बताया कि वोह क्या करना चाहता है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मलकुल मौत ने आज तक किसी से इजाज़त नहीं मांगी और न आइन्दा किसी से इजाज़त मांगेगा, लेकिन आप का रब عَزَّوَجَلَّ आप के शरफ़ को पूरा करने वाला है और आप का मुश्ताक़ है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मलकुल मौत के आने तक आप यहां से न जाएं।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने औ़रतों को अन्दर आने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई।

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ फ़ातिमा ! मेरे क़रीब आओ।" वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ झुकीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के कान में सरगोशी की, उन्हों ने सर उठाया तो आंखों से आंसू जारी थे और उन में बात करने की सकत न थी। फिर फ़रमाया : "अपना सर मेरे क़रीब करो।" वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ झुक गईं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरगोशी फ़रमाई और उन्हों ने सर उठाया तो मुस्कुरा रही थीं, लेकिन कलाम करने की सकत न थी। हमें उन की ह़ालत से तअ़ज्जुब हुवा। इस के बाद जब हम ने उन से पूछा तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं आज इन्तिक़ाल कर जाऊंगा तो मैं रो पड़ी, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं ने दुआ़ की है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे घरवालों में सब से पेहले तुझे मेरे साथ मिलाए लिहाज़ा मैं हंस पड़ी। उम्मुल मोमिनीन फ़रमाती हैं : "(इसी दौरान) ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام आ गए और सलाम पेश कर के इजाज़त त़लब की। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई। फ़रिश्ते ने अ़र्ज़ की : ऐ मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप क्या हुक्म फ़रमाते हैं ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अभी मुझे

www.dawateislami.net

मेरे रब तक पहुंचा दो।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं, आज ही मिला दूंगा, आप का रब عَزَّوَجَلَّ तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुश्ताक़ है और जिस क़द्रो मन्ज़िलत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वापस बुला रहा है, इस त़रह़ किसी को नहीं बुलाया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इलावा किसी और के पास बिग़ैर इजाज़त के जाने से मन्अ़ नहीं फ़रमाया लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वक़्ते विसाल आ चुका है।" येह केह कर वोह चले गए।

उम्मुल मोमिनीन (ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) फ़रमाती हैं : "फिर ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ **तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप पर सलामती हो। येह मेरा ज़मीन पर उतरना आख़िरी बार है, वह़ी भी लपेट दी गई और ज़मीन भी और ज़मीन पर मुझे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिवा कोई काम न था, मेरी ग़रज़ सिर्फ़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी थी, अब मैं अपनी जगह पर रहूंगा।" (उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं) उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! घर में किसी को बोलने की ताब न थी, और बाहर से मर्दों को भी कोई न बुलाता था, इस की वज्ह येह थी कि ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام का कलाम इस बड़े दरजे का था, हम सब सेहमे हुवे और ख़ौफ़ज़दा थे। उम्मुल मोमिनीन फ़रमाती हैं : फिर मैं उठ कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सरे अन्वर अपनी छाती के साथ लगाया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सीनए मुबारक को थाम लिया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर बेहोशी त़ारी हो गई ह़त्ताकि ग़ालिब आ गई। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पेशानी से इस क़दर पसीना टपकता था कि मैं ने कभी किसी इन्सान को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़्यादा ख़ुश्बूदार नहीं देखा, मैं वोह पसीना पोंछती थी और उस से ज़्यादा ख़ुश्बूदार चीज़ नहीं देखी। जब आप को इफ़ाक़ा होता तो मैं अ़र्ज़ करती : "मेरे मां बाप, मेरी जान, घरवाले, मालो अस्बाब सब आप पर क़ुरबान हों, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पेशानी पर इस क़दर पसीना क्यूं है ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! मोमिन की जान पसीने के ज़रीए़ निकलती है और काफ़िर की जान गधे की जान की त़रह़ उस के नथनों से निकलती है।" उस वक़्त हम सब औ़रतें डर गईं और अपने घर किसी को भेजा, सब से पेहले मेरे भाई तशरीफ़ लाए लेकिन वोह आप से मुलाक़ात न कर सके। उन्हें मेरे वालिदे माजिद ने मेरे पास भेजा था, और किसी के आने से पेहले ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब को रोक रखा था क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप का मुआ़मला ह़ज़रते जिब्राईल और ह़ज़रते मीकाईल عَلَيْهِمَا السَّلَام के सिपुर्द कर रखा था और जब आप पर बेहोशी त़ारी हुई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : بَلِ الرَّفِيْقُ الْاَعْلٰى "**तर्जमा :** रफ़ीक़े आला के पास जाना है।"

(المعجم الكبير، الحديث٢٦٧٦،ج٣،ص٥٩تا٦٤، بتغيرٍ/الحديث١٠٤١٧،ج١٠،ص١٨٩)

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث٢٦٤٠٧،ج١٠،ص١٤٣)

www.dawateislami.net

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बरोज़ सोमवार (यानी पीर) चाश्त और दोपहर के दरमियान विसाल फ़रमाया।"

صَلَوَاتُ اللّٰہِ عَلَیْہِ وَعَلٰی آلِہٖ وَأَصْحَابِہٖ وَالتَّابِعِیْنَ أَجْمَعِیْنَ.

तर्जमा : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तमाम आल, अस्ह़ाब और ताबेईन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रेह़मतें हों।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल

जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते विसाल आया, तो ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तशरीफ़ लाईं और आप ने बत़ौरे मिसाल येह शेर पढ़ा :

لَعَمْرُكَ مَا يُغْنِي الثَّرَاءُ عَنِ الْفَتٰى إِذَا حَشْرَجَتْ يَوْماً وَضَاقَ بِهَا الصَّدْرُ

"**तर्जमा :** आप की उ़म्र की क़सम ! दौलत नौजवान के काम नहीं आती जब मौत का दिन आ जाए और सीने में दम घुट रहा हो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चेहरे से कपड़ा हटाया और फ़रमाया बात इस त़रह़ नहीं, बल्कि यूं कहो :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ0 (پ ٢٦، قٓ: ١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ येह है जिस से तू भागता था।

(फिर फ़रमाया) मेरे इन दो कपड़ों को धो कर इन्हीं में मुझे कफ़न दे देना क्यूंकि फ़ौतशुदा के मुक़ाबले में ज़िन्दा आदमी नए कपड़ों का ज़्यादा ह़क़दार है। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल होने लगा और ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने येह शेर पढ़ा :

وَأَبْيَضُ يُسْتَسْقَى الْغَمَامُ بِوَجْهِهٖ رَبِيْعُ الْيَتَامٰى عِصْمَةٌ لِّلْأَرَامِلِ

तर्जमा : सफ़ेद रंग वाले जिन के चेहरे के सबब बादल बरसते हैं, आप यतीमों की बहार और बेवाओं का सहारा हैं।

तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान है।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "क्या हम किसी त़बीब को न बुला लाएं जो आप का ह़ाल देखे ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "त़बीब ने मुझे देख लिया और फ़रमाया है कि मैं जो चाहता हूं करता हूं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़यादत के लिए तशरीफ़ लाए और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! हमें वसिय्यत फ़रमाएं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर दुन्या के ख़ज़ाने खोल देगा लेकिन तुम उस से ज़रूरत के मुत़ाबिक़ लेना और याद रखो ! जिस ने सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ी वोह **अल्लाह**

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़हद शिकनी न करना वरना वोह तुम्हें मुंह के बल जहन्नम में डाल देगा।"

जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़बीअ़त ज़्यादा बोझल हो गई। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने चाहा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमा दें तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना ख़लीफ़ा नामज़द फ़रमाया। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक सख़्त मिज़ाज शख़्स को हमारा ख़लीफ़ा नामज़द किया है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने रब عَزَّوَجَلَّ को क्या जवाब देंगे ?" उन्हों ने फ़रमाया : "मैं अ़र्ज़ करूंगा कि मैं ने तेरी मख़्लूक़ पर, मख़्लूक़ में सब से बेहतर इन्सान को अपना नाइब मुक़र्रर किया है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन दोनों से राज़ी हो, आमीन।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जिस सुब्ह़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ह़म्ला किया गया, मैं वहीं खड़ा था, हमारे दरमियान सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सफ़ों के दरमियान ख़ला देखते तो फ़रमाते : अपनी सफ़ें दुरुस्त कर लो। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा कि सफ़ें बिल्कुल सीधी हो चुकी हैं, नमाज़ियों के दरमियान बिल्कुल ख़ला नहीं रहा और सब के कन्धे मिले हुवे हैं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आगे बढ़े और तक्बीरे तह़रीमा कही।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते करीमा थी कि सुब्ह़ की नमाज़ में अक्सर **सूरए यूसुफ़** और **सूरए नह़्ल** में से क़िराअत फ़रमाते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पेहली रक्अ़त में कुछ ज़्यादा तिलावत फ़रमाते ताकि बाद में आने वाले भी जमाअ़त में शामिल हो सकें, अभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ शुरूअ़ ही की थी कि एक मजूसी ग़ुलाम (अबू लुअ लुअ) जो पेहली सफ़ में छुप कर खड़ा था उस ने मौक़अ़ पाते ही एक दो धारी तेज़ ख़न्जर से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ह़म्ला कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आवाज़ सुनाई दी कि मुझे किसी कुत्ते ने क़त्ल कर दिया या काट लिया है वोह मजूसी ग़ुलाम ह़म्ला करने के बाद पीछे पलटा और भागते हुवे तेरह नमाज़ियों पर ह़म्ला किया जिन में से सात शहीद हो गए, एक नमाज़ी ने आगे बढ़ कर उस पर कपड़ा डाला और उसे पकड़ लिया, जब उस बदबख़्त ग़ुलाम ने देखा कि अब मैं पकड़ा जा चुका हूं, तो अपने ही ख़न्जर से ख़ुदकुशी कर ली।

मरवी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को फ़रमाया : "उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में चले जाओ और उन से अ़र्ज़ करो : "उ़मर ने आप को सलाम भेजा है, अमीरुल मोमिनीन का लफ़्ज़ न केहना क्यूंकि आज मैं मुसलमानों का अमीर नहीं हूं। और उन से अ़र्ज़ करो : उ़मर इस बात की इजाज़त चाहता है कि उसे उस के दोस्तों के साथ दफ़्न किया जाए और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ुर्ब में जगह अ़त़ा फ़रमाई जाए।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में हाज़िर हुवे और सलाम अ़र्ज़ किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रो रही थीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को सलाम अ़र्ज़ कर रहे हैं और इस बात की इजाज़त चाहते हैं कि उन्हें उन के दोस्तों के क़ुर्ब में दफ़्न किया जाए।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने येह सुन कर इरशाद फ़रमाया : "येह जगह तो मैं ने अपने लिए रखी थी लेकिन अब मैं येह जगह उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ईसार करती हूं, उन्हें जा कर येह ख़ुश ख़बरी सुना दो।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इजाज़त ले कर वापस तशरीफ़ लाए।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बताया गया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आ गए हैं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे बिठा दो।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सहारा दे कर बिठा दिया गया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "ऐ मेरे बेटे ! क्या ख़बर लाए हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इजाज़त अ़ता फ़रमा दी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुश हो जाएं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पसन्दीदा चीज़ अ़ता कर दी गई। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे इस चीज़ से ज़्यादा और किसी चीज़ की फ़िक्र न थी, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरी पसन्दीदा चीज़ मिल गई है।"

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जब मेरी रूह़ परवाज़ कर जाए तो मुझे उठा कर सरकारे अबद क़रार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अक़्दस पर ले जाना, फिर बारगाहे नबुव्वत में सलाम अ़र्ज़ करना और ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अ़र्ज़ करना : "उ़मर बिन ख़त्ताब अपने दोस्तों के साथ आराम की इजाज़त चाहता है, अगर वोह इजाज़त दे दें तो मुझे वहां दफ़्न कर देना और अगर इजाज़त न मिले तो मुझे आ़म मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्ना देना।"

फिर उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तशरीफ़ लाईं और औ़रतों ने इन को छुपा रखा था। जब हम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को देखा तो उठ खड़े हुवे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अन्दर दाख़िल हुईं और कुछ देर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास रोती रहीं फिर मर्दों ने इजाज़त चाही तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अन्दर चली गईं, हम ने अन्दर से उन के रोने की आवाज़ सुनी। आप के अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! वसिय्यत फ़रमाइए और किसी को अपना नाइब मुक़र्रर कीजिए।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं उन ह़ज़रात से ज़्यादा किसी को इस अम्र का ह़क़दार नहीं समझता, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन से रिज़ामन्दी की ह़ालत में इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान ज़ुन्नूरैन, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर, ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना साद और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के नाम लिए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी तुम्हारे साथ मौजूद रहेंगे लेकिन ख़िलाफ़त से इन का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होगा।"

www.dawateislami.net

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मेह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुझ से ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : لَيْبِكِ الْإِسْلَامُ عَلٰى مَوْتِ عُمَرَ "तर्जमा : ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मौत पर पूरे आ़लमे इस्लाम को रोना चाहिए।" (المعجم الكبير، الحديث ٦١، ج١، ص٦٧-٦٨)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का विसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की शहादत के मुतअ़ल्लिक़ मश्हूर ह़दीस है, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "मैं अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में सलाम पेश करने ह़ाज़िर हुवा, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मह़सूर थे, मैं दाख़िल हुवा, तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ऐ भाई ! आप का आना मुबारक हो ! बेशक मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को (ख़्वाब में) कमरे के इस रौशनदान से देखा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : ऐ उ़स्मान ! इन लोगों ने तुम्हारा घेराव किया हुवा है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "जी हां।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "इन्हों ने तुम्हें प्यासा रखा हुवा है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक डोल मेरे क़रीब किया जिस में पानी था, मैं ने ख़ूब सेर हो कर पानी पिया यहां तक कि अपने सीने और कन्धों के दरमियान उस की ठन्डक मह़सूस की। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : "अगर तुम चाहो तो इन लोगों के ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद की जाए और अगर चाहो तो हमारे पास आ कर इफ़्तारी करो।" मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास इफ़्तार करने को पसन्द किया।" चुनान्चे, उसी रोज़ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को शहीद कर दिया गया।

जिन लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़ख़्मी होने पर ख़ून में लत पत देखा था ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से पूछा : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़ून में लत पत होते हुवे क्या फ़रमाया था ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "हम ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को येह फ़रमाते सुना : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को इत्तिफ़ाक़ व इत्तिह़ाद अ़त़ा फ़रमा।" ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه येह दुआ़ करते, कि **अल्लाह** मुसलमानों को इत्तिफ़ाक़ न दे तो मुसलमानों में क़ियामत तक इत्तिफ़ाक़ न होता।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का विसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़न्ज़ला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिस सुब्ह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ज़ख़्मी हुवे उस रात आप लेटे हुवे थे कि इब्ने नब्बाह़ ने तुलूए़ फ़ज्र के वक़्त आ कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को नमाज़ की इत्तिलाअ़ दी, आप लेटे रहे और त़बीअ़त पर कुछ बोझ था, वोह दोबारा तशरीफ़ लाए तो उसी त़रह़ त़बीअ़त बोझल थी। वोह तीसरी मरतबा ह़ाज़िर हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उठ कर चल पड़े और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه येह अश्आ़र पढ़ रहे थे :

www.dawateislami.net

أُشْدُدْ حَيَازِيْمَكَ لِلْمَوْتِ فَإِنَّ الْمَوْتَ لَاقِيْكُمَا
وَلَاتَجْزَعْ مِنَ الْمَوْتِ إِذَا دَخَلَ بِوَادِيْكُمَا

तर्जमा : (1)...मौत के लिए तय्यारी करो क्यूंकि मौत तुम्हारे पास ज़रूर आएगी।

(2)...और मौत से ख़ौफ़ न खाओ जब वोह तुम्हारी वादी में उतरे।

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ छोटे दरवाज़े तक पहुंचे, तो इब्ने मुल्जिम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ह़म्ला कर दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की साह़िबज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलसूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बाहर तशरीफ़ लाईं और वोह केह रही थीं : "नमाज़े फ़ज्र के वक़्त मेरे साथ क्या हुवा, मेरे ख़ावन्द (ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) भी सुब्ह़ की नमाज़ में शहीद हुवे और मेरे वालिदे माजिद को भी नमाज़े फ़ज्र के वक़्त शहीद किया गया।"

एक क़ुरैशी का बयान है : "जब इब्ने मुल्जिम ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم पर ह़म्ला किया तो आप ने फ़रमाया : "रब्बे काबा की क़सम ! मैं कामयाब हो गया।"

क़रीबुल मर्ग (मरने के क़रीब) लोगों के अक़्वाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते विसाल

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल होने लगा, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे बिठाओ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बिठाया गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र व तस्बीह़ बयान करने लगे, फिर रोते हुवे फ़रमाया : "ऐ मुआ़विया ! अब बुढ़ापे और कमज़ोरी के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र याद आया, उस वक़्त क्या था जब जवानी की शाख़ तरो ताज़ा थी।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस क़दर रोए कि आप की आवाज़ बुलन्द हो गई और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ करने लगे : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! इस गुनाहगार सख़्त दिल बूढ़े पर रेह़्म फ़रमा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी लग़्ज़िश से दरगुज़र फ़रमा, मेरी ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा और अपने ह़िल्म व बुर्दबारी से इस बन्दे को अपनी त़रफ़ लौटा जो तेरे इ़लावा किसी से उम्मीद नहीं रखता और न ही तेरे सिवा किसी पर भरोसा रखता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते विसाल

जब ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल का वक़्त हुवा तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं पेहले तुझ से डरा करता था और आज तुझ से उम्मीद रखता हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं दुन्या और लम्बी उ़म्र को इस लिए पसन्द नहीं करता था कि इस में मेरे लिए नहरें जारी हों और दरख़्त लगे हों बल्कि मैं तो इसे इस लिए पसन्द करता था ताकि गर्मियों के मौसम में प्यास पर सब्र करूं, ज़माने की तकालीफ़ बरदाश्त करूं और मजालिसे ज़िक्र में उ़लमा के सामने दो ज़ानू बैठूं।"

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى का वक़्ते विसाल

हज़रते ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى से ब वक़्ते विसाल पूछा गया : "आप की क्या ख़्वाहिश है ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "मैं चाहता हूं कि मरने से एक लम्हा पेहले मुझे अपनी मौत का इल्म हो जाए।"

क़ब्र की हालत और क़ब्रों के पास बुज़ुर्गों के अक़्वाल

हज़रते सय्यिदुना ज़ह्हाक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं, एक शख़्स ने पूछा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! लोगों में से सब से बड़ा ज़ाहिद कौन है ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स क़ब्र और गलने सड़ने को न भूले, दुन्या की ज़ीनत को छोड़ दे, फ़ना होने वाली पर बाक़ी रेहने वाली को तरजीह दे और आने वाले कल को अपनी ज़िन्दगी में शुमार न करे नीज़ अपने आप को क़ब्र वालों में शुमार करे।"

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی الزهد وقصر الأمل، الحدیث ١٠٥٦٥،ج٧،ص٣٥٥-٣٥٦،من أهل القبور:بدله:فی الموتی)

हज़रते सय्यिदुना हसन बिन सालेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब क़ब्रिस्तान को देखते तो फ़रमाते : "तुम्हारा ज़ाहिर कितना अच्छा है ! लेकिन मुसीबत तो तुम्हारे अन्दर है।"

हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक औरत के पास से गुज़रे जो एक क़ब्र पर रो रो कर केह रही थी :

عُدِمَتِ الْحَيَاةُ وَلَا نِلْتَهَا ... إِذَا أَنْتَ فِي الْقَبْرِ قَدْ أَلْحُدُوكَ

فَكَيْفَ أَذُوقُ طَعْمَ الْكِرَا ... وَأَنْتَ يَمُنَاكَ قَدْ وَسَّدُوكَ

तर्जमा : (1) तेरी ज़िन्दगी ख़त्म हो गई और तू उसे दोबारा न पा सकेगा जब लोग तुझे क़ब्र में दफ़्न कर देंगे।

(2) मुझे नींद का मज़ा कैसे आए, जब कि लोगों ने तुझे दाएं पेहलू पर लिटा दिया है।

फिर उस ने कहा : "ऐ मेरे बेटे ! काश ! मुझे मालूम होता कि कीड़ों ने तेरा कौन सा रुख़्सार पेहले खाया ?" येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने चीख़ मारी और बेहोश हो कर गिर पड़े।

औलाद की मौत के वक़्त के आदाब

जब तुम्हारा बेटा या क़रीबी रिश्तेदार फ़ौत हो तो मौत को एक मन्ज़िल जानो और येह ख़याल करो कि वोह शख़्स सफ़र में तुम से आगे निकल गया और तुम्हें उस के पीछे ज़रूर जाना है या वोह तुझ से पेहले वतन लौट गया और तुम्हें उस के बाद जाना है क्यूंकि जब तुम्हें मालूम होगा कि अन क़रीब तुम ने भी उस से मिलना है तो तुम पर मौत गिरां न होगी।

ज़ियारते कुबूर

कभी कभी क़ब्रों की ज़ियारत के लिए जाना मुस्तहब है, पेहले हमें ज़ियारते कुबूर से मन्अ़ किया गया था मगर बाद में इस की इजाज़त दे दी गई। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ब्रों की ज़ियारत करो क्यूंकि येह आख़िरत की याद दिलाती हैं, मुर्दों को ग़ुस्ल दो कि रूह़ से ख़ाली जिस्म की दुरुस्तगी और तदबीर बहुत बड़ी नसीह़त है।" मज़ीद फ़रमाया : "नमाज़े जनाज़ा पढ़ा करो, शायद येह तुम्हें ग़मज़दा कर दे क्यूंकि ग़मगीन शख़्स रेह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ के साए में होगा।" (شعب الایمان للبیھقی، باب فی الصلاۃ .....الخ، فصل فی زیارۃ القبور، الحدیث ۹۲۹۱، ج۷، ص۱۵)

नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

زُوْرُوْا اَمْوَاتَكُمْ وَسَلِّمُوْا عَلَيْهِمْ وَصَلُّوْا عَلَيْهِمْ فَاِنَّ لَكُمْ فِيْهَا عِبْرَةٌ.

तर्जमा : अपने फ़ौतशुदा लोगों की (क़ब्रों की) ज़ियारत करो, उन को सलाम पेश करो, उन के लिए दुआ़ए रेह़मत करो, क्यूंकि इस में तुम्हारे लिए इ़ब्रत है।

(فردوس الاخبار للدیلمی، باب الزای، الحدیث ۳۱۶۰، ج۱، ص۴۲۳)

मौत की ह़क़ीक़त

जानना चाहिए ! मौत की ह़क़ीक़त **रूह़ का जिस्म से जुदा होना है न कि रूह़ का बिल्कुल ख़त्म हो जाना।** जैसा कि आयाते मुबारका, अह़ादीसे त़य्यिबा और मोतबर ज़राएअ़ इस पर दलालत करते हैं। पस जहां तक आयाते मुबारका का मुआ़मला है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ۝ (پ۴، ال عمران:۱۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं, रोज़ी पाते हैं।

येह आयत शुहदाए किराम के बारे में नाज़िल हुई है।

क्या मुर्दे ज़िन्दों का कलाम सुनते हैं ?

इसी त़रह़ बदबख़्तों के बारे में ह़दीसे मुबारका दलालत करती है कि जब ग़ज़वए बद्र के मौक़अ़ पर कुफ़्फ़ार के बड़े बड़े सरदार हलाक हो गए तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को पुकार कर पूछा : "ऐ फ़ुलां ! ऐ फ़ुलां ! मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ के वादे को सच्चा पाया, क्या तुम ने भी अपने रब عَزَّوَجَلَّ का वादा सच्चा पाया ?" अ़र्ज़ किया गया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप इन मुर्दों को पुकार रहे हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! **येह लोग इस गुफ़्तगू को तुम से ज़्यादा सुनते हैं लेकिन जवाब नहीं दे सकते।**" (صحیح مسلم، کتاب الجنۃ، باب عرض المقعد المیت .....الخ، الحدیث ۷۲۲۲/۷۲۲۳، ص۱۱۷۶)

www.dawateislami.net

मलाएकए रेहमत का मय्यित को तसल्ली देना

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब मोमिन की रूह परवाज़ करती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रेह़मत के फ़रिश्ते उस से इस त़रह़ मुलाक़ात करते हैं जिस त़रह़ दुन्या में ख़ुश ख़बरी देने वाले से मुलाक़ात की जाती है। और केहते हैं : "अपने भाई को मोहलत दो यहां तक कि येह आराम पाए, क्यूंकि येह सख़्त तक्लीफ़ में था।" फिर वोह उस से मुख़्तलिफ़ सुवालात करते हैं : "फ़ुलां ने क्या किया ? फ़ुलां औ़रत ने क्या किया ? क्या फ़ुलां औ़रत की शादी हो गई ?" जब वोह उस से पेहले मरने वाले किसी शख़्स के बारे में पूछते हैं तो वोह उन्हें बताता है कि "वोह शख़्स तो मुझ से पेहले मर गया था।" पस वोह اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ ۝ (پ۲،البقرۃ،۱۵۶) **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना।" पढ़ते हैं और केहते हैं : "उसे अपने ठिकाने दोज़ख़ में पहुंचा दिया गया।"

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملاقاۃ الارواح، الحدیث ۲۷۴،ج۵،ص۴۸۱۔۴۸۲)

क़ब्र का मय्यित से कलाम करना

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र उस से केहती है : "ऐ इन्सान ! तेरी हलाकत हो, तुझे मेरे बारे में किस ने धोके में डाला ? क्या तुझे मालूम न था, कि मैं फ़ितनों का घर, अन्धेरी कोठड़ी, तन्हाई और वह़शत की जगह और कीड़ों मकोड़ों का ठिकाना हूं। तुझे मेरे बारे में किस चीज़ ने धोके में डाला कि तू मेरे ऊपर अकड़ अकड़ कर चलता (यानी एक क़दम आगे करता और दूसरा पीछे), अगर वोह नेक हो तो उस की त़रफ़ से कोई जवाब देने वाला क़ब्र को जवाब देता है और केहता है : "क्या तुझे मालूम नहीं कि येह शख़्स नेकी का हुक्म देता और बुराई से मन्अ़ करता था।" तो क़ब्र केहती है : "अगर येह बात है तो मैं इस पर सर सब्ज़ो शादाब हो जाती हूं और इस का जिस्म नूर में बदल जाएगा और रूह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ परवाज़ कर जाएगी।"

(المعجم الکبیر، الحدیث ۹۴۲،ج۲۲،ص۳۷۷۔المعجم الاوسط، الحدیث ۸۶۱۳،ج۶، ص۲۳۲)

अ़ज़ाबे क़ब्र और मुन्कर नकीर के सुवालात

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जनाज़े के लिए गए। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपना सरे अन्वर झुका कर उस की क़ब्र

के पास तशरीफ़ फ़रमा हो गए फिर तीन बार फ़रमाया : اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ "**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं अ़ज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह चाहता हूं।"

मोमिन का सफ़रे आख़िरत

फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **बन्दए मोमिन** जब मरने के क़रीब होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रिश्तों को भेजता है जिन के चेहरे सूरज की मानिन्द होते हैं, उन के पास उस की ख़ुश्बू और कफ़न होता है, वोह उस के सामने ता ह़द्दे निगाह बैठ जाते हैं, जब उस की रूह़ निकलती है तो ज़मीनो आस्मान के दरमियान वाले फ़रिश्ते और तमाम आस्मानी फ़रिश्ते उस के लिए दुआ़ए रेह़मत करते हैं, उस के लिए आस्मान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और हर दरवाज़ा तमन्ना करता है कि उस की रूह़ उस के अन्दर दाख़िल हो। जब उस की रूह़ ऊपर लाई जाती है तो कहा जाता है : "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरा फ़ुलां बन्दा ह़ाज़िर है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : इस को वापस ले जाओ ! और वोह करामात दिखाओ जो मैं ने इस के लिए तय्यार कर रखी हैं, क्यूंकि मेरा इस से वादा है :

مِنْھَا خَلَقْنٰکُمْ وَفِیْھَا نُعِیْدُکُمْ وَمِنْھَا نُخْرِجُکُمْ تَارَۃً اُخْرٰی ۝ (پ۱۶، طٰہٰ: ۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे।

मुर्दा जूतों की आवाज़ सुनता है ?

जब लोग वापस लौटते हैं तो मुर्दा **उन के जूतों की आवाज़ सुनता है** यहां तक कि उस से पूछा जाता है : یَا ھٰذَا، مَنْ رَبُّکَ؟ وَمَا دِیْنُکَ؟ وَمَنْ نَبِیُّکَ؟ "**तर्जमा :** ऐ फ़ुलां ! तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरा नबी कौन है ?" वोह जवाब देता है : "मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है, मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी ह़ज़रते (सय्यिदुना) मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हैं।" वोह दोनों फ़रिश्ते उसे बहुत ज़्यादा झिड़कते हैं और येह आख़िरी आज़माइश है जिस में मय्यित को मुब्तला किया जाता है। पस जब वोह येह जवाबात देता है तो एक मुनादी निदा देता है : "तू ने सच कहा और येही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान का माना है :

یُثَبِّتُ اللّٰہُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِی الْحَیٰوۃِ الدُّنْیَا وَفِی الْاٰخِرَۃِ ۚ (پ۱۳، ابراھیم: ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।

फिर उस के पास एक आने वाला आता है जो निहायत ख़ूब सूरत चेहरे वाला, उ़म्दा ख़ुश्बू और ह़सीन लिबास में मल्बूस होता है, वोह केहता है : "तुझे तेरे रब की रेह़मत और बाग़ात की ख़ुश ख़बरी हो, जिन में दाइमी नेमतें हैं।" क़ब्र वाला केहता है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे भी भलाई की बिशारत दे, तू कौन है ?" वोह केहता है : "मैं तेरा नेक अ़मल हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं जानता था कि तू नेकी में जल्दी करने वाला और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में देर करने वाला

www.dawateislami.net

था, **अल्लाह** तआ़ला तुझे जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए।" फिर एक मुनादी निदा देता है : "इस के लिए जन्नत का बिछोना बिछाओ और जन्नत की त़रफ़ से दरवाज़ा खोल दो।" पस इस के लिए जन्नती बिछोना बिछाया जाता और जन्नत की त़रफ़ दरवाज़ा खोला जाता है। वोह अ़र्ज़ करता है : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जल्द अज़ जल्द क़ियामत क़ाइम फ़रमा, ताकि मैं अपने एह्लो माल की त़रफ़ लौट जाऊं।"

काफ़िर का सफ़रे आख़िरत

काफ़िर जब मरने के क़रीब होता है और दुन्या से उस का रिश्ता ख़त्म होने लगता है, तो उस के पास निहायत सख़्त करें (यानी त़ाक़तवर) फ़रिश्ते आते हैं, उन के पास आग का लिबास और गन्धक की क़मीस होती है, वोह उसे घेर लेते हैं। जब उस की रूह़ निकलती है तो ज़मीनो आस्मान के दरमियान वाले फ़रिश्ते और तमाम आस्मानी फ़रिश्ते उस पर लानत भेजते हैं और उस पर आस्मानों के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं। हर दरवाज़ा ना पसन्द करता है कि वोह उस में से गुज़रे। जब उस की रूह़ को ऊपर ले जाया जाता है, तो उसे फेंक दिया जाता है और कहा जाता है : "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरा फ़ुलां बन्दा है इसे न आस्मान क़बूल करता है न ज़मीन।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "इस को वापस ले जाओ और मैं ने इस के लिए जो शर (यानी बुरा अ़ज़ाब) तय्यार कर रखा है वोह इसे दिखाओ क्यूंकि मेरा इस से वादा है :

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ۝ (پ ١٦، طٰهٰ : ٥٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे।

जब लोग वापस पलटते हैं, तो **मुर्दा उन के जूतों की आवाज़ सुनता है** यहां तक कि उस से पूछा जाता है : يَا هٰذَا، مَنْ رَبُّكَ؟ وَمَا دِيْنُكَ؟ وَمَنْ نَبِيُّكَ؟ "**तर्जमा :** ऐ फ़ुलां ! तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरा नबी कौन है ?" वोह जवाब देता है : "मैं नहीं जानता।" पस कहा जाता है : "तू ने जानने की कोशिश ही नहीं की थी।"

फिर उस के पास एक निहायत बद सूरत, बदबूदार, बद लिबास आता है, वोह केहता है : "तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी और दर्दनाक दाइमी अ़ज़ाब की ख़बर हो।" काफ़िर मुर्दा केहता है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे बुरी ख़बर सुनाए, तू कौन है ?" वोह जवाब देता है : "**मैं तेरा बुरा अ़मल हूं, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू उस की ना फ़रमानी में जल्दी करता और उस की फ़रमां बरदारी में कोताही करता था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे बुरा बदला दे।" फिर उस पर एक बेहरा, अन्धा और गूंगा फ़रिश्ता मुक़र्रर किया जाता है, उस के पास लोहे का एक गुर्ज़ होता है, अगर जिन्नो इन्स उसे मिल कर उठाना चाहें तो न उठा सकें, अगर उसे पहाड़ पर मारा जाए तो वोह मिट्टी बन जाए। वोह उसे एक ज़र्ब लगाता है तो वोह (काफ़िर मुर्दा) मिट्टी हो जाता है फिर उस में रूह़ लौट आती है, फिर वोह उस की

आंखों के दरमियान एक ज़र्ब लगाता है तो **जिन्नो इन्स के इलावा ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ उसे सुनती है**। मज़ीद फ़रमाया : फिर एक निदा देने वाला निदा देता है : "इस के लिए आग की तख़्तियां बिछाओ और जहन्नम की त़रफ़ एक दरवाज़ा खोल दो।" पस इस के लिए आग की दो तख़्तियां बिछाई जाती हैं और जहन्नम की त़रफ़ एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب السنة، باب مسئلة فی القبر، الحدیث٤٧٥٣،ص١٥٧٢، مفهومًا)

(المستدرك، کتاب الایمان، باب مجیء ملك الموت عند قبض الروح.....الخ، الحدیث١١٤،ج١،ص١٩٨تا٢٠٠)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "मोमिन अपनी क़ब्र में सर सब्ज़ बाग़ में होता है और उस की क़ब्र सत्तर गज़ कुशादा और मुनव्वर हो जाती है यहां तक कि चौदहवीं के चांद की त़रह़ हो जाती है और क्या तुम जानते हो कि येह आयत किस के बारे में नाज़िल हुई ? فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا (پ١٦،طه:١٢٤) **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो बेशक उस के लिए तंग ज़िन्दगानी है।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतर जानता है।"** तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "काफ़िर को क़ब्र में यूं अ़ज़ाब होता है कि उस पर निनानवे "तनीन" मुसल्लत़ कर दिए जाते हैं, क्या तुम जानते हो "तनीन" क्या है ? वोह निनानवे सांप हैं, हर सांप के सत्तर सर (यानी फन) हैं, वोह क़ियामत तक उस के जिस्म को काटते, चाटते और फंकारते रहेंगे।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز،فصل فی احوال المیت فی قبره،الحدیث٣١١٢،ج٥،ص٥٠،تسع وتسعون بدله سبعون)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं, ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

إِنَّ لِلْقَبْرِ ضَغْطَةً وَلَوْ سَلِمَ أَوْ نَجَا مِنْهَا أَحَدٌ لَنَجَا مِنْهَا سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ.

तर्जमा : बेशक क़ब्र दबाती है और अगर कोई उस से मह़फ़ूज़ रेहता या नजात पाता तो साद बिन मुआ़ज़ (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) नजात पाते।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السیدة عائشة، الحدیث٢٤٧١٧،ج٩،ص٣٩٢)

जब नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को मुन्कर नकीर के बारे में बताया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या उस वक़्त मेरी अ़क़्ल यूंही होगी ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : إِذَنْ أَكْفِيْهُمَا **"तर्जमा :** फिर तो मैं उन को काफ़ी होऊंगा।"

(التمهید لابن عبد البر، هاشم بن عروة بن الزبیربن العوام، تحت الحدیث٦٧١،ج٩،ص٢٣٣، مفهومًا)

पस आप का येह फ़रमाने आ़लीशान इस पर दलालत करता है कि मौत से अ़क़्ल ज़ाइल नहीं होती जैसा कि पेहले बयान हो चुका है।

सूर के फूंके जाने और मा बाद के हालात

गुज़श्ता बयान से मुन्दरिजए ज़ैल बातें मालूम होती हैं : मौत की हौलनाकी व सख़्ती की शिद्दत, ख़ौफ़े आ़क़िबत का ख़त़रा, क़ब्र का अन्धेरा और उस के कीड़ों को बरदाश्त करना, मुन्कर नकीर और उन के सुवालात, फिर अगर वोह बदबख़्त हो तो क़ब्र का दर्दनाक अ़ज़ाब। और फ़ौत होने वाले के सामने उन तमाम से बड़े ख़त़रात येह हैं : सूर फूंकना, क़ियामत के दिन दोबारा उठना, जब्बार व क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होना, हर छोटे बड़े गुनाह की पूछगछ, मीज़ाने अ़द्ल क़ाइम करना, ताकि बन्दा अपने आमाल का वज़्न देख ले, बारीक और तेज़ धार पुल सिरात़ पर से गुज़रना और फ़ैसला होने के बाद एलान का इन्तिज़ार करना या तो ख़ुश बख़्ती ह़ासिल होगी या बदबख़्ती मुक़द्दर बनेगी।

इन तमाम अह़वाल और हौलनाक उमूर की मारिफ़त, उन पर क़त़ई तौ़र पर ईमान लाना और तस्दीक़ करना और इस के बाद गेहरा ग़ौरो फ़िक्र करना ज़रूरी है ताकि तुम्हारे दिल उन की तय्यारी पर उभारने वाले आमाल की त़रफ़ माइल हों।

अक्सर लोग ऐसे हैं जिन के दिलों में आख़िरत पर मज़बूत़ ईमान नहीं और न ही उन के दिलों के अन्दर ईमान ने मक़ाम पकड़ा है और इस बात की दलील येह है कि वोह गर्मियों की गर्मी और सर्दियों की सर्दी से बचने के लिए ख़ुसूसी तौ़र पर तय्यारी करते हैं लेकिन जहन्नम की गर्मी और सर्दी से बचने का इन्तिज़ाम करने में सुस्ती करते हैं। जहां तक सूर फूंकने का तअ़ल्लुक़ है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

وَنُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِی الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِیْهِ اُخْرٰی فَاِذَا هُمْ قِیَامٌ یَّنْظُرُوْنَ ۝ (پ ٢٤، الزمر: ٦٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सूर फूंका जाएगा तो बेहोश हो जाएंगे जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में मगर जिसे **अल्लाह** चाहे फिर वोह दोबारा फूंका जाएगा जभी वोह देखते हुवे खड़े हो जाएंगे।

صَعِقَ का माना है : "वोह मर जाएंगे, मगर जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे और वोह ह़ज़रते जिब्राईल, ह़ज़रते मीकाईल, ह़ज़रते इसराफ़ील और ह़ज़रते मलकुल मौत इ़ज़राईल (عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) हैं।" फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मलकुल मौत को ह़ज़रते जिब्राईल फिर ह़ज़रते मीकाईल फिर ह़ज़रते इसराफ़ील (عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की रूह़ क़ब्ज़ करने का हुक्म देगा फिर मलकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام को मरने का हुक्म होगा तो वोह भी मर जाएंगे।"

ثُمَّ نُفِخَ فِیْهِ اُخْرٰی فَاِذَا هُمْ قِیَامٌ یَّنْظُرُوْنَ ۝ (پ ٢٤، الزمر: ٦٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर वोह दोबारा फूंका जाएगा जभी वोह देखते हुवे खड़े हो जाएंगे।

फिर उन्हें नंगे पाउं, नंगे जिस्म मैदाने मह़शर की त़रफ़ लाया जाएगा। हर एक अपने पसीने में शराबोर होगा और हर एक का पसीना उस के गुनाहों के मुत़ाबिक़ होगा। पस हर शख़्स से गुठली के सूराख़ और खजूर के रेशे जैसी मामूली चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ भी सुवाल होगा। फिर मीज़ान पर उस की नेकियों और बुराइयों का वज़्न किया जाएगा और उस वक़्त मद्दे मुक़ाबिल से होने वाली ज़्यादतियों का

www.dawateislami.net

मुत़ालबा किया जाएगा। फिर उन्हें पुल सिरात़ की त़रफ़ ले जाया जाएगा, जिस त़रह़ अ़क़ीदे के बयान में गुज़र चुका है और उस वक़्त उन से पूछगछ होगी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ۝ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ ۝ (پ ۲۳، الصّٰفّٰت: ۲۳، ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन सब को हांको राहे दोज़ख़ की त़रफ़। और उन्हें ठहराओ उन से पूछना है।

शफ़ाअ़त का बयान

जानना चाहिए ! जब मोमिनीन के कुछ गिरोहों पर अ़ज़ाब साबित कर दिया जाएगा तो **अल्लाह** سبحانہ وتعالٰی उन के ह़क़ में ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और औलिया व उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा और हर मुक़र्रबे बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी।

हौज़े कौसर का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि एक मरतबा नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नींद का एक झोंका सा आया, फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुस्कुराते हुवे सरे अन्वर उठाया। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप किस वज्ह से मुस्कुराए ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझ पर अभी एक आयत नाज़िल हुई है।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की तिलावत फ़रमाई : اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝ (پ ۳۰، الکوثر: ۱) फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो ? कौसर क्या है ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **और उस का रसूल** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **बेहतर जानता है।**" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह जन्नत में एक नह्र है जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वादा फ़रमाया है, इस पर बहुत बरकत है, इस पर एक ह़ौज़ है जिस पर मेरी उम्मत आएगी, इस के बरतनों की तादाद आस्मान के सितारों जितनी है।" (صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب حجۃ من قال .....الخ، الحدیث ۸۹۴، ص ۷۴۱)

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी उस पर जाना नसीब फ़रमा। (आमीन)

जहन्नम और इस की सख़्तियां और अ़ज़ाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इस से मह़फ़ूज़ रखे। आमीन

याद रखिए ! सब लोगों को जहन्नम पर से गुज़रना पड़ेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने नसीह़त निशान है :

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝ (پ ۱۶، مریم: ۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो। तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है।

www.dawateislami.net

और येह भी याद रखो ! नजात का हुसूल तक़्वा पर है । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

ثُمَّ نُنَجِّی الَّذِیْنَ اتَّقَوْا (پ ١٦، مریم: ٧٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम डर वालों को बचा लेंगे ।

याद रखिए ! इस पर से गुज़रना तो यक़ीनी है लेकिन तक़्वा में शक है जिस पर नजात का दारो मदार है । ऐ मिस्कीन ! तू अपने दिल में इस मक़ाम के हौलनाक मन्ज़र का शुऊ़र बेदार कर, जब कि लोग बड़ी बड़ी हलाकतों का सामना करने की वज्ह से शदीद मसाइब में मुब्तला होंगे कि अचानक मुजरिमों को शाख़ दर शाख़ अन्धेरे घेर लेंगे और लिपट जाने वाली आग उन पर छा जाएगी, वोह उस का जोश और घुटी हुई आवाज़ें सुनेंगे जो उस के शिद्दते ग़ैज़ो ग़ज़ब पर दलालत कर रही होंगी, उस वक़्त मुजरिमों को अपनी हलाकत का यक़ीन हो जाएगा और वोह ज़मीन पर घुटनों के बल गिर जाएंगे ह़त्ताकि बच जाने वालों को भी बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ होगा और जहन्नम का एक फ़रिश्ता पुकारेगा : "फुलां बिन फुलां कहां है जिस ने दुन्या में लम्बी उम्मीदों की वज्ह से टाल मटोल से काम लिया और बुरे आमाल में उ़म्र को ज़ाएअ़ कर दिया ?" वोह लोहे के गुर्ज़ ले कर उस की त़रफ़ दौड़ेंगे, और उसे सख़्त अ़ज़ाब की त़रफ़ ले जाएंगे और गेहरे जहन्नम में औंधे मुंह फेंक देंगे और उस से कहेंगे : ذُقْ ۚ اِنَّکَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْکَرِیْمُ ۝ (پ ٢٥، الدخان: ٤٩) **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** चख, हां ! हां ! तू ही बड़ा इ़ज़्ज़त वाला, करम वाला है ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इस से मह़फ़ूज़ रखे । (اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

जन्नत और इस की नेमतें

जानना चाहिए ! दोज़ख़ के मुक़ाबले में ठहरने का मक़ाम जन्नत है, आख़िरत में जो शख़्स इन दो घरों में से किसी एक से दूर रहा वोह दूसरे में जाएगा । जहन्नम को याद रखो, ताकि तुम्हारे दिल में उस का ख़ौफ़ पैदा हो और जब तुम्हारे दिल में ग़लबए ख़ौफ़ और ब कसरत गुनाहों की वज्ह से मायूसी पैदा होने का डर हो, तो जन्नत को याद करो, ताकि उस की उम्मीद पैदा हो ।

आयाते मुबारका और अह़ादीसे त़य्यिबा में जन्नतियों की सिफ़ात, उन की नेमतों, अम्न, खाने पीने और फलों के बारे में जामेअ़ बयान है इस लिए इस की तफ़्सील की ज़रूरत नहीं बल्कि अह़ादीसे मुबारका तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीदार पर भी दलालत करती हैं और येह जन्नत का बुलन्द तरीन दरजा है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं, हम नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चौदहवीं रात का चांद देखा तो इरशाद फ़रमाया : "बेशक तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को इस त़रह़ देखोगे, जिस त़रह़ इस चांद को देख रहे हो, उस के देखने में कोई शक न होगा, अगर तुम से हो सके तो तुलूए़ आफ़्ताब और गुरूबे आफ़्ताब से पेहले की नमाज़ (यानी नमाज़े फ़ज्र व अ़स्र) अदा करो ।" फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

www.dawateislami.net

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا (پ ١٦ ، طه:١٣٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब को सराहते (तारीफ़ करते) हुवे उस की पाकी बोलो सूरज चमकने से पेहले और इस के डूबने से पेहले।

(صحيح البخاری، كتاب مواقيت الصلاة، باب فضل صلاة العصر، الحديث ٥٥٤،ص٤٥)

दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ

ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ (پ ١١،یونس:٢٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : भलाई वालों के लिए भलाई है और उस से भी ज़ाइद।

फिर इरशाद फ़रमाया : "जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो एक आवाज़ सुनाई देगी : "तुम्हारे लिए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां एक वादा है, वोह उसे पूरा करना चाहता है।" एह्ले जन्नत अ़र्ज़ करेंगे : "वोह कौन सा वादा है ? क्या हमारे नेकियों के पलड़े को भारी और हमारे चेहरों को सफ़ेद नहीं किया गया, हमें जन्नत में दाख़िल और जहन्नम से बचाया नहीं गया ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : "पस पर्दा उठाया जाएगा और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ियारत करेंगे और उन्हें कोई चीज़ दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ से बढ़ कर मेह़बूब न होगी।"

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب اثبات رؤية المؤمنين، الحديث ٤٤٩،ص٧٠٩،بتغيرٍ قليلٍ)

(جامع الترمذی، ابواب تفسير القرآن، باب ومن سورة يونس، الحديث ٣١٠٥،ص١٩٦٦)

दीदारे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के बारे में मुतअ़द्दद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से ह़दीस मरवी है और येह बहुत बड़ी ख़ूबी और इन्तिहा दर्जे की नेमत है और हम ने जितनी भी नेमतें तफ़्सीलन बयान की हैं, इस नेमत के मुक़ाबले में वोह सब भूल जाती हैं और जन्नती जब ज़ियारते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से मुशर्रफ़ होंगे, तो उन को इन्तिहाई मसर्रत होगी, बल्कि जन्नत की किसी लज़्ज़त को लज़्ज़ते दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ से कोई निस्बत नहीं, इस का कुछ तज़्किरा हम ने मह़ब्बत के बयान में किया है।

मुख़्तसर येह कि बन्दे को चाहिए कि जन्नत में दीदारे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी नेमत की ख़्वाहिश न करे, क्यूंकि इस के इ़लावा दीगर नेमतों में तो इन्सान के साथ चरागाहों में चरने वाले जानवर भी शरीक हैं। इस बात को समझ लो फ़ाएदा होगा।

www.dawateislami.net

इख़्तितामिया

नेक फ़ाली के तौ़र पर वुस्अ़ते रेह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ पर दलालत करने वाली अह़ादीस का बयान

ह़दीसे पाक में है : "नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (नेक) फ़ाल लेने को पसन्द फ़रमाते थे।" (صحيح مسلم، كتاب السلام، باب الطير والفأل.....الخ، الحديث ٥٨٠٢، ص١٠٧٣)

हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो रेह़मत और मग़फ़िरत की वुस्अ़त से उम्मीद करते हैं कि वोह हमारी ज़िन्दगी का इख़्तिताम बेहतर फ़रमाएगा जिस त़रह़ हम ने इस किताब को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रेह़मत व मग़फ़िरत की वुस्अ़त पर दलालत करने वाली अह़ादीसे मुबारका के बयान पर मुकम्मल किया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है :

﴿۱﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ (پ٥، النساء: ٤٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

﴿۲﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ (پ٥، النسآء: ١١٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कोई बुराई या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो अल्लाह को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा।

हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़लम की हर लग़ज़िश से मुआ़फ़ी त़लब करते हैं।

हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रेह़मत निशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की एक सौ रेह़मतें हैं, जिन में से एक रेह़मत उस ने जिन्नों, इन्सानों, जानवरों और कीड़ों मकोड़ों के दरमियान रखी। इसी के ज़रीए़ वोह एक दूसरे पर मेहरबानी और रेह़म करते हैं और निनानवे रेह़मतों को रोक रखा है, जिन के ज़रीए़ वोह क़ियामत के दिन अपने बन्दों पर रेह़म फ़रमाएगा।" (صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب فى سعة رحمة الله تعالى، الحديث ٦٩٧٤، ص١١٥٥)

मरवी है : "जब क़ियामत का दिन होगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़र्श के नीचे से एक किताब निकालेगा जिस में लिखा होगा : إِنَّ رَحْمَتِيْ سَبَقَتْ عَلٰى غَضَبِيْ وَأَنَا أَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ "तर्जमा : बेशक मेरी रेह़मत, मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब आ गई और मैं सब से बढ़ कर रेह़म करने वाला हूं।"

(تفسير الطبرى، سورة الانعام، تحت الآية ٢، الحديث ١٣١٠٦، ج٥، ص١٥٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत हम मुसलमानों के लिए अपनी शान के मुत़ाबिक़ मुस्कुराते हुवे तजल्ली फ़रमाएगा और इरशाद फ़रमाएगा :

أَبْشِرُوْا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِيْنَ! فَإِنَّهٗ لَيْسَ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا وَقَدْ جَعَلْتُ فِي النَّارِ مَكَانَهٗ يَهُوْدِيًّا أَوْ نَصْرَانِيًّا.

तर्जमा : ऐ मुसलमानों के गिरोह ! तुम्हें ख़ुश ख़बरी हो, मैं ने तुम में से हर एक की जगह जहन्नम में किसी यहूदी या ईसाई को भेज दिया है।

(المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابى موسى الاشعرى، الحديث ١٩٦٧٤، ج٧، ص١٥٥-١٥٦، بتغيرٍ قليلٍ)

www.dawateislami.net

नबिय्ये रेह़मत, शफ़ीए उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है :

يُشَفِّعُ اللّٰهُ تَعَالٰى يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ ذُرِّيَّتِهٖ فِىْ مِائَةِ أَلْفِ أَلْفٍ وَعَشَرَةِ الآفِ أَلْفٍ.

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में से ग्यारह करोड़ अफ़राद के ह़क़ में उन की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा।

(المعجم الاوسط، الحديث ٦٨٤٠، ج٥، ص١٣٨)

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत इरशाद फ़रमाएगा : أَخْرِجُوْا مِنَ النَّارِ مَنْ ذَكَرَنِىْ يَوْماً أَوْخَافَنِىْ فِىْ مَقَامٍ "**तर्जमा :** उस शख़्स को भी दोज़ख़ से निकाल दो जिस ने किसी दिन मेरा ज़िक्र किया हो या किसी जगह मुझ से डरा हो।"

(جامع الترمذی، ابواب صفة جهنم، باب ماجاء ان للنار نفسين..... الخ، الحديث ٢٥٩٤، ص١٩١٣)

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तमाम जहन्नमी और मुसलमानों में से जिन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहेगा, जहन्नम में जम्अ़ हो जाएंगे तो कुफ़्फ़ार मुसलमानों से पूछेंगे : "क्या तुम मुसलमान नहीं थे ?" वोह जवाब देंगे : "हां ! क्यूं नहीं।" तो वोह कहेंगे : "तुम्हें तुम्हारे इस्लाम ने कोई फ़ाएदा न दिया कि तुम भी हमारे साथ जहन्नम में हो।" वोह जवाब देंगे : "हम ने गुनाहों का इर्तिकाब किया, इसी वज्ह से हमारा मुवाख़ज़ा हुवा।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की येह बात सुनेगा तो मुसलमानों को जहन्नम से निकालने का हुक्म फ़रमा देगा।" पस उन को जहन्नम से निकाल दिया जाएगा। जब कुफ़्फ़ार येह देखेंगे तो कहेंगे : "काश ! हम मुसलमान होते और हमें भी उन की त़रह़ जहन्नम से निकाल दिया जाता। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका पढ़ी : رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝ (پ ١٤، الحجر:٢) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बहुत आरज़ूएं करेंगे काफ़िर काश ! मुसलमान होते।" (تفسير الطبری، سورة الحجر، تحت الآية ٢/١، الحديث ٢١٠٠٥، ج٧، ص٤٨٩)

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रेह़मत निशान है :

لَلّٰهُ أَرْحَمُ بِعَبْدِهِ الْمُؤْمِنِ مِنَ الْوَالِدَةِ الشَّفِيْقَةِ بِوَلَدِهَا.

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने मोमिन बन्दे पर अपने बच्चे पर शफ़्क़त करने वाली मां से भी ज़्यादा रह़ीम है।

(صحيح البخاری، كتاب الادب، باب رحمة الولد .....الخ، الحديث ٥٩٩٩، ص٥٠٨، مختصراً)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं : "बरोज़े क़ियामत जिस शख़्स की नेकियां उस की बुराइयों से ज़्यादा होंगी वोह बिला ह़िसाबो किताब जन्नत में दाख़िल हो जाएगा और जिस की नेकियां और बुराइयां बराबर बराबर होंगी, उस से आसान ह़िसाब लिया जाएगा फिर जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा और नबिय्ये रेह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त उन लोगों के लिए होगी जिन्हों ने दुन्या में अपने को हलाक किया और उन की पीठ पर बोझ है।"

मरवी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : "क़ारून ने तुम से मदद मांगी तो तुम ने उस की मदद क्यूं न की, मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! अगर वोह मुझ से मदद मांगता तो मैं उस की मदद भी करता और उसे मुआ़फ़ भी कर देता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सनाबही عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मरज़ुल मौत में थे, मैं रो पड़ा, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "सब्र करो, रोते क्यूं हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी हुई हर ह़दीस, जिस में तुम्हारे लिए भलाई हो, तुम्हारे सामने बयान कर दी है सिवाए एक ह़दीस के, आज मैं वोह भी तुम्हें बयान किए देता हूं क्यूंकि मेरा नफ़्स घेर लिया गया है।

मैं ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : "जिस ने येह गवाही दी कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई माबूद नहीं और ह़ज़रते (सय्यिदुना) मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दोज़ख़ को ह़राम फ़रमा देगा।"

(صحیح المسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علی ان من مات .....الخ، الحدیث ١٤٢، ص٦٨٦)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : बरोज़े क़ियामत तमाम मख़्लूक़ के सामने मेरे एक उम्मती को लाया जाएगा जिस के निनानवे दफ़्तर गुनाहों के होंगे और हर दफ़्तर की वुस्अ़त ता ह़द्दे निगाह होगी, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस्तिफ़्सार फ़रमाएगा : "क्या तुम उस में से किसी चीज़ का इन्कार करते हो ? क्या नामए आमाल लिखने वाले फ़रिश्तों ने तुझ पर कोई ज़ुल्म किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! नहीं।" फिर इरशाद फ़रमाएगा : "क्या तेरे पास कोई उ़ज़्र है ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "नहीं, या रब عَزَّوَجَلَّ।" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "लेकिन तुम्हारी एक नेकी हमारे पास मह़फ़ूज़ है, आज के दिन तुम पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा।" पस एक काग़ज़ निकाला जाएगा जिस में اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ तह़रीर होगा।" वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! इन बड़े बड़े रजिस्टरों के मुक़ाबले में इस पर्चे की क्या हैसिय्यत है ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "तुझ पर ज़ुल्म नहीं होगा।" हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे नेमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : "पस येह रजिस्टर एक पलड़े में और वोह पर्चा दूसरे पलड़े में रखा जाएगा।" मज़ीद फ़रमाया : "पस रजिस्टरों वाला पलड़ा हल्का और पर्चे वाला पलड़ा भारी हो जाएगा क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से बढ़ कर कोई चीज़ नहीं।"

(جامع الترمذی، ابواب الایمان، باب ماجاء فیمن یموت وھو یشھد أن لا الہ الا اللّٰہ، الحدیث ٢٦٣٩، ص١٩١٨)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَالشُّکْرُ لِلّٰہِ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی حَبِیْبِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلَّم.

www.dawateislami.net

مآخذ و مراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
1	قرآن مجید	کلام باری تعالی	ضیاء القرآن پبلی کیشنزلاهور
2	کنز الایمان فی ترجمة القرآن	اعلیحضرت امام احمد رضاخان علیه رحمة الرحمٰن متوفّٰی ١٣٤٠ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنزلاهور
3	تفسیر قرطبی	امام محمد بن احمد القرطبی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٦٧١ھ	دارالفکر بیروت
4	صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل البخاری رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٢٥٦ھ	دار السلام ریاض
5	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٢٦١ھ	دار السلام ریاض
6	جامع الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ الترمذی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٢٧٩ھ	دارالسلام ریاض
7	سنن ابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان ابن اشعث رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٢٧٥ھ	دارالسلام ریاض
8	سنن نسائی	امام احمد بن شعیب النسائی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٣٠٣ھ	دارالسلام ریاض
9	سنن ابن ماجة	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجه رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٢٧٣ھ	دارالسلام ریاض
10	صحیح ابن خزیمه	الامام ابوبکرمحمد بن اسحاق بن خزیمه رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٣١١ھ	المکتب الاسلامی بیروت
11	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	الحافظ محمد بن حبان رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٣٥٤ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
12	کتاب المراسیل لابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان ابن اشعث رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٢٧٥ھ	ملتان پاکستان
13	مسند ابی یعلی	ابو یعلی احمد الموصلی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٣٠٧ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
14	مسند للامام احمد بن حنبل	امام احمد بن حنبل رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٢٤١ھ	دارالفکربیروت
15	الزهد للامام احمد بن حنبل	امام احمد بن حنبل رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٢٤١ھ	دارالغدجدید
16	فردوس الاخبارللدیلمی	الحافظ شهرویه بن شهر دار بن شهرویه الد یلمی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٥٠٩ھ	دار الفکر بیروت
17	البحرالزخار المعروف بمسند البزار	امام ابو بکر احمد بن عمرو البزاررحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٢٩٢ھ	مکتبة العلوم والحکم مدینه منوره
18	المعجم الکبیر	الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٣٦٠ھ	داراحیاء التراث بیروت
19	مسند الشهاب القضاعی	امام شهاب القضاعی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٤٥٤ھ	المکتبة الالفیة بیروت
20	موسوعه لامام ابن ابی الدنیا	الحافظ ابی بکر عبدالله بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٢٨١ھ	دارالکتب العلمیة
21	مکارم الاخلاق للخرائطی	امامابو بکر محمد بن جعفربن محمد خرائطی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٣٢٧ھ	المکتبة الشاملةدارالفکر دمشق
22	مکارم اخلاق	الحافظ ابی بکر عبدالله بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ٢٨١ھ	دارالکتب العلمیة
23	أخلاق النبی علیه السلام	عبد الله بن محمد بن جعفر الشیخ الاصبهانی رحمة الله تعالی علیه	المکتبه الشامله دمشق

24	مكارم اخلاق للطبرانی	الحافظ سليمان بن احمد الطبرانی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٣٦٠ھ	دارالكتب العلمية
25	المعجم الاوسط	الحافظ سليمان بن احمد الطبرانی رحمة الله تعالی عليهمتوفّٰی ٣٦٠ھ	دار الكتب العلمية بيروت
26	المعجم الصغرللطبرانی	الحافظ سليمان بن احمد الطبرانی رحمة الله تعالی عليهمتوفّٰی ٣٦٠ھ	دار الكتب العلمية بيروت
27	كتاب الدعاء	الحافظ سليمان بن احمد الطبرانی رحمة الله تعالی عليهمتوفّٰی ٣٦٠ھ	دار الكتب العلمية بيروت
28	سنن الدارمی	امام عبدالله بن عبدالرحمن رحمة الله تعالی عليهمتوفّٰی ٢٥٥ھ	باب المدينه كراچی
29	الشمائل المحمديه للترمذی	امام محمد بن عيسیٰ الترمذی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٢٧٩ھ	داراحياء التراث بيروت
30	المستدرك علی الصحيحين	امام محمد بن عبد الله الحاكم رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٤٠٥ھ	دار المعرفة بيروت
31	دلائل النبوة للبيهقی	الحافظ احمد بن الحسين البيهقی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٤٥٨ھ	دار الكتب العلمية بيروت
32	السنن الكبرٰی للنسائی	امام احمد بن شعيب النسائی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٣٠٣ھ	دار الكتب العلمية بيروت
33	السنن الكبرٰی للبيهقی	الامام احمد بن الحسين البيهقی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٤٥٨ھ	دارالكتب العلمية بيروت
34	شعب الايمان	الامام احمد بن الحسين البيهقی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٤٥٨ھ	دار الكتب العلمية بيروت
35	الزهد الكبير للبيهقی	الامام احمد بن الحسين البيهقی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٤٥٨ھ	موسؤالكتب الثقافية
36	مؤطا امام مالك	امام مالك بن انس رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ١٧٩ھ	دار المعرفة بيروت
37	المصنف لابن ابی شيبة	امام عبدالله بن محمد بن ابی شيبة رحمة الله تعالی عليه ٢٣٥ھ	دار الفكر بيروت
38	مصنف عبدالرزاق	امام عبد الرزاق الصنعانی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٢١١ھ	دار الكتب العلمية بيروت
39	التاريخ البغداد	الامام ابو بكر احمد بن علی الخطيب البغدادی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٤٦٣ھ	دار الكتب العلمية بيروت
40	الكامل فی ضعفاء الرجال	امام ابو احمد عبد الله بن عدی الجرجانی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٣٦٥ھ	دار الكتب العلمية بيروت
41	حلية الاولياء	الامام الحافظ ابو نعيم الاصفهانی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٤٣٠ھ	دار الكتب العلمية بيروت
42	الاستيعاب فی معرفة الاصحاب	ابو عمر يوسف عبدالله بن محمد بن عبدالبر القرطبیرحمةالله تعالی عليه متوفّٰی ٤٦٣ھ	دار الكتب العلمية بيروت
43	معرفة علوم الحديث للحاكم	امام محمد بن عبد الله الحاكم رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٤٠٥ھ	دار الكتب العلمية بيروت
44	سيراعلام النبلاء	امام شمس الدين محمد بن احمد الذهبیرحمةالله تعالی عليه متوفّٰی ٧٤٨ھ	دار الفكر بيروت
45	المجرحين لابی حاتم	الحافظ محمد بن حبان رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٣٥٤ھ	دار الكتب العلمية بيروت
46	كتاب الزهدلابن مبارك	امام عبد الله بن مبارك المروزی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ١٨١ھ	دار الكتب العلمية بيروت
47	مساوئ الأخلاق للخرائطی	امامابو بكر محمد بن جعفربن محمد خرائطی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٣٢٧ھ	المكتبة الشاملة
48	الاصابة فی تمييز الصحابة	امام الحافظ احمد بن علی بن حجر العسقلانی رحمة الله تعالی عليه متوفّٰی ٨٥٢ھ	دار الكتب العلمية بيروت

49	تعظیم قدرالصلاۃ	محمد بن نصررحمة الله تعالی علیه	المکتبة الشاملة
50	کشف الخفاء ومزیل الالباس	امام اسمٰعیل بن محمد بن الهادی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
51	(الفوائدالشهیربالغیلا نیات	امام ابو بکرالشافعی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۳۵۴ھ	المکتبة الشاملة
52	مرأة المناجیح شرح مشکوٰة المصابیح	حکیم الامت مفتی احمد یارخان نعیمی رحمة الله تعالی علیهمتوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنزلاهور
53	الحدیقةالندیةشرح الطریقة المحمدیة	عبدالغنی نابلسی علیه الرحمة الله الغنی متوفّٰی ۱۱۴۳ھ	پشاور پاکستان
54	الفتاوٰی الرضویة	اعلیٰحضرت امام احمد رضاخان علیه رحمة الرحمٰن متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاونڈیشن لاهور
55	الدرالمختار	علامه علاؤالدین الحصکفی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۱۰۸۸ھ	دارالمعرفة بیروت
56	رد المحتار	علامه سید محمد امین ابن عابدین شامی رحمة الله تعالی علیهمتوفّٰی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفة بیروت
57	الفتاوٰی الهندیة	ملانظام الدین رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۱۱۶۱ھ وعلمائے هند	کوئٹه پاکستان
58	الهدایة	علامه ابوالحسن علی بن ابی بکرمرغینانی متوفّٰی ۵۹۳ھ	دار الاحیاء التراث العربی
59	نور الایضاح	علامه حسن بن عماربن علی شرنبلالی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۱۰۶۹ھ	فاروقیه بک ڈپو هند
60	مراقی الفلاح	علامه حسن بن عماربن علی شرنبلالی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۱۰۶۹ھ	مدینة الاولیاء ملتان
61	تنویرالابصار	علامه شمس الدین محمد بن عبدالله بن احمد تمرتاشی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۱۰۰۴ھ	دارالمعرفة بیروت
62	غنیة المتملی	علامه محمدابراهیم بن حلبی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۹۵۶ھ	سهیل اکیڈمی لاهور
63	حلبةالمُجَلِّی	علامه ابن امیر الحاج رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۸۷۹ھ	مخطوطه
64	کنزالدقائق	مولانا عبدالله بن احمد بن مذحسود رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۷۱۰ھ	باب المدینه کراچی
65	مختصر القدوری	علامه ابوالحسین احمد بن محمد قدوری رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۴۲۸ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
66	لغة الفقهاء	محمد رؤس ،حامد صادق	ادارة القرآن والعلوم السلامیة
67	تذکرة الاولیاء	شیخ فرید الدین عطار رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۶۳۷ھ	انتشارات گنجیه
68	فیروزاللغات	مولوی فیروزالدین	فیروزسنز
69	التعظیم والمنة فی ابوی رسول اللهﷺ فی الجنة	امام جلال الدین السیوطی الشافعی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۹۱۱ھ	حجازی پبلی کیشنزلاهور
70	احیاء العلوم الدین	ابوحامدامام محمد بن احمدطوسی غزالی علیه رحمة الله الوالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار صادربیروت
71	بهارِشریعت	صدرالشریعة مفتی محمدامجدعلی الاعظمی رحمة الله تعالی علیه متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنزلاهور
72	رفیق الحرمین	امیر اهلِسنت حضرت علّامه مولانا محمد الیاس عطّار قادری دامت برکاتهم العالیة	مکتبة المدینة باب المدینه کراچی
73	نماز کے احکام	امیر اهلِسنت حضرت علّامه مولانا محمد الیاس عطّار قادری دامت برکاتهم العالیة	مکتبة المدینة باب المدینه کراچی
74	کوثرالخیرات	عمدة الاذکیاء حضرت علّامه مولانا محمداشرف سیالوی دامت برکاتهم العالیة	ضیاء القرآن پبلی کیشنزلاهور

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा 202 कुतुबो रसाइल मअ़ अ़न क़रीब आने वाली 13 कुतुबो रसाइल

﴾शोबए कुतुबे आला ह़ज़रत﴿

उर्दू कुतुब

01....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....फ़ज़ाइले दुआ़ (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاءِ مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاءِ لِاَحْسَنِ الْوِعَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

03....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِمِ) (कुल सफ़ह़ात : 199)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْدِ) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوقُ لِطَرْحِ الْعُقُوْقِ) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

07....अल मल्फ़ूज़ अल मारूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

08....शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاءِ بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

09....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)

10....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَةُ) (कुल सफ़ह़ात : 60)

11....औलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَادِ) (कुल सफ़ह़ात : 31)

12....आला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِيِّ) (कुल सफ़ह़ात : 100)

13....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

14....हुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَادِ) (कुल सफ़ह़ात : 47)

15....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَالٍ) (कुल सफ़ह़ात : 63)

अ़रबी कुतुब

16, 17, 18, 19, 20.....جَدُّ الْمُمْتَارِ عَلٰى رَدِّ الْمُحْتَارِ (المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس)

(कुल सफ़ह़ात : 570, 672, 713, 650, 483)

21.... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِى عَلٰى صَحِيْحِ الْبُخَارِى (कुल सफ़ह़ात : 458)

22.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ (कुल सफ़ह़ात : 74)

23..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَةُ (कुल सफ़ह़ात : 62)

24... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّةُ (कुल सफ़ह़ात : 93)

25..... اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِى (कुल सफ़ह़ात : 46)

26..... تَمْهِيْدُ الْاِيْمَانِ (कुल सफ़ह़ात : 77)

27..... اَجْلَى الْاِعْلَامِ (कुल सफ़ह़ात : 70)

28..... اِقَامَةُ الْقِيَامَةِ (कुल सफ़ह़ात : 60)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01.... جَدُّ الْمُمْتَار عَلٰی رَدِّالْمُحْتَار (المجلدالسادس) 02.....औलाद के हुक़ूक़ की तफ़्सील (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد)

﴿शोबए तराजिमे कुतुब﴾

01.....मदनी आक़ा के रौशन फ़ैसले (اَلْبَاهِرفِیْ حُکْمِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمْ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِر) (कुल सफ़्हात : 112)

02.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....? (تَمْهِیْدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़्हात : 28)

03.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُالْعُیُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़्हात : 142)

04.....नसीह़तों के मदनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِیْثِ الْقُدْسِیَّة) (कुल सफ़्हात : 54)

05.....जन्नत में ले जाने वाले आमाल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़्हात : 743)

06.....जहन्नम में ले जाने वाले आमाल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْکَبَائِر) (कुल सफ़्हात : 853)

07.....इमामे आज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم की वसिय्यतें (وَصَایَااِمَامِ اَعْظَمعَلَیْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़्हात : 46)

08....नेकी की दावत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُبِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْیُ عَنِ الْمُنْکَر) (कुल सफ़्हात : 98)

09.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (کَشْفُ النُّوْرعَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़्हात : 144)

10..... अल्लाह वालों की बातें (حِلْیَةُالْاَوْلِیَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِیَاء) पेहली जिल्द (कुल सफ़्हात : 696)

11.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدوَقَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़्हात : 85)

12.....राहे इल्म (تَعْلِیْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِیقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़्हात : 102)

13.....उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए अव्वल) (कुल सफ़्हात : 412)

14.....उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए दुवुम) (कुल सफ़्हात : 413)

15.....एह्याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْیَاء) (कुल सफ़्हात : 641)

16....ह़िकायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़्हात : 649)

17....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُالْمُذَاکَرَة) (कुल सफ़्हात : 122)

18....हुस्ने अख़्लाक़ (مَکَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़्हात : 102)

19....आंसूओं का दरिया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़्हात : 300)

20....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّیْن) (कुल सफ़्हात : 63)

21....शाहराहे औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِیْن) (कुल सफ़्हात : 36)

22....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّکْرُلِلّٰه عَزَّوَجَل) (कुल सफ़्हात : 122)

23....बेटे को नसीह़त (اَیُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़्हात : 64)

24....اَلدَّعْوَۃ اِلَی الْفِکْر (कुल सफ़ह़ात : 148)

25..... क़ूतुल कुलूब (जिल्द 1 मुकम्मल)

26.....जहन्नम में ले जाने वाले आमाल (जिल्द 2)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01....انوار الحدیث (मअ़ तख़रीज व तह़क़ीक़) 02....قصیدہ بردہ مع شرح خرپوتی 03....نصاب الادب

﴿शोबए तख़रीज﴾

01....सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का इश्क़े रसूल (कुल सफ़ह़ात : 274)

02....तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)

03....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 ता 6, कुल सफ़ह़ात : 1360)

04....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)

05....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़ह़ात : 1304)

06....इल्मुल कुरआन (कुल सफ़ह़ात : 244)

07....उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ (कुल सफ़ह़ात : 59)

08....सवानह़े करबला (कुल सफ़ह़ात : 192)

09....अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़ह़ात : 422)

10....अरबईने ह़नफ़िय्या (कुल सफ़ह़ात : 112)

11....गुलदस्तए अ़क़ाइदो आमाल (कुल सफ़ह़ात : 244)

12....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात : 64)

13....बहारे शरीअ़त, (सोलहवां ह़िस्सा, कुल सफ़ह़ात 312)

14....मुन्तख़ब ह़दीसें (कुल सफ़ह़ात : 246)

15....अच्छे माह़ोल की बरकतें (कुल सफ़ह़ात : 56)

16....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)

17....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (ह़िस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़ह़ात : 1332)

18....आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)

19 ता 25....फ़तावा एह्ले सुन्नत (सात ह़िस्से)

26....ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

27....जहन्नम के ख़त़रात (कुल सफ़ह़ात : 207)

28....अख़्लाकुस्सालिह़ीन (कुल सफ़ह़ात : 78)

29....आईनए इ़ब्रत (कुल सफ़ह़ात : 133)

30....सीरते मुस्त़फ़ा (कुल सफ़ह़ात : 875)

31....करामाते सह़ाबा (कुल सफ़ह़ात : 346)

32....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़ह़ात : 249)

शोबए इस्लाही कुतुब

01....ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हालात (कुल सफ़हात : 106)
02....तकब्बुर (कुल सफ़हात : 97)
03....40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़हात : 87)
04....बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)
05....रेहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 255)
06....नूर का खिलौना (कुल सफ़हात : 32)
07....आला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिशें (कुल सफ़हात : 49)
08....फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
09....इम्तिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)
10....रियाकारी (कुल सफ़हात : 170)
11....क़ौमे जिन्नात और अमीरे एह्ले सुन्नत (कुल सफ़हात : 262)
12....उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़हात : 48)
13....तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़हात : 124)
14....फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़हात : 150)
15....अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
16....तरबियते औलाद (कुल सफ़हात : 187)
17....कामयाब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़हात : 63)
18....टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
19....त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
20....मुफ़्तिये दावते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
21....फ़ैज़ाने चेहल अह़ादीस (कुल सफ़हात : 120)
22....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़हात : 215)
23....जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
24....ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)
25....तआ़रुफ़े अमीरे एह्ले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
26....इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
27....आयाते कुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)

28....निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 196)
29....फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)
30.... ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़हात : 408)
31....तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)
32....कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
33....नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)

शोबए अमीरे एह्ले सुन्नत

01....सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़हात : 49)
02....क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
03....मुक़द्दस तेह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)
04....गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)
05....इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें, ह़िस्सा दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)
06....गुमशुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)
07....25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)
08....जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)
09....दावते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
10....ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़हात : 36)
11....वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)
12....मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)
13....तज़किरए अमीरे एह्ले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़) (कुल सफ़हात : 86)
14....कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)
15....आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़हात : 275)
16....बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में ह़िक्मत (कुल सफ़हात : 48)
17....बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)
18....पानी के बारे में अहम मालूमात (कुल सफ़हात : 48)
19....बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)
20....दावते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
21....हैरोइंची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिए

हर जुमेरात बाद नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिए अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइए ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिए मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पेहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए ।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिए "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

MAKTABA TUL MADINA

0133184

DAWAT-E-ISLAMI

Faizane Madina, Mirzapur, Ahmedabad-01 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006

maktabadelhi@gmail.com 011-23284560, 8178862570

www.dawateislamihind.net FOR HOME DELIVERY 9978626025 *T&C apply